इंजीले-मुक़द्दस

असल यूनानी मतन से नया उर्दू तरजुमा

उर्दू जियो वरझ़न

The New Testament in Modern Urdu
Translated from the Original Greek
Urdu Geo Version (Hindi script)

© 2021 Urdu Geo Version
www.urdugeoversion.com

This work is licensed under a Creative Commons Attribution
- NonCommercial - NoDerivatives 4.0 International Public License.
https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/legalcode

For permissions & requests regarding printing & further formats
contact info@urdugeoversion.com.

इंजीले-मुक़द्दस

मत्ती	1
मरक़ुस	49
लूक़ा	80
यूहन्ना	132
आमाल	170
रोमियों	218
1 कुरिंथियों	240
2 कुरिंथियों	260
गलतियों	274
इफ़िसियों	282
फ़िलिप्पियों	289
कुलुस्सियों	295
1 थिस्सलुनीकियों	300
2 थिस्सलुनीकियों	305
1 तीमुथियुस	308
2 तीमुथियुस	314
तितुस	319
फ़िलेमोन	322
इबरानियों	324
याक़ूब	341
1 पतरस	347
2 पतरस	353
1 यूहन्ना	357
2 यूहन्ना	363
3 यूहन्ना	364
यहूदाह	366
मुकाशफ़ा	368

हरफ़े-आग़ाज़

अज़ीज़ क़ारी! आपके हाथ में किताबे-मुक़द्दस का नया उर्दू तरजुमा है। यह इलाही किताब इनसान के लिए अल्लाह तआला का कलाम है। इसमें इनसान के साथ अल्लाह की मुहब्बत और उसके लिए उस की मरज़ी और मनशा का इज़हार है।

किताबे-मुक़द्दस पुराने और नए अहदनामे का मजमुआ है। पुराना अहदनामा तौरेत, तारीख़ी सहायफ़, हिकमत और ज़बूर के सहायफ़, और अंबिया के सहायफ़ पर मुश्तमिल है। नया अहदनामा इंजीले-मुक़द्दस का पाक कलाम है।

पुराने अहदनामे की असल ज़बान इबरानी और अरामी और नए अहदनामे की यूनानी है। ज़ेरे-नज़र मतन इन ज़बानों का बराहे-रास्त तरजुमा है। मुतरजिम ने हर मुमकिन कोशिश की है कि असल ज़बानों का सहीह सहीह मफ़हूम अदा करे।

पाक कलाम के तमाम मुतरजिमीन को दो सवालों का सामना है : पहला यह कि असल मतन का सहीह सहीह तरजुमा किया जाए। दूसरा यह कि जिस ज़बान में तरजुमा करना मक़सूद हो उस की ख़ूबसूरती और चाशनी भी बरक़रार रहे और पाक मतन के साथ वफ़ादारी भी मुतअस्सिर न हो। चुनाँचे हर मुतरजिम को फ़ैसला करना होता है कि कहाँतक वुह लफ़्ज़ बलफ़्ज़ तरजुमा करे और कहाँतक उर्दू ज़बान की सेहत, ख़ूबसूरती और चाशनी को मद्दे-नज़र रखते हुए क़दरे आज़ादाना तरजुमा करे। मुख़्तलिफ़ तरजुमों में जो बाज़ औक़ात थोड़ा-बहत फ़रक़ नज़र आता है उसका यही सबब है कि एक मुतरजिम असल अलफ़ाज़ का ज़्यादा पाबंद रहा है जबकि दूसरे ने मफ़हूम को अदा करने में उर्दू ज़बान की रिआयत करके क़दरे आज़ाद तरीक़े से मतलब को अदा करने की कोशिश की है। इस तरजुमे में जहाँ तक हो सका असल ज़बान के क़रीब रहने की कोशिश की गई है। याद रहे कि सुर्ख़ियाँ और उनवानात मतन का हिस्सा नहीं हैं। उनको महज़ क़ारी की सहूलत की ख़ातिर दिया गया है।

चूँकि असल ज़बानों में अंबिया के लिए इज़्ज़त के वुह अलक़ाब इस्तेमाल नहीं किए गए जिनका आज-कल रिवाज है, इसलिए इलहामी मतन के एहतराम को मलहूज़े-ख़ातिर रखते हुए तरजुमे में अलक़ाब का इज़ाफ़ा करने से गुरेज़ किया गया है।

किताबे-मुक़द्दस में मज़कूर जवाहरात का तरजुमा जदीद साइंसी तहक़ीक़ात के मुताबिक़ किया गया है।

चूँकि वक़्त के साथ साथ नाप-तोल की मिक़दारें क़दरे बदल गईं इसलिए तरजुमे में उनकी अदायगी में ख़ास मुश्किल पेश आई।

जहाँ रूह का लफ़्ज़ सीग़ाए-मुज़क्कर में अदा किया गया है वहाँउससे मुराद रूहुल-क़ुद्स यानी ख़ुदा का रूह है। जब वुह और मानों में मुस्तामल है तब मामूल के मुताबिक़ सीग़ाए-मुअन्नस इस्तेमाल हुआ है।

इंजीले-मुक़द्दस में बपतिस्मा देने का लुग़वी मतलब ग़ोता देना है। जिस शख़्स को बपतिस्मा दिया जाता है उसे पानी में ग़ोता दिया जाता है।

बारी तआला के फ़ज़्ल से इंजीले-मुक़द्दस के कई उर्दू तरजुमे दस्तयाब हैं। इन सबका मक़सद यही है कि असल ज़बान का मफ़हूम अदा किया जाए। इनका आपस में मुक़ाबला नहीं है बल्कि मुख़्तलिफ़ तरजुमों का एक दूसरे के साथ मुवाज़ना करने से असली ज़बान के मफ़हूम की गहराई और वुसअत सामने आती है और यों मुख़्तलिफ़ तरजुमे मिलकर कलामे-मुक़द्दस की पूरी तफ़्हीम में मुअविन साबित होते हैं।

अल्लाह करे कि यह तरजुमा भी उसके ज़िंदा कलाम का मतलब और मक़सद और उस की वुसअत और गहराई को ज़्यादा सफ़ाई से समझने में मदद का बाइस बने।

नाशिरीन

मत्ती की मारिफ़त इंजील

ईसा मसीह का नसबनामा

1 ईसा मसीह बिन दाऊद बिन इब्राहीम का
नसबनामा :
2इब्राहीम इसहाक़ का बाप था, इसहाक़ याक़ूब
का बाप और याक़ूब यहूदा और उसके भाइयों
का बाप। 3यहूदा के दो बेटे फ़ारस और ज़ारह थे
(उनकी माँ तमर थी)। फ़ारस हसरोन का बाप
और हसरोन राम का बाप था। 4राम अम्मीनदाब
का बाप, अम्मीनदाब नहसोन का बाप और
नहसोन सलमोन का बाप था। 5सलमोन बोअज़
का बाप था (बोअज़ की माँ राहब थी)। बोअज़
ओबेद का बाप था (ओबेद की माँ रूत थी)। ओबेद
यस्सी का बाप और 6यस्सी दाऊद बादशाह का
बाप था।
दाऊद सुलेमान का बाप था (सुलेमान की
माँ पहले ऊरिय्याह की बीवी थी)। 7सुलेमान
रहुबियाम का बाप, रहुबियाम अबियाह का बाप
और अबियाह आसा का बाप था। 8आसा
यहूसफ़त का बाप, यहूसफ़त यूराम का बाप और
यूराम उज़्ज़ियाह का बाप था। 9उज़्ज़ियाह यूताम
का बाप, यूताम आख़ज़ का बाप और आख़ज़
हिज़क़ियाह का बाप था। 10हिज़क़ियाह मनस्सी
का बाप, मनस्सी अमून का बाप और अमून
यूसियाह का बाप था। 11यूसियाह यहूयाकीन[a]
और उसके भाइयों का बाप था (यह बाबल की
जिलावतनी के दौरान पैदा हुए)।
12बाबल की जिलावतनी के बाद यहूया-
कीन[a] सियालतियेल का बाप और सियाल-
तियेल ज़रुब्बाबल का बाप था। 13ज़रु-
ब्बाबल अबीहूद का बाप, अबीहूद इलि-
याक़ीम का बाप और इलियाक़ीम आज़ोर का
बाप था। 14आज़ोर सदोक़ का बाप, सदोक़
अख़ीम का बाप और अख़ीम इलीहूद का बाप था।
15इलीहूद इलियज़र का बाप, इलियज़र मत्तान
का बाप और मत्तान याक़ूब का बाप था। 16याक़ूब
मरियम के शौहर यूसुफ़ का बाप था। इस मरियम
से ईसा पैदा हुआ, जो मसीह कहलाता है।
17यों इब्राहीम से दाऊद तक 14 नसलें हैं,
दाऊद से बाबल की जिलावतनी तक 14 नसलें
हैं और जिलावतनी से मसीह तक 14 नसलें हैं।

ईसा मसीह की पैदाइश

18ईसा मसीह की पैदाइश यों हुई : उस वक़्त
उस की माँ मरियम की मँगनी यूसुफ़ के साथ हो
चुकी थी कि वह रूहुल-क़ुद्स से हामिला पाई गई।
अभी उनकी शादी नहीं हुई थी। 19उसका मंगेतर
यूसुफ़ रास्तबाज़ था, वह अलानिया मरियम को
बदनाम नहीं करना चाहता था। इसलिए उसने
ख़ामोशी से यह रिश्ता तोड़ने का इरादा कर

[a]यूनानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है।

लिया। 20वह इस बात पर अभी ग़ौरो-फ़िकर कर
ही रहा था कि रब का फ़रिश्ता ख़ाब में उस पर
ज़ाहिर हुआ और फ़रमाया, "यूसुफ़ बिन दाऊद,
मरियम से शादी करके उसे अपने घर ले आने
से मत डर, क्योंकि पैदा होनेवाला बच्चा रूहुल-
क़ुद्स से है। 21उसके बेटा होगा और उसका नाम
ईसा रखना, क्योंकि वह अपनी क़ौम को उसके
गुनाहों से रिहाई देगा।"

22यह सब कुछ इसलिए हुआ ताकि रब की
वह बात पूरी हो जाए जो उसने अपने नबी
की मारिफ़त फ़रमाई थी, 23"देखो एक कुँवारी
हामिला होगी। उससे बेटा पैदा होगा और वह
उसका नाम इम्मानुएल रखेंगे।" (इम्मानुएल का
मतलब 'ख़ुदा हमारे साथ' है।)

24जब यूसुफ़ जाग उठा तो उसने रब के फ़रिश्ते
के फ़रमान के मुताबिक़ मरियम से शादी कर ली
और उसे अपने घर ले गया। 25लेकिन जब तक
उसके बेटा पैदा न हुआ वह मरियम से हमबिसतर
न हुआ। और यूसुफ़ ने बच्चे का नाम ईसा रखा।

मशरिक़ से मजूसी आलिम

2 ईसा हेरोदेस बादशाह के ज़माने में सूबा
यहूदिया के शहर बैत-लहम में पैदा हुआ।
उन दिनों में कुछ मजूसी आलिम मशरिक़ से
आकर यरूशलम पहुँच गए। 2उन्होंने पूछा,
"यहूदियों का वह बादशाह कहाँ है जो हाल ही
में पैदा हुआ है? क्योंकि हमने मशरिक़ में उसका
सितारा देखा है और हम उसे सिजदा करने आए
हैं।"

3यह सुनकर हेरोदेस बादशाह पूरे यरू-
शलम समेत घबरा गया। 4तमाम राहनुमा इमामों
और शरीअत के उलमा को जमा करके उसने
उनसे दरियाफ़्त किया कि मसीह कहाँ पैदा होगा।

5उन्होंने जवाब दिया, "यहूदिया के शहर बैत-
लहम में, क्योंकि नबी की मारिफ़त यों लिखा
है, 6'ऐ मुल्के-यहूदिया में वाक़े बैत-लहम, तू
यहूदिया के हुक्मरानों में हरगिज़ सबसे छोटा नहीं।
क्योंकि तुझमें से एक हुक्मरान निकलेगा जो मेरी
क़ौम इसराईल की गल्लाबानी करेगा'।"

7इस पर हेरोदेस ने ख़ुफ़िया तौर पर मजूसी
आलिमों को बुलाकर तफ़सील से पूछा कि वह
सितारा किस वक़्त दिखाई दिया था। 8फिर उसने
उन्हें बताया, "बैत-लहम जाएँ और तफ़सील से
बच्चे का पता लगाएँ। जब आप उसे पा लें तो मुझे
इत्तला दें ताकि मैं भी जाकर उसे सिजदा करूँ।"

9बादशाह के इन अलफ़ाज़ के बाद वह चले
गए। और देखो जो सितारा उन्होंने मशरिक़ में
देखा था वह उनके आगे आगे चलता गया और
चलते चलते उस मक़ाम के ऊपर ठहर गया जहाँ
बच्चा था। 10सितारे को देखकर वह बहुत ख़ुश
हुए। 11वह घर में दाख़िल हुए और बच्चे को माँ
के साथ देखकर उन्होंने औंधे मुँह गिरकर उसे
सिजदा किया। फिर अपने डिब्बे खोलकर उसे
सोने, लुबान और मुर के तोहफ़े पेश किए।

12जब रवानगी का वक़्त आया तो वह
यरूशलम से होकर न गए बल्कि एक और रास्ते
से अपने मुल्क चले गए, क्योंकि उन्हें ख़ाब में
आगाह किया गया था कि हेरोदेस के पास वापस
न जाओ।

मिसर की जानिब हिजरत

13उनके चले जाने के बाद रब का फ़रिश्ता ख़ाब
में यूसुफ़ पर ज़ाहिर हुआ और कहा, "उठ, बच्चे
को उस की माँ समेत लेकर मिसर को हिजरत
कर जा। जब तक मैं तुझे इत्तला न दूँ वहीं ठहरा
रह, क्योंकि हेरोदेस बच्चे को तलाश करेगा ताकि
उसे क़त्ल करे।"

14यूसुफ़ उठा और उसी रात बच्चे को उस
की माँ समेत लेकर मिसर के लिए रवाना हुआ।
15वहाँ वह हेरोदेस के इंतक़ाल तक रहा। यों वह
बात पूरी हुई जो रब ने नबी की मारिफ़त फ़रमाई
थी, "मैंने अपने फ़रज़ंद को मिसर से बुलाया।"

बच्चों का क़त्ल

16जब हेरोदेस को मालूम हुआ कि मजूसी आलिमों ने मुझे फ़रेब दिया है तो उसे बड़ा तैश आया। उसने अपने फ़ौजियों को बैत-लहम भेजकर उन्हें हुक्म दिया कि बैत-लहम और इर्दगिर्द के इलाक़े के उन तमाम लड़कों को क़त्ल करें जिनकी उम्र दो साल तक हो। क्योंकि उसने मजूसियों से बच्चे की उम्र के बारे में यह मालूम कर लिया था।

17यों यरमियाह नबी की पेशगोई पूरी हुई, 18"रामा में शोर मच गया है, रोने पीटने और शदीद मातम की आवाज़ें। राख़िल अपने बच्चों के लिए रो रही है और तसल्ली क़बूल नहीं कर रही, क्योंकि वह हलाक हो गए हैं।"

मिसर से वापसी

19जब हेरोदेस इंतक़ाल कर गया तो रब का फ़रिश्ता ख़ाब में यूसुफ़ पर ज़ाहिर हुआ जो अभी मिसर ही में था। 20फ़रिश्ते ने उसे बताया, "उठ, बच्चे को उस की माँ समेत लेकर मुल्के-इसराईल वापस चला जा, क्योंकि जो बच्चे को जान से मारने के दरपै थे वह मर गए हैं।" 21चुनाँचे यूसुफ़ उठा और बच्चे और उस की माँ को लेकर मुल्के-इसराईल में लौट आया।

22लेकिन जब उसने सुना कि अरख़िलाउस अपने बाप हेरोदेस की जगह यहूदिया में तख़्तनशीन हो गया है तो वह वहाँ जाने से डर गया। फिर ख़ाब में हिदायत पाकर वह गलील के इलाक़े के लिए रवाना हुआ। 23वहाँ वह एक शहर में जा बसा जिसका नाम नासरत था। यों नबियों की बात पूरी हुई कि 'वह नासरी कहलाएगा।'

यहया बपतिस्मा देनेवाले की ख़िदमत

3 उन दिनों में यहया बपतिस्मा देनेवाला आया और यहूदिया के रेगिस्तान में एलान करने लगा, 2"तौबा करो, क्योंकि आसमान की बादशाही क़रीब आ गई है।" 3यहया वही है जिसके बारे में यसायाह नबी ने फ़रमाया, 'रेगिस्तान में एक आवाज़ पुकार रही है, रब की राह तैयार करो! उसके रास्ते सीधे बनाओ।'

4यहया ऊँटों के बालों का लिबास पहने और कमर पर चमड़े का पटका बाँधे रहता था। ख़ुराक के तौर पर वह टिड्डियाँ और जंगली शहद खाता था। 5लोग यरूशलम, पूरे यहूदिया और दरियाए-यरदन के पूरे इलाक़े से निकलकर उसके पास आए। 6और अपने गुनाहों को तसलीम करके उन्होंने दरियाए-यरदन में यहया से बपतिस्मा लिया।

7बहुत-से फ़रीसी और सदूक़ी भी वहाँ आए जहाँ वह बपतिस्मा दे रहा था। उन्हें देखकर उसने कहा, "ऐ ज़हरीले साँप के बच्चो! किसने तुम्हें आनेवाले ग़ज़ब से बचने की हिदायत की? 8अपनी ज़िंदगी से ज़ाहिर करो कि तुमने वाक़ई तौबा की है। 9यह ख़याल मत करो कि हम तो बच जाएंगे क्योंकि इब्राहीम हमारा बाप है। मैं तुमको बताता हूँ कि अल्लाह इन पत्थरों से भी इब्राहीम के लिए औलाद पैदा कर सकता है। 10अब तो अदालत की कुल्हाड़ी दरख़्तों की जड़ों पर रखी हुई है। हर दरख़्त जो अच्छा फल न लाए काटा और आग में झोंका जाएगा। 11मैं तो तुम तौबा करनेवालों को पानी से बपतिस्मा देता हूँ, लेकिन एक आनेवाला है जो मुझसे बड़ा है। मैं उसके जूतों को उठाने के भी लायक़ नहीं। वह तुम्हें रूहुल-क़ुद्स और आग से बपतिस्मा देगा। 12वह हाथ में छाज पकड़े हुए अनाज को भूसे से अलग करने के लिए तैयार खड़ा है। वह गाहने की जगह बिलकुल साफ़ करके अनाज को अपने गोदाम में जमा करेगा। लेकिन भूसे को वह ऐसी आग में झोंकेगा जो बुझने की नहीं।"

ईसा का बपतिस्मा

13फिर ईसा गलील से दरियाए-यरदन के किनारे आया ताकि यहया से बपतिस्मा ले। 14लेकिन यहया ने उसे रोकने की कोशिश करके कहा, "मुझे तो आपसे बपतिस्मा लेने की ज़रूरत है, तो फिर आप मेरे पास क्यों आए हैं?"

15ईसा ने जवाब दिया, “अब होने ही दे,
क्योंकि मुनासिब है कि हम यह करते हुए अल्लाह
की रास्त मरज़ी पूरी करें।”[a] इस पर यहया मान
गया।

16बपतिस्मा लेने पर ईसा फ़ौरन पानी से
निकला। उसी लमहे आसमान खुल गया और
उसने अल्लाह के रूह को देखा जो कबूतर की
तरह उतरकर उस पर ठहर गया। 17साथ साथ
आसमान से एक आवाज़ सुनाई दी, “यह मेरा
प्यारा फ़रज़ंद है, इससे मैं ख़ुश हूँ।”

ईसा को आज़माया जाता है

4 फिर रूहुल-क़ुद्स ईसा को रेगिस्तान में
ले गया ताकि उसे इबलीस से आज़माया
जाए। 2चालीस दिन और चालीस रात रोज़ा
रखने के बाद उसे आख़िरकार भूक लगी। 3फिर
आज़मानेवाला उसके पास आकर कहने लगा,
“अगर तू अल्लाह का फ़रज़ंद है तो इन पत्थरों
को हुक्म दे कि रोटी बन जाएँ।”

4लेकिन ईसा ने इनकार करके कहा, “हरगिज़
नहीं, क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में लिखा है कि
इनसान की ज़िंदगी सिर्फ़ रोटी पर मुनहसिर नहीं
होती बल्कि हर उस बात पर जो रब के मुँह से
निकलती है।”

5इस पर इबलीस ने उसे मुक़द्दस शहर
यरूशलम ले जाकर बैतुल-मुक़द्दस की सबसे
ऊँची जगह पर खड़ा किया और कहा, 6“अगर
तू अल्लाह का फ़रज़ंद है तो यहाँ से छलाँग लगा
दे। क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, ‘वह तेरी
ख़ातिर अपने फ़रिश्तों को हुक्म देगा, और वह
तुझे अपने हाथों पर उठा लेंगे ताकि तेरे पाँवों को
पत्थर से ठेस न लगे’।”

7लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “कलामे-मुक़द्दस
यह भी फ़रमाता है, ‘रब अपने ख़ुदा को न
आज़माना’।”

8फिर इबलीस ने उसे एक निहायत ऊँचे पहाड़
पर ले जाकर उसे दुनिया के तमाम ममालिक और
उनकी शानो-शौकत दिखाई। 9वह बोला, “यह
सब कुछ मैं तुझे दे दूँगा, शर्त यह है कि तू गिरकर
मुझे सिजदा करे।”

10लेकिन ईसा ने तीसरी बार इनकार किया
और कहा, “इबलीस, दफ़ा हो जा! क्योंकि
कलामे-मुक़द्दस में यों लिखा है, ‘रब अपने ख़ुदा
को सिजदा कर और सिर्फ़ उसी की इबादत
कर’।”

11इस पर इबलीस उसे छोड़कर चला गया और
फ़रिश्ते आकर उस की ख़िदमत करने लगे।

गलील में ईसा की ख़िदमत का आग़ाज़

12जब ईसा को ख़बर मिली कि यहया को जेल
में डाल दिया गया है तो वह वहाँ से चला गया और
गलील में आया। 13नासरत को छोड़कर वह झील
के किनारे पर वाक़े शहर कफ़र्नहूम में रहने लगा,
यानी ज़बूलून और नफ़ताली के इलाक़े में। 14यों
यसायाह नबी की पेशगोई पूरी हुई,

15“ज़बूलून का इलाक़ा,
नफ़ताली का इलाक़ा,
झील के साथ का रास्ता,
दरियाए-यरदन के पार,
ग़ैरयहूदियों का गलील :
16अंधेरे में बैठी क़ौम ने
एक तेज़ रौशनी देखी,
मौत के साये में डूबे हुए मुल्क
के बाशिंदों पर रौशनी चमकी।”

17उस वक़्त से ईसा इस पैग़ाम की मुनादी
करने लगा, “तौबा करो, क्योंकि आसमान की
बादशाही क़रीब आ गई है।”

ईसा चार मछेरों को बुलाता है

18एक दिन जब ईसा गलील की झील के
किनारे किनारे चल रहा था तो उसने दो भाइयों
को देखा—शमाऊन जो पतरस भी कहलाता था
और अंदरियास को। वह पानी में जाल डाल रहे थे,
क्योंकि वह माहीगीर थे। 19उसने कहा, “आओ,

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : हम तमाम रास्तबाज़ी पूरी करें।

मेरे पीछे हो लो, मैं तुमको आदमगीर बनाऊँगा।”
20यह सुनते ही वह अपने जालों को छोड़कर
उसके पीछे हो लिए।
21आगे जाकर ईसा ने दो और भाइयों को
देखा, याक़ूब बिन ज़बदी और उसके भाई यूहन्ना
को। वह कश्ती में बैठे अपने बाप ज़बदी के साथ
अपने जालों की मरम्मत कर रहे थे। ईसा ने उन्हें
बुलाया 22तो वह फ़ौरन कश्ती और अपने बाप
को छोड़कर उसके पीछे हो लिए।

ईसा तालीम देता, मुनादी करता और शफ़ा देता है

23और ईसा गलील के पूरे इलाक़े में फिरता
रहा। जहाँ भी वह जाता वह यहूदी इबादतख़ानों
में तालीम देता, बादशाही की ख़ुशख़बरी सुनाता
और हर क़िस्म की बीमारी और अलालत से
शफ़ा देता था। 24उस की ख़बर मुल्के-शाम के
कोने कोने तक पहुँच गई, और लोग अपने तमाम
मरीज़ों को उसके पास लाने लगे। क़िस्म क़िस्म
की बीमारियों तले दबे लोग, ऐसे जो शदीद दर्द
का शिकार थे, बदरूहों की गिरिफ़्त में मुब्तला,
मिरगीवाले और फ़ालिजज़दा, ग़रज़ जो भी आया
ईसा ने उसे शफ़ा बख़्शी। 25गलील, दिकपुलिस,
यरूशलम, यहूदिया और दरियाए-यरदन के पार
के इलाक़े से बड़े बड़े हुजूम उसके पीछे चलते
रहे।

पहाड़ी वाज़

5 भीड़ को देखकर ईसा पहाड़ पर चढ़कर
बैठ गया। उसके शागिर्द उसके पास आए
2और वह उन्हें यह तालीम देने लगा :

हक़ीक़ी ख़ुशी

3“मुबारक हैं वह जिनकी रूह ज़रूरतमंद है,
क्योंकि आसमान की बादशाही उन्हीं की है।
4मुबारक हैं वह जो मातम करते हैं, क्योंकि
उन्हें तसल्ली दी जाएगी।
5मुबारक हैं वह जो हलीम हैं, क्योंकि वह
ज़मीन विरसे में पाएँगे।
6मुबारक हैं वह जिन्हें रास्तबाज़ी की भूक और
प्यास है, क्योंकि वह सेर हो जाएंगे।
7मुबारक हैं वह जो रहमदिल हैं, क्योंकि उन
पर रहम किया जाएगा।
8मुबारक हैं वह जो ख़ालिस दिल हैं, क्योंकि
वह अल्लाह को देखेंगे।
9मुबारक हैं वह जो सुलह कराते हैं, क्योंकि
वह अल्लाह के फ़रज़ंद कहलाएँगे।
10मुबारक हैं वह जिनको रास्तबाज़ होने के
सबब से सताया जाता है, क्योंकि उन्हें आसमान
की बादशाही विरसे में मिलेगी।
11मुबारक हो तुम जब लोग मेरी वजह से
तुम्हें लान-तान करते, तुम्हें सताते और तुम्हारे
बारे में हर क़िस्म की बुरी और झूटी बात करते
हैं। 12ख़ुशी मनाओ और बाग़ बाग़ हो जाओ,
तुमको आसमान पर बड़ा अज्र मिलेगा। क्योंकि
इसी तरह उन्होंने तुमसे पहले नबियों को भी ईज़ा
पहुँचाई थी।

तुम नमक और रौशनी हो

13तुम दुनिया का नमक हो। लेकिन अगर
नमक का ज़ायक़ा जाता रहे तो फिर उसे क्योंकर
दुबारा नमकीन किया जा सकता है? वह किसी
भी काम का नहीं रहा बल्कि बाहर फेंका जाएगा
जहाँ वह लोगों के पाँवों तले रौंदा जाएगा।
14तुम दुनिया की रौशनी हो। पहाड़ पर वाक़े
शहर की तरह तुमको छुपाया नहीं जा सकता।
15जब कोई चराग़ जलाता है तो वह उसे बरतन
के नीचे नहीं रखता बल्कि शमादान पर रख देता
है जहाँ से वह घर के तमाम अफ़राद को रौशनी
देता है। 16इसी तरह तुम्हारी रौशनी भी लोगों के
सामने चमके ताकि वह तुम्हारे नेक काम देखकर
तुम्हारे आसमानी बाप को जलाल दें।

शरीअत

17यह न समझो कि मैं मूसवी शरीअत और
नबियों की बातों को मनसूख़ करने आया हूँ।
मनसूख़ करने नहीं बल्कि उनकी तकमील करने
आया हूँ। 18मैं तुमको सच बताता हूँ, जब तक
आसमानो-ज़मीन क़ायम रहेंगे तब तक शरीअत
भी क़ायम रहेगी—न उसका कोई हरफ़, न
उसका कोई ज़ेर या ज़बर मनसूख़ होगा जब तक
सब कुछ पूरा न हो जाए। 19जो इन सबसे छोटे
अहकाम में से एक को भी मनसूख़ करे और
लोगों को ऐसा करना सिखाए उसे आसमान की
बादशाही में सबसे छोटा क़रार दिया जाएगा।
इसके मुक़ाबले में जो इन अहकाम पर अमल
करके इन्हें सिखाता है उसे आसमान की बादशाही
में बड़ा क़रार दिया जाएगा। 20क्योंकि मैं तुमको
बताता हूँ कि अगर तुम्हारी रास्तबाज़ी शरीअत के
उलमा और फ़रीसियों की रास्तबाज़ी से ज़्यादा
नहीं तो तुम आसमान की बादशाही में दाख़िल
होने के लायक़ नहीं।

ग़ुस्सा

21तुमने सुना है कि बापदादा को फ़रमाया
गया, 'क़त्ल न करना। और जो क़त्ल करे उसे
अदालत में जवाब देना होगा।' 22लेकिन मैं
तुमको बताता हूँ कि जो भी अपने भाई पर ग़ुस्सा
करे उसे अदालत में जवाब देना होगा। इसी तरह
जो अपने भाई को 'अहमक़' कहे उसे यहूदी
अदालते-आलिया में जवाब देना होगा। और जो
उसको 'बेवुक़ूफ़!' कहे वह जहन्नुम की आग में
फेंके जाने के लायक़ ठहरेगा। 23लिहाज़ा अगर
तुझे बैतुल-मुक़द्दस में क़ुरबानी पेश करते वक़्त
याद आए कि तेरे भाई को तुझसे कोई शिकायत
है 24तो अपनी क़ुरबानी को वहीं क़ुरबानगाह के
सामने ही छोड़कर अपने भाई के पास चला जा।
पहले उससे सुलह कर और फिर वापस आकर
अल्लाह को अपनी क़ुरबानी पेश कर।

25फ़र्ज़ करो कि किसी ने तुझ पर मुक़दमा
चलाया है। अगर ऐसा हो तो कचहरी में दाख़िल
होने से पहले पहले जल्दी से झगड़ा ख़त्म कर।
ऐसा न हो कि वह तुझे जज के हवाले करे, जज
तुझे पुलिस अफ़सर के हवाले करे और नतीजे में
तुझको जेल में डाला जाए। 26मैं तुझे सच बताता
हूँ, वहाँ से तू उस वक़्त तक नहीं निकल पाएगा
जब तक जुर्माने की पूरी पूरी रक़म अदा न कर दे।

ज़िनाकारी

27तुमने यह हुक्म सुन लिया है कि 'ज़िना न
करना।' 28लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ, जो किसी
औरत को बुरी ख़ाहिश से देखता है वह अपने दिल
में उसके साथ ज़िना कर चुका है। 29अगर तेरी
दाईं आँख तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे
निकालकर फेंक दे। इससे पहले कि तेरे पूरे जिस्म
को जहन्नुम में डाला जाए बेहतर यह है कि तेरा
एक ही अज़ु जाता रहे। 30और अगर तेरा दहना
हाथ तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे काटकर
फेंक दे। इससे पहले कि तेरा पूरा जिस्म जहन्नुम
में जाए बेहतर यह है कि तेरा एक ही अज़ु जाता
रहे।

तलाक़

31यह भी फ़रमाया गया है, 'जो भी अपनी
बीवी को तलाक़ दे वह उसे तलाक़नामा लिख
दे।' 32लेकिन मैं तुमको बताता हूँ कि अगर किसी
की बीवी ने ज़िना न किया हो तो भी शौहर उसे
तलाक़ दे तो वह उससे ज़िना कराता है। और जो
तलाक़शुदा औरत से शादी करे वह ज़िना करता
है।

क़सम मत खाना

33तुमने यह भी सुना है कि बापदादा को
फ़रमाया गया, 'झूटी क़सम मत खाना बल्कि
जो वादे तूने रब से क़सम खाकर किए हों उन्हें
पूरा करना।' 34लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ, क़सम
बिलकुल न खाना। न 'आसमान की क़सम'
क्योंकि आसमान अल्लाह का तख़्त है, 35न
'ज़मीन की' क्योंकि ज़मीन उसके पाँवों की चौकी

है। ‘यरूशलम की क़सम’ भी न खाना क्योंकि
यरूशलम अज़ीम बादशाह का शहर है। 36यहाँ
तक कि अपने सर की क़सम भी न खाना, क्योंकि
तू अपना एक बाल भी काला या सफ़ेद नहीं
कर सकता। 37सिर्फ़ इतना ही कहना, ‘जी हाँ’
या ‘जी नहीं।’ अगर इससे ज़्यादा कहो तो यह
इबलीस की तरफ़ से है।

बदला लेना

38तुमने सुना है कि यह फ़रमाया गया है,
‘आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत।’
39लेकिन मैं तुमको बताता हूँ कि बदकार का
मुक़ाबला मत करना। अगर कोई तेरे दहने गाल
पर थप्पड़ मारे तो उसे दूसरा गाल भी पेश कर
दे। 40अगर कोई तेरी क़मीस लेने के लिए तुझ
पर मुक़दमा करना चाहे तो उसे अपनी चादर
भी दे देना। 41अगर कोई तुझको उसका सामान
उठाकर एक किलोमीटर जाने पर मजबूर करे तो
उसके साथ दो किलोमीटर चला जाना। 42जो
तुझसे कुछ माँगे उसे दे देना और जो तुझसे क़र्ज़
लेना चाहे उससे इनकार न करना।

दुश्मन से मुहब्बत

43तुमने सुना है कि फ़रमाया गया है, ‘अपने
पड़ोसी से मुहब्बत रखना और अपने दुश्मन से
नफ़रत करना।’ 44लेकिन मैं तुमको बताता हूँ,
अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखो और उनके लिए
दुआ करो जो तुमको सताते हैं। 45फिर तुम अपने
आसमानी बाप के फ़रज़ंद ठहरोगे, क्योंकि वह
अपना सूरज सब पर तुलू होने देता है, ख़ाह
वह अच्छे हों या बुरे। और वह सब पर बारिश
बरसने देता है, ख़ाह वह रास्तबाज़ हों या नारास्त।
46अगर तुम सिर्फ़ उन्हीं से मुहब्बत करो जो तुमसे
करते हैं तो तुमको क्या अज्र मिलेगा? टैक्स
लेनेवाले भी तो ऐसा ही करते हैं। 47और अगर
तुम सिर्फ़ अपने भाइयों के लिए सलामती की
दुआ करो तो कौन-सी ख़ास बात करते हो?
ग़ैरयहूदी भी तो ऐसा ही करते हैं। 48चुनाँचे वैसे ही
कामिल हो जैसा तुम्हारा आसमानी बाप कामिल
है।

ख़ैरात

6 ख़बरदार! अपने नेक काम लोगों के सामने
दिखावे के लिए न करो, वरना तुमको
अपने आसमानी बाप से कोई अज्र नहीं मिलेगा।
2चुनाँचे ख़ैरात देते वक़्त रियाकारों की तरह
न कर जो इबादतख़ानों और गलियों में बिगुल
बजाकर इसका एलान करते हैं ताकि लोग उनकी
इज़्ज़त करें। मैं तुमको सच बताता हूँ, जितना अज्र
उन्हें मिलना था उन्हें मिल चुका है। 3इसके बजाए
जब तू ख़ैरात दे तो तेरे दाएँ हाथ को पता न चले
कि बायाँ हाथ क्या कर रहा है। 4तेरी ख़ैरात यों
पोशीदगी में दी जाए तो तेरा बाप जो पोशीदा बातें
देखता है तुझे इसका मुआवज़ा देगा।

दुआ

5दुआ करते वक़्त रियाकारों की तरह न करना
जो इबादतख़ानों और चौकों में जाकर दुआ करना
पसंद करते हैं, जहाँ सब उन्हें देख सकें। मैं तुमको
सच बताता हूँ, जितना अज्र उन्हें मिलना था उन्हें
मिल चुका है। 6इसके बजाए जब तू दुआ करता
है तो अंदर के कमरे में जाकर दरवाज़ा बंद कर
और फिर अपने बाप से दुआ कर जो पोशीदगी में
है। फिर तेरा बाप जो पोशीदा बातें देखता है तुझे
इसका मुआवज़ा देगा।

7दुआ करते वक़्त ग़ैरयहूदियों की तरह तवील
और बेमानी बातें न दोहराते रहो। वह समझते हैं
कि हमारी बहुत-सी बातों के सबब से हमारी सुनी
जाएगी। 8उनकी मानिंद न बनो, क्योंकि तुम्हारा
बाप पहले से तुम्हारी ज़रूरियात से वाक़िफ़ है,
9बल्कि यों दुआ किया करो,

ऐ हमारे आसमानी बाप,
तेरा नाम मुक़द्दस माना जाए।
10तेरी बादशाही आए।
तेरी मरज़ी जिस तरह आसमान में
पूरी होती है

ज़मीन पर भी पूरी हो।
11हमारी रोज़ की रोटी आज हमें दे।
12हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर
जिस तरह हमने उन्हें मुआफ़ किया[a]
जिन्होंने हमारा गुनाह किया है।
13और हमें आज़माइश में न पड़ने दे
बल्कि हमें इबलीस से बचाए रख।
[क्योंकि बादशाही, क़ुदरत और जलाल
अबद तक तेरे ही हैं।]
14क्योंकि जब तुम लोगों के गुनाह मुआफ़
करोगे तो तुम्हारा आसमानी बाप भी तुमको
मुआफ़ करेगा। 15लेकिन अगर तुम उन्हें मुआफ़
न करो तो तुम्हारा बाप भी तुम्हारे गुनाह मुआफ़
नहीं करेगा।

रोज़ा

16रोज़ा रखते वक़्त रियाकारों की तरह मुँह
लटकाए न फिरो, क्योंकि वह ऐसा रूप भरते हैं
ताकि लोगों को मालूम हो जाए कि वह रोज़ा से
हैं। मैं तुमको सच बताता हूँ, जितना अज्र उन्हें
मिलना था उन्हें मिल चुका है। 17ऐसा मत करना
बल्कि रोज़े के वक़्त अपने बालों में तेल डाल और
अपना मुँह धो। 18फिर लोगों को मालूम नहीं होगा
कि तू रोज़ा से है बल्कि सिर्फ़ तेरे बाप को जो
पोशीदगी में है। और तेरा बाप जो पोशीदा बातें
देखता है तुझे इसका मुआवज़ा देगा।

आसमान पर ख़ज़ाना

19इस दुनिया में अपने लिए ख़ज़ाने जमा न
करो, जहाँ कीड़ा और ज़ंग उन्हें खा जाते और
चोर नक़ब लगाकर चुरा लेते हैं। 20इसके बजाए
अपने ख़ज़ाने आसमान पर जमा करो जहाँ कीड़ा
और ज़ंग उन्हें तबाह नहीं कर सकते, न चोर
नक़ब लगाकर चुरा सकते हैं। 21क्योंकि जहाँ तेरा
ख़ज़ाना है वहीं तेरा दिल भी लगा रहेगा।

जिस्म की रौशनी

22बदन का चराग़ आँख है। अगर तेरी आँख
ठीक हो तो फिर तेरा पूरा बदन रौशन होगा।
23लेकिन अगर तेरी आँख ख़राब हो तो तेरा पूरा
बदन अंधेरा ही अंधेरा होगा। और अगर तेरे अंदर
की रौशनी तारीकी हो तो यह तारीकी कितनी
शदीद होगी!

बेफ़िकर होना

24कोई भी दो मालिकों की ख़िदमत नहीं कर
सकता। या तो वह एक से नफ़रत करके दूसरे
से मुहब्बत रखेगा या एक से लिपटकर दूसरे को
हक़ीर जानेगा। तुम एक ही वक़्त में अल्लाह और
दौलत की ख़िदमत नहीं कर सकते।
25इसलिए मैं तुम्हें बताता हूँ, अपनी ज़िंदगी
की ज़रूरियात पूरी करने के लिए परेशान न रहो
कि हाय, मैं क्या खाऊँ और क्या पियूँ। और
जिस्म के लिए फ़िकरमंद न रहो कि हाय, मैं क्या
पहनूँ। क्या ज़िंदगी खाने-पीने से अहम नहीं है?
और क्या जिस्म पोशाक से ज़्यादा अहमियत नहीं
रखता? 26परिंदों पर ग़ौर करो। न वह बीज बोते,
न फ़सलें काटकर उन्हें गोदाम में जमा करते हैं।
तुम्हारा आसमानी बाप ख़ुद उन्हें खाना खिलाता
है। क्या तुम्हारी उनकी निसबत ज़्यादा क़दरो-
क़ीमत नहीं है? 27क्या तुममें से कोई फ़िकर
करते करते अपनी ज़िंदगी में एक लमहे का भी
इज़ाफ़ा कर सकता है?
28और तुम अपने कपड़ों के लिए क्यों
फ़िकरमंद होते हो? ग़ौर करो कि सोसन के
फूल किस तरह उगते हैं। न वह मेहनत करते,
न कातते हैं। 29लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ कि
सुलेमान बादशाह अपनी पूरी शानो-शौकत के
बावुजूद ऐसे शानदार कपड़ों से मुलब्बस नहीं था
जैसे उनमें से एक। 30अगर अल्लाह उस घास
को जो आज मैदान में है और कल आग में झोंकी
जाएगी ऐसा शानदार लिबास पहनाता है तो ऐ

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : हमारे क़र्ज़ हमें मुआफ़ कर जिस तरह हमने अपने क़र्ज़दारों को मुआफ़ किया।

कमएतक़ादो, वह तुमको पहनाने के लिए क्या
कुछ नहीं करेगा?
31चुनाँचे परेशानी के आलम में फ़िकर करते
करते यह न कहते रहो, 'हम क्या खाएँ? हम
क्या पिएँ? हम क्या पहनें?' 32क्योंकि जो
ईमान नहीं रखते वही इन तमाम चीज़ों के पीछे
भागते रहते हैं जबकि तुम्हारे आसमानी बाप को
पहले से मालूम है कि तुमको इन तमाम चीज़ों की
ज़रूरत है। 33पहले अल्लाह की बादशाही और
उस की रास्तबाज़ी की तलाश में रहो। फिर यह
तमाम चीज़ें भी तुमको मिल जाएँगी। 34इसलिए
कल के बारे में फ़िकर करते करते परेशान न हो
क्योंकि कल का दिन अपने लिए आप फ़िकर कर
लेगा। हर दिन की अपनी मुसीबतें काफ़ी हैं।

औरों का मुंसिफ़ बनना

7 दूसरों की अदालत मत करना, वरना
तुम्हारी अदालत भी की जाएगी। 2क्योंकि
जितनी सख़्ती से तुम दूसरों का फ़ैसला करते
हो उतनी सख़्ती से तुम्हारा भी फ़ैसला किया
जाएगा। और जिस पैमाने से तुम नापते हो उसी
पैमाने से तुम भी नापे जाओगे। 3तू क्यों ग़ौर से
अपने भाई की आँख में पड़े तिनके पर नज़र करता
है जबकि तुझे वह शहतीर नज़र नहीं आता जो तेरी
अपनी आँख में है? 4तू क्योंकर अपने भाई से
कह सकता है, 'ठहरो, मुझे तुम्हारी आँख में पड़ा
तिनका निकालने दो,' जबकि तेरी अपनी आँख
में शहतीर है। 5रियाकार! पहले अपनी आँख के
शहतीर को निकाल। तब ही तुझे भाई का तिनका
साफ़ नज़र आएगा और तू उसे अच्छी तरह से
देखकर निकाल सकेगा।
6कुत्तों को मुक़द्दस ख़ुराक मत खिलाना और
सुअरों के आगे अपने मोती न फेंकना। ऐसा न हो
कि वह उन्हें पाँवों तले रौंदें और मुड़कर तुमको
फाड़ डालें।

माँगते रहना

7माँगते रहो तो तुमको दिया जाएगा। ढूँडते रहो
तो तुमको मिल जाएगा। खटखटाते रहो तो तुम्हारे
लिए दरवाज़ा खोल दिया जाएगा। 8क्योंकि जो
भी माँगता है वह पाता है, जो ढूँडता है उसे मिलता
है, और जो खटखटाता है उसके लिए दरवाज़ा
खोल दिया जाता है। 9तुममें से कौन अपने बेटे
को पत्थर देगा अगर वह रोटी माँगे? 10या कौन
उसे साँप देगा अगर वह मछली माँगे? कोई नहीं!
11जब तुम बुरे होने के बावुजूद इतने समझदार
हो कि अपने बच्चों को अच्छी चीज़ें दे सकते हो
तो फिर कितनी ज़्यादा यक़ीनी बात है कि तुम्हारा
आसमानी बाप माँगनेवालों को अच्छी चीज़ें देगा।
12हर बात में दूसरों के साथ वही सुलूक करो
जो तुम चाहते हो कि वह तुम्हारे साथ करें। क्योंकि
यही शरीअत और नबियों की तालीमात का लुब्बे-
लुबाब है।

तंग दरवाज़ा

13तंग दरवाज़े से दाख़िल हो, क्योंकि हलाकत
की तरफ़ ले जानेवाला रास्ता कुशादा और उसका
दरवाज़ा चौड़ा है। बहुत-से लोग उसमें दाख़िल हो
जाते हैं। 14लेकिन ज़िंदगी की तरफ़ ले जानेवाला
रास्ता तंग है और उसका दरवाज़ा छोटा। कम ही
लोग उसे पाते हैं।

हर दरख़्त का अपना फल होता है

15झूटे नबियों से ख़बरदार रहो! गो वह भेड़ों
का भेस बदलकर तुम्हारे पास आते हैं, लेकिन
अंदर से वह ग़ारतगर भेड़िये होते हैं। 16उनका
फल देखकर तुम उन्हें पहचान लोगे। क्या ख़ारदार
झाड़ियों से अंगूर तोड़े जाते हैं या ऊँटकटारों से
अंजीर? हरगिज़ नहीं। 17इसी तरह अच्छा दरख़्त
अच्छा फल लाता है और ख़राब दरख़्त ख़राब
फल। 18न अच्छा दरख़्त ख़राब फल ला सकता
है, न ख़राब दरख़्त अच्छा फल। 19जो भी दरख़्त
अच्छा फल नहीं लाता उसे काटकर आग में झोंका

जाता है। 20यों तुम उनका फल देखकर उन्हें
पहचान लोगे।

सिर्फ़ असल पैरोकार दाख़िल होंगे

21जो मुझे ‘ख़ुदावंद, ख़ुदावंद’ कहते हैं उनमें
से सब आसमान की बादशाही में दाख़िल न होंगे
बल्कि सिर्फ़ वह जो मेरे आसमानी बाप की मरज़ी
पर अमल करते हैं। 22अदालत के दिन बहुत-से
लोग मुझसे कहेंगे, ‘ऐ ख़ुदावंद, ख़ुदावंद! क्या
हमने तेरे ही नाम में नबुव्वत नहीं की, तेरे ही नाम
से बदरूहें नहीं निकालीं, तेरे ही नाम से मोजिज़े
नहीं किए?’ 23उस वक़्त मैं उनसे साफ़ साफ़
कह दूँगा, ‘मेरी कभी तुमसे जान पहचान न थी।
ऐ बदकारो! मेरे सामने से चले जाओ।’

दो क़िस्म के मकान

24लिहाज़ा जो भी मेरी यह बातें सुनकर उन
पर अमल करता है वह उस समझदार आदमी की
मानिंद है जिसने अपने मकान की बुनियाद चट्टान
पर रखी। 25बारिश होने लगी, सैलाब आया और
आँधी मकान को झँझोड़ने लगी। लेकिन वह न
गिरा, क्योंकि उस की बुनियाद चट्टान पर रखी
गई थी।

26लेकिन जो भी मेरी यह बातें सुनकर उन पर
अमल नहीं करता वह उस अहमक़ की मानिंद है
जिसने अपना मकान सहीह बुनियाद डाले बग़ैर
रेत पर तामीर किया। 27जब बारिश होने लगी,
सैलाब आया और आँधी मकान को झँझोड़ने लगी
तो यह मकान धड़ाम से गिर गया।”

ईसा का इख़्तियार

28जब ईसा ने यह बातें ख़त्म कर लीं तो लोग
उस की तालीम सुनकर हक्का-बक्का रह गए,
29क्योंकि वह उनके उलमा की तरह नहीं बल्कि
इख़्तियार के साथ सिखाता था।

कोढ़ से शफ़ा

8 ईसा पहाड़ से उतरा तो बड़ी भीड़ उसके
पीछे चलने लगी। 2फिर एक आदमी
उसके पास आया जो कोढ़ का मरीज़ था। मुँह
के बल गिरकर उसने कहा, “ख़ुदावंद, अगर आप
चाहें तो मुझे पाक-साफ़ कर सकते हैं।”

3ईसा ने अपना हाथ बढ़ाकर उसे छुआ और
कहा, “मैं चाहता हूँ, पाक-साफ़ हो जा।” इस
पर वह फ़ौरन उस बीमारी से पाक-साफ़ हो गया।
4ईसा ने उससे कहा, “ख़बरदार! यह बात किसी
को न बताना बल्कि बैतुल-मुक़द्दस में इमाम के
पास जा ताकि वह तेरा मुआयना करे। अपने साथ
वह क़ुरबानी ले जा जिसका तक़ाज़ा मूसा की
शरीअत उनसे करती है जिन्हें कोढ़ से शफ़ा मिली
है। यों अलानिया तसदीक़ हो जाएगी कि तू वाक़ई
पाक-साफ़ हो गया है।”

रोमी अफ़सर के ग़ुलाम की शफ़ा

5जब ईसा कफ़र्नहूम में दाख़िल हुआ तो सौ
फ़ौजियों पर मुक़र्रर एक अफ़सर उसके पास
आकर उस की मिन्नत करने लगा, 6“ख़ुदावंद,
मेरा ग़ुलाम मफ़लूज हालत में घर में पड़ा है, और
उसे शदीद दर्द हो रहा है।”

7ईसा ने उससे कहा, “मैं आकर उसे शफ़ा
दूँगा।”

8अफ़सर ने जवाब दिया, “नहीं ख़ुदावंद, मैं
इस लायक़ नहीं कि आप मेरे घर जाएँ। बस यहीं
से हुक्म करें तो मेरा ग़ुलाम शफ़ा पा जाएगा।
9क्योंकि मुझे ख़ुद आला अफ़सरों के हुक्म पर
चलना पड़ता है और मेरे मातहत भी फ़ौजी हैं।
एक को कहता हूँ, ‘जा!’ तो वह जाता है और
दूसरे को ‘आ!’ तो वह आता है। इसी तरह मैं
अपने नौकर को हुक्म देता हूँ, ‘यह कर’ तो वह
करता है।”

10यह सुनकर ईसा निहायत हैरान हुआ। उसने
मुड़कर अपने पीछे आनेवालों से कहा, “मैं तुमको
सच बताता हूँ, मैंने इसराईल में भी इस क़िस्म
का ईमान नहीं पाया। 11मैं तुम्हें बताता हूँ, बहुत-
से लोग मशरिक़ और मग़रिब से आकर इब्राहीम,
इसहाक़ और याक़ूब के साथ आसमान की
बादशाही की ज़ियाफ़त में शरीक होंगे। 12लेकिन

बादशाही के असल वारिसों को निकालकर अंधेरे में डाल दिया जाएगा, उस जगह जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते रहेंगे।” 13फिर ईसा अफ़सर से मुख़ातिब हुआ, “जा, तेरे साथ वैसा ही हो जैसा तेरा ईमान है।”

और अफ़सर के ग़ुलाम को उसी घड़ी शफ़ा मिल गई।

बहुत-से मरीज़ों की शफ़ा

14ईसा पतरस के घर में आया। वहाँ उसने पतरस की सास को बिस्तर पर पड़े देखा। उसे बुख़ार था। 15उसने उसका हाथ छू लिया तो बुख़ार उतर गया और वह उठकर उस की ख़िदमत करने लगी।

16शाम हुई तो बदरूहों की गिरिफ़्त में पड़े बहुत-से लोगों को ईसा के पास लाया गया। उसने बदरूहों को हुक्म देकर निकाल दिया और तमाम मरीज़ों को शफ़ा दी। 17यों यसायाह नबी की यह पेशगोई पूरी हुई कि “उसने हमारी कमज़ोरियाँ ले लीं और हमारी बीमारियाँ उठा लीं।”

पैरवी की संजीदगी

18जब ईसा ने अपने गिर्द बड़ा हुजूम देखा तो उसने शागिर्दों को झील पार करने का हुक्म दिया। 19रवाना होने से पहले शरीअत का एक आलिम उसके पास आकर कहने लगा, “उस्ताद, जहाँ भी आप जाएंगे मैं आपके पीछे चलता रहूँगा।”

20ईसा ने जवाब दिया, “लोमड़ियाँ अपने भटों में और परिंदे अपने घोंसलों में आराम कर सकते हैं, लेकिन इब्ने-आदम के पास सर रखकर आराम करने की कोई जगह नहीं।”

21किसी और शागिर्द ने उससे कहा, “ख़ुदावंद, मुझे पहले जाकर अपने बाप को दफ़न करने की इजाज़त दें।”

22लेकिन ईसा ने उसे बताया, “मेरे पीछे हो ले और मुरदों को अपने मुरदे दफ़न करने दे।”

ईसा आँधी को थमा देता है

23फिर वह कश्ती पर सवार हुआ और उसके पीछे उसके शागिर्द भी। 24अचानक झील पर सख़्त आँधी चलने लगी और कश्ती लहरों में डूबने लगी। लेकिन ईसा सो रहा था। 25शागिर्द उसके पास गए और उसे जगाकर कहने लगे, “ख़ुदावंद, हमें बचा, हम तबाह हो रहे हैं!”

26उसने जवाब दिया, “ऐ कमएतक़ादो! घबराते क्यों हो?” खड़े होकर उसने आँधी और मौजों को डाँटा तो लहरें बिलकुल साकित हो गईं। 27शागिर्द हैरान होकर कहने लगे, “यह किस क़िस्म का शख़्स है? हवा और झील भी उसका हुक्म मानती हैं।”

दो बदरूह-गिरिफ़्ता आदमियों की शफ़ा

28वह झील के पार गदरीनियों के इलाक़े में पहुँचे तो बदरूह-गिरिफ़्ता दो आदमी क़ब्रों में से निकलकर ईसा को मिले। वह इतने ख़तरनाक थे कि वहाँ से कोई गुज़र नहीं सकता था। 29चीख़ें मार मारकर उन्होंने कहा, “अल्लाह के फ़रज़ंद, हमारा आपके साथ क्या वास्ता? क्या आप हमें मुक़र्ररा वक़्त से पहले अज़ाब में डालने आए हैं?”

30कुछ फ़ासले पर सुअरों का बड़ा ग़ोल चर रहा था। 31बदरूहों ने ईसा से इल्तिजा की, “अगर आप हमें निकालते हैं तो सुअरों के उस ग़ोल में भेज दें।”

32ईसा ने उन्हें हुक्म दिया, “जाओ।” बदरूहें निकलकर सुअरों में जा घुसीं। इस पर पूरे का पूरा ग़ोल भाग भागकर पहाड़ी की ढलान पर से उतरा और झील में झपटकर डूब मरा। 33यह देखकर सुअरों के गल्लाबान भाग गए। शहर में जाकर उन्होंने लोगों को सब कुछ सुनाया और वह भी जो बदरूह-गिरिफ़्ता आदमियों के साथ हुआ था। 34फिर पूरा शहर निकलकर ईसा को मिलने आया। उसे देखकर उन्होंने उस की मिन्नत की कि हमारे इलाक़े से चले जाएँ।

मफ़लूज आदमी की शफ़ा

9 कश्ती में बैठकर ईसा ने झील को पार
किया और अपने शहर पहुँच गया। 2वहाँ
एक मफ़लूज आदमी को चारपाई पर डालकर
उसके पास लाया गया। उनका ईमान देखकर
ईसा ने कहा, "बेटा, हौसला रख। तेरे गुनाह
मुआफ़ कर दिए गए हैं।"
3यह सुनकर शरीअत के कुछ उलमा दिल में
कहने लगे, "यह कुफ़र बक रहा है!"
4ईसा ने जान लिया कि यह क्या सोच रहे हैं,
इसलिए उसने उनसे पूछा, 5"तुम दिल में बुरी
बातें क्यों सोच रहे हो? क्या मफ़लूज से यह
कहना ज़्यादा आसान है कि 'तेरे गुनाह मुआफ़
कर दिए गए हैं' या यह कि 'उठ और चल-फिर?'
6लेकिन मैं तुमको दिखाता हूँ कि इब्ने-आदम को
वाक़ई दुनिया में गुनाह मुआफ़ करने का इख़्तियार
है।" यह कहकर वह मफ़लूज से मुख़ातिब हुआ,
"उठ, अपनी चारपाई उठाकर घर चला जा।"
7वह आदमी खड़ा हुआ और अपने घर चला
गया। 8यह देखकर हुजूम पर अल्लाह का ख़ौफ़
तारी हो गया और वह अल्लाह की तमजीद
करने लगे कि उसने इनसान को इस क़िस्म का
इख़्तियार दिया है।

मत्ती की बुलाहट

9आगे जाकर ईसा ने एक आदमी को देखा जो
टैक्स लेनेवालों की चौकी पर बैठा था। उसका
नाम मत्ती था। ईसा ने उससे कहा, "मेरे पीछे हो
ले।" और मत्ती उठकर उसके पीछे हो लिया।
10बाद में ईसा मत्ती के घर में खाना खा रहा था।
बहुत-से टैक्स लेनेवाले और गुनाहगार भी आकर
ईसा और उसके शागिर्दों के साथ खाने में शरीक
हुए। 11यह देखकर फ़रीसियों ने उसके शागिर्दों
से पूछा, "आपका उस्ताद टैक्स लेनेवालों और
गुनाहगारों के साथ क्यों खाता है?"
12यह सुनकर ईसा ने कहा, "सेहतमंदों को
डाक्टर की ज़रूरत नहीं होती बल्कि मरीज़ों को।
13पहले जाओ और कलामे-मुक़द्दस की इस बात
का मतलब जान लो कि 'मैं क़ुरबानी नहीं बल्कि
रहम पसंद करता हूँ।' क्योंकि मैं रास्तबाज़ों को
नहीं बल्कि गुनाहगारों को बुलाने आया हूँ।"

शागिर्द रोज़ा क्यों नहीं रखते?

14फिर यहया के शागिर्द उसके पास आए
और पूछा, "आपके शागिर्द रोज़ा क्यों नहीं रखते
जबकि हम और फ़रीसी रोज़ा रखते हैं?"
15ईसा ने जवाब दिया, "शादी के मेहमान
किस तरह मातम कर सकते हैं जब तक दूल्हा
उनके दरमियान है? लेकिन एक दिन आएगा जब
दूल्हा उनसे ले लिया जाएगा। उस वक़्त वह ज़रूर
रोज़ा रखेंगे।
16कोई भी नए कपड़े का टुकड़ा किसी पुराने
लिबास में नहीं लगाता। अगर वह ऐसा करे तो
नया टुकड़ा बाद में सुकड़कर पुराने लिबास से
अलग हो जाएगा। यों पुराने लिबास की फटी हुई
जगह पहले की निसबत ज़्यादा ख़राब हो जाएगी।
17इसी तरह अंगूर का ताज़ा रस पुरानी और बे-
लचक मशकों में नहीं डाला जाता। अगर ऐसा
किया जाए तो पुरानी मशकें पैदा होनेवाली गैस
के बाइस फट जाएँगी। नतीजे में मै और मशकें
दोनों ज़ाया हो जाएँगी। इसलिए अंगूर का ताज़ा
रस नई मशकों में डाला जाता है जो लचकदार
होती हैं। यों रस और मशकें दोनों ही महफ़ूज़ रहते
हैं।"

याईर की बेटी और बीमार औरत

18ईसा अभी यह बयान कर रहा था कि एक
यहूदी राहनुमा ने गिरकर उसे सिजदा किया और
कहा, "मेरी बेटी अभी अभी मरी है। लेकिन
आकर अपना हाथ उस पर रखें तो वह दुबारा ज़िंदा
हो जाएगी।"
19ईसा उठकर अपने शागिर्दों समेत उसके
साथ हो लिया।
20चलते चलते एक औरत ने पीछे से आकर
ईसा के लिबास का किनारा छुआ। यह औरत
बारह साल से ख़ून बहने की मरीज़ा थी 21और

वह सोच रही थी, “अगर मैं सिर्फ़ उसके लिबास
को ही छू लूँ तो शफ़ा पा लूँगी।”
22ईसा ने मुड़कर उसे देखा और कहा, “बेटी,
हौसला रख! तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया है।”
और औरत को उसी वक़्त शफ़ा मिल गई।
23फिर ईसा राहनुमा के घर में दाख़िल हुआ।
बाँसरी बजानेवाले और बहुत-से लोग पहुँच चुके थे
और बहुत शोर-शराबा था। यह देखकर 24ईसा ने
कहा, “निकल जाओ! लड़की मर नहीं गई बल्कि
सो रही है।” लोग हँसकर उसका मज़ाक़ उड़ाने
लगे। 25लेकिन जब सबको निकाल दिया गया तो
वह अंदर गया। उसने लड़की का हाथ पकड़ा तो
वह उठ खड़ी हुई। 26इस मोजिज़े की ख़बर उस
पूरे इलाक़े में फैल गई।

दो अंधों की शफ़ा

27जब ईसा वहाँ से रवाना हुआ तो दो अंधे
उसके पीछे चलकर चिल्लाने लगे, “इब्ने-दाऊद,
हम पर रहम करें।”
28जब ईसा किसी के घर में दाख़िल हुआ तो
वह उसके पास आए। ईसा ने उनसे पूछा, “क्या
तुम्हारा ईमान है कि मैं यह कर सकता हूँ?”
उन्होंने जवाब दिया, “जी, ख़ुदावंद।”
29फिर उसने उनकी आँखें छूकर कहा, “तुम्हारे
साथ तुम्हारे ईमान के मुताबिक़ हो जाए।”
30उनकी आँखें बहाल हो गईं और ईसा ने सख़्ती
से उन्हें कहा, “ख़बरदार, किसी को भी इसका
पता न चले!”
31लेकिन वह निकलकर पूरे इलाक़े में उस की
ख़बर फैलाने लगे।

गूँगे आदमी की शफ़ा

32जब वह निकल रहे थे तो एक गूँगा आदमी
ईसा के पास लाया गया जो किसी बदरूह के
क़ब्ज़े में था। 33जब बदरूह को निकाला गया तो
गूँगा बोलने लगा। हुजूम हैरान रह गया। उन्होंने
कहा, “ऐसा काम इसराईल में कभी नहीं देखा
गया।”
34लेकिन फ़रीसियों ने कहा, “वह बदरूहों के
सरदार ही की मदद से बदरूहों को निकालता है।”

ईसा को लोगों पर तरस आता है

35और ईसा सफ़र करते करते तमाम शहरों
और गाँवों में से गुज़रा। जहाँ भी वह पहुँचा वहाँ
उसने उनके इबादतख़ानों में तालीम दी, बादशाही
की ख़ुशख़बरी सुनाई और हर क़िस्म के मरज़ और
अलालत से शफ़ा दी। 36हुजूम को देखकर उसे
उन पर बड़ा तरस आया, क्योंकि वह पिसे हुए
और बेबस थे, ऐसी भेड़ों की तरह जिनका चरवाहा
न हो। 37उसने अपने शागिर्दों से कहा, “फ़सल
बहुत है, लेकिन मज़दूर कम। 38इसलिए फ़सल
के मालिक से गुज़ारिश करो कि वह अपनी फ़सल
काटने के लिए मज़ीद मज़दूर भेज दे।”

बारह रसूलों को इख़्तियार दिया जाता है

10 फिर ईसा ने अपने बारह रसूलों को
बुलाकर उन्हें नापाक रूहें निकालने
और हर क़िस्म के मरज़ और अलालत से शफ़ा
देने का इख़्तियार दिया। 2बारह रसूलों के नाम यह
हैं : पहला शमाऊन जो पतरस भी कहलाता है,
फिर उसका भाई अंदरियास, याक़ूब बिन ज़बदी
और उसका भाई यूहन्ना, 3फ़िलिप्पुस, बर-
तुलमाई, तोमा, मत्ती (जो टैक्स लेनेवाला था),
याक़ूब बिन हलफ़ई, तद्दी, 4शमाऊन मुजाहिद
और यहूदाह इस्करियोती जिसने बाद में उसे
दुश्मनों के हवाले कर दिया।

रसूलों को तबलीग़ के लिए भेजा जाता है

5इन बारह मर्दों को ईसा ने भेज दिया।
साथ साथ उसने उन्हें हिदायत दी, “ग़ैरयहूदी
आबादियों में न जाना, न किसी सामरी शहर
में, 6बल्कि सिर्फ़ इसराईल की खोई हुई भेड़ों
के पास। 7और चलते चलते मुनादी करते जाओ
कि ‘आसमान की बादशाही क़रीब आ चुकी
है।’ 8बीमारों को शफ़ा दो, मुरदों को ज़िंदा
करो, कोढ़ियों को पाक-साफ़ करो, बदरूहों को

निकालो। तुमको मुफ़्त में मिला है, मुफ़्त में ही
बाँटना। 9अपने कमरबंद में पैसे न रखना—न
सोने, न चाँदी और न ताँबे के सिक्के। 10न सफ़र
के लिए बैग हो, न एक से ज़्यादा सूट, न जूते,
न लाठी। क्योंकि मज़दूर अपनी रोज़ी का हक़दार
है।

11जिस शहर या गाँव में दाख़िल होते हो उसमें
किसी लायक़ शख़्स का पता करो और रवाना होते
वक़्त तक उसी के घर में ठहरो। 12घर में दाख़िल
होते वक़्त उसे दुआए-ख़ैर दो। 13अगर वह घर
इस लायक़ होगा तो जो सलामती तुमने उसके
लिए माँगी है वह उस पर आकर ठहरी रहेगी।
अगर नहीं तो यह सलामती तुम्हारे पास लौट
आएगी। 14अगर कोई घराना या शहर तुमको
क़बूल न करे, न तुम्हारी सुने तो रवाना होते वक़्त
उस जगह की गर्द अपने पाँवों से झाड़ देना। 15मैं
तुम्हें सच बताता हूँ, अदालत के दिन उस शहर
की निसबत सदूम और अमूरा के इलाक़े का हाल
ज़्यादा क़ाबिले-बरदाश्त होगा।

आनेवाली ईज़ारसानियाँ

16देखो, मैं तुम भेड़ों को भेड़ियों में भेज रहा
हूँ। इसलिए साँपों की तरह होशियार और कबूतरों
की तरह मासूम बनो। 17लोगों से ख़बरदार रहो,
क्योंकि वह तुमको मक़ामी अदालतों के हवाले
करके अपने इबादतख़ानों में कोड़े लगवाएँगे।
18मेरी ख़ातिर तुम्हें हुक्मरानों और बादशाहों के
सामने पेश किया जाएगा और यों तुमको उन्हें
और ग़ैरयहूदियों को गवाही देने का मौक़ा मिलेगा।
19जब वह तुम्हें गिरिफ़्तार करेंगे तो यह सोचते
सोचते परेशान न हो जाना कि मैं क्या कहूँ या
किस तरह बात करूँ। उस वक़्त तुमको बताया
जाएगा कि क्या कहना है, 20क्योंकि तुम ख़ुद
बात नहीं करोगे बल्कि तुम्हारे बाप का रूह तुम्हारी
मारिफ़त बोलेगा।

21भाई अपने भाई को और बाप अपने बच्चे
को मौत के हवाले करेगा। बच्चे अपने वालिदैन के
ख़िलाफ़ खड़े होकर उन्हें क़त्ल करवाएँगे। 22सब
तुमसे नफ़रत करेंगे, इसलिए कि तुम मेरे पैरोकार
हो। लेकिन जो आख़िर तक क़ायम रहेगा उसे
नजात मिलेगी। 23जब वह एक शहर में तुम्हें
सताएँगे तो किसी दूसरे शहर को हिजरत कर
जाना। मैं तुमको सच बताता हूँ कि इब्ने-आदम
की आमद तक तुम इसराईल के तमाम शहरों तक
नहीं पहुँच पाओगे।

24शागिर्द अपने उस्ताद से बड़ा नहीं होता,
न ग़ुलाम अपने मालिक से। 25शागिर्द को इस
पर इकतिफ़ा करना है कि वह अपने उस्ताद की
मानिंद हो, और इसी तरह ग़ुलाम को कि वह अपने
मालिक की मानिंद हो। घराने के सरपरस्त को
अगर बदरूहों का सरदार बाल-ज़बूल क़रार दिया
गया है तो उसके घरवालों को क्या कुछ न कहा
जाएगा।

किससे डरना है?

26उनसे मत डरना, क्योंकि जो कुछ अभी छुपा
हुआ है उसे आख़िर में ज़ाहिर किया जाएगा, और
जो कुछ भी इस वक़्त पोशीदा है उसका राज़
आख़िर में खुल जाएगा। 27जो कुछ मैं तुम्हें अंधेरे
में सुना रहा हूँ उसे रोज़े-रौशन में सुना देना। और
जो कुछ आहिस्ता आहिस्ता तुम्हारे कान में बताया
गया है उसका छतों से एलान करो। 28उनसे ख़ौफ़
मत खाना जो तुम्हारी रूह को नहीं बल्कि सिर्फ़
तुम्हारे जिस्म को क़त्ल कर सकते हैं। अल्लाह
से डरो जो रूह और जिस्म दोनों को जहन्नुम में
डालकर हलाक कर सकता है। 29क्या चिड़ियों
का जोड़ा कम पैसों में नहीं बिकता? ताहम उनमें
से एक भी तुम्हारे बाप की इजाज़त के बग़ैर ज़मीन
पर नहीं गिर सकती। 30न सिर्फ़ यह बल्कि तुम्हारे
सर के सब बाल भी गिने हुए हैं। 31लिहाज़ा मत
डरो। तुम्हारी क़दरो-क़ीमत बहुत-सी चिड़ियों से
कहीं ज़्यादा है।

मसीह का इक़रार या इनकार करने का नतीजा

32जो भी लोगों के सामने मेरा इक़रार करे
उसका इक़रार मैं ख़ुद भी अपने आसमानी बाप के
सामने करूँगा। 33लेकिन जो भी लोगों के सामने
मेरा इनकार करे उसका मैं भी अपने आसमानी
बाप के सामने इनकार करूँगा।

ईसा सुलह-सलामती का बाइस नहीं

34यह मत समझो कि मैं दुनिया में सुलह-
सलामती क़ायम करने आया हूँ। मैं सुलह-
सलामती नहीं बल्कि तलवार चलवाने आया हूँ।
35मैं बेटे को उसके बाप के ख़िलाफ़ खड़ा करने
आया हूँ, बेटी को उस की माँ के ख़िलाफ़ और
बहू को उस की सास के ख़िलाफ़। 36इनसान के
दुश्मन उसके अपने घरवाले होंगे।

37जो अपने बाप या माँ को मुझसे ज़्यादा प्यार
करे वह मेरे लायक़ नहीं। जो अपने बेटे या बेटी
को मुझसे ज़्यादा प्यार करे वह मेरे लायक़ नहीं।
38जो अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे न हो ले वह
मेरे लायक़ नहीं। 39जो भी अपनी जान को बचाए
वह उसे खो देगा, लेकिन जो अपनी जान को मेरी
ख़ातिर खो दे वह उसे पाएगा।

ईसा और उसके पैरोकारों को क़बूल करने का अज्र

40जो तुम्हें क़बूल करे वह मुझे क़बूल करता है,
और जो मुझे क़बूल करता है वह उसको क़बूल
करता है जिसने मुझे भेजा है। 41जो किसी नबी
को क़बूल करे उसे नबी का-सा अज्र मिलेगा। और
जो किसी रास्तबाज़ शख़्स को उस की रास्तबाज़ी
के सबब से क़बूल करे उसे रास्तबाज़ शख़्स का-
सा अज्र मिलेगा। 42मैं तुमको सच बताता हूँ कि
जो इन छोटों में से किसी एक को मेरा शागिर्द होने
के बाइस ठंडे पानी का गलास भी पिलाए उसका
अज्र क़ायम रहेगा।”

यहया का ईसा से सवाल

11 अपने शागिर्दों को यह हिदायात देने
के बाद ईसा उनके शहरों में तालीम
देने और मुनादी करने के लिए रवाना हुआ।

2यहया ने जो उस वक़्त जेल में था सुना कि
ईसा क्या क्या कर रहा है। इस पर उसने अपने
शागिर्दों को उसके पास भेज दिया 3ताकि वह
उससे पूछें, “क्या आप वही हैं जिसे आना है या
हम किसी और के इंतज़ार में रहें?”

4ईसा ने जवाब दिया, “यहया के पास वापस
जाकर उसे सब कुछ बता देना जो तुमने देखा
और सुना है। 5‘अंधे देखते, लँगड़े चलते-फिरते
हैं, कोढ़ियों को पाक-साफ़ किया जाता है, बहरे
सुनते हैं, मुरदों को ज़िंदा किया जाता है और
ग़रीबों को अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाई जाती
है।’ 6मुबारक है वह जो मेरे सबब से ठोकर खाकर
बरगश्ता नहीं होता।”

7यहया के यह शागिर्द चले गए तो ईसा हुजूम
से यहया के बारे में बात करने लगा, “तुम
रेगिस्तान में क्या देखने गए थे? एक सरकंडा जो
हवा के हर झोंके से हिलता है? बेशक नहीं। 8या
क्या वहाँ जाकर ऐसे आदमी की तवक़्क़ो कर रहे
थे जो नफ़ीस और मुलायम लिबास पहने हुए है?
नहीं, जो शानदार कपड़े पहनते हैं वह शाही महलों
में पाए जाते हैं। 9तो फिर तुम क्या देखने गए थे?
एक नबी को? बिलकुल सहीह, बल्कि मैं तुमको
बताता हूँ कि वह नबी से भी बड़ा है। 10उसी
के बारे में कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, ‘देख, मैं
अपने पैग़ंबर को तेरे आगे आगे भेज देता हूँ जो
तेरे सामने रास्ता तैयार करेगा।’ 11मैं तुमको सच
बताता हूँ कि इस दुनिया में पैदा होनेवाला कोई
भी शख़्स यहया से बड़ा नहीं है। तो भी आसमान
की बादशाही में दाख़िल होनेवाला सबसे छोटा
शख़्स उससे बड़ा है। 12यहया बपतिस्मा देनेवाले
की ख़िदमत से लेकर आज तक आसमान की
बादशाही पर ज़बरदस्ती की जा रही है, और
ज़बरदस्त उसे छीन रहे हैं। 13क्योंकि तमाम नबी

और तौरेत ने यहया के दौर तक इसके बारे में
पेशगोई की है। 14और अगर तुम यह मानने के
लिए तैयार हो तो मानो कि वह इलियास नबी है
जिसे आना था। 15जो सुन सकता है वह सुन ले!
16मैं इस नसल को किससे तशबीह दूँ? वह
उन बच्चों की मानिंद हैं जो बाज़ार में बैठे खेल
रहे हैं। उनमें से कुछ ऊँची आवाज़ से दूसरे बच्चों
से शिकायत कर रहे हैं, 17‘हमने बाँसरी बजाई
तो तुम न नाचे। फिर हमने नोहा के गीत गाए,
लेकिन तुमने छाती पीटकर मातम न किया।’
18देखो, यहया आया और न खाया, न पिया।
यह देखकर लोग कहते हैं कि उसमें बदरूह है।
19फिर इब्ने-आदम खाता और पीता हुआ आया।
अब कहते हैं, ‘देखो यह कैसा पेटू और शराबी
है। और वह टैक्स लेनेवालों और गुनाहगारों का
दोस्त भी है।’ लेकिन हिकमत अपने आमाल से
ही सहीह साबित हुई है।”

तौबा न करनेवाले शहरों पर अफ़सोस

20फिर ईसा उन शहरों को डाँटने लगा जिनमें
उसने ज़्यादा मोजिज़े किए थे, क्योंकि उन्होंने
तौबा नहीं की थी। 21“ऐ ख़ुराज़ीन, तुझ पर
अफ़सोस! बैत-सैदा, तुझ पर अफ़सोस! अगर
सूर और सैदा में वह मोजिज़े किए गए होते जो
तुममें हुए तो वहाँ के लोग कब के टाट ओढ़कर
और सर पर राख डालकर तौबा कर चुके होते।
22जी हाँ, अदालत के दिन तुम्हारी निसबत सूर
और सैदा का हाल ज़्यादा क़ाबिले-बरदाश्त होगा।
23और ऐ कफ़र्नहूम, क्या तुझे आसमान तक
सरफ़राज़ किया जाएगा? हरगिज़ नहीं, बल्कि तू
उतरता उतरता पाताल तक पहुँचेगा। अगर सदूम
में वह मोजिज़े किए गए होते जो तुझमें हुए हैं तो
वह आज तक क़ायम रहता। 24हाँ, अदालत के
दिन तेरी निसबत सदूम का हाल ज़्यादा क़ाबिले-
बरदाश्त होगा।”

बाप की तमजीद

25उस वक़्त ईसा ने कहा, “ऐ बाप,
आसमानो-ज़मीन के मालिक! मैं तेरी तमजीद
करता हूँ कि तूने यह बातें दानाओं और अक़्लमंदों
से छुपाकर छोटे बच्चों पर ज़ाहिर कर दी हैं। 26हाँ
मेरे बाप, यही तुझे पसंद आया।
27मेरे बाप ने सब कुछ मेरे सुपुर्द कर दिया है।
कोई भी फ़रज़ंद को नहीं जानता सिवाए बाप के।
और कोई बाप को नहीं जानता सिवाए फ़रज़ंद
के और उन लोगों के जिन पर फ़रज़ंद बाप को
ज़ाहिर करना चाहता है।
28ऐ थकेमाँदे और बोझ तले दबे हुए लोगो,
सब मेरे पास आओ! मैं तुमको आराम दूँगा।
29मेरा जुआ अपने ऊपर उठाकर मुझसे सीखो,
क्योंकि मैं हलीम और नरमदिल हूँ। यों करने से
तुम्हारी जानें आराम पाएँगी, 30क्योंकि मेरा जुआ
मुलायम और मेरा बोझ हलका है।”

सबत के बारे में सवाल

12 उन दिनों में ईसा अनाज के खेतों में
से गुज़र रहा था। सबत का दिन था।
चलते चलते उसके शागिर्दों को भूक लगी और
वह अनाज की बालें तोड़ तोड़कर खाने लगे।
2यह देखकर फ़रीसियों ने ईसा से शिकायत की,
“देखो, आपके शागिर्द ऐसा काम कर रहे हैं जो
सबत के दिन मना है।”
3ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुमने नहीं पढ़ा
कि दाऊद ने क्या किया जब उसे और उसके
साथियों को भूक लगी? 4वह अल्लाह के घर
में दाख़िल हुआ और अपने साथियों समेत रब
के लिए मख़सूसशुदा रोटियाँ खाईं, अगरचे उन्हें
इसकी इजाज़त नहीं थी बल्कि सिर्फ़ इमामों
को? 5या क्या तुमने तौरेत में नहीं पढ़ा कि गो
इमाम सबत के दिन बैतुल-मुक़द्दस में ख़िदमत
करते हुए आराम करने का हुक्म तोड़ते हैं तो
भी वह बेइलज़ाम ठहरते हैं? 6मैं तुम्हें बताता
हूँ कि यहाँ वह है जो बैतुल-मुक़द्दस से अफ़ज़ल
है। 7कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, ‘मैं क़ुरबानी

नहीं बल्कि रहम पसंद करता हूँ।' अगर तुम
इसका मतलब समझते तो बेक़ुसूरों को मुजरिम न
ठहराते। 8क्योंकि इब्ने-आदम सबत का मालिक
है।"

सूखे हाथवाले आदमी की शफ़ा

9वहाँ से चलते चलते वह उनके इबा-
दतख़ाने में दाख़िल हुआ। 10उसमें एक आदमी
था जिसका हाथ सूखा हुआ था। लोग ईसा पर
इलज़ाम लगाने का कोई बहाना तलाश कर रहे
थे, इसलिए उन्होंने उससे पूछा, "क्या शरीअत
सबत के दिन शफ़ा देने की इजाज़त देती है?"

11ईसा ने जवाब दिया, "अगर तुममें से किसी
की भेड़ सबत के दिन गढ़े में गिर जाए तो
क्या उसे नहीं निकालोगे? 12और भेड़ की
निसबत इनसान की कितनी ज़्यादा क़दरो-क़ीमत
है! ग़रज़ शरीअत नेक काम करने की इजाज़त
देती है।" 13फिर उसने उस आदमी से जिसका
हाथ सूखा हुआ था कहा, "अपना हाथ आगे
बढ़ा।"

उसने ऐसा किया तो उसका हाथ दूसरे हाथ
की मानिंद तनदुरुस्त हो गया। 14इस पर फ़रीसी
निकलकर आपस में ईसा को क़त्ल करने की
साज़िशें करने लगे।

अल्लाह का चुना हुआ ख़ादिम

15जब ईसा ने यह जान लिया तो वह वहाँ से
चला गया। बहुत-से लोग उसके पीछे चल रहे थे।
उसने उनके तमाम मरीज़ों को शफ़ा देकर 16उन्हें
ताकीद की, "किसी को मेरे बारे में न बताओ।"
17यों यसायाह नबी की यह पेशगोई पूरी हुई,

18'देखो, मेरा ख़ादिम
जिसे मैंने चुन लिया है,
मेरा प्यारा जो मुझे पसंद है।
मैं अपने रूह को उस पर डालूँगा,
और वह अक़वाम में
इनसाफ़ का एलान करेगा।
19वह न तो झगड़ेगा, न चिल्लाएगा।
गलियों में उस की आवाज़ सुनाई
नहीं देगी।
20न वह कुचले हुए सरकंडे को तोड़ेगा,
न बुझती हुई बत्ती को बुझाएगा
जब तक वह इनसाफ़ को ग़लबा न बख़्शे।
21उसी के नाम से क़ौमें उम्मीद रखेंगी।'

ईसा और बदरूहों का सरदार

22फिर एक आदमी को ईसा के पास लाया
गया जो बदरूह की गिरिफ़्त में था। वह अंधा और
गूँगा था। ईसा ने उसे शफ़ा दी तो गूँगा बोलने
और देखने लगा। 23हुजूम के तमाम लोग हक्का-
बक्का रह गए और पूछने लगे, "क्या यह इब्ने-
दाऊद नहीं?"

24लेकिन जब फ़रीसियों ने यह सुना तो उन्होंने
कहा, "यह सिर्फ़ बदरूहों के सरदार बाल-ज़बूल
की मारिफ़त बदरूहों को निकालता है।"

25उनके यह ख़यालात जानकर ईसा ने उनसे
कहा, "जिस बादशाही में फूट पड़ जाए वह तबाह
हो जाएगी। और जिस शहर या घराने की ऐसी
हालत हो वह भी क़ायम नहीं रह सकता। 26इसी
तरह अगर इबलीस अपने आपको निकाले तो
फिर उसमें फूट पड़ गई है। इस सूरत में उस
की बादशाही किस तरह क़ायम रह सकती है?
27और अगर मैं बदरूहों को बाल-ज़बूल की मदद
से निकालता हूँ तो तुम्हारे बेटे उन्हें किसके ज़रीए
निकालते हैं? चुनाँचे वही इस बात में तुम्हारे
मुंसिफ़ होंगे। 28लेकिन अगर मैं अल्लाह के रूह
की मारिफ़त बदरूहों को निकाल देता हूँ तो फिर
अल्लाह की बादशाही तुम्हारे पास पहुँच चुकी है।

29किसी ज़ोरावर आदमी के घर में घुसकर
उसका मालो-असबाब लूटना किस तरह मुमकिन
है जब तक कि उसे बाँधा न जाए? फिर ही उसे
लूटा जा सकता है।

30जो मेरे साथ नहीं वह मेरे ख़िलाफ़ है और
जो मेरे साथ जमा नहीं करता वह बिखेरता है।
31ग़रज़ मैं तुमको बताता हूँ कि इनसान का
हर गुनाह और कुफ़र मुआफ़ किया जा सकेगा

सिवाए रूहुल-क़ुद्स के ख़िलाफ़ कुफ़र बकने
के। इसे मुआफ़ नहीं किया जाएगा। 32जो इब्ने-
आदम के ख़िलाफ़ बात करे उसे मुआफ़ किया
जा सकेगा, लेकिन जो रूहुल-क़ुद्स के ख़िलाफ़
बात करे उसे न इस जहान में और न आनेवाले
जहान में मुआफ़ किया जाएगा।

दरख़्त उसके फल से पहचाना जाता है

33अच्छे फल के लिए अच्छे दरख़्त की ज़रूरत
होती है। ख़राब दरख़्त से ख़राब फल मिलता है।
दरख़्त उसके फल से ही पहचाना जाता है। 34ऐ
साँप के बच्चो! तुम जो बुरे हो किस तरह अच्छी
बातें कर सकते हो? क्योंकि जिस चीज़ से दिल
लबरेज़ होता है वह छलककर ज़बान पर आ जाती
है। 35अच्छा शख़्स अपने दिल के अच्छे ख़ज़ाने से
अच्छी चीज़ें निकालता है जबकि बुरा शख़्स अपने
बुरे ख़ज़ाने से बुरी चीज़ें।

36मैं तुमको बताता हूँ कि क़ियामत के दिन
लोगों को बेपरवाई से की गई हर बात का हिसाब
देना पड़ेगा। 37तुम्हारी अपनी बातों की बिना पर
तुमको रास्त या नारास्त ठहराया जाएगा।”

इलाही निशान का तक़ाज़ा

38फिर शरीअत के कुछ उलमा और फ़रीसियों
ने ईसा से बात की, “उस्ताद, हम आपकी तरफ़
से इलाही निशान देखना चाहते हैं।”

39उसने जवाब दिया, “सिर्फ़ शरीर और
ज़िनाकार नसल इलाही निशान का तक़ाज़ा
करती है। लेकिन उसे कोई भी इलाही निशान पेश
नहीं किया जाएगा सिवाए यूनुस नबी के निशान
के। 40क्योंकि जिस तरह यूनुस तीन दिन और
तीन रात मछली के पेट में रहा उसी तरह इब्ने-
आदम भी तीन दिन और तीन रात ज़मीन की
गोद में पड़ा रहेगा। 41क़ियामत के दिन नीनवा
के बाशिंदे इस नसल के साथ खड़े होकर इसे
मुजरिम ठहराएँगे। क्योंकि यूनुस के एलान पर
उन्होंने तौबा की थी जबकि यहाँ वह है जो यूनुस
से भी बड़ा है। 42उस दिन जुनूबी मुल्क सबा की
मलिका भी इस नसल के साथ खड़ी होकर इसे
मुजरिम क़रार देगी। क्योंकि वह दूर-दराज़ मुल्क
से सुलेमान की हिकमत सुनने के लिए आई थी
जबकि यहाँ वह है जो सुलेमान से भी बड़ा है।

बदरूह की वापसी

43जब कोई बदरूह किसी शख़्स से निकलती है
तो वह वीरान इलाक़ों में से गुज़रती हुई आराम की
जगह तलाश करती है। लेकिन जब उसे कोई ऐसा
मक़ाम नहीं मिलता 44तो वह कहती है, ‘मैं अपने
उस घर में वापस चली जाऊँगी जिसमें से निकली
थी।’ वह वापस आकर देखती है कि घर ख़ाली है
और किसी ने झाड़ू देकर सब कुछ सलीक़े से रख
दिया है। 45फिर वह जाकर सात और बदरूहें ढूँड
लाती है जो उससे बदतर होती हैं, और वह सब
उस शख़्स में घुसकर रहने लगती हैं। चुनाँचे अब
उस आदमी की हालत पहले की निसबत ज़्यादा
बुरी हो जाती है। इस शरीर नसल का भी यही
हाल होगा।”

ईसा की माँ और भाई

46ईसा अभी हुजूम से बात कर ही रहा था कि
उस की माँ और भाई बाहर खड़े उससे बात करने
की कोशिश करने लगे। 47किसी ने ईसा से कहा,
“आपकी माँ और भाई बाहर खड़े हैं और आपसे
बात करना चाहते हैं।”

48ईसा ने पूछा, “कौन है मेरी माँ और कौन
हैं मेरे भाई?” 49फिर अपने हाथ से शागिर्दों
की तरफ़ इशारा करके उसने कहा, “देखो, यह
मेरी माँ और मेरे भाई हैं। 50क्योंकि जो भी मेरे
आसमानी बाप की मरज़ी पूरी करता है वह मेरा
भाई, मेरी बहन और मेरी माँ है।”

बीज बोनेवाले की तमसील

13 उसी दिन ईसा घर से निकलकर
झील के किनारे बैठ गया। 2इत-
ना बड़ा हुजूम उसके गिर्द जमा हो गया कि
आख़िरकार वह एक कश्ती में बैठ गया जबकि

लोग किनारे पर खड़े रहे। 3फिर उसने उन्हें बहुत-
सी बातें तमसीलों में सुनाईं।

“एक किसान बीज बोने के लिए निकला।
4जब बीज इधर-उधर बिखर गया तो कुछ दाने
रास्ते पर गिरे और परिंदों ने आकर उन्हें चुग
लिया। 5कुछ पथरीली ज़मीन पर गिरे जहाँ मिट्टी
की कमी थी। वह जल्द उग आए क्योंकि मिट्टी
गहरी नहीं थी। 6लेकिन जब सूरज निकला तो
पौदे झुलस गए और चूँकि वह जड़ न पकड़ सके
इसलिए सूख गए। 7कुछ ख़ुदरौ काँटेदार पौदों के
दरमियान भी गिरे। वहाँ वह उगने तो लगे, लेकिन
ख़ुदरौ पौदों ने साथ साथ बढ़कर उन्हें फलने-
फूलने न दिया। चुनाँचे वह भी ख़त्म हो गए।
8लेकिन ऐसे दाने भी थे जो ज़रख़ेज़ ज़मीन में
गिरे और बढ़ते बढ़ते तीस गुना, साठ गुना बल्कि
सौ गुना तक ज़्यादा फल लाए। 9जो सुन सकता
है वह सुन ले!”

तमसीलों का मक़सद

10शागिर्द उसके पास आकर पूछने लगे, “आप
लोगों से तमसीलों में बात क्यों करते हैं?”

11उसने जवाब दिया, “तुमको तो आस-
मान की बादशाही के भेद समझने की लियाक़त
दी गई है, लेकिन उन्हें यह लियाक़त नहीं दी गई।
12जिसके पास कुछ है उसे और दिया जाएगा
और उसके पास कसरत की चीज़ें होंगी। लेकिन
जिसके पास कुछ नहीं है उससे वह भी छीन
लिया जाएगा जो उसके पास है। 13इसलिए मैं
तमसीलों में उनसे बात करता हूँ। क्योंकि वह
देखते हुए कुछ नहीं देखते, वह सुनते हुए कुछ नहीं
सुनते और कुछ नहीं समझते। 14उनमें यसायाह
नबी की यह पेशगोई पूरी हो रही है :

‘तुम अपने कानों से सुनोगे
मगर कुछ नहीं समझोगे,
तुम अपनी आँखों से देखोगे
मगर कुछ नहीं जानोगे।
15क्योंकि इस क़ौम का दिल बेहिस
हो गया है।
वह मुश्किल से अपने कानों से सुनते हैं,
उन्होंने अपनी आँखों को बंद कर रखा है,
ऐसा न हो कि वह अपनी आँखों से देखें,
अपने कानों से सुनें,
अपने दिल से समझें,
मेरी तरफ़ रुजू करें
और मैं उन्हें शफ़ा दूँ।’

16लेकिन तुम्हारी आँखें मुबारक हैं क्योंकि वह
देख सकती हैं और तुम्हारे कान मुबारक हैं क्योंकि
वह सुन सकते हैं। 17मैं तुमको सच बताता हूँ
कि जो कुछ तुम देख रहे हो बहुत-से नबी और
रास्तबाज़ इसे देख न पाए अगरचे वह इसके
आरज़ूमंद थे। और जो कुछ तुम सुन रहे हो इसे
वह सुनने न पाए, अगरचे वह इसके ख़ाहिशमंद
थे।

बीज बोनेवाले की तमसील का मतलब

18अब सुनो कि बीज बोनेवाले की तम-
सील का मतलब क्या है। 19रास्ते पर गिरे हुए
दाने वह लोग हैं जो बादशाही का कलाम सुनते तो
हैं, लेकिन उसे समझते नहीं। फिर इबलीस आकर
वह कलाम छीन लेता है जो उनके दिलों में बोया
गया है। 20पथरीली ज़मीन पर गिरे हुए दाने वह
लोग हैं जो कलाम सुनते ही उसे ख़ुशी से क़बूल
तो कर लेते हैं, 21लेकिन वह जड़ नहीं पकड़ते
और इसलिए ज़्यादा देर तक क़ायम नहीं रहते।
ज्योंही वह कलाम पर ईमान लाने के बाइस किसी
मुसीबत या ईज़ारसानी से दोचार हो जाएँ तो वह
बरगश्ता हो जाते हैं। 22ख़ुदरौ काँटेदार पौदों के
दरमियान गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम
सुनते तो हैं, लेकिन फिर रोज़मर्रा की परेशानियाँ
और दौलत का फ़रेब कलाम को फलने-फूलने
नहीं देता। नतीजे में वह फल लाने तक नहीं
पहुँचता। 23इसके मुक़ाबले में ज़रख़ेज़ ज़मीन में
गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम को सुनकर
उसे समझ लेते और बढ़ते बढ़ते तीस गुना, साठ
गुना बल्कि सौ गुना तक फल लाते हैं।”

ख़ुदरौ पौदों की तमसील

24ईसा ने उन्हें एक और तमसील सुनाई।
“आसमान की बादशाही उस किसान से
मुताबिक़त रखती है जिसने अपने खेत में अच्छा
बीज बो दिया। 25लेकिन जब लोग सो रहे थे
तो उसके दुश्मन ने आकर अनाज के पौदों के
दरमियान ख़ुदरौ पौदों का बीज बो दिया। फिर
वह चला गया। 26जब अनाज फूट निकला और
फ़सल पकने लगी तो ख़ुदरौ पौदे भी नज़र आए।
27नौकर मालिक के पास आए और कहने लगे,
‘जनाब, क्या आपने अपने खेत में अच्छा बीज
नहीं बोया था? तो फिर यह ख़ुदरौ पौदे कहाँ से
आ गए हैं?’

28उसने जवाब दिया, ‘किसी दुश्मन ने यह कर
दिया है।’

नौकरों ने पूछा, ‘क्या हम जाकर उन्हें उखाड़ें?’

29‘नहीं,’ उसने कहा। ‘ऐसा न हो कि ख़ुदरौ
पौदों के साथ साथ तुम अनाज के पौदे भी
उखाड़ डालो। 30उन्हें फ़सल की कटाई तक
मिलकर बढ़ने दो। उस वक़्त मैं फ़सल की कटाई
करनेवालों से कहूँगा कि पहले ख़ुदरौ पौदों को
चुन लो और उन्हें जलाने के लिए गठों में बाँध
लो। फिर ही अनाज को जमा करके गोदाम में
लाओ’।”

राई के दाने की तमसील

31ईसा ने उन्हें एक और तमसील सुनाई।
“आसमान की बादशाही राई के दाने की मानिंद
है जो किसी ने लेकर अपने खेत में बो दिया।
32गो यह बीजों में सबसे छोटा दाना है, लेकिन
बढ़ते बढ़ते यह सब्ज़ियों में सबसे बड़ा हो जाता
है। बल्कि यह दरख़्त-सा बन जाता है और परिंदे
आकर उस की शाख़ों में घोंसले बना लेते हैं।”

ख़मीर की तमसील

33उसने उन्हें एक और तमसील भी सुनाई।
“आसमान की बादशाही ख़मीर की मानिंद है जो
किसी औरत ने लेकर तक़रीबन 27 किलोग्राम
आटे में मिला दिया। गो वह उसमें छुप गया तो
भी होते होते पूरे गुँधे हुए आटे को ख़मीर बना
दिया।”

तमसीलों में बात करने का सबब

34ईसा ने यह तमाम बातें हुजूम के सामने
तमसीलों की सूरत में कीं। तमसील के बग़ैर उसने
उनसे बात ही नहीं की। 35यों नबी की यह पेशगोई
पूरी हुई कि “मैं तमसीलों में बात करूँगा, मैं
दुनिया की तख़लीक़ से लेकर आज तक छुपी हुई
बातें बयान करूँगा।”

ख़ुदरौ पौदों की तमसील का मतलब

36फिर ईसा हुजूम को रुख़सत करके घर के
अंदर चला गया। उसके शागिर्द उसके पास आकर
कहने लगे, “खेत में ख़ुदरौ पौदों की तमसील का
मतलब हमें समझाएँ।”

37उसने जवाब दिया, “अच्छा बीज बोने-
वाला इब्ने-आदम है। 38खेत दुनिया है जबकि
अच्छे बीज से मुराद बादशाही के फ़रज़ंद हैं। ख़ुदरौ
पौदे इबलीस के फ़रज़ंद हैं 39और उन्हें बोनेवाला
दुश्मन इबलीस है। फ़सल की कटाई का मतलब
दुनिया का इख़्तिताम है जबकि फ़सल की कटाई
करनेवाले फ़रिश्ते हैं। 40जिस तरह तमसील में
ख़ुदरौ पौदे उखाड़े जाते और आग में जलाए जाते
हैं उसी तरह दुनिया के इख़्तिताम पर भी किया
जाएगा। 41इब्ने-आदम अपने फ़रिश्तों को भेज
देगा, और वह उस की बादशाही से बरगश्तगी
का हर सबब और शरीअत की ख़िलाफ़वरज़ी
करनेवाले हर शख़्स को निकालते जाएंगे। 42वह
उन्हें भड़कती भट्टी में फेंक देंगे जहाँ लोग रोते
और दाँत पीसते रहेंगे। 43फिर रास्तबाज़ अपने
बाप की बादशाही में सूरज की तरह चमकेंगे। जो
सुन सकता है वह सुन ले!

छुपे हुए ख़ज़ाने की तमसील

44आसमान की बादशाही खेत में छुपे ख़ज़ाने
की मानिंद है। जब किसी आदमी को उसके बारे

में मालूम हुआ तो उसने उसे दुबारा छुपा दिया।
फिर वह ख़ुशी के मारे चला गया, अपनी तमाम
मिलकियत फ़रोख़्त कर दी और उस खेत को
ख़रीद लिया।

मोती की तमसील

45नीज़, आसमान की बादशाही ऐसे सौदागर
की मानिंद है जो अच्छे मोतियों की तलाश में था।
46जब उसे एक निहायत क़ीमती मोती के बारे
में मालूम हुआ तो वह चला गया, अपनी तमाम
मिलकियत फ़रोख़्त कर दी और उस मोती को
ख़रीद लिया।

जाल की तमसील

47आसमान की बादशाही जाल की मानिंद
भी है। उसे झील में डाला गया तो हर क़िस्म
की मछलियाँ पकड़ी गईं। 48जब वह भर गया
तो मछेरों ने उसे किनारे पर खींच लिया।
फिर उन्होंने बैठकर क़ाबिले-इस्तेमाल मछलियाँ
चुनकर टोकरियों में डाल दीं और नाक़ाबिले-
इस्तेमाल मछलियाँ फेंक दीं। 49दुनिया के
इख़्तिताम पर ऐसा ही होगा। फ़रिश्ते आएँगे और
बुरे लोगों को रास्तबाज़ों से अलग करके 50उन्हें
भड़कती भट्टी में फेंक देंगे जहाँ लोग रोते और दाँत
पीसते रहेंगे।”

नई और पुरानी सच्चाइयाँ

51ईसा ने पूछा, “क्या तुमको इन तमाम बातों
की समझ आ गई है?”

“जी,” शागिर्दों ने जवाब दिया।

52उसने उनसे कहा, “इसलिए शरीअत का हर
आलिम जो आसमान की बादशाही में शागिर्द बन
गया है ऐसे मालिके-मकान की मानिंद है जो अपने
ख़ज़ाने से नए और पुराने जवाहिर निकालता है।”

ईसा को नासरत में रद्द किया जाता है

53यह तमसीलें सुनाने के बाद ईसा वहाँ से
चला गया। 54अपने वतनी शहर नासरत पहुँचकर
वह इबादतख़ाने में लोगों को तालीम देने लगा।
उस की बातें सुनकर वह हैरतज़दा हुए। उन्होंने
पूछा, “उसे यह हिकमत और मोजिज़े करने की
यह क़ुदरत कहाँ से हासिल हुई है? 55क्या यह
बढ़ई का बेटा नहीं है? क्या उस की माँ का नाम
मरियम नहीं है, और क्या उसके भाई याक़ूब,
यूसुफ़, शमाऊन और यहूदा नहीं हैं? 56क्या उस
की बहनें हमारे साथ नहीं रहतीं? तो फिर उसे यह
सब कुछ कहाँ से मिल गया?” 57यों वह उससे
ठोकर खाकर उसे क़बूल करने से क़ासिर रहे।

ईसा ने उनसे कहा, “नबी की इज़्ज़त हर जगह
की जाती है सिवाए उसके वतनी शहर और उसके
अपने ख़ानदान के।” 58और उनके ईमान की
कमी के बाइस उसने वहाँ ज़्यादा मोजिज़े न किए।

यहया का क़त्ल

14 उस वक़्त गलील के हुक्मरान हेरोदेस
अंतिपास को ईसा के बारे में इत्तला
मिली। 2इस पर उसने अपने दरबारियों से कहा,
“यह यहया बपतिस्मा देनेवाला है जो मुरदों में से
जी उठा है, इसलिए उस की मोजिज़ाना ताक़तें
इसमें नज़र आती हैं।”

3वजह यह थी कि हेरोदेस ने यहया को
गिरिफ़्तार करके जेल में डाला था। यह हेरोदियास
की ख़ातिर हुआ था जो पहले हेरोदेस के भाई
फ़िलिप्पुस की बीवी थी। 4यहया ने हेरोदेस को
बताया था, “हेरोदियास से तेरी शादी नाजायज़
है।” 5हेरोदेस यहया को क़त्ल करना चाहता था,
लेकिन अवाम से डरता था क्योंकि वह उसे नबी
समझते थे।

6हेरोदेस की सालगिरह के मौक़े पर हेरोदियास
की बेटी उनके सामने नाची। हेरोदेस को उसका
नाचना इतना पसंद आया 7कि उसने क़सम
खाकर उससे वादा किया, “जो भी तू माँगेगी मैं
तुझे दूँगा।”

8अपनी माँ के सिखाने पर बेटी ने कहा, “मुझे
यहया बपतिस्मा देनेवाले का सर ट्रे में मँगवा दें।”

9यह सुनकर बादशाह को दुख हुआ। लेकिन
अपनी क़समों और मेहमानों की मौजूदगी की

वजह से उसने उसे देने का हुक्म दे दिया।
10चुनाँचे यहया का सर क़लम कर दिया गया।
11फिर ट्रे में रखकर अंदर लाया गया और लड़की
को दे दिया गया। लड़की उसे अपनी माँ के पास
ले गई। 12बाद में यहया के शागिर्द आए और उस
की लाश लेकर उसे दफ़नाया। फिर वह ईसा के
पास गए और उसे इत्तला दी।

ईसा 5000 मर्दों को खाना खिलाता है

13यह ख़बर सुनकर ईसा लोगों से अलग होकर
कश्ती पर सवार हुआ और किसी वीरान जगह
चला गया। लेकिन हुजूम को उस की ख़बर मिली।
लोग पैदल चलकर शहरों से निकल आए और
उसके पीछे लग गए। 14जब ईसा ने कश्ती पर
से उतरकर बड़े हुजूम को देखा तो उसे लोगों पर
बड़ा तरस आया। वहीं उसने उनके मरीज़ों को
शफ़ा दी।

15जब दिन ढलने लगा तो उसके शागिर्द उसके
पास आए और कहा, "यह जगह वीरान है और
दिन ढलने लगा है। इनको रुख़सत कर दें ताकि
यह इर्दगिर्द के देहातों में जाकर खाने के लिए कुछ
ख़रीद लें।"

16ईसा ने जवाब दिया, "इन्हें जाने की ज़रूरत
नहीं, तुम ख़ुद इन्हें खाने को दो।"

17उन्होंने जवाब दिया, "हमारे पास सिर्फ़ पाँच
रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं।"

18उसने कहा, "उन्हें यहाँ मेरे पास ले आओ,"
19और लोगों को घास पर बैठने का हुक्म दिया।
ईसा ने उन पाँच रोटियों और दो मछलियों को
लेकर आसमान की तरफ़ देखा और शुक्रगुज़ारी
की दुआ की। फिर उसने रोटियों को तोड़ तोड़कर
शागिर्दों को दिया, और शागिर्दों ने यह रोटियाँ
लोगों में तक़सीम कर दीं। 20सबने जी भरकर
खाया। जब शागिर्दों ने बचे हुए टुकड़े जमा किए
तो बारह टोकरे भर गए। 21ख़वातीन और बच्चों
के अलावा खानेवाले तक़रीबन 5,000 मर्द थे।

ईसा पानी पर चलता है

22इसके ऐन बाद ईसा ने शागिर्दों को मजबूर
किया कि वह कश्ती पर सवार होकर आगे निकलें
और झील के पार चले जाएँ। इतने में वह हुजूम
को रुख़सत करना चाहता था। 23उन्हें ख़ैरबाद
कहने के बाद वह दुआ करने के लिए अकेला
पहाड़ पर चढ़ गया। शाम के वक़्त वह वहाँ अकेला
था 24जबकि कश्ती किनारे से काफ़ी दूर हो गई
थी। लहरें कश्ती को बहुत तंग कर रही थीं क्योंकि
हवा उसके ख़िलाफ़ चल रही थी।

25तक़रीबन तीन बजे रात के वक़्त ईसा पानी
पर चलते हुए उनके पास आया। 26जब शागिर्दों
ने उसे झील की सतह पर चलते हुए देखा तो
उन्होंने दहशत खाई। "यह कोई भूत है," उन्होंने
कहा और डर के मारे चीख़ें मारने लगे।

27लेकिन ईसा फ़ौरन उनसे मुख़ातिब होकर
बोला, "हौसला रखो! मैं ही हूँ। मत घबराओ।"

28इस पर पतरस बोल उठा, "ख़ुदावंद, अगर
आप ही हैं तो मुझे पानी पर अपने पास आने का
हुक्म दें।"

29ईसा ने जवाब दिया, "आ।" पतरस कश्ती
पर से उतरकर पानी पर चलते चलते ईसा की
तरफ़ बढ़ने लगा। 30लेकिन जब उसने तेज़ हवा
पर ग़ौर किया तो वह घबरा गया और डूबने लगा।
वह चिल्ला उठा, "ख़ुदावंद, मुझे बचाएँ!"

31ईसा ने फ़ौरन अपना हाथ बढ़ाकर उसे पकड़
लिया। उसने कहा, "ऐ कमएतक़ाद! तू शक में
क्यों पड़ गया था?"

32दोनों कश्ती पर सवार हुए तो हवा थम गई।
33फिर कश्ती में मौजूद शागिर्दों ने उसे सिजदा
करके कहा, "यक़ीनन आप अल्लाह के फ़रज़ंद
हैं!"

गन्नेसरत में मरीज़ों की शफ़ा

34झील को पार करके वह गन्नेसरत शहर
के पास पहुँच गए। 35जब उस जगह के लोगों
ने ईसा को पहचान लिया तो उन्होंने इर्दगिर्द के
पूरे इलाक़े में इसकी ख़बर फैलाई। उन्होंने अपने

तमाम मरीज़ों को उसके पास लाकर 36उससे
मिन्नत की कि वह उन्हें सिर्फ़ अपने लिबास के
दामन को छूने दे। और जिसने भी उसे छुआ उसे
शफ़ा मिली।

बापदादा की तालीम

15 फिर कुछ फ़रीसी और शरीअत
के आलिम यरूशलम से आकर
ईसा से पूछने लगे, 2“आपके शागिर्द बाप-
दादा की रिवायत क्यों तोड़ते हैं? क्योंकि वह
हाथ धोए बग़ैर रोटी खाते हैं।”
3ईसा ने जवाब दिया, “और तुम अपनी
रिवायात की ख़ातिर अल्लाह का हुक्म क्यों तोड़ते
हो? 4क्योंकि अल्लाह ने फ़रमाया, ‘अपने बाप
और अपनी माँ की इज़्ज़त करना’ और ‘जो अपने
बाप या माँ पर लानत करे उसे सज़ाए-मौत दी
जाए।’ 5लेकिन जब कोई अपने वालिदैन से कहे,
‘मैं आपकी मदद नहीं कर सकता, क्योंकि मैंने
मन्नत मानी है कि जो कुछ मुझे आपको देना
था वह अल्लाह के लिए वक़्फ़ है’ तो तुम इसे
जायज़ क़रार देते हो। 6यों तुम कहते हो कि उसे
अपने माँ-बाप की इज़्ज़त करने की ज़रूरत नहीं
है। और इसी तरह तुम अल्लाह के कलाम को
अपनी रिवायत की ख़ातिर मनसूख़ कर लेते हो।
7रियाकारो! यसायाह नबी ने तुम्हारे बारे में क्या
ख़ूब नबुव्वत की है,
8‘यह क़ौम अपने होंटों से तो
मेरा एहतराम करती है
लेकिन उसका दिल मुझसे दूर है।
9वह मेरी परस्तिश करते तो हैं,
लेकिन बेफ़ायदा।
क्योंकि वह सिर्फ़ इनसान ही के
अहकाम सिखाते हैं’।”

इनसान को क्या कुछ नापाक कर देता है?

10फिर ईसा ने हुजूम को अपने पास बुला-
कर कहा, “सब मेरी बात सुनो और इसे समझने
की कोशिश करो। 11कोई ऐसी चीज़ है नहीं जो
इनसान के मुँह में दाख़िल होकर उसे नापाक कर
सके, बल्कि जो कुछ इनसान के मुँह से निकलता
है वही उसे नापाक कर देता है।”
12इस पर शागिर्दों ने उसके पास आकर पूछा,
“क्या आपको मालूम है कि फ़रीसी यह बात
सुनकर नाराज़ हुए हैं?”
13उसने जवाब दिया, “जो भी पौदा मेरे
आसमानी बाप ने नहीं लगाया उसे जड़ से उखाड़ा
जाएगा। 14उन्हें छोड़ दो, वह अंधे राह दिखानेवाले
हैं। अगर एक अंधा दूसरे अंधे की राहनुमाई करे
तो दोनों गढ़े में गिर जाएंगे।”
15पतरस बोल उठा, “इस तमसील का
मतलब हमें बताएँ।”
16ईसा ने कहा, “क्या तुम अभी तक इतने
नासमझ हो? 17क्या तुम नहीं समझ सकते कि
जो कुछ इनसान के मुँह में दाख़िल हो जाता है
वह उसके मेदे में जाता है और वहाँ से निकलकर
जाए-ज़रूरत में? 18लेकिन जो कुछ इनसान के
मुँह से निकलता है वह दिल से आता है। वही
इनसान को नापाक करता है। 19दिल ही से बुरे
ख़यालात, क़त्लो-ग़ारत, ज़िनाकारी, हरामकारी,
चोरी, झूटी गवाही और बुहतान निकलते हैं।
20यही कुछ इनसान को नापाक कर देता है,
लेकिन हाथ धोए बग़ैर खाना खाने से वह नापाक
नहीं होता।”

ग़ैरयहूदी औरत का ईमान

21फिर ईसा गलील से रवाना होकर शिमाल
में सूर और सैदा के इलाक़े में आया। 22इस
इलाक़े की एक कनानी ख़ातून उसके पास आकर
चिल्लाने लगी, “ख़ुदावंद, इब्ने-दाऊद, मुझ पर
रहम करें। एक बदरूह मेरी बेटी को बहुत सताती
है।”
23लेकिन ईसा ने जवाब में एक लफ़्ज़ भी न
कहा। इस पर उसके शागिर्द उसके पास आकर
उससे गुज़ारिश करने लगे, “उसे फ़ारिग़ कर दें,
क्योंकि वह हमारे पीछे पीछे चीख़ती-चिल्लाती
है।”

24ईसा ने जवाब दिया, “मुझे सिर्फ़ इसराईल की खोई हुई भेड़ों के पास भेजा गया है।”

25औरत उसके पास आकर मुँह के बल झुक गई और कहा, “ख़ुदावंद, मेरी मदद करें!”

26उसने उसे बताया, “यह मुनासिब नहीं कि बच्चों से खाना लेकर कुत्तों के सामने फेंक दिया जाए।”

27उसने जवाब दिया, “जी ख़ुदावंद, लेकिन कुत्ते भी वह टुकड़े खाते हैं जो उनके मालिक की मेज़ पर से फ़र्श पर गिर जाते हैं।”

28ईसा ने कहा, “ऐ औरत, तेरा ईमान बड़ा है। तेरी दरख़ास्त पूरी हो जाए।” उसी लमहे औरत की बेटी को शफ़ा मिल गई।

ईसा बहुत-से मरीज़ों को शफ़ा देता है

29फिर ईसा वहाँ से रवाना होकर गलील की झील के किनारे पहुँच गया। वहाँ वह पहाड़ पर चढ़कर बैठ गया।
30लोगों की बड़ी तादाद उसके पास आई। वह अपने लँगड़े, अंधे, मफ़लूज, गूँगे और कई और क़िस्म के मरीज़ भी साथ ले आए। उन्होंने उन्हें ईसा के सामने रखा तो उसने उन्हें शफ़ा दी।
31हुजूम हैरतज़दा हो गया। क्योंकि गूँगे बोल रहे थे, अपाहजों के आज़ा बहाल हो गए, लँगड़े चलने और अंधे देखने लगे थे। यह देखकर भीड़ ने इसराईल के ख़ुदा की तमजीद की।

ईसा 4000 मर्दों को खाना खिलाता है

32फिर ईसा ने अपने शागिर्दों को बुलाकर उनसे कहा, “मुझे इन लोगों पर तरस आता है। इन्हें मेरे साथ ठहरे तीन दिन हो चुके हैं और इनके पास खाने की कोई चीज़ नहीं है। लेकिन मैं इन्हें इस भूकी हालत में रुख़सत नहीं करना चाहता। ऐसा न हो कि वह रास्ते में थककर चूर हो जाएँ।”

33उसके शागिर्दों ने जवाब दिया, “इस वीरान इलाक़े में कहाँ से इतना खाना मिल सकेगा कि यह लोग खाकर सेर हो जाएँ?”

34ईसा ने पूछा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?” उन्होंने जवाब दिया, “सात, और चंद एक छोटी मछलियाँ।”

35ईसा ने हुजूम को ज़मीन पर बैठने को कहा।
36फिर सात रोटियों और मछलियों को लेकर उसने शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उन्हें तोड़ तोड़कर अपने शागिर्दों को तक़सीम करने के लिए दे दिया।
37सबने जी भरकर खाया। बाद में जब खाने के बचे हुए टुकड़े जमा किए गए तो सात बड़े टोकरे भर गए।
38ख़वातीन और बच्चों के अलावा खानेवाले 4,000 मर्द थे।

39फिर ईसा लोगों को रुख़सत करके कश्ती पर सवार हुआ और मगदन के इलाक़े में चला गया।

फ़रीसी इलाही निशान का तक़ाज़ा करते हैं

16 एक दिन फ़रीसी और सदूक़ी ईसा के पास आए। उसे परखने के लिए उन्होंने मुतालबा किया कि वह उन्हें आसमान की तरफ़ से कोई इलाही निशान दिखाए ताकि उसका इख़्तियार साबित हो जाए।
2लेकिन उसने जवाब दिया, “शाम को तुम कहते हो, ‘कल मौसम साफ़ होगा क्योंकि आसमान सुर्ख़ नज़र आता है।’
3और सुबह के वक़्त कहते हो, ‘आज तूफ़ान होगा क्योंकि आसमान सुर्ख़ है और बादल छाए हुए हैं।’ ग़रज़ तुम आसमान की हालत पर ग़ौर करके सहीह नतीजा निकाल लेते हो, लेकिन ज़मानों की अलामतों पर ग़ौर करके सहीह नतीजे तक पहुँचना तुम्हारे बस की बात नहीं है।
4सिर्फ़ शरीर और ज़िनाकार नसल इलाही निशान का तक़ाज़ा करती है। लेकिन उसे कोई भी इलाही निशान पेश नहीं किया जाएगा सिवाए यूनुस नबी के निशान के।”

यह कहकर ईसा उन्हें छोड़कर चला गया।

फ़रीसियों और सदूक़ियों का ख़मीर

5झील को पार करते वक़्त शागिर्द अपने साथ खाना लाना भूल गए थे।
6ईसा ने उनसे कहा,

"ख़बरदार, फ़रीसियों और सदूक़ियों के ख़मीर
से होशियार रहना।"
7शागिर्द आपस में बहस करने लगे, "वह
इसलिए कह रहे होंगे कि हम खाना साथ नहीं
लाए।"
8ईसा को मालूम हुआ कि वह क्या सोच रहे हैं।
उसने कहा, "तुम आपस में क्यों बहस कर रहे हो
कि हमारे पास रोटी नहीं है? 9क्या तुम अभी तक
नहीं समझते? क्या तुम्हें याद नहीं कि मैंने पाँच
रोटियाँ लेकर 5,000 आदमियों को खाना खिला
दिया और कि तुमने बचे हुए टुकड़ों के कितने
टोकरे उठाए थे? 10या क्या तुम भूल गए हो
कि मैंने सात रोटियाँ लेकर 4,000 आदमियों को
खाना खिलाया और कि तुमने बचे हुए टुकड़ों के
कितने टोकरे उठाए थे? 11तुम क्यों नहीं समझते
कि मैं तुमसे खाने की बात नहीं कर रहा? सुनो
मेरी बात! फ़रीसियों और सदूक़ियों के ख़मीर से
होशियार रहो!"
12फिर उन्हें समझ आई कि ईसा उन्हें रोटी
के ख़मीर से आगाह नहीं कर रहा था बल्कि
फ़रीसियों और सदूक़ियों की तालीम से।

पतरस का इक़रार

13जब ईसा क़ैसरिया-फ़िलिप्पी के इलाक़े में
पहुँचा तो उसने शागिर्दों से पूछा, "इब्ने-आदम
लोगों के नज़दीक कौन है?"
14उन्होंने जवाब दिया, "कुछ कहते हैं यहया
बपतिस्मा देनेवाला, कुछ यह कि आप इलियास
नबी हैं। कुछ यह भी कहते हैं कि यरमियाह या
नबियों में से एक।"
15उसने पूछा, "लेकिन तुम्हारे नज़दीक मैं कौन
हूँ?"
16पतरस ने जवाब दिया, "आप ज़िंदा ख़ुदा के
फ़रज़ंद मसीह हैं।"
17ईसा ने कहा, "शमाऊन बिन यूनुस, तू
मुबारक है, क्योंकि किसी इनसान ने तुझ पर यह
ज़ाहिर नहीं किया बल्कि मेरे आसमानी बाप ने।
18मैं तुझे यह भी बताता हूँ कि तू पतरस यानी
पत्थर है, और इसी पत्थर पर मैं अपनी जमात
को तामीर करूँगा, ऐसी जमात जिस पर पाताल
के दरवाज़े भी ग़ालिब नहीं आएँगे। 19मैं तुझे
आसमान की बादशाही की कुंजियाँ दे दूँगा। जो
कुछ तू ज़मीन पर बाँधेगा वह आसमान पर भी
बँधेगा। और जो कुछ तू ज़मीन पर खोलेगा वह
आसमान पर भी खुलेगा।"
20फिर ईसा ने अपने शागिर्दों को हुक्म दिया,
"किसी को भी न बताओ कि मैं मसीह हूँ।"

ईसा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

21उस वक़्त से ईसा अपने शागिर्दों पर वाज़िह
करने लगा, "लाज़िम है कि मैं यरूशलम जाकर
क़ौम के बुज़ुर्गों, राहनुमा इमामों और शरीअत
के उलमा के हाथों बहुत दुख उठाऊँ। मुझे क़त्ल
किया जाएगा, लेकिन तीसरे दिन मैं जी उठूँगा।"
22इस पर पतरस उसे एक तरफ़ ले जाकर
समझाने लगा। "ऐ ख़ुदावंद, अल्लाह न करे कि
यह कभी भी आपके साथ हो।"
23ईसा ने मुड़कर पतरस से कहा, "शैतान, मेरे
सामने से हट जा! तू मेरे लिए ठोकर का बाइस
है, क्योंकि तू अल्लाह की सोच नहीं रखता बल्कि
इनसान की।"
24फिर ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, "जो
मेरे पीछे आना चाहे वह अपने आपका इनकार
करे और अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे हो ले।
25क्योंकि जो अपनी जान को बचाए रखना चाहे
वह उसे खो देगा। लेकिन जो मेरी ख़ातिर अपनी
जान खो दे वही उसे पा लेगा। 26क्या फ़ायदा
है अगर किसी को पूरी दुनिया हासिल हो जाए,
लेकिन वह अपनी जान से महरूम हो जाए?
इनसान अपनी जान के बदले क्या दे सकता है?
27क्योंकि इब्ने-आदम अपने बाप के जलाल में
अपने फ़रिश्तों के साथ आएगा, और उस वक़्त
वह हर एक को उसके काम का बदला देगा। 28मैं
तुम्हें सच बताता हूँ, यहाँ कुछ ऐसे लोग खड़े हैं
जो मरने से पहले ही इब्ने-आदम को उस की
बादशाही में आते हुए देखेंगे।"

पहाड़ पर ईसा की सूरत बदल जाती है

17 छः दिन के बाद ईसा सिर्फ़ पतरस,
याक़ूब और यूहन्ना को अपने साथ
लेकर ऊँचे पहाड़ पर चढ़ गया। 2वहाँ उस की
शक्लो-सूरत उनके सामने बदल गई। उसका
चेहरा सूरज की तरह चमकने लगा, और उसके
कपड़े नूर की मानिंद सफ़ेद हो गए। 3अचानक
इलियास और मूसा ज़ाहिर हुए और ईसा से बातें
करने लगे। 4पतरस बोल उठा, "ख़ुदावंद, कितनी
अच्छी बात है कि हम यहाँ हैं। अगर आप चाहें तो
मैं तीन झोंपड़ियाँ बनाऊँगा, एक आपके लिए,
एक मूसा के लिए और एक इलियास के लिए।"
5वह अभी बात कर ही रहा था कि एक
चमकदार बादल आकर उन पर छा गया और
बादल में से एक आवाज़ सुनाई दी, "यह मेरा
प्यारा फ़रज़ंद है, जिससे मैं ख़ुश हूँ। इसकी
सुनो।"
6यह सुनकर शागिर्द दहशत खाकर औंधे मुँह
गिर गए। 7लेकिन ईसा ने आकर उन्हें छुआ। उसने
कहा, "उठो, मत डरो।" 8जब उन्होंने नज़र उठाई
तो ईसा के सिवा किसी को न देखा।
9वह पहाड़ से उतरने लगे तो ईसा ने उन्हें हुक्म
दिया, "जो कुछ तुमने देखा है उसे उस वक़्त
तक किसी को न बताना जब तक कि इब्ने-आदम
मुरदों में से जी न उठे।"
10शागिर्दों ने उससे पूछा, "शरीअत के उलमा
क्यों कहते हैं कि मसीह की आमद से पहले
इलियास का आना ज़रूरी है?"
11ईसा ने जवाब दिया, "इलियास तो ज़रूर
सब कुछ बहाल करने के लिए आएगा। 12लेकिन
मैं तुमको बताता हूँ कि इलियास तो आ चुका है
और उन्होंने उसे नहीं पहचाना बल्कि उसके साथ
जो चाहा किया। इसी तरह इब्ने-आदम भी उनके
हाथों दुख उठाएगा।"
13फिर शागिर्दों को समझ आई कि वह उनके
साथ यहया बपतिस्मा देनेवाले की बात कर रहा
था।

ईसा लड़के में से बदरूह निकालता है

14जब वह नीचे हुजूम के पास पहुँचे तो एक
आदमी ने ईसा के सामने आकर घुटने टेके 15और
कहा, "ख़ुदावंद, मेरे बेटे पर रहम करें, उसे मिरगी
के दौरे पड़ते हैं और उसे शदीद तकलीफ़ उठानी
पड़ती है। कई बार वह आग या पानी में गिर जाता
है। 16मैं उसे आपके शागिर्दों के पास लाया था,
लेकिन वह उसे शफ़ा न दे सके।"
17ईसा ने जवाब दिया, "ईमान से ख़ाली और
टेढ़ी नसल! मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँ, कब
तक तुम्हें बरदाश्त करूँ? लड़के को मेरे पास
ले आओ।" 18ईसा ने बदरूह को डाँटा, तो वह
लड़के में से निकल गई। उसी लमहे उसे शफ़ा
मिल गई।
19बाद में शागिर्दों ने अलहदगी में ईसा के पास
आकर पूछा, "हम बदरूह को क्यों न निकाल
सके?"
20उसने जवाब दिया, "अपने ईमान की कमी
के सबब से। मैं तुम्हें सच बताता हूँ, अगर तुम्हारा
ईमान राई के दाने के बराबर भी हो तो फिर तुम
इस पहाड़ को कह सकोगे, 'इधर से उधर खिसक
जा,' तो वह खिसक जाएगा। और तुम्हारे लिए
कुछ भी नामुमकिन नहीं होगा। 21[लेकिन इस
क़िस्म की बदरूह दुआ और रोज़े के बग़ैर नहीं
निकलती।]"

ईसा दूसरी बार अपनी मौत का ज़िक्र करता है

22जब वह गलील में जमा हुए तो ईसा ने उन्हें
बताया, "इब्ने-आदम को आदमियों के हवाले कर
दिया जाएगा। 23वह उसे क़त्ल करेंगे, लेकिन
तीन दिन के बाद वह जी उठेगा।"
यह सुनकर शागिर्द निहायत ग़मगीन हुए।

बैतुल-मुक़द्दस का टैक्स

24वह कफ़र्नहूम पहुँचे तो बैतुल-मुक़द्दस का
टैक्स जमा करनेवाले पतरस के पास आकर पूछने

लगे, “क्या आपका उस्ताद बैतुल-मुक़द्दस का
टैक्स अदा नहीं करता?”
25“जी, वह करता है,” पतरस ने जवाब दिया।
वह घर में आया तो ईसा पहले ही बोलने लगा,
“क्या ख़याल है शमाऊन, दुनिया के बादशाह
किनसे ड्यूटी और टैक्स लेते हैं, अपने फ़रज़ंदों
से या अजनबियों से?”
26पतरस ने जवाब दिया, “अजनबियों से।”
ईसा बोला “तो फिर उनके फ़रज़ंद टैक्स देने
से बरी हुए। 27लेकिन हम उन्हें नाराज़ नहीं करना
चाहते। इसलिए झील पर जाकर उसमें डोरी डाल
देना। जो मछली तू पहले पकड़ेगा उसका मुँह
खोलना तो उसमें से चाँदी का सिक्का निकलेगा।
उसे लेकर उन्हें मेरे और अपने लिए अदा कर दे।”

कौन सबसे बड़ा है?

18 उस वक़्त शागिर्द ईसा के पास आकर
पूछने लगे, “आसमान की बादशाही
में कौन सबसे बड़ा है?”
2जवाब में ईसा ने एक छोटे बच्चे को बुलाकर
उनके दरमियान खड़ा किया 3और कहा, “मैं
तुमको सच बताता हूँ अगर तुम बदलकर छोटे
बच्चों की मानिंद न बनो तो तुम कभी आसमान
की बादशाही में दाख़िल नहीं होगे। 4इसलिए
जो भी अपने आपको इस बच्चे की तरह छोटा
बनाएगा वह आसमान में सबसे बड़ा होगा। 5और
जो भी मेरे नाम में इस जैसे छोटे बच्चे को क़बूल
करे वह मुझे क़बूल करता है।

आज़माइशें

6लेकिन जो कोई इन छोटों में से किसी को
गुनाह करने पर उकसाए उसके लिए बेहतर है
कि उसके गले में बड़ी चक्की का पाट बाँधकर
उसे समुंदर की गहराइयों में डुबो दिया जाए।
7दुनिया पर उन चीज़ों की वजह से अफ़सोस जो
गुनाह करने पर उकसाती हैं। लाज़िम है कि ऐसी
आज़माइशें आएँ, लेकिन उस शख़्स पर अफ़सोस
जिसकी मारिफ़त वह आएँ।
8अगर तेरा हाथ या पाँव तुझे गुनाह करने पर
उकसाए तो उसे काटकर फेंक देना। इससे पहले
कि तुझे दो हाथों या दो पाँवों समेत जहन्नुम की
अबदी आग में फेंका जाए, बेहतर यह है कि एक
हाथ या पाँव से महरूम होकर अबदी ज़िंदगी में
दाख़िल हो। 9और अगर तेरी आँख तुझे गुनाह
करने पर उकसाए तो उसे निकालकर फेंक देना।
इससे पहले कि तुझे दो आँखों समेत जहन्नुम की
आग में फेंका जाए बेहतर यह है कि एक आँख
से महरूम होकर अबदी ज़िंदगी में दाख़िल हो।

खोई हुई भेड़ की तमसील

10ख़बरदार! तुम इन छोटों में से किसी को भी
हक़ीर न जानना। क्योंकि मैं तुमको बताता हूँ कि
आसमान पर इनके फ़रिश्ते हर वक़्त मेरे बाप के
चेहरे को देखते रहते हैं। 11[क्योंकि इब्ने-आदम
खोए हुओं को ढूँडने और नजात देने आया है।]
12तुम्हारा क्या ख़याल है? अगर किसी आदमी
की 100 भेड़ें हों और एक भटककर गुम हो जाए
तो वह क्या करेगा? क्या वह बाक़ी 99 भेड़ें
पहाड़ी इलाक़े में छोड़कर भटकी हुई भेड़ को ढूँडने
नहीं जाएगा? 13और मैं तुमको सच बताता हूँ
कि भटकी हुई भेड़ के मिलने पर वह उसके बारे
में उन बाक़ी 99 भेड़ों की निसबत कहीं ज़्यादा
ख़ुशी मनाएगा जो भटकी नहीं। 14बिलकुल इसी
तरह आसमान पर तुम्हारा बाप नहीं चाहता कि
इन छोटों में से एक भी हलाक हो जाए।

गुनाह में पड़े भाई से सुलूक

15अगर तेरे भाई ने तेरा गुनाह किया हो तो
अकेले उसके पास जाकर उस पर उसका गुनाह
ज़ाहिर कर। अगर वह तेरी बात माने तो तूने अपने
भाई को जीत लिया। 16लेकिन अगर वह न माने
तो एक या दो और लोगों को अपने साथ ले जा
ताकि तुम्हारी हर बात की दो या तीन गवाहों से
तसदीक़ हो जाए। 17अगर वह उनकी बात भी
न माने तो जमात को बता देना। और अगर वह

जमात की भी न माने तो उसके साथ ग़ैरईमानदार
या टैक्स लेनेवाले का-सा सुलूक कर।

बाँधने और खोलने का इख़्तियार

18मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो कुछ भी
तुम ज़मीन पर बान्धोगे आसमान पर भी बँधेगा,
और जो कुछ ज़मीन पर खोलोगे आसमान पर भी
खुलेगा।

19मैं तुमको यह भी बताता हूँ कि अगर तुममें
से दो शख़्स किसी बात को माँगने पर मुत्तफ़िक़
हो जाएँ तो मेरा आसमानी बाप तुमको बख़्शेगा।
20क्योंकि जहाँ भी दो या तीन अफ़राद मेरे नाम
में जमा हो जाएँ वहाँ मैं उनके दरमियान हूँगा।”

मुआफ़ न करनेवाले नौकर की तमसील

21फिर पतरस ने ईसा के पास आकर पूछा,
“ख़ुदावंद, जब मेरा भाई मेरा गुनाह करे तो मैं
कितनी बार उसे मुआफ़ करूँ? सात बार तक?”

22ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुझे बताता हूँ,
सात बार नहीं बल्कि 77 बार। 23इसलिए
आसमान की बादशाही एक बादशाह की
मानिंद है जो अपने नौकरों के क़र्ज़ों का
हिसाब-किताब करना चाहता था। 24हि-
साब-किताब शुरू करते वक़्त एक आदमी उसके
सामने पेश किया गया जो अरबों के हिसाब से
उसका क़र्ज़दार था। 25वह यह रक़म अदा न
कर सका, इसलिए उसके मालिक ने यह क़र्ज़
वसूल करने के लिए हुक्म दिया कि उसे बाल-
बच्चों और तमाम मिलकियत समेत फ़रोख़्त कर
दिया जाए। 26यह सुनकर नौकर मुँह के बल
गिरा और मिन्नत करने लगा, ‘मुझे मोहलत दें,
मैं पूरी रक़म अदा कर दूँगा।’ 27बादशाह को उस
पर तरस आया। उसने उसका क़र्ज़ मुआफ़ करके
उसे जाने दिया।

28लेकिन जब यही नौकर बाहर निकला तो
एक हमख़िदमत मिला जो उसका चंद हज़ार रूपों
का क़र्ज़दार था। उसे पकड़कर वह उसका गला
दबाकर कहने लगा, ‘अपना क़र्ज़ अदा कर!’
29दूसरा नौकर गिरकर मिन्नत करने लगा, ‘मुझे
मोहलत दें, मैं आपको सारी रक़म अदा कर दूँगा।’
30लेकिन वह इसके लिए तैयार न हुआ, बल्कि
जाकर उसे उस वक़्त तक जेल में डलवाया जब
तक वह पूरी रक़म अदा न कर दे। 31जब बाक़ी
नौकरों ने यह देखा तो उन्हें शदीद दुख हुआ और
उन्होंने अपने मालिक के पास जाकर सब कुछ
बता दिया जो हुआ था। 32इस पर मालिक ने
उस नौकर को अपने पास बुला लिया और कहा,
‘शरीर नौकर! जब तूने मेरी मिन्नत की तो मैंने
तेरा पूरा क़र्ज़ मुआफ़ कर दिया। 33क्या लाज़िम
न था कि तू भी अपने साथी नौकर पर उतना रहम
करता जितना मैंने तुझ पर किया था?’ 34ग़ुस्से
में मालिक ने उसे जेल के अफ़सरों के हवाले कर
दिया ताकि उस पर उस वक़्त तक तशद्दुद किया
जाए जब तक वह क़र्ज़ की पूरी रक़म अदा न कर
दे।

35मेरा आसमानी बाप तुममें से हर एक के साथ
भी ऐसा ही करेगा अगर तुमने अपने भाई को पूरे
दिल से मुआफ़ न किया।”

तलाक़ के बारे में तालीम

19 यह कहने के बाद ईसा गलील को
छोड़कर यहूदिया में दरियाए-यरदन
के पार चला गया। 2बड़ा हुजूम उसके पीछे हो
लिया और उसने उन्हें वहाँ शफ़ा दी।

3कुछ फ़रीसी आए और उसे फँसाने की ग़रज़
से सवाल किया, “क्या जायज़ है कि मर्द अपनी
बीवी को किसी भी वजह से तलाक़ दे?”

4ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुमने कलामे-
मुक़द्दस में नहीं पढ़ा कि इब्तिदा में ख़ालिक़ ने उन्हें
मर्द और औरत बनाया? 5और उसने फ़रमाया,
‘इसलिए मर्द अपने माँ-बाप को छोड़कर अपनी
बीवी के साथ पैवस्त हो जाता है। वह दोनों एक हो
जाते हैं।’ 6यों वह कलामे-मुक़द्दस के मुताबिक़ दो
नहीं रहते बल्कि एक हो जाते हैं। जिसे अल्लाह
ने जोड़ा है उसे इनसान जुदा न करे।”

7उन्होंने एतराज़ किया, "तो फिर मूसा ने यह
क्यों फ़रमाया कि आदमी तलाक़नामा लिखकर
बीवी को रुख़सत कर दे?"
8ईसा ने जवाब दिया, "मूसा ने तुम्हारी
सख़्तदिली की वजह से तुमको अपनी बीवी को
तलाक़ देने की इजाज़त दी। लेकिन इब्तिदा में
ऐसा न था। 9मैं तुम्हें बताता हूँ, जो अपनी बीवी
को जिसने ज़िना न किया हो तलाक़ दे और किसी
और से शादी करे, वह ज़िना करता है।"
10शागिर्दों ने उससे कहा, "अगर शौहर और
बीवी का आपस का ताल्लुक़ ऐसा है तो शादी न
करना बेहतर है।"
11ईसा ने जवाब दिया, "हर कोई यह बात
समझ नहीं सकता बल्कि सिर्फ़ वह जिसे इस
क़ाबिल बना दिया गया हो। 12क्योंकि कुछ
पैदाइश ही से शादी करने के क़ाबिल नहीं होते,
बाज़ को दूसरों ने यों बनाया है और बाज़ ने
आसमान की बादशाही की ख़ातिर शादी करने
से इनकार किया है। लिहाज़ा जो यह समझ सके
वह समझ ले।"

ईसा छोटे बच्चों को बरकत देता है

13एक दिन छोटे बच्चों को ईसा के पास लाया
गया ताकि वह उन पर अपने हाथ रखकर दुआ
करे। लेकिन शागिर्दों ने लानेवालों को मलामत
की। 14यह देखकर ईसा ने कहा, "बच्चों को मेरे
पास आने दो और उन्हें न रोको, क्योंकि आसमान
की बादशाही इन जैसे लोगों को हासिल है।"
15उसने उन पर अपने हाथ रखे और फिर वहाँ
से चला गया।

अमीर मुश्किल से अल्लाह की बादशाही में दाख़िल हो सकते हैं

16फिर एक आदमी ईसा के पास आया। उसने
कहा, "उस्ताद, में कौन-सा नेक काम करूँ ताकि
अबदी ज़िंदगी मिल जाए?"
17ईसा ने जवाब दिया, "तू मुझे नेकी के बारे
में क्यों पूछ रहा है? सिर्फ़ एक ही नेक है। लेकिन
अगर तू अबदी ज़िंदगी में दाख़िल होना चाहता है
तो अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ार।"
18आदमी ने पूछा, "कौन-से अहकाम?"
ईसा ने जवाब दिया, "क़त्ल न करना, ज़िना
न करना, चोरी न करना, झूटी गवाही न देना,
19अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना
और अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी
तू अपने आपसे रखता है।"
20जवान आदमी ने जवाब दिया, "मैंने इन
तमाम अहकाम की पैरवी की है, अब क्या रह
गया है?"
21ईसा ने उसे बताया, "अगर तू कामिल होना
चाहता है तो जा और अपनी पूरी जायदाद फ़रोख़्त
करके पैसे ग़रीबों में तक़सीम कर दे। फिर तेरे
लिए आसमान पर ख़ज़ाना जमा हो जाएगा।
इसके बाद आकर मेरे पीछे हो ले।"
22यह सुनकर नौजवान मायूस होकर चला
गया, क्योंकि वह निहायत दौलतमंद था।
23इस पर ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा,
"मैं तुमको सच बताता हूँ कि दौलतमंद के लिए
आसमान की बादशाही में दाख़िल होना मुश्किल
है। 24मैं यह दुबारा कहता हूँ, अमीर के आसमान
की बादशाही में दाख़िल होने की निसबत ज़्यादा
आसान यह है कि ऊँट सूई के नाके में से गुज़र
जाए।"
25यह सुनकर शागिर्द निहायत हैरतज़दा हुए
और पूछने लगे, "फिर किस को नजात हासिल
हो सकती है?"
26ईसा ने ग़ौर से उनकी तरफ़ देखकर जवाब
दिया, "यह इनसान के लिए तो नामुमकिन है,
लेकिन अल्लाह के लिए सब कुछ मुमकिन है।"
27फिर पतरस बोल उठा, "हम तो अपना सब
कुछ छोड़कर आपके पीछे हो लिए हैं। हमें क्या
मिलेगा?"
28ईसा ने उनसे कहा, "मैं तुमको सच बताता
हूँ, दुनिया की नई तख़लीक़ पर जब इब्ने-आदम
अपने जलाली तख़्त पर बैठेगा तो तुम भी जिन्होंने
मेरी पैरवी की है बारह तख़्तों पर बैठकर इसराईल

के बारह क़बीलों की अदालत करोगे। 29और
जिसने भी मेरी ख़ातिर अपने घरों, भाइयों, बहनों,
बाप, माँ, बच्चों या खेतों को छोड़ दिया है उसे सौ
गुना ज़्यादा मिल जाएगा और मीरास में अबदी
ज़िंदगी पाएगा। 30लेकिन बहुत-से लोग जो अब
अव्वल हैं उस वक़्त आख़िर होंगे और जो अब
आख़िर हैं वह अव्वल होंगे।

अंगूर के बाग़ में मज़दूर

20 क्योंकि आसमान की बादशाही उस
ज़मीनदार से मुताबिक़त रखती है जो
एक दिन सुबह-सवेरे निकला ताकि अपने अंगूर
के बाग़ के लिए मज़दूर ढूँडे। 2वह उनसे दिहाड़ी के
लिए चाँदी का एक सिक्का देने पर मुत्तफ़िक़ हुआ
और उन्हें अपने अंगूर के बाग़ में भेज दिया। 3नौ
बजे वह दुबारा निकला तो देखा कि कुछ लोग
अभी तक मंडी में फ़ारिग़ बैठे हैं। 4उसने उनसे
कहा, ‘तुम भी जाकर मेरे अंगूर के बाग़ में काम
करो। मैं तुम्हें मुनासिब उजरत दूँगा।’ 5चुनाँचे वह
काम करने के लिए चले गए। बारह बजे और तीन
बजे दोपहर के वक़्त भी वह निकला और इस तरह
के फ़ारिग़ मज़दूरों को काम पर लगाया। 6फिर
शाम के पाँच बज गए। वह निकला तो देखा कि
अभी तक कुछ लोग फ़ारिग़ बैठे हैं। उसने उनसे
पूछा, ‘तुम क्यों पूरा दिन फ़ारिग़ बैठे रहे हो?’
7उन्होंने जवाब दिया, ‘इसलिए कि किसी ने हमें
काम पर नहीं लगाया।’ उसने उनसे कहा, ‘तुम
भी जाकर मेरे अंगूर के बाग़ में काम करो।’

8दिन ढल गया तो ज़मीनदार ने अपने अफ़सर
को बताया, ‘मज़दूरों को बुलाकर उन्हें मज़दूरी
दे दे, आख़िर में आनेवालों से शुरू करके पहले
आनेवालों तक।’ 9जो मज़दूर पाँच बजे आए
थे उन्हें चाँदी का एक एक सिक्का मिल गया।
10इसलिए जब वह आए जो पहले काम पर
लगाए गए थे तो उन्होंने ज़्यादा मिलने की तवक़्क़ो
की। लेकिन उन्हें भी चाँदी का एक एक सिक्का
मिला। 11इस पर वह ज़मीनदार के ख़िलाफ़
बुड़बुड़ाने लगे, 12‘यह आदमी जिन्हें आख़िर में
लगाया गया उन्होंने सिर्फ़ एक घंटा काम किया।
तो भी आपने उन्हें हमारे बराबर की मज़दूरी दी
हालाँकि हमें दिन का पूरा बोझ और धूप की शिद्दत
बरदाश्त करनी पड़ी।’

13लेकिन ज़मीनदार ने उनमें से एक से बात
की, ‘यार, मैंने ग़लत काम नहीं किया। क्या तू
चाँदी के एक सिक्के के लिए मज़दूरी करने पर
मुत्तफ़िक़ न हुआ था? 14अपने पैसे लेकर चला
जा। मैं आख़िर में काम पर लगनेवालों को उतना
ही देना चाहता हूँ जितना तुझे। 15क्या मेरा हक़
नहीं कि मैं जैसा चाहूँ अपने पैसे ख़र्च करूँ? या
क्या तू इसलिए हसद करता है कि मैं फ़ैयाज़दिल
हूँ?’

16यों अव्वल आख़िर में आएँगे और जो
आख़िरी हैं वह अव्वल हो जाएंगे।”

ईसा तीसरी मरतबा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

17अब जब ईसा यरूशलम की तरफ़ बढ़ रहा
था तो बारह शागिर्दों को एक तरफ़ ले जाकर
उसने उनसे कहा, 18“हम यरूशलम की तरफ़
बढ़ रहे हैं। वहाँ इब्ने-आदम को राहनुमा इमामों
और शरीअत के उलमा के हवाले कर दिया
जाएगा। वह उस पर सज़ाए-मौत का फ़तवा देकर
19उसे ग़ैरयहूदियों के हवाले कर देंगे ताकि वह
उसका मज़ाक़ उड़ाएँ, उसको कोड़े मारें और उसे
मसलूब करें। लेकिन तीसरे दिन वह जी उठेगा।”

याक़ूब और यूहन्ना की माँ की गुज़ारिश

20फिर ज़बदी के बेटों याक़ूब और यूहन्ना की
माँ अपने बेटों को साथ लेकर ईसा के पास आई
और सिजदा करके कहा, “आपसे एक गुज़ारिश
है।”

21ईसा ने पूछा, “तू क्या चाहती है?”

उसने जवाब दिया, “अपनी बादशाही में मेरे इन
बेटों में से एक को अपने दाएँ हाथ बैठने दें और
दूसरे को बाएँ हाथ।”

22ईसा ने कहा, “तुमको नहीं मालूम कि क्या
माँग रहे हो। क्या तुम वह प्याला पी सकते हो जो
मैं पीने को हूँ?”
“जी, हम पी सकते हैं,” उन्होंने जवाब दिया।
23फिर ईसा ने उनसे कहा, “तुम मेरा प्याला
तो ज़रूर पियोगे, लेकिन यह फ़ैसला करना मेरा
काम नहीं कि कौन मेरे दाएँ हाथ बैठेगा और कौन
बाएँ हाथ। मेरे बाप ने यह मक़ाम उन्हीं के लिए
तैयार किया है जिनको उसने ख़ुद मुक़र्रर किया
है।”
24जब बाक़ी दस शागिर्दों ने यह सुना तो उन्हें
याक़ूब और यूहन्ना पर ग़ुस्सा आया। 25इस पर
ईसा ने उन सबको बुलाकर कहा, “तुम जानते
हो कि क़ौमों के हुक्मरान अपनी रिआया पर रोब
डालते हैं और उनके बड़े अफ़सर उन पर अपने
इख़्तियार का ग़लत इस्तेमाल करते हैं। 26लेकिन
तुम्हारे दरमियान ऐसा नहीं है। जो तुममें बड़ा
होना चाहे वह तुम्हारा ख़ादिम बने 27और जो
तुममें अव्वल होना चाहे वह तुम्हारा ग़ुलाम बने।
28क्योंकि इब्ने-आदम भी इसलिए नहीं आया कि
ख़िदमत ले बल्कि इसलिए कि ख़िदमत करे और
अपनी जान फ़िद्या के तौर पर देकर बहुतों को
छुड़ाए।”

दो अंधों की शफ़ा

29जब वह यरीहू शहर से निकलने लगे तो एक
बड़ा हुजूम उनके पीछे चल रहा था। 30दो अंधे
रास्ते के किनारे बैठे थे। जब उन्होंने सुना कि
ईसा गुज़र रहा है तो वह चिल्लाने लगे, “ख़ुदावंद,
इब्ने-दाऊद, हम पर रहम करें।”
31हुजूम ने उन्हें डाँटकर कहा, “ख़ामोश!”
लेकिन वह और भी ऊँची आवाज़ से पुकारते रहे,
“ख़ुदावंद, इब्ने-दाऊद, हम पर रहम करें।”
32ईसा रुक गया। उसने उन्हें अपने पास
बुलाया और पूछा, “तुम क्या चाहते हो कि मैं
तुम्हारे लिए करूँ?”
33उन्होंने जवाब दिया, “ख़ुदावंद, यह कि हम
देख सकें।”
34ईसा को उन पर तरस आया। उसने उनकी
आँखों को छुआ तो वह फ़ौरन बहाल हो गईं। फिर
वह उसके पीछे चलने लगे।

यरूशलम में पुरजोश इस्तक़बाल

21 वह यरूशलम के क़रीब बैत-फ़गे
पहुँचे। यह गाँव ज़ैतून के पहाड़ पर
वाक़े था। ईसा ने दो शागिर्दों को भेजा 2और
कहा, “सामनेवाले गाँव में जाओ। वहाँ तुमको
फ़ौरन एक गधी नज़र आएगी जो अपने बच्चे के
साथ बँधी हुई होगी। उन्हें खोलकर यहाँ ले आओ।
3अगर कोई यह देखकर तुमसे कुछ कहे तो उसे
बता देना, ‘ख़ुदावंद को इनकी ज़रूरत है।’ यह
सुनकर वह फ़ौरन इन्हें भेज देगा।”
4यों नबी की यह पेशगोई पूरी हुई,
5‘सिय्यून बेटी को बता देना,
देख, तेरा बादशाह तेरे पास आ रहा है।
वह हलीम है और गधे पर,
हाँ गधी के बच्चे पर सवार है।’
6दोनों शागिर्द चले गए। उन्होंने वैसा ही किया
जैसा ईसा ने उन्हें बताया था। 7वह गधी को बच्चे
समेत ले आए और अपने कपड़े उन पर रख दिए।
फिर ईसा उन पर बैठ गया। 8जब वह चल पड़ा
तो बहुत ज़्यादा लोगों ने उसके आगे आगे रास्ते में
अपने कपड़े बिछा दिए। बाज़ ने शाख़ें भी उसके
आगे आगे रास्ते में बिछा दीं जो उन्होंने दरख़्तों से
काट ली थीं। 9लोग ईसा के आगे और पीछे चल
रहे थे और चिल्लाकर यह नारे लगा रहे थे,
“इब्ने-दाऊद को होशाना![a]
मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है।
आसमान की बुलंदियों पर होशाना।”
10जब ईसा यरूशलम में दाख़िल हुआ तो पूरा
शहर हिल गया। सबने पूछा, “यह कौन है?”

[a]होशाना (इबरानी : मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ इसमें हम्दो-सना का उनसुर भी पाया जाता है।

11हुजूम ने जवाब दिया, “यह ईसा है, वह नबी
जो गलील के नासरत से है।”

ईसा बैतुल-मुक़द्दस में जाता है

12और ईसा बैतुल-मुक़द्दस में जाकर उन
सबको निकालने लगा जो वहाँ क़ुरबानियों के
लिए दरकार चीज़ों की ख़रीदो-फ़रोख़्त कर रहे
थे। उसने सिक्कों का तबादला करनेवालों की
मेज़ें और कबूतर बेचनेवालों की कुरसियाँ उलट दीं
13और उनसे कहा, “कलामे-मुक़द्दस में लिखा है,
‘मेरा घर दुआ का घर कहलाएगा।’ लेकिन तुमने
उसे डाकुओं के अड्डे में बदल दिया है।”
14अंधे और लँगड़े बैतुल-मुक़द्दस में उस-
के पास आए और उसने उन्हें शफ़ा दी। 15लेकिन
राहनुमा इमाम और शरीअत के उलमा नाराज़
हुए जब उन्होंने उसके हैरतअंगेज़ काम देखे और
यह कि बच्चे बैतुल-मुक़द्दस में “इब्ने-दाऊद को
होशाना” चिल्ला रहे हैं। 16उन्होंने उससे पूछा,
“क्या आप सुन रहे हैं कि यह बच्चे क्या कह रहे
हैं?”

“जी,” ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुमने
कलामे-मुक़द्दस में कभी नहीं पढ़ा कि ‘तूने छोटे
बच्चों और शीरख़ारों की ज़बान को तैयार किया
है ताकि वह तेरी तमजीद करें’?”
17फिर वह उन्हें छोड़कर शहर से निकला और
बैत-अनियाह पहुँचा जहाँ उसने रात गुज़ारी।

अंजीर के दरख़्त पर लानत

18अगले दिन सुबह-सवेरे जब वह यरू-
शलम लौट रहा था तो ईसा को भूक लगी।
19रास्ते के क़रीब अंजीर का एक दरख़्त देखकर
वह उसके पास गया। लेकिन जब वह वहाँ पहुँचा
तो देखा कि फल नहीं लगा बल्कि सिर्फ़ पत्ते ही
पत्ते हैं। इस पर उसने दरख़्त से कहा, “अब से
कभी भी तुझमें फल न लगे!” दरख़्त फ़ौरन सूख
गया।
20यह देखकर शागिर्द हैरान हुए और कहा,
“अंजीर का दरख़्त इतनी जल्दी से किस तरह
सूख गया?”
21ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुमको सच बताता
हूँ, अगर तुम शक न करो बल्कि ईमान रखो तो
फिर तुम न सिर्फ़ ऐसा काम कर सकोगे बल्कि
इससे भी बड़ा। तुम इस पहाड़ से कहोगे, ‘उठ,
अपने आपको समुंदर में गिरा दे’ तो यह हो
जाएगा। 22अगर तुम ईमान रखो तो जो कुछ भी
तुम दुआ में माँगोगे वह तुमको मिल जाएगा।”

किसने ईसा को इख़्तियार दिया?

23ईसा बैतुल-मुक़द्दस में दाख़िल होकर तालीम
देने लगा। इतने में राहनुमा इमाम और क़ौम के
बुज़ुर्ग उसके पास आए और पूछा, “आप यह
सब कुछ किस इख़्तियार से कर रहे हैं? किसने
आपको यह इख़्तियार दिया है?”
24ईसा ने जवाब दिया, “मेरा भी तुमसे एक
सवाल है। इसका जवाब दो तो फिर तुमको बता
दूँगा कि मैं यह किस इख़्तियार से कर रहा हूँ।
25मुझे बताओ कि यहया का बपतिस्मा कहाँ से
था—क्या वह आसमानी था या इनसानी?”

वह आपस में बहस करने लगे, “अगर हम कहें
‘आसमानी’ तो वह पूछेगा, ‘तो फिर तुम उस पर
ईमान क्यों न लाए?’ 26लेकिन हम कैसे कह
सकते हैं कि वह इनसानी था? हम तो आम लोगों
से डरते हैं, क्योंकि वह सब मानते हैं कि यहया
नबी था।” 27चुनाँचे उन्होंने जवाब दिया, “हम
नहीं जानते।”

ईसा ने कहा, “फिर मैं भी तुमको नहीं बताता
कि मैं यह सब कुछ किस इख़्तियार से कर रहा
हूँ।

दो बेटों की तमसील

28तुम्हारा क्या ख़याल है? एक आदमी के दो
बेटे थे। बाप बड़े बेटे के पास गया और कहा, ‘बेटा,
आज अंगूर के बाग़ में जाकर काम कर।’ 29बेटे ने
जवाब दिया, ‘मैं जाना नहीं चाहता,’ लेकिन बाद

में उसने अपना ख़याल बदल लिया और बाग़ में
चला गया। 30इतने में बाप छोटे बेटे के पास भी
गया और उसे बाग़ में जाने को कहा। 'जी जनाब,
मैं जाऊँगा,' छोटे बेटे ने कहा। लेकिन वह न गया।
31अब मुझे बताओ कि किस बेटे ने अपने बाप की
मरज़ी पूरी की?"

"पहले बेटे ने," उन्होंने जवाब दिया।

ईसा ने कहा, "मैं तुमको सच बताता हूँ
कि टैक्स लेनेवाले और कसबियाँ तुमसे पहले
अल्लाह की बादशाही में दाख़िल हो रहे हैं।
32क्योंकि यहया तुमको रास्तबाज़ी की राह
दिखाने आया और तुम उस पर ईमान न लाए।
लेकिन टैक्स लेनेवाले और कसबियाँ उस पर
ईमान लाए। और यह देखकर भी तुमने अपना
ख़याल न बदला और उस पर ईमान न लाए।

अंगूर के बाग़ में मुज़ारेओं की बग़ावत

33एक और तमसील सुनो। एक ज़मीनदार था
जिसने अंगूर का बाग़ लगाया। उसने उस की
चारदीवारी बनाई, अंगूरों का रस निकालने के
लिए एक गढ़े की खुदाई की और पहरेदारों के
लिए बुर्ज तामीर किया। फिर वह उसे मुज़ारेओं
के सुपुर्द करके बैरूने-मुल्क चला गया। 34जब
अंगूर को तोड़ने का वक़्त क़रीब आ गया तो उसने
अपने नौकरों को मुज़ारेओं के पास भेज दिया
ताकि वह उनसे मालिक का हिस्सा वसूल करें।
35लेकिन मुज़ारेओं ने उसके नौकरों को पकड़
लिया। उन्होंने एक की पिटाई की, दूसरे को क़त्ल
किया और तीसरे को संगसार किया। 36फिर
मालिक ने मज़ीद नौकरों को उनके पास भेज
दिया जो पहले की निसबत ज़्यादा थे। लेकिन
मुज़ारेओं ने उनके साथ भी वही सुलूक किया।
37आख़िरकार ज़मीनदार ने अपने बेटे को उनके
पास भेजा। उसने कहा, 'आख़िर मेरे बेटे का तो
लिहाज़ करेंगे।' 38लेकिन बेटे को देखकर मुज़ारे
एक दूसरे से कहने लगे, 'यह ज़मीन का वारिस
है। आओ, हम इसे क़त्ल करके उस की मीरास
पर क़ब्ज़ा कर लें।' 39उन्होंने उसे पकड़कर बाग़
से बाहर फेंक दिया और क़त्ल किया।"

40ईसा ने पूछा, "अब बताओ, बाग़ का
मालिक जब आएगा तो उन मुज़ारेओं के साथ
क्या करेगा?"

41उन्होंने जवाब दिया, "वह उन्हें बुरी तरह
तबाह करेगा और बाग़ को दूसरों के सुपुर्द कर
देगा, ऐसे मुज़ारेओं के सुपुर्द जो वक़्त पर उसे
फ़सल का उसका हिस्सा देंगे।"

42ईसा ने उनसे कहा, "क्या तुमने कभी
कलाम का यह हवाला नहीं पढ़ा,

'जिस पत्थर को मकान बनानेवालों ने रद्द
किया,
वह कोने का बुनियादी पत्थर बन गया।
यह रब ने किया
और देखने में कितना हैरतअंगेज़ है'?

43इसलिए मैं तुम्हें बताता हूँ कि अल्लाह की
बादशाही तुमसे ले ली जाएगी और एक ऐसी क़ौम
को दी जाएगी जो इसके मुताबिक़ फल लाएगी।
44जो इस पत्थर पर गिरेगा वह टुकड़े टुकड़े हो
जाएगा, जबकि जिस पर वह ख़ुद गिरेगा उसे वह
पीस डालेगा।"

45ईसा की तमसीलें सुनकर राहनुमा इमाम
और फ़रीसी समझ गए कि वह हमारे बारे में बात
कर रहा है। 46उन्होंने ईसा को गिरिफ़्तार करने
की कोशिश की, लेकिन वह अवाम से डरते थे
क्योंकि वह समझते थे कि ईसा नबी है।

बड़ी ज़ियाफ़त की तमसील

22 ईसा ने एक बार फिर तमसीलों में
उनसे बात की। 2"आसमान की
बादशाही एक बादशाह से मुताबिक़त रखती है
जिसने अपने बेटे की शादी की ज़ियाफ़त की
तैयारियाँ करवाईं। 3जब ज़ियाफ़त का वक़्त आ
गया तो उसने अपने नौकरों को मेहमानों के पास
यह इत्तला देने के लिए भेजा कि वह आएँ,
लेकिन वह आना नहीं चाहते थे। 4फिर उसने
मज़ीद कुछ नौकरों को भेजकर कहा, 'मेहमानों

को बताना कि मैंने अपना खाना तैयार कर रखा
है। बैलों और मोटे-ताज़े बछड़ों को ज़बह किया
गया है, 5सब कुछ तैयार है। आएँ, ज़ियाफ़त में
शरीक हो जाएँ।' लेकिन मेहमानों ने परवा न की
बल्कि अपने मुख़्तलिफ़ कामों में लग गए। एक
अपने खेत को चला गया, दूसरा अपने कारोबार
में मसरूफ़ हो गया। 6बाक़ियों ने बादशाह के
नौकरों को पकड़ लिया और उनसे बुरा सुलूक
करके उन्हें क़त्ल किया। 7बादशाह बड़े तैश में
आ गया। उसने अपनी फ़ौज को भेजकर क़ातिलों
को तबाह कर दिया और उनका शहर जला दिया।
8फिर उसने अपने नौकरों से कहा, 'शादी की
ज़ियाफ़त तो तैयार है, लेकिन जिन मेहमानों को
मैंने दावत दी थी वह आने के लायक़ नहीं थे।
9अब वहाँ जाओ जहाँ सड़कें शहर से निकलती हैं
और जिससे भी मुलाक़ात हो जाए उसे ज़ियाफ़त
के लिए दावत दे देना।' 10चुनाँचे नौकर सड़कों
पर निकले और जिससे भी मुलाक़ात हुई उसे
लाए, ख़ाह वह अच्छा था या बुरा। यों शादी हाल
मेहमानों से भर गया।

11लेकिन जब बादशाह मेहमानों से मिलने के
लिए अंदर आया तो उसे एक आदमी नज़र आया
जिसने शादी के लिए मुनासिब कपड़े नहीं पहने
थे। 12बादशाह ने पूछा, 'दोस्त, तुम शादी का
लिबास पहने बग़ैर अंदर किस तरह आए?' वह
आदमी कोई जवाब न दे सका। 13फिर बादशाह
ने अपने दरबारियों को हुक्म दिया, 'इसके हाथ
और पाँव बाँधकर इसे बाहर तारीकी में फेंक दो,
वहाँ जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते रहेंगे।'

14क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत हैं, लेकिन चुने
हुए कम।"

क्या टैक्स देना जायज़ है?

15फिर फ़रीसियों ने जाकर आपस में मशवरा
किया कि हम ईसा को किस तरह ऐसी बात
करने के लिए उभारें जिससे उसे पकड़ा जा सके।
16इस मक़सद के तहत उन्होंने अपने शागिर्दों को
हेरोदेस के पैरोकारों समेत ईसा के पास भेजा।
उन्होंने कहा, "उस्ताद, हम जानते हैं कि आप
सच्चे हैं और दियानतदारी से अल्लाह की राह की
तालीम देते हैं। आप किसी की परवा नहीं करते
क्योंकि आप ग़ैरजानिबदार हैं। 17अब हमें अपनी
राय बताएँ। क्या रोमी शहनशाह को टैक्स देना
जायज़ है या नाजायज़?"

18लेकिन ईसा ने उनकी बुरी नीयत पहचान
ली। उसने कहा, "रियाकारो, तुम मुझे क्यों
फँसाना चाहते हो? 19मुझे वह सिक्का दिखाओ
जो टैक्स अदा करने के लिए इस्तेमाल होता है।"

वह उसके पास चाँदी का एक रोमी सिक्का ले
आए 20तो उसने पूछा, "किसकी सूरत और नाम
इस पर कंदा है?"

21उन्होंने जवाब दिया, "शहनशाह का।"

उसने कहा, "तो जो शहनशाह का है शहनशाह
को दो और जो अल्लाह का है अल्लाह को।"

22उसका यह जवाब सुनकर वह हक्का-बक्का
रह गए और उसे छोड़कर चले गए।

क्या हम जी उठेंगे?

23उस दिन सदूक़ी ईसा के पास आए। सदूक़ी
नहीं मानते कि रोज़े-क़ियामत मुरदे जी उठेंगे।
उन्होंने ईसा से एक सवाल किया। 24"उस्ताद,
मूसा ने हमें हुक्म दिया कि अगर कोई शादीशुदा
आदमी बेऔलाद मर जाए और उसका भाई हो
तो भाई का फ़र्ज़ है कि वह बेवा से शादी करके
अपने भाई के लिए औलाद पैदा करे। 25अब फ़र्ज़
करें कि हमारे दरमियान सात भाई थे। पहले ने
शादी की, लेकिन बेऔलाद फ़ौत हुआ। इसलिए
दूसरे भाई ने बेवा से शादी की। 26लेकिन वह भी
बेऔलाद मर गया। फिर तीसरे भाई ने उससे शादी
की। यह सिलसिला सातवें भाई तक जारी रहा।
यके बाद दीगरे हर भाई बेवा से शादी करने के
बाद मर गया। 27आख़िर में बेवा भी फ़ौत हो गई।
28अब बताएँ कि क़ियामत के दिन वह किसकी
बीवी होगी? क्योंकि सात के सात भाइयों ने
उससे शादी की थी।"

29ईसा ने जवाब दिया, “तुम इसलिए ग़लती पर हो कि न तुम कलामे-मुक़द्दस से वाक़िफ़ हो, न अल्लाह की क़ुदरत से। 30क्योंकि क़ियामत के दिन लोग न शादी करेंगे न उनकी शादी कराई जाएगी बल्कि वह आसमान पर फ़रिश्तों की मानिंद होंगे। 31रही यह बात कि मुरदे जी उठेंगे, क्या तुमने वह बात नहीं पढ़ी जो अल्लाह ने तुमसे कही? 32उसने फ़रमाया, ‘मैं इब्राहीम का ख़ुदा, इसहाक़ का ख़ुदा और याक़ूब का ख़ुदा हूँ,’ हालाँकि उस वक़्त तीनों काफ़ी अरसे से मर चुके थे। इसका मतलब है कि यह हक़ीक़त में ज़िंदा हैं। क्योंकि अल्लाह मुरदों का नहीं बल्कि ज़िंदों का ख़ुदा है।”

33यह सुनकर हुजूम उस की तालीम के बाइस हैरान रह गया।

अव्वल हुक्म

34जब फ़रीसियों ने सुना कि ईसा ने सदूक़ियों को लाजवाब कर दिया है तो वह जमा हुए। 35उनमें से एक ने जो शरीअत का आलिम था उसे फँसाने के लिए सवाल किया, 36“उस्ताद, शरीअत में सबसे बड़ा हुक्म कौन-सा है?”

37ईसा ने जवाब दिया, “‘रब अपने ख़ुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान और अपने पूरे ज़हन से प्यार करना।’ 38यह अव्वल और सबसे बड़ा हुक्म है। 39और दूसरा हुक्म इसके बराबर यह है, ‘अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।’ 40तमाम शरीअत और नबियों की तालीमात इन दो अहकाम पर मबनी हैं।”

मसीह के बारे में सवाल

41जब फ़रीसी इकट्ठे थे तो ईसा ने उनसे पूछा, 42“तुम्हारा मसीह के बारे में क्या ख़याल है? वह किसका फ़रज़ंद है?”

उन्होंने जवाब दिया, “वह दाऊद का फ़रज़ंद है।”

43ईसा ने कहा, “तो फिर दाऊद रूहुल-क़ुद्स की मारिफ़त उसे किस तरह ‘रब’ कहता है? क्योंकि वह फ़रमाता है,

44‘रब ने मेरे रब से कहा,
मेरे दहने हाथ बैठ,
जब तक मैं तेरे दुश्मनों को
तेरे पाँवों के नीचे न कर दूँ।’

45दाऊद तो ख़ुद मसीह को रब कहता है। तो फिर वह किस तरह उसका फ़रज़ंद हो सकता है?”

46कोई भी जवाब न दे सका, और उस दिन से किसी ने भी उससे मज़ीद कुछ पूछने की जुर्रत न की।

उलमा और फ़रीसियों से ख़बरदार

23 फिर ईसा हुजूम और अपने शागिर्दों से मुख़ातिब हुआ, 2“शरीअत के उलमा और फ़रीसी मूसा की कुरसी पर बैठे हैं। 3चुनाँचे जो कुछ वह तुमको बताते हैं वह करो और उसके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारो। लेकिन जो कुछ वह करते हैं वह न करो, क्योंकि वह ख़ुद अपनी तालीम के मुताबिक़ ज़िंदगी नहीं गुज़ारते। 4वह भारी गठड़ियाँ बाँध बाँधकर लोगों के कंधों पर रख देते हैं, लेकिन ख़ुद उन्हें उठाने के लिए एक उँगली तक हिलाने को तैयार नहीं होते। 5जो भी करते हैं दिखावे के लिए करते हैं। जो तावीज़[a] वह अपने बाज़ुओं और पेशानियों पर बाँधते और जो फुँदने अपने लिबास से लगाते हैं वह ख़ास बड़े होते हैं। 6उनकी बस एक ही ख़ाहिश होती है कि ज़ियाफ़तों और इबादतख़ानों में इज़्ज़त की कुरसियों पर बैठ जाएँ। 7जब लोग बाज़ारों में सलाम करके उनकी इज़्ज़त करते और ‘उस्ताद’ कहकर उनसे बात करते हैं तो फिर वह ख़ुश हो जाते हैं। 8लेकिन तुमको उस्ताद नहीं कहलाना चाहिए, क्योंकि तुम्हारा सिर्फ़ एक ही उस्ताद है जबकि तुम सब भाई हो। 9और दुनिया में किसी को ‘बाप’ कहकर उससे बात न करो, क्योंकि

[a]तावीज़ों में तौरेत के हवालाजात लिखकर रखे जाते थे।

तुम्हारा एक ही बाप है और वह आसमान पर है।
10हादी न कहलाना क्योंकि तुम्हारा सिर्फ़ एक ही
हादी है यानी अल-मसीह। 11तुममें से सबसे बड़ा
शख़्स तुम्हारा ख़ादिम होगा। 12क्योंकि जो भी
अपने आपको सरफ़राज़ करेगा उसे पस्त किया
जाएगा और जो अपने आपको पस्त करेगा उसे
सरफ़राज़ किया जाएगा।

उनकी रियाकारी पर अफ़सोस

13शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम
पर अफ़सोस! रियाकारो! तुम लोगों के सामने
आसमान की बादशाही पर ताला लगाते हो। न
तुम ख़ुद दाख़िल होते हो, न उन्हें दाख़िल होने देते
हो जो अंदर जाना चाहते हैं।

14[शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम
पर अफ़सोस! रियाकारो! तुम बेवाओं के घरों
पर क़ब्ज़ा कर लेते और दिखावे के लिए लंबी
लंबी नमाज़ पढ़ते हो। इसलिए तुम्हें ज़्यादा सज़ा
मिलेगी।]

15शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर
अफ़सोस! रियाकारो! तुम एक नौमुरीद बनाने
की ख़ातिर ख़ुश्की और तरी के लंबे सफ़र करते
हो। और जब इसमें कामयाब हो जाते हो तो तुम
उस शख़्स को अपनी निसबत जहन्नुम का दुगना
शरीर फ़रज़ंद बना देते हो। 16अंधे राहनुमाओ,
तुम पर अफ़सोस! तुम कहते हो, 'अगर कोई
बैतुल-मुक़द्दस की क़सम खाए तो ज़रूरी नहीं कि
वह उसे पूरा करे। लेकिन अगर वह बैतुल-मुक़द्दस
के सोने की क़सम खाए तो लाज़िम है कि उसे पूरा
करे।' 17अंधे अहमक़ो! ज़्यादा अहम किया है,
सोना या बैतुल-मुक़द्दस जो सोने को मख़सूसो-
मुक़द्दस बनाता है? 18तुम यह भी कहते हो,
'अगर कोई क़ुरबानगाह की क़सम खाए तो ज़रूरी
नहीं कि वह उसे पूरा करे। लेकिन अगर वह
क़ुरबानगाह पर पड़े हदिये की क़सम खाए तो
लाज़िम है कि वह उसे पूरा करे।' 19अंधो! ज़्यादा
अहम किया है, हदिया या क़ुरबानगाह जो हदिये
को मख़सूसो-मुक़द्दस बनाती है? 20ग़रज़, जो
क़ुरबानगाह की क़सम खाता है वह उन तमाम
चीज़ों की क़सम भी खाता है जो उस पर पड़ी
हैं। 21और जो बैतुल-मुक़द्दस की क़सम खाता है
वह उस की भी क़सम खाता है जो उसमें सुकूनत
करता है। 22और जो आसमान की क़सम खाता
है वह अल्लाह के तख़्त की और उस पर बैठनेवाले
की क़सम भी खाता है।

23शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर
अफ़सोस! रियाकारो! गो तुम बड़ी एहतियात
से पौदीने, अजवायन और ज़ीरे का दसवाँ हिस्सा
हदिये के लिए मख़सूस करते हो, लेकिन तुमने
शरीअत की ज़्यादा अहम बातों को नज़रंदाज़ कर
दिया है यानी इनसाफ़, रहम और वफ़ादारी को।
लाज़िम है कि तुम यह काम भी करो और पहला
भी न छोड़ो। 24अंधे राहनुमाओ! तुम अपने
मशरूब छानते हो ताकि ग़लती से मच्छर न पी
लिया जाए, लेकिन साथ साथ ऊँट को निगल
लेते हो।

25शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम
पर अफ़सोस! रियाकारो! तुम बाहर से हर
प्याले और बरतन की सफ़ाई करते हो, लेकिन
अंदर से वह लूट-मार और ऐशपरस्ती से भरे होते
हैं। 26अंधे फ़रीसियो, पहले अंदर से प्याले और
बरतन की सफ़ाई करो, और फिर वह बाहर से भी
पाक-साफ़ हो जाएंगे।

27शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम
पर अफ़सोस! रियाकारो! तुम ऐसी क़ब्रों से
मुताबिक़त रखते हो जिन पर सफेदी की गई हो।
गो वह बाहर से दिलकश नज़र आती हैं, लेकिन
अंदर से वह मुरदों की हड्डियों और हर क़िस्म
की नापाकी से भरी होती हैं। 28तुम भी बाहर
से रास्तबाज़ दिखाई देते हो जबकि अंदर से तुम
रियाकारी और बेदीनी से मामूर होते हो।

29शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर
अफ़सोस! रियाकारो! तुम नबियों के लिए क़ब्रें
तामीर करते और रास्तबाज़ों के मज़ार सजाते हो।
30और तुम कहते हो, 'अगर हम अपने बापदादा
के ज़माने में ज़िंदा होते तो नबियों को क़त्ल

करने में शरीक न होते।’ 31लेकिन यह कहने
से तुम अपने ख़िलाफ़ गवाही देते हो कि तुम
नबियों के क़ातिलों की औलाद हो। 32अब जाओ,
वह काम मुकम्मल करो जो तुम्हारे बापदादा ने
अधूरा छोड़ दिया था। 33साँपो, ज़हरीले साँपों के
बच्चो! तुम किस तरह जहन्नुम की सज़ा से बच
पाओगे? 34इसलिए मैं नबियों, दानिशमंदों और
शरीअत के आलिमों को तुम्हारे पास भेज देता हूँ।
उनमें से बाज़ को तुम क़त्ल और मसलूब करोगे
और बाज़ को अपने इबादतख़ानों में ले जाकर
कोड़े लगवाओगे और शहर बशहर उनका ताक़्क़ुब
करोगे। 35नतीजे में तुम तमाम रास्तबाज़ों के
क़त्ल के ज़िम्मेदार ठहरोगे—रास्तबाज़ हाबील
के क़त्ल से लेकर ज़करियाह बिन बरकियाह
के क़त्ल तक जिसे तुमने बैतुल-मुक़द्दस के
दरवाज़े और उसके सहन में मौजूद क़ुरबानगाह
के दरमियान मार डाला। 36मैं तुमको सच बताता
हूँ कि यह सब कुछ इसी नसल पर आएगा।

यरूशलम पर अफ़सोस

37हाय यरूशलम, यरूशलम! तू जो नबियों
को क़त्ल करती और अपने पास भेजे हुए पैग़ंबरों
को संगसार करती है। मैंने कितनी ही बार तेरी
औलाद को जमा करना चाहा, बिलकुल उसी तरह
जिस तरह मुरग़ी अपने बच्चों को अपने परों तले
जमा करके महफ़ूज़ कर लेती है। लेकिन तुमने
न चाहा। 38अब तुम्हारे घर को वीरानो-सुनसान
छोड़ा जाएगा। 39क्योंकि मैं तुमको बताता हूँ, तुम
मुझे उस वक़्त तक दुबारा नहीं देखोगे जब तक
तुम न कहो कि मुबारक है वह जो रब के नाम से
आता है।”

बैतुल-मुक़द्दस पर आनेवाली तबाही

24 ईसा बैतुल-मुक़द्दस को छोड़कर
निकल रहा था कि उसके शागिर्द
उसके पास आए और बैतुल-मुक़द्दस की
मुख़्तलिफ़ इमारतों की तरफ़ उस की तवज्जुह
दिलाने लगे। 2लेकिन ईसा ने जवाब में कहा,
“क्या तुमको यह सब कुछ नज़र आता है? मैं
तुमको सच बताता हूँ कि यहाँ पत्थर पर पत्थर
नहीं रहेगा बल्कि सब कुछ ढा दिया जाएगा।”

मुसीबतों और ईज़ारसानियों की पेशगोई

3बाद में ईसा ज़ैतून के पहाड़ पर बैठ गया।
शागिर्द अकेले उसके पास आए। उन्होंने कहा,
“हमें ज़रा बताएँ, यह कब होगा? क्या क्या नज़र
आएगा जिससे पता चलेगा कि आप आनेवाले हैं
और यह दुनिया ख़त्म होनेवाली है?”

4ईसा ने जवाब दिया, “ख़बरदार रहो कि कोई
तुम्हें गुमराह न कर दे। 5क्योंकि बहुत-से लोग
मेरा नाम लेकर आएँगे और कहेंगे, ‘मैं ही मसीह
हूँ।’ यों वह बहुतों को गुमराह कर देंगे। 6जंगों
की ख़बरें और अफ़वाहें तुम तक पहुँचेंगी, लेकिन
मुहतात रहो ताकि तुम घबरा न जाओ। क्योंकि
लाज़िम है कि यह सब कुछ पेश आए। तो भी
अभी आख़िरत नहीं होगी। 7एक क़ौम दूसरी
के ख़िलाफ़ उठ खड़ी होगी, और एक बादशाही
दूसरी के ख़िलाफ़। काल पड़ेंगे और जगह जगह
ज़लज़ले आएँगे। 8लेकिन यह सिर्फ़ दर्दे-ज़ह की
इब्तिदा ही होगी।

9फिर वह तुमको बड़ी मुसीबत में डाल देंगे और
तुमको क़त्ल करेंगे। तमाम क़ौमें तुमसे इसलिए
नफ़रत करेंगी कि तुम मेरे पैरोकार हो। 10उस
वक़्त बहुत-से लोग ईमान से बरगश्ता होकर एक
दूसरे को दुश्मन के हवाले करेंगे और एक दूसरे से
नफ़रत करेंगे। 11बहुत-से झूटे नबी खड़े होकर
बहुत-से लोगों को गुमराह कर देंगे। 12बेदीनी
के बढ़ जाने की वजह से बेशतर लोगों की
मुहब्बत ठंडी पड़ जाएगी। 13लेकिन जो आख़िर
तक क़ायम रहेगा उसे नजात मिलेगी। 14और
बादशाही की इस ख़ुशख़बरी के पैग़ाम का एलान
पूरी दुनिया में किया जाएगा ताकि तमाम क़ौमों के
सामने उस की गवाही दी जाए। फिर ही आख़िरत
आएगी।

बैतुल-मुक़द्दस की बेहुरमती

15एक दिन आएगा जब तुम मुक़द्दस मक़ाम
में वह कुछ खड़ा देखोगे जिसका ज़िक्र दानियाल
नबी ने किया और जो बेहुरमती और तबाही का
बाइस है।" (क़ारी इस पर ध्यान दे!) 16"उस
वक़्त यहूदिया के रहनेवाले भागकर पहाड़ी इलाक़े
में पनाह लें। 17जो अपने घर की छत पर हो वह
घर में से कुछ साथ ले जाने के लिए न उतरे। 18जो
खेत में हो वह अपनी चादर साथ ले जाने के लिए
वापस न जाए। 19उन ख़वातीन पर अफ़सोस जो
उन दिनों में हामिला हों या अपने बच्चों को दूध
पिलाती हों। 20दुआ करो कि तुमको सर्दियों के
मौसम में या सबत के दिन हिजरत न करनी पड़े।
21क्योंकि उस वक़्त ऐसी शदीद मुसीबत होगी
कि दुनिया की तख़लीक़ से आज तक देखने में न
आई होगी। इस क़िस्म की मुसीबत बाद में भी
कभी नहीं आएगी। 22और अगर इस मुसीबत
का दौरानिया मुख़तसर न किया जाता तो कोई न
बचता। लेकिन अल्लाह के चुने हुओं की ख़ातिर
इसका दौरानिया मुख़तसर कर दिया जाएगा।

23उस वक़्त अगर कोई तुमको बताए, 'देखो,
मसीह यहाँ है' या 'वह वहाँ है' तो उस की
बात न मानना। 24क्योंकि झूटे मसीह और झूटे
नबी उठ खड़े होंगे जो बड़े अजीबो-ग़रीब निशान
और मोजिज़े दिखाएँगे ताकि अल्लाह के चुने हुए
लोगों को भी ग़लत रास्ते पर डाल दें—अगर यह
मुमकिन होता। 25देखो, मैंने तुम्हें पहले से इससे
आगाह कर दिया है।

26चुनाँचे अगर कोई तुमको बताए, 'देखो, वह
रेगिस्तान में है' तो वहाँ जाने के लिए न निकलना।
और अगर कोई कहे, 'देखो, वह अंदरूनी कमरों में
है' तो उसका यक़ीन न करना। 27क्योंकि जिस
तरह बादल की बिजली मशरिक़ में कड़ककर
मग़रिब तक चमकती है उसी तरह इब्ने-आदम
की आमद भी होगी।

28जहाँ भी लाश पड़ी हो वहाँ गिद्ध जमा हो
जाएंगे।

इब्ने-आदम की आमद

29मुसीबत के उन दिनों के ऐन बाद सूरज
तारीक हो जाएगा और चाँद की रौशनी ख़त्म
हो जाएगी। सितारे आसमान पर से गिर पड़ेंगे
और आसमान की क़ुव्वतें हिलाई जाएँगी। 30उस
वक़्त इब्ने-आदम का निशान आसमान पर नज़र
आएगा। तब दुनिया की तमाम क़ौमें मातम
करेंगी। वह इब्ने-आदम को बड़ी क़ुदरत और
जलाल के साथ आसमान के बादलों पर आते हुए
देखेंगी। 31और वह अपने फ़रिश्तों को बिगुल की
ऊँची आवाज़ के साथ भेज देगा ताकि उसके चुने
हुओं को चारों तरफ़ से जमा करें, आसमान के
एक सिरे से दूसरे सिरे तक इकट्ठा करें।

अंजीर के दरख़्त से सबक़

32अंजीर के दरख़्त से सबक़ सीखो। ज्योंही
उस की शाख़ें नरम और लचकदार हो जाती हैं
और उनसे कोंपलें फूट निकलती हैं तो तुमको
मालूम हो जाता है कि गरमियों का मौसम क़रीब
आ गया है। 33इसी तरह जब तुम यह वाक़ियात
देखोगे तो जान लोगे कि इब्ने-आदम की आमद
क़रीब बल्कि दरवाज़े पर है। 34मैं तुमको सच
बताता हूँ कि इस नसल के ख़त्म होने से पहले
पहले यह सब कुछ वाक़े होगा। 35आसमानो-
ज़मीन तो जाते रहेंगे, लेकिन मेरी बातें हमेशा तक
क़ायम रहेंगी।

किसी को भी उस की आमद का वक़्त मालूम नहीं

36लेकिन किसी को भी इल्म नहीं कि यह किस
दिन या कौन-सी घड़ी रूनुमा होगा। आसमान के
फ़रिश्तों और फ़रज़ंद को भी इल्म नहीं बल्कि
सिर्फ़ बाप को। 37जब इब्ने-आदम आएगा तो
हालात नूह के दिनों जैसे होंगे। 38क्योंकि सैलाब
से पहले के दिनों में लोग उस वक़्त तक खाते-
पीते और शादियाँ करते कराते रहे जब तक नूह
कश्ती में दाख़िल न हो गया। 39वह उस वक़्त
तक आनेवाली मुसीबत के बारे में लाइल्म रहे

जब तक सैलाब आकर उन सबको बहा न ले
गया। जब इब्ने-आदम आएगा तो इसी क़िस्म
के हालात होंगे। 40उस वक़्त दो अफ़राद खेत
में होंगे, एक को साथ ले लिया जाएगा जबकि
दूसरे को पीछे छोड़ दिया जाएगा। 41दो ख़वातीन
चक्की पर गंदुम पीस रही होंगी, एक को साथ ले
लिया जाएगा जबकि दूसरी को पीछे छोड़ दिया
जाएगा।

42इसलिए चौकस रहो, क्योंकि तुम नहीं
जानते कि तुम्हारा ख़ुदावंद किस दिन आ जाएगा।
43यक़ीन जानो, अगर किसी घर के मालिक को
मालूम होता कि चोर कब आएगा तो वह ज़रूर
चौकस रहता और उसे अपने घर में नक़ब लगाने न
देता। 44तुम भी तैयार रहो, क्योंकि इब्ने-आदम
ऐसे वक़्त आएगा जब तुम उस की तवक़्क़ो नहीं
करोगे।

वफ़ादार नौकर

45चुनाँचे कौन-सा नौकर वफ़ादार और
समझदार है? फ़र्ज़ करो कि घर के मालिक ने
किसी नौकर को बाक़ी नौकरों पर मुक़र्रर किया
हो। उस की एक ज़िम्मेदारी यह भी है कि उन्हें
वक़्त पर खाना खिलाए। 46वह नौकर मुबारक
होगा जो मालिक की वापसी पर यह सब कुछ
कर रहा होगा। 47मैं तुमको सच बताता हूँ कि
यह देखकर मालिक उसे अपनी पूरी जायदाद पर
मुक़र्रर करेगा। 48लेकिन फ़र्ज़ करो कि नौकर
अपने दिल में सोचे, 'मालिक की वापसी में अभी
देर है।' 49वह अपने साथी नौकरों को पीटने और
शराबियों के साथ खाने-पीने लगे। 50अगर वह
ऐसा करे तो मालिक ऐसे दिन और वक़्त आएगा
जिसकी तवक़्क़ो नौकर को नहीं होगी। 51इन
हालात को देखकर वह नौकर को टुकड़े टुकड़े कर
डालेगा और उसे रियाकारों में शामिल करेगा, वहाँ
जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते रहेंगे।

दस कुँवारियों की तमसील

25 उस वक़्त आसमान की बाद-
शाही दस कुँवारियों से मुता-
बिक़त रखेगी जो अपने चराग़ लेकर दूल्हे को
मिलने के लिए निकलें। 2उनमें से पाँच नासमझ
थीं और पाँच समझदार। 3नासमझ कुँवारियों ने
अपने पास चराग़ों के लिए फ़ाल्तू तेल न रखा।
4लेकिन समझदार कुँवारियों ने कुप्पी में तेल
डालकर अपने साथ ले लिया। 5दूल्हे को आने में
बड़ी देर लगी, इसलिए वह सब ऊँघ ऊँघकर सो
गईं।

6आधी रात को शोर मच गया, 'देखो, दूल्हा
पहुँच रहा है, उसे मिलने के लिए निकलो!' 7इस
पर तमाम कुँवारियाँ जाग उठीं और अपने चराग़ों
को दुरुस्त करने लगीं। 8नासमझ कुँवारियों ने
समझदार कुँवारियों से कहा, 'अपने तेल में से
हमें भी कुछ दे दो। हमारे चराग़ बुझनेवाले हैं।'
9दूसरी कुँवारियों ने जवाब दिया, 'नहीं, ऐसा न
हो कि न सिर्फ़ तुम्हारे लिए बल्कि हमारे लिए
भी तेल काफ़ी न हो। दुकान पर जाकर अपने
लिए ख़रीद लो।' 10चुनाँचे नासमझ कुँवारियाँ
चली गईं। लेकिन इस दौरान दूल्हा पहुँच गया। जो
कुँवारियाँ तैयार थीं वह उसके साथ शादी हाल में
दाख़िल हुईं। फिर दरवाज़े को बंद कर दिया गया।
11कुछ देर के बाद बाक़ी कुँवारियाँ आईं और
चिल्लाने लगीं, 'जनाब! हमारे लिए दरवाज़ा
खोल दें।' 12लेकिन उसने जवाब दिया, 'यक़ीन
जानो, मैं तुमको नहीं जानता।'

13इसलिए चौकस रहो, क्योंकि तुम इब्ने-
आदम के आने का दिन या वक़्त नहीं जानते।

तीन नौकरों की तमसील

14उस वक़्त आसमान की बादशाही यों होगी :
एक आदमी को बैरूने-मुल्क जाना था। उसने
अपने नौकरों को बुलाकर अपनी मिलकियत
उनके सुपुर्द कर दी। 15पहले को उसने सोने
के 5,000 सिक्के दिए, दूसरे को 2,000 और
तीसरे को 1,000। हर एक को उसने उस की

क़ाबिलियत के मुताबिक़ पैसे दिए। फिर वह
रवाना हुआ। 16जिस नौकर को 5,000 सिक्के
मिले थे उसने सीधा जाकर उन्हें किसी कारोबार
में लगाया। इससे उसे मज़ीद 5,000 सिक्के
हासिल हुए। 17इसी तरह दूसरे को भी जिसे
2,000 सिक्के मिले थे मज़ीद 2,000 सिक्के
हासिल हुए। 18लेकिन जिस आदमी को 1,000
सिक्के मिले थे वह चला गया और कहीं ज़मीन
में गढ़ा खोदकर अपने मालिक के पैसे उसमें छुपा
दिए।

19बड़ी देर के बाद उनका मालिक लौट आया।
जब उसने उनके साथ हिसाब-किताब किया
20तो पहला नौकर जिसे 5,000 सिक्के मिले
थे मज़ीद 5,000 सिक्के लेकर आया। उसने
कहा, ‘जनाब, आपने 5,000 सिक्के मेरे सुपुर्द
किए थे। यह देखें, मैंने मज़ीद 5,000 सिक्के
हासिल किए हैं।’ 21उसके मालिक ने जवाब
दिया, ‘शाबाश, मेरे अच्छे और वफ़ादार नौकर।
तुम थोड़े में वफ़ादार रहे, इसलिए मैं तुम्हें बहुत
कुछ पर मुक़र्रर करूँगा। अंदर आओ और अपने
मालिक की ख़ुशी में शरीक हो जाओ।’

22फिर दूसरा नौकर आया जिसे 2,000
सिक्के मिले थे। उसने कहा, ‘जनाब, आपने
2,000 सिक्के मेरे सुपुर्द किए थे। यह देखें,
मैंने मज़ीद 2,000 सिक्के हासिल किए हैं।’
23उसके मालिक ने जवाब दिया, ‘शाबाश, मेरे
अच्छे और वफ़ादार नौकर। तुम थोड़े में वफ़ादार
रहे, इसलिए मैं तुम्हें बहुत कुछ पर मुक़र्रर करूँगा।
अंदर आओ और अपने मालिक की ख़ुशी में
शरीक हो जाओ।’

24फिर तीसरा नौकर आया जिसे 1,000
सिक्के मिले थे। उसने कहा, ‘जनाब, मैं जानता
था कि आप सख़्त आदमी हैं। जो बीज आपने नहीं
बोया उस की फ़सल आप काटते हैं और जो कुछ
आपने नहीं लगाया उस की पैदावार जमा करते
हैं। 25इसलिए मैं डर गया और जाकर आपके पैसे
ज़मीन में छुपा दिए। अब आप अपने पैसे वापस
ले सकते हैं।’

26उसके मालिक ने जवाब दिया, ‘शरीर और
सुस्त नौकर! क्या तू जानता था कि जो बीज मैंने
नहीं बोया उस की फ़सल काटता हूँ और जो कुछ
मैंने नहीं लगाया उस की पैदावार जमा करता हूँ?
27तो फिर तूने मेरे पैसे बैंक में क्यों न जमा करा
दिए? अगर ऐसा करता तो वापसी पर मुझे कम
अज़ कम वह पैसे सूद समेत मिल जाते।’ 28यह
कहकर मालिक दूसरों से मुख़ातिब हुआ, ‘यह
पैसे इससे लेकर उस नौकर को दे दो जिसके पास
10,000 सिक्के हैं। 29क्योंकि जिसके पास
कुछ है उसे और दिया जाएगा और उसके पास
कसरत की चीज़ें होंगी। लेकिन जिसके पास कुछ
नहीं है उससे वह भी छीन लिया जाएगा जो उसके
पास है। 30अब इस बेकार नौकर को निकालकर
बाहर की तारीकी में फेंक दो, वहाँ जहाँ लोग रोते
और दाँत पीसते रहेंगे।’

आख़िरी अदालत

31जब इब्ने-आदम अपने जलाल के साथ
आएगा और तमाम फ़रिश्ते उसके साथ होंगे तो
वह अपने जलाली तख़्त पर बैठ जाएगा। 32तब
तमाम क़ौमें उसके सामने जमा की जाएँगी। और
जिस तरह चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग
करता है उसी तरह वह लोगों को एक दूसरे
से अलग करेगा। 33वह भेड़ों को अपने दहने
हाथ खड़ा करेगा और बकरियों को अपने बाएँ
हाथ। 34फिर बादशाह दहने हाथवालों से कहेगा,
‘आओ, मेरे बाप के मुबारक लोगो! जो बादशाही
दुनिया की तख़लीक़ से तुम्हारे लिए तैयार है उसे
मीरास में ले लो। 35क्योंकि मैं भूका था और तुमने
मुझे खाना खिलाया, मैं प्यासा था और तुमने मुझे
पानी पिलाया, मैं अजनबी था और तुमने मेरी
मेहमान-नवाज़ी की, 36मैं नंगा था और तुमने मुझे
कपड़े पहनाए, मैं बीमार था और तुमने मेरी देख-
भाल की, मैं जेल में था और तुम मुझसे मिलने
आए।’

37फिर यह रास्तबाज़ लोग जवाब में कहेंगे,
‘ख़ुदावंद, हमने आपको कब भूका देखकर खाना

खिलाया, आपको कब प्यासा देखकर पानी
पिलाया? 38हमने आपको कब अजनबी की
हैसियत से देखकर आपकी मेहमान-नवाज़ी की,
आपको कब नंगा देखकर कपड़े पहनाए? 39हम
आपको कब बीमार हालत में या जेल में पड़ा
देखकर आपसे मिलने गए?’ 40बादशाह जवाब
देगा, ‘मैं तुम्हें सच बताता हूँ कि जो कुछ तुमने मेरे
इन सबसे छोटे भाइयों में से एक के लिए किया
वह तुमने मेरे ही लिए किया।’

41फिर वह बाएँ हाथवालों से कहेगा, ‘लानती
लोगो, मुझसे दूर हो जाओ और उस अबदी आग
में चले जाओ जो इबलीस और उसके फ़रिश्तों के
लिए तैयार है। 42क्योंकि मैं भूका था और तुमने
मुझे कुछ न खिलाया, मैं प्यासा था और तुमने मुझे
पानी न पिलाया, 43मैं अजनबी था और तुमने मेरी
मेहमान-नवाज़ी न की, मैं नंगा था और तुमने मुझे
कपड़े न पहनाए, मैं बीमार और जेल में था और
तुम मुझसे मिलने न आए।’

44फिर वह जवाब में पूछेंगे, ‘ख़ुदावंद, हमने
आपको कब भूका, प्यासा, अजनबी, नंगा,
बीमार या जेल में पड़ा देखा और आपकी ख़िदमत
न की?’ 45वह जवाब देगा, ‘मैं तुमको सच
बताता हूँ कि जब कभी तुमने इन सबसे छोटों में
से एक की मदद करने से इनकार किया तो तुमने
मेरी ख़िदमत करने से इनकार किया।’ 46फिर
यह अबदी सज़ा भुगतने के लिए जाएंगे जबकि
रास्तबाज़ अबदी ज़िंदगी में दाख़िल होंगे।”

ईसा के ख़िलाफ़ मनसूबाबंदियाँ

26 यह बातें ख़त्म करने पर ईसा शा-
गिर्दों से मुख़ातिब हुआ, 2“तुम जानते
हो कि दो दिन के बाद फ़सह की ईद शुरू होगी।
उस वक़्त इब्ने-आदम को दुश्मन के हवाले किया
जाएगा ताकि उसे मसलूब किया जाए।”

3फिर राहनुमा इमाम और क़ौम के बुज़ुर्ग
कायफ़ा नामी इमामे-आज़म के महल में जमा
हुए 4और ईसा को किसी चालाकी से गिरिफ़्तार
करके क़त्ल करने की साज़िशें करने लगे।
5उन्होंने कहा, “लेकिन यह ईद के दौरान नहीं
होना चाहिए, ऐसा न हो कि अवाम में हलचल
मच जाए।”

ख़ातून ईसा पर ख़ुशबू उंडेलती है

6इतने में ईसा बैत-अनियाह आकर एक
आदमी के घर में दाख़िल हुआ जो किसी वक़्त
कोढ़ का मरीज़ था। उसका नाम शमाऊन था।
7ईसा खाना खाने के लिए बैठ गया तो एक
औरत आई जिसके पास निहायत क़ीमती इत्र
का इत्रदान था। उसने उसे ईसा के सर पर उंडेल
दिया। 8शागिर्द यह देखकर नाराज़ हुए। उन्होंने
कहा, “इतना क़ीमती इत्र ज़ाया करने की क्या
ज़रूरत थी? 9यह बहुत महँगी चीज़ है। अगर
इसे बेचा जाता तो इसके पैसे ग़रीबों को दिए जा
सकते थे।”

10लेकिन उनके ख़याल पहचानकर ईसा ने
उनसे कहा, “तुम इसे क्यों तंग कर रहे हो? इसने
तो मेरे लिए एक नेक काम किया है। 11ग़रीब तो
हमेशा तुम्हारे पास रहेंगे, लेकिन मैं हमेशा तक
तुम्हारे पास नहीं रहूँगा। 12मुझ पर इत्र उंडेलने से
उसने मेरे बदन को दफ़न होने के लिए तैयार किया
है। 13मैं तुमको सच बताता हूँ कि तमाम दुनिया में
जहाँ भी अल्लाह की ख़ुशख़बरी का एलान किया
जाएगा वहाँ लोग इस ख़ातून को याद करके वह
कुछ सुनाएँगे जो इसने किया है।”

ईसा को दुश्मन के हवाले करने का मनसूबा

14फिर यहूदाह इस्करियोती जो बारह शा-
गिर्दों में से एक था राहनुमा इमामों के पास गया।
15उसने पूछा, “आप मुझे ईसा को आपके हवाले
करने के एवज़ कितने पैसे देने के लिए तैयार हैं?”
उन्होंने उसके लिए चाँदी के 30 सिक्के मुतैयिन
किए। 16उस वक़्त से यहूदा ईसा को उनके हवाले
करने का मौक़ा ढूँडने लगा।

फ़सह की ईद के लिए तैयारियाँ

17बेख़मीरी रोटी की ईद आई। पहले दिन ईसा
के शागिर्दों ने उसके पास आकर पूछा, “हम कहाँ
आपके लिए फ़सह का खाना तैयार करें?”
18उसने जवाब दिया, “यरूशलम शहर में फ़ुलाँ
आदमी के पास जाओ और उसे बताओ, ‘उस्ताद
ने कहा है कि मेरा मुक़र्ररा वक़्त क़रीब आ गया
है। मैं अपने शागिर्दों के साथ फ़सह की ईद का
खाना आपके घर में खाऊँगा’।”
19शागिर्दों ने वह कुछ किया जो ईसा ने उन्हें
बताया था और फ़सह की ईद का खाना तैयार
किया।

कौन ग़द्दार है?

20शाम के वक़्त ईसा बारह शागिर्दों के साथ
खाना खाने के लिए बैठ गया। 21जब वह खाना
खा रहे थे तो उसने कहा, “मैं तुमको सच बताता
हूँ कि तुममें से एक मुझे दुश्मन के हवाले कर
देगा।”
22शागिर्द यह सुनकर निहायत ग़मगीन हुए।
बारी बारी वह उससे पूछने लगे, “ख़ुदावंद, मैं तो
नहीं हूँ?”
23ईसा ने जवाब दिया, “जिसने मेरे साथ
अपना हाथ सालन के बरतन में डाला है वही मुझे
दुश्मन के हवाले करेगा। 24इब्ने-आदम तो कूच
कर जाएगा जिस तरह कलामे-मुक़द्दस में लिखा
है, लेकिन उस शख़्स पर अफ़सोस जिसके वसीले
से उसे दुश्मन के हवाले कर दिया जाएगा। उसके
लिए बेहतर यह होता कि वह कभी पैदा ही न
होता।”
25फिर यहूदा ने जो उसे दुश्मन के हवाले करने
को था पूछा, “उस्ताद, मैं तो नहीं हूँ?”
ईसा ने जवाब दिया, “जी, तुमने ख़ुद कहा है।”

फ़सह का आख़िरी खाना

26खाने के दौरान ईसा ने रोटी लेकर
शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उसे टुकड़े करके
शागिर्दों को दे दिया। उसने कहा, “यह लो और
खाओ। यह मेरा बदन है।”
27फिर उसने मै का प्याला लेकर शुक्र-
गुज़ारी की दुआ की और उसे उन्हें देकर कहा,
“तुम सब इसमें से पियो। 28यह मेरा ख़ून है, नए
अहद का वह ख़ून जो बहुतों के लिए बहाया जाता
है ताकि उनके गुनाहों को मुआफ़ कर दिया जाए।
29मैं तुमको सच बताता हूँ कि अब से मैं अंगूर
का यह रस नहीं पियूँगा, क्योंकि अगली दफ़ा
इसे तुम्हारे साथ अपने बाप की बादशाही में ही
पियूँगा।”
30फिर एक ज़बूर गाकर वह निकले और ज़ैतून
के पहाड़ के पास पहुँचे।

पतरस के इनकार की पेशगोई

31ईसा ने उन्हें बताया, “आज रात तुम सब
मेरी बाबत बरगश्ता हो जाओगे, क्योंकि कलामे-
मुक़द्दस में अल्लाह फ़रमाता है, ‘मैं चरवाहे को
मार डालूँगा और रेवड़ की भेड़ें तित्तर-बित्तर हो
जाएँगी।’ 32लेकिन अपने जी उठने के बाद मैं
तुम्हारे आगे आगे गलील पहुँचूँगा।”
33पतरस ने एतराज़ किया, “दूसरे बेशक सब
आपकी बाबत बरगश्ता हो जाएँ, लेकिन मैं कभी
नहीं हूँगा।”
34ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुझे सच बताता हूँ,
इसी रात मुरग़ के बाँग देने से पहले पहले तू तीन
बार मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।”
35पतरस ने कहा, “हरगिज़ नहीं! मैं आपको
जानने से कभी इनकार नहीं करूँगा, चाहे मुझे
आपके साथ मरना भी पड़े।”
दूसरों ने भी यही कुछ कहा।

गत्समनी बाग़ में ईसा की दुआ

36ईसा अपने शागिर्दों के साथ एक बाग़ में
पहुँचा जिसका नाम गत्समनी था। उसने उनसे
कहा, “यहाँ बैठकर मेरा इंतज़ार करो। मैं दुआ
करने के लिए आगे जाता हूँ।” 37उसने पतरस
और ज़बदी के दो बेटों याक़ूब और यूहन्ना को

साथ लिया। वहाँ वह ग़मगीन और बेक़रार होने
लगा। 38उसने उनसे कहा, “मैं दुख से इतना दबा
हुआ हूँ कि मरने को हूँ। यहाँ ठहरकर मेरे साथ
जागते रहो।”
39कुछ आगे जाकर वह औंधे मुँह ज़मीन पर
गिरकर यों दुआ करने लगा, “ऐ मेरे बाप, अगर
मुमकिन हो तो दुख का यह प्याला मुझसे हट
जाए। लेकिन मेरी नहीं बल्कि तेरी मरज़ी पूरी
हो।”
40वह अपने शागिर्दों के पास वापस आया तो
देखा कि वह सो रहे हैं। उसने पतरस से पूछा,
“क्या तुम लोग एक घंटा भी मेरे साथ नहीं जाग
सके? 41जागते और दुआ करते रहो ताकि
आज़माइश में न पड़ो। क्योंकि रूह तो तैयार है
लेकिन जिस्म कमज़ोर।”
42एक बार फिर उसने जाकर दुआ की, “मेरे
बाप, अगर यह प्याला मेरे पिए बग़ैर हट नहीं
सकता तो फिर तेरी मरज़ी पूरी हो।” 43जब वह
वापस आया तो दुबारा देखा कि वह सो रहे हैं,
क्योंकि नींद की बदौलत उनकी आँखें बोझल थीं।
44चुनाँचे वह उन्हें दुबारा छोड़कर चला गया
और तीसरी बार यही दुआ करने लगा। 45फिर
ईसा शागिर्दों के पास वापस आया और उनसे
कहा, “अभी तक सो और आराम कर रहे हो?
देखो, वक़्त आ गया है कि इब्ने-आदम गुनाहगारों
के हवाले किया जाए। 46उठो! आओ, चलें।
देखो, मुझे दुश्मन के हवाले करनेवाला क़रीब आ
चुका है।”

ईसा की गिरिफ़्तारी

47वह अभी यह बात कर ही रहा था कि यहूदा
पहुँच गया, जो बारह शागिर्दों में से एक था। उसके
साथ तलवारों और लाठियों से लैस आदमियों का
बड़ा हुजूम था। उन्हें राहनुमा इमामों और क़ौम के
बुज़ुर्गों ने भेजा था। 48इस ग़द्दार यहूदा ने उन्हें एक
इम्तियाज़ी निशान दिया था कि जिसको मैं बोसा
दूँ वही ईसा है। उसे गिरिफ़्तार कर लेना।
49ज्योंही वह पहुँचे यहूदा ईसा के पास गया
और “उस्ताद, अस्सलामु अलैकुम!” कहकर
उसे बोसा दिया।
50ईसा ने कहा, “दोस्त, क्या तू इसी मक़सद
से आया है?”
फिर उन्होंने उसे पकड़कर गिरिफ़्तार कर
लिया। 51इस पर ईसा के एक साथी ने अपनी
तलवार मियान से निकाली और इमामे-आज़म
के ग़ुलाम को मारकर उसका कान उड़ा दिया।
52लेकिन ईसा ने कहा, “अपनी तलवार को
मियान में रख, क्योंकि जो भी तलवार चलाता है
उसे तलवार से मारा जाएगा। 53या क्या तू नहीं
समझता कि मेरा बाप मुझे हज़ारों फ़रिश्ते फ़ौरन
भेज देगा अगर मैं उन्हें तलब करूँ? 54लेकिन
अगर मैं ऐसा करता तो फिर कलामे-मुक़द्दस की
पेशगोइयाँ किस तरह पूरी होतीं जिनके मुताबिक़
यह ऐसा ही होना है?”
55उस वक़्त ईसा ने हुजूम से कहा, “क्या मैं
डाकू हूँ कि तुम तलवारें और लाठियाँ लिए मुझे
गिरिफ़्तार करने निकले हो? मैं तो रोज़ाना बैतुल-
मुक़द्दस में बैठकर तालीम देता रहा, मगर तुमने
मुझे गिरिफ़्तार नहीं किया। 56लेकिन यह सब
कुछ इसलिए हो रहा है ताकि नबियों के सहीफ़ों
में दर्ज पेशगोइयाँ पूरी हो जाएँ।”
फिर तमाम शागिर्द उसे छोड़कर भाग गए।

ईसा यहूदी अदालते-आलिया के सामने

57जिन्होंने ईसा को गिरिफ़्तार किया था वह
उसे कायफ़ा इमामे-आज़म के घर ले गए जहाँ
शरीअत के तमाम उलमा और क़ौम के बुज़ुर्ग जमा
थे। 58इतने में पतरस कुछ फ़ासले पर ईसा के
पीछे पीछे इमामे-आज़म के सहन तक पहुँच गया।
उसमें दाख़िल होकर वह मुलाज़िमों के साथ आग
के पास बैठ गया ताकि इस सिलसिले का अंजाम
देख सके। 59मकान के अंदर राहनुमा इमाम और
यहूदी अदालते-आलिया के तमाम अफ़राद ईसा
के ख़िलाफ़ झूटी गवाहियाँ ढूँड रहे थे ताकि उसे
सज़ाए-मौत दिलवा सकें। 60बहुत-से झूटे गवाह

सामने आए, लेकिन कोई ऐसी गवाही न मिली।
आख़िरकार दो आदमियों ने सामने आकर 61यह
बात पेश की, “इसने कहा है कि मैं अल्लाह के
बैतुल-मुक़द्दस को ढाकर उसे तीन दिन के अंदर
अंदर दुबारा तामीर कर सकता हूँ।”

62फिर इमामे-आज़म ने खड़े होकर ईसा से
कहा, “क्या तू कोई जवाब नहीं देगा? यह क्या
गवाहियाँ हैं जो यह लोग तेरे ख़िलाफ़ दे रहे हैं?”
63लेकिन ईसा ख़ामोश रहा। इमामे-आज़म ने
उससे एक और सवाल किया, “मैं तुझे ज़िंदा ख़ुदा
की क़सम देकर पूछता हूँ कि क्या तू अल्लाह का
फ़रज़ंद मसीह है?”

64ईसा ने कहा, “जी, तूने ख़ुद कह दिया है।
और मैं तुम सबको बताता हूँ कि आइंदा तुम इब्ने-
आदम को क़ादिरे-मुतलक़ के दहने हाथ बैठे और
आसमान के बादलों पर आते हुए देखोगे।”

65इमामे-आज़म ने रंजिश का इज़हार करके
अपने कपड़े फाड़ लिए और कहा, “इसने कुफ़र
बका है! हमें मज़ीद गवाहों की क्या ज़रूरत रही!
आपने ख़ुद सुन लिया है कि इसने कुफ़र बका है।
66आपका क्या फ़ैसला है?”

उन्होंने जवाब दिया, “यह सज़ाए-मौत के
लायक़ है।”

67फिर वह उस पर थूकने और उसके मुक्के
मारने लगे। बाज़ ने उसके थप्पड़ मार मारकर
68कहा, “ऐ मसीह, नबुव्वत करके हमें बता कि
तुझे किसने मारा।”

पतरस ईसा को जानने से इनकार करता है

69इस दौरान पतरस बाहर सहन में बैठा था।
एक नौकरानी उसके पास आई। उसने कहा,
“तुम भी गलील के उस आदमी ईसा के साथ
थे।”

70लेकिन पतरस ने उन सबके सामने इनकार
किया, “मैं नहीं जानता कि तू क्या बात कर रही
है।” यह कहकर 71वह बाहर गेट तक गया। वहाँ
एक और नौकरानी ने उसे देखा और पास खड़े
लोगों से कहा, “यह आदमी ईसा नासरी के साथ
था।”

72दुबारा पतरस ने इनकार किया। इस दफ़ा
उसने क़सम खाकर कहा, “मैं इस आदमी को
नहीं जानता।”

73थोड़ी देर के बाद वहाँ खड़े कुछ लोगों ने
पतरस के पास आकर कहा, “तुम ज़रूर उनमें
से हो क्योंकि तुम्हारी बोली से साफ़ पता चलता
है।”

74इस पर पतरस ने क़सम खाकर कहा, “मुझ
पर लानत अगर मैं झूट बोल रहा हूँ। मैं इस आदमी
को नहीं जानता!” फ़ौरन मुरग़ की बाँग सुनाई
दी। 75फिर पतरस को वह बात याद आई जो ईसा
ने कही थी, “मुरग़ के बाँग देने से पहले पहले तू
तीन बार मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।”
इस पर वह बाहर निकला और टूटे दिल से ख़ूब
रोया।

ईसा को पीलातुस के सामने पेश किया जाता है

27 सुबह-सवेरे तमाम राहनुमा इ-
माम और क़ौम के तमाम बुज़ुर्ग इस
फ़ैसले तक पहुँच गए कि ईसा को सज़ाए-मौत
दी जाए। 2वह उसे बाँधकर वहाँ से ले गए और
रोमी गवर्नर पीलातुस के हवाले कर दिया।

यहूदा की ख़ुदकुशी

3जब यहूदा ने जिसने उसे दुश्मन के हवाले कर
दिया था देखा कि उस पर सज़ाए-मौत का फ़तवा
दे दिया गया है तो उसने पछताकर चाँदी के 30
सिक्के राहनुमा इमामों और क़ौम के बुज़ुर्गों को
वापस कर दिए। 4उसने कहा, “मैंने गुनाह किया
है, क्योंकि एक बेक़ुसूर आदमी को सज़ाए-मौत
दी गई है और मैं ही ने उसे आपके हवाले किया
है।”

उन्होंने जवाब दिया, “हमें क्या! यह तेरा
मसला है।” 5यहूदा चाँदी के सिक्के बैतुल-

मुक़द्दस में फेंककर चला गया। फिर उसने जाकर
फाँसी ले ली।

6राहनुमा इमामों ने सिक्कों को जमा करके
कहा, "शरीअत यह पैसे बैतुल-मुक़द्दस के ख़ज़ाने
में डालने की इजाज़त नहीं देती, क्योंकि यह
ख़ूनरेज़ी का मुआवज़ा है।" 7आपस में मशवरा
करने के बाद उन्होंने कुम्हार का खेत ख़रीदने का
फ़ैसला किया ताकि परदेसियों को दफ़नाने के
लिए जगह हो। 8इसलिए यह खेत आज तक ख़ून
का खेत कहलाता है।

9यों यरमियाह नबी की यह पेशगोई पूरी हुई
कि "उन्होंने चाँदी के 30 सिक्के लिए यानी वह
रक़म जो इसराईलियों ने उसके लिए लगाई थी।
10इनसे उन्होंने कुम्हार का खेत ख़रीद लिया,
बिलकुल ऐसा जिस तरह रब ने मुझे हुक्म दिया
था।"

पीलातुस ईसा की पूछ-गछ करता है

11इतने में ईसा को रोमी गवर्नर पीलातुस के
सामने पेश किया गया। उसने उससे पूछा, "क्या
तुम यहूदियों के बादशाह हो?"

ईसा ने जवाब दिया, "जी, आप ख़ुद कहते
हैं।" 12लेकिन जब राहनुमा इमामों और क़ौम के
बुज़ुर्गों ने उस पर इलज़ाम लगाए तो ईसा ख़ामोश
रहा।

13चुनाँचे पीलातुस ने दुबारा उससे सवाल
किया, "क्या तुम यह तमाम इलज़ामात नहीं सुन
रहे जो तुम पर लगाए जा रहे हैं?"

14लेकिन ईसा ने एक इलज़ाम का भी जवाब
न दिया, इसलिए गवर्नर निहायत हैरान हुआ।

सज़ाए-मौत का फ़ैसला

15उन दिनों यह रिवाज था कि गवर्नर हर साल
फ़सह की ईद पर एक क़ैदी को आज़ाद कर देता
था। यह क़ैदी हुजूम से मुंतख़ब किया जाता था।
16उस वक़्त जेल में एक बदनाम क़ैदी था। उसका
नाम बर-अब्बा था। 17चुनाँचे जब हुजूम जमा हुआ
तो पीलातुस ने उससे पूछा, "तुम क्या चाहते हो?
मैं बर-अब्बा को आज़ाद करूँ या ईसा को जो
मसीह कहलाता है?" 18वह तो जानता था कि
उन्होंने ईसा को सिर्फ़ हसद की बिना पर उसके
हवाले किया है।

19जब पीलातुस यों अदालत के तख़्त पर बैठा
था तो उस की बीवी ने उसे पैग़ाम भेजा, "इस
बेक़ुसूर आदमी को हाथ न लगाएँ, क्योंकि मुझे
पिछली रात इसके बाइस ख़ाब में शदीद तकलीफ़
हुई।"

20लेकिन राहनुमा इमामों और क़ौम के बुज़ुर्गों
ने हुजूम को उकसाया कि वह बर-अब्बा को माँगें
और ईसा की मौत तलब करें। गवर्नर ने दुबारा
पूछा, 21"मैं इन दोनों में से किस को तुम्हारे लिए
आज़ाद करूँ?"

वह चिल्लाए, "बर-अब्बा को।"

22पीलातुस ने पूछा, "फिर मैं ईसा के साथ
क्या करूँ जो मसीह कहलाता है?"

वह चीख़े, "उसे मसलूब करें।"

23पीलातुस ने पूछा, "क्यों? उसने क्या जुर्म
किया है?"

लेकिन लोग मज़ीद शोर मचाकर चीख़ते रहे,
"उसे मसलूब करें!"

24पीलातुस ने देखा कि वह किसी नतीजे तक
नहीं पहुँच रहा बल्कि हंगामा बरपा हो रहा है।
इसलिए उसने पानी लेकर हुजूम के सामने अपने
हाथ धोए। उसने कहा, "अगर इस आदमी को
क़त्ल किया जाए तो मैं बेक़ुसूर हूँ, तुम ही उसके
लिए जवाबदेह ठहरो।"

25तमाम लोगों ने जवाब दिया, "हम और
हमारी औलाद उसके ख़ून के जवाबदेह हैं।"

26फिर उसने बर-अब्बा को आज़ाद करके उन्हें
दे दिया। लेकिन ईसा को उसने कोड़े लगाने का
हुक्म दिया, फिर उसे मसलूब करने के लिए
फ़ौजियों के हवाले कर दिया।

फ़ौजी ईसा का मज़ाक़ उड़ाते हैं

27गवर्नर के फ़ौजी ईसा को महल बनाम
प्रैटोरियुम के सहन में ले गए और पूरी पलटन

को उसके इर्दगिर्द इकट्ठा किया। 28उसके कपड़े
उतारकर उन्होंने उसे अरग़वानी रंग का लिबास
पहनाया, 29फिर काँटेदार टहनियों का एक ताज
बनाकर उसके सर पर रख दिया। उसके दहने
हाथ में छड़ी पकड़ाकर उन्होंने उसके सामने घुटने
टेककर उसका मज़ाक़ उड़ाया, “ऐ यहूदियों के
बादशाह, आदाब!” 30वह उस पर थूकते रहे,
छड़ी लेकर बार बार उसके सर को मारा। 31फिर
उसका मज़ाक़ उड़ाने से थककर उन्होंने अरग़वानी
लिबास उतारकर उसे दुबारा उसके अपने कपड़े
पहनाए और उसे मसलूब करने के लिए ले गए।

ईसा को मसलूब किया जाता है

32शहर से निकलते वक़्त उन्होंने एक आदमी
को देखा जो लिबिया के शहर कुरेन का रहनेवाला
था। उसका नाम शमाऊन था। उसे उन्होंने सलीब
उठाकर ले जाने पर मजबूर किया। 33यों चलते
चलते वह एक मक़ाम तक पहुँच गए जिसका नाम
गुलगुता (यानी खोपड़ी का मक़ाम) था। 34वहाँ
उन्होंने उसे मै पेश की जिसमें कोई कड़वी चीज़
मिलाई गई थी। लेकिन चखकर ईसा ने उसे पीने
से इनकार कर दिया।

35फिर फ़ौजियों ने उसे मसलूब किया और
उसके कपड़े आपस में बाँट लिए। यह फ़ैसला
करने के लिए कि किस को क्या क्या मिले
उन्होंने क़ुरा डाला। 36यों वह वहाँ बैठकर उस की
पहरादारी करते रहे। 37सलीब पर ईसा के सर
के ऊपर एक तख़्ती लगा दी गई जिस पर यह
इलज़ाम लिखा था, “यह यहूदियों का बादशाह
ईसा है।” 38दो डाकुओं को भी ईसा के साथ
मसलूब किया गया, एक को उसके दहने हाथ
और दूसरे को उसके बाएँ हाथ।

39जो वहाँ से गुज़रे उन्होंने कुफ़र बककर उस
की तज़लील की और सर हिला हिलाकर अपनी
हिक़ारत का इज़हार किया। 40उन्होंने कहा, “तूने
तो कहा था कि मैं बैतुल-मुक़द्दस को ढाकर उसे
तीन दिन के अंदर अंदर दुबारा तामीर कर दूँगा।
अब अपने आपको बचा! अगर तू वाक़ई अल्लाह
का फ़रज़ंद है तो सलीब पर से उतर आ।”

41राहनुमा इमामों, शरीअत के उलमा और
क़ौम के बुज़ुर्गों ने भी ईसा का मज़ाक़ उड़ाया,
42“इसने औरों को बचाया, लेकिन अपने
आपको नहीं बचा सकता। यह इसराईल का
बादशाह है! अभी यह सलीब पर से उतर आए तो
हम इस पर ईमान ले आएँगे। 43इसने अल्लाह पर
भरोसा रखा है। अब अल्लाह इसे बचाए अगर वह
इसे चाहता है, क्योंकि इसने कहा, ‘मैं अल्लाह
का फ़रज़ंद हूँ’।”

44और जिन डाकुओं को उसके साथ मसलूब
किया गया था उन्होंने भी उसे लान-तान की।

ईसा की मौत

45दोपहर बारह बजे पूरा मुल्क अंधेरे में डूब
गया। यह तारीकी तीन घंटों तक रही। 46फिर
तीन बजे ईसा ऊँची आवाज़ से पुकार उठा,
“एली, एली, लमा शबक़्तनी” जिसका मतलब
है, “ऐ मेरे ख़ुदा, ऐ मेरे ख़ुदा, तूने मुझे क्यों तर्क
कर दिया है?”

47यह सुनकर पास खड़े कुछ लोग कहने लगे,
“वह इलियास नबी को बुला रहा है।” 48उनमें
से एक ने फ़ौरन दौड़कर एक इस्फ़ंज को मै के
सिरके में डुबोया और उसे डंडे पर लगाकर ईसा
को चुसाने की कोशिश की।

49दूसरों ने कहा, “आओ, हम देखें, शायद
इलियास आकर उसे बचाए।”

50लेकिन ईसा ने दुबारा बड़े ज़ोर से चिल्लाकर
दम छोड़ दिया।

51उसी वक़्त बैतुल-मुक़द्दस के मुक़द्दस-
तरीन कमरे के सामने लटका हुआ परदा ऊपर से
लेकर नीचे तक दो हिस्सों में फट गया। ज़लज़ला
आया, चट्टानें फट गईं 52और क़ब्रें खुल गईं। कई
मरहूम मुक़द्दसीन के जिस्मों को ज़िंदा कर दिया
गया। 53वह ईसा के जी उठने के बाद क़ब्रों में
से निकलकर मुक़द्दस शहर में दाख़िल हुए और
बहुतों को नज़र आए।

54जब पास खड़े रोमी अफ़सर[a] और ईसा
की पहरादारी करनेवाले फ़ौजियों ने ज़लज़ला
और यह तमाम वाक़ियात देखे तो वह निहायत
दहशतज़दा हो गए। उन्होंने कहा, "यह वाक़ई
अल्लाह का फ़रज़ंद था।"

55बहुत-सी ख़वातीन भी वहाँ थीं जो कुछ
फ़ासले पर इसका मुशाहदा कर रही थीं। वह
गलील में ईसा के पीछे चलकर यहाँ तक उस
की ख़िदमत करती आई थीं। 56उनमें मरियम
मग्दलीनी, याक़ूब और यूसुफ़ की माँ मरियम और
ज़बदी के बेटों याक़ूब और यूहन्ना की माँ भी थीं।

ईसा को दफ़न किया जाता है

57जब शाम होने को थी तो अरिमतियाह का
एक दौलतमंद आदमी बनाम यूसुफ़ आया। वह
भी ईसा का शागिर्द था। 58उसने पीलातुस के
पास जाकर ईसा की लाश माँगी, और पीलातुस
ने हुक्म दिया कि वह उसे दे दी जाए। 59यूसुफ़ ने
लाश को लेकर उसे कतान के एक साफ़ कफ़न
में लपेटा 60और अपनी ज़ाती ग़ैरइस्तेमालशुदा
क़ब्र में रख दिया जो चट्टान में तराशी गई थी।
आख़िर में उसने एक बड़ा पत्थर लुढ़काकर क़ब्र
का मुँह बंद कर दिया और चला गया। 61उस
वक़्त मरियम मग्दलीनी और दूसरी मरियम क़ब्र
के मुक़ाबिल बैठी थीं।

क़ब्र की पहरादारी

62अगले दिन, जो सबत का दिन था, राहनुमा
इमाम और फ़रीसी पीलातुस के पास आए।
63"जनाब," उन्होंने कहा, "हमें याद आया कि
जब वह धोकेबाज़ अभी ज़िंदा था तो उसने कहा
था, 'तीन दिन के बाद मैं जी उठूँगा।' 64इसलिए
हुक्म दें कि क़ब्र को तीसरे दिन तक महफ़ूज़ रखा
जाए। ऐसा न हो कि उसके शागिर्द आकर उस
की लाश को चुरा ले जाएँ और लोगों को बताएँ
कि वह मुरदों में से जी उठा है। अगर ऐसा हुआ
तो यह आख़िरी धोका पहले धोके से भी ज़्यादा
बड़ा होगा।"

65पीलातुस ने जवाब दिया, "पहरेदारों को
लेकर क़ब्र को इतना महफ़ूज़ कर दो जितना तुम
कर सकते हो।"

66चुनाँचे उन्होंने जाकर क़ब्र को महफ़ूज़ कर
लिया। क़ब्र के मुँह पर पड़े पत्थर पर मुहर लगाकर
उन्होंने उस पर पहरेदार मुक़र्रर कर दिए।

ईसा जी उठता है

28 इतवार को सुबह-सवेरे ही मरि-
यम मग्दलीनी और दूसरी मरि-
यम क़ब्र को देखने के लिए निकलीं। सूरज तुलू हो
रहा था। 2अचानक एक शदीद ज़लज़ला आया,
क्योंकि रब का एक फ़रिश्ता आसमान से उतर
आया और क़ब्र के पास जाकर उस पर पड़े पत्थर
को एक तरफ़ लुढ़का दिया। फिर वह उस पर
बैठ गया। 3उस की शक्लो-सूरत बिजली की तरह
चमक रही थी और उसका लिबास बर्फ़ की मानिंद
सफ़ेद था। 4पहरेदार इतने डर गए कि वह लरज़ते
लरज़ते मुरदा से हो गए।

5फ़रिश्ते ने ख़वातीन से कहा, "मत डरो। मुझे
मालूम है कि तुम ईसा को ढूँड रही हो जो मसलूब
हुआ था। 6वह यहाँ नहीं है। वह जी उठा है, जिस
तरह उसने फ़रमाया था। आओ, उस जगह को
ख़ुद देख लो जहाँ वह पड़ा था। 7और अब जल्दी
से जाकर उसके शागिर्दों को बता दो कि वह
जी उठा है और तुम्हारे आगे आगे गलील पहुँच
जाएगा। वहीं तुम उसे देखोगे। अब मैंने तुमको
इससे आगाह किया है।"

8ख़वातीन जल्दी से क़ब्र से चली गईं। वह
सहमी हुई लेकिन बड़ी ख़ुश थीं और दौड़ी दौड़ी
उसके शागिर्दों को यह ख़बर सुनाने गईं।

9अचानक ईसा उनसे मिला। उसने कहा,
"सलाम।" वह उसके पास आईं, उसके पाँव
पकड़े और उसे सिजदा किया। 10ईसा ने उनसे
कहा, "मत डरो। जाओ, मेरे भाइयों को बता

[a] सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

दो कि वह गलील को चले जाएँ। वहाँ वह मुझे
देखेंगे।”

पहरेदारों की रिपोर्ट

11ख़वातीन अभी रास्ते में थीं कि पहरेदारों में
से कुछ शहर में गए और राहनुमा इमामों को सब
कुछ बता दिया। **12**राहनुमा इमामों ने क़ौम के
बुज़ुर्गों के साथ एक मीटिंग मुनअक़िद की और
पहरेदारों को रिश्वत की बड़ी रक़म देने का फ़ैसला
किया। **13**उन्होंने उन्हें बताया, “तुमको कहना है,
‘जब हम रात के वक़्त सो रहे थे तो उसके शागिर्द
आए और उसे चुरा ले गए।’ **14**अगर यह ख़बर
गवर्नर तक पहुँचे तो हम उसे समझा लेंगे। तुमको
फ़िकर करने की ज़रूरत नहीं।”

15चुनाँचे पहरेदारों ने रिश्वत लेकर वह कुछ
किया जो उन्हें सिखाया गया था। उनकी यह
कहानी यहूदियों के दरमियान बहुत फैलाई गई
और आज तक उनमें रायज है।

ईसा अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर होता है

16फिर ग्यारह शागिर्द गलील के उस पहाड़ के
पास पहुँचे जहाँ ईसा ने उन्हें जाने को कहा था।
17वहाँ उसे देखकर उन्होंने उसे सिजदा किया।
लेकिन कुछ शक में पड़ गए। **18**फिर ईसा ने उनके
पास आकर कहा, “आसमान और ज़मीन का
कुल इख़्तियार मुझे दे दिया गया है। **19**इसलिए
जाओ, तमाम क़ौमों को शागिर्द बनाकर उन्हें बाप,
फ़रज़ंद और रूहुल-क़ुद्स के नाम से बपतिस्मा
दो। **20**और उन्हें यह सिखाओ कि वह उन तमाम
अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारें जो मैंने तुम्हें
दिए हैं। और देखो, मैं दुनिया के इख़्तिताम तक
हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।”

मरक़ुस की मारिफ़त इंजील

यहया बपतिस्मा देनेवाले की ख़िदमत

1 यह अल्लाह के फ़रज़ंद ईसा मसीह के बारे
में ख़ुशख़बरी है, 2जो यसायाह नबी की
पेशगोई के मुताबिक़ यों शुरू हुई :

‘देख, मैं अपने पैग़ंबर को तेरे आगे आगे
भेज देता हूँ
जो तेरे लिए रास्ता तैयार करेगा।
3रेगिस्तान में एक आवाज़ पुकार रही है,
रब की राह तैयार करो!
उसके रास्ते सीधे बनाओ।’

4यह पैग़ंबर यहया बपतिस्मा देनेवाला था।
रेगिस्तान में रहकर उसने एलान किया कि लोग
तौबा करके बपतिस्मा लें ताकि उन्हें अपने गुनाहों
की मुआफ़ी मिल जाए। 5यहूदिया के पूरे इलाक़े
के लोग यरूशलम के तमाम बाशिंदों समेत
निकलकर उसके पास आए। और अपने गुनाहों
को तसलीम करके उन्होंने दरियाए-यरदन में
यहया से बपतिस्मा लिया।

6यहया ऊँटों के बालों का लिबास पहने और
कमर पर चमड़े का पटका बाँधे रहता था।
ख़ुराक के तौर पर वह टिड्डियाँ और जंगली शहद
खाता था। 7उसने एलान किया, “मेरे बाद एक
आनेवाला है जो मुझसे बड़ा है। मैं झुककर उसके
जूतों के तसमे खोलने के भी लायक़ नहीं। 8मैं
तुमको पानी से बपतिस्मा देता हूँ, लेकिन वह तुम्हें
रूहुल-क़ुद्स से बपतिस्मा देगा।”

ईसा का बपतिस्मा और आज़माइश

9उन दिनों में ईसा नासरत से आया और यहया
ने उसे दरियाए-यरदन में बपतिस्मा दिया। 10पानी
से निकलते ही ईसा ने देखा कि आसमान फट रहा
है और रूहुल-क़ुद्स कबूतर की तरह मुझ पर उतर
रहा है। 11साथ साथ आसमान से एक आवाज़
सुनाई दी, “तू मेरा प्यारा फ़रज़ंद है, तुझसे मैं
ख़ुश हूँ।”

12इसके फ़ौरन बाद रूहुल-क़ुद्स ने उसे
रेगिस्तान में भेज दिया। 13वहाँ वह चालीस दिन
रहा जिसके दौरान इबलीस उस की आज़माइश
करता रहा। वह जंगली जानवरों के दरमियान
रहता और फ़रिश्ते उस की ख़िदमत करते थे।

ईसा चार मछेरों को बुलाता है

14जब यहया को जेल में डाल दिया गया तो
ईसा गलील के इलाक़े में आया और अल्लाह की
ख़ुशख़बरी का एलान करने लगा। 15वह बोला,
“मुक़र्ररा वक़्त आ गया है, अल्लाह की बादशाही
क़रीब आ गई है। तौबा करो और अल्लाह की
ख़ुशख़बरी पर ईमान लाओ।”

16एक दिन जब ईसा गलील की झील के
किनारे किनारे चल रहा था तो उसने शमाऊन
और उसके भाई अंदरियास को देखा। वह झील
में जाल डाल रहे थे क्योंकि वह माहीगीर थे।
17उसने कहा, “आओ, मेरे पीछे हो लो, मैं तुमको

आदमगीर बनाऊँगा।” 18यह सुनते ही वह अपने
जालों को छोड़कर उसके पीछे हो लिए।
19थोड़ा-सा आगे जाकर ईसा ने ज़बदी के बेटों
याक़ूब और यूहन्ना को देखा। वह कश्ती में बैठे
अपने जालों की मरम्मत कर रहे थे। 20उसने उन्हें
फ़ौरन बुलाया तो वह अपने बाप को मज़दूरों समेत
कश्ती में छोड़कर उसके पीछे हो लिए।

आदमी की बदरूह के क़ब्ज़े से रिहाई

21वह कफ़र्नहूम शहर में दाख़िल हुए। और
सबत के दिन ईसा इबादतख़ाने में जाकर लोगों
को सिखाने लगा। 22वह उस की तालीम सुनकर
हक्का-बक्का रह गए क्योंकि वह उन्हें शरीअत के
आलिमों की तरह नहीं बल्कि इख़्तियार के साथ
सिखाता था।
23उनके इबादतख़ाने में एक आदमी था जो
किसी नापाक रूह के क़ब्ज़े में था। ईसा को देखते
ही वह चीख़ चीख़कर बोलने लगा, 24“ऐ नासरत
के ईसा, हमारा आपके साथ क्या वास्ता है? क्या
आप हमें हलाक करने आए हैं? मैं तो जानता हूँ
कि आप कौन हैं, आप अल्लाह के क़ुद्दूस हैं।”
25ईसा ने उसे डाँटकर कहा, “ख़ामोश!
आदमी से निकल जा!” 26इस पर बदरूह आदमी
को झँझोड़कर और चीख़ें मार मारकर उसमें से
निकल गई।
27तमाम लोग घबरा गए और एक दूसरे से
कहने लगे, “यह क्या है? एक नई तालीम जो
इख़्तियार के साथ दी जा रही है। और वह बदरूहों
को हुक्म देता है तो वह उस की मानती हैं।”
28और ईसा के बारे में चर्चा जल्दी से गलील
के पूरे इलाक़े में फैल गया।

बहुत-से मरीज़ों की शफ़ा

29इबादतख़ाने से निकलने के ऐन बाद वह
याक़ूब और यूहन्ना के साथ शमाऊन और
अंदरियास के घर गए। 30वहाँ शमाऊन की सास
बिस्तर पर पड़ी थी, क्योंकि उसे बुख़ार था।
उन्होंने ईसा को बता दिया 31तो वह उसके
नज़दीक गया। उसका हाथ पकड़कर उसने उठने
में उस की मदद की। इस पर बुख़ार उतर गया
और वह उनकी ख़िदमत करने लगी।
32जब शाम हुई और सूरज ग़ुरूब हुआ तो लोग
तमाम मरीज़ों और बदरूह-गिरिफ़्ता अशख़ास को
ईसा के पास लाए। 33पूरा शहर दरवाज़े पर
जमा हो गया 34और ईसा ने बहुत-से मरीज़ों
को मुख़्तलिफ़ क़िस्म की बीमारियों से शफ़ा दी।
उसने बहुत-सी बदरूहें भी निकाल दीं, लेकिन
उसने उन्हें बोलने न दिया, क्योंकि वह जानती
थीं कि वह कौन है।

गलील में मुनादी

35अगले दिन सुबह-सवेरे जब अभी अंधेरा ही
था तो ईसा उठकर दुआ करने के लिए किसी
वीरान जगह चला गया। 36बाद में शमाऊन और
उसके साथी उसे ढूँडने निकले। 37जब मालूम
हुआ कि वह कहाँ है तो उन्होंने उससे कहा,
“तमाम लोग आपको तलाश कर रहे हैं!”
38लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “आओ, हम
साथवाली आबादियों में जाएँ ताकि मैं वहाँ भी
मुनादी करूँ। क्योंकि मैं इसी मक़सद से निकल
आया हूँ।”
39चुनाँचे वह पूरे गलील में से गुज़रता हुआ
इबादतख़ानों में मुनादी करता और बदरूहों को
निकालता रहा।

कोढ़ से शफ़ा

40एक आदमी ईसा के पास आया जो कोढ़ का
मरीज़ था। घुटनों के बल झुककर उसने मिन्नत
की, “अगर आप चाहें तो मुझे पाक-साफ़ कर
सकते हैं।”
41ईसा को तरस आया। उसने अपना हाथ
बढ़ाकर उसे छुआ और कहा, “मैं चाहता हूँ,
पाक-साफ़ हो जा।” 42इस पर बीमारी फ़ौरन दूर
हो गई और वह पाक-साफ़ हो गया। 43ईसा ने
उसे फ़ौरन रुख़सत करके सख़्ती से समझाया,
44“ख़बरदार! यह बात किसी को न बताना

बल्कि बैतुल-मुक़द्दस में इमाम के पास जा ताकि
वह तेरा मुआयना करे। अपने साथ वह क़ुरबानी
ले जा जिसका तक़ाज़ा मूसा की शरीअत उनसे
करती है जिन्हें कोढ़ से शफ़ा मिली हो। यों
अलानिया तसदीक़ हो जाएगी कि तू वाक़ई पाक-
साफ़ हो गया है।”
45आदमी चला गया, लेकिन वह हर जगह
अपनी कहानी सुनाने लगा। उसने यह ख़बर इतनी
फैलाई कि ईसा खुले तौर पर किसी भी शहर में
दाख़िल न हो सका बल्कि उसे वीरान जगहों में
रहना पड़ा। लेकिन वहाँ भी लोग हर जगह से
उसके पास पहुँच गए।

मफ़लूज के लिए छत खोली जाती है

2 कुछ दिनों के बाद ईसा कफ़र्नहूम में वापस
आया। जल्द ही ख़बर फैल गई कि वह घर
में है। 2इस पर इतने लोग जमा हो गए कि पूरा
घर भर गया बल्कि दरवाज़े के सामने भी जगह न
रही। वह उन्हें कलामे-मुक़द्दस सुनाने लगा। 3इतने
में कुछ लोग पहुँचे। उनमें से चार आदमी एक
मफ़लूज को उठाए ईसा के पास लाना चाहते थे।
4मगर वह उसे हुजूम की वजह से ईसा तक न
पहुँचा सके, इसलिए उन्होंने छत खोल दी। ईसा
के ऊपर का हिस्सा उधेड़कर उन्होंने चारपाई को
जिस पर मफ़लूज लेटा था उतार दिया। 5जब ईसा
ने उनका ईमान देखा तो उसने मफ़लूज से कहा,
“बेटा, तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं।”
6शरीअत के कुछ आलिम वहाँ बैठे थे। वह यह
सुनकर सोच-बिचार में पड़ गए। 7“यह किस तरह
ऐसी बातें कर सकता है? कुफ़र बक रहा है।
सिर्फ़ अल्लाह ही गुनाह मुआफ़ कर सकता है।”
8ईसा ने अपनी रूह में फ़ौरन जान लिया कि
वह क्या सोच रहे हैं, इसलिए उसने उनसे पूछा,
“तुम दिल में इस तरह की बातें क्यों सोच रहे हो?
9क्या मफ़लूज से यह कहना आसान है कि ‘तेरे
गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं’ या यह कि ‘उठ,
अपनी चारपाई उठाकर चल-फिर’? 10लेकिन
मैं तुमको दिखाता हूँ कि इब्ने-आदम को वाक़ई
दुनिया में गुनाह मुआफ़ करने का इख़्तियार है।”
यह कहकर वह मफ़लूज से मुख़ातिब हुआ, 11“मैं
तुझसे कहता हूँ कि उठ, अपनी चारपाई उठाकर
घर चला जा।”
12वह आदमी खड़ा हुआ और फ़ौरन अपनी
चारपाई उठाकर उनके देखते देखते चला गया।
सब सख़्त हैरतज़दा हुए और अल्लाह की तमजीद
करके कहने लगे, “ऐसा काम हमने कभी नहीं
देखा!”

ईसा मत्ती को बुलाता है

13फिर ईसा निकलकर दुबारा झील के किनारे
गया। एक बड़ी भीड़ उसके पास आई तो वह उन्हें
सिखाने लगा। 14चलते चलते उसने हलफ़ई के
बेटे लावी को देखा जो टैक्स लेने के लिए अपनी
चौकी पर बैठा था। ईसा ने उससे कहा, “मेरे पीछे
हो ले।” और लावी उठकर उसके पीछे हो लिया।
15बाद में ईसा लावी के घर में खाना खा रहा
था। उसके साथ न सिर्फ़ उसके शागिर्द बल्कि
बहुत-से टैक्स लेनेवाले और गुनाहगार भी थे,
क्योंकि उनमें से बहुतेरे उसके पैरोकार बन चुके
थे। 16शरीअत के कुछ फ़रीसी आलिमों ने उसे
यों टैक्स लेनेवालों और गुनाहगारों के साथ खाते
देखा तो उसके शागिर्दों से पूछा, “यह टैक्स
लेनेवालों और गुनाहगारों के साथ क्यों खाता
है?”
17यह सुनकर ईसा ने जवाब दिया, “सेहतमंदों
को डाक्टर की ज़रूरत नहीं होती बल्कि मरीज़ों
को। मैं रास्तबाज़ों को नहीं बल्कि गुनाहगारों को
बुलाने आया हूँ।”

शागिर्द रोज़ा क्यों नहीं रखते?

18यहया के शागिर्द और फ़रीसी रोज़ा रखा
करते थे। एक मौक़े पर कुछ लोग ईसा के पास
आए और पूछा, “आपके शागिर्द रोज़ा क्यों नहीं
रखते जबकि यहया और फ़रीसियों के शागिर्द
रोज़ा रखते हैं?”

19ईसा ने जवाब दिया, “शादी के मेहमान
किस तरह रोज़ा रख सकते हैं जब दूल्हा उनके
दरमियान है? जब तक दूल्हा उनके साथ है वह
रोज़ा नहीं रख सकते। 20लेकिन एक दिन आएगा
जब दूल्हा उनसे ले लिया जाएगा। उस वक़्त वह
ज़रूर रोज़ा रखेंगे।

21कोई भी नए कपड़े का टुकड़ा किसी पुराने
लिबास में नहीं लगाता। अगर वह ऐसा करे तो
नया टुकड़ा बाद में सुकड़कर पुराने लिबास से
अलग हो जाएगा। यों पुराने लिबास की फटी हुई
जगह पहले की निसबत ज़्यादा ख़राब हो जाएगी।
22इसी तरह कोई भी अंगूर का ताज़ा रस पुरानी
और बे-लचक मशकों में नहीं डालता। अगर वह
ऐसा करे तो पुरानी मशकें पैदा होनेवाली गैस के
बाइस फट जाएँगी। नतीजे में मै और मशकें दोनों
ज़ाया हो जाएँगी। इसलिए अंगूर का ताज़ा रस
नई मशकों में डाला जाता है जो लचकदार होती
हैं।”

सबत के बारे में सवाल

23एक दिन ईसा अनाज के खेतों में से गुज़र
रहा था। चलते चलते उसके शागिर्द खाने के लिए
अनाज की बालें तोड़ने लगे। सबत का दिन था।
24यह देखकर फ़रीसियों ने ईसा से पूछा, “देखो,
यह क्यों ऐसा कर रहे हैं? सबत के दिन ऐसा
करना मना है।”

25ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुमने कभी नहीं
पढ़ा कि दाऊद ने क्या किया जब उसे और उसके
साथियों को भूक लगी और उनके पास ख़ुराक
नहीं थी? 26उस वक़्त अबियातर इमामे-आज़म
था। दाऊद अल्लाह के घर में दाख़िल हुआ और
रब के लिए मख़सूसशुदा रोटियाँ लेकर खाईं,
अगरचे सिर्फ़ इमामों को इन्हें खाने की इजाज़त
है। और उसने अपने साथियों को भी यह रोटियाँ
खिलाईं।”

27फिर उसने कहा, “इनसान को सबत के दिन
के लिए नहीं बनाया गया बल्कि सबत का दिन
इनसान के लिए। 28चुनाँचे इब्ने-आदम सबत का
भी मालिक है।”

सूखे हुए हाथ की शफ़ा

3 किसी और वक़्त जब ईसा इबा-
दतख़ाने में गया तो वहाँ एक आदमी था
जिसका हाथ सूखा हुआ था। 2सबत का दिन था
और लोग बड़े ग़ौर से देख रहे थे कि क्या ईसा
उस आदमी को आज भी शफ़ा देगा। क्योंकि वह
इस पर इलज़ाम लगाने का कोई बहाना तलाश
कर रहे थे। 3ईसा ने सूखे हाथवाले आदमी से
कहा, “उठ, दरमियान में खड़ा हो।” 4फिर ईसा
ने उनसे पूछा, “मुझे बताओ, शरीअत हमें सबत
के दिन क्या करने की इजाज़त देती है, नेक काम
करने की या ग़लत काम करने की, किसी की
जान बचाने की या उसे तबाह करने की?”

सब ख़ामोश रहे। 5वह ग़ुस्से से अपने इर्दगिर्द
के लोगों की तरफ़ देखने लगा। उनकी सख़्तदिली
उसके लिए बड़े दुख का बाइस बन रही थी। फिर
उसने आदमी से कहा, “अपना हाथ आगे बढ़ा।”
उसने ऐसा किया तो उसका हाथ बहाल हो गया।
6इस पर फ़रीसी बाहर निकलकर सीधे हेरोदेस
की पार्टी के अफ़राद के साथ मिलकर ईसा को
क़त्ल करने की साज़िशें करने लगे।

झील के किनारे पर हुजूम

7लेकिन ईसा वहाँ से हटकर अपने शागिर्दों के
साथ झील के पास गया। एक बड़ा हुजूम उसके
पीछे हो लिया। लोग न सिर्फ़ गलील के इलाक़े से
आए बल्कि बहुत-सी और जगहों यानी यहूदिया,
8यरूशलम, इदूमया, दरियाए-यरदन के पार और
सूर और सैदा के इलाक़े से भी। वजह यह थी कि
ईसा के काम की ख़बर उन इलाक़ों तक भी पहुँच
चुकी थी और नतीजे में बहुत-से लोग वहाँ से भी
आए। 9ईसा ने शागिर्दों से कहा, “एहतियातन
एक कश्ती उस वक़्त के लिए तैयार कर रखो
जब हुजूम मुझे हद से ज़्यादा दबाने लगेगा।”
10क्योंकि उस दिन उसने बहुतों को शफ़ा दी थी,

इसलिए जिसे भी कोई तकलीफ़ थी वह धक्के
दे देकर उसके पास आया ताकि उसे छू सके।
11और जब भी नापाक रूहों ने ईसा को देखा तो
वह उसके सामने गिरकर चीख़ें मारने लगीं, "आप
अल्लाह के फ़रज़ंद हैं।"
12लेकिन ईसा ने उन्हें सख़्ती से डाँटकर कहा
कि वह उसे ज़ाहिर न करें।

ईसा बारह रसूलों को मुक़र्रर करता है

13इसके बाद ईसा ने पहाड़ पर चढ़कर जिन्हें
वह चाहता था उन्हें अपने पास बुला लिया। और
वह उसके पास आए। 14उसने उनमें से बारह को
चुन लिया। उन्हें उसने अपने रसूल मुक़र्रर कर
लिया ताकि वह उसके साथ चलें और वह उन्हें
मुनादी करने के लिए भेज सके। 15उसने उन्हें
बदरूहें निकालने का इख़्तियार भी दिया।
16जिन बारह को उसने मुक़र्रर किया उनके
नाम यह हैं : शमाऊन जिसका लक़ब उसने
पतरस रखा, 17ज़बदी के बेटे याक़ूब और यूहन्ना
जिनका लक़ब ईसा ने 'बादल की गरज के बेटे'
रखा, 18अंदरियास, फ़िलिप्पुस, बरतुलमाई,
मत्ती, तोमा, याक़ूब बिन हलफ़ई, तद्दी, शमाऊन
मुजाहिद 19और यहूदाह इस्करियोती जिसने बाद
में उसे दुश्मन के हवाले कर दिया।

ईसा और बदरूहों का सरदार

20फिर ईसा किसी घर में दाख़िल हुआ। इस
बार भी इतना हुजूम जमा हो गया कि ईसा को
अपने शागिर्दों समेत खाना खाने का मौक़ा भी न
मिला। 21जब उसके ख़ानदान के अफ़राद ने यह
सुना तो वह उसे पकड़कर ले जाने के लिए आए,
क्योंकि उन्होंने कहा, "वह होश में नहीं है।"
22लेकिन शरीअत के जो आलिम यरू-
शलम से आए थे उन्होंने कहा, "यह बदरूहों के
सरदार बाल-ज़बूल के क़ब्ज़े में है। उसी की मदद
से बदरूहों को निकाल रहा है।"
23फिर ईसा ने उन्हें अपने पास बुलाकर
तमसीलों में जवाब दिया। "इबलीस किस तरह
इबलीस को निकाल सकता है? 24जिस
बादशाही में फूट पड़ जाए वह क़ायम नहीं रह
सकती। 25और जिस घराने की ऐसी हालत हो
वह भी क़ायम नहीं रह सकता। 26इसी तरह अगर
इबलीस अपने आपकी मुख़ालफ़त करे और यों
उसमें फूट पड़ जाए तो वह क़ायम नहीं रह सकता
बल्कि ख़त्म हो चुका है।
27किसी ज़ोरावर आदमी के घर में घुसकर
उसका मालो-असबाब लूटना उस वक़्त तक
मुमकिन नहीं है जब तक उस आदमी को बाँधा
न जाए। फिर ही उसे लूटा जा सकता है।
28मैं तुमसे सच कहता हूँ कि लोगों के तमाम
गुनाह और कुफ़र की बातें मुआफ़ की जा सकेंगी,
ख़ाह वह कितना ही कुफ़र क्यों न बकें। 29लेकिन
जो रूहुल-क़ुद्स के ख़िलाफ़ कुफ़र बके उसे अबद
तक मुआफ़ी नहीं मिलेगी। वह एक अबदी गुनाह
का क़ुसूरवार ठहरेगा।" 30ईसा ने यह इसलिए
कहा क्योंकि आलिम कह रहे थे कि वह किसी
बदरूह की गिरिफ़्त में है।

ईसा की माँ और भाई

31फिर ईसा की माँ और भाई पहुँच गए। बाहर
खड़े होकर उन्होंने किसी को उसे बुलाने को भेज
दिया। 32उसके इर्दगिर्द हुजूम बैठा था। उन्होंने
कहा, "आपकी माँ और भाई बाहर आपको बुला
रहे हैं।"
33ईसा ने पूछा, "कौन मेरी माँ और कौन मेरे
भाई हैं?" 34और अपने गिर्द बैठे लोगों पर नज़र
डालकर उसने कहा, "देखो, यह मेरी माँ और मेरे
भाई हैं। 35जो भी अल्लाह की मरज़ी पूरी करता
है वह मेरा भाई, मेरी बहन और मेरी माँ है।"

बीज बोनेवाले की तमसील

4 फिर ईसा दुबारा झील के किनारे तालीम
देने लगा। और इतनी बड़ी भीड़ उसके पास
जमा हुई कि वह झील में खड़ी एक कश्ती में बैठ
गया। बाक़ी लोग झील के किनारे पर खड़े रहे।

2उसने उन्हें बहुत-सी बातें तमसीलों में सिखाईं।
उनमें से एक यह थी :
3“सुनो! एक किसान बीज बोने के लिए
निकला। 4जब बीज इधर-उधर बिखर गया तो
कुछ दाने रास्ते पर गिरे और परिंदों ने आकर
उन्हें चुग लिया। 5कुछ पथरीली ज़मीन पर गिरे
जहाँ मिट्टी की कमी थी। वह जल्द उग आए
क्योंकि मिट्टी गहरी नहीं थी। 6लेकिन जब सूरज
निकला तो पौदे झुलस गए और चूँकि वह जड़ न
पकड़ सके इसलिए सूख गए। 7कुछ दाने ख़ुदरौ
काँटेदार पौदों के दरमियान भी गिरे। वहाँ वह उगने
तो लगे, लेकिन ख़ुदरौ पौदों ने साथ साथ बढ़कर
उन्हें फलने-फूलने की जगह न दी। चुनाँचे वह भी
ख़त्म हो गए और फल न ला सके। 8लेकिन ऐसे
दाने भी थे जो ज़रख़ेज़ ज़मीन में गिरे। वहाँ वह
फूट निकले और बढ़ते बढ़ते तीस गुना, साठ गुना
बल्कि सौ गुना तक फल लाए।”

9फिर उसने कहा, “जो सुन सकता है वह सुन
ले!”

तमसीलों का मक़सद

10जब वह अकेला था तो जो लोग उसके
इर्दगिर्द जमा थे उन्होंने बारह शागिर्दों समेत उससे
पूछा कि इस तमसील का क्या मतलब है?
11उसने जवाब दिया, “तुमको तो अल्लाह की
बादशाही का भेद समझने की लियाक़त दी गई
है। लेकिन मैं इस दायरे से बाहर के लोगों को हर
बात समझाने के लिए तमसीलें इस्तेमाल करता
हूँ 12ताकि पाक कलाम पूरा हो जाए कि

‘वह अपनी आँखों से देखेंगे
मगर कुछ नहीं जानेंगे,
वह अपने कानों से सुनेंगे
मगर कुछ नहीं समझेंगे,
ऐसा न हो कि वह मेरी तरफ़ रुजू करें
और उन्हें मुआफ़ कर दिया जाए’।”

बीज बोनेवाले की तमसील का मतलब

13फिर ईसा ने उनसे कहा, “क्या तुम यह
तमसील नहीं समझते? तो फिर बाक़ी तमाम
तमसीलें किस तरह समझ पाओगे? 14बीज
बोनेवाला अल्लाह का कलाम बो देता है। 15रास्ते
पर गिरनेवाले दाने वह लोग हैं जो कलाम को
सुनते तो हैं, लेकिन फिर इबलीस फ़ौरन आकर
वह कलाम छीन लेता है जो उनमें बोया गया
है। 16पथरीली ज़मीन पर गिरनेवाले दाने वह
लोग हैं जो कलाम सुनते ही उसे ख़ुशी से क़बूल
तो कर लेते हैं, 17लेकिन वह जड़ नहीं पकड़ते
और इसलिए ज़्यादा देर तक क़ायम नहीं रहते।
ज्योंही वह कलाम पर ईमान लाने के बाइस
किसी मुसीबत या ईज़ारसानी से दोचार हो जाएँ,
तो वह बरगश्ता हो जाते हैं। 18ख़ुदरौ काँटेदार
पौदों के दरमियान गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो
कलाम सुनते तो हैं, 19लेकिन फिर रोज़मर्रा की
परेशानियाँ, दौलत का फ़रेब और दीगर चीज़ों का
लालच कलाम को फलने-फूलने नहीं देते। नतीजे
में वह फल लाने तक नहीं पहुँचता। 20इसके
मुक़ाबले में ज़रख़ेज़ ज़मीन में गिरे हुए दाने वह
लोग हैं जो कलाम सुनकर उसे क़बूल करते और
बढ़ते बढ़ते तीस गुना, साठ गुना बल्कि सौ गुना
तक फल लाते हैं।”

कोई चराग़ को बरतन के नीचे नहीं छुपाता

21ईसा ने बात जारी रखी और कहा, “क्या
चराग़ को इसलिए जलाकर लाया जाता है कि
वह किसी बरतन या चारपाई के नीचे रखा जाए?
हरगिज़ नहीं! उसे शमादान पर रखा जाता है।
22क्योंकि जो कुछ भी इस वक़्त पोशीदा है उसे
आख़िरकार ज़ाहिर हो जाना है और तमाम भेदों
को एक दिन खुल जाना है। 23अगर कोई सुन
सके तो सुन ले।”

24उसने उनसे यह भी कहा, “इस पर ध्यान दो
कि तुम क्या सुनते हो। जिस हिसाब से तुम दूसरों
को देते हो उसी हिसाब से तुमको भी दिया जाएगा
बल्कि तुमको उससे बढ़कर मिलेगा। 25क्योंकि

जिसे कुछ हासिल हुआ है उसे और भी दिया
जाएगा, जबकि जिसे कुछ हासिल नहीं हुआ
उससे वह थोड़ा-बहुत भी छीन लिया जाएगा जो
उसे हासिल है।”

ख़ुद बख़ुद उगनेवाले बीज की तमसील

26फिर ईसा ने कहा, “अल्लाह की बादशाही
यों समझ लो : एक किसान ज़मीन में बीज बिखेर
देता है। 27यह बीज फूटकर दिन-रात उगता रहता
है, ख़ाह किसान सो रहा या जाग रहा हो। उसे
मालूम नहीं कि यह क्योंकर होता है। 28ज़मीन
ख़ुद बख़ुद अनाज की फ़सल पैदा करती है। पहले
पत्ते निकलते हैं, फिर बालें नज़र आने लगती
हैं और आख़िर में दाने पैदा हो जाते हैं। 29और
ज्योंही अनाज की फ़सल पक जाती है किसान
आकर दराँती से उसे काट लेता है, क्योंकि फ़सल
की कटाई का वक़्त आ चुका होता है।”

राई के दाने की तमसील

30फिर ईसा ने कहा, “हम अल्लाह की
बादशाही का मुवाज़ना किस चीज़ से करें? या
हम कौन-सी तमसील से इसे बयान करें? 31वह
राई के दाने की मानिंद है जो ज़मीन में डाला गया
हो। राई बीजों में सबसे छोटा दाना है 32लेकिन
बढ़ते बढ़ते सब्ज़ियों में सबसे बड़ा हो जाता है।
उस की शाख़ें इतनी लंबी हो जाती हैं कि परिंदे
उसके साये में अपने घोंसले बना सकते हैं।”

33ईसा इसी क़िस्म की बहुत-सी तमसीलों की
मदद से उन्हें कलाम यों सुनाता था कि वह इसे
समझ सकते थे। 34हाँ, अवाम को वह सिर्फ़
तमसीलों के ज़रीए सिखाता था। लेकिन जब वह
अपने शागिर्दों के साथ अकेला होता तो वह हर
बात की तशरीह करता था।

ईसा आँधी को थमा देता है

35उस दिन जब शाम हुई तो ईसा ने अपने
शागिर्दों से कहा, “आओ, हम झील के पार
चलें।” 36चुनाँचे वह भीड़ को रुख़सत करके उसे
लेकर चल पड़े। बाज़ और कश्तियाँ भी साथ गईं।
37अचानक सख़्त आँधी आई। लहरें कश्ती से
टकराकर उसे पानी से भरने लगीं, 38लेकिन ईसा
अभी तक कश्ती के पिछले हिस्से में अपना सर
गद्दी पर रखे सो रहा था। शागिर्दों ने उसे जगाकर
कहा, “उस्ताद, क्या आपको परवा नहीं कि हम
तबाह हो रहे हैं?”

39वह जाग उठा, आँधी को डाँटा और झील से
कहा, “ख़ामोश! चुप कर!” इस पर आँधी थम
गई और लहरें बिलकुल साकित हो गईं। 40फिर
ईसा ने शागिर्दों से पूछा, “तुम क्यों घबराते हो?
क्या तुम अभी तक ईमान नहीं रखते?”

41उन पर सख़्त ख़ौफ़ तारी हो गया और वह
एक दूसरे से कहने लगे, “आख़िर यह कौन है?
हवा और झील भी उसका हुक्म मानती हैं।”

ईसा एक गरासीनी आदमी से बदरूहें निकाल देता है

5 फिर वह झील के पार गरासा के इलाक़े में
पहुँचे। 2जब ईसा कश्ती से उतरा तो एक
आदमी जो नापाक रूह की गिरिफ़्त में था क़ब्रों में
से निकलकर ईसा को मिला। 3यह आदमी क़ब्रों
में रहता और इस नौबत तक पहुँच गया था कि
कोई भी उसे बाँध न सकता था, चाहे उसे ज़ंजीरों
से भी बाँधा जाता। 4उसे बहुत दफ़ा बेड़ियों और
ज़ंजीरों से बाँधा गया था, लेकिन जब भी ऐसा
हुआ तो उसने ज़ंजीरों को तोड़कर बेड़ियों को
टुकड़े टुकड़े कर दिया था। कोई भी उसे कंट्रोल
नहीं कर सकता था। 5दिन-रात वह चीख़ें मार
मारकर क़ब्रों और पहाड़ी इलाक़े में घुमता-फिरता
और अपने आपको पत्थरों से ज़ख़मी कर लेता
था।

6ईसा को दूर से देखकर वह दौड़ा और उसके
सामने मुँह के बल गिरा। 7वह ज़ोर से चीख़ा,
“ऐ ईसा अल्लाह तआला के फ़रज़ंद, मेरा आपके
साथ क्या वास्ता है? अल्लाह के नाम में आपको
क़सम देता हूँ कि मुझे अज़ाब में न डालें।”

8क्योंकि ईसा ने उसे कहा था, “ऐ नापाक रूह,
आदमी में से निकल जा!”

9फिर ईसा ने पूछा, “तेरा नाम क्या है?”

उसने जवाब दिया, “लशकर, क्योंकि हम
बहुत-से हैं।” 10और वह बार बार मिन्नत करता
रहा कि ईसा उन्हें इस इलाक़े से न निकाले।

11उस वक़्त क़रीब की पहाड़ी पर सुअरों का
बड़ा ग़ोल चर रहा था। 12बदरूहों ने ईसा से
इलतमास की, “हमें सुअरों में भेज दें, हमें उनमें
दाख़िल होने दें।” 13उसने उन्हें इजाज़त दी तो
बदरूहें उस आदमी में से निकलकर सुअरों में
जा घुसीं। इस पर पूरे ग़ोल के तक़रीबन 2,000
सुअर भाग भागकर पहाड़ी की ढलान पर से उतरे
और झील में झपटकर डूब मरे।

14यह देखकर सुअरों के गल्लाबान भाग गए।
उन्होंने शहर और देहात में इस बात का चर्चा किया
तो लोग यह मालूम करने के लिए कि क्या हुआ
है अपनी जगहों से निकलकर ईसा के पास आए।
15उसके पास पहुँचे तो वह आदमी मिला जिसमें
पहले बदरूहों का लशकर था। अब वह कपड़े पहने
वहाँ बैठा था और उस की ज़हनी हालत ठीक थी।
यह देखकर वह डर गए। 16जिन्होंने सब कुछ देखा
था उन्होंने लोगों को बताया कि बदरूह-गिरिफ़्ता
आदमी और सुअरों के साथ क्या हुआ है।

17फिर लोग ईसा की मिन्नत करने लगे कि वह
उनके इलाक़े से चला जाए।

18ईसा कश्ती पर सवार होने लगा तो बदरूहों
से आज़ाद किए गए आदमी ने उससे इलतमास
की, “मुझे भी अपने साथ जाने दें।”

19लेकिन ईसा ने उसे साथ जाने न दिया बल्कि
कहा, “अपने घर वापस चला जा और अपने
अज़ीज़ों को सब कुछ बता जो रब ने तेरे लिए
किया है, कि उसने तुझ पर कितना रहम किया
है।”

20चुनाँचे आदमी चला गया और दिक-
पुलिस के इलाक़े में लोगों को बताने लगा कि
ईसा ने मेरे लिए क्या कुछ किया है। और सब
हैरतज़दा हुए।

याईर की बेटी और बीमार औरत

21ईसा ने कश्ती में बैठे झील को दुबारा पार
किया। जब दूसरे किनारे पहुँचा तो एक हुजूम
उसके गिर्द जमा हो गया। वह अभी झील के
पास ही था 22कि मक़ामी इबादतख़ाने का एक
राहनुमा उसके पास आया। उसका नाम याईर
था। ईसा को देखकर वह उसके पाँवों में गिर गया
23और बहुत मिन्नत करने लगा, “मेरी छोटी बेटी
मरनेवाली है, बराहे-करम आकर उस पर अपने
हाथ रखें ताकि वह शफ़ा पाकर ज़िंदा रहे।”

24चुनाँचे ईसा उसके साथ चल पड़ा। एक बड़ी
भीड़ उसके पीछे लग गई और लोग उसे घेरकर
हर तरफ़ से दबाने लगे।

25हुजूम में एक औरत थी जो बारह साल से
ख़ून बहने के मरज़ से रिहाई न पा सकी थी।
26बहुत डाक्टरों से अपना इलाज करवा करवा
कर उसे कई तरह की मुसीबत झेलनी पड़ी थी
और इतने में उसके तमाम पैसे भी ख़र्च हो गए
थे। तो भी कोई फ़ायदा न हुआ था बल्कि उस
की हालत मज़ीद ख़राब होती गई। 27ईसा के बारे
में सुनकर वह भीड़ में शामिल हो गई थी। अब
पीछे से आकर उसने उसके लिबास को छुआ,
28क्योंकि उसने सोचा, “अगर मैं सिर्फ़ उसके
लिबास को ही छू लूँ तो मैं शफ़ा पा लूँगी।”

29ख़ून बहना फ़ौरन बंद हो गया और उसने
अपने जिस्म में महसूस किया कि मुझे इस
अज़ियतनाक हालत से रिहाई मिल गई है।
30लेकिन उसी लमहे ईसा को ख़ुद महसूस हुआ
कि मुझमें से तवानाई निकली है। उसने मुड़कर
पूछा, “किसने मेरे कपड़ों को छुआ है?”

31उसके शागिर्दों ने जवाब दिया, “आप ख़ुद
देख रहे हैं कि हुजूम आपको घेरकर दबा रहा है।
तो फिर आप किस तरह पूछ सकते हैं कि किसने
मुझे छुआ?”

32लेकिन ईसा अपने चारों तरफ़ देखता रहा
कि किसने यह किया है। 33इस पर वह औरत यह
जानकर कि मेरे साथ क्या हुआ है ख़ौफ़ के मारे

लरज़ती हुई उसके पास आई। वह उसके सामने
गिर पड़ी और उसे पूरी हक़ीक़त खोलकर बयान
की। 34ईसा ने उससे कहा, "बेटी, तेरे ईमान ने
तुझे बचा लिया है। सलामती से जा और अपनी
अज़ियतनाक हालत से बची रह।"

35ईसा ने यह बात अभी ख़त्म नहीं की थी कि
इबादतख़ाने के राहनुमा याईर के घर की तरफ़ से
कुछ लोग पहुँचे और कहा, "आपकी बेटी फ़ौत
हो चुकी है, अब उस्ताद को मज़ीद तकलीफ़ देने
की क्या ज़रूरत?"

36उनकी यह बात नज़रंदाज़ करके ईसा ने
याईर से कहा, "मत घबराओ, फ़क़त ईमान
रखो।" 37फिर ईसा ने हुजूम को रोक लिया और
सिर्फ़ पतरस, याक़ूब और उसके भाई यूहन्ना
को अपने साथ जाने की इजाज़त दी। 38जब
इबादतख़ाने के राहनुमा के घर पहुँचे तो वहाँ बड़ी
अफ़रा-तफ़री नज़र आई। लोग ख़ूब गिर्याओ-
ज़ारी कर रहे थे। 39अंदर जाकर ईसा ने उनसे
कहा, "यह कैसा शोर-शराबा है? क्यों रो रहे
हो? लड़की मर नहीं गई बल्कि सो रही है।"

40लोग हँसकर उसका मज़ाक़ उड़ाने लगे।
लेकिन उसने सबको बाहर निकाल दिया। फिर
सिर्फ़ लड़की के वालिदैन और अपने तीन शागिर्दों
को साथ लेकर वह उस कमरे में दाख़िल हुआ
जिसमें लड़की पड़ी थी। 41उसने उसका हाथ
पकड़कर कहा, "तलिथा क़ूम!" इसका मतलब
है, "छोटी लड़की, मैं तुझे हुक्म देता हूँ कि जाग
उठ!"

42लड़की फ़ौरन उठकर चलने-फिरने लगी।
उस की उम्र बारह साल थी। यह देखकर लोग
घबराकर हैरान रह गए। 43ईसा ने उन्हें संजीदगी
से समझाया कि वह किसी को भी इसके बारे में
न बताएँ। फिर उसने उन्हें कहा कि उसे खाने को
कुछ दो।

ईसा को नासरत में रद्द किया जाता है

6 फिर ईसा वहाँ से चला गया और अपने
वतनी शहर नासरत में आया। उसके
शागिर्द उसके साथ थे। 2सबत के दिन वह
इबादतख़ाने में तालीम देने लगा। बेशतर लोग उस
की बातें सुनकर हैरतज़दा हुए। उन्होंने पूछा, "इसे
यह कहाँ से हासिल हुआ है? यह हिकमत जो
इसे मिली है, और यह मोजिज़े जो इसके हाथों
से होते हैं, यह क्या है? 3क्या यह वह बढ़ई
नहीं है जो मरियम का बेटा है और जिसके भाई
याक़ूब, यूसुफ़, यहूदाह और शमाऊन हैं? और
क्या इसकी बहनें यहीं नहीं रहतीं?" यों उन्होंने
उससे ठोकर खाकर उसे क़बूल न किया।

4ईसा ने उनसे कहा, "नबी की हर जगह
इज़्ज़त होती है सिवाए उसके वतनी शहर, उसके
रिश्तेदारों और उसके अपने ख़ानदान के।"

5वहाँ वह कोई मोजिज़ा न कर सका। उसने
सिर्फ़ चंद एक मरीज़ों पर हाथ रखकर उनको
शफ़ा दी। 6और वह उनकी बेएतक़ादी के सबब
से बहुत हैरान था।

ईसा बारह शागिर्दों को तबलीग़ करने भेजता है

इसके बाद ईसा ने इर्दगिर्द के इलाक़े में गाँव
गाँव जाकर लोगों को तालीम दी। 7बारह शागिर्दों
को बुलाकर वह उन्हें दो दो करके मुख़्तलिफ़
जगहों पर भेजने लगा। इसके लिए उसने उन्हें
नापाक रूहों को निकालने का इख़्तियार देकर
8यह हिदायत की, "सफ़र पर अपने साथ कुछ
न लेना सिवाए एक लाठी के। न रोटी, न सामान
के लिए कोई बैग, न कमरबंद में कोई पैसा, 9न
एक से ज़्यादा सूट। तुम जूते पहन सकते हो।
10जिस घर में भी दाख़िल हो उसमें उस मक़ाम से
चले जाने तक ठहरो। 11और अगर कोई मक़ाम
तुमको क़बूल न करे या तुम्हारी न सुने तो फिर
रवाना होते वक़्त अपने पाँवों से गर्द झाड़ दो। यों
तुम उनके ख़िलाफ़ गवाही दोगे।"

12चुनाँचे शागिर्द वहाँ से निकलकर मुनादी
करने लगे कि लोग तौबा करें। 13उन्होंने बहुत-
सी बदरूहें निकाल दीं और बहुत-से मरीज़ों पर
ज़ैतून का तेल मलकर उन्हें शफ़ा दी।

यहया बपतिस्मा देनेवाले का क़त्ल

14बादशाह हेरोदेस अंतिपास ने ईसा के बारे
में सुना, क्योंकि उसका नाम मशहूर हो गया
था। कुछ कह रहे थे, “यहया बपतिस्मा देनेवाला
मुरदों में से जी उठा है, इसलिए इस क़िस्म की
मोजिज़ाना ताक़तें उसमें नज़र आती हैं।”

औरों ने सोचा, “यह इलियास नबी है।”

15यह ख़याल भी पेश किया जा रहा था कि
वह क़दीम ज़माने के नबियों जैसा कोई नबी है।

16लेकिन जब हेरोदेस ने उसके बारे में सुना
तो उसने कहा, “यहया जिसका मैंने सर क़लम
करवाया है मुरदों में से जी उठा है।” 17वजह
यह थी कि हेरोदेस के हुक्म पर ही यहया को
गिरिफ़्तार करके जेल में डाला गया था। यह
हेरोदियास की ख़ातिर हुआ था जो पहले हेरोदेस
के भाई फ़िलिप्पुस की बीवी थी, लेकिन जिससे
उसने अब ख़ुद शादी कर ली थी। 18यहया ने
हेरोदेस को बताया था, “अपने भाई की बीवी से
तेरी शादी नाजायज़ है।”

19इस वजह से हेरोदियास उससे कीना रखती
और उसे क़त्ल कराना चाहती थी। लेकिन इसमें
वह नाकाम रही 20क्योंकि हेरोदेस यहया से डरता
था। वह जानता था कि यह आदमी रास्तबाज़
और मुक़द्दस है, इसलिए वह उस की हिफ़ाज़त
करता था। जब भी उससे बात होती तो हेरोदेस
सुन सुनकर बड़ी उलझन में पड़ जाता। तो भी वह
उस की बातें सुनना पसंद करता था।

21आख़िरकार हेरोदियास को हेरोदेस की
सालगिरह पर अच्छा मौक़ा मिल गया। सालगिरह
को मनाने के लिए हेरोदेस ने अपने बड़े सरकारी
अफ़सरों, मिल्ट्री कमाँडरों और गलील के अव्वल
दर्जे के शहरियों की ज़ियाफ़त की। 22ज़ियाफ़त
के दौरान हेरोदियास की बेटी अंदर आकर नाचने
लगी। हेरोदेस और उसके मेहमानों को यह बहुत
पसंद आया और उसने लड़की से कहा, “जो जी
चाहे मुझसे माँग तो मैं वह तुझे दूँगा।” 23बल्कि
उसने क़सम खाकर कहा, “जो भी तू माँगेगी मैं
तुझे दूँगा, ख़ाह बादशाही का आधा हिस्सा ही क्यों
न हो।”

24लड़की ने निकलकर अपनी माँ से पूछा, “मैं
क्या माँगूँ?”

माँ ने जवाब दिया, “यहया बपतिस्मा देनेवाले
का सर।”

25लड़की फुरती से अंदर जाकर बादशाह के
पास वापस आई और कहा, “मैं चाहती हूँ कि
आप मुझे अभी अभी यहया बपतिस्मा देनेवाले
का सर ट्रे में मँगवा दें।”

26यह सुनकर बादशाह को बहुत दुख हुआ।
लेकिन अपनी क़समों और मेहमानों की मौजूदगी
की वजह से वह इनकार करने के लिए भी
तैयार नहीं था। 27चुनाँचे उसने फ़ौरन जल्लाद
को भेजकर हुक्म दिया कि वह यहया का सर ले
आए। जल्लाद ने जेल में जाकर यहया का सर
क़लम कर दिया। 28फिर वह उसे ट्रे में रखकर
ले आया और लड़की को दे दिया। लड़की ने
उसे अपनी माँ के सुपुर्द किया। 29जब यहया के
शागिर्दों को यह ख़बर पहुँची तो वह आए और उस
की लाश लेकर उसे क़ब्र में रख दिया।

ईसा 5000 अफ़राद को खाना खिलाता है

30रसूल वापस आकर ईसा के पास जमा हुए
और उसे सब कुछ सुनाने लगे जो उन्होंने किया
और सिखाया था। 31इस दौरान इतने लोग आ
और जा रहे थे कि उन्हें खाना खाने का मौक़ा
भी न मिला। इसलिए ईसा ने बारह शागिर्दों
से कहा, “आओ, हम लोगों से अलग होकर
किसी ग़ैरआबाद जगह जाएँ और आराम करें।”
32चुनाँचे वह कश्ती पर सवार होकर किसी वीरान
जगह चले गए।

33लेकिन बहुत-से लोगों ने उन्हें जाते वक़्त
पहचान लिया। वह पैदल चलकर तमाम शहरों
से निकल आए और दौड़ दौड़कर उनसे पहले
मनज़िले-मक़सूद तक पहुँच गए। 34जब ईसा ने
कश्ती पर से उतरकर बड़े हुजूम को देखा तो उसे
लोगों पर तरस आया, क्योंकि वह उन भेड़ों की

मानिंद थे जिनका कोई चरवाहा न हो। वहीं वह
उन्हें बहुत-सी बातें सिखाने लगा।
35जब दिन ढलने लगा तो उसके शागिर्द उसके
पास आए और कहा, "यह जगह वीरान है और
दिन ढलने लगा है। 36इनको रुख़सत कर दें ताकि
यह इर्दगिर्द की बस्तियों और देहातों में जाकर
खाने के लिए कुछ ख़रीद लें।"
37लेकिन ईसा ने उन्हें कहा, "तुम ख़ुद इन्हें
कुछ खाने को दो।"
उन्होंने पूछा, "हम इसके लिए दरकार चाँदी के
200 सिक्के कहाँ से लेकर रोटी ख़रीदने जाएँ
और इन्हें खिलाएँ?"
38उसने कहा, "तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ
हैं? जाकर पता करो!"
उन्होंने मालूम किया। फिर दुबारा उसके पास
आकर कहने लगे, "हमारे पास पाँच रोटियाँ और
दो मछलियाँ हैं।"
39इस पर ईसा ने उन्हें हिदायत दी, "तमाम
लोगों को गुरोहों में हरी घास पर बिठा दो।"
40चुनाँचे लोग सौ सौ और पचास पचास की
सूरत में बैठ गए। 41फिर ईसा ने उन पाँच रोटियों
और दो मछलियों को लेकर आसमान की तरफ़
देखा और शुक्रगुज़ारी की दुआ की। फिर उसने
रोटियों को तोड़ तोड़कर शागिर्दों को दिया ताकि
वह लोगों में तक़सीम करें। उसने दो मछलियों
को भी टुकड़े टुकड़े करके शागिर्दों के ज़रीए
उनमें तक़सीम करवाया। 42और सबने जी भरकर
खाया। 43जब शागिर्दों ने रोटियों और मछलियों
के बचे हुए टुकड़े जमा किए तो बारह टोकरे भर
गए। 44खानेवाले मर्दों की कुल तादाद 5,000
थी।

ईसा पानी पर चलता है

45इसके ऐन बाद ईसा ने अपने शागिर्दों को
मजबूर किया कि वह कश्ती पर सवार होकर
आगे निकलें और झील के पार के शहर बैत-
सैदा जाएँ। इतने में वह हुजूम को रुख़सत करना
चाहता था। 46उन्हें ख़ैरबाद कहने के बाद वह दुआ
करने के लिए पहाड़ पर चढ़ गया। 47शाम के
वक़्त शागिर्दों की कश्ती झील के बीच तक पहुँच
गई थी जबकि ईसा ख़ुद ख़ुश्की पर अकेला रह
गया था। 48वहाँ से उसने देखा कि शागिर्द कश्ती
को खेने में बड़ी जिद्दो-जहद कर रहे हैं, क्योंकि
हवा उनके ख़िलाफ़ चल रही थी। तक़रीबन तीन
बजे रात के वक़्त ईसा पानी पर चलते हुए उनके
पास आया। वह उनसे आगे निकलना चाहता था,
49लेकिन जब उन्होंने उसे झील की सतह पर
चलते हुए देखा तो सोचने लगे, "यह कोई भूत
है" और चीख़ें मारने लगे। 50क्योंकि सबने उसे
देखकर दहशत खाई।
लेकिन ईसा फ़ौरन उनसे मुख़ातिब होकर
बोला, "हौसला रखो! मैं ही हूँ। मत घबराओ।"
51फिर वह उनके पास आया और कश्ती में बैठ
गया। उसी वक़्त हवा थम गई। शागिर्द निहायत
ही हैरतज़दा हुए। 52क्योंकि जब रोटियों का
मोजिज़ा किया गया था तो वह इसका मतलब
नहीं समझे थे बल्कि उनके दिल बेहिस हो गए
थे।

गन्नेसरत में मरीज़ों की शफ़ा

53झील को पार करके वह गन्नेसरत शहर के
पास पहुँच गए और लंगर डाल दिया। 54ज्योंही
वह कश्ती से उतरे लोगों ने ईसा को पहचान
लिया। 55वह भाग भागकर उस पूरे इलाक़े में से
गुज़रे और मरीज़ों को चारपाइयों पर उठा उठाकर
वहाँ ले आए जहाँ कहीं उन्हें ख़बर मिली कि वह
ठहरा हुआ है। 56जहाँ भी वह गया चाहे गाँव,
शहर या बस्ती में, वहाँ लोगों ने बीमारों को चौकों
में रखकर उससे मिन्नत की कि वह कम अज़
कम उन्हें अपने लिबास के दामन को छूने दे। और
जिसने भी उसे छुआ उसे शफ़ा मिली।

बापदादा की तालीम

7 एक दिन फ़रीसी और शरीअत के कुछ
आलिम यरूशलम से ईसा से मिलने आए।
2जब वह वहाँ थे तो उन्होंने देखा कि उसके कुछ

शागिर्द अपने हाथ पाक-साफ़ किए बग़ैर यानी
धोए बग़ैर खाना खा रहे हैं।
3(क्योंकि यहूदी और ख़ासकर फ़रीसी फ़िरक़े
के लोग इस मामले में अपने बापदादा की रिवायत
को मानते हैं। वह अपने हाथ अच्छी तरह धोए
बग़ैर खाना नहीं खाते। 4इसी तरह जब वह कभी
बाज़ार से आते हैं तो वह ग़ुस्ल करके ही खाना
खाते हैं। वह बहुत-सी और रिवायतों पर भी अमल
करते हैं, मसलन कप, जग और केतली को धोकर
पाक-साफ़ करने की रस्म पर।)
5चुनाँचे फ़रीसियों और शरीअत के आलि-
मों ने ईसा से पूछा, "आपके शागिर्द बापदादा की
रिवायतों के मुताबिक़ ज़िंदगी क्यों नहीं गुज़ारते
बल्कि रोटी भी हाथ पाक-साफ़ किए बग़ैर खाते
हैं?"
6ईसा ने जवाब दिया, "यसायाह नबी ने तुम
रियाकारों के बारे में ठीक कहा जब उसने यह
नबुव्वत की,
'यह क़ौम अपने होंटों से तो मेरा एहतराम
करती है
लेकिन उसका दिल मुझसे दूर है।
7वह मेरी परस्तिश करते तो हैं, लेकिन
बेफ़ायदा।
क्योंकि वह सिर्फ़ इनसान ही के अहकाम
सिखाते हैं।'
8तुम अल्लाह के अहकाम को छोड़कर
इनसानी रिवायात की पैरवी करते हो।"
9ईसा ने अपनी बात जारी रखी, "तुम कितने
सलीक़े से अल्लाह का हुक्म मनसूख़ करते हो
ताकि अपनी रिवायात को क़ायम रख सको।
10मसलन मूसा ने फ़रमाया, 'अपने बाप और
अपनी माँ की इज़्ज़त करना' और 'जो अपने बाप
या माँ पर लानत करे उसे सज़ाए-मौत दी जाए।'
11लेकिन जब कोई अपने वालिदैन से कहे, 'मैं
आपकी मदद नहीं कर सकता, क्योंकि मैंने मन्नत
मानी है कि जो मुझे आपको देना था वह अल्लाह
के लिए क़ुरबानी है' तो तुम इसे जायज़ क़रार देते
हो। 12यों तुम उसे अपने माँ-बाप की मदद करने
से रोक लेते हो। 13और इसी तरह तुम अल्लाह
के कलाम को अपनी उस रिवायत से मनसूख़
कर लेते हो जो तुमने नसल-दर-नसल मुंतक़िल
की है। तुम इस क़िस्म की बहुत-सी हरकतें करते
हो।"

क्या कुछ इनसान को नापाक कर देता है?

14फिर ईसा ने दुबारा हुजूम को अपने पास
बुलाया और कहा, "सब मेरी बात सुनो और
इसे समझने की कोशिश करो। 15कोई ऐसी
चीज़ है नहीं जो इनसान में दाख़िल होकर उसे
नापाक कर सके, बल्कि जो कुछ इनसान के अंदर
से निकलता है वही उसे नापाक कर देता है।"
16[अगर कोई सुन सकता है तो वह सुन ले।]
17फिर वह हुजूम को छोड़कर किसी घर में
दाख़िल हुआ। वहाँ उसके शागिर्दों ने पूछा, "इस
तमसील का क्या मतलब है?"
18उसने कहा, "क्या तुम भी इतने नासमझ
हो? क्या तुम नहीं समझते कि जो कुछ बाहर से
इनसान में दाख़िल होता है वह उसे नापाक नहीं
कर सकता? 19वह तो उसके दिल में नहीं जाता
बल्कि उसके मेदे में और वहाँ से निकलकर जाए-
ज़रूरत में।" (यह कहकर ईसा ने हर क़िस्म का
खाना पाक-साफ़ क़रार दिया।)
20उसने यह भी कहा, "जो कुछ इनसान
के अंदर से निकलता है वही उसे नापाक
करता है। 21क्योंकि लोगों के अंदर से,
उनके दिलों ही से बुरे ख़यालात, हरामकारी,
चोरी, क़त्लो-ग़ारत, 22ज़िनाकारी, लालच,
बदकारी, धोका, शहवतपरस्ती, हसद, बुह-
तान, ग़ुरूर और हमाक़त निकलते हैं। 23यह
तमाम बुराइयाँ अंदर ही से निकलकर इनसान को
नापाक कर देती हैं।"

ग़ैरयहूदी औरत का ईमान

24फिर ईसा गलील से रवाना होकर शिमाल
में सूर के इलाक़े में आया। वहाँ वह किसी घर
में दाख़िल हुआ। वह नहीं चाहता था कि किसी

को पता चले, लेकिन वह पोशीदा न रह सका।
25फ़ौरन एक औरत उसके पास आई जिसने
उसके बारे में सुन रखा था। वह उसके पाँवों में
गिर गई। उस की छोटी बेटी किसी नापाक रूह के
क़ब्ज़े में थी, 26और उसने ईसा से गुज़ारिश की,
“बदरूह को मेरी बेटी में से निकाल दें।” लेकिन
वह औरत यूनानी थी और सूरुफ़ेनीके के इलाक़े
में पैदा हुई थी, 27इसलिए ईसा ने उसे बताया,
“पहले बच्चों को जी भरकर खाने दे, क्योंकि यह
मुनासिब नहीं कि बच्चों से खाना लेकर कुत्तों के
सामने फेंक दिया जाए।”

28उसने जवाब दिया, “जी ख़ुदावंद, लेकिन
मेज़ के नीचे के कुत्ते भी बच्चों के गिरे हुए टुकड़े
खाते हैं।”

29ईसा ने कहा, “तूने अच्छा जवाब दिया,
इसलिए जा, बदरूह तेरी बेटी में से निकल गई
है।”

30औरत अपने घर वापस चली गई तो देखा
कि लड़की बिस्तर पर पड़ी है और बदरूह उसमें
से निकल चुकी है।

गूँगे-बहरे की शफ़ा

31जब ईसा सूर से रवाना हुआ तो वह पहले
शिमाल में वाक़े शहर सैदा को चला गया। फिर
वहाँ से भी फ़ारिग़ होकर वह दुबारा गलील की
झील के किनारे वाक़े दिकपुलिस के इलाक़े
में पहुँच गया। 32वहाँ उसके पास एक बहरा
आदमी लाया गया जो मुश्किल ही से बोल सकता
था। उन्होंने मिन्नत की कि वह अपना हाथ उस
पर रखे। 33ईसा उसे हुजूम से दूर ले गया।
उसने अपनी उँगलियाँ उसके कानों में डालीं और
थूककर आदमी की ज़बान को छुआ। 34फिर
आसमान की तरफ़ नज़र उठाकर उसने आह भरी
और उससे कहा, “इफ़्फ़तह!” (इसका मतलब
है “खुल जा!”)

35फ़ौरन आदमी के कान खुल गए, ज़बान का
बंधन टूट गया और वह ठीक ठीक बोलने लगा।
36ईसा ने हाज़िरीन को हुक्म दिया कि वह किसी
को यह बात न बताएँ। लेकिन जितना वह मना
करता था उतना ही लोग इसकी ख़बर फैलाते
थे। 37वह निहायत ही हैरान हुए और कहने लगे,
“इसने सब कुछ अच्छा किया है, यह बहरों को
सुनने की ताक़त देता है और गूँगों को बोलने
की।”

ईसा 4000 अफ़राद को खाना खिलाता है

8 उन दिनों में एक और मरतबा ऐसा हुआ
कि बहुत-से लोग जमा हुए जिनके पास
खाने का बंदोबस्त नहीं था। चुनाँचे ईसा ने अपने
शागिर्दों को बुलाकर उनसे कहा, 2“मुझे इन
लोगों पर तरस आता है। इन्हें मेरे साथ ठहरे तीन
दिन हो चुके हैं और इनके पास खाने की कोई
चीज़ नहीं है। 3लेकिन अगर मैं इन्हें रुख़सत कर
दूँ और वह इस भूकी हालत में अपने अपने घर
चले जाएँ तो वह रास्ते में थककर चूर हो जाएंगे।
और इनमें से कई दूर-दराज़ से आए हैं।”

4उसके शागिर्दों ने जवाब दिया, “इस वीरान
इलाक़े में कहाँ से इतना खाना मिल सकेगा कि
यह खाकर सेर हो जाएँ?”

5ईसा ने पूछा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ
हैं?”

उन्होंने जवाब दिया, “सात।”

6ईसा ने हुजूम को ज़मीन पर बैठने को कहा।
फिर सात रोटियों को लेकर उसने शुक्रगुज़ारी की
दुआ की और उन्हें तोड़ तोड़कर अपने शागिर्दों
को तक़सीम करने के लिए दे दिया। 7उनके पास
दो-चार छोटी मछलियाँ भी थीं। ईसा ने उन पर
भी शुक्रगुज़ारी की दुआ की और शागिर्दों को उन्हें
बाँटने को कहा। 8लोगों ने जी भरकर खाया। बाद
में जब खाने के बचे हुए टुकड़े जमा किए गए
तो सात बड़े टोकरे भर गए। 9तक़रीबन 4,000
आदमी हाज़िर थे। खाने के बाद ईसा ने उन्हें
रुख़सत कर दिया 10और फ़ौरन कश्ती पर सवार
होकर अपने शागिर्दों के साथ दल्मनूता के इलाक़े
में पहुँच गया।

फ़रीसी इलाही निशान तलब करते हैं

11इस पर फ़रीसी निकलकर ईसा के पास
आए और उससे बहस करने लगे। उसे आज़माने
के लिए उन्होंने मुतालबा किया कि वह उन्हें
आसमान की तरफ़ से कोई इलाही निशान
दिखाए ताकि उसका इख़्तियार साबित हो जाए।
12लेकिन उसने ठंडी आह भरकर कहा, “यह
नसल क्यों इलाही निशान का मुतालबा करती
है? मैं तुमको सच बताता हूँ कि इसे कोई निशान
नहीं दिया जाएगा।”
13और उन्हें छोड़कर वह दुबारा कश्ती में बैठ
गया और झील को पार करने लगा।

फ़रीसियों और हेरोदेस का ख़मीर

14लेकिन शागिर्द अपने साथ खाना लाना भूल
गए थे। कश्ती में उनके पास सिर्फ़ एक रोटी
थी। 15ईसा ने उन्हें हिदायत की, “ख़बरदार,
फ़रीसियों और हेरोदेस के ख़मीर से होशियार
रहना।”
16शागिर्द आपस में बहस करने लगे, “वह
इसलिए कह रहे होंगे कि हमारे पास रोटी नहीं
है।”
17ईसा को मालूम हुआ कि वह क्या सोच रहे
हैं। उसने कहा, “तुम आपस में क्यों बहस कर रहे
हो कि हमारे पास रोटी नहीं है? क्या तुम अब तक
न जानते, न समझते हो? क्या तुम्हारे दिल इतने
बेहिस हो गए हैं? 18तुम्हारी आँखें तो हैं, क्या
तुम देख नहीं सकते? तुम्हारे कान तो हैं, क्या
तुम सुन नहीं सकते? और क्या तुम्हें याद नहीं
19जब मैंने 5,000 आदमियों को पाँच रोटियों से
सेर कर दिया तो तुमने बचे हुए टुकड़ों के कितने
टोकरे उठाए थे?”
उन्होंने जवाब दिया, “बारह”।
20“और जब मैंने 4,000 आदमियों को सात
रोटियों से सेर कर दिया तो तुमने बचे हुए टुकड़ों
के कितने टोकरे उठाए थे?”
उन्होंने जवाब दिया, “सात।”
21उसने पूछा, “क्या तुम अभी तक नहीं
समझते?”

बैत-सैदा में अंधे की शफ़ा

22वह बैत-सैदा पहुँचे तो लोग ईसा के पास
एक अंधे आदमी को लाए। उन्होंने इलतमास की
कि वह उसे छुए। 23ईसा अंधे का हाथ पकड़कर
उसे गाँव से बाहर ले गया। वहाँ उसने उस की
आँखों पर थूककर अपने हाथ उस पर रख दिए
और पूछा, “क्या तू कुछ देख सकता है?”
24आदमी ने नज़र उठाकर कहा, “हाँ, मैं लोगों
को देख सकता हूँ। वह फिरते हुए दरख़्तों की
मानिंद दिखाई दे रहे हैं।”
25ईसा ने दुबारा अपने हाथ उस की आँखों पर
रखे। इस पर आदमी की आँखें पूरे तौर पर खुल
गईं, उस की नज़र बहाल हो गई और वह सब
कुछ साफ़ साफ़ देख सकता था। 26ईसा ने उसे
रुख़सत करके कहा, “इस गाँव में वापस न जाना
बल्कि सीधा अपने घर चला जा।”

पतरस का इक़रार

27फिर ईसा वहाँ से निकलकर अपने शागिर्दों
के साथ क़ैसरिया-फ़िलिप्पी के क़रीब के देहातों
में गया। चलते चलते उसने उनसे पूछा, “मैं लोगों
के नज़दीक कौन हूँ?”
28उन्होंने जवाब दिया, “कुछ कहते हैं यहया
बपतिस्मा देनेवाला, कुछ यह कि आप इलियास
नबी हैं। कुछ यह भी कहते हैं कि नबियों में से
एक।”
29उसने पूछा, “लेकिन तुम क्या कहते हो?
तुम्हारे नज़दीक मैं कौन हूँ?”
पतरस ने जवाब दिया, “आप मसीह हैं।”
30यह सुनकर ईसा ने उन्हें किसी को भी यह
बात बताने से मना किया।

ईसा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

31फिर ईसा उन्हें तालीम देने लगा, “ला-
ज़िम है कि इब्ने-आदम बहुत दुख उठाकर बुज़ुर्गों,

राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा से रद्द
किया जाए। उसे क़त्ल भी किया जाएगा, लेकिन
वह तीसरे दिन जी उठेगा।” 32उसने उन्हें यह बात
साफ़ साफ़ बताई। इस पर पतरस उसे एक तरफ़
ले जाकर समझाने लगा। 33ईसा मुड़कर शागिर्दों
की तरफ़ देखने लगा। उसने पतरस को डाँटा,
“शैतान, मेरे सामने से हट जा! तू अल्लाह की
सोच नहीं रखता बल्कि इनसान की।”

34फिर उसने शागिर्दों के अलावा हुजूम को भी
अपने पास बुलाया। उसने कहा, “जो मेरे पीछे
आना चाहे वह अपने आपका इनकार करे और
अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे हो ले। 35क्योंकि
जो अपनी जान को बचाए रखना चाहे वह उसे खो
देगा। लेकिन जो मेरी और अल्लाह की ख़ुशख़बरी
की ख़ातिर अपनी जान खो दे वही उसे बचाएगा।
36क्या फ़ायदा है अगर किसी को पूरी दुनिया
हासिल हो जाए, लेकिन वह अपनी जान से
महरूम हो जाए? 37इनसान अपनी जान के बदले
क्या दे सकता है? 38जो भी इस ज़िनाकार और
गुनाहआलूदा नसल के सामने मेरे और मेरी बातों
के सबब से शरमाए उससे इब्ने-आदम भी उस
वक़्त शरमाएगा जब वह अपने बाप के जलाल में
मुक़द्दस फ़रिश्तों के साथ आएगा।”

9 ईसा ने उन्हें यह भी बताया, “मैं तुमको
सच बताता हूँ, यहाँ कुछ ऐसे लोग खड़े हैं
जो मरने से पहले ही अल्लाह की बादशाही को
क़ुदरत के साथ आते हुए देखेंगे।”

पहाड़ पर ईसा की सूरत बदल जाती है

2छः दिन के बाद ईसा सिर्फ़ पतरस, याक़ूब
और यूहन्ना को अपने साथ लेकर ऊँचे पहाड़
पर चढ़ गया। वहाँ उस की शक्लो-सूरत उनके
सामने बदल गई। 3उसके कपड़े चमकने लगे
और निहायत सफ़ेद हो गए। दुनिया में कोई भी
धोबी कपड़े इतने सफ़ेद नहीं कर सकता। 4फिर
इलियास और मूसा ज़ाहिर हुए और ईसा से बात
करने लगे। 5पतरस बोल उठा, “उस्ताद, कितनी
अच्छी बात है कि हम यहाँ हैं। आएँ, हम तीन
झोंपड़ियाँ बनाएँ, एक आपके लिए, एक मूसा के
लिए और एक इलियास के लिए।” 6उसने यह
इसलिए कहा कि तीनों शागिर्द सहमे हुए थे और
वह नहीं जानता था कि क्या कहे।

7इस पर एक बादल आकर उन पर छा गया
और बादल में से एक आवाज़ सुनाई दी, “यह
मेरा प्यारा फ़रज़ंद है। इसकी सुनो।” 8अचानक
मूसा और इलियास ग़ायब हो गए। शागिर्दों ने
चारों तरफ़ देखा, लेकिन सिर्फ़ ईसा नज़र आया।

9वह पहाड़ से उतरने लगे तो ईसा ने उन्हें हुक्म
दिया, “जो कुछ तुमने देखा है उसे उस वक़्त
तक किसी को न बताना जब तक कि इब्ने-आदम
मुरदों में से जी न उठे।”

10चुनाँचे उन्होंने यह बात अपने तक महदूद
रखी। लेकिन वह कई बार आपस में बहस करने
लगे कि मुरदों में से जी उठने से क्या मुराद हो
सकती है। 11फिर उन्होंने उससे पूछा, “शरीअत
के उलमा क्यों कहते हैं कि मसीह की आमद से
पहले इलियास का आना ज़रूरी है?”

12ईसा ने जवाब दिया, “इलियास तो ज़रूर
पहले सब कुछ बहाल करने के लिए आएगा।
लेकिन कलामे-मुक़द्दस में इब्ने-आदम के बारे में
यह क्यों लिखा है कि उसे बहुत दुख उठाना और
हक़ीर समझा जाना है? 13लेकिन मैं तुमको
बताता हूँ, इलियास तो आ चुका है और उन्होंने
उसके साथ जो चाहा किया। यह भी कलामे-
मुक़द्दस के मुताबिक़ ही हुआ है।”

ईसा लड़के में से बदरूह निकालता है

14जब वह बाक़ी शागिर्दों के पास वापस पहुँचे
तो उन्होंने देखा कि उनके गिर्द एक बड़ा हुजूम
जमा है और शरीअत के कुछ उलमा उनके साथ
बहस कर रहे हैं। 15ईसा को देखते ही लोगों ने
बड़ी बेचैनी से उस की तरफ़ दौड़कर उसे सलाम
किया। 16उसने शागिर्दों से सवाल किया, “तुम
उनके साथ किसके बारे में बहस कर रहे हो?”

17हुजूम में से एक आदमी ने जवाब दिया,
“उस्ताद, मैं अपने बेटे को आपके पास लाया था।

वह ऐसी बदरूह के क़ब्ज़े में है जो उसे बोलने नहीं
देती। 18और जब भी वह उस पर ग़ालिब आती
है वह उसे ज़मीन पर पटक देती है। बेटे के मुँह से
झाग निकलने लगता और वह दाँत पीसने लगता
है। फिर उसका जिस्म अकड़ जाता है। मैंने आपके
शागिर्दों से कहा तो था कि वह बदरूह को निकाल
दें, लेकिन वह न निकाल सके।”
19ईसा ने उनसे कहा, “ईमान से ख़ाली नसल!
मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँ, कब तक तुम्हें
बरदाश्त करूँ? लड़के को मेरे पास ले आओ।”
20वह उसे ईसा के पास ले आए।
ईसा को देखते ही बदरूह लड़के को झँझोड़ने
लगी। वह ज़मीन पर गिर गया और इधर-उधर
लुढ़कते हुए मुँह से झाग निकालने लगा। 21ईसा
ने बाप से पूछा, “इसके साथ कब से ऐसा हो रहा
है?”
उसने जवाब दिया, “बचपन से। 22बहुत दफ़ा
उसने इसे हलाक करने की ख़ातिर आग या पानी
में गिराया है। अगर आप कुछ कर सकते हैं तो
तरस खाकर हमारी मदद करें।”
23ईसा ने पूछा, “क्या मतलब, ‘अगर आप
कुछ कर सकते हैं’? जो ईमान रखता है उसके
लिए सब कुछ मुमकिन है।”
24लड़के का बाप फ़ौरन चिल्ला उठा, “मैं
ईमान रखता हूँ। मेरी बेएतक़ादी का इलाज करें।”
25ईसा ने देखा कि बहुत-से लोग दौड़ दौड़कर
देखने आ रहे हैं, इसलिए उसने नापाक रूह को
डाँटा, “ऐ गूँगी और बहरी बदरूह, मैं तुझे हुक्म
देता हूँ कि इसमें से निकल जा। कभी भी इसमें
दुबारा दाख़िल न होना!”
26इस पर बदरूह चीख़ उठी और लड़के को
शिद्दत से झँझोड़कर निकल गई। लड़का लाश की
तरह ज़मीन पर पड़ा रहा, इसलिए सबने कहा,
“वह मर गया है।” 27लेकिन ईसा ने उसका हाथ
पकड़कर उठने में उस की मदद की और वह खड़ा
हो गया।
28बाद में जब ईसा किसी घर में जाकर अपने
शागिर्दों के साथ अकेला था तो उन्होंने उससे
पूछा, “हम बदरूह को क्यों न निकाल सके?”
29उसने जवाब दिया, “इस क़िस्म की बदरूह
सिर्फ़ दुआ से निकाली जा सकती है।”

ईसा दूसरी दफ़ा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

30वहाँ से निकलकर वह गलील में से गुज़रे।
ईसा नहीं चाहता था कि किसी को पता चले
कि वह कहाँ है, 31क्योंकि वह अपने शागिर्दों
को तालीम दे रहा था। उसने उनसे कहा, “इब्ने-
आदम को आदमियों के हवाले कर दिया जाएगा।
वह उसे क़त्ल करेंगे, लेकिन तीन दिन के बाद वह
जी उठेगा।”
32लेकिन शागिर्द इसका मतलब न समझे और
वह ईसा से इसके बारे में पूछने से डरते भी थे।

कौन सबसे बड़ा है?

33चलते चलते वह कफ़र्नहूम पहुँचे। जब वह
किसी घर में थे तो ईसा ने शागिर्दों से सवाल
किया, “रास्ते में तुम किस बात पर बहस कर
रहे थे?”
34लेकिन वह ख़ामोश रहे, क्योंकि वह रास्ते
में इस पर बहस कर रहे थे कि हममें से बड़ा
कौन है? 35ईसा बैठ गया और बारह शागिर्दों
को बुलाकर कहा, “जो अव्वल होना चाहता है
वह सबसे आख़िर में आए और सबका ख़ादिम
हो।” 36फिर उसने एक छोटे बच्चे को लेकर
उनके दरमियान खड़ा किया। उसे गले लगाकर
उसने उनसे कहा, 37“जो मेरे नाम में इन बच्चों
में से किसी को क़बूल करता है वह मुझे ही क़बूल
करता है। और जो मुझे क़बूल करता है वह मुझे
नहीं बल्कि उसे क़बूल करता है जिसने मुझे भेजा
है।”

जो हमारे ख़िलाफ़ नहीं वह हमारे हक़ में है

38यूहन्ना बोल उठा, “उस्ताद, हमने एक
शख़्स को देखा जो आपका नाम लेकर
बदरूहें निकाल रहा था। हमने उसे मना
किया, क्योंकि वह हमारी पैरवी नहीं कर-
ता।”

39लेकिन ईसा ने कहा, “उसे मना न करना।
जो भी मेरे नाम में मोजिज़ा करे वह अगले लमहे
मेरे बारे में बुरी बातें नहीं कह सकेगा। 40क्योंकि
जो हमारे ख़िलाफ़ नहीं वह हमारे हक़ में है। 41मैं
तुमको सच बताता हूँ, जो भी तुम्हें इस वजह
से पानी का गलास पिलाए कि तुम मसीह के
पैरोकार हो उसे ज़रूर अज्र मिलेगा।

आज़माइशें

42और जो कोई मुझ पर ईमान रखनेवाले इन
छोटों में से किसी को गुनाह करने पर उकसाए
उसके लिए बेहतर है कि उसके गले में बड़ी
चक्की का पाट बाँधकर उसे समुंदर में फेंक
दिया जाए। 43-[44]अगर तेरा हाथ तुझे गुनाह
करने पर उकसाए तो उसे काट डालना। इससे
पहले कि तू दो हाथों समेत जहन्नुम की कभी
न बुझनेवाली आग में चला जाए [यानी वहाँ
जहाँ लोगों को खानेवाले कीड़े कभी नहीं मरते
और आग कभी नहीं बुझती] बेहतर यह है कि
तू एक हाथ से महरूम होकर अबदी ज़िंदगी में
दाख़िल हो। 45-[46]अगर तेरा पाँव तुझे गुनाह
करने पर उकसाए तो उसे काट डालना। इससे
पहले कि तुझे दो पाँवों समेत जहन्नुम में फेंका
जाए [जहाँ लोगों को खानेवाले कीड़े कभी नहीं
मरते और आग कभी नहीं बुझती] बेहतर यह है
कि तू एक पाँव से महरूम होकर अबदी ज़िंदगी
में दाख़िल हो। 47-[48]और अगर तेरी आँख तुझे
गुनाह करने पर उकसाए तो उसे निकाल देना।
इससे पहले कि तुझे दो आँखों समेत जहन्नुम में
फेंका जाए जहाँ लोगों को खानेवाले कीड़े कभी
नहीं मरते और आग कभी नहीं बुझती बेहतर यह
है कि तू एक आँख से महरूम होकर अल्लाह की
बादशाही में दाख़िल हो।

49क्योंकि हर एक को आग से नमकीन किया
जाएगा [और हर एक क़ुरबानी नमक से नमकीन
की जाएगी]।

50नमक अच्छी चीज़ है। लेकिन अगर उसका
ज़ायक़ा जाता रहे तो उसे क्योंकर दुबारा नमकीन
किया जा सकता है? अपने दरमियान नमक की
खूबियाँ बरक़रार रखो और सुलह-सलामती से
एक दूसरे के साथ ज़िंदगी गुज़ारो।”

तलाक़ के बारे में तालीम

10 फिर ईसा उस जगह को छोड़कर
यहूदिया के इलाक़े में और दरि-
याए-यरदन के पार चला गया। वहाँ भी हुजूम
जमा हो गया। उसने उन्हें मामूल के मुताबिक़
तालीम दी।

2कुछ फ़रीसी आए और उसे फँसाने की ग़रज़
से सवाल किया, “क्या जायज़ है कि मर्द अपनी
बीवी को तलाक़ दे?”

3ईसा ने उनसे पूछा, “मूसा ने शरीअत में
तुमको क्या हिदायत की है?”

4उन्होंने कहा, “उसने इजाज़त दी है कि
आदमी तलाक़नामा लिखकर बीवी को रुख़सत
कर दे।”

5ईसा ने जवाब दिया, “मूसा ने तुम्हारी
सख़्तदिली की वजह से तुम्हारे लिए यह हुक्म
लिखा था। 6लेकिन इब्तिदा में ऐसा नहीं था।
दुनिया की तख़लीक़ के वक़्त अल्लाह ने उन्हें मर्द
और औरत बनाया। 7‘इसलिए मर्द अपने माँ-बाप
को छोड़कर अपनी बीवी के साथ पैवस्त हो जाता
है। 8वह दोनों एक हो जाते हैं।’ यों वह कलामे-
मुक़द्दस के मुताबिक़ दो नहीं रहते बल्कि एक हो
जाते हैं। 9तो जिसे अल्लाह ने ख़ुद जोड़ा है उसे
इनसान जुदा न करे।”

10किसी घर में आकर शागिर्दों ने यह बात
दुबारा छेड़कर ईसा से मज़ीद दरियाफ़्त किया।
11उसने उन्हें बताया, “जो अपनी बीवी को

तलाक़ देकर किसी और से शादी करे वह उसके
साथ ज़िना करता है। 12और जो औरत अपने
ख़ाविंद को तलाक़ देकर किसी और से शादी करे
वह भी ज़िना करती है।”

ईसा छोटे बच्चों को बरकत देता है

13एक दिन लोग अपने छोटे बच्चों को ईसा के
पास लाए ताकि वह उन्हें छुए। लेकिन शागिर्दों ने
उनको मलामत की। 14यह देखकर ईसा नाराज़
हुआ। उसने उनसे कहा, “बच्चों को मेरे पास
आने दो और उन्हें न रोको, क्योंकि अल्लाह
की बादशाही इन जैसे लोगों को हासिल है।
15मैं तुमको सच बताता हूँ, जो अल्लाह की
बादशाही को बच्चे की तरह क़बूल न करे वह
उसमें दाख़िल नहीं होगा।” 16यह कहकर उसने
उन्हें गले लगाया और अपने हाथ उन पर रखकर
उन्हें बरकत दी।

अमीर मुश्किल से बादशाही में दाख़िल हो सकते हैं

17जब ईसा रवाना होने लगा तो एक आदमी
दौड़कर उसके पास आया और उसके सामने घुटने
टेककर पूछा, “नेक उस्ताद, मैं क्या करूँ ताकि
अबदी ज़िंदगी मीरास में पाऊँ?”
18ईसा ने पूछा, “तू मुझे नेक क्यों कहता है?
कोई नेक नहीं सिवाए एक के और वह है अल्लाह।
19तू शरीअत के अहकाम से तो वाक़िफ़ है। क़त्ल
न करना, ज़िना न करना, चोरी न करना, झूटी
गवाही न देना, धोका न देना, अपने बाप और
अपनी माँ की इज़्ज़त करना।”
20आदमी ने जवाब दिया, “उस्ताद, मैंने
जवानी से आज तक इन तमाम अहकाम की पैरवी
की है।”
21ईसा ने ग़ौर से उस की तरफ़ देखा। उसके
दिल में उसके लिए प्यार उभर आया। वह बोला,
“एक काम रह गया है। जा, अपनी पूरी जायदाद
फ़रोख़्त करके पैसे ग़रीबों में तक़सीम कर दे। फिर
तेरे लिए आसमान पर ख़ज़ाना जमा हो जाएगा।
इसके बाद आकर मेरे पीछे हो ले।” 22यह सुनकर
आदमी का मुँह लटक गया और वह मायूस होकर
चला गया, क्योंकि वह निहायत दौलतमंद था।
23ईसा ने अपने इर्दगिर्द देखकर शागिर्दों से
कहा, “दौलतमंदों के लिए अल्लाह की बादशाही
में दाख़िल होना कितना मुश्किल है!”
24शागिर्द उसके यह अलफ़ाज़ सुनकर हैरान
हुए। लेकिन ईसा ने दुबारा कहा, “बच्चो!
अल्लाह की बादशाही में दाख़िल होना कितना
मुश्किल है। 25अमीर के अल्लाह की बादशाही
में दाख़िल होने की निसबत ज़्यादा आसान यह है
कि ऊँट सूई के नाके में से गुज़र जाए।”
26इस पर शागिर्द मज़ीद हैरतज़दा हुए और
एक दूसरे से कहने लगे, “फिर किस को नजात
मिल सकती है?”
27ईसा ने ग़ौर से उनकी तरफ़ देखकर जवाब
दिया, “यह इनसान के लिए तो नामुमकिन है,
लेकिन अल्लाह के लिए नहीं। उसके लिए सब
कुछ मुमकिन है।”
28फिर पतरस बोल उठा, “हम तो अपना सब
कुछ छोड़कर आपके पीछे हो लिए हैं।”
29ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुमको सच बताता
हूँ, जिसने भी मेरी और अल्लाह की ख़ुशख़बरी
की ख़ातिर अपने घर, भाइयों, बहनों, माँ, बाप,
बच्चों या खेतों को छोड़ दिया है 30उसे इस
ज़माने में ईज़ारसानी के साथ साथ सौ गुना
ज़्यादा घर, भाई, बहनें, माएँ, बच्चे और खेत
मिल जाएंगे। और आनेवाले ज़माने में उसे अबदी
ज़िंदगी मिलेगी। 31लेकिन बहुत-से लोग जो अब
अव्वल हैं उस वक़्त आख़िर होंगे और जो अब
आख़िर हैं वह अव्वल होंगे।”

ईसा तीसरी दफ़ा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

32अब वह यरूशलम की तरफ़ बढ़ रहे थे
और ईसा उनके आगे आगे चल रहा था। शागिर्द
हैरतज़दा थे जबकि उनके पीछे चलनेवाले लोग
सहमे हुए थे। एक और दफ़ा बारह शागिर्दों को

एक तरफ़ ले जाकर ईसा उन्हें वह कुछ बताने
लगा जो उसके साथ होने को था। 33उसने कहा,
“हम यरूशलम की तरफ़ बढ़ रहे हैं। वहाँ इब्ने-
आदम को राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा
के हवाले कर दिया जाएगा। वह उस पर सज़ाए-
मौत का फ़तवा देकर उसे ग़ैरयहूदियों के हवाले
कर देंगे, 34जो उसका मज़ाक़ उड़ाएँगे, उस पर
थूकेंगे, उसको कोड़े मारेंगे और उसे क़त्ल करेंगे।
लेकिन तीन दिन के बाद वह जी उठेगा।”

याक़ूब और यूहन्ना की गुज़ारिश

35फिर ज़बदी के बेटे याक़ूब और यूहन्ना उसके
पास आए। वह कहने लगे, “उस्ताद, आपसे एक
गुज़ारिश है।”
36उसने पूछा, “तुम क्या चाहते हो कि मैं
तुम्हारे लिए करूँ?”
37उन्होंने जवाब दिया, “जब आप अपने
जलाली तख़्त पर बैठेंगे तो हममें से एक को अपने
दाएँ हाथ बैठने दें और दूसरे को बाएँ हाथ।”
38ईसा ने कहा, “तुमको नहीं मालूम कि क्या
माँग रहे हो। क्या तुम वह प्याला पी सकते हो जो
मैं पीने को हूँ या वह बपतिस्मा ले सकते हो जो
मैं लेने को हूँ?”
39उन्होंने जवाब दिया, “जी, हम कर सकते
हैं।” फिर ईसा ने उनसे कहा, “तुम ज़रूर वह
प्याला पियोगे जो मैं पीने को हूँ और वह बपतिस्मा
लोगे जो मैं लेने को हूँ। 40लेकिन यह फ़ैसला
करना मेरा काम नहीं कि कौन मेरे दाएँ हाथ बैठेगा
और कौन बाएँ हाथ। अल्लाह ने यह मक़ाम सिर्फ़
उन्हीं के लिए तैयार किया है जिनको उसने ख़ुद
मुक़र्रर किया है।”
41जब बाक़ी दस शागिर्दों ने यह सुना तो उन्हें
याक़ूब और यूहन्ना पर ग़ुस्सा आया। 42इस पर
ईसा ने उन सबको बुलाकर कहा, “तुम जानते
हो कि क़ौमों के हुक्मरान अपनी रिआया पर रोब
डालते हैं, और उनके बड़े अफ़सर उन पर अपने
इख़्तियार का ग़लत इस्तेमाल करते हैं। 43लेकिन
तुम्हारे दरमियान ऐसा नहीं है। जो तुममें बड़ा
होना चाहे वह तुम्हारा ख़ादिम बने 44और जो
तुममें अव्वल होना चाहे वह सबका ग़ुलाम बने।
45क्योंकि इब्ने-आदम भी इसलिए नहीं आया कि
ख़िदमत ले बल्कि इसलिए कि ख़िदमत करे और
अपनी जान फ़िद्या के तौर पर देकर बहुतों को
छुड़ाए।”

अंधे बरतिमाई की शफ़ा

46वह यरीहू पहुँच गए। उसमें से गुज़रकर
ईसा शागिर्दों और एक बड़े हुजूम के साथ बाहर
निकलने लगा। वहाँ एक अंधा भीक माँगनेवाला
रास्ते के किनारे बैठा था। उसका नाम बरतिमाई
(तिमाई का बेटा) था। 47जब उसने सुना कि ईसा
नासरी क़रीब ही है तो वह चिल्लाने लगा, “ईसा
इब्ने-दाऊद, मुझ पर रहम करें!”
48बहुत-से लोगों ने उसे डाँटकर कहा,
“ख़ामोश!” लेकिन वह मज़ीद ऊँची आवाज़ से
पुकारता रहा, “इब्ने-दाऊद, मुझ पर रहम करें!”
49ईसा रुककर बोला, “उसे बुलाओ।”
चुनाँचे उन्होंने उसे बुलाकर कहा, “हौसला
रख। उठ, वह तुझे बुला रहा है।”
50बरतिमाई ने अपनी चादर ज़मीन पर फेंक दी
और उछलकर ईसा के पास आया।
51ईसा ने पूछा, “तू क्या चाहता है कि मैं तेरे
लिए करूँ?”
उसने जवाब दिया, “उस्ताद, यह कि मैं देख
सकूँ।”
52ईसा ने कहा, “जा, तेरे ईमान ने तुझे बचा
लिया है।”
ज्योंही ईसा ने यह कहा अंधे की आँखें बहाल
हो गईं और वह ईसा के पीछे चलने लगा।

यरूशलम में ईसा का पुरजोश इस्तक़बाल

11 वह यरूशलम के क़रीब बैत-फ़गे और
बैत-अनियाह पहुँचने लगे। यह गाँव
ज़ैतून के पहाड़ पर वाक़े थे। ईसा ने अपने शागिर्दों
में से दो को भेजा 2और कहा, “सामनेवाले गाँव
में जाओ। वहाँ तुम एक जवान गधा देखोगे। वह

बँधा हुआ होगा और अब तक कोई भी उस पर
सवार नहीं हुआ है। उसे खोलकर यहाँ ले आओ।
3अगर कोई पूछे कि यह क्या कर रहे हो तो उसे
बता देना, 'ख़ुदावंद को इसकी ज़रूरत है। वह
जल्द ही इसे वापस भेज देंगे'।"

4दोनों शागिर्द वहाँ गए तो एक जवान गधा
देखा जो बाहर गली में किसी दरवाज़े के साथ
बँधा हुआ था। जब वह उस की रस्सी खोलने लगे
5तो वहाँ खड़े कुछ लोगों ने पूछा, "तुम यह क्या
कर रहे हो? जवान गधे को क्यों खोल रहे हो?"

6उन्होंने जवाब में वह कुछ बता दिया जो ईसा ने
उन्हें कहा था। इस पर लोगों ने उन्हें खोलने दिया।
7वह जवान गधे को ईसा के पास ले आए और
अपने कपड़े उस पर रख दिए। फिर ईसा उस पर
सवार हुआ। 8जब वह चल पड़ा तो बहुत-से लोगों
ने उसके आगे आगे रास्ते में अपने कपड़े बिछा
दिए। बाज़ ने हरी शाख़ें भी उसके आगे बिछा दीं
जो उन्होंने खेतों के दरख़्तों से काट ली थीं। 9लोग
ईसा के आगे और पीछे चल रहे थे और चिल्ला
चिल्लाकर नारे लगा रहे थे,

"होशाना![a]
मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है।
10मुबारक है हमारे बाप दाऊद की
बादशाही जो आ रही है।
आसमान की बुलंदियों पर होशाना।"

11यों ईसा यरूशलम में दाख़िल हुआ। वह
बैतुल-मुक़द्दस में गया और अपने इर्दगिर्द नज़र
दौड़ाकर सब कुछ देखने के बाद चला गया। चूँकि
शाम का पिछला वक़्त था इसलिए वह बारह
शागिर्दों समेत शहर से निकलकर बैत-अनियाह
वापस गया।

अंजीर के दरख़्त पर लानत

12अगले दिन जब वह बैत-अनियाह से निकल
रहे थे तो ईसा को भूक लगी। 13उसने कुछ
फ़ासले पर अंजीर का एक दरख़्त देखा जिस पर
पत्ते थे। इसलिए वह यह देखने के लिए उसके
पास गया कि आया कोई फल लगा है या नहीं।
लेकिन जब वह वहाँ पहुँचा तो देखा कि पत्ते ही
पत्ते हैं। वजह यह थी कि अंजीर का मौसम नहीं
था। 14इस पर ईसा ने दरख़्त से कहा, "अब
से हमेशा तक तुझसे फल खाया न जा सके!"
उसके शागिर्दों ने उस की यह बात सुन ली।

ईसा बैतुल-मुक़द्दस में जाता है

15वह यरूशलम पहुँच गए। और ईसा बैतुल-
मुक़द्दस में जाकर उन्हें निकालने लगा जो वहाँ
क़ुरबानियों के लिए दरकार चीज़ों की ख़रीदो-
फ़रोख़्त कर रहे थे। उसने सिक्कों का तबादला
करनेवालों की मेज़ें और कबूतर बेचनेवालों की
कुरसियाँ उलट दीं 16और जो तिजारती माल
लेकर बैतुल-मुक़द्दस के सहनों में से गुज़र रहे
थे उन्हें रोक लिया। 17तालीम देकर उसने कहा,
"क्या कलामे-मुक़द्दस में नहीं लिखा है, 'मेरा घर
तमाम क़ौमों के लिए दुआ का घर कहलाएगा'?
लेकिन तुमने उसे डाकुओं के अड्डे में बदल दिया
है।"

18राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा ने
जब यह सुना तो उसे क़त्ल करने का मौक़ा ढूँडने
लगे। क्योंकि वह उससे डरते थे इसलिए कि पूरा
हुजूम उस की तालीम से निहायत हैरान था।

19जब शाम हुई तो ईसा और उसके शागिर्द
शहर से निकल गए।

अंजीर के दरख़्त से सबक़

20अगले दिन वह सुबह-सवेरे अंजीर के उस
दरख़्त के पास से गुज़रे जिस पर ईसा ने लानत
भेजी थी। जब उन्होंने उस पर ग़ौर किया तो मालूम
हुआ कि वह जड़ों तक सूख गया है। 21तब पतरस
को वह बात याद आई जो ईसा ने कल अंजीर के
दरख़्त से की थी। उसने कहा, "उस्ताद, यह देखें!

[a]होशाना (इबरानी : मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ
इसमें हम्दो-सना का उनसुर भी पाया जाता है।

अंजीर के जिस दरख़्त पर आपने लानत भेजी थी
वह सूख गया है।”
22ईसा ने जवाब दिया, “अल्लाह पर ईमान
रखो। 23मैं तुमको सच बताता हूँ कि अगर कोई
इस पहाड़ से कहे, ‘उठ, अपने आपको समुंदर
में गिरा दे’ तो यह हो जाएगा। शर्त सिर्फ़ यह
है कि वह शक न करे बल्कि ईमान रखे कि जो
कुछ उसने कहा है वह उसके लिए हो जाएगा।
24इसलिए मैं तुमको बताता हूँ, जब भी तुम दुआ
करके कुछ माँगते हो तो ईमान रखो कि तुमको
मिल गया है। फिर वह तुम्हें ज़रूर मिल जाएगा।
25और जब तुम खड़े होकर दुआ करते हो तो
अगर तुम्हें किसी से शिकायत हो तो पहले उसे
मुआफ़ करो ताकि आसमान पर तुम्हारा बाप भी
तुम्हारे गुनाहों को मुआफ़ करे। 26[और अगर तुम
मुआफ़ न करो तो तुम्हारा आसमानी बाप तुम्हारे
गुनाह भी मुआफ़ नहीं करेगा।]”

किसने ईसा को इख़्तियार दिया?

27वह एक और दफ़ा यरूशलम पहुँच गए।
और जब ईसा बैतुल-मुक़द्दस में फिर रहा था तो
राहनुमा इमाम, शरीअत के उलमा और बुज़ुर्ग
उसके पास आए। 28उन्होंने पूछा, “आप यह
सब कुछ किस इख़्तियार से कर रहे हैं? किसने
आपको यह करने का इख़्तियार दिया है?”
29ईसा ने जवाब दिया, “मेरा भी तुमसे एक
सवाल है। इसका जवाब दो तो फिर तुमको
बता दूँगा कि मैं यह किस इख़्तियार से कर रहा
हूँ। 30मुझे बताओ, क्या यहया का बपतिस्मा
आसमानी था या इनसानी?”
31वह आपस में बहस करने लगे, “अगर हम
कहें ‘आसमानी’ तो वह पूछेगा, ‘तो फिर तुम उस
पर ईमान क्यों न लाए?’ 32लेकिन हम कैसे कह
सकते हैं कि वह इनसानी था?” वजह यह थी कि
वह आम लोगों से डरते थे, क्योंकि सब मानते थे
कि यहया वाक़ई नबी था। 33चुनाँचे उन्होंने जवाब
दिया, “हम नहीं जानते।”
ईसा ने कहा, “तो फिर मैं भी तुमको नहीं
बताता कि मैं यह सब कुछ किस इख़्तियार से
कर रहा हूँ।”

अंगूर के बाग़ के मुज़ारेओं की बग़ावत

12 फिर वह तमसीलों में उनसे बात करने
लगा। “किसी आदमी ने अंगूर का
एक बाग़ लगाया। उसने उस की चारदीवारी
बनाई, अंगूरों का रस निकालने के लिए एक
गढ़े की खुदाई की और पहरेदारों के लिए बुर्ज
तामीर किया। फिर वह उसे मुज़ारेओं के सुपुर्द
करके बैरूने-मुल्क चला गया। 2जब अंगूर पक
गए तो उसने अपने नौकर को मुज़ारेओं के पास
भेज दिया ताकि वह उनसे मालिक का हिस्सा
वसूल करे। 3लेकिन मुज़ारेओं ने उसे पकड़कर
उस की पिटाई की और उसे ख़ाली हाथ लौटा
दिया। 4फिर मालिक ने एक और नौकर को भेज
दिया। लेकिन उन्होंने उस की भी बेइज़्ज़ती करके
उसका सर फोड़ दिया। 5जब मालिक ने तीसरे
नौकर को भेजा तो उन्होंने उसे मार डाला। यों
उसने कई एक को भेजा। बाज़ को उन्होंने मारा-
पीटा, बाज़ को क़त्ल किया। 6आख़िरकार सिर्फ़
एक बाक़ी रह गया था। वह था उसका प्यारा बेटा।
अब उसने उसे भेजकर कहा, ‘आख़िर मेरे बेटे का
तो लिहाज़ करेंगे।’ 7लेकिन मुज़ारे एक दूसरे से
कहने लगे, ‘यह ज़मीन का वारिस है। आओ हम
इसे मार डालें तो फिर इसकी मीरास हमारी ही
होगी।’ 8उन्होंने उसे पकड़कर क़त्ल किया और
बाग़ से बाहर फेंक दिया।
9अब बताओ, बाग़ का मालिक क्या करेगा?
वह जाकर मुज़ारेओं को हलाक करेगा और बाग़
को दूसरों के सुपुर्द कर देगा। 10क्या तुमने
कलामे-मुक़द्दस का यह हवाला नहीं पढ़ा,

‘जिस पत्थर को मकान बनानेवालों ने
रद्द किया
वह कोने का बुनियादी पत्थर बन गया।
11यह रब ने किया
और देखने में कितना हैरतअंगेज़ है’।”

12इस पर दीनी राहनुमाओं ने ईसा को
गिरिफ़्तार करने की कोशिश की, क्योंकि वह
समझ गए थे कि तमसील में बयानशुदा मुज़ारे
हम ही हैं। लेकिन वह हुजूम से डरते थे, इसलिए
वह उसे छोड़कर चले गए।

क्या टैक्स देना जायज़ है?

13बाद में उन्होंने कुछ फ़रीसियों और हेरोदेस
के पैरोकारों को उसके पास भेज दिया ताकि वह
उसे कोई ऐसी बात करने पर उभारें जिससे उसे
पकड़ा जा सके। 14वह उसके पास आकर कहने
लगे, "उस्ताद, हम जानते हैं कि आप सच्चे हैं
और किसी की परवा नहीं करते। आप जानिबदार
नहीं होते बल्कि दियानतदारी से अल्लाह की राह
की तालीम देते हैं। अब हमें बताएँ कि क्या रोमी
शहनशाह को टैक्स देना जायज़ है या नाजायज़?
क्या हम अदा करें या न करें?"

15लेकिन ईसा ने उनकी रियाकारी जान-
कर उनसे कहा, "मुझे क्यों फँसाना चाहते हो?
चाँदी का एक रोमी सिक्का मेरे पास ले आओ।"

16वह एक सिक्का उसके पास ले आए तो
उसने पूछा, "किसकी सूरत और नाम इस पर
कंदा है?" उन्होंने जवाब दिया, "शहनशाह का।"

17उसने कहा, "तो जो शहनशाह का है
शहनशाह को दो और जो अल्लाह का है अल्लाह
को।"

उसका यह जवाब सुनकर उन्होंने बड़ा ताज्जुब
किया।

क्या हम जी उठेंगे?

18फिर कुछ सदूक़ी ईसा के पास आए। सदूक़ी
नहीं मानते कि रोज़े-क़ियामत मुरदे जी उठेंगे।
उन्होंने ईसा से एक सवाल किया, 19"उस्ताद,
मूसा ने हमें हुक्म दिया कि अगर कोई शादीशुदा
आदमी बेऔलाद मर जाए और उसका भाई हो
तो भाई का फ़र्ज़ है कि वह बेवा से शादी करके
अपने भाई के लिए औलाद पैदा करे। 20अब
फ़र्ज़ करें कि सात भाई थे। पहले ने शादी की,
लेकिन बेऔलाद फ़ौत हुआ। 21इस पर दूसरे ने
उससे शादी की, लेकिन वह भी बेऔलाद मर
गया। फिर तीसरे भाई ने उससे शादी की। 22यह
सिलसिला सातवें भाई तक जारी रहा। यके बाद
दीगरे हर भाई बेवा से शादी करने के बाद मर गया।
आख़िर में बेवा भी फ़ौत हो गई। 23अब बताएँ
कि क़ियामत के दिन वह किसकी बीवी होगी?
क्योंकि सात के सात भाइयों ने उससे शादी की
थी।"

24ईसा ने जवाब दिया, "तुम इसलिए ग़लती
पर हो कि न तुम कलामे-मुक़द्दस से वाक़िफ़ हो,
न अल्लाह की क़ुदरत से। 25क्योंकि जब मुरदे
जी उठेंगे तो न वह शादी करेंगे न उनकी शादी
कराई जाएगी बल्कि वह आसमान पर फ़रिश्तों
की मानिंद होंगे। 26रही यह बात कि मुरदे जी
उठेंगे। क्या तुमने मूसा की किताब में नहीं पढ़ा कि
अल्लाह जलती हुई झाड़ी में से किस तरह मूसा
से हमकलाम हुआ? उसने फ़रमाया, 'मैं इब्राहीम
का ख़ुदा, इसहाक़ का ख़ुदा और याक़ूब का ख़ुदा
हूँ,' हालाँकि उस वक़्त तीनों काफ़ी अरसे से मर
चुके थे। 27इसका मतलब है कि यह हक़ीक़त में
ज़िंदा हैं, क्योंकि अल्लाह मुरदों का नहीं, बल्कि
ज़िंदों का ख़ुदा है। तुमसे बड़ी ग़लती हुई है।"

अव्वल हुक्म

28इतने में शरीअत का एक आलिम उनके
पास आया। उसने उन्हें बहस करते हुए सुना था
और जान लिया कि ईसा ने अच्छा जवाब दिया,
इसलिए उसने पूछा, "तमाम अहकाम में से कौन-
सा हुक्म सबसे अहम है?"

29ईसा ने जवाब दिया, "अव्वल हुक्म यह है :
'सुन ऐ इसराईल! रब हमारा ख़ुदा एक ही रब
है। 30रब अपने ख़ुदा से अपने पूरे दिल, अपनी
पूरी जान, अपने पूरे ज़हन और अपनी पूरी ताक़त
से प्यार करना।' 31दूसरा हुक्म यह है : 'अपने
पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने
आपसे रखता है।' दीगर कोई भी हुक्म इन दो
अहकाम से अहम नहीं है।"

32उस आलिम ने कहा, “शाबाश, उस्ताद!
आपने सच कहा है कि अल्लाह सिर्फ़ एक ही
है और उसके सिवा कोई और नहीं है। 33हमें
उसे अपने पूरे दिल, अपने पूरे ज़हन और अपनी
पूरी ताक़त से प्यार करना चाहिए और साथ साथ
अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखनी चाहिए जैसी
अपने आपसे रखते हैं। यह दो अहकाम भस्म
होनेवाली तमाम क़ुरबानियों और दीगर नज़रों से
ज़्यादा अहमियत रखते हैं।”
34जब ईसा ने उसका यह जवाब सुना तो उससे
कहा, “तू अल्लाह की बादशाही से दूर नहीं है।”
इसके बाद किसी ने भी उससे सवाल पूछने की
जुर्रत न की।

मसीह के बारे में सवाल

35जब ईसा बैतुल-मुक़द्दस में तालीम दे रहा
था तो उसने पूछा, “शरीअत के उलमा क्यों
दावा करते हैं कि मसीह दाऊद का फ़रज़ंद है?
36क्योंकि दाऊद ने तो ख़ुद रूहुल-क़ुद्स की
मारिफ़त यह फ़रमाया,

‘रब ने मेरे रब से कहा,
मेरे दहने हाथ बैठ,
जब तक मैं तेरे दुश्मनों को
तेरे पाँवों के नीचे न कर दूँ।’

37दाऊद तो ख़ुद मसीह को रब कहता है। तो
फिर वह किस तरह दाऊद का फ़रज़ंद हो सकता
है?”

शरीअत के उलमा से ख़बरदार रहना

एक बड़ा हुजूम मज़े से ईसा की बातें सुन
रहा था। 38उन्हें तालीम देते वक़्त उसने कहा,
“उलमा से ख़बरदार रहो! क्योंकि वह शानदार
चोग़े पहनकर इधर-उधर फिरना पसंद करते हैं।
जब लोग बाज़ारों में सलाम करके उनकी इज़्ज़त
करते हैं तो फिर वह ख़ुश हो जाते हैं। 39उनकी
बस एक ही ख़ाहिश होती है कि इबादतख़ानों
और ज़ियाफ़तों में इज़्ज़त की कुरसियों पर बैठ
जाएँ। 40यह लोग बेवाओं के घर हड़प कर जाते
और साथ साथ दिखावे के लिए लंबी लंबी दुआएँ
माँगते हैं। ऐसे लोगों को निहायत सख़्त सज़ा
मिलेगी।”

बेवा का चंदा

41ईसा बैतुल-मुक़द्दस के चंदे के बक्स के
मुक़ाबिल बैठ गया और हुजूम को हदिये डालते
हुए देखने लगा। कई अमीर बड़ी बड़ी रक़में डाल
रहे थे। 42फिर एक ग़रीब बेवा भी वहाँ से गुज़री
जिसने उसमें ताँबे के दो मामूली-से सिक्के डाल
दिए। 43ईसा ने शागिर्दों को अपने पास बुलाकर
कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि इस ग़रीब
बेवा ने तमाम लोगों की निसबत ज़्यादा डाला है।
44क्योंकि इन सबने अपनी दौलत की कसरत से
दे दिया जबकि उसने ज़रूरतमंद होने के बावुजूद
भी अपने गुज़ारे के सारे पैसे दे दिए हैं।”

बैतुल-मुक़द्दस पर आनेवाली तबाही

13 उस दिन जब ईसा बैतुल-मुक़द्दस से
निकल रहा था तो उसके शागिर्दों ने
कहा, “उस्ताद, देखें कितने शानदार पत्थर और
इमारतें हैं!”
2ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुमको यह बड़ी
बड़ी इमारतें नज़र आती हैं? पत्थर पर पत्थर नहीं
रहेगा। सब कुछ ढा दिया जाएगा।”

मुसीबतों और ईज़ारसानी की पेशगोई

3बाद में ईसा ज़ैतून के पहाड़ पर बैतुल-मुक़द्दस
के मुक़ाबिल बैठ गया। पतरस, याक़ूब, यूहन्ना
और अंदरियास अकेले उसके पास आए। उन्होंने
कहा, 4“हमें ज़रा बताएँ, यह कब होगा? क्या
क्या नज़र आएगा जिससे मालूम होगा कि यह
अब पूरा होने को है?”
5ईसा ने जवाब दिया, “ख़बरदार रहो कि कोई
तुम्हें गुमराह न कर दे। 6बहुत-से लोग मेरा नाम
लेकर आएँगे और कहेंगे, ‘मैं ही मसीह हूँ।’ यों वह
बहुतों को गुमराह कर देंगे। 7जब जंगों की ख़बरें
और अफ़वाहें तुम तक पहुँचेंगी तो मत घबराना।

क्योंकि लाज़िम है कि यह सब कुछ पेश आए। तो
भी अभी आख़िरत नहीं होगी। 8एक क़ौम दूसरी
के ख़िलाफ़ उठ खड़ी होगी और एक बादशाही
दूसरी के ख़िलाफ़। जगह जगह ज़लज़ले आएँगे,
काल पड़ेंगे। लेकिन यह सिर्फ़ दर्दे-ज़ह की इब्तिदा
ही होगी।

9तुम ख़ुद ख़बरदार रहो। तुमको मक़ामी
अदालतों के हवाले कर दिया जाएगा और लोग
यहूदी इबादतख़ानों में तुम्हें कोड़े लगवाएँगे। मेरी
ख़ातिर तुम्हें हुक्मरानों और बादशाहों के सामने
पेश किया जाएगा। यों तुम उन्हें मेरी गवाही दोगे।
10लाज़िम है कि आख़िरत से पहले अल्लाह
की ख़ुशख़बरी तमाम अक़वाम को सुनाई जाए।
11लेकिन जब लोग तुमको गिरिफ़्तार करके
अदालत में पेश करेंगे तो यह सोचते सोचते
परेशान न हो जाना कि मैं क्या कहूँ। बस वही
कुछ कहना जो अल्लाह तुम्हें उस वक़्त बताएगा।
क्योंकि उस वक़्त तुम नहीं बल्कि रूहुल-क़ुद्स
बोलनेवाला होगा। 12भाई अपने भाई को और
बाप अपने बच्चे को मौत के हवाले कर देगा। बच्चे
अपने वालिदैन के ख़िलाफ़ खड़े होकर उन्हें क़त्ल
करवाएँगे। 13सब तुमसे नफ़रत करेंगे, इसलिए
कि तुम मेरे पैरोकार हो। लेकिन जो आख़िर तक
क़ायम रहेगा उसे नजात मिलेगी।

बैतुल-मुक़द्दस की बेहुरमती

14एक दिन आएगा जब तुम वहाँ जहाँ उसे नहीं
होना चाहिए वह कुछ खड़ा देखोगे जो बेहुरमती
और तबाही का बाइस है।" (क़ारी इस पर ध्यान
दे!) "उस वक़्त यहूदिया के रहनेवाले भागकर
पहाड़ी इलाक़े में पनाह लें। 15जो अपने घर की
छत पर हो वह न उतरे, न कुछ साथ ले जाने के
लिए घर में दाख़िल हो जाए। 16जो खेत में हो
वह अपनी चादर साथ ले जाने के लिए वापस न
जाए। 17उन ख़वातीन पर अफ़सोस जो उन दिनों
में हामिला हों या अपने बच्चों को दूध पिलाती हों।
18दुआ करो कि यह वाक़िया सर्दियों के मौसम में
पेश न आए। 19क्योंकि उन दिनों में ऐसी मुसीबत
होगी कि दुनिया की तख़लीक़ से आज तक देखने
में न आई होगी। इस क़िस्म की मुसीबत बाद में
भी कभी नहीं आएगी। 20और अगर ख़ुदावंद इस
मुसीबत का दौरानिया मुख़तसर न करता तो कोई
न बचता। लेकिन उसने अपने चुने हुओं की ख़ातिर
उसका दौरानिया मुख़तसर कर दिया है।

21उस वक़्त अगर कोई तुमको बताए, 'देखो,
मसीह यहाँ है,' या 'वह वहाँ है' तो उस की
बात न मानना। 22क्योंकि झूटे मसीह और झूटे
नबी उठ खड़े होंगे जो अजीबो-ग़रीब निशान और
मोजिज़े दिखाएँगे ताकि अल्लाह के चुने हुए लोगों
को ग़लत रास्ते पर डाल दें—अगर यह मुमकिन
होता। 23इसलिए ख़बरदार! मैंने तुमको पहले ही
इन सब बातों से आगाह कर दिया है।

इब्ने-आदम की आमद

24मुसीबत के उन दिनों के बाद सूरज तारीक
हो जाएगा और चाँद की रौशनी ख़त्म हो
जाएगी। 25सितारे आसमान पर से गिर पड़ेंगे और
आसमान की क़ुव्वतें हिलाई जाएँगी। 26उस वक़्त
लोग इब्ने-आदम को बड़ी क़ुदरत और जलाल के
साथ बादलों में आते हुए देखेंगे। 27और वह अपने
फ़रिश्तों को भेज देगा ताकि उसके चुने हुओं को
चारों तरफ़ से जमा करें, दुनिया के कोने कोने से
आसमान की इंतहा तक इकट्ठा करें।

अंजीर के दरख़्त से सबक़

28अंजीर के दरख़्त से सबक़ सीखो। ज्योंही
उस की शाख़ें नरम और लचकदार हो जाती हैं
और उनसे कोंपलें फूट निकलती हैं तो तुमको
मालूम हो जाता है कि गरमियों का मौसम क़रीब
आ गया है। 29इसी तरह जब तुम यह वाक़ियात
देखोगे तो जान लोगे कि इब्ने-आदम की आमद
क़रीब बल्कि दरवाज़े पर है। 30मैं तुमको सच
बताता हूँ, इस नसल के ख़त्म होने से पहले पहले
यह सब कुछ वाक़े होगा। 31आसमानो-ज़मीन तो
जाते रहेंगे, लेकिन मेरी बातें हमेशा तक क़ायम
रहेंगी।

किसी को भी उस की आमद का वक़्त मालूम नहीं

32लेकिन किसी को भी इल्म नहीं कि यह किस
दिन या कौन-सी घड़ी रूनुमा होगा। आसमान
के फ़रिश्तों और फ़रज़ंद को भी इल्म नहीं
बल्कि सिर्फ़ बाप को। 33चुनाँचे ख़बरदार और
चौकन्ने रहो! क्योंकि तुमको नहीं मालूम कि
यह वक़्त कब आएगा। 34इब्ने-आदम की आमद
उस आदमी से मुताबिक़त रखती है जिसे किसी
सफ़र पर जाना था। घर छोड़ते वक़्त उसने अपने
नौकरों को इंतज़ाम चलाने का इख़्तियार देकर
हर एक को उस की अपनी ज़िम्मेदारी सौंप दी।
दरबान को उसने हुक्म दिया कि वह चौकस रहे।
35तुम भी इसी तरह चौकस रहो, क्योंकि तुम नहीं
जानते कि घर का मालिक कब वापस आएगा,
शाम को, आधी रात को, मुरग़ के बाँग देते या
पौ फटते वक़्त। 36ऐसा न हो कि वह अचानक
आकर तुमको सोते पाए। 37यह बात मैं न सिर्फ़
तुमको बल्कि सबको बताता हूँ, चौकस रहो!”

ईसा के ख़िलाफ़ मनसूबाबंदियाँ

14 फ़सह और बेख़मीरी रोटी की ईद
क़रीब आ गई थी। सिर्फ़ दो दिन रह
गए थे। राहनुमा इमाम और शरीअत के उलमा
ईसा को किसी चालाकी से गिरिफ़्तार करके
क़त्ल करने की तलाश में थे। 2उन्होंने कहा,
“लेकिन यह ईद के दौरान नहीं होना चाहिए, ऐसा
न हो कि अवाम में हलचल मच जाए।”

ख़ातून ईसा पर ख़ुशबू उंडेलती है

3इतने में ईसा बैत-अनियाह आकर एक
आदमी के घर में दाख़िल हुआ जो किसी वक़्त
कोढ़ का मरीज़ था। उसका नाम शमाऊन था।
ईसा खाना खाने के लिए बैठ गया तो एक औरत
आई। उसके पास ख़ालिस जटामासी के निहायत
क़ीमती इत्र का इत्रदान था। उसका सर तोड़कर
उसने इत्र ईसा के सर पर उंडेल दिया। 4हाज़िरीन
में से कुछ नाराज़ हुए। “इतना क़ीमती इत्र ज़ाया
करने की क्या ज़रूरत थी? 5इसकी क़ीमत
कम अज़ कम चाँदी के 300 सिक्के थी। अगर
इसे बेचा जाता तो इसके पैसे ग़रीबों को दिए
जा सकते थे।” ऐसी बातें करते हुए उन्होंने उसे
झिड़का।

6लेकिन ईसा ने कहा, “इसे छोड़ दो, तुम इसे
क्यों तंग कर रहे हो? इसने तो मेरे लिए एक
नेक काम किया है। 7ग़रीब तो हमेशा तुम्हारे पास
रहेंगे, और तुम जब भी चाहो उनकी मदद कर
सकोगे। लेकिन मैं हमेशा तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा।
8जो कुछ वह कर सकती थी उसने किया है। मुझ
पर इत्र उंडेलने से वह मुक़र्ररा वक़्त से पहले मेरे
बदन को दफ़नाने के लिए तैयार कर चुकी है।
9मैं तुमको सच बताता हूँ कि तमाम दुनिया में
जहाँ भी अल्लाह की ख़ुशख़बरी का एलान किया
जाएगा वहाँ लोग इस ख़ातून को याद करके वह
कुछ सुनाएँगे जो इसने किया है।”

ईसा को दुश्मन के हवाले करने का मनसूबा

10फिर यहूदाह इस्करियोती जो बारह शागिर्दों
में से एक था राहनुमा इमामों के पास गया
ताकि ईसा को उनके हवाले करने की बात करे।
11उसके आने का मक़सद सुनकर वह ख़ुश हुए
और उसे पैसे देने का वादा किया। चुनाँचे वह ईसा
को उनके हवाले करने का मौक़ा ढूँडने लगा।

फ़सह की ईद के लिए तैयारियाँ

12बेख़मीरी रोटी की ईद आई जब लोग फ़सह
के लेले को क़ुरबान करते थे। ईसा के शागिर्दों ने
उससे पूछा, “हम कहाँ आपके लिए फ़सह का
खाना तैयार करें?”

13चुनाँचे ईसा ने उनमें से दो को यह हिदायत
देकर यरूशलम भेज दिया कि “जब तुम शहर
में दाख़िल होगे तो तुम्हारी मुलाक़ात एक आदमी
से होगी जो पानी का घड़ा उठाए चल रहा होगा।
उसके पीछे हो लेना। 14जिस घर में वह दाख़िल
हो उसके मालिक से कहना, ‘उस्ताद आपसे
पूछते हैं कि वह कमरा कहाँ है जहाँ मैं अपने

शागिर्दों के साथ फ़सह का खाना खाऊँ?’ 15वह
तुम्हें दूसरी मनज़िल पर एक बड़ा और सजा हुआ
कमरा दिखाएगा। वह तैयार होगा। हमारे लिए
फ़सह का खाना वहीं तैयार करना।”
16दोनों चले गए तो शहर में दाख़िल होकर सब
कुछ वैसा ही पाया जैसा ईसा ने उन्हें बताया था।
फिर उन्होंने फ़सह का खाना तैयार किया।

ग़द्दार कौन है?

17शाम के वक़्त ईसा बारह शागिर्दों समेत वहाँ
पहुँच गया। 18जब वह मेज़ पर बैठे खाना खा रहे
थे तो उसने कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ, तुममें
से एक जो मेरे साथ खाना खा रहा है मुझे दुश्मन
के हवाले कर देगा।”
19शागिर्द यह सुनकर ग़मगीन हुए। बारी बारी
उन्होंने उससे पूछा, “मैं तो नहीं हूँ?”
20ईसा ने जवाब दिया, “तुम बारह में से एक
है। वह मेरे साथ अपनी रोटी सालन के बरतन में
डाल रहा है। 21इब्ने-आदम तो कूच कर जाएगा
जिस तरह कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, लेकिन
उस शख़्स पर अफ़सोस जिसके वसीले से उसे
दुश्मन के हवाले कर दिया जाएगा। उसके लिए
बेहतर यह होता कि वह कभी पैदा ही न होता।”

फ़सह का आख़िरी खाना

22खाने के दौरान ईसा ने रोटी लेकर
शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उसे टुकड़े करके
शागिर्दों को दे दिया। उसने कहा, “यह लो, यह
मेरा बदन है।”
23फिर उसने मै का प्याला लेकर शुक्र-
गुज़ारी की दुआ की और उसे उन्हें दे दिया। सबने
उसमें से पी लिया। 24उसने उनसे कहा, “यह
मेरा ख़ून है, नए अहद का वह ख़ून जो बहुतों के
लिए बहाया जाता है। 25मैं तुमको सच बताता
हूँ कि अब से मैं अंगूर का रस नहीं पियूँगा,
क्योंकि अगली दफ़ा इसे नए सिरे से अल्लाह की
बादशाही में ही पियूँगा।”
26फिर वह एक ज़बूर गाकर निकले और ज़ैतून
के पहाड़ के पास पहुँचे।

पतरस के इनकार की पेशगोई

27ईसा ने उन्हें बताया, “तुम सब बरगश्ता
हो जाओगे, क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में अल्लाह
फ़रमाता है, ‘मैं चरवाहे को मार डालूँगा और
भेड़ें तित्तर-बित्तर हो जाएँगी।’ 28लेकिन अपने
जी उठने के बाद मैं तुम्हारे आगे आगे गलील
पहुँचूँगा।”
29पतरस ने एतराज़ किया, “दूसरे बेशक सब
बरगश्ता हो जाएँ, लेकिन मैं कभी नहीं हूँगा।”
30ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुझे सच बताता हूँ,
इसी रात मुरग़ के दूसरी दफ़ा बाँग देने से पहले
पहले तू तीन बार मुझे जानने से इनकार कर चुका
होगा।”
31पतरस ने इसरार किया, “हरगिज़ नहीं! मैं
आपको जानने से कभी इनकार नहीं करूँगा, चाहे
मुझे आपके साथ मरना भी पड़े।”
दूसरों ने भी यही कुछ कहा।

गत्समनी बाग़ में ईसा की दुआ

32वह एक बाग़ में पहुँचे जिसका नाम गत्समनी
था। ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, “यहाँ बैठकर
मेरा इंतज़ार करो। मैं दुआ करने के लिए आगे
जाता हूँ।” 33उसने पतरस, याक़ूब और यूहन्ना
को साथ लिया। वहाँ वह घबराकर बेक़रार होने
लगा। 34उसने उनसे कहा, “मैं दुख से इतना
दबा हुआ हूँ कि मरने को हूँ। यहाँ ठहरकर जागते
रहो।”
35कुछ आगे जाकर वह ज़मीन पर गिर गया
और दुआ करने लगा कि अगर मुमकिन हो तो
मुझे आनेवाली घड़ियों की तकलीफ़ से गुज़रना न
पड़े। 36उसने कहा, “ऐ अब्बा, ऐ बाप! तेरे लिए
सब कुछ मुमकिन है। दुख का यह प्याला मुझसे
हटा ले। लेकिन मेरी नहीं बल्कि तेरी मरज़ी पूरी
हो।”

37वह अपने शागिर्दों के पास वापस आया तो
देखा कि वह सो रहे हैं। उसने पतरस से कहा,
"शमाऊन, क्या तू सो रहा है? क्या तू एक घंटा
भी नहीं जाग सका? 38जागते और दुआ करते
रहो ताकि तुम आज़माइश में न पड़ो। क्योंकि रूह
तो तैयार है, लेकिन जिस्म कमज़ोर।"
39एक बार फिर उसने जाकर वही दुआ की
जो पहले की थी। 40जब वापस आया तो दुबारा
देखा कि वह सो रहे हैं, क्योंकि नींद की बदौलत
उनकी आँखें बोझल थीं। वह नहीं जानते थे कि
क्या जवाब दें।
41जब ईसा तीसरी बार वापस आया तो उसने
उनसे कहा, "तुम अभी तक सो और आराम कर
रहे हो? बस काफ़ी है। वक़्त आ गया है। देखो,
इब्ने-आदम को गुनाहगारों के हवाले किया जा
रहा है। 42उठो। आओ, चलें। देखो, मुझे दुश्मन
के हवाले करनेवाला क़रीब आ चुका है।"

ईसा की गिरिफ़्तारी

43वह अभी यह बात कर ही रहा था कि यहूदाह
पहुँच गया, जो बारह शागिर्दों में से एक था। उसके
साथ तलवारों और लाठियों से लैस आदमियों का
हुजूम था। उन्हें राहनुमा इमामों, शरीअत के उलमा
और बुज़ुर्गों ने भेजा था। 44इस ग़द्दार यहूदाह ने
उन्हें एक इम्तियाज़ी निशान दिया था कि जिसको
मैं बोसा दूँ वही ईसा है। उसे गिरिफ़्तार करके ले
जाएँ।
45ज्योंही वह पहुँचे यहूदाह ईसा के पास गया
और "उस्ताद!" कहकर उसे बोसा दिया। 46इस
पर उन्होंने उसे पकड़कर गिरिफ़्तार कर लिया।
47लेकिन ईसा के पास खड़े एक शख़्स ने अपनी
तलवार मियान से निकाली और इमामे-आज़म
के ग़ुलाम को मारकर उसका कान उड़ा दिया।
48ईसा ने उनसे पूछा, "क्या मैं डाकू हूँ कि तुम
तलवारें और लाठियाँ लिए मुझे गिरिफ़्तार करने
निकले हो? 49मैं तो रोज़ाना बैतुल-मुक़द्दस में
तुम्हारे पास था और तालीम देता रहा, मगर तुमने
मुझे गिरिफ़्तार नहीं किया। लेकिन यह इसलिए
हो रहा है ताकि कलामे-मुक़द्दस की बातें पूरी हो
जाएँ।"
50फिर सबके सब उसे छोड़कर भाग गए।
51लेकिन एक नौजवान ईसा के पीछे पीछे
चलता रहा जो सिर्फ़ चादर ओढ़े हुए था। लोगों
ने उसे पकड़ने की कोशिश की, 52लेकिन वह
चादर छोड़कर नंगी हालत में भाग गया।

यहूदी अदालते-आलिया के सामने

53वह ईसा को इमामे-आज़म के पास ले गए
जहाँ तमाम राहनुमा इमाम, बुज़ुर्ग और शरीअत
के उलमा भी जमा थे। 54इतने में पतरस कुछ
फ़ासले पर ईसा के पीछे पीछे इमामे-आज़म के
सहन तक पहुँच गया। वहाँ वह मुलाज़िमों के
साथ बैठकर आग तापने लगा। 55मकान के अंदर
राहनुमा इमाम और यहूदी अदालते-आलिया के
तमाम अफ़राद ईसा के ख़िलाफ़ गवाहियाँ ढूँड रहे
थे ताकि उसे सज़ाए-मौत दिलवा सकें। लेकिन
कोई गवाही न मिली। 56काफ़ी लोगों ने उसके
ख़िलाफ़ झूटी गवाही तो दी, लेकिन उनके बयान
एक दूसरे के मुतज़ाद थे।
57आख़िरकार बाज़ ने खड़े होकर यह झूटी
गवाही दी, 58"हमने इसे यह कहते सुना है
कि मैं इनसान के हाथों के बने इस बैतुल-
मुक़द्दस को ढाकर तीन दिन के अंदर अंदर नया
मक़दिस तामीर कर दूँगा, एक ऐसा मक़दिस जो
इनसान के हाथ नहीं बनाएँगे।" 59लेकिन उनकी
गवाहियाँ भी एक दूसरी से मुतज़ाद थीं।
60फिर इमामे-आज़म ने हाज़िरीन के सामने
खड़े होकर ईसा से पूछा, "क्या तू कोई जवाब
नहीं देगा? यह क्या गवाहियाँ हैं जो यह लोग तेरे
ख़िलाफ़ दे रहे हैं?"
61लेकिन ईसा ख़ामोश रहा। उसने कोई जवाब
न दिया। इमामे-आज़म ने उससे एक और सवाल
किया, "क्या तू अल-हमीद का फ़रज़ंद मसीह
है?"

62ईसा ने कहा, “जी, मैं हूँ। और आइंदा तुम
इब्ने-आदम को क़ादिरे-मुतलक़ के दहने हाथ बैठे
और आसमान के बादलों पर आते हुए देखोगे।”
63इमामे-आज़म ने रंजिश का इज़हार करके
अपने कपड़े फाड़ लिए और कहा, “हमें मज़ीद
गवाहों की क्या ज़रूरत रही! 64आपने ख़ुद सुन
लिया है कि इसने कुफ़्र बका है। आपका क्या
फ़ैसला है?”
सबने उसे सज़ाए-मौत के लायक़ क़रार दिया।
65फिर कुछ उस पर थूकने लगे। उन्होंने उस की
आँखों पर पट्टी बाँधी और उसे मुक्के मार मारकर
कहने लगे, “नबुव्वत कर!” मुलाज़िमों ने भी उसे
थप्पड़ मारे।

पतरस ईसा को जानने से इनकार करता है

66इस दौरान पतरस नीचे सहन में था। इमामे-
आज़म की एक नौकरानी वहाँ से गुज़री 67और
देखा कि पतरस वहाँ आग ताप रहा है। उसने ग़ौर
से उस पर नज़र की और कहा, “तुम भी नासरत
के उस आदमी ईसा के साथ थे।”
68लेकिन उसने इनकार किया, “मैं नहीं
जानता या समझता कि तू क्या बात कर रही है।”
यह कहकर वह गेट के क़रीब चला गया। [उसी
लमहे मुरग़ ने बाँग दी।]
69जब नौकरानी ने उसे वहाँ देखा तो उसने
दुबारा पास खड़े लोगों से कहा, “यह बंदा उनमें
से है।” 70दुबारा पतरस ने इनकार किया।
थोड़ी देर के बाद पतरस के साथ खड़े लोगों ने
भी उससे कहा, “तुम ज़रूर उनमें से हो क्योंकि
तुम गलील के रहनेवाले हो।”
71इस पर पतरस ने क़सम खाकर कहा, “मुझ
पर लानत अगर मैं झूट बोल रहा हूँ। मैं उस आदमी
को नहीं जानता जिसका ज़िक्र तुम कर रहे हो।”
72फ़ौरन मुरग़ की बाँग दूसरी मरतबा सुनाई
दी। फिर पतरस को वह बात याद आई जो ईसा
ने उससे कही थी, “मुरग़ के दूसरी दफ़ा बाँग देने
से पहले पहले तू तीन बार मुझे जानने से इनकार
कर चुका होगा।” इस पर वह रो पड़ा।

पीलातुस के सामने

15 सुबह-सवेरे ही राहनुमा इमाम
बुज़ुर्गों, शरीअत के उलमा और
पूरी यहूदी अदालते-आलिया के साथ मिल-
कर फ़ैसले तक पहुँच गए। वह ईसा को बाँधकर
वहाँ से ले गए और रोमी गवर्नर पीलातुस के हवाले
कर दिया। 2पीलातुस ने उससे पूछा, “क्या तुम
यहूदियों के बादशाह हो?”
ईसा ने जवाब दिया, “जी, आप ख़ुद कहते हैं।”
3राहनुमा इमामों ने उस पर बहुत इलज़ाम
लगाए। 4चुनाँचे पीलातुस ने दुबारा उससे सवाल
किया, “क्या तुम कोई जवाब नहीं दोगे? यह तो
तुम पर बहुत-से इलज़ामात लगा रहे हैं।”
5लेकिन ईसा ने इस पर भी कोई जवाब न
दिया, और पीलातुस बड़ा हैरान हुआ।

सज़ाए-मौत का फ़ैसला

6उन दिनों यह रिवाज था कि हर साल फ़सह
की ईद पर एक क़ैदी को रिहा कर दिया जाता
था। यह क़ैदी अवाम से मुंतख़ब किया जाता था।
7उस वक़्त कुछ आदमी जेल में थे जो हुकूमत के
ख़िलाफ़ किसी इंकलाबी तहरीक में शरीक हुए
थे और जिन्होंने बग़ावत के मौक़े पर क़त्लो-ग़ारत
की थी। उनमें से एक का नाम बर-अब्बा था।
8अब हुजूम ने पीलातुस के पास आकर उससे
गुज़ारिश की कि वह मामूल के मुताबिक़ एक क़ैदी
को आज़ाद कर दे। 9पीलातुस ने पूछा, “क्या तुम
चाहते हो कि मैं यहूदियों के बादशाह को आज़ाद
कर दूँ?” 10वह जानता था कि राहनुमा इमामों
ने ईसा को सिर्फ़ हसद की बिना पर उसके हवाले
किया है।
11लेकिन राहनुमा इमामों ने हुजूम को
उकसाया कि वह ईसा के बजाए बर-अब्बा को
माँगें। 12पीलातुस ने सवाल किया, “फिर मैं
इसके साथ क्या करूँ जिसका नाम तुमने यहूदियों
का बादशाह रखा है?”
13वह चीख़े, “उसे मसलूब करें।”

14पीलातुस ने पूछा, “क्यों? उसने क्या जुर्म
किया है?”
लेकिन लोग मज़ीद शोर मचाकर चीख़ते रहे,
“उसे मसलूब करें!”
15चुनाँचे पीलातुस ने हुजूम को मुतमइन करने
की ख़ातिर बर-अब्बा को आज़ाद कर दिया। उसने
ईसा को कोड़े लगाने को कहा, फिर उसे मसलूब
करने के लिए फ़ौजियों के हवाले कर दिया।

फ़ौजी ईसा का मज़ाक़ उड़ाते हैं

16फ़ौजी ईसा को गवर्नर के महल बनाम
प्रैटोरियुम के सहन में ले गए और पूरी पलटन को
इकट्ठा किया। 17उन्होंने उसे अरग़वानी रंग का
लिबास पहनाया और काँटेदार टहनियों का एक
ताज बनाकर उसके सर पर रख दिया। 18फिर वह
उसे सलाम करने लगे, “ऐ यहूदियों के बादशाह,
आदाब!” 19लाठी से उसके सर पर मार मारकर
वह उस पर थूकते रहे। घुटने टेककर उन्होंने उसे
सिजदा किया। 20फिर उसका मज़ाक़ उड़ाने से
थककर उन्होंने अरग़वानी लिबास उतारकर उसे
दुबारा उसके अपने कपड़े पहनाए। फिर वह उसे
मसलूब करने के लिए बाहर ले गए।

ईसा को मसलूब किया जाता है

21उस वक़्त लिबिया के शहर कुरेन का
रहनेवाला एक आदमी बनाम शमाऊन देहात से
शहर को आ रहा था। वह सिकंदर और रूफ़ुस
का बाप था। जब वह ईसा और फ़ौजियों के
पास से गुज़रने लगा तो फ़ौजियों ने उसे सलीब
उठाने पर मजबूर किया। 22यों चलते चलते वह
ईसा को एक मक़ाम पर ले गए जिसका नाम
गुलगुता (यानी खोपड़ी का मक़ाम) था। 23वहाँ
उन्होंने उसे मै पेश की जिसमें मुर मिलाया गया
था, लेकिन उसने पीने से इनकार किया। 24फिर
फ़ौजियों ने उसे मसलूब किया और उसके कपड़े
आपस में बाँट लिए। यह फ़ैसला करने के लिए
कि किस को क्या क्या मिलेगा उन्होंने क़ुरा डाला।
25नौ बजे सुबह का वक़्त था जब उन्होंने उसे
मसलूब किया। 26एक तख़्ती सलीब पर लगा दी
गई जिस पर यह इलज़ाम लिखा था, “यहूदियों
का बादशाह।” 27दो डाकुओं को भी ईसा के साथ
मसलूब किया गया, एक को उसके दहने हाथ
और दूसरे को उसके बाएँ हाथ। 28[यों मुक़द्दस
कलाम का वह हवाला पूरा हुआ जिसमें लिखा है,
‘उसे मुजरिमों में शुमार किया गया।’]
29जो वहाँ से गुज़रे उन्होंने कुफ़र बककर उस
की तज़लील की और सर हिला हिलाकर अपनी
हिक़ारत का इज़हार किया। उन्होंने कहा, “तूने तो
कहा था कि मैं बैतुल-मुक़द्दस को ढाकर उसे तीन
दिन के अंदर अंदर दुबारा तामीर कर दूँगा। 30अब
सलीब पर से उतरकर अपने आपको बचा!”
31राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा ने भी
ईसा का मज़ाक़ उड़ाकर कहा, “इसने औरों को
बचाया, लेकिन अपने आपको नहीं बचा सकता।
32इसराईल का यह बादशाह मसीह अब सलीब
पर से उतर आए ताकि हम यह देखकर ईमान
लाएँ।” और जिन आदमियों को उसके साथ
मसलूब किया गया था उन्होंने भी उसे लान-तान
की।

ईसा की मौत

33दोपहर बारह बजे पूरा मुल्क अंधेरे में डूब
गया। यह तारीकी तीन घंटों तक रही। 34फिर
तीन बजे ईसा ऊँची आवाज़ से पुकार उठा,
“एली, एली, लमा शबक़्तनी?” जिसका
मतलब है, “ऐ मेरे ख़ुदा, ऐ मेरे ख़ुदा, तूने मुझे
क्यों तर्क कर दिया है?”
35यह सुनकर पास खड़े कुछ लोग कहने लगे,
“वह इलियास नबी को बुला रहा है।” 36किसी ने
दौड़कर मै के सिरके में एक इस्फ़ंज डुबोया और
उसे डंडे पर लगाकर ईसा को चुसाने की कोशिश
की। वह बोला, “आओ हम देखें, शायद इलियास
आकर उसे सलीब पर से उतार ले।”
37लेकिन ईसा ने बड़े ज़ोर से चिल्लाकर दम
छोड़ दिया।

38उसी वक़्त बैतुल-मुक़द्दस के मुक़द्दस-
तरीन कमरे के सामने लटका हुआ परदा ऊपर
से लेकर नीचे तक दो हिस्सों में फट गया। 39जब
ईसा के मुक़ाबिल खड़े रोमी अफ़सर[a] ने देखा कि
वह किस तरह मरा तो उसने कहा, “यह आदमी
वाक़ई अल्लाह का फ़रज़ंद था!”
40कुछ ख़वातीन भी वहाँ थीं जो कुछ फ़ासले
पर उसका मुशाहदा कर रही थीं। उनमें मरियम
मग्दलीनी, छोटे याक़ूब और योसेस की माँ
मरियम और सलोमी भी थीं। 41गलील में यह
औरतें ईसा के पीछे चलकर इसकी ख़िदमत
करती रही थीं। कई और ख़वातीन भी वहाँ थीं
जो उसके साथ यरूशलम आ गई थीं।

ईसा को दफ़न किया जाता है

42यह सब कुछ जुमे को हुआ जो अगले दिन
के सबत के लिए तैयारी का दिन था। जब शाम
होने को थी 43तो अरिमतियाह का एक आदमी
बनाम यूसुफ़ हिम्मत करके पीलातुस के पास
गया और उससे ईसा की लाश माँगी। (यूसुफ़
यहूदी अदालते-आलिया का नामवर मेंबर था और
अल्लाह की बादशाही के आने के इंतज़ार में था।)
44पीलातुस यह सुनकर हैरान हुआ कि ईसा मर
चुका है। उसने रोमी अफ़सर को बुलाकर उससे
पूछा कि क्या ईसा वाक़ई मर चुका है? 45जब
अफ़सर ने इसकी तसदीक़ की तो पीलातुस ने
यूसुफ़ को लाश दे दी। 46यूसुफ़ ने कफ़न ख़रीद
लिया, फिर ईसा की लाश उतारकर उसे कतान
के कफ़न में लपेटा और एक क़ब्र में रख दिया
जो चट्टान में तराशी गई थी। आख़िर में उसने एक
बड़ा पत्थर लुढ़काकर क़ब्र का मुँह बंद कर दिया।
47मरियम मग्दलीनी और योसेस की माँ मरियम
ने देख लिया कि ईसा की लाश कहाँ रखी गई है।

ईसा जी उठता है

16 हफ़्ते की शाम को जब सबत का
दिन गुज़र गया तो मरियम मग्दलीनी,
याक़ूब की माँ मरियम और सलोमी ने ख़ुशबूदार
मसाले ख़रीद लिए, क्योंकि वह क़ब्र के पास
जाकर उन्हें ईसा की लाश पर लगाना चाहती थीं।
2चुनाँचे वह इतवार को सुबह-सवेरे ही क़ब्र पर
गईं। सूरज तुलू हो रहा था। 3रास्ते में वह एक
दूसरे से पूछने लगीं, “कौन हमारे लिए क़ब्र के
मुँह से पत्थर को लुढ़काएगा?” 4लेकिन जब
वहाँ पहुँचीं और नज़र उठाकर क़ब्र पर ग़ौर किया
तो देखा कि पत्थर को एक तरफ़ लुढ़काया जा
चुका है। यह पत्थर बहुत बड़ा था। 5वह क़ब्र में
दाख़िल हुईं। वहाँ एक जवान आदमी नज़र आया
जो सफ़ेद लिबास पहने हुए दाईं तरफ़ बैठा था।
वह घबरा गईं।
6उसने कहा, “मत घबराओ। तुम ईसा नासरी
को ढूँड रही हो जो मसलूब हुआ था। वह जी
उठा है, वह यहाँ नहीं है। उस जगह को ख़ुद देख
लो जहाँ उसे रखा गया था। 7अब जाओ, उसके
शागिर्दों और पतरस को बता दो कि वह तुम्हारे
आगे आगे गलील पहुँच जाएगा। वहीं तुम उसे
देखोगे, जिस तरह उसने तुमको बताया था।”
8ख़वातीन लरज़ती और उलझी हुई हालत में
क़ब्र से निकलकर भाग गईं। उन्होंने किसी को
भी कुछ न बताया, क्योंकि वह निहायत सहमी
हुई थीं।

ईसा मरियम मग्दलीनी पर ज़ाहिर होता है

9जब ईसा इतवार को सुबह-सवेरे जी उठा तो
पहला शख़्स जिस पर वह ज़ाहिर हुआ मरियम
मग्दलीनी थी जिससे उसने सात बदरूहें निकाली
थीं। 10मरियम ईसा के साथियों के पास गई जो
मातम कर रहे और रो रहे थे। उसने उन्हें जो कुछ
हुआ था बताया। 11लेकिन गो उन्होंने सुना कि
ईसा ज़िंदा है और कि मरियम ने उसे देखा है तो
भी उन्हें यक़ीन न आया।

[a]सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

ईसा मज़ीद दो शागिर्दों पर ज़ाहिर होता है

12इसके बाद ईसा दूसरी सूरत में उनमें से दो पर ज़ाहिर हुआ जब वह यरूशलम से देहात की तरफ़ पैदल चल रहे थे।
13दोनों ने वापस जाकर यह बात बाक़ी लोगों को बताई। लेकिन उन्हें इनका भी यक़ीन न आया।

ईसा ग्यारह रसूलों पर ज़ाहिर होता है

14आख़िर में ईसा ग्यारह शागिर्दों पर भी ज़ाहिर हुआ। उस वक़्त वह मेज़ पर बैठे खाना खा रहे थे। उसने उन्हें उनकी बेएतक़ादी और सख़्तदिली के सबब से डाँटा, कि उन्होंने उनका यक़ीन न किया जिन्होंने उसे ज़िंदा देखा था।
15फिर उसने उनसे कहा, "पूरी दुनिया में जाकर तमाम मख़लूक़ात को अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाओ।
16जो भी ईमान लाकर बपतिस्मा ले उसे नजात मिलेगी। लेकिन जो ईमान न लाए उसे मुजरिम क़रार दिया जाएगा।
17और जहाँ जहाँ लोग ईमान रखेंगे वहाँ यह इलाही निशान ज़ाहिर होंगे : वह मेरे नाम से बदरूहें निकाल देंगे, नई नई ज़बानें बोलेंगे
18और साँपों को उठाकर महफ़ूज़ रहेंगे। मोहलक ज़हर पीने से उन्हें नुक़सान नहीं पहुँचेगा और जब वह अपने हाथ मरीज़ों पर रखेंगे तो शफ़ा पाएँगे।"

ईसा को आसमान पर उठाया जाता है

19उनसे बात करने के बाद ख़ुदावंद ईसा को आसमान पर उठा लिया गया और वह अल्लाह के दहने हाथ बैठ गया।
20इस पर शागिर्दों ने निकलकर हर जगह मुनादी की। और ख़ुदावंद ने उनकी हिमायत करके इलाही निशानों से कलाम की तसदीक़ की।

लूक़ा की मारिफ़त इंजील

पेशलफ़्ज़

1 मुहतरम थियुफ़िलुस, बहुत-से लोग वह
सब कुछ लिख चुके हैं जो हमारे दरमियान
वाक़े हुआ है। 2उनकी कोशिश यह थी कि वही
कुछ बयान किया जाए जिसकी गवाही वह देते हैं
जो शुरू ही से साथ थे और आज तक अल्लाह का
कलाम सुनाने की ख़िदमत सरंजाम दे रहे हैं। 3मैंने
भी हर मुमकिन कोशिश की है कि सब कुछ शुरू
से और ऐन हक़ीक़त के मुताबिक़ मालूम करूँ।
अब मैं यह बातें तरतीब से आपके लिए लिखना
चाहता हूँ। 4आप यह पढ़कर जान लेंगे कि जो
बातें आपको सिखाई गई हैं वह सच और दुरुस्त
हैं।

यहया के बारे में पेशगोई

5यहूदिया के बादशाह हेरोदेस के ज़माने में एक
इमाम था जिसका नाम ज़करियाह था। बैतुल-
मुक़द्दस में इमामों के मुख़्तलिफ़ गुरोह ख़िदमत
सरंजाम देते थे, और ज़करियाह का ताल्लुक़
अबियाह के गुरोह से था। उस की बीवी इमामे-
आज़म हारून की नसल से थी और उसका नाम
इलीशिबा था। 6मियाँ-बीवी अल्लाह के नज़दीक
रास्तबाज़ थे और रब के तमाम अहकाम और
हिदायात के मुताबिक़ बेइलज़ाम ज़िंदगी गुज़ारते
थे। 7लेकिन वह बेऔलाद थे। इलीशिबा के बच्चे
पैदा नहीं हो सकते थे। अब वह दोनों बूढ़े हो चुके
थे।

8एक दिन बैतुल-मुक़द्दस मैं अबियाह के गुरोह
की बारी थी और ज़करियाह अल्लाह के हुज़ूर
अपनी ख़िदमत सरंजाम दे रहा था। 9दस्तूर के
मुताबिक़ उन्होंने क़ुरा डाला ताकि मालूम करें कि
रब के मक़दिस में जाकर बख़ूर की क़ुरबानी कौन
जलाए। ज़करियाह को चुना गया। 10जब वह
मुक़र्ररा वक़्त पर बख़ूर जलाने के लिए बैतुल-
मुक़द्दस में दाख़िल हुआ तो जमा होनेवाले तमाम
परस्तार सहन में दुआ कर रहे थे।

11अचानक रब का एक फ़रिश्ता ज़ाहिर
हुआ जो बख़ूर जलाने की क़ुरबानगाह
के दहनी तरफ़ खड़ा था। 12उसे देखकर
ज़करियाह घबराया और बहुत डर गया।
13लेकिन फ़रिश्ते ने उससे कहा, "ज़करि-
याह, मत डर! अल्लाह ने तेरी दुआ सुन ली है।
तेरी बीवी इलीशिबा के बेटा होगा। उसका नाम
यहया रखना। 14वह न सिर्फ़ तेरे लिए ख़ुशी और
मुसर्रत का बाइस होगा, बल्कि बहुत-से लोग
उस की पैदाइश पर ख़ुशी मनाएँगे। 15क्योंकि
वह रब के नज़दीक अज़ीम होगा। लाज़िम है कि
वह मै और शराब से परहेज़ करे। वह पैदा होने
से पहले ही रूहुल-क़ुद्स से मामूर होगा 16और
इसराईली क़ौम में से बहुतों को रब उनके ख़ुदा
के पास वापस लाएगा। 17वह इलियास की रूह

और क़ुव्वत से ख़ुदावंद के आगे आगे चलेगा। उस की ख़िदमत से वालिदों के दिल अपने बच्चों की तरफ़ मायल हो जाएंगे और नाफ़रमान लोग रास्तबाज़ों की दानाई की तरफ़ रुजू करेंगे। यों वह इस क़ौम को रब के लिए तैयार करेगा।”

18ज़करियाह ने फ़रिश्ते से पूछा, “मैं किस
तरह जानूँ कि यह बात सच है? मैं ख़ुद बूढ़ा हूँ और मेरी बीवी भी उम्ररसीदा है।”

19फ़रिश्ते ने जवाब दिया, “मैं जिबराईल हूँ जो
अल्लाह के हुज़ूर खड़ा रहता हूँ। मुझे इसी मक़सद के लिए भेजा गया है कि तुझे यह ख़ुशख़बरी
सुनाऊँ। 20लेकिन चूँकि तूने मेरी बात का यक़ीन
नहीं किया इसलिए तू ख़ामोश रहेगा और उस वक़्त तक बोल नहीं सकेगा जब तक तेरे बेटा पैदा न हो। मेरी यह बातें मुक़र्ररा वक़्त पर ही पूरी होंगी।”

21इस दौरान बाहर के लोग ज़करियाह के
इंतज़ार में थे। वह हैरान होते जा रहे थे कि उसे वापस आने में क्यों इतनी देर हो रही है।
22आख़िरकार वह बाहर आया, लेकिन वह उनसे
बात न कर सका। तब उन्होंने जान लिया कि उसने बैतुल-मुक़द्दस में रोया देखी है। उसने हाथों से इशारे तो किए, लेकिन ख़ामोश रहा।

23ज़करियाह मुक़र्ररा वक़्त तक बैतुल-मुक़द्दस
में अपनी ख़िदमत अंजाम देता रहा, फिर अपने घर
वापस चला गया। 24थोड़े दिनों के बाद उस की
बीवी इलीशिबा हामिला हो गई और वह पाँच माह
तक घर में छुपी रही। 25उसने कहा, “ख़ुदावंद ने
मेरे लिए कितना बड़ा काम किया है, क्योंकि अब उसने मेरी फ़िकर की और लोगों के सामने से मेरी रुसवाई दूर कर दी।”

ईसा की पैदाइश की पेशगोई

26-27इलीशिबा छः माह से उम्मीद से थी जब
अल्लाह ने जिबराईल फ़रिश्ते को एक कुँवारी के पास भेजा जो नासरत में रहती थी। नासरत गलील का एक शहर है और कुँवारी का नाम मरियम था। उस की मँगनी एक मर्द के साथ हो चुकी थी जो दाऊद बादशाह की नसल से था और
जिसका नाम यूसुफ़ था। 28फ़रिश्ते ने उसके पास
आकर कहा, “ऐ ख़ातून जिस पर रब का ख़ास फ़ज़ल हुआ है, सलाम! रब तेरे साथ है।”

29मरियम यह सुनकर घबरा गई और सोचा,
“यह किस तरह का सलाम है?” 30लेकिन
फ़रिश्ते ने अपनी बात जारी रखी और कहा, “ऐ मरियम, मत डर, क्योंकि तुझ पर अल्लाह का
फ़ज़ल हुआ है। 31तू उम्मीद से होकर एक बेटे
को जन्म देगी। तुझे उसका नाम ईसा (नजात
देनेवाला) रखना है। 32वह अज़ीम होगा और
अल्लाह तआला का फ़रज़ंद कहलाएगा। रब हमारा ख़ुदा उसे उसके बाप दाऊद के तख़्त पर
बिठाएगा 33और वह हमेशा तक इसराईल पर
हुकूमत करेगा। उस की सलतनत कभी ख़त्म न होगी।”

34मरियम ने फ़रिश्ते से कहा, “यह क्योंकर हो
सकता है? अभी तो मैं कुँवारी हूँ।”

35फ़रिश्ते ने जवाब दिया, “रूहुल-क़ुद्स तुझ
पर नाज़िल होगा, अल्लाह तआला की क़ुदरत का साया तुझ पर छा जाएगा। इसलिए यह बच्चा क़ुद्दूस होगा और अल्लाह का फ़रज़ंद कहलाएगा।
36और देख, तेरी रिश्तेदार इलीशिबा के भी बेटा
होगा हालाँकि वह उम्ररसीदा है। गो उसे बाँझ क़रार दिया गया था, लेकिन वह छः माह से उम्मीद
से है। 37क्योंकि अल्लाह के नज़दीक कोई काम
नामुमकिन नहीं है।”

38मरियम ने जवाब दिया, “मैं रब की ख़िदमत
के लिए हाज़िर हूँ। मेरे साथ वैसा ही हो जैसा आपने कहा है।” इस पर फ़रिश्ता चला गया।

मरियम इलीशिबा से मिलती है

39उन दिनों में मरियम यहूदिया के पहाड़ी
इलाक़े के एक शहर के लिए रवाना हुई। उसने
जल्दी जल्दी सफ़र किया। 40वहाँ पहुँचकर वह
ज़करियाह के घर में दाख़िल हुई और इलीशिबा
को सलाम किया। 41मरियम का यह सलाम
सुनकर इलीशिबा का बच्चा उसके पेट में उछल

पड़ा और इलीशिबा ख़ुद रूहुल-क़ुद्स से भर गई।
42उसने बुलंद आवाज़ से कहा, “तू तमाम औरतों
में मुबारक है और मुबारक है तेरा बच्चा! 43मैं
कौन हूँ कि मेरे ख़ुदावंद की माँ मेरे पास आई!
44ज्योंही मैंने तेरा सलाम सुना बच्चा मेरे पेट में
ख़ुशी से उछल पड़ा। 45तू कितनी मुबारक है,
क्योंकि तू ईमान लाई कि जो कुछ रब ने फ़रमाया
है वह तकमील तक पहुँचेगा।”

मरियम का गीत

46इस पर मरियम ने कहा,
“मेरी जान रब की ताज़ीम करती है
47और मेरी रूह अपने नजातदहिंदा
अल्लाह से निहायत ख़ुश है।
48क्योंकि उसने अपनी ख़ादिमा
की पस्ती पर नज़र की है।
हाँ, अब से तमाम नसलें
मुझे मुबारक कहेंगी,
49क्योंकि क़ादिरे-मुतलक़ ने मेरे लिए
बड़े बड़े काम किए हैं।
उसका नाम क़ुद्दूस है।
50जो उसका ख़ौफ़ मानते हैं
उन पर वह पुश्त-दर-पुश्त
अपनी रहमत ज़ाहिर करेगा।
51उस की क़ुदरत ने अज़ीम काम
कर दिखाए हैं,
और दिल से मग़रूर लोग
तित्तर-बित्तर हो गए हैं।
52उसने हुक्मरानों को
उनके तख़्त से हटाकर
पस्तहाल लोगों को सरफ़राज़ कर दिया है।
53भूकों को उसने
अच्छी चीज़ों से मालामाल करके
अमीरों को ख़ाली हाथ लौटा दिया है।
54वह अपने ख़ादिम
इसराईल की मदद के लिए आ गया है।
हाँ, उसने अपनी रहमत को याद किया है,
55यानी वह दायमी वादा जो उसने
हमारे बुज़ुर्गों के साथ किया था,
इब्राहीम और उस की औलाद के साथ।”
56मरियम तक़रीबन तीन माह इलीशिबा के हाँ
ठहरी रही, फिर अपने घर लौट गई।

यहया बपतिस्मा देनेवाले की पैदाइश

57फिर इलीशिबा का बच्चे को जन्म देने का
दिन आ पहुँचा और उसके बेटा हुआ। 58जब
उसके हमसायों और रिश्तेदारों को इत्तला मिली
कि रब की उस पर कितनी बड़ी रहमत हुई है तो
उन्होंने उसके साथ ख़ुशी मनाई।
59जब बच्चा आठ दिन का था तो वह उसका
ख़तना करवाने की रस्म के लिए आए। वह बच्चे
का नाम उसके बाप के नाम पर ज़करियाह रखना
चाहते थे, 60लेकिन उस की माँ ने एतराज़ किया।
उसने कहा, “नहीं, उसका नाम यहया हो।”
61उन्होंने कहा, “आपके रिश्तेदारों में तो ऐसा
नाम कहीं भी नहीं पाया जाता।” 62तब उन्होंने
इशारों से बच्चे के बाप से पूछा कि वह क्या नाम
रखना चाहता है।
63जवाब में ज़करियाह ने तख़्ती मँगवाकर उस
पर लिखा, “इसका नाम यहया है।” यह देखकर
सब हैरान हुए। 64उसी लमहे ज़करियाह दुबारा
बोलने के क़ाबिल हो गया, और वह अल्लाह की
तमजीद करने लगा। 65तमाम हमसायों पर ख़ौफ़
छा गया और इस बात का चर्चा यहूदिया के पूरे
इलाक़े में फैल गया। 66जिसने भी सुना उसने
संजीदगी से इस पर ग़ौर किया और सोचा, “इस
बच्चे का क्या बनेगा?” क्योंकि रब की क़ुदरत
उसके साथ थी।

ज़करियाह की नबुव्वत

67उसका बाप ज़करियाह रूहुल-क़ुद्स से
मामूर हो गया और नबुव्वत करके कहा,
68“रब इसराईल के अल्लाह की
तमजीद हो!
क्योंकि वह अपनी क़ौम की मदद के लिए
आया है,

उसने फ़िद्या देकर उसे छुड़ाया है।
69उसने अपने ख़ादिम दाऊद के घराने में
हमारे लिए एक अज़ीम नजातदहिंदा
खड़ा किया है।
70ऐसा ही हुआ
जिस तरह उसने क़दीम ज़मानों में
अपने मुक़द्दस नबियों की मारिफ़त
फ़रमाया था,
71कि वह हमें हमारे दुश्मनों से
नजात दिलाएगा,
उन सबके हाथ से
जो हमसे नफ़रत रखते हैं।
72क्योंकि उसने फ़रमाया था
कि वह हमारे बापदादा पर रहम करेगा
73और अपने मुक़द्दस अहद को
याद रखेगा,
उस वादे को जो उसने क़सम खा कर
इब्राहीम के साथ किया था।
74अब उसका यह वादा पूरा हो जाएगा :
हम अपने दुश्मनों से मख़लसी पाकर
ख़ौफ़ के बग़ैर अल्लाह की ख़िदमत
कर सकेंगे,
75जीते-जी उसके हुज़ूर
मुक़द्दस और रास्त ज़िंदगी
गुज़ार सकेंगे।
76और तू, मेरे बच्चे,
अल्लाह तआला का नबी कहलाएगा।
क्योंकि तू ख़ुदावंद के आगे आगे
उसके रास्ते तैयार करेगा।
77तू उस की क़ौम को
नजात का रास्ता दिखाएगा,
कि वह किस तरह
अपने गुनाहों की मुआफ़ी पाएगी।
78हमारे अल्लाह की बड़ी रहमत
की वजह से
हम पर इलाही नूर चमकेगा।
79उस की रौशनी उन पर फैल जाएगी
जो अंधेरे और मौत के साये में बैठे हैं,
हाँ वह हमारे क़दमों को
सलामती की राह पर पहुँचाएगी।”

80यहया परवान चढ़ा और उस की रूह ने
तक़वियत पाई। उसने उस वक़्त तक रेगिस्तान
में ज़िंदगी गुज़ारी जब तक उसे इसराईल की
ख़िदमत करने के लिए बुलाया न गया।

ईसा की पैदाइश

2 उन ऐयाम में रोम के शहनशाह औगुस्तुस
ने फ़रमान जारी किया कि पूरी सलतनत
की मर्दुमशुमारी की जाए। 2यह पहली
मर्दुमशुमारी उस वक़्त हुई जब कूरिनियुस शाम
का गवर्नर था। 3हर किसी को अपने वतनी शहर
में जाना पड़ा ताकि वहाँ रजिस्टर में अपना नाम
दर्ज करवाए।

4चुनाँचे यूसुफ़ गलील के शहर नासरत से
रवाना होकर यहूदिया के शहर बैत-लहम पहुँचा।
वजह यह थी कि वह दाऊद बादशाह के घराने
और नसल से था, और बैत-लहम दाऊद का शहर
था। 5चुनाँचे वह अपने नाम को रजिस्टर में दर्ज
करवाने के लिए वहाँ गया। उस की मंगेतर मरियम
भी साथ थी। उस वक़्त वह उम्मीद से थी। 6जब
वह वहाँ ठहरे हुए थे तो बच्चे को जन्म देने का
वक़्त आ पहुँचा। 7बेटा पैदा हुआ। यह मरियम का
पहला बच्चा था। उसने उसे कपड़ों[a] में लपेटकर
एक चरनी में लिटा दिया, क्योंकि उन्हें सराय में
रहने की जगह नहीं मिली थी।

चरवाहों को ख़ुशख़बरी

8उस रात कुछ चरवाहे क़रीब के खुले मैदान में
अपने रेवड़ों की पहरादारी कर रहे थे। 9अचानक
रब का एक फ़रिश्ता उन पर ज़ाहिर हुआ, और
उनके इर्दगिर्द रब का जलाल चमका। यह देखकर
वह सख़्त डर गए। 10लेकिन फ़रिश्ते ने उनसे
कहा, “डरो मत! देखो मैं तुमको बड़ी ख़ुशी

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : पोतड़ों

की ख़बर देता हूँ जो तमाम लोगों के लिए
होगी। 11आज ही दाऊद के शहर में तुम्हारे लिए
नजातदहिंदा पैदा हुआ है यानी मसीह ख़ुदावंद।
12और तुम उसे इस निशान से पहचान लोगे,
तुम एक शीरख़ार बच्चे को कपड़ों में लिपटा हुआ
पाओगे। वह चरनी में पड़ा हुआ होगा।”

13अचानक आसमानी लशकरों के बे-
शुमार फ़रिश्ते उस फ़रिश्ते के साथ ज़ाहिर हुए
जो अल्लाह की हम्दो-सना करके कह रहे थे,

14“आसमान की बुलंदियों पर अल्लाह की
इज़्ज़तो-जलाल, ज़मीन पर उन लोगों की
सलामती जो उसे मंज़ूर हैं।”

15फ़रिश्ते उन्हें छोड़कर आसमान पर वापस
चले गए तो चरवाहे आपस में कहने लगे, “आओ,
हम बैत-लहम जाकर यह बात देखें जो हुई है और
जो रब ने हम पर ज़ाहिर की है।”

16वह भागकर बैत-लहम पहुँचे। वहाँ उन्हें
मरियम और यूसुफ़ मिले और साथ ही छोटा बच्चा
जो चरनी में पड़ा हुआ था। 17यह देखकर उन्होंने
सब कुछ बयान किया जो उन्हें इस बच्चे के बारे में
बताया गया था। 18जिसने भी उनकी बात सुनी
वह हैरतज़दा हुआ। 19लेकिन मरियम को यह
तमाम बातें याद रहीं और वह अपने दिल में उन
पर ग़ौर करती रही।

20फिर चरवाहे लौट गए और चलते चलते उन
तमाम बातों के लिए अल्लाह की ताज़ीमो-तारीफ़
करते रहे जो उन्होंने सुनी और देखी थीं, क्योंकि
सब कुछ वैसा ही पाया था जैसा फ़रिश्ते ने उन्हें
बताया था।

बच्चे का नाम ईसा रखा जाता है

21आठ दिन के बाद बच्चे का ख़तना करवाने
का वक़्त आ गया। उसका नाम ईसा रखा गया,
यानी वही नाम जो फ़रिश्ते ने मरियम को उसके
हामिला होने से पहले बताया था।

ईसा को बैतुल-मुक़द्दस में पेश किया जाता है

22जब मूसा की शरीअत के मुताबिक़ तहारत
के दिन पूरे हुए तब वह बच्चे को यरूशलम ले गए
ताकि उसे रब के हुज़ूर पेश किया जाए, 23जैसे
रब की शरीअत में लिखा है, “हर पहलौठे को रब
के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करना है।” 24साथ ही
उन्होंने मरियम की तहारत की रस्म के लिए वह
क़ुरबानी पेश की जो रब की शरीअत बयान करती
है, यानी “दो क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर।”

25उस वक़्त यरूशलम में एक आदमी बनाम
शमाऊन रहता था। वह रास्तबाज़ और ख़ुदातरस
था और इस इंतज़ार में था कि मसीह आकर
इसराईल को सुकून बख़्शे। रूहुल-क़ुद्स उस पर
था, 26और उसने उस पर यह बात ज़ाहिर की
थी कि वह जीते-जी रब के मसीह को देखेगा।
27उस दिन रूहुल-क़ुद्स ने उसे तहरीक दी कि
वह बैतुल-मुक़द्दस में जाए। चुनाँचे जब मरियम
और यूसुफ़ बच्चे को रब की शरीअत के मुताबिक़
पेश करने के लिए बैतुल-मुक़द्दस में आए 28तो
शमाऊन मौजूद था। उसने बच्चे को अपने बाज़ुओं
में लेकर अल्लाह की हम्दो-सना करते हुए कहा,

29“ऐ आक़ा, अब तू अपने बंदे को
इजाज़त देता है
कि वह सलामती से रेहलत कर जाए,
जिस तरह तूने फ़रमाया है।
30क्योंकि मैंने अपनी आँखों से
तेरी उस नजात का मुशाहदा
कर लिया है
31जो तूने तमाम क़ौमों की मौजूदगी में
तैयार की है।
32यह एक ऐसी रौशनी है
जिससे ग़ैरयहूदियों की आँखें खुल जाएँगी
और तेरी क़ौम इसराईल को
जलाल हासिल होगा।”

33बच्चे के माँ-बाप अपने बेटे के बारे में इन
अलफ़ाज़ पर हैरान हुए। 34शमाऊन ने उन्हें
बरकत दी और मरियम से कहा, “यह बच्चा

मुक़र्रर हुआ है कि इसराईल के बहुत-से लोग
इससे ठोकर खाकर गिर जाएँ, लेकिन बहुत-से
इससे अपने पाँवों पर खड़े भी हो जाएंगे। गो
यह अल्लाह की तरफ़ से एक इशारा है तो भी
इसकी मुख़ालफ़त की जाएगी। 35यों बहुतों के
दिली ख़यालात ज़ाहिर हो जाएंगे। इस सिलसिले
में तलवार तेरी जान में से भी गुज़र जाएगी।”

36वहाँ बैतुल-मुक़द्दस में एक उम्ररसीदा नबिया
भी थी जिसका नाम हन्नाह था। वह फ़नुएल की
बेटी और आशर के क़बीले से थी। शादी के सात
साल बाद उसका शौहर मर गया था। 37अब वह
बेवा की हैसियत से 84 साल की हो चुकी थी। वह
कभी बैतुल-मुक़द्दस को नहीं छोड़ती थी, बल्कि
दिन-रात अल्लाह को सिजदा करती, रोज़ा रखती
और दुआ करती थी। 38उस वक़्त वह मरियम
और यूसुफ़ के पास आकर अल्लाह की तमजीद
करने लगी। साथ साथ वह हर एक को जो इस
इंतज़ार में था कि अल्लाह फ़िद्या देकर यरूशलम
को छुड़ाए, बच्चे के बारे में बताती रही।

वह नासरत वापस चले जाते हैं

39जब ईसा के वालिदैन ने रब की शरीअत में
दर्ज तमाम फ़रायज़ अदा कर लिए तो वह गलील
में अपने शहर नासरत को लौट गए। 40वहाँ
बच्चा परवान चढ़ा और तक़वियत पाता गया। वह
हिकमतो-दानाई से मामूर था, और अल्लाह का
फ़ज़ल उस पर था।

बारह साल की उम्र में बैतुल-मुक़द्दस में

41ईसा के वालिदैन हर साल फ़सह की ईद के
लिए यरूशलम जाया करते थे। 42उस साल भी
वह मामूल के मुताबिक़ ईद के लिए गए जब ईसा
बारह साल का था। 43ईद के इख़्तिताम पर वह
नासरत वापस जाने लगे, लेकिन ईसा यरूशलम
में रह गया। पहले उसके वालिदैन को मालूम न
था, 44क्योंकि वह समझते थे कि वह क़ाफ़िले
में कहीं मौजूद है। लेकिन चलते चलते पहला
दिन गुज़र गया और वह अब तक नज़र न आया
था। इस पर वालिदैन उसे अपने रिश्तेदारों और
अज़ीज़ों में ढूँडने लगे। 45जब वह वहाँ न मिला तो
मरियम और यूसुफ़ यरूशलम वापस गए और वहाँ
ढूँडने लगे। 46तीन दिन के बाद वह आख़िरकार
बैतुल-मुक़द्दस में पहुँचे। वहाँ ईसा दीनी उस्तादों
के दरमियान बैठा उनकी बातें सुन रहा और उनसे
सवालात पूछ रहा था। 47जिसने भी उस की बातें
सुनीं वह उस की समझ और जवाबों से दंग रह
गया। 48उसे देखकर उसके वालिदैन घबरा गए।
उस की माँ ने कहा, “बेटा, तूने हमारे साथ यह
क्यों किया? तेरा बाप और मैं तुझे ढूँडते ढूँडते
शदीद कोफ़्त का शिकार हुए।”

49ईसा ने जवाब दिया, “आपको मुझे तलाश
करने की क्या ज़रूरत थी? क्या आपको मालूम
न था कि मुझे अपने बाप के घर में होना ज़रूर
है?” 50लेकिन वह उस की बात न समझे।

51फिर वह उनके साथ रवाना होकर नासरत
वापस आया और उनके ताबे रहा। लेकिन उस
की माँ ने यह तमाम बातें अपने दिल में महफ़ूज़
रखें। 52यों ईसा जवान हुआ। उस की समझ
और हिकमत बढ़ती गई, और उसे अल्लाह और
इनसान की मक़बूलियत हासिल थी।

यहया बपतिस्मा देनेवाले की ख़िदमत

3 फिर रोम के शहनशाह तिबरियुस की
हुकूमत का पंद्रहवाँ साल आ गया। उस
वक़्त पुंतियुस पीलातुस सूबा यहूदिया का गवर्नर
था, हेरोदेस अंतिपास गलील का हाकिम था,
उसका भाई फ़िलिप्पुस इतूरिया और त्रख़ोनीतिस
के इलाक़े का, जबकि लिसानियास अबिलेने
का। 2हन्ना और कायफ़ा दोनों इमामे-आज़म
थे। उन दिनों में अल्लाह यहया बिन ज़करियाह
से हमकलाम हुआ जब वह रेगिस्तान में था।
3फिर वह दरियाए-यरदन के पूरे इलाक़े में से
गुज़रा। हर जगह उसने एलान किया कि तौबा
करके बपतिस्मा लो ताकि तुम्हें अपने गुनाहों
की मुआफ़ी मिल जाए। 4यों यसायाह नबी के
अलफ़ाज़ पूरे हुए जो उस की किताब में दर्ज हैं :

‘रेगिस्तान में एक आवाज़ पुकार रही है,
रब की राह तैयार करो!
उसके रास्ते सीधे बनाओ।
5लाज़िम है कि हर वादी भर दी जाए,
ज़रूरी है कि हर पहाड़ और बुलंद जगह
मैदान बन जाए।
जो टेढ़ा है उसे सीधा किया जाए,
जो नाहमवार है उसे हमवार किया जाए।
6और तमाम इनसान
अल्लाह की नजात देखेंगे।’
7जब बहुत-से लोग यहया के पास आए ताकि
उससे बपतिस्मा लें तो उसने उनसे कहा, “ऐ
ज़हरीले साँप के बच्चो! किसने तुमको आनेवाले
ग़ज़ब से बचने की हिदायत की? 8अपनी ज़िंदगी
से ज़ाहिर करो कि तुमने वाक़ई तौबा की है।
यह ख़याल मत करो कि हम तो बच जाएंगे
क्योंकि इब्राहीम हमारा बाप है। मैं तुमको बताता
हूँ कि अल्लाह इन पत्थरों से भी इब्राहीम के लिए
औलाद पैदा कर सकता है। 9अब तो अदालत
की कुल्हाड़ी दरख़्तों की जड़ों पर रखी हुई है। हर
दरख़्त जो अच्छा फल न लाए काटा और आग में
झोंका जाएगा।”
10लोगों ने उससे पूछा, “फिर हम क्या करें?”
11उसने जवाब दिया, “जिसके पास दो कुरते
हैं वह एक उसको दे दे जिसके पास कुछ न
हो। और जिसके पास खाना है वह उसे खिला
दे जिसके पास कुछ न हो।”
12टैक्स लेनेवाले भी बपतिस्मा लेने के लिए
आए तो उन्होंने पूछा, “उस्ताद, हम क्या करें?”
13उसने जवाब दिया, “सिर्फ़ उतने टैक्स लेना
जितने हुकूमत ने मुक़र्रर किए हैं।”
14कुछ फ़ौजियों ने पूछा, “हमें क्या करना
चाहिए?”
उसने जवाब दिया, “किसी से जबरन या
ग़लत इलज़ाम लगाकर पैसे न लेना बल्कि अपनी
जायज़ आमदनी पर इकतिफ़ा करना।”
15लोगों की तवक़्क़ोआत बहुत बढ़ गईं। वह
अपने दिलों में सोचने लगे कि क्या यह मसीह तो
नहीं है? 16इस पर यहया उन सबसे मुख़ातिब
होकर कहने लगा, “मैं तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा
देता हूँ, लेकिन एक आनेवाला है जो मुझसे
बड़ा है। मैं उसके जूतों के तसमे खोलने के भी
लायक़ नहीं। वह तुम्हें रूहुल-क़ुद्स और आग से
बपतिस्मा देगा। 17वह हाथ में छाज पकड़े हुए
अनाज को भूसे से अलग करने के लिए तैयार
खड़ा है। वह गाहने की जगह को बिलकुल साफ़
करके अनाज को अपने गोदाम में जमा करेगा।
लेकिन भूसे को वह ऐसी आग में झोंकेगा जो
बुझने की नहीं।”
18इस क़िस्म की बहुत-सी और बातों से उसने
क़ौम को नसीहत की और उसे अल्लाह की
ख़ुशख़बरी सुनाई। 19लेकिन एक दिन यों हुआ
कि यहया ने गलील के हाकिम हेरोदेस अंतिपास
को डाँटा। वजह यह थी कि हेरोदेस ने अपने भाई
की बीवी हेरोदियास से शादी कर ली थी और
इसके अलावा और बहुत-से ग़लत काम किए थे।
20यह मलामत सुनकर हेरोदेस ने अपने ग़लत
कामों में और इज़ाफ़ा यह किया कि यहया को
जेल में डाल दिया।

ईसा का बपतिस्मा

21एक दिन जब बहुत-से लोगों को बपतिस्मा
दिया जा रहा था तो ईसा ने भी बपतिस्मा लिया।
जब वह दुआ कर रहा था तो आसमान खुल गया
22और रूहुल-क़ुद्स जिस्मानी सूरत में कबूतर की
तरह उस पर उतर आया। साथ साथ आसमान से
एक आवाज़ सुनाई दी, “तू मेरा प्यारा फ़रज़ंद है,
तुझसे मैं ख़ुश हूँ।”

ईसा का नसबनामा

23ईसा तक़रीबन तीस साल का था जब उसने
ख़िदमत शुरू की। उसे यूसुफ़ का बेटा समझा
जाता था। उसका नसबनामा यह है : यूसुफ़
बिन एली 24बिन मत्तात बिन लावी बिन मलकी
बिन यन्ना बिन यूसुफ़ 25बिन मत्तितियाह बिन
आमूस बिन नाहूम बिन असलियाह बिन नोगा

26बिन माअत बिन मत्तितियाह बिन शमई बिन
योसेख़ बिन यूदाह 27बिन यूहन्नाह बिन रेसा बिन
ज़रुब्बाबल बिन सियालतियेल बिन नेरी 28बिन
मलिकी बिन अद्दी बिन क़ोसाम बिन इलमोदाम
बिन एर 29बिन यशुअ बिन इलियज़र बिन योरीम
बिन मत्तात बिन लावी 30बिन शमाऊन बिन
यहूदाह बिन यूसुफ़ बिन योनाम बिन इलियाक़ीम
31बिन मलेआह बिन मिन्नाह बिन मत्तितियाह
बिन नातन बिन दाऊद 32बिन यस्सी बिन ओबेद
बिन बोअज़ बिन सलमोन बिन नहसोन 33बिन
अम्मीनदाब बिन अदमीन बिन अरनी बिन हसरोन
बिन फ़ारस बिन यहूदाह 34बिन याक़ूब बिन
इसहाक़ बिन इब्राहीम बिन तारह बिन नहूर 35बिन
सरूज बिन रऊ बिन फ़लज बिन इबर बिन सिलह
36बिन क़ीनान बिन अरफ़क्सद बिन सिम बिन
नूह बिन लमक 37बिन मतूसिलह बिन हनूक बिन
यारिद बिन महललेल बिन क़ीनान 38बिन अनूस
बिन सेत बिन आदम। आदम को अल्लाह ने पैदा
किया था।

ईसा को आज़माया जाता है

4 ईसा दरियाए-यरदन से वापस आया। वह
रूहुल-क़ुद्स से मामूर था जिसने उसे
रेगिस्तान में लाकर उस की राहनुमाई की। 2वहाँ
उसे चालीस दिन तक इबलीस से आज़माया
गया। इस पूरे अरसे में उसने कुछ न खाया।
आख़िरकार उसे भूक लगी।
3फिर इबलीस ने उससे कहा, "अगर तू
अल्लाह का फ़रज़ंद है तो इस पत्थर को हुक्म
दे कि रोटी बन जाए।"
4लेकिन ईसा ने इनकार करके कहा, "हरगिज़
नहीं, क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में लिखा है कि
इनसान की ज़िंदगी सिर्फ़ रोटी पर मुनहसिर नहीं
होती।"
5इस पर इबलीस ने उसे किसी बुलंद जगह पर
ले जाकर एक लमहे में दुनिया के तमाम ममालिक
दिखाए। 6वह बोला, "मैं तुझे इन ममालिक की
शानो-शौकत और इन पर तमाम इख़्तियार दूँगा।
क्योंकि यह मेरे सुपुर्द किए गए हैं और जिसे चाहूँ
दे सकता हूँ। 7लिहाज़ा यह सब कुछ तेरा ही
होगा। शर्त यह है कि तू मुझे सिजदा करे।"
8लेकिन ईसा ने जवाब दिया, "हरगिज़ नहीं,
क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में यों लिखा है, 'रब
अपने अल्लाह को सिजदा कर और सिर्फ़ उसी
की इबादत कर'।"
9फिर इबलीस ने उसे यरूशलम ले जाकर
बैतुल-मुक़द्दस की सबसे ऊँची जगह पर खड़ा
किया और कहा, "अगर तू अल्लाह का फ़रज़ंद
है तो यहाँ से छलाँग लगा दे। 10क्योंकि कलामे-
मुक़द्दस में लिखा है, 'वह अपने फ़रिश्तों को तेरी
हिफ़ाज़त करने का हुक्म देगा, 11और वह तुझे
अपने हाथों पर उठा लेंगे ताकि तेरे पाँवों को पत्थर
से ठेस न लगे'।"
12लेकिन ईसा ने तीसरी बार इनकार किया
और कहा, "कलामे-मुक़द्दस यह भी फ़रमाता है,
'रब अपने अल्लाह को न आज़माना'।"
13इन आज़माइशों के बाद इबलीस ने ईसा को
कुछ देर के लिए छोड़ दिया।

ख़िदमत का आग़ाज़

14फिर ईसा वापस गलील में आया। उसमें
रूहुल-क़ुद्स की क़ुव्वत थी, और उस की शोहरत
उस पूरे इलाक़े में फैल गई। 15वहाँ वह उनके
इबादतख़ानों में तालीम देने लगा, और सबने उस
की तारीफ़ की।

ईसा को नासरत में रद्द किया जाता है

16एक दिन वह नासरत पहुँचा जहाँ वह परवान
चढ़ा था। वहाँ भी वह मामूल के मुताबिक़ सबत
के दिन मक़ामी इबादतख़ाने में जाकर कलामे-
मुक़द्दस में से पढ़ने के लिए खड़ा हो गया। 17उसे
यसायाह नबी की किताब दी गई तो उसने तूमार
को खोलकर यह हवाला ढूँड निकाला,
18"रब का रूह मुझ पर है,
क्योंकि उसने मुझे तेल से मसह करके
ग़रीबों को ख़ुशख़बरी सुनाने

का इख़्तियार दिया है।
उसने मुझे यह एलान करने के लिए
भेजा है
कि क़ैदियों को रिहाई मिलेगी
और अंधे देखेंगे।
उसने मुझे भेजा है
कि मैं कुचले हुओं को आज़ाद कराऊँ
19और रब की तरफ़ से
बहाली के साल का एलान करूँ।”

20यह कहकर ईसा ने तूमार को लपेटकर इबादतख़ाने के मुलाज़िम को वापस कर दिया और बैठ गया। सारी जमात की आँखें उस पर लगी थीं।
21फिर वह बोल उठा, “आज अल्लाह का यह फ़रमान तुम्हारे सुनते ही पूरा हो गया है।”

22सब ईसा के हक़ में बातें करने लगे। वह उन पुरफ़ज़ल बातों पर हैरतज़दा थे जो उसके मुँह से निकलीं, और वह कहने लगे, “क्या यह यूसुफ़ का बेटा नहीं है?”

23उसने उनसे कहा, “बेशक तुम मुझे यह कहावत बताओगे, ‘ऐ डाक्टर, पहले अपने आपका इलाज कर।’ यानी सुनने में आया है कि आपने कफ़र्नहूम में मोजिज़े किए हैं। अब ऐसे मोजिज़े यहाँ अपने वतनी शहर में भी दिखाएँ।
24लेकिन मैं तुमको सच बताता हूँ कि कोई भी नबी अपने वतनी शहर में मक़बूल नहीं होता।

25यह हक़ीक़त है कि इलियास नबी के ज़माने में इसराईल में बहुत-सी ज़रूरतमंद बेवाएँ थीं, उस वक़्त जब साढ़े तीन साल तक बारिश न हुई और पूरे मुल्क में सख़्त काल पड़ा।
26इसके बावुजूद इलियास को उनमें से किसी के पास नहीं भेजा गया बल्कि एक ग़ैरयहूदी बेवा के पास जो सैदा के शहर सारपत में रहती थी।
27इसी तरह इलीशा नबी के ज़माने में इसराईल में कोढ़ के बहुत-से मरीज़ थे। लेकिन उनमें से किसी को शफ़ा न मिली बल्कि सिर्फ़ नामान को जो मुल्के-शाम का शहरी था।”

28जब इबादतख़ाने में जमा लोगों ने यह बातें सुनीं तो वह बड़े तैश में आ गए।
29वह उठे और उसे शहर से निकालकर उस पहाड़ी के किनारे ले गए जिस पर शहर को तामीर किया गया था। वहाँ से वह उसे नीचे गिराना चाहते थे,
30लेकिन ईसा उनमें से गुज़रकर वहाँ से चला गया।

आदमी का बदरूह की गिरिफ़्त से रिहाई

31इसके बाद वह गलील के शहर कफ़र्नहूम को गया और सबत के दिन इबादतख़ाने में लोगों को सिखाने लगा।
32वह उस की तालीम सुनकर हक्का-बक्का रह गए, क्योंकि वह इख़्तियार के साथ तालीम देता था।
33इबादतख़ाने में एक आदमी था जो किसी नापाक रूह के क़ब्ज़े में था। अब वह चीख़ चीख़कर बोलने लगा,
34“अरे नासरत के ईसा, हमारा आपके साथ क्या वास्ता है? क्या आप हमें हलाक करने आए हैं? मैं तो जानता हूँ कि आप कौन हैं, आप अल्लाह के क़ुद्दूस हैं।”

35ईसा ने उसे डाँटकर कहा, “ख़ामोश! आदमी में से निकल जा!” इस पर बदरूह आदमी को जमात के बीच में फ़र्श पर पटककर उसमें से निकल गई। लेकिन वह आदमी ज़ख़्मी न हुआ।

36तमाम लोग घबरा गए और एक दूसरे से कहने लगे, “उस आदमी के अलफ़ाज़ में क्या इख़्तियार और क़ुव्वत है कि बदरूहें उसका हुक्म मानती और उसके कहने पर निकल जाती हैं?”
37और ईसा के बारे में चर्चा उस पूरे इलाक़े में फैल गया।

बहुत-से मरीज़ों की शफ़ायाबी

38फिर ईसा इबादतख़ाने को छोड़कर शमाऊन के घर गया। वहाँ शमाऊन की सास शदीद बुख़ार में मुब्तला थी। उन्होंने ईसा से गुज़ारिश की कि वह उस की मदद करे।
39उसने उसके सिरहाने खड़े होकर बुख़ार को डाँटा तो वह उतर गया और शमाऊन की सास उसी वक़्त उठकर उनकी ख़िदमत करने लगी।

40जब दिन ढल गया तो सब मक़ामी लोग अपने मरीज़ों को ईसा के पास लाए। ख़ाह उनकी

बीमारियाँ कुछ भी क्यों न थीं, उसने हर एक
पर अपने हाथ रखकर उसे शफ़ा दी। 41बहुतों में
बदरूहें भी थीं जिन्होंने निकलते वक़्त चिल्लाकर
कहा, "तू अल्लाह का फ़रज़ंद है।" लेकिन चूँकि
वह जानती थीं कि वह मसीह है इसलिए उसने
उन्हें डाँटकर बोलने न दिया।

ख़ुशख़बरी हर एक के लिए है

42जब अगला दिन चढ़ा तो ईसा शहर से
निकलकर किसी वीरान जगह चला गया। लेकिन
हुजूम उसे ढूँडते ढूँडते आख़िरकार उसके पास
पहुँचा। लोग उसे अपने पास से जाने नहीं देना
चाहते थे। 43लेकिन उसने उनसे कहा, "लाज़िम
है कि मैं दूसरे शहरों में भी जाकर अल्लाह की
बादशाही की ख़ुशख़बरी सुनाऊँ, क्योंकि मुझे
इसी मक़सद के लिए भेजा गया है।"

44चुनाँचे वह यहूदिया के इबादतख़ानों में
मुनादी करता रहा।

पहले शागिर्दों की बुलाहट

5 एक दिन ईसा गलील की झील गन्नेसरत
के किनारे पर खड़ा हुजूम को अल्लाह का
कलाम सुना रहा था। लोग सुनते सुनते इतने
क़रीब आ गए कि उसके लिए जगह कम हो गई।
2फिर उसे दो कश्तियाँ नज़र आईं जो झील के
किनारे लगी थीं। मछेरे उनमें से उतर चुके थे और
अब अपने जालों को धो रहे थे। 3ईसा एक कश्ती
पर सवार हुआ। उसने कश्ती के मालिक शमाऊन
से दरख़ास्त की कि वह कश्ती को किनारे से
थोड़ा-सा दूर ले चले। फिर वह कश्ती में बैठा और
हुजूम को तालीम देने लगा।

4तालीम देने के इख़्तिताम पर उसने शमाऊन
से कहा, "अब कश्ती को वहाँ ले जा जहाँ पानी
गहरा है और अपने जालों को मछलियाँ पकड़ने
के लिए डाल दो।"

5लेकिन शमाऊन ने एतराज़ किया, "उस्ताद,
हमने तो पूरी रात बड़ी कोशिश की, लेकिन एक
भी न पकड़ी। ताहम आपके कहने पर मैं जालों को
दुबारा डालूँगा।" 6यह कहकर उन्होंने गहरे पानी
में जाकर अपने जाल डाल दिए। और वाक़ई,
मछलियों का इतना बड़ा ग़ोल जालों में फँस गया
कि वह फटने लगे। 7यह देखकर उन्होंने अपने
साथियों को इशारा करके बुलाया ताकि वह दूसरी
कश्ती में आकर उनकी मदद करें। वह आए और
सबने मिलकर दोनों कश्तियों को इतनी मछलियों
से भर दिया कि आख़िरकार दोनों डूबने के ख़तरे
में थीं। 8जब शमाऊन पतरस ने यह सब कुछ
देखा तो उसने ईसा के सामने मुँह के बल गिरकर
कहा, "ख़ुदावंद, मुझसे दूर चले जाएँ। मैं तो
गुनाहगार हूँ।" 9क्योंकि वह और उसके साथी
इतनी मछलियाँ पकड़ने की वजह से सख़्त हैरान
थे। 10और ज़बदी के बेटे याक़ूब और यूहन्ना की
हालत भी यही थी जो शमाऊन के साथ मिलकर
काम करते थे।

लेकिन ईसा ने शमाऊन से कहा, "मत डर।
अब से तू आदमियों को पकड़ा करेगा।"

11वह अपनी कश्तियों को किनारे पर ले आए
और सब कुछ छोड़कर ईसा के पीछे हो लिए।

कोढ़ से शफ़ा

12एक दिन ईसा किसी शहर में से गुज़र रहा
था कि वहाँ एक मरीज़ मिला जिसका पूरा जिस्म
कोढ़ से मुतअस्सिर था। जब उसने ईसा को देखा
तो वह मुँह के बल गिर पड़ा और इल्तिजा की,
"ऐ ख़ुदावंद, अगर आप चाहें तो मुझे पाक-साफ़
कर सकते हैं।"

13ईसा ने अपना हाथ बढ़ाकर उसे छुआ और
कहा, "मैं चाहता हूँ, पाक-साफ़ हो जा।" इस पर
बीमारी फ़ौरन दूर हो गई। 14ईसा ने उसे हिदायत
की कि वह किसी को न बताए कि क्या हुआ
है। उसने कहा, "सीधा बैतुल-मुक़द्दस में इमाम
के पास जा ताकि वह तेरा मुआयना करे। अपने
साथ वह क़ुरबानी ले जा जिसका तक़ाज़ा मूसा
की शरीअत उनसे करती है जिन्हें कोढ़ से शफ़ा
मिलती है। यों अलानिया तसदीक़ हो जाएगी कि
तू वाक़ई पाक-साफ़ हो गया है।"

15ताहम ईसा के बारे में ख़बर और ज़्यादा तेज़ी से फैलती गई। लोगों के बड़े गुरोह उसके पास आते रहे ताकि उस की बातें सुनें और उसके हाथ से शफ़ा पाएँ। 16फिर भी वह कई बार उन्हें छोड़कर दुआ करने के लिए वीरान जगहों पर जाया करता था।

मफ़लूज के लिए छत खोली जाती है

17एक दिन वह लोगों को तालीम दे रहा था। फ़रीसी और शरीअत के आलिम भी गलील और यहूदिया के हर गाँव और यरूशलम से आकर उसके पास बैठे थे। और रब की क़ुदरत उसे शफ़ा देने के लिए तहरीक दे रही थी। 18इतने में कुछ आदमी एक मफ़लूज को चारपाई पर डालकर वहाँ पहुँचे। उन्होंने उसे घर के अंदर ईसा के सामने रखने की कोशिश की, 19लेकिन बेफ़ायदा। घर में इतने लोग थे कि अंदर जाना नामुमकिन था। इसलिए वह आख़िरकार छत पर चढ़ गए और कुछ टायलें उधेड़कर छत का एक हिस्सा खोल दिया। फिर उन्होंने चारपाई को मफ़लूज समेत हुजूम के दरमियान ईसा के सामने उतारा। 20जब ईसा ने उनका ईमान देखा तो उसने मफ़लूज से कहा, "ऐ आदमी, तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं।"

21यह सुनकर शरीअत के आलिम और फ़रीसी सोच-बिचार में पड़ गए, "यह किस तरह का बंदा है जो इस क़िस्म का कुफ़र बकता है? सिर्फ़ अल्लाह ही गुनाह मुआफ़ कर सकता है।"

22लेकिन ईसा ने जान लिया कि यह क्या सोच रहे हैं, इसलिए उसने पूछा, "तुम दिल में इस तरह की बातें क्यों सोच रहे हो? 23क्या मफ़लूज से यह कहना ज़्यादा आसान है कि 'तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं' या यह कि 'उठकर चल-फिर'? 24लेकिन मैं तुमको दिखाता हूँ कि इब्ने-आदम को वाक़ई दुनिया में गुनाह मुआफ़ करने का इख़्तियार है।" यह कहकर वह मफ़लूज से मुख़ातिब हुआ, "उठ, अपनी चारपाई उठाकर अपने घर चला जा।"

25लोगों के देखते देखते वह आदमी खड़ा हुआ और अपनी चारपाई उठाकर अल्लाह की हम्दो-सना करते हुए अपने घर चला गया। 26यह देखकर सब सख़्त हैरतज़दा हुए और अल्लाह की तमजीद करने लगे। उन पर ख़ौफ़ छा गया और वह कह उठे, "आज हमने नाक़ाबिले-यक़ीन बातें देखी हैं।"

ईसा मत्ती को बुलाता है

27इसके बाद ईसा निकलकर एक टैक्स लेनेवाले के पास से गुज़रा जो अपनी चौकी पर बैठा था। उसका नाम लावी था। उसे देखकर ईसा ने कहा, "मेरे पीछे हो ले।" 28वह उठा और सब कुछ छोड़कर उसके पीछे हो लिया।

29बाद में उसने अपने घर में ईसा की बड़ी ज़ियाफ़त की। बहुत-से टैक्स लेनेवाले और दीगर मेहमान इसमें शरीक हुए। 30यह देखकर कुछ फ़रीसियों और उनसे ताल्लुक़ रखनेवाले शरीअत के आलिमों ने ईसा के शागिर्दों से शिकायत की। उन्होंने कहा, "तुम टैक्स लेनेवालों और गुनाहगारों के साथ क्यों खाते-पीते हो?"

31ईसा ने जवाब दिया, "सेहतमंदों को डाक्टर की ज़रूरत नहीं होती बल्कि मरीज़ों को। 32मैं रास्तबाज़ों को नहीं बल्कि गुनाहगारों को बुलाने आया हूँ ताकि वह तौबा करें।"

शागिर्द रोज़ा क्यों नहीं रखते?

33कुछ लोगों ने ईसा से एक और सवाल पूछा, "यहया के शागिर्द अकसर रोज़ा रखते हैं। और साथ साथ वह दुआ भी करते रहते हैं। फ़रीसियों के शागिर्द भी इसी तरह करते हैं। लेकिन आपके शागिर्द खाने-पीने का सिलसिला जारी रखते हैं।"

34ईसा ने जवाब दिया, "क्या तुम शादी के मेहमानों को रोज़ा रखने को कह सकते हो जब दूल्हा उनके दरमियान है? हरगिज़ नहीं! 35लेकिन एक दिन आएगा जब दूल्हा उनसे ले लिया जाएगा। उस वक़्त वह ज़रूर रोज़ा रखेंगे।"

36उसने उन्हें यह मिसाल भी दी, “कौन किसी नए लिबास को फाड़कर उसका एक टुकड़ा किसी पुराने लिबास में लगाएगा? कोई भी नहीं! अगर वह ऐसा करे तो न सिर्फ़ नया लिबास ख़राब होगा बल्कि उससे लिया गया टुकड़ा पुराने लिबास को भी ख़राब कर देगा। 37इसी तरह कोई भी अंगूर का ताज़ा रस पुरानी और बे-लचक मशकों में नहीं डालेगा। अगर वह ऐसा करे तो पुरानी मशकें पैदा होनेवाली गैस के बाइस फट जाएँगी। नतीजे में मै और मशकें दोनों ज़ाया हो जाएँगी। 38इसलिए अंगूर का ताज़ा रस नई मशकों में डाला जाता है जो लचकदार होती हैं। 39लेकिन जो भी पुरानी मै पीना पसंद करे वह अंगूर का नया और ताज़ा रस पसंद नहीं करेगा। वह कहेगा कि पुरानी ही बेहतर है।”

सबत के बारे में सवाल

6 एक दिन ईसा अनाज के खेतों में से गुज़र रहा था। चलते चलते उसके शागिर्द अनाज की बालें तोड़ने और अपने हाथों से मलकर खाने लगे। सबत का दिन था। 2यह देखकर कुछ फ़रीसियों ने कहा, “तुम यह क्यों कर रहे हो? सबत के दिन ऐसा करना मना है।”

3ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुमने कभी नहीं पढ़ा कि दाऊद ने क्या किया जब उसे और उसके साथियों को भूक लगी थी? 4वह अल्लाह के घर में दाख़िल हुआ और रब के लिए मख़सूसशुदा रोटियाँ लेकर खाईं, अगरचे सिर्फ़ इमामों को इन्हें खाने की इजाज़त है। और उसने अपने साथियों को भी यह रोटियाँ खिलाईं।” 5फिर ईसा ने उनसे कहा, “इब्ने-आदम सबत का मालिक है।”

सूखे हाथ की शफ़ा

6सबत के एक और दिन ईसा इबादतख़ाने में जाकर सिखाने लगा। वहाँ एक आदमी था जिसका दहना हाथ सूखा हुआ था। 7शरीअत के आलिम और फ़रीसी बड़े ग़ौर से देख रहे थे कि क्या ईसा इस आदमी को आज भी शफ़ा देगा? क्योंकि वह उस पर इलज़ाम लगाने का कोई बहाना ढूँड रहे थे। 8लेकिन ईसा ने उनकी सोच को जान लिया और उस सूखे हाथवाले आदमी से कहा, “उठ, दरमियान में खड़ा हो।” चुनाँचे वह आदमी खड़ा हुआ। 9फिर ईसा ने उनसे पूछा, “मुझे बताओ, शरीअत हमें सबत के दिन क्या करने की इजाज़त देती है, नेक काम करने की या ग़लत काम करने की, किसी की जान बचाने की या उसे तबाह करने की?” 10वह ख़ामोश होकर अपने इर्दगिर्द के तमाम लोगों की तरफ़ देखने लगा। फिर उसने कहा, “अपना हाथ आगे बढ़ा।” उसने ऐसा किया तो उसका हाथ बहाल हो गया।

11लेकिन वह आपे में न रहे और एक दूसरे से बात करने लगे कि हम ईसा से किस तरह निपट सकते हैं?

ईसा बारह रसूलों को मुक़र्रर करता है

12उन्हीं दिनों में ईसा निकलकर दुआ करने के लिए पहाड़ पर चढ़ गया। दुआ करते करते पूरी रात गुज़र गई। 13फिर उसने अपने शागिर्दों को अपने पास बुलाकर उनमें से बारह को चुन लिया, जिन्हें उसने अपने रसूल मुक़र्रर किया। उनके नाम यह हैं : 14शमाऊन जिसका लक़ब उसने पतरस रखा, उसका भाई अंदरियास, याक़ूब, यूहन्ना, फ़िलिप्पुस, बरतुलमाई, 15मत्ती, तोमा, याक़ूब बिन हलफ़ई, शमाऊन मुजाहिद, 16यहूदाह बिन याक़ूब और यहूदाह इस्करियोती जिसने बाद में उसे दुश्मन के हवाले कर दिया।

ईसा तालीम और शफ़ा देता है

17फिर वह उनके साथ पहाड़ से उतरकर एक खुले और हमवार मैदान में खड़ा हुआ। वहाँ शागिर्दों की बड़ी तादाद ने उसे घेर लिया। साथ ही बहुत-से लोग यहूदिया, यरूशलम और सूर और सैदा के साहिली इलाक़े से 18उस की तालीम सुनने और बीमारियों से शफ़ा पाने के लिए आए थे। और जिन्हें बदरूहें तंग कर रही थीं उन्हें भी

शफ़ा मिली। 19तमाम लोग उसे छूने की कोशिश
कर रहे थे, क्योंकि उसमें से क़ुव्वत निकलकर
सबको शफ़ा दे रही थी।

कौन मुबारक है?

20फिर ईसा ने अपने शागिर्दों की तरफ़ देखकर
कहा,

“मुबारक हो तुम जो ज़रूरतमंद हो,
क्योंकि अल्लाह की बादशाही
तुमको ही हासिल है।
21मुबारक हो तुम जो इस वक़्त भूके हो,
क्योंकि सेर हो जाओगे।
मुबारक हो तुम जो इस वक़्त रोते हो,
क्योंकि ख़ुशी से हँसोगे।

22मुबारक हो तुम जब लोग इसलिए तुमसे
नफ़रत करते और तुम्हारा हुक़्क़ा-पानी बंद करते
हैं कि तुम इब्ने-आदम के पैरोकार बन गए हो।
हाँ, मुबारक हो तुम जब वह इसी वजह से तुम्हें
लान-तान करते और तुम्हारी बदनामी करते हैं।
23जब वह ऐसा करते हैं तो शादमान होकर ख़ुशी
से नाचो, क्योंकि आसमान पर तुमको बड़ा अज्र
मिलेगा। उनके बापदादा ने यही सुलूक नबियों के
साथ किया था।

24मगर तुम पर अफ़सोस
जो अब दौलतमंद हो,
क्योंकि तुम्हारा सुकून
यहीं ख़त्म हो जाएगा।
25तुम पर अफ़सोस
जो इस वक़्त ख़ूब सेर हो,
क्योंकि बाद में तुम भूके होगे।
तुम पर अफ़सोस जो अब हँस रहे हो,
क्योंकि एक वक़्त आएगा
कि रो रोकर मातम करोगे।

26तुम पर अफ़सोस जिनकी तमाम लोग
तारीफ़ करते हैं, क्योंकि उनके बापदादा ने यही
सुलूक झूटे नबियों के साथ किया था।

अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखना

27लेकिन तुमको जो सुन रहे हो मैं यह बताता
हूँ, अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखो, और उनसे
भलाई करो जो तुमसे नफ़रत करते हैं। 28जो
तुम पर लानत करते हैं उन्हें बरकत दो, और जो
तुमसे बुरा सुलूक करते हैं उनके लिए दुआ करो।
29अगर कोई तुम्हारे एक गाल पर थप्पड़ मारे तो
उसे दूसरा गाल भी पेश कर दो। इसी तरह अगर
कोई तुम्हारी चादर छीन ले तो उसे क़मीस लेने
से भी न रोको। 30जो भी तुमसे कुछ माँगता है
उसे दो। और जिसने तुमसे कुछ लिया है उससे
उसे वापस देने का तक़ाज़ा न करो। 31लोगों के
साथ वैसा सुलूक करो जैसा तुम चाहते हो कि वह
तुम्हारे साथ करें।

32अगर तुम सिर्फ़ उन्हीं से मुहब्बत करो जो
तुमसे करते हैं तो इसमें तुम्हारी क्या ख़ास
मेहरबानी होगी? गुनाहगार भी ऐसा ही करते हैं।
33और अगर तुम सिर्फ़ उन्हीं से भलाई करो जो
तुमसे भलाई करते हैं तो इसमें तुम्हारी क्या ख़ास
मेहरबानी होगी? गुनाहगार भी ऐसा ही करते हैं।
34इसी तरह अगर तुम सिर्फ़ उन्हीं को उधार दो
जिनके बारे में तुम्हें अंदाज़ा है कि वह वापस कर
देंगे तो इसमें तुम्हारी क्या ख़ास मेहरबानी होगी?
गुनाहगार भी गुनाहगारों को उधार देते हैं जब
उन्हें सब कुछ वापस मिलने का यक़ीन होता है।
35नहीं, अपने दुश्मनों से मुहब्बत करो और उन्हीं
से भलाई करो। उन्हें उधार दो जिनके बारे में तुम्हें
वापस मिलने की उम्मीद नहीं है। फिर तुमको बड़ा
अज्र मिलेगा और तुम अल्लाह तआला के फ़रज़ंद
साबित होगे, क्योंकि वह भी नाशुक्रों और बुरे
लोगों पर नेकी का इज़हार करता है। 36लाज़िम
है कि तुम रहमदिल हो क्योंकि तुम्हारा बाप भी
रहमदिल है।

मुंसिफ़ न बनना

37दूसरों की अदालत न करना तो तुम्हारी भी
अदालत नहीं की जाएगी। दूसरों को मुजरिम
क़रार न देना तो तुमको भी मुजरिम क़रार नहीं

दिया जाएगा। मुआफ़ करो तो तुमको भी मुआफ़
कर दिया जाएगा। 38दो तो तुमको भी दिया
जाएगा। हाँ, जिस हिसाब से तुमने दिया उसी
हिसाब से तुमको दिया जाएगा, बल्कि पैमाना
दबा दबा और हिला हिलाकर और लबरेज़ करके
तुम्हारी झोली में डाल दिया जाएगा। क्योंकि जिस
पैमाने से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिए नापा
जाएगा।”

39फिर ईसा ने यह मिसाल पेश की। “क्या
एक अंधा दूसरे अंधे की राहनुमाई कर सकता है?
हरगिज़ नहीं! अगर वह ऐसा करे तो दोनों गढ़े में
गिर जाएंगे। 40शागिर्द अपने उस्ताद से बड़ा नहीं
होता बल्कि जब उसे पूरी ट्रेनिंग मिली हो तो वह
अपने उस्ताद ही की मानिंद होगा।

41तू क्यों ग़ौर से अपने भाई की आँख में पड़े
तिनके पर नज़र करता है जबकि तुझे वह शहतीर
नज़र नहीं आता जो तेरी अपनी आँख में है?
42तू क्योंकर अपने भाई से कह सकता है, ‘भाई,
ठहरो, मुझे तुम्हारी आँख में पड़ा तिनका निकालने
दो’ जबकि तुझे अपनी आँख का शहतीर नज़र
नहीं आता? रियाकार! पहले अपनी आँख के
शहतीर को निकाल। तब ही तुझे भाई का तिनका
साफ़ नज़र आएगा और तू उसे अच्छी तरह से
देखकर निकाल सकेगा।

दरख़्त उसके फल से पहचाना जाता है

43न अच्छा दरख़्त ख़राब फल लाता है, न
ख़राब दरख़्त अच्छा फल। 44हर क़िस्म का दरख़्त
उसके फल से पहचाना जाता है। ख़ारदार झाड़ियों
से अंजीर या अंगूर नहीं तोड़े जाते। 45नेक शख़्स
का अच्छा फल उसके दिल के अच्छे ख़ज़ाने से
निकलता है जबकि बुरे शख़्स का ख़राब फल
उसके दिल की बुराई से निकलता है। क्योंकि
जिस चीज़ से दिल भरा होता है वही छलककर
मुँह से निकलती है।

दो क़िस्म के मकान

46तुम क्यों मुझे ‘ख़ुदावंद, ख़ुदावंद’ कहकर
पुकारते हो? मेरी बात पर तो तुम अमल नहीं
करते। 47लेकिन मैं तुमको बताता हूँ कि वह
शख़्स किसकी मानिंद है जो मेरे पास आकर मेरी
बात सुन लेता और उस पर अमल करता है।
48वह उस आदमी की मानिंद है जिसने अपना
मकान बनाने के लिए गहरी बुनियाद की खुदाई
करवाई। खोद खोदकर वह चट्टान तक पहुँच गया।
उसी पर उसने मकान की बुनियाद रखी। मकान
मुकम्मल हुआ तो एक दिन सैलाब आया। ज़ोर
से बहता हुआ पानी मकान से टकराया, लेकिन
वह उसे हिला न सका क्योंकि वह मज़बूती से
बनाया गया था। 49लेकिन जो मेरी बात सुनता
और उस पर अमल नहीं करता वह उस शख़्स की
मानिंद है जिसने अपना मकान बुनियाद के बग़ैर
ज़मीन पर ही तामीर किया। ज्योंही ज़ोर से बहता
हुआ पानी उससे टकराया तो वह गिर गया और
सरासर तबाह हो गया।”

रोमी अफ़सर के ग़ुलाम की शफ़ा

7 यह सब कुछ लोगों को सुनाने के बाद ईसा
कफ़र्नहूम चला गया। 2वहाँ सौ फ़ौजियों
पर मुक़र्रर एक अफ़सर रहता था। उन दिनों में
उसका एक ग़ुलाम जो उसे बहुत अज़ीज़ था
बीमार पड़ गया। अब वह मरने को था। 3चूँकि
अफ़सर ने ईसा के बारे में सुना था इसलिए उसने
यहूदियों के कुछ बुज़ुर्ग यह दरख़ास्त करने के लिए
उसके पास भेज दिए कि वह आकर ग़ुलाम को
शफ़ा दे। 4वह ईसा के पास पहुँचकर बड़े ज़ोर से
इल्तिजा करने लगे, “यह आदमी इस लायक़ है
कि आप उस की दरख़ास्त पूरी करें, 5क्योंकि वह
हमारी क़ौम से प्यार करता है, यहाँ तक कि उसने
हमारे लिए इबादतख़ाना भी तामीर करवाया है।”
6चुनाँचे ईसा उनके साथ चल पड़ा। लेकिन
जब वह घर के क़रीब पहुँच गया तो अफ़सर ने
अपने कुछ दोस्त यह कहकर उसके पास भेज
दिए कि “ख़ुदावंद, मेरे घर में आने की तकलीफ़

न करें, क्योंकि मैं इस लायक़ नहीं हूँ। 7इसलिए
मैंने ख़ुद को आपके पास आने के लायक़ भी न
समझा। बस वहीं से कह दें तो मेरा ग़ुलाम शफ़ा
पा जाएगा। 8क्योंकि मुझे ख़ुद आला अफ़सरों
के हुक्म पर चलना पड़ता है और मेरे मातहत भी
फ़ौजी हैं। एक को कहता हूँ, ‘जा!’ तो वह जाता
है और दूसरे को ‘आ!’ तो वह आता है। इसी
तरह मैं अपने नौकर को हुक्म देता हूँ, ‘यह कर!’
तो वह करता है।”

9यह सुनकर ईसा निहायत हैरान हुआ। उसने
मुड़कर अपने पीछे आनेवाले हुजूम से कहा, “मैं
तुमको सच बताता हूँ, मैंने इसराईल में भी इस
क़िस्म का ईमान नहीं पाया।”

10जब अफ़सर का पैग़ाम पहुँचानेवाले घर
वापस आए तो उन्होंने देखा कि ग़ुलाम की सेहत
बहाल हो चुकी है।

बेवा का बेटा ज़िंदा किया जाता है

11कुछ देर के बाद ईसा अपने शागिर्दों के साथ
नायन शहर के लिए रवाना हुआ। एक बड़ा हुजूम
भी साथ चल रहा था। 12जब वह शहर के दरवाज़े
के क़रीब पहुँचा तो एक जनाज़ा निकला। जो
नौजवान फ़ौत हुआ था उस की माँ बेवा थी और
वह उसका इकलौता बेटा था। माँ के साथ शहर के
बहुत-से लोग चल रहे थे। 13उसे देखकर ख़ुदावंद
को उस पर बड़ा तरस आया। उसने उससे कहा,
“मत रो।” 14फिर वह जनाज़े के पास गया और
उसे छुआ। उसे उठानेवाले रुक गए तो ईसा ने
कहा, “ऐ नौजवान, मैं तुझे कहता हूँ कि उठ!”
15मुरदा उठ बैठा और बोलने लगा। ईसा ने उसे
उस की माँ के सुपुर्द कर दिया।

16यह देखकर तमाम लोगों पर ख़ौफ़ तारी हो
गया और वह अल्लाह की तमजीद करके कहने
लगे, “हमारे दरमियान एक बड़ा नबी बरपा हुआ
है। अल्लाह ने अपनी क़ौम पर नज़र की है।”

17और ईसा के बारे में यह ख़बर पूरे यहूदिया
और इर्दगिर्द के इलाक़े में फैल गई।

यहया का ईसा से सवाल

18यहया को भी अपने शागिर्दों की मारिफ़त
इन तमाम वाक़ियात के बारे में पता चला। इस पर
उसने दो शागिर्दों को बुलाकर 19उन्हें यह पूछने
के लिए ख़ुदावंद के पास भेजा, “क्या आप वही
हैं जिसे आना है या हम किसी और के इंतज़ार में
रहें?”

20चुनाँचे यह शागिर्द ईसा के पास पहुँच-
कर कहने लगे, “यहया बपतिस्मा देनेवाले ने हमें
यह पूछने के लिए भेजा है कि क्या आप वही
हैं जिसे आना है या हम किसी और का इंतज़ार
करें?”

21ईसा ने उसी वक़्त बहुत-से लोगों को शफ़ा
दी थी जो मुख़्तलिफ़ क़िस्म की बीमारियों,
मुसीबतों और बदरूहों की गिरिफ़्त में थे। अंधों
की आँखें भी बहाल हो गई थीं। 22इसलिए उसने
जवाब में यहया के क़ासिदों से कहा, “यहया
के पास वापस जाकर उसे सब कुछ बता देना
जो तुमने देखा और सुना है। ‘अंधे देखते, लँगड़े
चलते-फिरते हैं, कोढ़ियों को पाक-साफ़ किया
जाता है, बहरे सुनते हैं, मुरदों को ज़िंदा किया
जाता है और ग़रीबों को अल्लाह की ख़ुशख़बरी
सुनाई जाती है।’ 23यहया को बताओ, ‘मुबारक
है वह जो मेरे सबब से ठोकर खाकर बरगश्ता नहीं
होता’।”

24यहया के यह क़ासिद चले गए तो ईसा
हुजूम से यहया के बारे में बात करने लगा, “तुम
रेगिस्तान में क्या देखने गए थे? एक सरकंडा जो
हवा के हर झोंके से हिलता है? बेशक नहीं। 25या
क्या वहाँ जाकर ऐसे आदमी की तवक़्क़ो कर रहे
थे जो नफ़ीस और मुलायम लिबास पहने हुए है?
नहीं, जो शानदार कपड़े पहनते और ऐशो-इशरत
में ज़िंदगी गुज़ारते हैं वह शाही महलों में पाए जाते
हैं। 26तो फिर तुम क्या देखने गए थे? एक नबी
को? बिलकुल सहीह, बल्कि मैं तुमको बताता
हूँ कि वह नबी से भी बड़ा है। 27उसी के बारे में
कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, ‘देख मैं अपने पैग़ंबर

को तेरे आगे आगे भेज देता हूँ जो तेरे सामने
रास्ता तैयार करेगा।’ 28मैं तुमको बताता हूँ कि
इस दुनिया में पैदा होनेवाला कोई भी शख़्स यहया
से बड़ा नहीं है। तो भी अल्लाह की बादशाही में
दाख़िल होनेवाला सबसे छोटा शख़्स उससे बड़ा
है।”

29बात यह थी कि तमाम क़ौम बशमूल टैक्स
लेनेवालों ने यहया का पैग़ाम सुनकर अल्लाह
का इनसाफ़ मान लिया और यहया से बपतिस्मा
लिया था। 30सिर्फ़ फ़रीसी और शरीअत के
उलमा ने अपने बारे में अल्लाह की मरज़ी को रद्द
करके यहया का बपतिस्मा लेने से इनकार किया
था।

31ईसा ने बात जारी रखी, “चुनाँचे मैं इस
नसल के लोगों को किससे तशबीह दूँ? वह
किससे मुताबिक़त रखते हैं? 32वह उन बच्चों
की मानिंद हैं जो बाज़ार में बैठे खेल रहे हैं। उनमें
से कुछ ऊँची आवाज़ से दूसरे बच्चों से शिकायत
कर रहे हैं, ‘हमने बाँसरी बजाई तो तुम न नाचे।
फिर हमने नोहा के गीत गाए, लेकिन तुम न
रोए।’ 33देखो, यहया बपतिस्मा देनेवाला आया
और न रोटी खाई, न मै पी। यह देखकर तुम
कहते हो कि उसमें बदरूह है। 34फिर इब्ने-आदम
खाता और पीता हुआ आया। अब तुम कहते हो,
‘देखो यह कैसा पेटू और शराबी है। और वह
टैक्स लेनेवालों और गुनाहगारों का दोस्त भी है।’
35लेकिन हिकमत अपने तमाम बच्चों से ही सहीह
साबित हुई है।”

ईसा शमाऊन फ़रीसी के घर में

36एक फ़रीसी ने ईसा को खाना खाने की
दावत दी। ईसा उसके घर जाकर खाना खाने
के लिए बैठ गया। 37उस शहर में एक बदचलन
औरत रहती थी। जब उसे पता चला कि ईसा उस
फ़रीसी के घर में खाना खा रहा है तो वह इत्रदान
में बेशक़ीमत इत्र लाकर 38पीछे से उसके पाँवों
के पास खड़ी हो गई। वह रो पड़ी और उसके
आँसू टपक टपककर ईसा के पाँवों को तर करने
लगे। फिर उसने उसके पाँवों को अपने बालों से
पोंछकर उन्हें चूमा और उन पर इत्र डाला। 39जब
ईसा के फ़रीसी मेज़बान ने यह देखा तो उसने
दिल में कहा, “अगर यह आदमी नबी होता तो
उसे मालूम होता कि यह किस क़िस्म की औरत
है जो उसे छू रही है, कि यह गुनाहगार है।”

40ईसा ने इन ख़यालात के जवाब में उससे
कहा, “शमाऊन, मैं तुझे कुछ बताना चाहता हूँ।”

उसने कहा, “जी उस्ताद, बताएँ।”

41ईसा ने कहा, “एक साहूकार के दो क़र्ज़दार
थे। एक को उसने चाँदी के 500 सिक्के दिए थे
और दूसरे को 50 सिक्के। 42लेकिन दोनों अपना
क़र्ज़ अदा न कर सके। यह देखकर उसने दोनों
का क़र्ज़ मुआफ़ कर दिया। अब मुझे बता, दोनों
क़र्ज़दारों में से कौन उसे ज़्यादा अज़ीज़ रखेगा?”

43शमाऊन ने जवाब दिया, “मेरे ख़याल में वह
जिसे ज़्यादा मुआफ़ किया गया।”

ईसा ने कहा, “तूने ठीक अंदाज़ा लगाया है।”
44और औरत की तरफ़ मुड़कर उसने शमाऊन से
बात जारी रखी, “क्या तू इस औरत को देखता
है? 45जब मैं इस घर में आया तो तूने मुझे पाँव
धोने के लिए पानी न दिया। लेकिन इसने मेरे पाँवों
को अपने आँसुओं से तर करके अपने बालों से
पोंछकर ख़ुश्क कर दिया है। तूने मुझे बोसा न
दिया, लेकिन यह मेरे अंदर आने से लेकर अब
तक मेरे पाँवों को चूमने से बाज़ नहीं रही। 46तूने
मेरे सर पर ज़ैतून का तेल न डाला, लेकिन इसने
मेरे पाँवों पर इत्र डाला। 47इसलिए मैं तुझे बताता
हूँ कि इसके गुनाहों को गो वह बहुत हैं मुआफ़
कर दिया गया है, क्योंकि इसने बहुत मुहब्बत का
इज़हार किया है। लेकिन जिसे कम मुआफ़ किया
गया हो वह कम मुहब्बत रखता है।”

48फिर ईसा ने औरत से कहा, “तेरे गुनाहों को
मुआफ़ कर दिया गया है।”

49यह सुनकर जो साथ बैठे थे आपस में कहने
लगे, “यह किस क़िस्म का शख़्स है जो गुनाहों
को भी मुआफ़ करता है?”

50लेकिन ईसा ने ख़ातून से कहा, "तेरे ईमान
ने तुझे बचा लिया है। सलामती से चली जा।"

ख़िदमतगुज़ार ख़वातीन ईसा के साथ सफ़र करती हैं

8 इसके कुछ देर बाद ईसा मुख़्तलिफ़ शहरों
और देहातों में से गुज़रकर सफ़र करने
लगा। हर जगह उसने अल्लाह की बादशाही के
बारे में ख़ुशख़बरी सुनाई। उसके बारह शागिर्द
उसके साथ थे, 2नीज़ कुछ ख़वातीन भी जिन्हें
उसने बदरूहों से रिहाई और बीमारियों से शफ़ा
दी थी। इनमें से एक मरियम थी जो मग्दलीनी
कहलाती थी जिसमें से सात बदरूहें निकाली गई
थीं। 3फिर युअन्ना जो ख़ूज़ा की बीवी थी (ख़ूज़ा
हेरोदेस बादशाह का एक अफ़सर था)। सूसन्ना
और दीगर कई ख़वातीन भी थीं जो अपने माली
वसायल से उनकी ख़िदमत करती थीं।

बीज बोनेवाले की तमसील

4एक दिन ईसा ने एक बड़े हुजूम को एक
तमसील सुनाई। लोग मुख़्तलिफ़ शहरों से उसे
सुनने के लिए जमा हो गए थे।

5"एक किसान बीज बोने के लिए निक-
ला। जब बीज इधर-उधर बिखर गया तो कुछ दाने
रास्ते पर गिरे। वहाँ उन्हें पाँवों तले कुचला गया
और परिंदों ने उन्हें चुग लिया। 6कुछ पथरीली
ज़मीन पर गिरे। वहाँ वह उगने तो लगे, लेकिन
नमी की कमी थी, इसलिए पौदे कुछ देर के बाद
सूख गए। 7कुछ दाने ख़ुदरौ काँटेदार पौदों के
दरमियान भी गिरे। वहाँ वह उगने तो लगे, लेकिन
ख़ुदरौ पौदों ने साथ साथ बढ़कर उन्हें फलने-
फूलने की जगह न दी। चुनाँचे वह भी ख़त्म हो
गए। 8लेकिन ऐसे दाने भी थे जो ज़रख़ेज़ ज़मीन
पर गिरे। वहाँ वह उग सके और जब फ़सल पक
गई तो सौ गुना ज़्यादा फल पैदा हुआ।"

यह कहकर ईसा पुकार उठा, "जो सुन सकता
है वह सुन ले!"

तमसीलों का मक़सद

9उसके शागिर्दों ने उससे पूछा कि इस तमसील
का क्या मतलब है? 10जवाब में उसने कहा,
"तुमको तो अल्लाह की बादशाही के भेद समझने
की लियाक़त दी गई है। लेकिन मैं दूसरों को
समझाने के लिए तमसीलें इस्तेमाल करता हूँ
ताकि पाक कलाम पूरा हो जाए कि 'वह अपनी
आँखों से देखेंगे मगर कुछ नहीं जानेंगे, वह अपने
कानों से सुनेंगे मगर कुछ नहीं समझेंगे।'

बीज बोनेवाले की तमसील का मतलब

11तमसील का मतलब यह है : बीज से मुराद
अल्लाह का कलाम है। 12राह पर गिरे हुए दाने
वह लोग हैं जो कलाम सुनते तो हैं, लेकिन फिर
इबलीस आकर उसे उनके दिलों से छीन लेता
है, ऐसा न हो कि वह ईमान लाकर नजात पाएँ।
13पथरीली ज़मीन पर गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो
कलाम सुनकर उसे ख़ुशी से क़बूल तो कर लेते
हैं, लेकिन जड़ नहीं पकड़ते। नतीजे में अगरचे
वह कुछ देर के लिए ईमान रखते हैं तो भी जब
किसी आज़माइश का सामना करना पड़ता है तो
वह बरगश्ता हो जाते हैं। 14ख़ुदरौ काँटेदार पौदों
के दरमियान गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो सुनते
तो हैं, लेकिन जब वह चले जाते हैं तो रोज़मर्रा
की परेशानियाँ, दौलत और ज़िंदगी की ऐशो-
इशरत उन्हें फलने-फूलने नहीं देती। नतीजे में वह
फल लाने तक नहीं पहुँचते। 15इसके मुक़ाबले में
ज़रख़ेज़ ज़मीन में गिरे हुए दाने वह लोग हैं जिनका
दिल दियानतदार और अच्छा है। जब वह कलाम
सुनते हैं तो वह उसे अपनाते और साबितक़दमी
से तरक़्क़ी करते करते फल लाते हैं।

कोई चराग़ को बरतन के नीचे नहीं छुपाता

16जब कोई चराग़ जलाता है तो वह उसे किसी
बरतन या चारपाई के नीचे नहीं रखता, बल्कि उसे
शमादान पर रख देता है ताकि उस की रौशनी
अंदर आनेवालों को नज़र आए।

17जो कुछ भी इस वक़्त पोशीदा है वह आख़िर में ज़ाहिर हो जाएगा, और जो कुछ भी छुपा हुआ है वह मालूम हो जाएगा और रौशनी में लाया जाएगा।

18चुनाँचे इस पर ध्यान दो कि तुम किस तरह सुनते हो। क्योंकि जिसके पास कुछ है उसे और दिया जाएगा, जबकि जिसके पास कुछ नहीं है उससे वह भी छीन लिया जाएगा जिसके बारे में वह ख़याल करता है कि उसका है।"

ईसा की माँ और भाई

19एक दिन ईसा की माँ और भाई उसके पास आए, लेकिन वह हुजूम की वजह से उस तक न पहुँच सके। 20चुनाँचे ईसा को इत्तला दी गई, "आपकी माँ और भाई बाहर खड़े हैं और आपसे मिलना चाहते हैं।"

21उसने जवाब दिया, "मेरी माँ और भाई वह सब हैं जो अल्लाह का कलाम सुनकर उस पर अमल करते हैं।"

ईसा आँधी को थमा देता है

22एक दिन ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, "आओ, हम झील को पार करें।" चुनाँचे वह कश्ती पर सवार होकर रवाना हुए। 23जब कश्ती चली जा रही थी तो ईसा सो गया। अचानक झील पर आँधी आई। कश्ती पानी से भरने लगी और डूबने का ख़तरा था। 24फिर उन्होंने ईसा के पास जाकर उसे जगा दिया और कहा, "उस्ताद, उस्ताद, हम तबाह हो रहे हैं।"

वह जाग उठा और आँधी और मौजों को डाँटा। आँधी थम गई और लहरें बिलकुल साकित हो गईं। 25फिर उसने शागिर्दों से पूछा, "तुम्हारा ईमान कहाँ है?"

उन पर ख़ौफ़ तारी हो गया और वह सख़्त हैरान होकर आपस में कहने लगे, "आख़िर यह कौन है? वह हवा और पानी को भी हुक्म देता है, और वह उस की मानते हैं।"

ईसा एक गरासीनी आदमी से बदरूहें निकाल देता है

26फिर वह सफ़र जारी रखते हुए गरासा के इलाक़े के किनारे पर पहुँचे जो झील के पार गलील के मुक़ाबिल है। 27जब ईसा कश्ती से उतरा तो शहर का एक आदमी ईसा को मिला जो बदरूहों की गिरिफ़्त में था। वह काफ़ी देर से कपड़े पहने बग़ैर चलता-फिरता था और अपने घर के बजाए क़ब्रों में रहता था। 28ईसा को देखकर वह चिल्लाया और उसके सामने गिर गया। ऊँची आवाज़ से उसने कहा, "ईसा अल्लाह तआला के फ़रज़ंद, मेरा आपके साथ क्या वास्ता है? मैं मिन्नत करता हूँ, मुझे अज़ाब में न डालें।" 29क्योंकि ईसा ने नापाक रूह को हुक्म दिया था, "आदमी में से निकल जा!" इस बदरूह ने बड़ी देर से उस पर क़ब्ज़ा किया हुआ था, इसलिए लोगों ने उसके हाथ-पाँव ज़ंजीरों से बाँधकर उस की पहरादारी करने की कोशिश की थी, लेकिन बेफ़ायदा। वह ज़ंजीरों को तोड़ डालता और बदरूह उसे वीरान इलाक़ों में भगाए फिरती थी।

30ईसा ने उससे पूछा, "तेरा नाम क्या है?" उसने जवाब दिया, "लशकर।" इस नाम की वजह यह थी कि उसमें बहुत-सी बदरूहें घुसी हुई थीं। 31अब यह मिन्नत करने लगीं, "हमें अथाह गढ़े में जाने को न कहें।"

32उस वक़्त क़रीब की पहाड़ी पर सुअरों का बड़ा ग़ोल चर रहा था। बदरूहों ने ईसा से इलतमास की, "हमें उन सुअरों में दाख़िल होने दें।" उसने इजाज़त दे दी। 33चुनाँचे वह उस आदमी में से निकलकर सुअरों में जा घुसीं। इस पर पूरे ग़ोल के सुअर भाग भागकर पहाड़ी की ढलान पर से उतरे और झील में झपटकर डूब मरे।

34यह देखकर सुअरों के गल्लाबान भाग गए। उन्होंने शहर और देहात में इस बात का चर्चा किया 35तो लोग यह मालूम करने के लिए कि क्या हुआ है अपनी जगहों से निकलकर ईसा के पास आए।

उसके पास पहुँचे तो वह आदमी मिला जिससे
बदरूहें निकल गई थीं। अब वह कपड़े पहने ईसा
के पाँवों में बैठा था और उस की ज़हनी हालत
ठीक थी। यह देखकर वह डर गए। 36जिन्होंने
सब कुछ देखा था उन्होंने लोगों को बताया कि
इस बदरूह-गिरिफ़्ता आदमी को किस तरह रिहाई
मिली है। 37फिर उस इलाक़े के तमाम लोगों ने
ईसा से दरख़ास्त की कि वह उन्हें छोड़कर चला
जाए, क्योंकि उन पर बड़ा ख़ौफ़ छा गया था।
चुनाँचे ईसा कश्ती पर सवार होकर वापस चला
गया। 38जिस आदमी से बदरूहें निकल गई थीं
उसने उससे इलतमास की, "मुझे भी अपने साथ
जाने दें।"

लेकिन ईसा ने उसे इजाज़त न दी बल्कि कहा,
39"अपने घर वापस चला जा और दूसरों को वह
सब कुछ बता जो अल्लाह ने तेरे लिए किया है।"

चुनाँचे वह वापस चला गया और पूरे शहर में
लोगों को बताने लगा कि ईसा ने मेरे लिए क्या
कुछ किया है।

याईर की बेटी और बीमार ख़ातून

40जब ईसा झील के दूसरे किनारे पर वापस
पहुँचा तो लोगों ने उसका इस्तक़बाल किया,
क्योंकि वह उसके इंतज़ार में थे। 41इतने में एक
आदमी ईसा के पास आया जिसका नाम याईर
था। वह मक़ामी इबादतख़ाने का राहनुमा था। वह
ईसा के पाँवों में गिरकर मिन्नत करने लगा, "मेरे
घर चलें।" 42क्योंकि उस की इकलौती बेटी जो
तक़रीबन बारह साल की थी मरने को थी।

ईसा चल पड़ा। हुजूम ने उसे यों घेरा हुआ था
कि साँस लेना भी मुश्किल था। 43हुजूम में एक
ख़ातून थी जो बारह साल से ख़ून बहने के मरज़ से
रिहाई न पा सकी थी। कोई उसे शफ़ा न दे सका
था। 44अब उसने पीछे से आकर ईसा के लिबास
के किनारे को छुआ। ख़ून बहना फ़ौरन बंद हो
गया। 45लेकिन ईसा ने पूछा, "किसने मुझे छुआ
है?"

सबने इनकार किया और पतरस ने कहा,
"उस्ताद, यह तमाम लोग तो आपको घेरकर दबा
रहे हैं।"

46लेकिन ईसा ने इसरार किया, "किसी ने
ज़रूर मुझे छुआ है, क्योंकि मुझे महसूस हुआ है
कि मुझमें से तवानाई निकली है।" 47जब उस
ख़ातून ने देखा कि भेद खुल गया तो वह लरज़ती
हुई आई और उसके सामने गिर गई। पूरे हुजूम
की मौजूदगी में उसने बयान किया कि उसने ईसा
को क्यों छुआ था और कि छूते ही उसे शफ़ा मिल
गई थी। 48ईसा ने कहा, "बेटी, तेरे ईमान ने तुझे
बचा लिया है। सलामती से चली जा।"

49ईसा ने यह बात अभी ख़त्म नहीं की थी
कि इबादतख़ाने के राहनुमा याईर के घर से कोई
शख़्स आ पहुँचा। उसने कहा, "आपकी बेटी फ़ौत
हो चुकी है, अब उस्ताद को मज़ीद तकलीफ़ न
दें।"

50लेकिन ईसा ने यह सुनकर कहा, "मत
घबरा। फ़क़त ईमान रख तो वह बच जाएगी।"

51वह घर पहुँच गए तो ईसा ने किसी को
भी सिवाए पतरस, यूहन्ना, याक़ूब और बेटी
के वालिदैन के अंदर आने की इजाज़त न दी।
52तमाम लोग रो रहे और छाती पीट पीटकर
मातम कर रहे थे। ईसा ने कहा, "ख़ामोश! वह
मर नहीं गई बल्कि सो रही है।"

53लोग हँसकर उसका मज़ाक़ उड़ाने लगे,
क्योंकि वह जानते थे कि लड़की मर गई है।
54लेकिन ईसा ने लड़की का हाथ पकड़कर ऊँची
आवाज़ से कहा, "बेटी, जाग उठ!" 55लड़की
की जान वापस आ गई और वह फ़ौरन उठ खड़ी
हुई। फिर ईसा ने हुक्म दिया कि उसे कुछ खाने
को दिया जाए। 56यह सब कुछ देखकर उसके
वालिदैन हैरतज़दा हुए। लेकिन उसने उन्हें कहा
कि इसके बारे में किसी को भी न बताना।

ईसा बारह रसूलों को तबलीग़ करने भेज देता है

9 इसके बाद ईसा ने अपने बारह शा-
गिर्दों को इकट्ठा करके उन्हें बदरूहों को
निकालने और मरीज़ों को शफ़ा देने की क़ुव्वत
और इख़्तियार दिया। 2फिर उसने उन्हें अल्लाह
की बादशाही की मुनादी करने और शफ़ा देने के
लिए भेज दिया। 3उसने कहा, “सफ़र पर कुछ
साथ न लेना। न लाठी, न सामान के लिए बैग, न
रोटी, न पैसे और न एक से ज़्यादा सूट। 4जिस
घर में भी तुम जाते हो उसमें उस मक़ाम से चले
जाने तक ठहरो। 5और अगर मक़ामी लोग तुमको
क़बूल न करें तो फिर उस शहर से निकलते वक़्त
उस की गर्द अपने पाँवों से झाड़ दो। यों तुम उनके
ख़िलाफ़ गवाही दोगे।”

6चुनाँचे वह निकलकर गाँव गाँव जाकर
अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाने और मरीज़ों को
शफ़ा देने लगे।

हेरोदेस अंतिपास परेशान हो जाता है

7जब गलील के हुक्मरान हेरोदेस अंति-
पास ने सब कुछ सुना जो ईसा कर रहा था तो वह
उलझन में पड़ गया। बाज़ तो कह रहे थे कि यहया
बपतिस्मा देनेवाला जी उठा है। 8औरों का ख़याल
था कि इलियास नबी ईसा में ज़ाहिर हुआ है या
कि क़दीम ज़माने का कोई और नबी जी उठा है।
9लेकिन हेरोदेस ने कहा, “मैंने ख़ुद यहया का सर
क़लम करवाया था। तो फिर यह कौन है जिसके
बारे में मैं इस क़िस्म की बातें सुनता हूँ?” और
वह उससे मिलने की कोशिश करने लगा।

ईसा 5000 अफ़राद को खाना खिलाता है

10रसूल वापस आए तो उन्होंने ईसा को सब
कुछ सुनाया जो उन्होंने किया था। फिर वह उन्हें
अलग ले जाकर बैत-सैदा नामी शहर में आया।
11लेकिन जब लोगों को पता चला तो वह उनके
पीछे वहाँ पहुँच गए। ईसा ने उन्हें आने दिया और
अल्लाह की बादशाही के बारे में तालीम दी। साथ
साथ उसने मरीज़ों को शफ़ा भी दी। 12जब दिन
ढलने लगा तो बारह शागिर्दों ने पास आकर उससे
कहा, “लोगों को रुख़सत कर दें ताकि वह इर्दगिर्द
के देहातों और बस्तियों में जाकर रात ठहरने और
खाने का बंदोबस्त कर सकें, क्योंकि इस वीरान
जगह में कुछ नहीं मिलेगा।”

13लेकिन ईसा ने उन्हें कहा, “तुम ख़ुद इन्हें
कुछ खाने को दो।”

उन्होंने जवाब दिया, “हमारे पास सिर्फ़ पाँच
रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं। या क्या हम जाकर
इन तमाम लोगों के लिए खाना ख़रीद लाएँ?”
14(वहाँ तक़रीबन 5,000 मर्द थे।)

ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, “तमाम लोगों
को गुरोहों में तक़सीम करके बिठा दो। हर गुरोह
पचास अफ़राद पर मुश्तमिल हो।”

15शागिर्दों ने ऐसा ही किया और सबको बिठा
दिया। 16इस पर ईसा ने उन पाँच रोटियों और
दो मछलियों को लेकर आसमान की तरफ़ नज़र
उठाई और उनके लिए शुक्रगुज़ारी की दुआ की।
फिर उसने उन्हें तोड़ तोड़कर शागिर्दों को दिया
ताकि वह लोगों में तक़सीम करें। 17और सबने
जी भरकर खाया। इसके बाद जब बचे हुए टुकड़े
जमा किए गए तो बारह टोकरे भर गए।

पतरस का इक़रार

18एक दिन ईसा अकेला दुआ कर रहा था।
सिर्फ़ शागिर्द उसके साथ थे। उसने उनसे पूछा,
“मैं आम लोगों के नज़दीक कौन हूँ?”

19उन्होंने जवाब दिया, “कुछ कहते हैं यहया
बपतिस्मा देनेवाला, कुछ यह कि आप इलियास
नबी हैं। कुछ यह भी कहते हैं कि क़दीम ज़माने
का कोई नबी जी उठा है।”

20उसने पूछा, “लेकिन तुम क्या कहते हो?
तुम्हारे नज़दीक मैं कौन हूँ?”

पतरस ने जवाब दिया, “आप अल्लाह के
मसीह हैं।”

ईसा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

21यह सुनकर ईसा ने उन्हें यह बात किसी
को भी बताने से मना किया। 22उसने कहा,
“लाज़िम है कि इब्ने-आदम बहुत दुख उठाकर
बुज़ुर्गों, राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा
से रद्द किया जाए। उसे क़त्ल भी किया जाएगा,
लेकिन तीसरे दिन वह जी उठेगा।”

23फिर उसने सबसे कहा, “जो मेरे पीछे आना
चाहे वह अपने आपका इनकार करे और हर रोज़
अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे हो ले। 24क्योंकि
जो अपनी जान को बचाए रखना चाहे वह उसे खो
देगा। लेकिन जो मेरी ख़ातिर अपनी जान खो दे
वही उसे बचाएगा। 25क्या फ़ायदा है अगर किसी
को पूरी दुनिया हासिल हो जाए मगर वह अपनी
जान से महरूम हो जाए या उसे इसका नुक़सान
उठाना पड़े? 26जो भी मेरे और मेरी बातों के
सबब से शरमाए उससे इब्ने-आदम भी उस वक़्त
शरमाएगा जब वह अपने और अपने बाप के
और मुक़द्दस फ़रिश्तों के जलाल में आएगा। 27मैं
तुमको सच बताता हूँ, यहाँ कुछ ऐसे लोग खड़े हैं
जो मरने से पहले ही अल्लाह की बादशाही को
देखेंगे।”

ईसा की सूरत बदल जाती है

28तक़रीबन आठ दिन गुज़र गए। फिर ईसा
पतरस, याक़ूब और यूहन्ना को साथ ले-
कर दुआ करने के लिए पहाड़ पर चढ़ गया।
29वहाँ दुआ करते करते उसके चेहरे की सूरत
बदल गई और उसके कपड़े सफ़ेद होकर बिजली
की तरह चमकने लगे। 30अचानक दो मर्द ज़ाहिर
होकर उससे मुख़ातिब हुए। एक मूसा और दूसरा
इलियास था। 31उनकी शक्लो-सूरत पुरजलाल
थी। वह ईसा से इसके बारे में बात करने लगे कि
वह किस तरह अल्लाह का मक़सद पूरा करके
यरूशलम में इस दुनिया से कूच कर जाएगा।
32पतरस और उसके साथियों को गहरी नींद आ
गई थी, लेकिन जब वह जाग उठे तो ईसा का
जलाल देखा और यह कि दो आदमी उसके साथ
खड़े हैं। 33जब वह मर्द ईसा को छोड़कर रवाना
होने लगे तो पतरस ने कहा, “उस्ताद, कितनी
अच्छी बात है कि हम यहाँ हैं। आएँ, हम तीन
झोंपड़ियाँ बनाएँ, एक आपके लिए, एक मूसा के
लिए और एक इलियास के लिए।” लेकिन वह
नहीं जानता था कि क्या कह रहा है।

34यह कहते ही एक बादल आकर उन पर छा
गया। जब वह उसमें दाख़िल हुए तो दहशतज़दा
हो गए। 35फिर बादल से एक आवाज़ सुनाई दी,
“यह मेरा चुना हुआ फ़रज़ंद है, इसकी सुनो।”

36आवाज़ ख़त्म हुई तो ईसा अकेला ही था।
और उन दिनों में शागिर्दों ने किसी को भी इस
वाक़िये के बारे में न बताया बल्कि ख़ामोश रहे।

ईसा लड़के में से बदरूह निकालता है

37अगले दिन वह पहाड़ से उतर आए तो
एक बड़ा हुजूम ईसा से मिलने आया। 38हुजूम
में से एक आदमी ने ऊँची आवाज़ से कहा,
“उस्ताद, मेहरबानी करके मेरे बेटे पर नज़र करें।
वह मेरा इकलौता बेटा है। 39एक बदरूह उसे
बार बार अपनी गिरिफ़्त में ले लेती है। फिर
वह अचानक चीख़ें मारने लगता है। बदरूह उसे
झँझोड़कर इतना तंग करती है कि उसके मुँह से
झाग निकलने लगता है। वह उसे कुचल कुचलकर
मुश्किल से छोड़ती है। 40मैंने आपके शागिर्दों से
दरख़ास्त की थी कि वह उसे निकालें, लेकिन वह
नाकाम रहे।”

41ईसा ने कहा, “ईमान से ख़ाली और टेढ़ी
नसल! मैं कब तक तुम्हारे पास रहूँ, कब तक
तुम्हें बरदाश्त करूँ?” फिर उसने आदमी से कहा,
“अपने बेटे को ले आ।”

42बेटा ईसा के पास आ रहा था तो बदरूह उसे
ज़मीन पर पटख़कर झँझोड़ने लगी। लेकिन ईसा
ने नापाक रूह को डाँटकर बच्चे को शफ़ा दी।
फिर उसने उसे वापस बाप के सुपुर्द कर दिया।
43तमाम लोग अल्लाह की अज़ीम क़ुदरत को
देखकर हक्का-बक्का रह गए।

ईसा की मौत का दूसरा एलान

अभी सब उन तमाम कामों पर ताज्जुब कर
रहे थे जो ईसा ने हाल ही में किए थे कि उसने
अपने शागिर्दों से कहा, 44“मेरी इस बात पर ख़ूब
ध्यान दो, इब्ने-आदम को आदमियों के हवाले कर
दिया जाएगा।” 45लेकिन शागिर्द इसका मतलब
न समझे। यह बात उनसे पोशीदा रही और वह
इसे समझ न सके। नीज़, वह ईसा से इसके बारे
में पूछने से डरते भी थे।

कौन सबसे बड़ा है?

46फिर शागिर्द बहस करने लगे कि हममें से
कौन सबसे बड़ा है। 47लेकिन ईसा जानता था
कि वह क्या सोच रहे हैं। उसने एक छोटे बच्चे को
लेकर अपने पास खड़ा किया 48और उनसे कहा,
“जो मेरे नाम में इस बच्चे को क़बूल करता है
वह मुझे ही क़बूल करता है। और जो मुझे क़बूल
करता है वह उसे क़बूल करता है जिसने मुझे भेजा
है। चुनाँचे तुममें से जो सबसे छोटा है वही बड़ा
है।”

जो तुम्हारे ख़िलाफ़ नहीं वह तुम्हारे हक़ में है

49यूहन्ना बोल उठा, “उस्ताद, हमने किसी को
देखा जो आपका नाम लेकर बदरूहें निकाल रहा
था। हमने उसे मना किया, क्योंकि वह हमारे साथ
मिलकर आपकी पैरवी नहीं करता।”
50लेकिन ईसा ने कहा, “उसे मना न करना,
क्योंकि जो तुम्हारे ख़िलाफ़ नहीं वह तुम्हारे हक़
में है।”

एक सामरी गाँव ईसा को ठहरने नहीं देता

51जब वह वक़्त क़रीब आया कि ईसा को
आसमान पर उठा लिया जाए तो वह बड़े अज़्म
के साथ यरूशलम की तरफ़ सफ़र करने लगा।
52इस मक़सद के तहत उसने अपने आगे क़ासिद
भेज दिए। चलते चलते वह सामरियों के एक
गाँव में पहुँचे जहाँ वह उसके लिए ठहरने की
जगह तैयार करना चाहते थे। 53लेकिन गाँव
के लोगों ने ईसा को टिकने न दिया, क्योंकि
उस की मनज़िले-मक़सूद यरूशलम थी। 54यह
देखकर उसके शागिर्द याक़ूब और यूहन्ना ने कहा,
“ख़ुदावंद, क्या [इलियास की तरह] हम कहें कि
आसमान पर से आग नाज़िल होकर इनको भस्म
कर दे?”
55लेकिन ईसा ने मुड़कर उन्हें डाँटा [और कहा,
“तुम नहीं जानते कि तुम किस क़िस्म की रूह के
हो। इब्ने-आदम इसलिए नहीं आया कि लोगों को
हलाक करे बल्कि इसलिए कि उन्हें बचाए।”]
56चुनाँचे वह किसी और गाँव में चले गए।

पैरवी की संजीदगी

57सफ़र करते करते किसी ने रास्ते में ईसा से
कहा, “जहाँ भी आप जाएँ मैं आपके पीछे चलता
रहूँगा।”
58ईसा ने जवाब दिया, “लोमड़ियाँ अपने भटों
में और परिंदे अपने घोंसलों में आराम कर सकते
हैं, लेकिन इब्ने-आदम के पास सर रखकर आराम
करने की कोई जगह नहीं।”
59किसी और से उसने कहा, “मेरे पीछे हो
ले।”
लेकिन उस आदमी ने कहा, “ख़ुदावंद, मुझे
पहले जाकर अपने बाप को दफ़न करने की
इजाज़त दें।”
60लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “मुरदों को
अपने मुरदे दफ़नाने दे। तू जाकर अल्लाह की
बादशाही की मुनादी कर।”
61एक और आदमी ने यह माज़रत चाही,
“ख़ुदावंद, मैं ज़रूर आपके पीछे हो लूँगा। लेकिन
पहले मुझे अपने घरवालों को ख़ैरबाद कहने दें।”
62लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “जो भी हल
चलाते हुए पीछे की तरफ़ देखे वह अल्लाह की
बादशाही के लायक़ नहीं है।”

ईसा 72 शागिर्दों को मुनादी के लिए भेजता है

10 इसके बाद ख़ुदावंद ने मज़ीद 72
शागिर्दों को मुक़र्रर किया और उन्हें दो
दो करके अपने आगे हर उस शहर और जगह भेज
दिया जहाँ वह अभी जाने को था। 2उसने उनसे
कहा, "फ़सल बहुत है, लेकिन मज़दूर थोड़े।
इसलिए फ़सल के मालिक से दरख़ास्त करो कि
वह फ़सल काटने के लिए मज़ीद मज़दूर भेज दे।
3अब रवाना हो जाओ, लेकिन ज़हन में यह बात
रखो कि तुम भेड़ के बच्चों की मानिंद हो जिन्हें मैं
भेड़ियों के दरमियान भेज रहा हूँ। 4अपने साथ न
बटवा ले जाना, न सामान के लिए बैग, न जूते।
और रास्ते में किसी को भी सलाम न करना। 5जब
भी तुम किसी के घर में दाख़िल हो तो पहले
यह कहना, 'इस घर की सलामती हो।' 6अगर
उसमें सलामती का कोई बंदा होगा तो तुम्हारी
बरकत उस पर ठहरेगी, वरना वह तुम पर लौट
आएगी। 7सलामती के ऐसे घर में ठहरो और वह
कुछ खाओ-पियो जो तुमको दिया जाए, क्योंकि
मज़दूर अपनी मज़दूरी का हक़दार है। मुख़्तलिफ़
घरों में घूमते न फिरो बल्कि एक ही घर में रहो।
8जब भी तुम किसी शहर में दाख़िल हो और लोग
तुमको क़बूल करें तो जो कुछ वह तुमको खाने
को दें उसे खाओ। 9वहाँ के मरीज़ों को शफ़ा
देकर बताओ कि अल्लाह की बादशाही क़रीब आ
गई है। 10लेकिन अगर तुम किसी शहर में जाओ
और लोग तुमको क़बूल न करें तो फिर शहर की
सड़कों पर खड़े होकर कहो, 11'हम अपने जूतों
से तुम्हारे शहर की गर्द भी झाड़ देते हैं। यों हम
तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही देते हैं। लेकिन यह जान
लो कि अल्लाह की बादशाही क़रीब आ गई है।'
12मैं तुमको बताता हूँ कि उस दिन उस शहर की
निसबत सदूम का हाल ज़्यादा क़ाबिले-बरदाश्त
होगा।

तौबा न करनेवाले शहरों पर अफ़सोस

13ऐ ख़ुराज़ीन, तुझ पर अफ़सोस! बैत-सैदा,
तुझ पर अफ़सोस! अगर सूर और सैदा में
वह मोजिज़े किए गए होते जो तुममें हुए तो
वहाँ के लोग कब के टाट ओढ़कर और सर पर
राख डालकर तौबा कर चुके होते। 14जी हाँ,
अदालत के दिन तुम्हारी निसबत सूर और सैदा
का हाल ज़्यादा क़ाबिले-बरदाश्त होगा। 15और तू
ऐ कफ़र्नहूम, क्या तुझे आसमान तक सरफ़राज़
किया जाएगा? हरगिज़ नहीं, बल्कि तू उतरता
उतरता पाताल तक पहुँचेगा।

16जिसने तुम्हारी सुनी उसने मेरी भी सुनी।
और जिसने तुमको रद्द किया उसने मुझे भी रद्द
किया। और मुझे रद्द करनेवाले ने उसे भी रद्द किया
जिसने मुझे भेजा है।"

72 शागिर्दों की वापसी

1772 शागिर्द लौट आए। वह बहुत ख़ुश थे
और कहने लगे, "ख़ुदावंद, जब हम आपका नाम
लेते हैं तो बदरूहें भी हमारे ताबे हो जाती हैं।"

18ईसा ने जवाब दिया, "इबलीस मुझे नज़र
आया और वह बिजली की तरह आसमान से गिर
रहा था। 19देखो, मैंने तुमको साँपों और बिछुओं
पर चलने का इख़्तियार दिया है। तुमको दुश्मन
की पूरी ताक़त पर इख़्तियार हासिल है। कुछ भी
तुमको नुक़सान नहीं पहुँचा सकेगा। 20लेकिन
इस वजह से ख़ुशी न मनाओ कि बदरूहें तुम्हारे
ताबे हैं, बल्कि इस वजह से कि तुम्हारे नाम
आसमान पर दर्ज किए गए हैं।"

बाप की तमजीद

21उसी वक़्त ईसा रूहुल-क़ुद्स में ख़ुशी
मनाने लगा। उसने कहा, "ऐ बाप, आस-
मानो-ज़मीन के मालिक! मैं तेरी तमजीद करता
हूँ कि तूने यह बात दानाओं और अक़्लमंदों से
छुपाकर छोटे बच्चों पर ज़ाहिर कर दी है। हाँ मेरे
बाप, क्योंकि यही तुझे पसंद आया।

22मेरे बाप ने सब कुछ मेरे सुपुर्द कर दिया है।
कोई नहीं जानता कि फ़रज़ंद कौन है सिवाए बाप
के। और कोई नहीं जानता कि बाप कौन है सिवाए
फ़रज़ंद के और उन लोगों के जिन पर फ़रज़ंद यह
ज़ाहिर करना चाहता है।”

23फिर ईसा शागिर्दों की तरफ़ मुड़ा और
अलहदगी में उनसे कहने लगा, “मुबारक हैं वह
आँखें जो वह कुछ देखती हैं जो तुमने देखा है।
24मैं तुमको बताता हूँ कि बहुत-से नबी और
बादशाह यह देखना चाहते थे जो तुम देखते हो,
लेकिन उन्होंने न देखा। और वह यह सुनने के
आरज़ूमंद थे जो तुम सुनते हो, लेकिन उन्होंने न
सुना।”

नेक सामरी की तमसील

25एक मौक़े पर शरीअत का एक आलिम ईसा
को फँसाने की ख़ातिर खड़ा हुआ। उसने पूछा,
“उस्ताद, मैं क्या क्या करने से मीरास में अबदी
ज़िंदगी पा सकता हूँ?”

26ईसा ने उससे कहा, “शरीअत में क्या लिखा
है? तू उसमें क्या पढ़ता है?”

27आदमी ने जवाब दिया, “‘रब अपने ख़ुदा
से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान, अपनी पूरी
ताक़त और अपने पूरे ज़हन से प्यार करना।’ और
‘अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू
अपने आपसे रखता है’।”

28ईसा ने कहा, “तूने ठीक जवाब दिया। ऐसा
ही कर तो ज़िंदा रहेगा।”

29लेकिन आलिम ने अपने आपको दुरुस्त
साबित करने की ग़रज़ से पूछा, “तो मेरा पड़ोसी
कौन है?”

30ईसा ने जवाब में कहा, “एक आदमी
यरूशलम से यरीहू की तरफ़ जा रहा था कि वह
डाकुओं के हाथों में पड़ गया। उन्होंने उसके कपड़े
उतारकर उसे ख़ूब मारा और अधमुआ छोड़कर
चले गए। 31इत्तफ़ाक़ से एक इमाम भी उसी
रास्ते पर यरीहू की तरफ़ चल रहा था। लेकिन
जब उसने ज़ख़मी आदमी को देखा तो रास्ते की
परली तरफ़ होकर आगे निकल गया। 32लावी
क़बीले का एक ख़ादिम भी वहाँ से गुज़रा। लेकिन
वह भी रास्ते की परली तरफ़ से आगे निकल
गया। 33फिर सामरिया का एक मुसाफ़िर वहाँ
से गुज़रा। जब उसने ज़ख़मी आदमी को देखा तो
उसे उस पर तरस आया। 34वह उसके पास गया
और उसके ज़ख़मों पर तेल और मै लगाकर उन
पर पट्टियाँ बाँध दीं। फिर उसको अपने गधे पर
बिठाकर सराय तक ले गया। वहाँ उसने उस की
मज़ीद देख-भाल की। 35अगले दिन उसने चाँदी
के दो सिक्के निकालकर सराय के मालिक को
दिए और कहा, ‘इसकी देख-भाल करना। अगर
ख़र्चा इससे बढ़कर हुआ तो मैं वापसी पर अदा
कर दूँगा’।”

36फिर ईसा ने पूछा, “अब तेरा क्या ख़याल है,
डाकुओं की ज़द में आनेवाले आदमी का पड़ोसी
कौन था? इमाम, लावी या सामरी?”

37आलिम ने जवाब दिया, “वह जिसने उस पर
रहम किया।”

ईसा ने कहा, “बिलकुल ठीक। अब तू भी
जाकर ऐसा ही कर।”

ईसा मरियम और मर्था के घर जाता है

38फिर ईसा शागिर्दों के साथ आगे निक-
ला। चलते चलते वह एक गाँव में पहुँचा। वहाँ
की एक औरत बनाम मर्था ने उसे अपने घर में
ख़ुशआमदीद कहा। 39मर्था की एक बहन थी
जिसका नाम मरियम था। वह ख़ुदावंद के पाँवों
में बैठकर उस की बातें सुनने लगी 40जबकि
मर्था मेहमानों की ख़िदमत करते करते थक गई।
आख़िरकार वह ईसा के पास आकर कहने लगी,
“ख़ुदावंद, क्या आपको परवा नहीं कि मेरी बहन
ने मेहमानों की ख़िदमत का पूरा इंतज़ाम मुझ पर
छोड़ दिया है? उससे कहें कि वह मेरी मदद करे।”

41लेकिन ख़ुदावंद ईसा ने जवाब में कहा,
“मर्था, मर्था, तू बहुत-सी फ़िकरों और परेशानियों
में पड़ गई है। 42लेकिन एक बात ज़रूरी है।

मरियम ने बेहतर हिस्सा चुन लिया है और यह उससे छीना नहीं जाएगा।”

दुआ किस तरह करनी है

11 एक दिन ईसा कहीं दुआ कर रहा था। जब वह फ़ारिग़ हुआ तो उसके किसी शागिर्द ने कहा, “ख़ुदावंद, हमें दुआ करना सिखाएँ, जिस तरह यहया ने भी अपने शागिर्दों को दुआ करने की तालीम दी।”

2ईसा ने कहा, “दुआ करते वक़्त यों कहना,
ऐ बाप,
तेरा नाम मुक़द्दस माना जाए।
तेरी बादशाही आए।
3हर रोज़ हमें हमारी रोज़ की रोटी दे।
4हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर।
क्योंकि हम भी हर एक को मुआफ़ करते हैं
जो हमारा गुनाह करता है।[a]
और हमें आज़माइश में न पड़ने दे।”

माँगते रहो

5फिर उसने उनसे कहा, “अगर तुममें से कोई
आधी रात के वक़्त अपने दोस्त के घर जाकर कहे,
‘भाई, मुझे तीन रोटियाँ दे, बाद में मैं यह वापस
कर दूँगा। 6क्योंकि मेरा दोस्त सफ़र करके मेरे
पास आया है और मैं उसे खाने के लिए कुछ नहीं
दे सकता।’ 7अब फ़र्ज़ करो कि यह दोस्त अंदर
से जवाब दे, ‘मेहरबानी करके मुझे तंग न कर।
दरवाज़े पर ताला लगा है और मेरे बच्चे मेरे साथ
बिस्तर पर हैं, इसलिए मैं तुझे देने के लिए उठ
नहीं सकता।’ 8लेकिन मैं तुमको यह बताता हूँ
कि अगर वह दोस्ती की ख़ातिर न भी उठे, तो भी
वह अपने दोस्त के बेजा इसरार की वजह से उस
की तमाम ज़रूरत पूरी करेगा।

9चुनाँचे माँगते रहो तो तुमको दिया जाएगा,
ढूँडते रहो तो तुमको मिल जाएगा। खटखटाते
रहो तो तुम्हारे लिए दरवाज़ा खोल दिया जाएगा।
10क्योंकि जो भी माँगता है वह पाता है, जो ढूँडता
है उसे मिलता है और जो खटखटाता है उसके
लिए दरवाज़ा खोल दिया जाता है। 11तुम बापों में
से कौन अपने बेटे को साँप देगा अगर वह मछली
माँगे? 12या कौन उसे बिच्छू देगा अगर वह अंडा
माँगे? कोई नहीं! 13जब तुम बुरे होने के बावुजूद
इतने समझदार हो कि अपने बच्चों को अच्छी
चीज़ें दे सकते हो तो फिर कितनी ज़्यादा यक़ीनी
बात है कि आसमानी बाप अपने माँगनेवालों को
रूहुल-क़ुद्स देगा।”

ईसा और बदरूहों का सरदार

14एक दिन ईसा ने एक ऐसी बदरूह निकाल
दी जो गूँगी थी। जब वह गूँगे आदमी में से निकली
तो वह बोलने लगा। वहाँ पर जमा लोग हक्का-
बक्का रह गए। 15लेकिन बाज़ ने कहा, “यह तो
बदरूहों के सरदार बाल-ज़बूल की मदद से बदरूहों
को निकालता है।”

16औरों ने उसे आज़माने के लिए किसी इलाही
निशान का मुतालबा किया। 17लेकिन ईसा ने
उनके ख़यालात जानकर कहा, “जिस बादशाही
में भी फूट पड़ जाए वह तबाह हो जाएगी, और
जिस घराने की ऐसी हालत हो वह भी ख़ाक में
मिल जाएगा। 18तुम कहते हो कि मैं बाल-ज़बूल
की मदद से बदरूहों को निकालता हूँ। लेकिन
अगर इबलीस में फूट पड़ गई है तो फिर उस
की बादशाही किस तरह क़ायम रह सकती है?
19दूसरा सवाल यह है, अगर मैं बाल-ज़बूल की
मदद से बदरूहों को निकालता हूँ तो तुम्हारे बेटे
उन्हें किसके ज़रीए निकालते हैं? चुनाँचे वही इस
बात में तुम्हारे मुंसिफ़ होंगे। 20लेकिन अगर मैं
अल्लाह की क़ुदरत से बदरूहों को निकालता हूँ
तो फिर अल्लाह की बादशाही तुम्हारे पास पहुँच
चुकी है।

21जब तक कोई ज़ोरावर आदमी हथियारों से
लैस अपने डेरे की पहरादारी करे उस वक़्त तक
उस की मिलकियत महफ़ूज़ रहती है। 22लेकिन
अगर कोई ज़्यादा ताक़तवर शख़्स हमला करके

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : जो हमारा क़र्ज़दार है।

उस पर ग़ालिब आए तो वह उसके असला पर
क़ब्ज़ा करेगा जिस पर उसका भरोसा था, और
लूटा हुआ माल अपने लोगों में तक़सीम कर देगा।
23जो मेरे साथ नहीं वह मेरे ख़िलाफ़ है और
जो मेरे साथ जमा नहीं करता वह बिखेरता है।

बदरूह की वापसी

24जब कोई बदरूह किसी शख़्स में से निकलती
है तो वह वीरान इलाक़ों में से गुज़रती हुई आराम
की जगह तलाश करती है। लेकिन जब उसे कोई
ऐसा मक़ाम नहीं मिलता तो वह कहती है, 'मैं
अपने उस घर में वापस चली जाऊँगी जिसमें से
निकली थी।' 25वह वापस आकर देखती है कि
किसी ने झाड़ू देकर सब कुछ सलीक़े से रख दिया
है। 26फिर वह जाकर सात और बदरूहें ढूँड लाती
है जो उससे बदतर होती हैं, और वह सब उस
शख़्स में घुसकर रहने लगती हैं। चुनाँचे अब उस
आदमी की हालत पहले की निसबत ज़्यादा बुरी
हो जाती है।"

कौन मुबारक है?

27ईसा अभी यह बात कर ही रहा था कि
एक औरत ने ऊँची आवाज़ से कहा, "आपकी
माँ मुबारक है जिसने आपको जन्म दिया और
आपको दूध पिलाया।"
28लेकिन ईसा ने जवाब दिया, "बात यह नहीं
है। हक़ीक़त में वह मुबारक हैं जो अल्लाह का
कलाम सुनकर उस पर अमल करते हैं।"

इलाही निशान का तक़ाज़ा

29सुननेवालों की तादाद बहुत बढ़ गई तो
वह कहने लगा, "यह नसल शरीर है, क्योंकि
यह मुझसे इलाही निशान का तक़ाज़ा करती
है। लेकिन इसे कोई भी इलाही निशान पेश
नहीं किया जाएगा सिवाए यूनुस के निशान
के। 30क्योंकि जिस तरह यूनुस नीनवा शहर
के बाशिंदों के लिए निशान था बिलकुल उसी
तरह इब्ने-आदम इस नसल के लिए निशान
होगा। 31क़ियामत के दिन जुनूबी मुल्क सबा की
मलिका इस नसल के लोगों के साथ खड़ी होकर
उन्हें मुजरिम क़रार देगी। क्योंकि वह दूर-दराज़
मुल्क से सुलेमान की हिकमत सुनने के लिए आई
थी जबकि यहाँ वह है जो सुलेमान से भी बड़ा है।
32उस दिन नीनवा के बाशिंदे भी इस नसल के
लोगों के साथ खड़े होकर उन्हें मुजरिम ठहराएँगे।
क्योंकि यूनुस के एलान पर उन्होंने तौबा की थी
जबकि यहाँ वह है जो यूनुस से भी बड़ा है।

बदन की रौशनी

33जब कोई शख़्स चराग़ जलाता है तो न वह
उसे छुपाता, न बरतन के नीचे रखता बल्कि उसे
शमादान पर रख देता है ताकि उस की रौशनी
अंदर आनेवालों को नज़र आए। 34तेरी आँख तेरे
बदन का चराग़ है। अगर तेरी आँख ठीक हो तो
तेरा पूरा जिस्म रौशन होगा। लेकिन अगर आँख
ख़राब हो तो पूरा जिस्म अंधेरा ही अंधेरा होगा।
35ख़बरदार! ऐसा न हो कि जो रौशनी तेरे अंदर
है वह हक़ीक़त में तारीकी हो। 36चुनाँचे अगर तेरा
पूरा जिस्म रौशन हो और कोई भी हिस्सा तारीक
न हो तो फिर वह बिलकुल रौशन होगा, ऐसा जैसा
उस वक़्त होता है जब चराग़ तुझे अपने चमकने-
दमकने से रौशन कर देता है।"

फ़रीसियों पर अफ़सोस

37ईसा अभी बात कर रहा था कि किसी
फ़रीसी ने उसे खाने की दावत दी। चुनाँचे वह
उसके घर में जाकर खाने के लिए बैठ गया।
38मेज़बान बड़ा हैरान हुआ, क्योंकि उसने देखा
कि ईसा हाथ धोए बग़ैर खाने के लिए बैठ गया
है। 39लेकिन ख़ुदावंद ने उससे कहा, "देखो,
तुम फ़रीसी बाहर से हर प्याले और बरतन की
सफ़ाई करते हो, लेकिन अंदर से तुम लूट-मार
और शरारत से भरे होते हो। 40नादानो! अल्लाह
ने बाहरवाले हिस्से को ख़लक़ किया, तो क्या
उसने अंदरवाले हिस्से को नहीं बनाया? 41चुनाँचे

जो कुछ बरतन के अंदर है उसे ग़रीबों को दे दो।
फिर तुम्हारे लिए सब कुछ पाक-साफ़ होगा।
42फ़रीसियो, तुम पर अफ़सोस! क्योंकि
एक तरफ़ तुम पौदीना, सदाब और बाग़ की हर
क़िस्म की तरकारी का दसवाँ हिस्सा अल्लाह के
लिए मख़सूस करते हो, लेकिन दूसरी तरफ़ तुम
इनसाफ़ और अल्लाह की मुहब्बत को नज़रंदाज़
करते हो। लाज़िम है कि तुम यह काम भी करो
और पहला भी न छोड़ो।
43फ़रीसियो, तुम पर अफ़सोस! क्योंकि तुम
इबादतख़ानों की इज़्ज़त की कुरसियों पर बैठने
के लिए बेचैन रहते और बाज़ार में लोगों का
सलाम सुनने के लिए तड़पते हो। 44हाँ, तुम पर
अफ़सोस! क्योंकि तुम पोशीदा क़ब्रों की मानिंद
हो जिन पर से लोग नादानिस्ता तौर पर गुज़रते
हैं।”
45शरीअत के एक आलिम ने एतराज़ किया,
“उस्ताद, आप यह कहकर हमारी भी बेइज़्ज़ती
करते हैं।”
46ईसा ने जवाब दिया, “तुम शरीअत के
आलिमों पर भी अफ़सोस! क्योंकि तुम लोगों पर
भारी बोझ डाल देते हो जो मुश्किल से उठाया जा
सकता है। न सिर्फ़ यह बल्कि तुम ख़ुद इस बोझ
को अपनी एक उँगली भी नहीं लगाते। 47तुम
पर अफ़सोस! क्योंकि तुम नबियों के मज़ार
बना देते हो, उनके जिन्हें तुम्हारे बापदादा ने मार
डाला। 48इससे तुम गवाही देते हो कि तुम वह
कुछ पसंद करते हो जो तुम्हारे बापदादा ने किया।
उन्होंने नबियों को क़त्ल किया जबकि तुम उनके
मज़ार तामीर करते हो। 49इसलिए अल्लाह की
हिकमत ने कहा, ‘मैं उनमें नबी और रसूल भेज
दूँगी। उनमें से बाज़ को वह क़त्ल करेंगे और
बाज़ को सताएँगे।’ 50नतीजे में यह नसल तमाम
नबियों के क़त्ल की ज़िम्मेदार ठहरेगी—दुनिया
की तख़लीक़ से लेकर आज तक, 51यानी हाबील
के क़त्ल से लेकर ज़करियाह के क़त्ल तक, जिसे
बैतुल-मुक़द्दस के सहन में मौजूद क़ुरबानगाह
और बैतुल-मुक़द्दस के दरवाज़े के दरमियान क़त्ल
किया गया। हाँ, मैं तुमको बताता हूँ कि यह नसल
ज़रूर उनकी ज़िम्मेदार ठहरेगी।
52शरीअत के आलिमो, तुम पर अफ़-
सोस! क्योंकि तुमने इल्म की कुंजी को छीन
लिया है। न सिर्फ़ यह कि तुम ख़ुद दाख़िल नहीं
हुए, बल्कि तुमने दाख़िल होनेवालों को भी रोक
लिया।”
53जब ईसा वहाँ से निकला तो आलिम और
फ़रीसी उसके सख़्त मुख़ालिफ़ हो गए और बड़े
ग़ौर से उस की पूछ-गछ करने लगे। 54वह इस
ताक में रहे कि उसे मुँह से निकली किसी बात
की वजह से पकड़ें।

रियाकारी से ख़बरदार रहो!

12 इतने में कई हज़ार लोग जमा हो गए
थे। बड़ी तादाद की वजह से वह एक
दूसरे पर गिरे पड़ते थे। फिर ईसा अपने शागिर्दों
से यह बात करने लगा, “फ़रीसियों के ख़मीर
यानी रियाकारी से ख़बरदार! 2जो कुछ भी
अभी छुपा हुआ है उसे आख़िर में ज़ाहिर किया
जाएगा और जो कुछ भी इस वक़्त पोशीदा है
उसका राज़ आख़िर में खुल जाएगा। 3इसलिए
जो कुछ तुमने अंधेरे में कहा है वह रोज़े-रौशन में
सुनाया जाएगा और जो कुछ तुमने अंदरूनी कमरों
का दरवाज़ा बंद करके आहिस्ता आहिस्ता कान
में बयान किया है उसका छतों से एलान किया
जाएगा।

किससे डरना चाहिए?

4मेरे अज़ीज़ो, उनसे मत डरना जो सिर्फ़ जिस्म
को क़त्ल करते हैं और मज़ीद नुक़सान नहीं पहुँचा
सकते। 5मैं तुमको बताता हूँ कि किससे डरना
है। अल्लाह से डरो, जो तुम्हें हलाक करने के बाद
जहन्नुम में फेंकने का इख़्तियार भी रखता है। जी
हाँ, उसी से ख़ौफ़ खाओ।
6क्या पाँच चिड़ियाँ दो पैसों में नहीं
बिकतीं? तो भी अल्लाह हर एक की फ़िकर
करके एक को भी नहीं भूलता। 7हाँ, बल्कि

तुम्हारे सर के सब बाल भी गिने हुए हैं। लिहाज़ा मत डरो। तुम्हारी क़दरो-क़ीमत बहुत-सी चिड़ियों से कहीं ज़्यादा है।

मसीह का इक़रार या इनकार करने के नतीजे

8मैं तुमको बताता हूँ, जो भी लोगों के सामने मेरा इक़रार करे उसका इक़रार इब्ने-आदम भी फ़रिश्तों के सामने करेगा। 9लेकिन जो लोगों के सामने मेरा इनकार करे उसका भी अल्लाह के फ़रिश्तों के सामने इनकार किया जाएगा।

10और जो भी इब्ने-आदम के ख़िलाफ़ बात करे उसे मुआफ़ किया जा सकता है। लेकिन जो रूहुल-क़ुद्स के ख़िलाफ़ कुफ़र बके उसे मुआफ़ नहीं किया जाएगा।

11जब लोग तुमको इबादतख़ानों में और हाकिमों और इख़्तियारवालों के सामने घसीटकर ले जाएंगे तो यह सोचते सोचते परेशान न हो जाना कि मैं किस तरह अपना दिफ़ा करूँ या क्या कहूँ,
12क्योंकि रूहुल-क़ुद्स तुमको उसी वक़्त सिखा देगा कि तुमको क्या कहना है।”

नादान अमीर की तमसील

13किसी ने भीड़ में से कहा, “उस्ताद, मेरे भाई से कहें कि मीरास का मेरा हिस्सा मुझे दे।”

14ईसा ने जवाब दिया, “भई, किसने मुझे तुम पर जज या तक़सीम करनेवाला मुक़र्रर किया है?” 15फिर उसने उनसे मज़ीद कहा, “ख़बरदार! हर क़िस्म के लालच से बचे रहना, क्योंकि इनसान की ज़िंदगी उसके मालो-दौलत की कसरत पर मुनहसिर नहीं।”

16उसने उन्हें एक तमसील सुनाई। “किसी अमीर आदमी की ज़मीन में अच्छी फ़सल पैदा
हुई। 17चुनाँचे वह सोचने लगा, ‘अब मैं क्या करूँ? मेरे पास तो इतनी जगह नहीं जहाँ मैं सब
कुछ जमा करके रखूँ।’ 18फिर उसने कहा, ‘मैं यह करूँगा कि अपने गोदामों को ढाकर इनसे बड़े तामीर करूँगा। उनमें अपना तमाम अनाज और बाक़ी पैदावार जमा कर लूँगा। 19फिर मैं अपने
आपसे कहूँगा कि लो, इन अच्छी चीज़ों से तेरी ज़रूरियात बहुत सालों तक पूरी होती रहेंगी। अब आराम कर। खा, पी और ख़ुशी मना।’ 20लेकिन
अल्लाह ने उससे कहा, ‘अहमक़! इसी रात तू मर जाएगा। तो फिर जो चीज़ें तूने जमा की हैं वह किसकी होंगी?’

21यही उस शख़्स का अंजाम है जो सिर्फ़ अपने लिए चीज़ें जमा करता है जबकि वह अल्लाह के सामने ग़रीब है।”

अल्लाह पर भरोसा

22फिर ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, “इसलिए अपनी ज़िंदगी की ज़रूरियात पूरी करने के लिए परेशान न रहो कि हाय, मैं क्या खाऊँ। और जिस्म के लिए फ़िकरमंद न रहो कि हाय, मैं
क्या पहनूँ। 23ज़िंदगी तो खाने से ज़्यादा अहम है
और जिस्म पोशाक से ज़्यादा। 24कौवों पर ग़ौर करो। न वह बीज बोते, न फ़सलें काटते हैं। उनके पास न स्टोर होता है, न गोदाम। तो भी अल्लाह ख़ुद उन्हें खाना खिलाता है। और तुम्हारी क़दरो-
क़ीमत तो परिंदों से कहीं ज़्यादा है। 25क्या तुममें से कोई फ़िकर करते करते अपनी ज़िंदगी में एक
लमहे का भी इज़ाफ़ा कर सकता है? 26अगर
तुम फ़िकर करने से इतनी छोटी-सी तबदीली भी नहीं ला सकते तो फिर तुम बाक़ी बातों के बारे में
क्यों फ़िकरमंद हो? 27ग़ौर करो कि सोसन के फूल किस तरह उगते हैं। न वह मेहनत करते, न कातते हैं। लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ कि सुलेमान बादशाह अपनी पूरी शानो-शौकत के बावुजूद ऐसे शानदार कपड़ों से मुलब्बस नहीं था जैसे उनमें से
एक। 28अगर अल्लाह उस घास को जो आज मैदान में है और कल आग में झोंकी जाएगी ऐसा शानदार लिबास पहनाता है तो ऐ कमएतक़ादो, वह तुमको पहनाने के लिए क्या कुछ नहीं करेगा?

29इसकी तलाश में न रहना कि क्या खाओगे या क्या पियोगे। ऐसी बातों की वजह से बेचैन
न रहो। 30क्योंकि दुनिया में जो ईमान नहीं

रखते वही इन तमाम चीज़ों के पीछे भागते रहते हैं, जबकि तुम्हारे बाप को पहले से मालूम है कि तुमको इनकी ज़रूरत है। 31चुनाँचे उसी की बादशाही की तलाश में रहो। फिर यह तमाम चीज़ें भी तुमको मिल जाएँगी।

आसमान पर दौलत जमा करना

32ऐ छोटे गल्ले, मत डरना, क्योंकि तुम्हारे बाप ने तुमको बादशाही देना पसंद किया। 33अपनी मिलकियत बेचकर ग़रीबों को दे देना। अपने लिए ऐसे बटवे बनवाओ जो नहीं घिसते। अपने लिए आसमान पर ऐसा ख़ज़ाना जमा करो जो कभी ख़त्म नहीं होगा और जहाँ न कोई चोर आएगा, न कोई कीड़ा उसे ख़राब करेगा। 34क्योंकि जहाँ तुम्हारा ख़ज़ाना है वहीं तुम्हारा दिल भी लगा रहेगा।

हर वक़्त तैयार नौकर

35ख़िदमत के लिए तैयार खड़े रहो और इस पर ध्यान दो कि तुम्हारे चराग़ जलते रहें। 36यानी ऐसे नौकरों की मानिंद जिनका मालिक किसी शादी से वापस आनेवाला है और वह उसके लिए तैयार खड़े हैं। ज्योंही वह आकर दस्तक दे वह दरवाज़े को खोल देंगे। 37वह नौकर मुबारक हैं जिन्हें मालिक आकर जागते हुए और चौकस पाएगा। मैं तुमको सच बताता हूँ कि यह देखकर मालिक अपने कपड़े बदलकर उन्हें बिठाएगा और मेज़ पर उनकी ख़िदमत करेगा। 38हो सकता है मालिक आधी रात या इसके बाद आए। अगर वह इस सूरत में भी उन्हें मुस्तैद पाए तो वह मुबारक हैं। 39यक़ीन जानो, अगर किसी घर के मालिक को पता होता कि चोर कब आएगा तो वह ज़रूर उसे घर में नक़ब लगाने न देता। 40तुम भी तैयार रहो, क्योंकि इब्ने-आदम ऐसे वक़्त आएगा जब तुम इसकी तवक़्क़ो नहीं करोगे।”

वफ़ादार नौकर

41पतरस ने पूछा, “ख़ुदावंद, क्या यह तमसील सिर्फ़ हमारे लिए है या सबके लिए?”

42ख़ुदावंद ने जवाब दिया, “कौन-सा नौकर वफ़ादार और समझदार है? फ़र्ज़ करो कि घर के मालिक ने किसी नौकर को बाक़ी नौकरों पर मुक़र्रर किया हो। उस की एक ज़िम्मेदारी यह भी है कि उन्हें वक़्त पर मुनासिब खाना खिलाए। 43वह नौकर मुबारक होगा जो मालिक की वापसी पर यह सब कुछ कर रहा होगा। 44मैं तुमको सच बताता हूँ कि यह देखकर मालिक उसे अपनी पूरी जायदाद पर मुक़र्रर करेगा। 45लेकिन फ़र्ज़ करो कि नौकर अपने दिल में सोचे, ‘मालिक की वापसी में अभी देर है।’ वह नौकरों और नौकरानियों को पीटने लगे और खाते-पीते वह नशे में रहे। 46अगर वह ऐसा करे तो मालिक ऐसे दिन और वक़्त आएगा जिसकी तवक़्क़ो नौकर को नहीं होगी। इन हालात को देखकर वह नौकर को टुकड़े टुकड़े कर डालेगा और उसे ग़ैरईमानदारों में शामिल करेगा।

47जो नौकर अपने मालिक की मरज़ी को जानता है, लेकिन उसके लिए तैयारियाँ नहीं करता, न उसे पूरी करने की कोशिश करता है, उस की ख़ूब पिटाई की जाएगी। 48इसके मुक़ाबले में वह जो मालिक की मरज़ी को नहीं जानता और इस बिना पर कोई क़ाबिले-सज़ा काम करे उस की कम पिटाई की जाएगी। क्योंकि जिसे बहुत दिया गया हो उससे बहुत तलब किया जाएगा। और जिसके सुपुर्द बहुत कुछ किया गया हो उससे कहीं ज़्यादा माँगा जाएगा।

ईसा की वजह से इख़्तिलाफ़ पैदा होगा

49मैं ज़मीन पर आग लगाने आया हूँ, और काश वह पहले ही भड़क रही होती! 50लेकिन अब तक मेरे सामने एक बपतिस्मा है जिसे लेना ज़रूरी है। और मुझ पर कितना दबाव है जब तक उस की तकमील न हो जाए। 51क्या तुम समझते हो कि मैं दुनिया में सुलह-सलामती क़ायम करने

आया हूँ? नहीं, मैं तुमको बताता हूँ कि इसकी
बजाए मैं इख़्तिलाफ़ पैदा करूँगा। 52क्योंकि अब
से एक घराने के पाँच अफ़राद में इख़्तिलाफ़
होगा। तीन दो के ख़िलाफ़ और दो तीन के
ख़िलाफ़ होंगे। 53बाप बेटे के ख़िलाफ़ होगा और
बेटा बाप के ख़िलाफ़, माँ बेटी के ख़िलाफ़ और
बेटी माँ के ख़िलाफ़, सास बहू के ख़िलाफ़ और
बहू सास के ख़िलाफ़।”

मौजूदा हालात का सहीह नतीजा निकालना चाहिए

54ईसा ने हुजूम से यह भी कहा, “ज्योंही कोई
बादल मग़रिबी उफ़क़ से चढ़ता हुआ नज़र आए
तो तुम कहते हो कि बारिश होगी। और ऐसा ही
होता है। 55और जब जुनूबी लू चलती है तो तुम
कहते हो कि सख़्त गरमी होगी। और ऐसा ही
होता है। 56ऐ रियाकारो! तुम आसमानो-ज़मीन
के हालात पर ग़ौर करके सहीह नतीजा निकाल
लेते हो। तो फिर तुम मौजूदा ज़माने के हालात
पर ग़ौर करके सहीह नतीजा क्यों नहीं निकाल
सकते?

अपने मुख़ालिफ़ से समझौता करना

57तुम ख़ुद सहीह फ़ैसला क्यों नहीं कर
सकते? 58फ़र्ज़ करो कि किसी ने तुझ पर
मुक़द्दमा चलाया है। अगर ऐसा हो तो पूरी कोशिश
कर कि कचहरी में पहुँचने से पहले पहले मामला
हल करके मुख़ालिफ़ से फ़ारिग़ हो जाए। ऐसा
न हो कि वह तुझको जज के सामने घसीटकर ले
जाए, जज तुझे पुलिस अफ़सर के हवाले करे और
पुलिस अफ़सर तुझे जेल में डाल दे। 59मैं तुझे
बताता हूँ, वहाँ से तू उस वक़्त तक नहीं निकल
पाएगा जब तक जुर्माने की पूरी पूरी रक़म अदा
न कर दे।”

तौबा करो वरना हलाक हो जाओगे

13 उस वक़्त कुछ लोग ईसा के पास
पहुँचे। उन्होंने उसे गलील के कुछ
लोगों के बारे में बताया जिन्हें पीलातुस ने उस
वक़्त क़त्ल करवाया था जब वह बैतुल-मुक़द्दस
में क़ुरबानियाँ पेश कर रहे थे। यों उनका ख़ून
क़ुरबानियों के ख़ून के साथ मिलाया गया था।
2ईसा ने यह सुनकर पूछा, “क्या तुम्हारे ख़याल
में यह लोग गलील के बाक़ी लोगों से ज़्यादा
गुनाहगार थे कि इन्हें इतना दुख उठाना पड़ा?
3हरगिज़ नहीं! बल्कि मैं तुमको बताता हूँ कि
अगर तुम तौबा न करो तो तुम भी इसी तरह
तबाह हो जाओगे। 4या उन 18 अफ़राद के बारे में
तुम्हारा क्या ख़याल है जो मर गए जब शिलोख़
का बुर्ज उन पर गिरा? क्या वह यरूशलम के
बाक़ी बाशिंदों की निसबत ज़्यादा गुनाहगार थे?
5हरगिज़ नहीं! मैं तुमको बताता हूँ कि अगर तुम
तौबा न करो तो तुम भी तबाह हो जाओगे।”

बेफल अंजीर का दरख़्त

6फिर ईसा ने उन्हें यह तमसील सुनाई, “किसी
ने अपने बाग़ में अंजीर का दरख़्त लगाया। जब वह
उसका फल तोड़ने के लिए आया तो कोई फल
नहीं था। 7यह देखकर उसने माली से कहा, ‘मैं
तीन साल से इसका फल तोड़ने आता हूँ, लेकिन
आज तक कुछ भी नहीं मिला। इसे काट डाल।
यह ज़मीन की ताक़त क्यों ख़त्म करे?’ 8लेकिन
माली ने कहा, ‘जनाब, इसे एक साल और रहने
दें। मैं इसके इर्दगिर्द गोडी करके खाद डालूँगा।
9फिर अगर यह अगले साल फल लाया तो ठीक,
वरना इसे कटवा डालना’।”

सबत के दिन कुबड़ी औरत की शफ़ा

10सबत के दिन ईसा किसी इबादतख़ाने में
तालीम दे रहा था। 11वहाँ एक औरत थी जो 18
साल से बदरूह के बाइस बीमार थी। वह कुबड़ी हो
गई थी और सीधी खड़ी होने के बिलकुल क़ाबिल
न थी। 12जब ईसा ने उसे देखा तो पुकारकर
कहा, “ऐ औरत, तू अपनी बीमारी से छूट गई
है!” 13उसने अपने हाथ उस पर रखे तो वह

फ़ौरन सीधी खड़ी होकर अल्लाह की तमजीद
करने लगी।
14लेकिन इबादतख़ाने का राहनुमा नाराज़ हुआ
क्योंकि ईसा ने सबत के दिन शफ़ा दी थी। उसने
लोगों से कहा, “हफ़्ते के छः दिन काम करने के
लिए होते हैं। इसलिए इतवार से लेकर जुमे तक
शफ़ा पाने के लिए आओ, न कि सबत के दिन।”
15ख़ुदावंद ने जवाब में उससे कहा, “तुम
कितने रियाकार हो! क्या तुममें से हर कोई सबत
के दिन अपने बैल या गधे को खोलकर उसे थान
से बाहर नहीं ले जाता ताकि उसे पानी पिलाए?
16अब इस औरत को देखो जो इब्राहीम की बेटी
है और जो 18 साल से इबलीस के बंधन में थी।
जब तुम सबत के दिन अपने जानवरों की मदद
करते हो तो क्या यह ठीक नहीं कि औरत को
इस बंधन से रिहाई दिलाई जाती, चाहे यह काम
सबत के दिन ही क्यों न किया जाए?” 17ईसा
के इस जवाब से उसके मुख़ालिफ़ शरमिंदा हो
गए। लेकिन आम लोग उसके इन तमाम शानदार
कामों से ख़ुश हुए।

राई के दाने की तमसील

18ईसा ने कहा, “अल्लाह की बादशाही किस
चीज़ की मानिंद है? मैं इसका मुवाज़ना किससे
करूँ? 19वह राई के एक दाने की मानिंद है जो
किसी ने अपने बाग़ में बो दिया। बढ़ते बढ़ते वह
दरख़्त-सा बन गया और परिंदों ने उस की शाख़ों
में अपने घोंसले बना लिए।”

ख़मीर की मिसाल

20उसने दुबारा पूछा, “अल्लाह की बाद-
शाही का किस चीज़ से मुवाज़ना करूँ? 21वह
उस ख़मीर की मानिंद है जो किसी औरत ने लेकर
तक़रीबन 27 किलोग्राम आटे में मिला दिया। गो
वह उसमें छुप गया तो भी होते होते पूरे गुँधे हुए
आटे को ख़मीर कर गया।”

तंग दरवाज़ा

22ईसा तालीम देते देते मुख़्तलिफ़ शहरों और
देहातों में से गुज़रा। अब उसका रुख़ यरूशलम
ही की तरफ़ था। 23इतने में किसी ने उससे पूछा,
“ख़ुदावंद, क्या कम लोगों को नजात मिलेगी?”
उसने जवाब दिया, 24“तंग दरवाज़े में से
दाख़िल होने की सिर-तोड़ कोशिश करो। क्योंकि
मैं तुमको बताता हूँ कि बहुत-से लोग अंदर
जाने की कोशिश करेंगे, लेकिन बेफ़ायदा।
25एक वक़्त आएगा कि घर का मालिक उठकर
दरवाज़ा बंद कर देगा। फिर तुम बाहर खड़े रहोगे
और खटखटाते खटखटाते इलतमास करोगे,
‘ख़ुदावंद, हमारे लिए दरवाज़ा खोल दें।’ लेकिन
वह जवाब देगा, ‘न मैं तुमको जानता हूँ, न यह
कि तुम कहाँ के हो।’ 26फिर तुम कहोगे, ‘हमने
तो आपके सामने ही खाया और पिया और आप
ही हमारी सड़कों पर तालीम देते रहे।’ 27लेकिन
वह जवाब देगा, ‘न मैं तुमको जानता हूँ, न यह
कि तुम कहाँ के हो। ऐ तमाम बदकारो, मुझसे
दूर हो जाओ!’ 28वहाँ तुम रोते और दाँत पीसते
रहोगे। क्योंकि तुम देखोगे कि इब्राहीम, इसहाक़,
याक़ूब और तमाम नबी अल्लाह की बादशाही में
हैं जबकि तुमको निकाल दिया गया है। 29और
लोग मशरिक़, मग़रिब, शिमाल और जुनूब से
आकर अल्लाह की बादशाही की ज़ियाफ़त में
शरीक होंगे। 30उस वक़्त कुछ ऐसे होंगे जो पहले
आख़िर थे, लेकिन अब अव्वल होंगे। और कुछ
ऐसे भी होंगे जो पहले अव्वल थे, लेकिन अब
आख़िर होंगे।”

यरूशलम पर अफ़सोस

31उस वक़्त कुछ फ़रीसी ईसा के पास आकर
उससे कहने लगे, “इस मक़ाम को छोड़कर कहीं
और चले जाएँ, क्योंकि हेरोदेस आपको क़त्ल
करने का इरादा रखता है।”
32ईसा ने जवाब दिया, “जाओ, उस लोमड़ी
को बता दो, ‘आज और कल मैं बदरूहें निकालता
और मरीज़ों को शफ़ा देता रहूँगा। फिर तीसरे

दिन मैं पायाए-तकमील को पहुँचूँगा।’ 33इसलिए
लाज़िम है कि मैं आज, कल और परसों आगे
चलता रहूँ। क्योंकि मुमकिन नहीं कि कोई नबी
यरूशलम से बाहर हलाक हो।
34हाय यरूशलम, यरूशलम! तू जो नबियों
को क़त्ल करती और अपने पास भेजे हुए पैग़ंबरों
को संगसार करती है। मैंने कितनी ही बार तेरी
औलाद को जमा करना चाहा, बिलकुल उसी तरह
जिस तरह मुरग़ी अपने बच्चों को अपने परों तले
जमा करके महफ़ूज़ कर लेती है। लेकिन तूने न
चाहा। 35अब तेरे घर को वीरानो-सुनसान छोड़ा
जाएगा। और मैं तुमको बताता हूँ, तुम मुझे उस
वक़्त तक दुबारा नहीं देखोगे जब तक तुम न कहो
कि मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है।”

सबत के दिन मरीज़ की शफ़ा

14 सबत के एक दिन ईसा खाने के लिए
फ़रीसियों के किसी राहनुमा के घर
आया। लोग उसे पकड़ने के लिए उस की हर
हरकत पर नज़र रखे हुए थे। 2वहाँ एक आदमी
ईसा के सामने था जिसके बाज़ू और टाँगें फूले
हुए थे। 3यह देखकर वह फ़रीसियों और शरीअत
के आलिमों से पूछने लगा, “क्या शरीअत सबत
के दिन शफ़ा देने की इजाज़त देती है?”
4लेकिन वह ख़ामोश रहे। फिर उसने उस
आदमी पर हाथ रखा और उसे शफ़ा देकर रुख़सत
कर दिया। 5हाज़िरीन से वह कहने लगा, “अगर
तुममें से किसी का बेटा या बैल सबत के दिन
कुएँ में गिर जाए तो क्या तुम उसे फ़ौरन नहीं
निकालोगे?”
6इस पर वह कोई जवाब न दे सके।

इज़्ज़त और अज्र हासिल करने का तरीक़ा

7जब ईसा ने देखा कि मेहमान मेज़ पर इज़्ज़त
की कुरसियाँ चुन रहे हैं तो उसने उन्हें यह तमसील
सुनाई, 8“जब तुझे किसी शादी की ज़ियाफ़त में
शरीक होने की दावत दी जाए तो वहाँ जाकर
इज़्ज़त की कुरसी पर न बैठना। ऐसा न हो
कि किसी और को भी दावत दी गई हो जो
तुझसे ज़्यादा इज़्ज़तदार है। 9क्योंकि जब वह
पहुँचेगा तो मेज़बान तेरे पास आकर कहेगा,
‘ज़रा इस आदमी को यहाँ बैठने दे।’ यों तेरी
बेइज़्ज़ती हो जाएगी और तुझे वहाँ से उठकर
आख़िरी कुरसी पर बैठना पड़ेगा। 10इसलिए
ऐसा मत करना बल्कि जब तुझे दावत दी जाए
तो जाकर आख़िरी कुरसी पर बैठ जा। फिर जब
मेज़बान तुझे वहाँ बैठा हुआ देखेगा तो वह कहेगा,
‘दोस्त, सामनेवाली कुरसी पर बैठ।’ इस तरह
तमाम मेहमानों के सामने तेरी इज़्ज़त हो जाएगी।
11क्योंकि जो भी अपने आपको सरफ़राज़ करे
उसे पस्त किया जाएगा और जो अपने आपको
पस्त करे उसे सरफ़राज़ किया जाएगा।”
12फिर ईसा ने मेज़बान से बात की, “जब तू
लोगों को दोपहर या शाम का खाना खाने की
दावत देना चाहता है तो अपने दोस्तों, भाइयों,
रिश्तेदारों या अमीर हमसायों को न बुला। ऐसा न
हो कि वह इसके एवज़ तुझे भी दावत दें। क्योंकि
अगर वह ऐसा करें तो यही तेरा मुआवज़ा होगा।
13इसके बजाए ज़ियाफ़त करते वक़्त ग़रीबों,
लँगड़ों, मफ़लूजों और अंधों को दावत दे। 14ऐसा
करने से तुझे बरकत मिलेगी। क्योंकि वह तुझे
इसके एवज़ कुछ नहीं दे सकेंगे, बल्कि तुझे
इसका मुआवज़ा उस वक़्त मिलेगा जब रास्तबाज़
जी उठेंगे।”

बड़ी ज़ियाफ़त की तमसील

15यह सुनकर मेहमानों में से एक ने उससे
कहा, “मुबारक है वह जो अल्लाह की बादशाही
में खाना खाए।”
16ईसा ने जवाब में कहा, “किसी आदमी ने
एक बड़ी ज़ियाफ़त का इंतज़ाम किया। इसके
लिए उसने बहुत-से लोगों को दावत दी। 17जब
ज़ियाफ़त का वक़्त आया तो उसने अपने नौकर
को मेहमानों को इत्तला देने के लिए भेजा कि
‘आएँ, सब कुछ तैयार है।’ 18लेकिन वह सबके
सब माज़रत चाहने लगे। पहले ने कहा, ‘मैंने खेत

ख़रीदा है और अब ज़रूरी है कि निकलकर उसका
मुआयना करूँ। मैं माज़रत चाहता हूँ।' 19दूसरे ने
कहा, 'मैंने बैलों के पाँच जोड़े ख़रीदे हैं। अब मैं
उन्हें आज़माने जा रहा हूँ। मैं माज़रत चाहता हूँ।'
20तीसरे ने कहा, 'मैंने शादी की है, इसलिए नहीं
आ सकता।'

21नौकर ने वापस आकर मालिक को सब कुछ
बताया। वह ग़ुस्से होकर नौकर से कहने लगा,
'जा, सीधे शहर की सड़कों और गलियों में जाकर
वहाँ के ग़रीबों, लँगड़ों, अंधों और मफ़लूजों को
ले आ।' नौकर ने ऐसा ही किया। 22फिर वापस
आकर उसने मालिक को इत्तला दी, 'जनाब, जो
कुछ आपने कहा था पूरा हो चुका है। लेकिन अब
भी मज़ीद लोगों के लिए गुंजाइश है।' 23मालिक
ने उससे कहा, फिर शहर से निकलकर देहात की
सड़कों पर और बाड़ों के पास जा। जो भी मिल
जाए उसे हमारी ख़ुशी में शरीक होने पर मजबूर
कर ताकि मेरा घर भर जाए। 24क्योंकि मैं तुमको
बताता हूँ कि जिनको पहले दावत दी गई थी उनमें
से कोई भी मेरी ज़ियाफ़त में शरीक न होगा।"

शागिर्द होने की क़ीमत

25एक बड़ा हुजूम ईसा के साथ चल रहा था।
उनकी तरफ़ मुड़कर उसने कहा, 26"अगर कोई
मेरे पास आकर अपने बाप, माँ, बीवी, बच्चों,
भाइयों, बहनों बल्कि अपने आपसे भी दुश्मनी न
रखे तो वह मेरा शागिर्द नहीं हो सकता। 27और
जो अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे न हो ले वह
मेरा शागिर्द नहीं हो सकता।

28अगर तुममें से कोई बुर्ज तामीर कर-
ना चाहे तो क्या वह पहले बैठकर पूरे अख़राजात
का अंदाज़ा नहीं लगाएगा ताकि मालूम हो जाए
कि वह उसे तकमील तक पहुँचा सकेगा या नहीं?
29वरना ख़तरा है कि उस की बुनियाद डालने के
बाद पैसे ख़त्म हो जाएँ और वह आगे कुछ न
बना सके। फिर जो कोई भी देखेगा वह उसका
मज़ाक़ उड़ाकर 30कहेगा, 'उसने इमारत को शुरू
तो किया, लेकिन अब उसे मुकम्मल नहीं कर
पाया।'

31या अगर कोई बादशाह किसी दूसरे बादशाह
के साथ जंग के लिए निकले तो क्या वह पहले
बैठकर अंदाज़ा नहीं लगाएगा कि वह अपने दस
हज़ार फ़ौजियों से उन बीस हज़ार फ़ौजियों पर
ग़ालिब आ सकता है जो उससे लड़ने आ रहे हैं?
32अगर वह इस नतीजे पर पहुँचे कि ग़ालिब नहीं
आ सकता तो वह सुलह करने के लिए अपने
नुमाइंदे दुश्मन के पास भेजेगा जब वह अभी दूर
ही हो। 33इसी तरह तुममें से जो भी अपना सब
कुछ न छोड़े वह मेरा शागिर्द नहीं हो सकता।

बेकार नमक

34नमक अच्छी चीज़ है। लेकिन अगर उसका
ज़ायक़ा जाता रहे तो फिर उसे क्योंकर दुबारा
नमकीन किया जा सकता है? 35न वह ज़मीन
के लिए मुफ़ीद है, न खाद के लिए बल्कि उसे
निकालकर बाहर फेंका जाएगा। जो सुन सकता
है वह सुन ले।"

खोई हुई भेड़

15 अब ऐसा था कि तमाम टैक्स
लेनेवाले और गुनाहगार ईसा की बातें
सुनने के लिए उसके पास आते थे। 2यह देखकर
फ़रीसी और शरीअत के आलिम बुड़बुड़ाने लगे,
"यह आदमी गुनाहगारों को ख़ुशआमदीद कहकर
उनके साथ खाना खाता है।" 3इस पर ईसा ने
उन्हें यह तमसील सुनाई,

4"फ़र्ज़ करो कि तुममें से किसी की सौ भेड़ें
हैं। लेकिन एक गुम हो जाती है। अब मालिक
क्या करेगा? क्या वह बाक़ी 99 भेड़ें खुले मैदान
में छोड़कर गुमशुदा भेड़ को ढूँडने नहीं जाएगा?
ज़रूर जाएगा, बल्कि जब तक उसे वह भेड़ मिल
न जाए वह उस की तलाश में रहेगा। 5फिर वह
ख़ुश होकर उसे अपने कंधों पर उठा लेगा। 6यों
चलते चलते वह अपने घर पहुँच जाएगा और वहाँ
अपने दोस्तों और हमसायों को बुलाकर उनसे

कहेगा, 'मेरे साथ ख़ुशी मनाओ! क्योंकि मुझे
अपनी खोई हुई भेड़ मिल गई है।' 7मैं तुमको
बताता हूँ कि आसमान पर बिलकुल इसी तरह
ख़ुशी मनाई जाएगी जब एक ही गुनाहगार तौबा
करेगा। और यह ख़ुशी उस ख़ुशी की निसबत
ज़्यादा होगी जो उन 99 अफ़राद के बाइस मनाई
जाएगी जिन्हें तौबा करने की ज़रूरत ही नहीं थी।

गुमशुदा सिक्का

8या फ़र्ज़ करो कि किसी औरत के पास दस
सिक्के हों लेकिन एक सिक्का गुम हो जाए। अब
औरत क्या करेगी? क्या वह चराग़ जलाकर और
घर में झाड़ू दे देकर बड़ी एहतियात से सिक्के
को तलाश नहीं करेगी? ज़रूर करेगी, बल्कि वह
उस वक़्त तक ढूँडती रहेगी जब तक उसे सिक्का
मिल न जाए। 9जब उसे सिक्का मिल जाएगा तो
वह अपनी सहेलियों और हमसायों को बुलाकर
उनसे कहेगी, 'मेरे साथ ख़ुशी मनाओ! क्योंकि
मुझे अपना गुमशुदा सिक्का मिल गया है।' 10मैं
तुमको बताता हूँ कि बिलकुल इसी तरह अल्लाह
के फ़रिश्तों के सामने ख़ुशी मनाई जाती है जब
एक भी गुनाहगार तौबा करता है।"

गुमशुदा बेटा

11ईसा ने अपनी बात जारी रखी। "किसी
आदमी के दो बेटे थे। 12इनमें से छोटे ने बाप से
कहा, 'ऐ बाप, मीरास का मेरा हिस्सा दे दें।' इस
पर बाप ने दोनों में अपनी मिलकियत तक़सीम
कर दी। 13थोड़े दिनों के बाद छोटा बेटा अपना
सारा सामान समेटकर अपने साथ किसी दूर-
दराज़ मुल्क में ले गया। वहाँ उसने ऐयाशी में
अपना पूरा मालो-मता उड़ा दिया। 14सब कुछ
ज़ाया हो गया तो उस मुल्क में सख़्त काल पड़ा।
अब वह ज़रूरतमंद होने लगा। 15नतीजे में वह
उस मुल्क के किसी बाशिंदे के हाँ जा पड़ा जिसने
उसे सुअरों को चराने के लिए अपने खेतों में भेज
दिया। 16वहाँ वह अपना पेट उन फलियों से भरने
की शदीद ख़ाहिश रखता था जो सुअर खाते थे,
लेकिन उसे इसकी भी इजाज़त न मिली। 17फिर
वह होश में आया। वह कहने लगा, 'मेरे बाप के
कितने मज़दूरों को कसरत से खाना मिलता है
जबकि मैं यहाँ भूका मर रहा हूँ। 18मैं उठकर
अपने बाप के पास वापस चला जाऊँगा और
उससे कहूँगा, "ऐ बाप, मैंने आसमान का और
आपका गुनाह किया है। 19अब मैं इस लायक़
नहीं रहा कि आपका बेटा कहलाऊँ। मेहरबानी
करके मुझे अपने मज़दूरों में रख लें"।' 20फिर
वह उठकर अपने बाप के पास वापस चला गया।

लेकिन वह घर से अभी दूर ही था कि उसके
बाप ने उसे देख लिया। उसे तरस आया और
वह भागकर बेटे के पास आया और गले लगाकर
उसे बोसा दिया। 21बेटे ने कहा, 'ऐ बाप, मैंने
आसमान का और आपका गुनाह किया है। अब मैं
इस लायक़ नहीं रहा कि आपका बेटा कहलाऊँ।'
22लेकिन बाप ने अपने नौकरों को बुलाया और
कहा, 'जल्दी करो, बेहतरीन सूट लाकर इसे
पहनाओ। इसके हाथ में अंगूठी और पाँवों में जूते
पहना दो। 23फिर मोटा-ताज़ा बछड़ा लाकर उसे
ज़बह करो ताकि हम खाएँ और ख़ुशी मनाएँ,
24क्योंकि यह मेरा बेटा मुरदा था अब ज़िंदा हो
गया है, गुम हो गया था अब मिल गया है।' इस
पर वह ख़ुशी मनाने लगे।

25इस दौरान बाप का बड़ा बेटा खेत में था।
अब वह घर लौटा। जब वह घर के क़रीब पहुँचा
तो अंदर से मौसीक़ी और नाचने की आवाज़ें
सुनाई दीं। 26उसने किसी नौकर को बुलाकर
पूछा, 'यह क्या हो रहा है?' 27नौकर ने जवाब
दिया, 'आपका भाई आ गया है और आपके बाप
ने मोटा-ताज़ा बछड़ा ज़बह करवाया है, क्योंकि
उसे अपना बेटा सहीह-सलामत वापस मिल गया
है।'

28यह सुनकर बड़ा बेटा ग़ुस्से हुआ और अंदर
जाने से इनकार कर दिया। फिर बाप घर से
निकलकर उसे समझाने लगा। 29लेकिन उसने
जवाब में अपने बाप से कहा, 'देखें, मैंने इतने
साल आपकी ख़िदमत में सख़्त मेहनत-मशक़्क़त

की है और एक दफ़ा भी आपकी मरज़ी की
ख़िलाफ़वरज़ी नहीं की। तो भी आपने मुझे इस
पूरे अरसे में एक छोटा बकरा भी नहीं दिया
कि उसे ज़बह करके अपने दोस्तों के साथ
ज़ियाफ़त करता। 30लेकिन ज्योंही आपका यह
बेटा आया जिसने आपकी दौलत कसबियों में
उड़ा दी, आपने उसके लिए मोटा-ताज़ा बछड़ा
ज़बह करवाया।’ 31बाप ने जवाब दिया, ‘बेटा,
आप तो हर वक़्त मेरे पास रहे हैं, और जो कुछ
मेरा है वह आप ही का है। 32लेकिन अब ज़रूरी
था कि हम जशन मनाएँ और ख़ुश हों। क्योंकि
आपका यह भाई जो मुरदा था अब ज़िंदा हो गया
है, जो गुम हो गया था अब मिल गया है’।”

चालाक मुलाज़िम

16 ईसा ने शागिर्दों से कहा, “किसी
अमीर आदमी ने एक मुलाज़िम रखा
था जो उस की जायदाद की देख-भाल करता
था। ऐसा हुआ कि एक दिन उस पर इलज़ाम
लगाया गया कि वह अपने मालिक की दौलत
ज़ाया कर रहा है। 2मालिक ने उसे बुलाकर कहा,
‘यह क्या है जो मैं तेरे बारे में सुनता हूँ? अपनी
तमाम ज़िम्मेदारियों का हिसाब दे, क्योंकि मैं
तुझे बरख़ास्त कर दूँगा।’ 3मुलाज़िम ने दिल में
कहा, ‘अब मैं क्या करूँ जबकि मेरा मालिक यह
ज़िम्मेदारी मुझसे छीन लेगा? खुदाई जैसा सख़्त
काम मुझसे नहीं होता और भीक माँगने से शर्म
आती है। 4हाँ, मैं जानता हूँ कि क्या करूँ ताकि
लोग मुझे बरख़ास्त किए जाने के बाद अपने घरों
में ख़ुशआमदीद कहें।’

5यह कहकर उसने अपने मालिक के तमाम
क़र्ज़दारों को बुलाया। पहले से उसने पूछा,
‘तुम्हारा क़र्ज़ा कितना है?’ 6उसने जवाब दिया,
‘मुझे मालिक को ज़ैतून के तेल के सौ कनस्तर
वापस करने हैं।’ मुलाज़िम ने कहा, ‘अपना बिल
ले लो और बैठकर जल्दी से सौ कनस्तर पचास में
बदल लो।’ 7दूसरे से उसने पूछा, ‘तुम्हारा कितना
क़र्ज़ा है?’ उसने जवाब दिया, ‘मुझे गंदुम की
हज़ार बोरियाँ वापस करनी हैं।’ मुलाज़िम ने कहा,
‘अपना बिल ले लो और हज़ार के बदले आठ सौ
लिख लो।’

8यह देखकर मालिक ने बेईमान मुलाज़िम की
तारीफ़ की कि उसने अक़्ल से काम लिया है।
क्योंकि इस दुनिया के फ़रज़ंद अपनी नसल के
लोगों से निपटने में नूर के फ़रज़ंदों से ज़्यादा
होशियार होते हैं।

9मैं तुमको बताता हूँ कि दुनिया की नारास्त
दौलत से अपने लिए दोस्त बना लो ताकि जब यह
ख़त्म हो जाए तो लोग तुमको अबदी रिहाइशगाहों
में ख़ुशआमदीद कहें। 10जो थोड़े में वफ़ादार
है वह ज़्यादा में भी वफ़ादार होगा। और जो
थोड़े में बेईमान है वह ज़्यादा में भी बेईमानी
करेगा। 11अगर तुम दुनिया की नारास्त दौलत को
सँभालने में वफ़ादार न रहे तो फिर कौन हक़ीक़ी
दौलत तुम्हारे सुपुर्द करेगा? 12और अगर तुमने
दूसरों की दौलत सँभालने में बेईमानी दिखाई है
तो फिर कौन तुमको तुम्हारे ज़ाती इस्तेमाल के
लिए कुछ देगा?

13कोई भी ग़ुलाम दो मालिकों की ख़िदमत
नहीं कर सकता। या तो वह एक से नफ़रत करके
दूसरे से मुहब्बत रखेगा, या एक से लिपटकर
दूसरे को हक़ीर जानेगा। तुम एक ही वक़्त
में अल्लाह और दौलत की ख़िदमत नहीं कर
सकते।”

ईसा की चंद कहावतें

14फ़रीसियों ने यह सब कुछ सुना तो वह
उसका मज़ाक़ उड़ाने लगे, क्योंकि वह लालची
थे। 15उसने उनसे कहा, “तुम ही वह हो जो
अपने आपको लोगों के सामने रास्तबाज़ क़रार
देते हो, लेकिन अल्लाह तुम्हारे दिलों से वाक़िफ़
है। क्योंकि लोग जिस चीज़ की बहुत क़दर करते
हैं वह अल्लाह के नज़दीक मकरूह है।

16यहया के आने तक तुम्हारे राहनुमा मूसा की
शरीअत और नबियों के पैग़ामात थे। लेकिन अब
अल्लाह की बादशाही की ख़ुशख़बरी का एलान

किया जा रहा है और तमाम लोग ज़बरदस्ती
इसमें दाख़िल हो रहे हैं। 17लेकिन इसका यह
मतलब नहीं कि शरीअत मनसूख़ हो गई है बल्कि
आसमानो-ज़मीन जाते रहेंगे, लेकिन शरीअत की
ज़ेर ज़बर तक कोई भी बात नहीं बदलेगी।

18चुनाँचे जो आदमी अपनी बीवी को तलाक़
देकर किसी और से शादी करे वह ज़िना करता है।
इसी तरह जो किसी तलाक़शुदा औरत से शादी
करे वह भी ज़िना करता है।

अमीर आदमी और लाज़र

19एक अमीर आदमी का ज़िक्र है जो
अरग़वानी रंग के कपड़े और नफ़ीस कतान
पहनता और हर रोज़ ऐशो-इशरत में गु-
ज़ारता था। 20अमीर के गेट पर एक ग़रीब आदमी
पड़ा था जिसके पूरे जिस्म पर नासूर थे। उसका
नाम लाज़र था 21और उस की बस एक ही
ख़ाहिश थी कि वह अमीर की मेज़ से गिरे हुए
टुकड़े खाकर सेर हो जाए। कुत्ते उसके पास
आकर उसके नासूर चाटते थे।

22फिर ऐसा हुआ कि ग़रीब आदमी मर गया।
फ़रिश्तों ने उसे उठाकर इब्राहीम की गोद में बिठा
दिया। अमीर आदमी भी फ़ौत हुआ और दफ़नाया
गया। 23वह जहन्नुम में पहुँचा। अज़ाब की हालत
में उसने अपनी नज़र उठाई तो दूर से इब्राहीम और
उस की गोद में लाज़र को देखा। 24वह पुकार
उठा, ‘ऐ मेरे बाप इब्राहीम, मुझ पर रहम करें।
मेहरबानी करके लाज़र को मेरे पास भेज दें ताकि
वह अपनी उँगली को पानी में डुबोकर मेरी ज़बान
को ठंडा करे, क्योंकि मैं इस आग में तड़पता हूँ।’

25लेकिन इब्राहीम ने जवाब दिया, ‘बेटा, याद
रख कि तुझे अपनी ज़िंदगी में बेहतरीन चीज़ें
मिल चुकी हैं जबकि लाज़र को बदतरीन चीज़ें।
लेकिन अब उसे आराम और तसल्ली मिल गई है
जबकि तुझे अज़ियत। 26नीज़, हमारे और तुम्हारे
दरमियान एक वसी ख़लीज क़ायम है। अगर कोई
चाहे भी तो उसे पार करके यहाँ से तुम्हारे पास
नहीं जा सकता, न वहाँ से कोई यहाँ आ सकता
है।’ 27अमीर आदमी ने कहा, ‘मेरे बाप, फिर मेरी
एक और गुज़ारिश है, मेहरबानी करके लाज़र को
मेरे वालिद के घर भेज दें। 28मेरे पाँच भाई हैं।
वह वहाँ जाकर उन्हें आगाह करे, ऐसा न हो कि
उनका अंजाम भी यह अज़ियतनाक मक़ाम हो।’

29लेकिन इब्राहीम ने जवाब दिया, ‘उनके पास
मूसा की तौरेत और नबियों के सहीफ़े तो हैं। वह
उनकी सुनें।’ 30अमीर ने अर्ज़ की, ‘नहीं, मेरे बाप
इब्राहीम, अगर कोई मुरदों में से उनके पास जाए
तो फिर वह ज़रूर तौबा करेंगे।’ 31इब्राहीम ने
कहा, ‘अगर वह मूसा और नबियों की नहीं सुनते
तो वह उस वक़्त भी क़ायल नहीं होंगे जब कोई
मुरदों में से जी उठकर उनके पास जाएगा’।”

गुनाह

17 ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा,
“आज़माइशों को तो आना ही आना
है, लेकिन उस पर अफ़सोस जिसकी मारिफ़त
वह आएँ। 2अगर वह इन छोटों में से किसी को
गुनाह करने पर उकसाए तो उसके लिए बेहतर है
कि उसके गले में बड़ी चक्की का पाट बाँधा जाए
और उसे समुंदर में फेंक दिया जाए। 3ख़बरदार
रहो!

अगर तुम्हारा भाई गुनाह करे तो उसे
समझाओ। अगर वह इस पर तौबा करे तो उसे
मुआफ़ कर दो। 4अब फ़र्ज़ करो कि वह एक दिन
के अंदर सात बार तुम्हारा गुनाह करे, लेकिन हर
दफ़ा वापस आकर तौबा का इज़हार करे, तो भी
उसे हर दफ़ा मुआफ़ कर दो।”

ईमान

5रसूलों ने ख़ुदावंद से कहा, “हमारे ईमान को
बढ़ा दें।”

6ख़ुदावंद ने जवाब दिया, “अगर तुम्हारा ईमान
राई के दाने जैसा छोटा भी हो तो तुम शहतूत के
इस दरख़्त को कह सकते हो, ‘उखड़कर समुंदर
में जा लग’ तो वह तुम्हारी बात पर अमल करेगा।

ग़ुलाम का फ़र्ज़

7फ़र्ज़ करो कि तुममें से किसी ने हल चलाने या
जानवर चराने के लिए एक ग़ुलाम रखा है। जब
यह ग़ुलाम खेत से घर आएगा तो क्या उसका
मालिक कहेगा, ‘इधर आओ, खाने के लिए बैठ
जाओ?’ 8हरगिज़ नहीं, बल्कि वह यह कहेगा,
‘मेरा खाना तैयार करो, ड्यूटी के कपड़े पहनकर
मेरी ख़िदमत करो जब तक मैं खा-पी न लूँ। इसके
बाद तुम भी खा और पी सकोगे।’ 9और क्या
वह अपने ग़ुलाम की उस ख़िदमत का शुक्रिया
अदा करेगा जो उसने उसे करने को कहा था?
हरगिज़ नहीं! 10इसी तरह जब तुम सब कुछ जो
तुम्हें करने को कहा गया है कर चुको तब तुमको
यह कहना चाहिए, ‘हम नालायक़ नौकर हैं। हमने
सिर्फ़ अपना फ़र्ज़ अदा किया है’।”

कोढ़ के दस मरीज़ों की शफ़ा

11ऐसा हुआ कि यरूशलम की तरफ़ सफ़र
करते करते ईसा सामरिया और गलील में से
गुज़रा। 12एक दिन वह किसी गाँव में दाख़िल
हो रहा था कि कोढ़ के दस मरीज़ उसको मिलने
आए। वह कुछ फ़ासले पर खड़े होकर 13ऊँची
आवाज़ से कहने लगे, “ऐ ईसा, उस्ताद, हम पर
रहम करें।”

14उसने उन्हें देखा तो कहा, “जाओ, अपने
आपको इमामों को दिखाओ ताकि वह तुम्हारा
मुआयना करें।”

और ऐसा हुआ कि वह चलते चलते अपनी
बीमारी से पाक-साफ़ हो गए। 15उनमें से एक
ने जब देखा कि शफ़ा मिल गई है तो वह मुड़कर
ऊँची आवाज़ से अल्लाह की तमजीद करने लगा,
16और ईसा के सामने मुँह के बल गिरकर शुक्रिया
अदा किया। यह आदमी सामरिया का बाशिंदा
था। 17ईसा ने पूछा, “क्या दस के दस आदमी
अपनी बीमारी से पाक-साफ़ नहीं हुए? बाक़ी नौ
कहाँ हैं? 18क्या इस ग़ैरमुल्की के अलावा कोई
और वापस आकर अल्लाह की तमजीद करने के
लिए तैयार नहीं था?” 19फिर उसने उससे कहा,
“उठकर चला जा। तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया
है।”

अल्लाह की बादशाही कब आएगी

20कुछ फ़रीसियों ने ईसा से पूछा, “अल्लाह
की बादशाही कब आएगी?” उसने जवाब दिया,
“अल्लाह की बादशाही यों नहीं आ रही कि उसे
ज़ाहिरी निशानों से पहचाना जाए। 21लोग यह
भी नहीं कह सकेंगे, ‘वह यहाँ है’ या ‘वह वहाँ है’
क्योंकि अल्लाह की बादशाही तुम्हारे दरमियान
है।”

22फिर उसने अपने शागिर्दों से कहा, “ऐसे
दिन आएँगे कि तुम इब्ने-आदम का कम अज़ कम
एक दिन देखने की तमन्ना करोगे, लेकिन नहीं
देखोगे। 23लोग तुमको बताएँगे, ‘वह वहाँ है’ या
‘वह यहाँ है।’ लेकिन मत जाना और उनके पीछे
न लगना। 24क्योंकि जब इब्ने-आदम का दिन
आएगा तो वह बिजली की मानिंद होगा जिसकी
चमक आसमान को एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे
तक रौशन कर देती है। 25लेकिन पहले लाज़िम
है कि वह बहुत दुख उठाए और इस नसल के
हाथों रद्द किया जाए। 26जब इब्ने-आदम का
वक़्त आएगा तो हालात नूह के दिनों जैसे होंगे।
27लोग उस दिन तक खाने-पीने और शादी करने
करवाने में लगे रहे जब तक नूह कश्ती में दाख़िल
न हो गया। फिर सैलाब ने आकर उन सबको
तबाह कर दिया। 28बिलकुल यही कुछ लूत के
ऐयाम में हुआ। लोग खाने-पीने, ख़रीदो-फ़रोख़्त,
काश्तकारी और तामीर के काम में लगे रहे।
29लेकिन जब लूत सदूम को छोड़कर निकला
तो आग और गंधक ने आसमान से बरसकर उन
सबको तबाह कर दिया। 30इब्ने-आदम के ज़ुहूर
के वक़्त ऐसे ही हालात होंगे।

31जो शख़्स उस दिन छत पर हो वह घर का
सामान साथ ले जाने के लिए नीचे न उतरे। इसी
तरह जो खेत में हो वह अपने पीछे पड़ी चीज़ों
को साथ ले जाने के लिए घर न लौटे। 32लूत की
बीवी को याद रखो। 33जो अपनी जान बचाने की

कोशिश करेगा वह उसे खो देगा, और जो अपनी
जान खो देगा वही उसे बचाए रखेगा। 34मैं तुमको
बताता हूँ कि उस रात दो अफ़राद एक बिस्तर में
सोए होंगे, एक को साथ ले लिया जाएगा जबकि
दूसरे को पीछे छोड़ दिया जाएगा। 35दो ख़वातीन
चक्की पर गंदुम पीस रही होंगी, एक को साथ ले
लिया जाएगा जबकि दूसरी को पीछे छोड़ दिया
जाएगा। 36[दो अफ़राद खेत में होंगे, एक को
साथ ले लिया जाएगा जबकि दूसरे को पीछे छोड़
दिया जाएगा।]”

37उन्होंने पूछा, “ख़ुदावंद, यह कहाँ होगा?”

उसने जवाब दिया, “जहाँ लाश पड़ी हो वहाँ
गिद्ध जमा हो जाएंगे।”

बेवा और जज की तमसील

18 फिर ईसा ने उन्हें एक तमसील सुनाई
जो मुसलसल दुआ करने और हिम्मत
न हारने की ज़रूरत को ज़ाहिर करती है। 2उसने
कहा, “किसी शहर में एक जज रहता था जो
न ख़ुदा का ख़ौफ़ मानता, न किसी इनसान का
लिहाज़ करता था। 3अब उस शहर में एक बेवा भी
थी जो यह कहकर उसके पास आती रही कि ‘मेरे
मुख़ालिफ़ को जीतने न दें बल्कि मेरा इनसाफ़
करें।’ 4कुछ देर के लिए जज ने इनकार किया।
लेकिन फिर वह दिल में कहने लगा, ‘बेशक मैं
ख़ुदा का ख़ौफ़ नहीं मानता, न लोगों की परवा
करता हूँ, 5लेकिन यह बेवा मुझे बार बार तंग कर
रही है। इसलिए मैं उसका इनसाफ़ करूँगा। ऐसा
न हो कि आख़िरकार वह आकर मेरे मुँह पर थप्पड़
मारे’।”

6ख़ुदावंद ने बात जारी रखी। “इस पर ध्यान
दो जो बेइनसाफ़ जज ने कहा। 7अगर उसने
आख़िरकार इनसाफ़ किया तो क्या अल्लाह
अपने चुने हुए लोगों का इनसाफ़ नहीं करेगा जो
दिन-रात उसे मदद के लिए पुकारते हैं? क्या
वह उनकी बात मुलतवी करता रहेगा? 8हरगिज़
नहीं! मैं तुमको बताता हूँ कि वह जल्दी से उनका
इनसाफ़ करेगा। लेकिन क्या इब्ने-आदम जब
दुनिया में आएगा तो ईमान देख पाएगा?”

फ़रीसी और टैक्स लेनेवाले की तमसील

9बाज़ लोग मौजूद थे जो अपनी रास्त-
बाज़ी पर भरोसा रखते और दूसरों को हक़ीर
जानते थे। उन्हें ईसा ने यह तमसील सुनाई,
10“दो आदमी बैतुल-मुक़द्दस में दुआ करने आए।
एक फ़रीसी था और दूसरा टैक्स लेनेवाला।

11फ़रीसी खड़ा होकर यह दुआ करने लगा,
‘ऐ ख़ुदा, मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि मैं बाक़ी लोगों
की तरह नहीं हूँ। न मैं डाकू हूँ, न बेइनसाफ़, न
ज़िनाकार। मैं इस टैक्स लेनेवाले की मानिंद भी
नहीं हूँ। 12मैं हफ़ते में दो मरतबा रोज़ा रखता हूँ
और तमाम आमदनी का दसवाँ हिस्सा तेरे लिए
मख़सूस करता हूँ।’

13लेकिन टैक्स लेनेवाला दूर ही खड़ा रहा।
उसने अपनी आँखें आसमान की तरफ़ उठाने तक
की जुर्रत न की बल्कि अपनी छाती पीट पीटकर
कहने लगा, ‘ऐ ख़ुदा, मुझ गुनाहगार पर रहम
कर!’ 14मैं तुमको बताता हूँ कि जब दोनों अपने
अपने घर लौटे तो फ़रीसी नहीं बल्कि यह आदमी
अल्लाह के नज़दीक रास्तबाज़ ठहरा। क्योंकि
जो भी अपने आपको सरफ़राज़ करे उसे पस्त
किया जाएगा और जो अपने आपको पस्त करे
उसे सरफ़राज़ किया जाएगा।”

ईसा छोटे बच्चों को प्यार करता है

15एक दिन लोग अपने छोटे बच्चों को भी ईसा
के पास लाए ताकि वह उन्हें छुए। यह देखकर
शागिर्दों ने उनको मलामत की। 16लेकिन ईसा
ने उन्हें अपने पास बुलाकर कहा, “बच्चों को मेरे
पास आने दो और उन्हें न रोको, क्योंकि अल्लाह
की बादशाही इन जैसे लोगों को हासिल है। 17मैं
तुमको सच बताता हूँ, जो अल्लाह की बादशाही
को बच्चे की तरह क़बूल न करे वह उसमें दाख़िल
नहीं होगा।”

अमीर मुश्किल से अल्लाह की बादशाही में दाख़िल हो सकते हैं

18किसी राहनुमा ने उससे पूछा, "नेक उस्ताद, मैं क्या करूँ ताकि मीरास में अबदी ज़िंदगी पाऊँ?"

19ईसा ने जवाब दिया, "तू मुझे नेक क्यों कहता है? कोई नेक नहीं सिवाए एक के और
वह है अल्लाह। 20तू शरीअत के अहकाम से तो वाक़िफ़ है कि ज़िना न करना, क़त्ल न करना, चोरी न करना, झूटी गवाही न देना, अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना।"

21आदमी ने जवाब दिया, "मैंने जवानी से आज तक इन तमाम अहकाम की पैरवी की है।"

22यह सुनकर ईसा ने कहा, "एक काम अब तक रह गया है। अपनी पूरी जायदाद फ़रोख़्त करके पैसे ग़रीबों में तक़सीम कर दे। फिर तेरे लिए आसमान पर ख़ज़ाना जमा हो जाएगा।
इसके बाद आकर मेरे पीछे हो ले।" 23यह सुनकर
आदमी को बहुत दुख हुआ, क्योंकि वह निहायत दौलतमंद था।

24यह देखकर ईसा ने कहा, "दौलतमंदों के लिए अल्लाह की बादशाही में दाख़िल होना
कितना मुश्किल है! 25अमीर के अल्लाह की
बादशाही में दाख़िल होने की निसबत यह ज़्यादा आसान है कि ऊँट सूई के नाके में से गुज़र जाए।"

26यह बात सुनकर सुननेवालों ने पूछा, "फिर किस को नजात मिल सकती है?"

27ईसा ने जवाब दिया, "जो इनसान के लिए नामुमकिन है वह अल्लाह के लिए मुमकिन है।"

28पतरस ने उससे कहा, "हम तो अपना सब कुछ छोड़कर आपके पीछे हो लिए हैं।"

29ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुमको सच बताता हूँ कि जिसने भी अल्लाह की बादशाही की ख़ातिर अपने घर, बीवी, भाइयों, वालिदैन या बच्चों को
छोड़ दिया है 30उसे इस ज़माने में कई गुना ज़्यादा
और आनेवाले ज़माने में अबदी ज़िंदगी मिलेगी।"

ईसा की मौत की तीसरी पेशगोई

31ईसा शागिर्दों को एक तरफ़ ले जाकर उनसे कहने लगा, "सुनो, हम यरूशलम की तरफ़ बढ़ रहे हैं। वहाँ सब कुछ पूरा हो जाएगा जो नबियों की मारिफ़त इब्ने-आदम के बारे में लिखा गया है।
32उसे ग़ैरयहूदियों के हवाले कर दिया जाएगा जो
उसका मज़ाक़ उड़ाएँगे, उस की बेइज़्ज़ती करेंगे,
उस पर थूकेंगे, 33उसको कोड़े मारेंगे और उसे
क़त्ल करेंगे। लेकिन तीसरे दिन वह जी उठेगा।"

34लेकिन शागिर्दों की समझ में कुछ न आया। इस बात का मतलब उनसे छुपा रहा और वह न समझे कि वह क्या कह रहा है।

अंधे की शफ़ा

35ईसा यरीहू के क़रीब पहुँचा। वहाँ रास्ते
के किनारे एक अंधा बैठा भीक माँग रहा था।
36बहुत-से लोग उसके सामने से गुज़रने लगे तो
उसने यह सुनकर पूछा कि क्या हो रहा है।

37उन्होंने कहा, "ईसा नासरी यहाँ से गुज़र रहा है।"

38अंधा चिल्लाने लगा, "ऐ ईसा इब्ने-दाऊद, मुझ पर रहम करें।"

39आगे चलनेवालों ने उसे डाँटकर कहा, "ख़ामोश!" लेकिन वह मज़ीद ऊँची आवाज़ से पुकारता रहा, "ऐ इब्ने-दाऊद, मुझ पर रहम करें।"

40ईसा रुक गया और हुक्म दिया, "उसे मेरे पास लाओ।" जब वह क़रीब आया तो ईसा ने
उससे पूछा, 41"तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिए
करूँ?"

उसने जवाब दिया, "ख़ुदावंद, यह कि मैं देख सकूँ।"

42ईसा ने उससे कहा, "तो फिर देख! तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया है।"

43ज्योंही उसने यह कहा अंधे की आँखें बहाल हो गईं और वह अल्लाह की तमजीद करते हुए उसके पीछे हो लिया। यह देखकर पूरे हुजूम ने अल्लाह को जलाल दिया।

ईसा और ज़क्काई

19 फिर ईसा यरीहू में दाख़िल हुआ और
उसमें से गुज़रने लगा। 2उस शहर में
एक अमीर आदमी बनाम ज़क्काई रहता था जो
टैक्स लेनेवालों का अफ़सर था। 3वह जानना
चाहता था कि यह ईसा कौन है, लेकिन पूरी
कोशिश करने के बावुजूद उसे देख न सका,
क्योंकि ईसा के इर्दगिर्द बड़ा हुजूम था और
ज़क्काई का क़द छोटा था। 4इसलिए वह दौड़कर
आगे निकला और उसे देखने के लिए अंजीर-तूत[a]
के दरख़्त पर चढ़ गया जो रास्ते में था। 5जब
ईसा वहाँ पहुँचा तो उसने नज़र उठाकर कहा,
“ज़क्काई, जल्दी से उतर आ, क्योंकि आज मुझे
तेरे घर में ठहरना है।”

6ज़क्काई फ़ौरन उतर आया और ख़ुशी से
उस की मेहमान-नवाज़ी की। 7यह देखकर बाक़ी
तमाम लोग बुड़बुड़ाने लगे, “इसके घर में जाकर
वह एक गुनाहगार के मेहमान बन गए हैं।”

8लेकिन ज़क्काई ने ख़ुदावंद के सामने खड़े
होकर कहा, “ख़ुदावंद, मैं अपने माल का आधा
हिस्सा ग़रीबों को दे देता हूँ। और जिससे मैंने
नाजायज़ तौर से कुछ लिया है उसे चार गुना
वापस करता हूँ।”

9ईसा ने उससे कहा, “आज इस घराने को
नजात मिल गई है, इसलिए कि यह भी इब्राहीम
का बेटा है। 10क्योंकि इब्ने-आदम गुमशुदा को
ढूँडने और नजात देने के लिए आया है।”

पैसों में इज़ाफ़ा

11अब ईसा यरूशलम के क़रीब आ चुका था,
इसलिए लोग अंदाज़ा लगाने लगे कि अल्लाह
की बादशाही ज़ाहिर होनेवाली है। इसके पेशे-
नज़र ईसा ने अपनी यह बातें सुननेवालों को
एक तमसील सुनाई। 12उसने कहा, “एक नवाब
किसी दूर-दराज़ मुल्क को चला गया ताकि उसे
बादशाह मुक़र्रर किया जाए। फिर उसे वापस
आना था। 13रवाना होने से पहले उसने अपने
नौकरों में से दस को बुलाकर उन्हें सोने का एक
एक सिक्का दिया। साथ साथ उसने कहा, ‘यह
पैसे लेकर उस वक़्त तक कारोबार में लगाओ
जब तक मैं वापस न आऊँ।’ 14लेकिन उस की
रिआया उससे नफ़रत रखती थी, इसलिए उसने
उसके पीछे वफ़द भेजकर इत्तला दी, ‘हम नहीं
चाहते कि यह आदमी हमारा बादशाह बने।’

15तो भी उसे बादशाह मुक़र्रर किया गया।
इसके बाद जब वापस आया तो उसने उन नौकरों
को बुलाया जिन्हें उसने पैसे दिए थे ताकि मालूम
करे कि उन्होंने यह पैसे कारोबार में लगाकर
कितना इज़ाफ़ा किया है। 16पहला नौकर आया।
उसने कहा, ‘जनाब, आपके एक सिक्के से दस
हो गए हैं।’ 17मालिक ने कहा, ‘शाबाश, अच्छे
नौकर। तू थोड़े में वफ़ादार रहा, इसलिए अब तुझे
दस शहरों पर इख़्तियार मिलेगा।’ 18फिर दूसरा
नौकर आया। उसने कहा, ‘जनाब, आपके एक
सिक्के से पाँच हो गए हैं।’ 19मालिक ने उससे
कहा, ‘तुझे पाँच शहरों पर इख़्तियार मिलेगा।’

20फिर एक और नौकर आकर कहने लगा,
‘जनाब, यह आपका सिक्का है। मैंने इसे कपड़े
में लपेटकर महफ़ूज़ रखा, 21क्योंकि मैं आपसे
डरता था, इसलिए कि आप सख़्त आदमी हैं। जो
पैसे आपने नहीं लगाए उन्हें ले लेते हैं और जो
बीज आपने नहीं बोया उस की फ़सल काटते हैं।’
22मालिक ने कहा, ‘शरीर नौकर! मैं तेरे अपने
अलफ़ाज़ के मुताबिक़ तेरी अदालत करूँगा। जब
तू जानता था कि मैं सख़्त आदमी हूँ, कि वह पैसे
ले लेता हूँ जो ख़ुद नहीं लगाए और वह फ़सल
काटता हूँ जिसका बीज नहीं बोया, 23तो फिर
तूने मेरे पैसे बैंक में क्यों न जमा कराए? अगर
तू ऐसा करता तो वापसी पर मुझे कम अज़ कम
वह पैसे सूद समेत मिल जाते।’

[a]एक सायादार दरख़्त जिसमें अंजीर की तरह का ख़ुरदनी फल लगता है। इसके फूल ज़रद और आराइशी होते हैं। मिसरी तूत। जमीज़। ficus sycomorus।

24यह कहकर वह हाज़िरीन से मुख़ातिब हुआ,
'यह सिक्का इससे लेकर उस नौकर को दे दो
जिसके पास दस सिक्के हैं।' 25उन्होंने एतराज़
किया, 'जनाब, उसके पास तो पहले ही दस
सिक्के हैं।' 26उसने जवाब दिया, 'मैं तुम्हें बताता
हूँ कि हर शख़्स जिसके पास कुछ है उसे और दिया
जाएगा, लेकिन जिसके पास कुछ नहीं है उससे
वह भी छीन लिया जाएगा जो उसके पास है।
27अब उन दुश्मनों को ले आओ जो नहीं चाहते थे
कि मैं उनका बादशाह बनूँ। उन्हें मेरे सामने फाँसी
दे दो'।"

यरूशलम में ईसा का पुरजोश इस्तक़बाल

28इन बातों के बाद ईसा दूसरों के आगे आगे
यरूशलम की तरफ़ बढ़ने लगा। 29जब वह
बैत-फ़गे और बैत-अनियाह के क़रीब पहुँचा जो
ज़ैतून के पहाड़ पर थे तो उसने दो शागिर्दों को
अपने आगे भेजकर 30कहा, "सामनेवाले गाँव में
जाओ। वहाँ तुम एक जवान गधा देखोगे। वह बँधा
हुआ होगा और अब तक कोई भी उस पर सवार
नहीं हुआ है। उसे खोलकर ले आओ। 31अगर
कोई पूछे कि गधे को क्यों खोल रहे हो तो उसे
बता देना कि ख़ुदावंद को इसकी ज़रूरत है।"

32दोनों शागिर्द गए तो देखा कि सब कुछ वैसा
ही है जैसा ईसा ने उन्हें बताया था। 33जब वह
जवान गधे को खोलने लगे तो उसके मालिकों ने
पूछा, "तुम गधे को क्यों खोल रहे हो?"

34उन्होंने जवाब दिया, "ख़ुदावंद को इसकी
ज़रूरत है।" 35वह उसे ईसा के पास ले आए,
और अपने कपड़े गधे पर रखकर उसको उस पर
सवार किया। 36जब वह चल पड़ा तो लोगों ने
उसके आगे आगे रास्ते में अपने कपड़े बिछा दिए।

37चलते चलते वह उस जगह के क़रीब पहुँचा
जहाँ रास्ता ज़ैतून के पहाड़ पर से उतरने लगता
है। इस पर शागिर्दों का पूरा हुजूम ख़ुशी के मारे
ऊँची आवाज़ से उन मोजिज़ों के लिए अल्लाह
की तमजीद करने लगा जो उन्होंने देखे थे,

38"मुबारक है वह बादशाह
जो रब के नाम से आता है।
आसमान पर सलामती हो
और बुलंदियों पर इज़्ज़तो-जलाल।"

39कुछ फ़रीसी भीड़ में थे। उन्होंने ईसा से
कहा, "उस्ताद, अपने शागिर्दों को समझाएँ।"

40उसने जवाब दिया, "मैं तुम्हें बताता हूँ, अगर
यह चुप हो जाएँ तो पत्थर पुकार उठेंगे।"

ईसा शहर को देखकर रो पड़ता है

41जब वह यरूशलम के क़रीब पहुँचा तो शहर
को देखकर रो पड़ा 42और कहा, "काश तू भी
इस दिन जान लेती कि तेरी सलामती किसमें
है। लेकिन अब यह बात तेरी आँखों से छुपी हुई
है। 43क्योंकि तुझ पर ऐसा वक़्त आएगा कि तेरे
दुश्मन तेरे इर्दगिर्द बंद बाँधकर तेरा मुहासरा करेंगे
और यों तुझे चारों तरफ़ से घेरकर तंग करेंगे।
44वह तुझे तेरे बच्चों समेत ज़मीन पर पटकेंगे और
तेरे अंदर एक भी पत्थर दूसरे पर नहीं छोड़ेंगे। और
वजह यही होगी कि तूने वह वक़्त नहीं पहचाना
जब अल्लाह ने तेरी नजात के लिए तुझ पर नज़र
की।"

ईसा बैतुल-मुक़द्दस में जाता है

45फिर ईसा बैतुल-मुक़द्दस में जाकर उन्हें
निकालने लगा जो वहाँ क़ुरबानियों के लिए
दरकार चीज़ें बेच रहे थे। उसने कहा, 46"कलामे-
मुक़द्दस में लिखा है, 'मेरा घर दुआ का घर होगा'
जबकि तुमने उसे डाकुओं के अड्डे में बदल दिया
है।"

47और वह रोज़ाना बैतुल-मुक़द्दस में तालीम
देता रहा। लेकिन बैतुल-मुक़द्दस के राहनुमा
इमाम, शरीअत के आलिम और अवामी राहनुमा
उसे क़त्ल करने के लिए कोशाँ रहे, 48अलबत्ता
उन्हें कोई मौक़ा न मिला, क्योंकि तमाम लोग
ईसा की हर बात सुन सुनकर उससे लिपटे रहते
थे।

ईसा का इख़्तियार

20 एक दिन जब वह बैतुल-मुक़द्दस में
लोगों को तालीम दे रहा और अल्लाह
की ख़ुशख़बरी सुना रहा था तो राहनुमा इमाम,
शरीअत के उलमा और बुज़ुर्ग उसके पास आए।
2उन्होंने कहा, "हमें बताएँ, आप यह किस
इख़्तियार से कर रहे हैं? किसने आपको यह
इख़्तियार दिया है?"
3ईसा ने जवाब दिया, "मेरा भी तुमसे एक
सवाल है। तुम मुझे बताओ कि 4क्या यहया का
बपतिस्मा आसमानी था या इनसानी?"
5वह आपस में बहस करने लगे, "अगर हम
कहें 'आसमानी' तो वह पूछेगा, 'तो फिर तुम
उस पर ईमान क्यों न लाए?' 6लेकिन अगर
हम कहें 'इनसानी' तो तमाम लोग हमें संगसार
करेंगे, क्योंकि वह तो यक़ीन रखते हैं कि यहया
नबी था।" 7इसलिए उन्होंने जवाब दिया, "हम
नहीं जानते कि वह कहाँ से था।"
8ईसा ने कहा, "तो फिर मैं भी तुमको नहीं
बताता कि मैं यह सब कुछ किस इख़्तियार से
कर रहा हूँ।"

अंगूर के बाग़ के मुज़ारेओं की बग़ावत

9फिर ईसा लोगों को यह तमसील सुनाने
लगा, "किसी आदमी ने अंगूर का एक बाग़
लगाया। फिर वह उसे मुज़ारेओं के सुपुर्द करके
बहुत देर के लिए बैरूने-मुल्क चला गया। 10जब
अंगूर पक गए तो उसने अपने नौकर को उनके
पास भेज दिया ताकि वह मालिक का हिस्सा
वसूल करे। लेकिन मुज़ारेओं ने उस की पिटाई
करके उसे ख़ाली हाथ लौटा दिया। 11इस पर
मालिक ने एक और नौकर को उनके पास भेजा।
लेकिन मुज़ारेओं ने उसे भी मार मारकर उस की
बेइज़्ज़ती की और ख़ाली हाथ निकाल दिया।
12फिर मालिक ने तीसरे नौकर को भेज दिया।
उसे भी उन्होंने मारकर ज़ख़मी कर दिया और
निकाल दिया। 13बाग़ के मालिक ने कहा, 'अब मैं
क्या करूँ? मैं अपने प्यारे बेटे को भेजूँगा, शायद
वह उसका लिहाज़ करें।' 14लेकिन मालिक के
बेटे को देखकर मुज़ारे आपस में कहने लगे, 'यह
ज़मीन का वारिस है। आओ, हम इसे मार डालें।
फिर इसकी मीरास हमारी ही होगी।' 15उन्होंने
उसे बाग़ से बाहर फेंककर क़त्ल किया।"
ईसा ने पूछा, "अब बताओ, बाग़ का मालिक
क्या करेगा? 16वह वहाँ जाकर मुज़ारेओं को
हलाक करेगा और बाग़ को दूसरों के सुपुर्द कर
देगा।"
यह सुनकर लोगों ने कहा, "ख़ुदा ऐसा कभी न
करे।"
17ईसा ने उन पर नज़र डालकर पूछा, "तो फिर
कलामे-मुक़द्दस के इस हवाले का क्या मतलब है
कि

'जिस पत्थर को मकान बनानेवालों ने
रद्द किया,
वह कोने का बुनियादी पत्थर बन गया'?

18जो इस पत्थर पर गिरेगा वह टुकड़े टुकड़े
हो जाएगा, जबकि जिस पर वह ख़ुद गिरेगा उसे
पीस डालेगा।"

क्या टैक्स देना जायज़ है?

19शरीअत के उलमा और राहनुमा इमामों ने
उसी वक़्त उसे पकड़ने की कोशिश की, क्योंकि
वह समझ गए थे कि तमसील में बयानशुदा
मुज़ारे हम ही हैं। लेकिन वह अवाम से डरते थे।
20चुनाँचे वह उसे पकड़ने का मौक़ा ढूँडते रहे।
इस मक़सद के तहत उन्होंने उसके पास जासूस
भेज दिए। यह लोग अपने आपको दियानतदार
ज़ाहिर करके ईसा के पास आए ताकि उस की
कोई बात पकड़कर उसे रोमी गवर्नर के हवाले कर
सकें। 21इन जासूसों ने उससे पूछा, "उस्ताद,
हम जानते हैं कि आप वही कुछ बयान करते
और सिखाते हैं जो सहीह है। आप जानिबदार
नहीं होते बल्कि दियानतदारी से अल्लाह की
राह की तालीम देते हैं। 22अब हमें बताएँ कि
क्या रोमी शहनशाह को टैक्स देना जायज़ है या
नाजायज़?"

23लेकिन ईसा ने उनकी चालाकी भाँप ली
और कहा, 24“मुझे चाँदी का एक रोमी सिक्का
दिखाओ। किसकी सूरत और नाम इस पर कंदा
है?”

उन्होंने जवाब दिया, “शहनशाह का।”

25उसने कहा, “तो जो शहनशाह का है
शहनशाह को दो और जो अल्लाह का है अल्लाह
को।”

26यों वह अवाम के सामने उस की कोई बात
पकड़ने में नाकाम रहे। उसका जवाब सुनकर वह
हक्का-बक्का रह गए और मज़ीद कोई बात न
कर सके।

क्या हम जी उठेंगे?

27फिर कुछ सदूक़ी उसके पास आए। सदूक़ी
नहीं मानते कि रोज़े-क़ियामत मुरदे जी उठेंगे।
उन्होंने ईसा से एक सवाल किया, 28“उस्ताद,
मूसा ने हमें हुक्म दिया कि अगर कोई शादीशुदा
आदमी बेऔलाद मर जाए और उसका भाई हो
तो भाई का फ़र्ज़ है कि वह बेवा से शादी करके
अपने भाई के लिए औलाद पैदा करे। 29अब
फ़र्ज़ करें कि सात भाई थे। पहले ने शादी की,
लेकिन बेऔलाद फ़ौत हुआ। 30इस पर दूसरे ने
उससे शादी की, लेकिन वह भी बेऔलाद मर
गया। 31फिर तीसरे ने उससे शादी की। यह
सिलसिला सातवें भाई तक जारी रहा। यके बाद
दीगरे हर भाई बेवा से शादी करने के बाद मर गया।
32आख़िर में बेवा भी फ़ौत हो गई। 33अब बताएँ
कि क़ियामत के दिन वह किसकी बीवी होगी?
क्योंकि सात के सात भाइयों ने उससे शादी की
थी।”

34ईसा ने जवाब दिया, “इस ज़माने में लोग
ब्याह-शादी करते और कराते हैं। 35लेकिन जिन्हें
अल्लाह आनेवाले ज़माने में शरीक होने और
मुरदों में से जी उठने के लायक़ समझता है वह उस
वक़्त शादी नहीं करेंगे, न उनकी शादी किसी से
कराई जाएगी। 36वह मर भी नहीं सकेंगे, क्योंकि
वह फ़रिश्तों की मानिंद होंगे और क़ियामत के
फ़रज़ंद होने के बाइस अल्लाह के फ़रज़ंद होंगे।
37और यह बात कि मुरदे जी उठेंगे मूसा से भी
ज़ाहिर की गई है। क्योंकि जब वह काँटेदार झाड़ी
के पास आया तो उसने रब को यह नाम दिया,
‘इब्राहीम का ख़ुदा, इसहाक़ का ख़ुदा और याक़ूब
का ख़ुदा,’ हालाँकि उस वक़्त तीनों बहुत पहले
मर चुके थे। इसका मतलब है कि यह हक़ीक़त में
ज़िंदा हैं। 38क्योंकि अल्लाह मुरदों का नहीं बल्कि
ज़िंदों का ख़ुदा है। उसके नज़दीक यह सब ज़िंदा
हैं।”

39यह सुनकर शरीअत के कुछ उलमा ने
कहा, “शाबाश उस्ताद, आपने अच्छा कहा है।”
40इसके बाद उन्होंने उससे कोई भी सवाल करने
की जुर्रत न की।

मसीह के बारे में सवाल

41फिर ईसा ने उनसे पूछा, “मसीह के बारे
में क्यों कहा जाता है कि वह दाऊद का फ़रज़ंद
है? 42क्योंकि दाऊद ख़ुद ज़बूर की किताब में
फ़रमाता है,

‘रब ने मेरे रब से कहा,
मेरे दहने हाथ बैठ,
43जब तक मैं तेरे दुश्मनों को
तेरे पाँवों की चौकी न बना दूँ।’

44दाऊद तो ख़ुद मसीह को रब कहता है। तो
फिर वह किस तरह दाऊद का फ़रज़ंद हो सकता
है?”

शरीअत के उलमा से ख़बरदार

45जब लोग सुन रहे थे तो उसने अपने शागिर्दों
से कहा, 46“शरीअत के उलमा से ख़बरदार रहो!
क्योंकि वह शानदार चोग़े पहनकर इधर-उधर
फिरना पसंद करते हैं। जब लोग बाज़ारों में सलाम
करके उनकी इज़्ज़त करते हैं तो फिर वह ख़ुश
हो जाते हैं। उनकी बस एक ही ख़ाहिश होती है
कि इबादतख़ानों और ज़ियाफ़तों में इज़्ज़त की
कुरसियों पर बैठ जाएँ। 47यह लोग बेवाओं के
घर हड़प कर जाते और साथ साथ दिखावे के

लिए लंबी लंबी दुआएँ माँगते हैं। ऐसे लोगों को
निहायत सख़्त सज़ा मिलेगी।”

बेवा का चंदा

21 ईसा ने नज़र उठाकर देखा कि अमीर
लोग अपने हदिये बैतुल-मुक़द्दस के
चंदे के बक्स में डाल रहे हैं। 2एक ग़रीब बेवा भी
वहाँ से गुज़री जिसने उसमें ताँबे के दो मामूली-से
सिक्के डाल दिए। 3ईसा ने कहा, “मैं तुमको सच
बताता हूँ कि इस ग़रीब बेवा ने तमाम लोगों की
निसबत ज़्यादा डाला है। 4क्योंकि इन सबने तो
अपनी दौलत की कसरत से कुछ डाला जबकि
इसने ज़रूरतमंद होने के बावुजूद भी अपने गुज़ारे
के सारे पैसे दे दिए हैं।”

बैतुल-मुक़द्दस पर आनेवाली तबाही

5उस वक़्त कुछ लोग बैतुल-मुक़द्दस की
तारीफ़ में कहने लगे कि वह कितने ख़ूबसूरत
पत्थरों और मन्नत के तोह्फ़ों से सजी हुई है।
यह सुनकर ईसा ने कहा, 6“जो कुछ तुमको यहाँ
नज़र आता है उसका पत्थर पर पत्थर नहीं रहेगा।
आनेवाले दिनों में सब कुछ ढा दिया जाएगा।”

मुसीबतों और ईज़ारसानी की पेशगोई

7उन्होंने पूछा, “उस्ताद, यह कब होगा? क्या
क्या नज़र आएगा जिससे मालूम हो कि यह अब
होने को है?”

8ईसा ने जवाब दिया, “ख़बरदार रहो कि कोई
तुम्हें गुमराह न कर दे। क्योंकि बहुत-से लोग मेरा
नाम लेकर आएँगे और कहेंगे, ‘मैं ही मसीह हूँ’
और कि ‘वक़्त क़रीब आ चुका है।’ लेकिन उनके
पीछे न लगना। 9और जब जंगों और फ़ितनों की
ख़बरें तुम तक पहुँचेंगी तो मत घबराना। क्योंकि
लाज़िम है कि यह सब कुछ पहले पेश आए। तो
भी अभी आख़िरत न होगी।”

10उसने अपनी बात जारी रखी, “एक क़ौम
दूसरी के ख़िलाफ़ उठ खड़ी होगी, और एक
बादशाही दूसरी के ख़िलाफ़। 11शदीद ज़लज़ले
आएँगे, जगह जगह काल पड़ेंगे और वबाई
बीमारियाँ फैल जाएँगी। हैबतनाक वाक़ियात
और आसमान पर बड़े निशान देखने में आएँगे।
12लेकिन इन तमाम वाक़ियात से पहले लोग
तुमको पकड़कर सताएँगे। वह तुमको यहूदी
इबादतख़ानों के हवाले करेंगे, क़ैदख़ानों में
डलवाएँगे और बादशाहों और हुक्मरानों के सामने
पेश करेंगे। और यह इसलिए होगा कि तुम
मेरे पैरोकार हो। 13नतीजे में तुम्हें मेरी गवाही
देने का मौक़ा मिलेगा। 14लेकिन ठान लो कि
तुम पहले से अपना दिफ़ा करने की तैयारी न
करो, 15क्योंकि मैं तुमको ऐसे अलफ़ाज़ और
हिकमत अता करूँगा कि तुम्हारे तमाम मुख़ालिफ़
न उसका मुक़ाबला और न उस की तरदीद कर
सकेंगे। 16तुम्हारे वालिदैन, भाई, रिश्तेदार और
दोस्त भी तुमको दुश्मन के हवाले कर देंगे, बल्कि
तुममें से बाज़ को क़त्ल किया जाएगा। 17सब
तुमसे नफ़रत करेंगे, इसलिए कि तुम मेरे पैरोकार
हो। 18तो भी तुम्हारा एक बाल भी बीका नहीं
होगा। 19साबितक़दम रहने से ही तुम अपनी जान
बचा लोगे।

यरूशलम की तबाही

20जब तुम यरूशलम को फ़ौजों से घिरा हुआ
देखो तो जान लो कि उस की तबाही क़रीब आ
चुकी है। 21उस वक़्त यहूदिया के बाशिंदे भागकर
पहाड़ी इलाक़े में पनाह लें। शहर के रहनेवाले
उससे निकल जाएँ और देहात में आबाद लोग
शहर में दाख़िल न हों। 22क्योंकि यह इलाही
ग़ज़ब के दिन होंगे जिनमें वह सब कुछ पूरा हो
जाएगा जो कलामे-मुक़द्दस में लिखा है। 23उन
ख़वातीन पर अफ़सोस जो उन दिनों में हामिला हों
या अपने बच्चों को दूध पिलाती हों, क्योंकि मुल्क
में बहुत मुसीबत होगी और इस क़ौम पर अल्लाह
का ग़ज़ब नाज़िल होगा। 24लोग उन्हें तलवार
से क़त्ल करेंगे और क़ैद करके तमाम ग़ैरयहूदी
ममालिक में ले जाएंगे। ग़ैरयहूदी यरूशलम को
पाँवों तले कुचल डालेंगे। यह सिलसिला उस

वक़्त तक जारी रहेगा जब तक ग़ैरयहूदियों का
दौर पूरा न हो जाए।

इब्ने-आदम की आमद

25सूरज, चाँद और सितारों में अजीबो-ग़रीब
निशान ज़ाहिर होंगे। क़ौमें समुंदर के शोर और
ठाठें मारने से हैरानो-परेशान होंगी। 26लोग इस
अंदेशे से कि क्या क्या मुसीबत दुनिया पर आएगी
इस क़दर ख़ौफ़ खाएँगे कि उनकी जान में जान
न रहेगी, क्योंकि आसमान की क़ुव्वतें हिलाई
जाएँगी। 27और फिर वह इब्ने-आदम को बड़ी
क़ुदरत और जलाल के साथ बादल में आते हुए
देखेंगे। 28चुनाँचे जब यह कुछ पेश आने लगे तो
सीधे खड़े होकर अपनी नज़र उठाओ, क्योंकि
तुम्हारी नजात नज़दीक होगी।”

अंजीर के दरख़्त की तमसील

29इस सिलसिले में ईसा ने उन्हें एक तमसील
सुनाई। “अंजीर के दरख़्त और बाक़ी दरख़्तों पर
ग़ौर करो। 30ज्योंही कोंपलें निकलने लगती हैं
तुम जान लेते हो कि गरमियों का मौसम नज़दीक
है। 31इसी तरह जब तुम यह वाक़ियात देखोगे तो
जान लोगे कि अल्लाह की बादशाही क़रीब ही है।
32मैं तुमको सच बताता हूँ कि इस नसल के
ख़त्म होने से पहले पहले यह सब कुछ वाक़े होगा।
33आसमानो-ज़मीन तो जाते रहेंगे, लेकिन मेरी
बातें हमेशा तक क़ायम रहेंगी।

ख़बरदार रहना

34ख़बरदार रहो ताकि तुम्हारे दिल ऐयाशी,
नशाबाज़ी और रोज़ाना की फ़िकरों तले दब न
जाएँ। वरना यह दिन अचानक तुम पर आन
पड़ेगा, 35और फंदे की तरह तुम्हें जकड़ लेगा।
क्योंकि वह दुनिया के तमाम बाशिंदों पर आएगा।
36हर वक़्त चौकस रहो और दुआ करते रहो कि
तुमको आनेवाली इन सब बातों से बच निकलने
की तौफ़ीक़ मिल जाए और तुम इब्ने-आदम के
सामने खड़े हो सको।”

37हर रोज़ ईसा बैतुल-मुक़द्दस में तालीम देता
रहा और हर शाम वह निकलकर उस पहाड़ पर
रात गुज़ारता था जिसका नाम ज़ैतून का पहाड़ है।
38और तमाम लोग उस की बातें सुनने के लिए
सुबह-सवेरे बैतुल-मुक़द्दस में उसके पास आते थे।

ईसा के ख़िलाफ़ मनसूबाबंदियाँ

22 बेख़मीरी रोटी की ईद यानी फ़सह
की ईद क़रीब आ गई थी। 2राहनुमा
इमाम और शरीअत के उलमा ईसा को क़त्ल
करने का कोई मौज़ूँ मौक़ा ढूँड रहे थे, क्योंकि
वह अवाम के रद्दे-अमल से डरते थे।

ईसा को दुश्मन के हवाले करने का मनसूबा

3उस वक़्त इबलीस यहूदाह इस्करियोती में
समा गया जो बारह रसूलों में से था। 4अब वह
राहनुमा इमामों और बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदारों
के अफ़सरों से मिला और उनसे बात करने लगा
कि वह ईसा को किस तरह उनके हवाले कर
सकेगा। 5वह ख़ुश हुए और उसे पैसे देने पर
मुत्तफ़िक़ हुए। 6यहूदाह रज़ामंद हुआ। अब से वह
इस तलाश में रहा कि ईसा को ऐसे मौक़े पर उनके
हवाले करे जब हुजूम उसके पास न हो।

फ़सह की ईद के लिए तैयारियाँ

7बेख़मीरी रोटी की ईद आई जब फ़सह के
लेले को क़ुरबान करना था। 8ईसा ने पतरस और
यूहन्ना को आगे भेजकर हिदायत की, “जाओ,
हमारे लिए फ़सह का खाना तैयार करो ताकि हम
जाकर उसे खा सकें।”

9उन्होंने पूछा, “हम उसे कहाँ तैयार करें?”

10उसने जवाब दिया, “जब तुम शहर में
दाख़िल होगे तो तुम्हारी मुलाक़ात एक आदमी
से होगी जो पानी का घड़ा उठाए चल रहा होगा।
उसके पीछे चलकर उस घर में दाख़िल हो जाओ
जिसमें वह जाएगा। 11वहाँ के मालिक से कहना,
‘उस्ताद आपसे पूछते हैं कि वह कमरा कहाँ है
जहाँ मैं अपने शागिर्दों के साथ फ़सह का खाना

खाऊँ?’ 12वह तुमको दूसरी मनज़िल पर एक
बड़ा और सजा हुआ कमरा दिखाएगा। फ़सह का
खाना वहीं तैयार करना।”

13दोनों चले गए तो सब कुछ वैसा ही पाया
जैसा ईसा ने उन्हें बताया था। फिर उन्होंने फ़सह
का खाना तैयार किया।

फ़सह का आख़िरी खाना

14मुक़र्ररा वक़्त पर ईसा अपने शागिर्दों के
साथ खाने के लिए बैठ गया। 15उसने उनसे कहा,
“मेरी शदीद आरज़ू थी कि दुख उठाने से पहले
तुम्हारे साथ मिलकर फ़सह का यह खाना खाऊँ।
16क्योंकि मैं तुमको बताता हूँ कि उस वक़्त तक
इस खाने में शरीक नहीं हूँगा जब तक इसका
मक़सद अल्लाह की बादशाही में पूरा न हो गया
हो।”

17फिर उसने मै का प्याला लेकर शुक्र-
गुज़ारी की दुआ की और कहा, “इसको लेकर
आपस में बाँट लो। 18मैं तुमको बताता हूँ कि
अब से मैं अंगूर का रस नहीं पियूँगा, क्योंकि
अगली दफ़ा इसे अल्लाह की बादशाही के आने
पर पियूँगा।”

19फिर उसने रोटी लेकर शुक्रगुज़ारी की दुआ
की और उसे टुकड़े करके उन्हें दे दिया। उसने
कहा, “यह मेरा बदन है, जो तुम्हारे लिए दिया
जाता है। मुझे याद करने के लिए यही किया
करो।” 20इसी तरह उसने खाने के बाद प्याला
लेकर कहा, “मै का यह प्याला वह नया अहद है
जो मेरे ख़ून के ज़रीए क़ायम किया जाता है, वह
ख़ून जो तुम्हारे लिए बहाया जाता है।

21लेकिन जिस शख़्स का हाथ मेरे साथ खाना
खाने में शरीक है वह मुझे दुश्मन के हवाले कर
देगा। 22इब्ने-आदम तो अल्लाह की मरज़ी के
मुताबिक़ कूच कर जाएगा, लेकिन उस शख़्स पर
अफ़सोस जिसके वसीले से उसे दुश्मन के हवाले
कर दिया जाएगा।”

23यह सुनकर शागिर्द एक दूसरे से बहस करने
लगे कि हममें से यह कौन हो सकता है जो इस
क़िस्म की हरकत करेगा।

कौन बड़ा है?

24फिर एक और बात भी छिड़ गई। वह एक
दूसरे से बहस करने लगे कि हममें से कौन सबसे
बड़ा समझा जाए। 25लेकिन ईसा ने उनसे कहा,
“ग़ैरयहूदी क़ौमों में बादशाह वही हैं जो दूसरों पर
हुकूमत करते हैं, और इख़्तियारवाले वही हैं जिन्हें
‘मोहसिन’ का लक़ब दिया जाता है। 26लेकिन
तुमको ऐसा नहीं होना चाहिए। इसके बजाए जो
सबसे बड़ा है वह सबसे छोटे लड़के की मानिंद हो
और जो राहनुमाई करता है वह नौकर जैसा हो।
27क्योंकि आम तौर पर कौन ज़्यादा बड़ा होता
है, वह जो खाने के लिए बैठा है या वह जो लोगों
की ख़िदमत के लिए हाज़िर होता है? क्या वह
नहीं जो खाने के लिए बैठा है? बेशक। लेकिन
मैं ख़िदमत करनेवाले की हैसियत से ही तुम्हारे
दरमियान हूँ।

28देखो, तुम वही हो जो मेरी तमाम
आज़माइशों के दौरान मेरे साथ रहे हो। 29चुनाँचे
मैं तुमको बादशाही अता करता हूँ जिस तरह बाप
ने मुझे भी बादशाही अता की है। 30तुम मेरी
बादशाही में मेरी मेज़ पर बैठकर मेरे साथ खाओ
और पियोगे, और तख़्तों पर बैठकर इसराईल के
बारह क़बीलों का इनसाफ़ करोगे।

पतरस के इनकार की पेशगोई

31शमाऊन, शमाऊन! इबलीस ने तुम लोगों
को गंदुम की तरह फटकने का मुतालबा किया
है। 32लेकिन मैंने तेरे लिए दुआ की है ताकि तेरा
ईमान जाता न रहे। और जब तू मुड़कर वापस
आए तो उस वक़्त अपने भाइयों को मज़बूत
करना।”

33पतरस ने जवाब दिया, “ख़ुदावंद, मैं तो
आपके साथ जेल में भी जाने बल्कि मरने को
तैयार हूँ।”

34ईसा ने कहा, "पतरस, मैं तुझे बताता हूँ कि
कल सुबह मुरग़ के बाँग देने से पहले पहले तू तीन
बार मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।"

अब बटवे, बैग और तलवार की ज़रूरत है

35फिर उसने उनसे पूछा, "जब मैंने तुमको
बटवे, सामान के लिए बैग और जूतों के बग़ैर
भेज दिया तो क्या तुम किसी भी चीज़ से महरूम
रहे?"

उन्होंने जवाब दिया, "किसी से नहीं।"

36उसने कहा, "लेकिन अब जिसके पास
बटवा या बैग हो वह उसे साथ ले जाए, बल्कि
जिसके पास तलवार न हो वह अपनी चादर
बेचकर तलवार ख़रीद ले। 37कलामे-मुक़द्दस में
लिखा है, 'उसे मुजरिमों में शुमार किया गया' और
मैं तुमको बताता हूँ, लाज़िम है कि यह बात मुझमें
पूरी हो जाए। क्योंकि जो कुछ मेरे बारे में लिखा
है उसे पूरा ही होना है।"

38उन्होंने कहा, "ख़ुदावंद, यहाँ दो तलवारें
हैं।" उसने कहा, "बस! काफ़ी है!"

ज़ैतून के पहाड़ पर ईसा की दुआ

39फिर वह शहर से निकलकर मामूल के
मुताबिक़ ज़ैतून के पहाड़ की तरफ़ चल दिया।
उसके शागिर्द उसके पीछे हो लिए। 40वहाँ
पहुँचकर उसने उनसे कहा, "दुआ करो ताकि
आज़माइश में न पड़ो।"

41फिर वह उन्हें छोड़कर कुछ आगे निकला,
तक़रीबन इतने फ़ासले पर जितनी दूर तक पत्थर
फेंका जा सकता है। वहाँ वह झुककर दुआ करने
लगा, 42"ऐ बाप, अगर तू चाहे तो यह प्याला
मुझसे हटा ले। लेकिन मेरी नहीं बल्कि तेरी मरज़ी
पूरी हो।" 43उस वक़्त एक फ़रिश्ते ने आसमान
पर से उस पर ज़ाहिर होकर उसको तक़वियत दी।
44वह सख़्त परेशान होकर ज़्यादा दिलसोज़ी से
दुआ करने लगा। साथ साथ उसका पसीना ख़ून
की बूँदों की तरह ज़मीन पर टपकने लगा।

45जब वह दुआ से फ़ारिग़ होकर खड़ा हुआ
और शागिर्दों के पास वापस आया तो देखा कि
वह ग़म के मारे सो गए हैं। 46उसने उनसे कहा,
"तुम क्यों सो रहे हो? उठकर दुआ करते रहो
ताकि आज़माइश में न पड़ो।"

ईसा की गिरिफ़्तारी

47वह अभी यह बात कर ही रहा था कि एक
हुजूम आ पहुँचा जिसके आगे आगे यहूदाह चल
रहा था। वह ईसा को बोसा देने के लिए उसके
पास आया। 48लेकिन उसने कहा, "यहूदाह,
क्या तू इब्ने-आदम को बोसा देकर दुश्मन के
हवाले कर रहा है?"

49जब उसके साथियों ने भाँप लिया कि अब
क्या होनेवाला है तो उन्होंने कहा, "ख़ुदावंद, क्या
हम तलवार चलाएँ?" 50और उनमें से एक ने
अपनी तलवार से इमामे-आज़म के ग़ुलाम का
दहना कान उड़ा दिया।

51लेकिन ईसा ने कहा, "बस कर!" उसने
ग़ुलाम का कान छूकर उसे शफ़ा दी। 52फिर वह
उन राहनुमा इमामों, बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदारों
के अफ़सरों और बुज़ुर्गों से मुख़ातिब हुआ जो
उसके पास आए थे, "क्या मैं डाकू हूँ कि तुम
तलवारें और लाठियाँ लिए मेरे ख़िलाफ़ निकले
हो? 53मैं तो रोज़ाना बैतुल-मुक़द्दस में तुम्हारे
पास था, मगर तुमने वहाँ मुझे हाथ नहीं लगाया।
लेकिन अब यह तुम्हारा वक़्त है, वह वक़्त जब
तारीकी हुकूमत करती है।"

पतरस ईसा को जानने से इनकार करता है

54फिर वह उसे गिरिफ़्तार करके इमामे-आज़म
के घर ले गए। पतरस कुछ फ़ासले पर उनके
पीछे पीछे वहाँ पहुँच गया। 55लोग सहन में आग
जलाकर उसके इर्दगिर्द बैठ गए। पतरस भी उनके
दरमियान बैठ गया। 56किसी नौकरानी ने उसे
वहाँ आग के पास बैठे हुए देखा। उसने उसे घूरकर
कहा, "यह भी उसके साथ था।"

57लेकिन उसने इनकार किया, “ख़ातून, मैं
उसे नहीं जानता।”
58थोड़ी देर के बाद किसी आदमी ने उसे देखा
और कहा, “तुम भी उनमें से हो।”
लेकिन पतरस ने जवाब दिया, “नहीं भई! मैं
नहीं हूँ।”
59तक़रीबन एक घंटा गुज़र गया तो किसी
और ने इसरार करके कहा, “यह आदमी यक़ीनन
उसके साथ था, क्योंकि यह भी गलील का
रहनेवाला है।”
60लेकिन पतरस ने जवाब दिया, “यार, मैं नहीं
जानता कि तुम क्या कह रहे हो!”
वह अभी बात कर ही रहा था कि अचानक
मुरग़ की बाँग सुनाई दी। 61ख़ुदावंद ने मुड़कर
पतरस पर नज़र डाली। फिर पतरस को ख़ुदावंद
की वह बात याद आई जो उसने उससे कही थी
कि “कल सुबह मुरग़ के बाँग देने से पहले पहले तू
तीन बार मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।”
62पतरस वहाँ से निकलकर टूटे दिल से ख़ूब
रोया।

लान-तान और पिटाई

63पहरेदार ईसा का मज़ाक़ उड़ाने और उस की
पिटाई करने लगे। 64उन्होंने उस की आँखों पर
पट्टी बाँधकर पूछा, “नबुव्वत कर कि किसने तुझे
मारा?” 65इस तरह की और बहुत-सी बातों से
वह उस की बेइज़्ज़ती करते रहे।

यहूदी अदालते-आलिया के सामने पेशी

66जब दिन चढ़ा तो राहनुमा इमामों और
शरीअत के उलमा पर मुश्तमिल क़ौम की
मजलिस ने जमा होकर उसे यहूदी अदालते-
आलिया में पेश किया। 67उन्होंने कहा, “अगर
तू मसीह है तो हमें बता!”
ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैं तुमको बताऊँ
तो तुम मेरी बात नहीं मानोगे, 68और अगर तुमसे
पूछूँ तो तुम जवाब नहीं दोगे। 69लेकिन अब से
इब्ने-आदम अल्लाह तआला के दहने हाथ बैठा
होगा।”
70सबने पूछा, “तो फिर क्या तू अल्लाह का
फ़रज़ंद है?”
उसने जवाब दिया, “जी, तुम ख़ुद कहते हो।”
71इस पर उन्होंने कहा, “अब हमें किसी और
गवाही की क्या ज़रूरत रही? क्योंकि हमने यह
बात उसके अपने मुँह से सुन ली है।”

पीलातुस के सामने

23 फिर पूरी मजलिस उठी और उसे
पीलातुस के पास ले आई। 2वहाँ वह
उस पर इलज़ाम लगाकर कहने लगे, “हमने
मालूम किया है कि यह आदमी हमारी क़ौम को
गुमराह कर रहा है। यह शहनशाह को टैक्स देने
से मना करता और दावा करता है कि मैं मसीह
और बादशाह हूँ।”
3पीलातुस ने उससे पूछा, “अच्छा, तुम
यहूदियों के बादशाह हो?”
ईसा ने जवाब दिया, “जी, आप ख़ुद कहते हैं।”
4फिर पीलातुस ने राहनुमा इमामों और हुजूम
से कहा, “मुझे इस आदमी पर इलज़ाम लगाने
की कोई वजह नज़र नहीं आती।”
5लेकिन वह अड़े रहे। उन्होंने कहा, “वह पूरे
यहूदिया में तालीम देते हुए क़ौम को उकसाता
है। वह गलील से शुरू करके यहाँ तक आ पहुँचा
है।”

हेरोदेस के सामने

6यह सुनकर पीलातुस ने पूछा, “क्या यह
शख़्स गलील का है?” 7जब उसे मालूम हुआ
कि ईसा गलील यानी उस इलाक़े से है जिस पर
हेरोदेस अंतिपास की हुकूमत है तो उसने उसे
हेरोदेस के पास भेज दिया, क्योंकि वह भी उस
वक़्त यरूशलम में था। 8हेरोदेस ईसा को देखकर
बहुत ख़ुश हुआ, क्योंकि उसने उसके बारे में बहुत
कुछ सुना था और इसलिए काफ़ी देर से उससे
मिलना चाहता था। अब उस की बड़ी ख़ाहिश थी

कि ईसा को कोई मोजिज़ा करते हुए देख सके।
9उसने उससे बहुत सारे सवाल किए, लेकिन
ईसा ने एक का भी जवाब न दिया। 10राहनुमा
इमाम और शरीअत के उलमा साथ खड़े बड़े जोश
से उस पर इलज़ाम लगाते रहे। 11फिर हेरोदेस
और उसके फ़ौजियों ने उस की तहक़ीर करते हुए
उसका मज़ाक़ उड़ाया और उसे चमकदार लिबास
पहनाकर पीलातुस के पास वापस भेज दिया।
12उसी दिन हेरोदेस और पीलातुस दोस्त बन गए,
क्योंकि इससे पहले उनकी दुश्मनी चल रही थी।

सज़ाए-मौत का फ़ैसला

13फिर पीलातुस ने राहनुमा इमामों, सर-
दारों और अवाम को जमा करके 14उनसे कहा,
"तुमने इस शख़्स को मेरे पास लाकर इस पर
इलज़ाम लगाया है कि यह क़ौम को उकसा रहा
है। मैंने तुम्हारी मौजूदगी में इसका जायज़ा लेकर
ऐसा कुछ नहीं पाया जो तुम्हारे इलज़ामात की
तसदीक़ करे। 15हेरोदेस भी कुछ नहीं मालूम कर
सका, इसलिए उसने इसे हमारे पास वापस भेज
दिया है। इस आदमी से कोई भी ऐसा क़ुसूर
नहीं हुआ कि यह सज़ाए-मौत के लायक़ है।
16इसलिए मैं इसे कोड़ों की सज़ा देकर रिहा कर
देता हूँ।"

17[असल में यह उसका फ़र्ज़ था कि वह ईद
के मौक़े पर उनकी ख़ातिर एक क़ैदी को रिहा कर
दे।]

18लेकिन सब मिलकर शोर मचाकर कहने
लगे, "इसे ले जाएँ! इसे नहीं बल्कि बर-
अब्बा को रिहा करके हमें दें।" 19(बर-अब्बा को
इसलिए जेल में डाला गया था कि वह क़ातिल था
और उसने शहर में हुकूमत के ख़िलाफ़ बग़ावत
की थी।)

20पीलातुस ईसा को रिहा करना चाहता
था, इसलिए वह दुबारा उनसे मुख़ातिब हुआ।
21लेकिन वह चिल्लाते रहे, "इसे मसलूब करें,
इसे मसलूब करें।"

22फिर पीलातुस ने तीसरी दफ़ा उनसे कहा,
"क्यों? उसने क्या जुर्म किया है? मुझे इसे
सज़ाए-मौत देने की कोई वजह नज़र नहीं आती।
इसलिए मैं इसे कोड़े लगवाकर रिहा कर देता हूँ।"

23लेकिन वह बड़ा शोर मचाकर उसे मसलूब
करने का तक़ाज़ा करते रहे, और आख़िरकार
उनकी आवाज़ें ग़ालिब आ गईं। 24फिर पीलातुस
ने फ़ैसला किया कि उनका मुतालबा पूरा किया
जाए। 25उसने उस आदमी को रिहा कर दिया जो
अपनी बाग़ियाना हरकतों और क़त्ल की वजह से
जेल में डाल दिया गया था जबकि ईसा को उसने
उनकी मरज़ी के मुताबिक़ उनके हवाले कर दिया।

ईसा को मसलूब किया जाता है

26जब फ़ौजी ईसा को ले जा रहे थे तो उन्होंने
एक आदमी को पकड़ लिया जो लिबिया के शहर
कुरेन का रहनेवाला था। उसका नाम शमाऊन था।
उस वक़्त वह देहात से शहर में दाख़िल हो रहा
था। उन्होंने सलीब को उसके कंधों पर रखकर
उसे ईसा के पीछे चलने का हुक्म दिया।

27एक बड़ा हुजूम उसके पीछे हो लिया जिसमें
कुछ ऐसी औरतें भी शामिल थीं जो सीना पीट
पीटकर उसका मातम कर रही थीं। 28ईसा ने
मुड़कर उनसे कहा, "यरूशलम की बेटियो! मेरे
वास्ते न रोओ बल्कि अपने और अपने बच्चों के
वास्ते रोओ। 29क्योंकि ऐसे दिन आएँगे जब लोग
कहेंगे, 'मुबारक हैं वह जो बाँझ हैं, जिन्होंने न तो
बच्चों को जन्म दिया, न दूध पिलाया।' 30फिर
लोग पहाड़ों से कहने लगेंगे, 'हम पर गिर पड़ो,'
और पहाड़ियों से कि 'हमें छुपा लो।' 31क्योंकि
अगर हरी लकड़ी से ऐसा सुलूक किया जाता है
तो फिर सूखी लकड़ी का क्या बनेगा?"

32दो और मर्दों को भी फाँसी देने के लिए
बाहर ले जाया जा रहा था। दोनों मुजरिम थे।
33चलते चलते वह उस जगह पहुँचे जिसका नाम
खोपड़ी था। वहाँ उन्होंने ईसा को दोनों मुजरिमों
समेत मसलूब किया। एक मुजरिम को उसके दाएँ
हाथ और दूसरे को उसके बाएँ हाथ लटका दिया

गया। 34ईसा ने कहा, “ऐ बाप, इन्हें मुआफ़ कर, क्योंकि यह जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं।”

उन्होंने क़ुरा डालकर उसके कपड़े आपस में बाँट लिए। 35हुजूम वहाँ खड़ा तमाशा देखता रहा जबकि क़ौम के सरदारों ने उसका मज़ाक़ भी उड़ाया। उन्होंने कहा, “उसने औरों को बचाया है। अगर यह अल्लाह का चुना हुआ और मसीह है तो अपने आपको बचाए।”

36फ़ौजियों ने भी उसे लान-तान की। उसके पास आकर उन्होंने उसे मै का सिरका पेश किया 37और कहा, “अगर तू यहूदियों का बादशाह है तो अपने आपको बचा ले।”

38उसके सर के ऊपर एक तख़्ती लगाई गई थी जिस पर लिखा था, “यह यहूदियों का बादशाह है।”

39जो मुजरिम उसके साथ मसलूब हुए थे उनमें से एक ने कुफ़्र बकते हुए कहा, “क्या तू मसीह नहीं है? तो फिर अपने आपको और हमें भी बचा ले।”

40लेकिन दूसरे ने यह सुनकर उसे डाँटा, “क्या तू अल्लाह से भी नहीं डरता? जो सज़ा उसे दी गई है वह तुझे भी मिली है। 41हमारी सज़ा तो वाजिबी है, क्योंकि हमें अपने कामों का बदला मिल रहा है, लेकिन इसने कोई बुरा काम नहीं किया।” 42फिर उसने ईसा से कहा, “जब आप अपनी बादशाही में आएँ तो मुझे याद करें।”

43ईसा ने उससे कहा, “मैं तुझे सच बताता हूँ कि तू आज ही मेरे साथ फ़िर्दौस में होगा।”

ईसा की मौत

44बारह बजे से दोपहर तीन बजे तक पूरा मुल्क अंधेरे में डूब गया। 45सूरज तारीक हो गया और बैतुल-मुक़द्दस के मुक़द्दसतरीन कमरे के सामने लटका हुआ परदा दो हिस्सों में फट गया। 46ईसा ऊँची आवाज़ से पुकार उठा, “ऐ बाप, मैं अपनी रूह तेरे हाथों में सौंपता हूँ।” यह कहकर उसने दम छोड़ दिया।

47यह देखकर वहाँ खड़े फ़ौजी अफ़सर[a] ने अल्लाह की तमजीद करके कहा, “यह आदमी वाक़ई रास्तबाज़ था।”

48और हुजूम के तमाम लोग जो यह तमाशा देखने के लिए जमा हुए थे यह सब कुछ देखकर छाती पीटने लगे और शहर में वापस चले गए। 49लेकिन ईसा के जाननेवाले कुछ फ़ासले पर खड़े देखते रहे। उनमें वह ख़वातीन भी शामिल थीं जो गलील में उसके पीछे चलकर यहाँ तक उसके साथ आई थीं।

ईसा को दफ़न किया जाता है

50वहाँ एक नेक और रास्तबाज़ आदमी बनाम यूसुफ़ था। वह यहूदी अदालते-आलिया का रुकन था 51लेकिन दूसरों के फ़ैसले और हरकतों पर रज़ामंद नहीं हुआ था। यह आदमी यहूदिया के शहर अरिमतियाह का रहनेवाला था और इस इंतज़ार में था कि अल्लाह की बादशाही आए। 52अब उसने पीलातुस के पास जाकर उससे ईसा की लाश ले जाने की इजाज़त माँगी। 53फिर लाश को उतारकर उसने उसे कतान के कफ़न में लपेटकर चट्टान में तराशी हुई एक क़ब्र में रख दिया जिसमें अब तक किसी को दफ़नाया नहीं गया था। 54यह तैयारी का दिन यानी जुमा था, लेकिन सबत का दिन शुरू होने को था।[b] 55जो औरतें ईसा के साथ गलील से आई थीं वह यूसुफ़ के पीछे हो लीं। उन्होंने क़ब्र को देखा और यह भी कि ईसा की लाश किस तरह उसमें रखी गई है। 56फिर वह शहर में वापस चली गईं और उस की लाश के लिए ख़ुशबूदार मसाले तैयार करने लगीं। लेकिन बीच में सबत का दिन शुरू हुआ, इसलिए उन्होंने शरीअत के मुताबिक़ आराम किया।

ईसा जी उठता है

24 इतवार के दिन यह औरतें अपने तैयारशुदा मसाले लेकर सुबह-सवेरे क़ब्र पर गईं। 2वहाँ पहुँचकर उन्होंने देखा कि क़ब्र

[a]सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

[b]यहूदी दिन सूरज के ग़ुरूब होने से शुरू होता है।

पर का पत्थर एक तरफ़ लुढ़का हुआ है। 3लेकिन
जब वह क़ब्र में गईं तो वहाँ ख़ुदावंद ईसा की लाश
न पाई। 4वह अभी उलझन में वहाँ खड़ी थीं कि
अचानक दो मर्द उनके पास आ खड़े हुए जिनके
लिबास बिजली की तरह चमक रहे थे। 5औरतें
दहशत खाकर मुँह के बल झुक गईं, लेकिन उन
मर्दों ने कहा, “तुम क्यों ज़िंदा को मुरदों में ढूँड
रही हो? 6वह यहाँ नहीं है, वह तो जी उठा है। वह
बात याद करो जो उसने तुमसे उस वक़्त कही जब
वह गलील में था। 7‘लाज़िम है कि इब्ने-आदम
को गुनाहगारों के हवाले कर दिया जाए, मसलूब
किया जाए और कि वह तीसरे दिन जी उठे’।”

8फिर उन्हें यह बात याद आई। 9और क़ब्र से
वापस आकर उन्होंने यह सब कुछ ग्यारह रसूलों
और बाक़ी शागिर्दों को सुना दिया। 10मरियम
मग्दलीनी, युअन्ना, याक़ूब की माँ मरियम और
चंद एक और औरतें उनमें शामिल थीं जिन्होंने यह
बातें रसूलों को बताईं। 11लेकिन उनको यह बातें
बेतुकी-सी लग रही थीं, इसलिए उन्हें यक़ीन न
आया। 12तो भी पतरस उठा और भागकर क़ब्र के
पास आया। जब पहुँचा तो झुककर अंदर झाँका,
लेकिन सिर्फ़ कफ़न[a] ही नज़र आया। यह हालात
देखकर वह हैरान हुआ और चला गया।

इम्माउस के रास्ते में ईसा से मुलाक़ात

13उसी दिन ईसा के दो पैरोकार एक गाँव
बनाम इम्माउस की तरफ़ चल रहे थे। यह गाँव
यरूशलम से तक़रीबन दस किलोमीटर दूर था।
14चलते चलते वह आपस में उन वाक़ियात का
ज़िक्र कर रहे थे जो हुए थे। 15और ऐसा हुआ
कि जब वह बातें और एक दूसरे के साथ बहस-
मुबाहसा कर रहे थे तो ईसा ख़ुद क़रीब आकर
उनके साथ चलने लगा। 16लेकिन उनकी आँखों
पर परदा डाला गया था, इसलिए वह उसे पहचान
न सके। 17ईसा ने कहा, “यह कैसी बातें हैं
जिनके बारे में तुम चलते चलते तबादलाए-ख़याल
कर रहे हो?”

यह सुनकर वह ग़मगीन से खड़े हो गए।
18उनमें से एक बनाम क्लियुपास ने उससे पूछा,
“क्या आप यरूशलम में वाहिद शख़्स हैं जिसे
मालूम नहीं कि इन दिनों में क्या कुछ हुआ है?”
19उसने कहा, “क्या हुआ है?”

उन्होंने जवाब दिया, “वह जो ईसा नासरी के
साथ हुआ है। वह नबी था जिसे कलाम और
काम में अल्लाह और तमाम क़ौम के सामने
ज़बरदस्त क़ुव्वत हासिल थी। 20लेकिन हमारे
राहनुमा इमामों और सरदारों ने उसे हुक्मरानों के
हवाले कर दिया ताकि उसे सज़ाए-मौत दी जाए,
और उन्होंने उसे मसलूब किया। 21लेकिन हमें
तो उम्मीद थी कि वही इसराईल को नजात देगा।
इन वाक़ियात को तीन दिन हो गए हैं। 22लेकिन
हममें से कुछ ख़वातीन ने भी हमें हैरान कर दिया
है। वह आज सुबह-सवेरे क़ब्र पर गईं 23तो देखा
कि लाश वहाँ नहीं है। उन्होंने लौटकर हमें बताया
कि हम पर फ़रिश्ते ज़ाहिर हुए जिन्होंने कहा कि
ईसा ज़िंदा है। 24हममें से कुछ क़ब्र पर गए और
उसे वैसा ही पाया जिस तरह उन औरतों ने कहा
था। लेकिन उसे ख़ुद उन्होंने नहीं देखा।”

25फिर ईसा ने उनसे कहा, “अरे नादानो! तुम
कितने कुंदज़हन हो कि तुम्हें उन तमाम बातों
पर यक़ीन नहीं आया जो नबियों ने फ़रमाई हैं।
26क्या लाज़िम नहीं था कि मसीह यह सब कुछ
झेलकर अपने जलाल में दाख़िल हो जाए?”
27फिर मूसा और तमाम नबियों से शुरू करके
ईसा ने कलामे-मुक़द्दस की हर बात की तशरीह
की जहाँ जहाँ उसका ज़िक्र है।

28चलते चलते वह उस गाँव के क़रीब पहुँचे
जहाँ उन्हें जाना था। ईसा ने ऐसा किया गोया कि
वह आगे बढ़ना चाहता है, 29लेकिन उन्होंने उसे
मजबूर करके कहा, “हमारे पास ठहरें, क्योंकि
शाम होने को है और दिन ढल गया है।” चुनाँचे

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : कतान की पट्टियाँ जो कफ़न के लिए इस्तेमाल होती थीं।

वह उनके साथ ठहरने के लिए अंदर गया। 30और
ऐसा हुआ कि जब वह खाने के लिए बैठ गए
तो उसने रोटी लेकर उसके लिए शुक्रगुज़ारी की
दुआ की। फिर उसने उसे टुकड़े करके उन्हें दिया।
31अचानक उनकी आँखें खुल गईं और उन्होंने
उसे पहचान लिया। लेकिन उसी लमहे वह ओझल
हो गया। 32फिर वह एक दूसरे से कहने लगे,
"क्या हमारे दिल जोश से न भर गए थे जब वह
रास्ते में हमसे बातें करते करते हमें सहीफ़ों का
मतलब समझा रहा था?"

33और वह उसी वक़्त उठकर यरूशलम वापस
चले गए। जब वह वहाँ पहुँचे तो ग्यारह रसूल
अपने साथियों समेत पहले से जमा थे 34और
यह कह रहे थे, "ख़ुदावंद वाक़ई जी उठा है! वह
शमाऊन पर ज़ाहिर हुआ है।"

35फिर इम्माउस के दो शागिर्दों ने उन्हें बताया
कि गाँव की तरफ़ जाते हुए क्या हुआ था और
कि ईसा के रोटी तोड़ते वक़्त उन्होंने उसे कैसे
पहचाना।

ईसा अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर होता है

36वह अभी यह बातें सुना रहे थे कि ईसा
ख़ुद उनके दरमियान आ खड़ा हुआ और कहा,
"तुम्हारी सलामती हो।"

37वह घबराकर बहुत डर गए, क्योंकि उनका
ख़याल था कि कोई भूत-प्रेत देख रहे हैं। 38उसने
उनसे कहा, "तुम क्यों परेशान हो गए हो? क्या
वजह है कि तुम्हारे दिलों में शक उभर आया है?
39मेरे हाथों और पाँवों को देखो कि मैं ही हूँ। मुझे
टटोलकर देखो, क्योंकि भूत के गोश्त और हड्डियाँ
नहीं होतीं जबकि तुम देख रहे हो कि मेरा जिस्म
है।"

40यह कहकर उसने उन्हें अपने हाथ और पाँव
दिखाए। 41जब उन्हें ख़ुशी के मारे यक़ीन नहीं आ
रहा था और ताज्जुब कर रहे थे तो ईसा ने पूछा,
"क्या यहाँ तुम्हारे पास कोई खाने की चीज़ है?"
42उन्होंने उसे भुनी हुई मछली का एक टुकड़ा
दिया। 43उसने उसे लेकर उनके सामने ही खा
लिया।

44फिर उसने उनसे कहा, "यही है जो मैंने
तुमको उस वक़्त बताया था जब तुम्हारे साथ था
कि जो कुछ भी मूसा की शरीअत, नबियों के
सहीफ़ों और ज़बूर की किताब में मेरे बारे में लिखा
है उसे पूरा होना है।"

45फिर उसने उनके ज़हन को खोल दिया ताकि
वह अल्लाह का कलाम समझ सकें। 46उसने
उनसे कहा, "कलामे-मुक़द्दस में यों लिखा है,
मसीह दुख उठाकर तीसरे दिन मुरदों में से जी
उठेगा। 47फिर यरूशलम से शुरू करके उसके
नाम में यह पैग़ाम तमाम क़ौमों को सुनाया जाएगा
कि वह तौबा करके गुनाहों की मुआफ़ी पाएँ।
48तुम इन बातों के गवाह हो। 49और मैं तुम्हारे
पास उसे भेज दूँगा जिसका वादा मेरे बाप ने किया
है। फिर तुमको आसमान की क़ुव्वत से मुलब्बस
किया जाएगा। उस वक़्त तक शहर से बाहर न
निकलना।"

ईसा को आसमान पर उठाया जाता है

50फिर वह शहर से निकलकर उन्हें बैत-
अनियाह तक ले गया। वहाँ उसने अपने हाथ
उठाकर उन्हें बरकत दी। 51और ऐसा हुआ कि
बरकत देते हुए वह उनसे जुदा होकर आसमान
पर उठा लिया गया। 52उन्होंने उसे सिजदा किया
और फिर बड़ी ख़ुशी से यरूशलम वापस चले
गए। 53वहाँ वह अपना पूरा वक़्त बैतुल-मुक़द्दस
में गुज़ारकर अल्लाह की तमजीद करते रहे।

यूहन्ना की मारिफ़त इंजील

ज़िंदगी का कलाम

1 इब्तिदा में कलाम था। कलाम अल्लाह के
साथ था और कलाम अल्लाह था। 2यही
इब्तिदा में अल्लाह के साथ था। 3सब कुछ कलाम
के वसीले से पैदा हुआ। मख़लूक़ात की एक भी
चीज़ उसके बग़ैर पैदा नहीं हुई। 4उसमें ज़िंदगी
थी, और यह ज़िंदगी इनसानों का नूर थी। 5यह
नूर तारीकी में चमकता है, और तारीकी ने उस
पर क़ाबू न पाया।

6एक दिन अल्लाह ने अपना पैग़ंबर भेज दिया,
एक आदमी जिसका नाम यहया था। 7वह नूर की
गवाही देने के लिए आया। मक़सद यह था कि
लोग उस की गवाही की बिना पर ईमान लाएँ।
8वह ख़ुद तो नूर न था बल्कि उसे सिर्फ़ नूर की
गवाही देनी थी। 9हक़ीक़ी नूर जो हर शख़्स को
रौशन करता है दुनिया में आने को था।

10गो कलाम दुनिया में था और दुनिया उसके
वसीले से पैदा हुई तो भी दुनिया ने उसे न
पहचाना। 11वह उसमें आया जो उसका अपना
था, लेकिन उसके अपनों ने उसे क़बूल न किया।
12तो भी कुछ उसे क़बूल करके उसके नाम पर
ईमान लाए। उन्हें उसने अल्लाह के फ़रज़ंद बनने
का हक़ बख़्श दिया, 13ऐसे फ़रज़ंद जो न फ़ितरी
तौर पर, न किसी इनसान या मर्द के मनसूबे से
पैदा हुए बल्कि अल्लाह से।

14कलाम इनसान बनकर हमारे दरमियान
रिहाइशपज़ीर हुआ और हमने उसके जलाल का
मुशाहदा किया। वह फ़ज़ल और सच्चाई से मामूर
था और उसका जलाल बाप के इकलौते फ़रज़ंद
का-सा था।

15यहया उसके बारे में गवाही देकर पुकार उठा,
“यह वही है जिसके बारे में मैंने कहा, ‘एक मेरे
बाद आनेवाला है जो मुझसे बड़ा है, क्योंकि वह
मुझसे पहले था’।”

16उस की कसरत से हम सबने फ़ज़ल
पर फ़ज़ल पाया। 17क्योंकि शरीअत मूसा की
मारिफ़त दी गई, लेकिन अल्लाह का फ़ज़ल और
सच्चाई ईसा मसीह के वसीले से क़ायम हुई।
18किसी ने कभी भी अल्लाह को नहीं देखा।
लेकिन इकलौता फ़रज़ंद जो अल्लाह की गोद में
है उसी ने अल्लाह को हम पर ज़ाहिर किया है।

यहया बपतिस्मा देनेवाले का पैग़ाम

19यह यहया की गवाही है जब यरूशलम के
यहूदियों ने इमामों और लावियों को उसके पास
भेजकर पूछा, “आप कौन हैं?”

20उसने इनकार न किया बल्कि साफ़ तसलीम
किया, “मैं मसीह नहीं हूँ।”

21उन्होंने पूछा, “तो फिर आप कौन हैं? क्या
आप इलियास हैं?”

उसने जवाब दिया, “नहीं, मैं वह नहीं हूँ।”

उन्होंने सवाल किया, "क्या आप आनेवाला नबी हैं?"
उसने कहा, "नहीं।"
22"तो फिर हमें बताएँ कि आप कौन हैं? जिन्होंने हमें भेजा है उन्हें हमें कोई न कोई जवाब देना है। आप ख़ुद अपने बारे में क्या कहते हैं?"
23यहया ने यसायाह नबी का हवाला देकर जवाब दिया, "मैं रेगिस्तान में वह आवाज़ हूँ जो पुकार रही है, रब का रास्ता सीधा बनाओ।"
24भेजे गए लोग फ़रीसी फ़िरक़े से ता-
ल्लुक़ रखते थे। 25उन्होंने पूछा, "अगर आप न मसीह हैं, न इलियास या आनेवाला नबी तो फिर आप बपतिस्मा क्यों दे रहे हैं?"
26यहया ने जवाब दिया, "मैं तो पानी से बपतिस्मा देता हूँ, लेकिन तुम्हारे दरमियान ही
एक खड़ा है जिसको तुम नहीं जानते। 27वही मेरे
बाद आनेवाला है और मैं उसके जूतों के तसमे भी खोलने के लायक़ नहीं।"
28यह यरदन के पार बैत-अनियाह में हुआ जहाँ यहया बपतिस्मा दे रहा था।

अल्लाह का लेला

29अगले दिन यहया ने ईसा को अपने पास आते देखा। उसने कहा, "देखो, यह अल्लाह का लेला है जो दुनिया का गुनाह उठा ले जाता है।
30यह वही है जिसके बारे में मैंने कहा, 'एक मेरे बाद आनेवाला है जो मुझसे बड़ा है, क्योंकि वह
मुझसे पहले था।' 31मैं तो उसे नहीं जानता था, लेकिन मैं इसलिए आकर पानी से बपतिस्मा देने लगा ताकि वह इसराईल पर ज़ाहिर हो जाए।"
32और यहया ने यह गवाही दी, "मैंने देखा कि रूहुल-क़ुद्स कबूतर की तरह आसमान पर
से उतरकर उस पर ठहर गया। 33मैं तो उसे नहीं जानता था, लेकिन जब अल्लाह ने मुझे बपतिस्मा देने के लिए भेजा तो उसने मुझे बताया, 'तू देखेगा कि रूहुल-क़ुद्स उतरकर किसी पर ठहर जाएगा। यह वही होगा जो रूहुल-क़ुद्स से
बपतिस्मा देगा।' 34अब मैंने देखा है और गवाही देता हूँ कि यह अल्लाह का फ़रज़ंद है।"

ईसा के पहले शागिर्द

35अगले दिन यहया दुबारा वहीं खड़ा था।
उसके दो शागिर्द साथ थे। 36उसने ईसा को वहाँ से गुज़रते हुए देखा तो कहा, "देखो, यह अल्लाह का लेला है!"
37उस की यह बात सुनकर उसके दो शागिर्द
ईसा के पीछे हो लिए। 38ईसा ने मुड़कर देखा कि यह मेरे पीछे चल रहे हैं तो उसने पूछा, "तुम क्या चाहते हो?"
उन्होंने कहा, "उस्ताद, आप कहाँ ठहरे हुए हैं?"
39उसने जवाब दिया, "आओ, ख़ुद देख लो।" चुनाँचे वह उसके साथ गए। उन्होंने वह जगह देखी जहाँ वह ठहरा हुआ था और दिन के बाक़ी वक़्त उसके पास रहे। शाम के तक़रीबन चार बज गए थे।
40शमाऊन पतरस का भाई अंदरियास उन दो शागिर्दों में से एक था जो यहया की बात सुनकर
ईसा के पीछे हो लिए थे। 41अब उस की पहली मुलाक़ात उसके अपने भाई शमाऊन से हुई। उसने उसे बताया, "हमें मसीह मिल गया है।" (मसीह का मतलब 'मसह किया हुआ शख़्स' है।)
42फिर वह उसे ईसा के पास ले गया।
उसे देखकर ईसा ने कहा, "तू यूहन्ना का बेटा शमाऊन है। तू कैफ़ा कहलाएगा।" (इसका यूनानी तरजुमा पतरस यानी पत्थर है।)

ईसा फ़िलिप्पुस और नतनेल को बुलाता है

43अगले दिन ईसा ने गलील जाने का इरादा किया। फ़िलिप्पुस से मिला तो उससे कहा, "मेरे
पीछे हो ले।" 44अंदरियास और पतरस की तरह फ़िलिप्पुस का वतनी शहर बैत-सैदा था।
45फ़िलिप्पुस नतनेल से मिला, और उसने उससे कहा, "हमें वही शख़्स मिल गया जिसका ज़िक्र मूसा ने तौरेत और नबियों ने अपने सहीफ़ों में

किया है। उसका नाम ईसा बिन यूसुफ़ है और वह नासरत क़ा रहनेवाला है।”

46नतनेल ने कहा, “नासरत? क्या नासरत से कोई अच्छी चीज़ निकल सकती है?”

फ़िलिप्पुस ने जवाब दिया, “आ और ख़ुद देख ले।”

47जब ईसा ने नतनेल को आते देखा तो उसने कहा, “लो, यह सच्चा इसराईली है जिसमें मकर नहीं।”

48नतनेल ने पूछा, “आप मुझे कहाँ से जानते हैं?”

ईसा ने जवाब दिया, “इससे पहले कि फ़िलिप्पुस ने तुझे बुलाया मैंने तुझे देखा। तू अंजीर के दरख़्त के साये में था।”

49नतनेल ने कहा, “उस्ताद, आप अल्लाह के फ़रज़ंद हैं, आप इसराईल के बादशाह हैं।”

50ईसा ने उससे पूछा, “अच्छा, मेरी यह बात सुनकर कि मैंने तुझे अंजीर के दरख़्त के साये में देखा तू ईमान लाया है? तू इससे कहीं बड़ी बातें देखेगा।” 51उसने बात जारी रखी, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि तुम आसमान को खुला और अल्लाह के फ़रिश्तों को ऊपर चढ़ते और इब्ने-आदम पर उतरते देखोगे।”

क़ाना में शादी

2 तीसरे दिन गलील के गाँव क़ाना में एक शादी हुई। ईसा की माँ वहाँ थी 2और ईसा और उसके शागिर्दों को भी दावत दी गई थी। 3मै ख़त्म हो गई तो ईसा की माँ ने उससे कहा, “उनके पास मै नहीं रही।”

4ईसा ने जवाब दिया, “ऐ ख़ातून, मेरा आपसे क्या वास्ता? मेरा वक़्त अभी नहीं आया।”

5लेकिन उस की माँ ने नौकरों को बताया, “जो कुछ वह तुमको बताए वह करो।” 6वहाँ पत्थर के छः मटके पड़े थे जिन्हें यहूदी दीनी ग़ुस्ल के लिए इस्तेमाल करते थे। हर एक में तक़रीबन 100 लिटर की गुंजाइश थी। 7ईसा ने नौकरों से कहा, “मटकों को पानी से भर दो।” चुनाँचे उन्होंने उन्हें लबालब भर दिया। 8फिर उसने कहा, “अब कुछ निकालकर ज़ियाफ़त का इंतज़ाम चलानेवाले के पास ले जाओ।” उन्होंने ऐसा ही किया। 9ज्योंही ज़ियाफ़त का इंतज़ाम चलानेवाले ने वह पानी चखा जो मै में बदल गया था तो उसने दूल्हे को बुलाया। (उसे मालूम न था कि यह कहाँ से आई है, अगरचे उन नौकरों को पता था जो उसे निकालकर लाए थे।) 10उसने कहा, “हर मेज़बान पहले अच्छी क़िस्म की मै पीने के लिए पेश करता है। फिर जब लोगों को नशा चढ़ने लगे तो वह निसबतन घटिया क़िस्म की मै पिलाने लगता है। लेकिन आपने अच्छी मै अब तक रख छोड़ी है।”

11यों ईसा ने गलील के क़ाना में यह पहला इलाही निशान दिखाकर अपने जलाल का इज़हार किया। यह देखकर उसके शागिर्द उस पर ईमान लाए।

12इसके बाद वह अपनी माँ, अपने भाइयों और अपने शागिर्दों के साथ कफ़र्नहूम को चला गया। वहाँ वह थोड़े दिन रहे।

ईसा बैतुल-मुक़द्दस में जाता है

13जब यहूदी ईदे-फ़सह क़रीब आ गई तो ईसा यरूशलम चला गया। 14बैतुल-मुक़द्दस में जाकर उसने देखा कि कई लोग उसमें गाय-बैल, भेड़ें और कबूतर बेच रहे हैं। दूसरे मेज़ पर बैठे ग़ैरमुल्की सिक्के बैतुल-मुक़द्दस के सिक्कों में बदल रहे हैं। 15फिर ईसा ने रस्सियों का कोड़ा बनाकर सबको बैतुल-मुक़द्दस से निकाल दिया। उसने भेड़ों और गाय-बैलों को बाहर हाँक दिया, पैसे बदलनेवालों के सिक्के बिखेर दिए और उनकी मेज़ें उलट दीं। 16कबूतर बेचनेवालों को उसने कहा, “इसे ले जाओ। मेरे बाप के घर को मंडी में मत बदलो।” 17यह देखकर ईसा के शागिर्दों को कलामे-मुक़द्दस का यह हवाला याद आया कि “तेरे घर की ग़ैरत मुझे खा जाएगी।”

18यहूदियों ने जवाब में पूछा, “आप हमें क्या
इलाही निशान दिखा सकते हैं ताकि हमें यक़ीन
आए कि आपको यह करने का इख़्तियार है?”
19ईसा ने जवाब दिया, “इस मक़दिस को ढा
दो तो मैं इसे तीन दिन के अंदर दुबारा तामीर कर
दूँगा।”
20यहूदियों ने कहा, “बैतुल-मुक़द्दस को तामीर
करने में 46 साल लग गए थे और आप उसे तीन
दिन में तामीर करना चाहते हैं?”
21लेकिन जब ईसा ने “इस मक़दिस” के
अलफ़ाज़ इस्तेमाल किए तो इसका मतलब
उसका अपना बदन था। 22उसके मुरदों में से
जी उठने के बाद उसके शागिर्दों को उस की यह
बात याद आई। फिर वह कलामे-मुक़द्दस और उन
बातों पर ईमान लाए जो ईसा ने की थीं।

ईसा इनसानी फ़ितरत से वाक़िफ़ है

23जब ईसा फ़सह की ईद के लिए यरूशलम
में था तो बहुत-से लोग उसके पेशकरदा इलाही
निशानों को देखकर उसके नाम पर ईमान लाने
लगे। 24लेकिन उसको उन पर एतमाद नहीं था,
क्योंकि वह सबको जानता था। 25और उसे
इनसान के बारे में किसी की गवाही की ज़रूरत
नहीं थी, क्योंकि वह जानता था कि इनसान के
अंदर क्या कुछ है।

नीकुदेमुस के साथ मुलाक़ात

3 फ़रीसी फ़िरक़े का एक आदमी बनाम
नीकुदेमुस था जो यहूदी अदालते-आलिया
का रुकन था। 2वह रात के वक़्त ईसा के पास
आया और कहा, “उस्ताद, हम जानते हैं कि आप
ऐसे उस्ताद हैं जो अल्लाह की तरफ़ से आए हैं,
क्योंकि जो इलाही निशान आप दिखाते हैं वह
सिर्फ़ ऐसा शख़्स ही दिखा सकता है जिसके साथ
अल्लाह हो।”
3ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुझे सच बताता हूँ,
सिर्फ़ वह शख़्स अल्लाह की बादशाही को देख
सकता है जो नए सिरे से पैदा हुआ हो।”
4नीकुदेमुस ने एतराज़ किया, “क्या मतलब?
बूढ़ा आदमी किस तरह नए सिरे से पैदा हो सकता
है? क्या वह दुबारा अपनी माँ के पेट में जाकर
पैदा हो सकता है?”
5ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुझे सच बताता हूँ,
सिर्फ़ वह शख़्स अल्लाह की बादशाही में दाख़िल
हो सकता है जो पानी और रूह से पैदा हुआ हो।
6जो कुछ जिस्म से पैदा होता है वह जिस्मानी
है, लेकिन जो रूह से पैदा होता है वह रूहानी है।
7इसलिए तू ताज्जुब न कर कि मैं कहता हूँ, ‘तुम्हें
नए सिरे से पैदा होना ज़रूर है।’ 8हवा जहाँ चाहे
चलती है। तू उस की आवाज़ तो सुनता है, लेकिन
यह नहीं जानता कि कहाँ से आती और कहाँ को
जाती है। यही हालत हर उस शख़्स की है जो रूह
से पैदा हुआ है।”
9नीकुदेमुस ने पूछा, “यह किस तरह हो सकता
है?”
10ईसा ने जवाब दिया, “तू तो इसराईल का
उस्ताद है। क्या इसके बावुजूद भी यह बातें नहीं
समझता? 11मैं तुझको सच बताता हूँ, हम वह
कुछ बयान करते हैं जो हम जानते हैं और उस
की गवाही देते हैं जो हमने ख़ुद देखा है। तो भी
तुम लोग हमारी गवाही क़बूल नहीं करते। 12मैंने
तुमको दुनियावी बातें सुनाई हैं और तुम उन पर
ईमान नहीं रखते। तो फिर तुम क्योंकर ईमान
लाओगे अगर तुम्हें आसमानी बातों के बारे में
बताऊँ? 13आसमान पर कोई नहीं चढ़ा सिवाए
इब्ने-आदम के, जो आसमान से उतरा है।
14और जिस तरह मूसा ने रेगिस्तान में साँप को
लकड़ी पर लटकाकर ऊँचा कर दिया उसी तरह
ज़रूर है कि इब्ने-आदम को भी ऊँचे पर चढ़ाया
जाए, 15ताकि हर एक को जो उस पर ईमान
लाएगा अबदी ज़िंदगी मिल जाए। 16क्योंकि
अल्लाह ने दुनिया से इतनी मुहब्बत रखी कि उसने
अपने इकलौते फ़रज़ंद को बख़्श दिया, ताकि जो
भी उस पर ईमान लाए हलाक न हो बल्कि अबदी
ज़िंदगी पाए। 17क्योंकि अल्लाह ने अपने फ़रज़ंद
को इसलिए दुनिया में नहीं भेजा कि वह दुनिया

को मुजरिम ठहराए बल्कि इसलिए कि वह उसे
नजात दे।
18जो भी उस पर ईमान लाया है उसे मुजरिम
नहीं क़रार दिया जाएगा, लेकिन जो ईमान नहीं
रखता उसे मुजरिम ठहराया जा चुका है। वजह
यह है कि वह अल्लाह के इकलौते फ़रज़ंद के नाम
पर ईमान नहीं लाया। 19और लोगों को मुजरिम
ठहराने का सबब यह है कि गो अल्लाह का नूर इस
दुनिया में आया, लेकिन लोगों ने नूर की निसबत
अंधेरे को ज़्यादा प्यार किया, क्योंकि उनके काम
बुरे थे। 20जो भी ग़लत काम करता है वह नूर
से दुश्मनी रखता है और उसके क़रीब नहीं आता
ताकि उसके बुरे कामों का पोल न खुल जाए।
21लेकिन जो सच्चा काम करता है वह नूर के
पास आता है ताकि ज़ाहिर हो जाए कि उसके
काम अल्लाह के वसीले से हुए हैं।”

ईसा और यहया

22इसके बाद ईसा अपने शागिर्दों के साथ
यहूदिया के इलाक़े में गया। वहाँ वह कुछ देर के
लिए उनके साथ ठहरा और लोगों को बपतिस्मा
देने लगा। 23उस वक़्त यहया भी शालेम के
क़रीब वाक़े मक़ाम ऐनोन में बपतिस्मा दे रहा था,
क्योंकि वहाँ पानी बहुत था। उस जगह पर लोग
बपतिस्मा लेने के लिए आते रहे। 24(यहया को
अब तक जेल में नहीं डाला गया था।)

25एक दिन यहया के शागिर्दों का किसी यहूदी
के साथ मुबाहसा छिड़ गया। ज़ेरे-ग़ौर मज़मून
दीनी ग़ुस्ल था। 26वह यहया के पास आए और
कहने लगे, “उस्ताद, जिस आदमी से आपकी
दरियाए-यरदन के पार मुलाक़ात हुई और जिसके
बारे में आपने गवाही दी कि वह मसीह है, वह भी
लोगों को बपतिस्मा दे रहा है। अब सब लोग उसी
के पास जा रहे हैं।”

27यहया ने जवाब दिया, “हर एक को सिर्फ़
वह कुछ मिलता है जो उसे आसमान से दिया
जाता है। 28तुम ख़ुद इसके गवाह हो कि मैंने
कहा, ‘मैं मसीह नहीं हूँ बल्कि मुझे उसके आगे
आगे भेजा गया है।’ 29दूल्हा ही दुलहन से शादी
करता है, और दुलहन उसी की है। उसका दोस्त
सिर्फ़ साथ खड़ा होता है। और दूल्हे की आवाज़
सुन सुनकर दोस्त की ख़ुशी की इंतहा नहीं होती।
मैं भी ऐसा ही दोस्त हूँ जिसकी ख़ुशी पूरी हो गई
है। 30लाज़िम है कि वह बढ़ता जाए जबकि मैं
घटता जाऊँ।

आसमान से आनेवाला

31जो आसमान पर से आया है उसका
इख़्तियार सब पर है। जो दुनिया से है उसका
ताल्लुक़ दुनिया से ही है और वह दुनियावी बातें
करता है। लेकिन जो आसमान पर से आया है
उसका इख़्तियार सब पर है। 32जो कुछ उसने
ख़ुद देखा और सुना है उसी की गवाही देता है। तो
भी कोई उस की गवाही को क़बूल नहीं करता।
33लेकिन जिसने उसे क़बूल किया उसने इसकी
तसदीक़ की है कि अल्लाह सच्चा है। 34जिसे
अल्लाह ने भेजा है वह अल्लाह की बातें सुनाता
है, क्योंकि अल्लाह अपना रूह नाप-तोलकर नहीं
देता। 35बाप अपने फ़रज़ंद को प्यार करता है,
और उसने सब कुछ उसके सुपुर्द कर दिया है।
36चुनाँचे जो अल्लाह के फ़रज़ंद पर ईमान लाता
है अबदी ज़िंदगी उस की है। लेकिन जो फ़रज़ंद
को रद्द करे वह इस ज़िंदगी को नहीं देखेगा बल्कि
अल्लाह का ग़ज़ब उस पर ठहरा रहेगा।”

ईसा और सामरी औरत

4
फ़रीसियों को इत्तला मिली कि ईसा यहया
की निसबत ज़्यादा शागिर्द बना रहा और
लोगों को बपतिस्मा दे रहा है, 2हालाँकि वह ख़ुद
बपतिस्मा नहीं देता था बल्कि उसके शागिर्द।
3जब ख़ुदावंद ईसा को यह बात मालूम हुई तो
वह यहूदिया को छोड़कर गलील को वापस चला
गया। 4वहाँ पहुँचने के लिए उसे सामरिया में से
गुज़रना था।

5चलते चलते वह एक शहर के पास पहुँच गया
जिसका नाम सूख़ार था। यह उस ज़मीन के क़रीब

था जो याक़ूब ने अपने बेटे यूसुफ़ को दी थी।
6वहाँ याक़ूब का कुआँ था। ईसा सफ़र से थक
गया था, इसलिए वह कुएँ पर बैठ गया। दोपहर
के तक़रीबन बारह बज गए थे।

7एक सामरी औरत पानी भरने आई। ईसा ने
उससे कहा, “मुझे ज़रा पानी पिला।” 8(उसके
शागिर्द खाना ख़रीदने के लिए शहर गए हुए थे।)

9सामरी औरत ने ताज्जुब किया, क्योंकि
यहूदी सामरियों के साथ ताल्लुक़ रखने से इनकार
करते हैं। उसने कहा, “आप तो यहूदी हैं, और मैं
सामरी औरत हूँ। आप किस तरह मुझसे पानी
पिलाने की दरख़ास्त कर सकते हैं?”

10ईसा ने जवाब दिया, “अगर तू उस बख़्शिश
से वाक़िफ़ होती जो अल्लाह तुझको देना चाहता
है और तू उसे जानती जो तुझसे पानी माँग रहा
है तो तू उससे माँगती और वह तुझे ज़िंदगी का
पानी देता।”

11ख़ातून ने कहा, “ख़ुदावंद, आपके पास तो
बालटी नहीं है और यह कुआँ गहरा है। आपको
ज़िंदगी का यह पानी कहाँ से मिला? 12क्या
आप हमारे बाप याक़ूब से बड़े हैं जिसने हमें यह
कुआँ दिया और जो ख़ुद भी अपने बेटों और रेवड़ों
समेत उसके पानी से लुत्फ़अंदोज़ हुआ?”

13ईसा ने जवाब दिया, “जो भी इस पानी में
से पिए उसे दुबारा प्यास लगेगी। 14लेकिन जिसे
मैं पानी पिला दूँ उसे बाद में कभी भी प्यास नहीं
लगेगी। बल्कि जो पानी मैं उसे दूँगा वह उसमें एक
चश्मा बन जाएगा जिससे पानी फूटकर अबदी
ज़िंदगी मुहैया करेगा।”

15औरत ने उससे कहा, “ख़ुदावंद, मुझे यह
पानी पिला दें। फिर मुझे कभी भी प्यास नहीं
लगेगी और मुझे बार बार यहाँ आकर पानी भरना
नहीं पड़ेगा।”

16ईसा ने कहा, “जा, अपने ख़ाविंद को बुला
ला।”

17औरत ने जवाब दिया, “मेरा कोई ख़ाविंद
नहीं है।”

ईसा ने कहा, “तूने सहीह कहा कि मेरा ख़ाविंद
नहीं है, 18क्योंकि तेरी शादी पाँच मर्दों से हो चुकी
है और जिस आदमी के साथ तू अब रह रही है वह
तेरा शौहर नहीं है। तेरी बात बिलकुल दुरुस्त है।”

19औरत ने कहा, “ख़ुदावंद, मैं देखती हूँ कि
आप नबी हैं। 20हमारे बापदादा तो इसी पहाड़ पर
इबादत करते थे जबकि आप यहूदी लोग इसरार
करते हैं कि यरूशलम वह मरकज़ है जहाँ हमें
इबादत करनी है।”

21ईसा ने जवाब दिया, “ऐ ख़ातून, यक़ीन
जान कि वह वक़्त आएगा जब तुम न तो इस
पहाड़ पर बाप की इबादत करोगे, न यरूशलम
में। 22तुम सामरी उस की परस्तिश करते हो
जिसे नहीं जानते। इसके मुक़ाबले में हम उस की
परस्तिश करते हैं जिसे जानते हैं, क्योंकि नजात
यहूदियों में से है। 23लेकिन वह वक़्त आ रहा
है बल्कि पहुँच चुका है जब हक़ीक़ी परस्तार रूह
और सच्चाई से बाप की परस्तिश करेंगे, क्योंकि
बाप ऐसे ही परस्तार चाहता है। 24अल्लाह रूह है,
इसलिए लाज़िम है कि उसके परस्तार रूह और
सच्चाई से उस की परस्तिश करें।”

25औरत ने उससे कहा, “मुझे मालूम है कि
मसीह यानी मसह किया हुआ शख़्स आ रहा है।
जब वह आएगा तो हमें सब कुछ बता देगा।”

26इस पर ईसा ने उसे बताया, “मैं ही मसीह
हूँ जो तेरे साथ बात कर रहा हूँ।”

27उसी लमहे शागिर्द पहुँच गए। उन्होंने जब
देखा कि ईसा एक औरत से बात कर रहा है तो
ताज्जुब किया। लेकिन किसी ने पूछने की जुर्रत
न की कि “आप क्या चाहते हैं?” या “आप इस
औरत से क्यों बातें कर रहे हैं?”

28औरत अपना घड़ा छोड़कर शहर में चली
गई और वहाँ लोगों से कहने लगी, 29“आओ,
एक आदमी को देखो जिसने मुझे सब कुछ बता
दिया है जो मैंने किया है। वह मसीह तो नहीं है?”
30चुनाँचे वह शहर से निकलकर ईसा के पास
आए।

31इतने में शागिर्द ज़ोर देकर ईसा से कहने लगे,
"उस्ताद, कुछ खाना खा लें।"
32लेकिन उसने जवाब दिया, "मेरे पास खाने
की ऐसी चीज़ है जिससे तुम वाक़िफ़ नहीं हो।"
33शागिर्द आपस में कहने लगे, "क्या कोई
उसके पास खाना लेकर आया?"
34लेकिन ईसा ने उनसे कहा, "मेरा खाना यह
है कि उस की मरज़ी पूरी करूँ जिसने मुझे भेजा है
और उसका काम तकमील तक पहुँचाऊँ। 35तुम
तो ख़ुद कहते हो, 'मज़ीद चार महीने तक फ़सल
पक जाएगी।' लेकिन मैं तुमको बताता हूँ, अपनी
नज़र उठाकर खेतों पर ग़ौर करो। फ़सल पक
गई है और कटाई के लिए तैयार है। 36फ़सल
की कटाई शुरू हो चुकी है। कटाई करनेवाले को
मज़दूरी मिल रही है और वह फ़सल को अबदी
ज़िंदगी के लिए जमा कर रहा है ताकि बीज
बोनेवाला और कटाई करनेवाला दोनों मिलकर
ख़ुशी मना सकें। 37यों यह कहावत दुरुस्त साबित
हो जाती है कि 'एक बीज बोता और दूसरा फ़सल
काटता है।' 38मैंने तुमको उस फ़सल की कटाई
करने के लिए भेज दिया है जिसे तैयार करने के
लिए तुमने मेहनत नहीं की। औरों ने ख़ूब मेहनत
की है और तुम इससे फ़ायदा उठाकर फ़सल जमा
कर सकते हो।"
39उस शहर के बहुत-से सामरी ईसा पर ईमान
लाए। वजह यह थी कि उस औरत ने उसके बारे
में यह गवाही दी थी, "उसने मुझे सब कुछ बता
दिया जो मैंने किया है।" 40जब वह उसके पास
आए तो उन्होंने मिन्नत की, "हमारे पास ठहरें।"
चुनाँचे वह दो दिन वहाँ रहा।
41और उस की बातें सुनकर मज़ीद बहुत-से
लोग ईमान लाए। 42उन्होंने औरत से कहा, "अब
हम तेरी बातों की बिना पर ईमान नहीं रखते बल्कि
इसलिए कि हमने ख़ुद सुन और जान लिया है कि
वाक़ई दुनिया का नजातदहिंदा यही है।"

अफ़सर के बेटे की शफ़ा

43वहाँ दो दिन गुज़ारने के बाद ईसा गलील को
चला गया। 44उसने ख़ुद गवाही देकर कहा था कि
नबी की उसके अपने वतन में इज़्ज़त नहीं होती।
45अब जब वह गलील पहुँचा तो मक़ामी लोगों
ने उसे ख़ुशआमदीद कहा, क्योंकि वह फ़सह की
ईद मनाने के लिए यरूशलम आए थे और उन्होंने
सब कुछ देखा जो ईसा ने वहाँ किया था।
46फिर वह दुबारा क़ाना में आया जहाँ उसने
पानी को मै में बदल दिया था। उस इलाक़े में
एक शाही अफ़सर था जिसका बेटा कफ़र्नहूम में
बीमार पड़ा था। 47जब उसे इत्तला मिली कि ईसा
यहूदिया से गलील पहुँच गया है तो वह उसके
पास गया और गुज़ारिश की, "क़ाना से मेरे पास
उतर आएँ और मेरे बेटे को शफ़ा दें। क्योंकि वह
मरने को है।" 48ईसा ने उससे कहा, "जब तक
तुम लोग इलाही निशान और मोजिज़े नहीं देखते
ईमान नहीं लाते।"
49शाही अफ़सर ने कहा, "ख़ुदावंद आएँ,
इससे पहले कि मेरा लड़का मर जाए।"
50ईसा ने जवाब दिया, "जा, तेरा बेटा ज़िंदा
रहेगा।"

आदमी ईसा की बात पर ईमान लाया और
अपने घर चला गया। 51वह अभी उतर रहा था
कि उसके नौकर उससे मिले। उन्होंने उसे इत्तला
दी कि बेटा ज़िंदा है।
52उसने उनसे पूछ-गछ की कि उस की तबियत
किस वक़्त से बेहतर होने लगी थी। उन्होंने जवाब
दिया, "बुख़ार कल दोपहर एक बजे उतर गया।"
53फिर बाप ने जान लिया कि उसी वक़्त ईसा ने
उसे बताया था, "तुम्हारा बेटा ज़िंदा रहेगा।" और
वह अपने पूरे घराने समेत उस पर ईमान लाया।
54यों ईसा ने अपना दूसरा इलाही निशान उस
वक़्त दिखाया जब वह यहूदिया से गलील में आया
था।

बैतुल-मुक़द्दस के हौज़ पर शफ़ा

5 कुछ देर के बाद ईसा किसी यहूदी ईद के मौक़े पर यरूशलम गया। 2शहर में एक हौज़ था जिसका नाम अरामी ज़बान में बैत-हसदा था। उसके पाँच बड़े बरामदे थे और वह शहर के उस दरवाज़े के क़रीब था जिसका नाम 'भेड़ों का दरवाज़ा' है। 3इन बरामदों में बेशुमार माज़ूर लोग पड़े रहते थे। यह अंधे, लँगड़े और मफ़लूज पानी के हिलने के इंतज़ार में रहते थे। 4[क्योंकि गाहे बगाहे रब का फ़रिश्ता उतरकर पानी को हिला देता था। जो भी उस वक़्त उसमें पहले दाख़िल हो जाता उसे शफ़ा मिल जाती थी ख़ाह उस की बीमारी कोई भी क्यों न होती।] 5मरीज़ों में से एक आदमी 38 साल से माज़ूर था। 6जब ईसा ने उसे वहाँ पड़ा देखा और उसे मालूम हुआ कि यह इतनी देर से इस हालत में है तो उसने पूछा, "क्या तू तनदुरुस्त होना चाहता है?"

7उसने जवाब दिया, "ख़ुदावंद, यह मुश्किल है। मेरा कोई साथी नहीं जो मुझे उठाकर पानी में जब उसे हिलाया जाता है ले जाए। इसलिए मेरे वहाँ पहुँचने में इतनी देर लग जाती है कि कोई और मुझसे पहले पानी में उतर जाता है।"

8ईसा ने कहा, "उठ, अपना बिस्तर उठाकर चल-फिर!" 9वह आदमी फ़ौरन बहाल हो गया। उसने अपना बिस्तर उठाया और चलने-फिरने लगा।

यह वाक़िया सबत के दिन हुआ। 10इस-लिए यहूदियों ने शफ़ायाब आदमी को बताया, "आज सबत का दिन है। आज बिस्तर उठाना मना है।"

11लेकिन उसने जवाब दिया, "जिस आदमी ने मुझे शफ़ा दी उसने मुझे बताया, 'अपना बिस्तर उठाकर चल-फिर'।"

12उन्होंने सवाल किया, "वह कौन है जिसने तुझे यह कुछ बताया?" 13लेकिन शफ़ायाब आदमी को मालूम न था, क्योंकि ईसा हुजूम के सबब से चुपके से वहाँ से चला गया था।

14बाद में ईसा उसे बैतुल-मुक़द्दस में मिला। उसने कहा, "अब तू बहाल हो गया है। फिर गुनाह न करना, ऐसा न हो कि तेरा हाल पहले से भी बदतर हो जाए।"

15उस आदमी ने उसे छोड़कर यहूदियों को इत्तला दी, "ईसा ने मुझे शफ़ा दी।" 16इस पर यहूदी उसको सताने लगे, क्योंकि उसने उस आदमी को सबत के दिन बहाल किया था। 17लेकिन ईसा ने उन्हें जवाब दिया, "मेरा बाप आज तक काम करता आया है, और मैं भी ऐसा करता हूँ।"

18यह सुनकर यहूदी उसे क़त्ल करने की मज़ीद कोशिश करने लगे, क्योंकि उसने न सिर्फ़ सबत के दिन को मनसूख़ क़रार दिया था बल्कि अल्लाह को अपना बाप कहकर अपने आपको अल्लाह के बराबर ठहराया था।

फ़रज़ंद का इख़्तियार

19ईसा ने उन्हें जवाब दिया, "मैं तुमको सच बताता हूँ कि फ़रज़ंद अपनी मरज़ी से कुछ नहीं कर सकता। वह सिर्फ़ वह कुछ करता है जो वह बाप को करते देखता है। जो कुछ बाप करता है वही फ़रज़ंद भी करता है, 20क्योंकि बाप फ़रज़ंद को प्यार करता और उसे सब कुछ दिखाता है जो वह ख़ुद करता है। हाँ, वह फ़रज़ंद को इनसे भी अज़ीम काम दिखाएगा। फिर तुम और भी ज़्यादा हैरतज़दा होगे। 21क्योंकि जिस तरह बाप मुरदों को ज़िंदा करता है उसी तरह फ़रज़ंद भी जिन्हें चाहता है ज़िंदा कर देता है। 22और बाप किसी की भी अदालत नहीं करता बल्कि उसने अदालत का पूरा इंतज़ाम फ़रज़ंद के सुपुर्द कर दिया है 23ताकि सब उसी तरह फ़रज़ंद की इज़्ज़त करें जिस तरह वह बाप की इज़्ज़त करते हैं। जो फ़रज़ंद की इज़्ज़त नहीं करता वह बाप की भी इज़्ज़त नहीं करता जिसने उसे भेजा है।

24मैं तुमको सच बताता हूँ, जो भी मेरी बात सुनकर उस पर ईमान लाता है जिसने मुझे भेजा है अबदी ज़िंदगी उस की है। उसे मुजरिम नहीं

ठहराया जाएगा बल्कि वह मौत की गिरिफ़्त से
निकलकर ज़िंदगी में दाख़िल हो गया है। 25मैं
तुमको सच बताता हूँ कि एक वक़्त आनेवाला है
बल्कि आ चुका है जब मुरदे अल्लाह के फ़रज़ंद
की आवाज़ सुनेंगे। और जितने सुनेंगे वह ज़िंदा
हो जाएंगे। 26क्योंकि जिस तरह बाप ज़िंदगी
का मंबा है उसी तरह उसने अपने फ़रज़ंद को
ज़िंदगी का मंबा बना दिया है। 27साथ साथ उसने
उसे अदालत करने का इख़्तियार भी दे दिया
है, क्योंकि वह इब्ने-आदम है। 28यह सुनकर
ताज्जुब न करो क्योंकि एक वक़्त आ रहा है जब
तमाम मुरदे उस की आवाज़ सुनकर 29क़ब्रों में से
निकल आएँगे। जिन्होंने नेक काम किया वह जी
उठकर ज़िंदगी पाएँगे जबकि जिन्होंने बुरा काम
किया वह जी तो उठेंगे लेकिन उनकी अदालत
की जाएगी।

ईसा के गवाह

30मैं अपनी मरज़ी से कुछ नहीं कर सकता
बल्कि जो कुछ बाप से सुनता हूँ उसके मुताबिक़
अदालत करता हूँ। और मेरी अदालत रास्त है
क्योंकि मैं अपनी मरज़ी करने की कोशिश नहीं
करता बल्कि उसी की जिसने मुझे भेजा है।

31अगर मैं ख़ुद अपने बारे में गवाही देता तो मेरी
गवाही मोतबर न होती। 32लेकिन एक और है जो
मेरे बारे में गवाही दे रहा है और मैं जानता हूँ कि
मेरे बारे में उस की गवाही सच्ची और मोतबर है।
33तुमने पता करने के लिए अपने लोगों को यहया
के पास भेजा है और उसने हक़ीक़त की तसदीक़
की है। 34बेशक मुझे किसी इनसानी गवाह की
ज़रूरत नहीं है, लेकिन मैं यह इसलिए बता रहा
हूँ ताकि तुमको नजात मिल जाए। 35यहया एक
जलता हुआ चराग़ था जो रौशनी देता था, और
कुछ देर के लिए तुमने उस की रौशनी में ख़ुशी
मनाना पसंद किया। 36लेकिन मेरे पास एक और
गवाह है जो यहया की निसबत ज़्यादा अहम
है—वह काम जो बाप ने मुझे मुकम्मल करने के
लिए दे दिया। यही काम जो मैं कर रहा हूँ मेरे बारे
में गवाही देता है कि बाप ने मुझे भेजा है। 37इसके
अलावा बाप ने ख़ुद जिसने मुझे भेजा है मेरे बारे
में गवाही दी है। अफ़सोस, तुमने कभी उस की
आवाज़ नहीं सुनी, न उस की शक्लो-सूरत देखी,
38और उसका कलाम तुम्हारे अंदर नहीं रहता,
क्योंकि तुम उस पर ईमान नहीं रखते जिसे उसने
भेजा है। 39तुम अपने सहीफ़ों में ढूँडते रहते हो
क्योंकि समझते हो कि उनसे तुम्हें अबदी ज़िंदगी
हासिल है। लेकिन यही मेरे बारे में गवाही देते हैं!
40तो भी तुम ज़िंदगी पाने के लिए मेरे पास आना
नहीं चाहते।

41मैं इनसानों से इज़्ज़त नहीं चाहता,
42लेकिन मैं तुमको जानता हूँ कि तुममें अल्लाह
की मुहब्बत नहीं। 43अगरचे मैं अपने बाप के
नाम में आया हूँ तो भी तुम मुझे क़बूल नहीं
करते। इसके मुक़ाबले में अगर कोई अपने नाम में
आएगा तो तुम उसे क़बूल करोगे। 44कोई अजब
नहीं कि तुम ईमान नहीं ला सकते। क्योंकि तुम
एक दूसरे से इज़्ज़त चाहते हो जबकि तुम वह
इज़्ज़त पाने की कोशिश ही नहीं करते जो वाहिद
ख़ुदा से मिलती है। 45लेकिन यह न समझो कि
मैं बाप के सामने तुम पर इलज़ाम लगाऊँगा। एक
और है जो तुम पर इलज़ाम लगा रहा है—मूसा,
जिससे तुम उम्मीद रखते हो। 46अगर तुम वाक़ई
मूसा पर ईमान रखते तो ज़रूर मुझ पर भी
ईमान रखते, क्योंकि उसने मेरे ही बारे में लिखा।
47लेकिन चूँकि तुम वह कुछ नहीं मानते जो उसने
लिखा है तो मेरी बातें क्योंकर मान सकते हो!”

ईसा बड़े हुजूम को खाना खिलाता है

6 इसके बाद ईसा ने गलील की झील को पार
किया। (झील का दूसरा नाम तिबरियास
था।) 2एक बड़ा हुजूम उसके पीछे लग गया था,
क्योंकि उसने इलाही निशान दिखाकर मरीज़ों को
शफ़ा दी थी और लोगों ने इसका मुशाहदा किया
था। 3फिर ईसा पहाड़ पर चढ़कर अपने शागिर्दों
के साथ बैठ गया। 4(यहूदी ईदे-फ़सह क़रीब आ
गई थी।) 5वहाँ बैठे ईसा ने अपनी नज़र उठाई

तो देखा कि एक बड़ा हुजूम पहुँच रहा है। उसने
फ़िलिप्पुस से पूछा, “हम कहाँ से खाना ख़रीदें
ताकि उन्हें खिलाएँ?” 6(यह उसने फ़िलिप्पुस
को आज़माने के लिए कहा। ख़ुद तो वह जानता
था कि क्या करेगा।)
7फ़िलिप्पुस ने जवाब दिया, “अगर हर एक
को सिर्फ़ थोड़ा-सा मिले तो भी चाँदी के 200
सिक्के काफ़ी नहीं होंगे।”
8फिर शमाऊन पतरस का भाई अंदरियास
बोल उठा, 9“यहाँ एक लड़का है जिसके पास
जौ की पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं। मगर
इतने लोगों में यह क्या हैं!”
10ईसा ने कहा, “लोगों को बिठा दो।” उस
जगह बहुत घास थी। चुनाँचे सब बैठ गए। (सिर्फ़
मर्दों की तादाद 5,000 थी।) 11ईसा ने रोटियाँ
लेकर शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उन्हें बैठे
हुए लोगों में तक़सीम करवाया। यही कुछ उसने
मछलियों के साथ भी किया। और सबने जी
भरकर रोटी खाई। 12जब सब सेर हो गए तो
ईसा ने शागिर्दों को बताया, “अब बचे हुए टुकड़े
जमा करो ताकि कुछ ज़ाया न हो जाए।” 13जब
उन्होंने बचा हुआ खाना इकट्ठा किया तो जौ की
पाँच रोटियों के टुकड़ों से बारह टोकरे भर गए।
14जब लोगों ने ईसा को यह इलाही निशान
दिखाते देखा तो उन्होंने कहा, “यक़ीनन यह
वही नबी है जिसे दुनिया में आना था।” 15ईसा
को मालूम हुआ कि वह आकर उसे ज़बरदस्ती
बादशाह बनाना चाहते हैं, इसलिए वह दुबारा
उनसे अलग होकर अकेला ही किसी पहाड़ पर
चढ़ गया।

ईसा पानी पर चलता है

16शाम को शागिर्द झील के पास गए 17और
कश्ती पर सवार होकर झील के पार शहर
कफ़र्नहूम के लिए रवाना हुए। अंधेरा हो चुका
था और ईसा अब तक उनके पास वापस नहीं
आया था। 18तेज़ हवा के बाइस झील में लहरें
उठने लगीं। 19कश्ती को खेते खेते शागिर्द चार
या पाँच किलोमीटर का सफ़र तय कर चुके थे
कि अचानक ईसा नज़र आया। वह पानी पर
चलता हुआ कश्ती की तरफ़ बढ़ रहा था। शागिर्द
दहशतज़दा हो गए। 20लेकिन उसने उनसे कहा,
“मैं ही हूँ। ख़ौफ़ न करो।” 21वह उसे कश्ती में
बिठाने पर आमादा हुए। और कश्ती उसी लमहे
उस जगह पहुँच गई जहाँ वह जाना चाहते थे।

लोग ईसा को ढूँडते हैं

22हुजूम तो झील के पार रह गया था। अगले
दिन लोगों को पता चला कि शागिर्द एक ही कश्ती
लेकर चले गए हैं और कि उस वक़्त ईसा कश्ती में
नहीं था। 23फिर कुछ कश्तियाँ तिबरियास से उस
मक़ाम के क़रीब पहुँचीं जहाँ ख़ुदावंद ईसा ने रोटी
के लिए शुक्रगुज़ारी की दुआ करके उसे लोगों को
खिलाया था। 24जब लोगों ने देखा कि न ईसा
और न उसके शागिर्द वहाँ हैं तो वह कश्तियों पर
सवार होकर ईसा को ढूँडते ढूँडते कफ़र्नहूम पहुँचे।

ईसा ज़िंदगी की रोटी है

25जब उन्होंने उसे झील के पार पाया तो पूछा,
“उस्ताद, आप किस तरह यहाँ पहुँच गए?”
26ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुमको सच बताता
हूँ, तुम मुझे इसलिए नहीं ढूँड रहे कि इलाही
निशान देखे हैं बल्कि इसलिए कि तुमने जी
भरकर रोटी खाई है। 27ऐसी ख़ुराक के लिए
जिद्दो-जहद न करो जो गल-सड़ जाती है, बल्कि
ऐसी के लिए जो अबदी ज़िंदगी तक क़ायम रहती
है और जो इब्ने-आदम तुमको देगा, क्योंकि ख़ुदा
बाप ने उस पर अपनी तसदीक़ की मुहर लगाई
है।”
28इस पर उन्होंने पूछा, “हमें क्या करना
चाहिए ताकि अल्लाह का मतलूबा काम करें?”
29ईसा ने जवाब दिया, “अल्लाह का काम यह
है कि तुम उस पर ईमान लाओ जिसे उसने भेजा
है।”
30उन्होंने कहा, “तो फिर आप क्या इलाही
निशान दिखाएँगे जिसे देखकर हम आप पर ईमान

लाएँ? आप क्या काम सरंजाम देंगे? 31हमारे
बापदादा ने तो रेगिस्तान में मन खाया। चुनाँचे
कलामे-मुक़द्दस में लिखा है कि मूसा ने उन्हें
आसमान से रोटी खिलाई।”

32ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुमको सच बताता
हूँ कि ख़ुद मूसा ने तुमको आसमान से रोटी नहीं
खिलाई बल्कि मेरे बाप ने। वही तुमको आसमान
से हक़ीक़ी रोटी देता है। 33क्योंकि अल्लाह की
रोटी वह शख़्स है जो आसमान पर से उतरकर
दुनिया को ज़िंदगी बख़्शता है।”

34उन्होंने कहा, “ख़ुदावंद, हमें यह रोटी हर
वक़्त दिया करें।”

35जवाब में ईसा ने कहा, “मैं ही ज़िंदगी की
रोटी हूँ। जो मेरे पास आए उसे फिर कभी भूक
नहीं लगेगी। और जो मुझ पर ईमान लाए उसे फिर
कभी प्यास नहीं लगेगी। 36लेकिन जिस तरह मैं
तुमको बता चुका हूँ, तुमने मुझे देखा और फिर
भी ईमान नहीं लाए। 37जितने भी बाप ने मुझे
दिए हैं वह मेरे पास आएँगे और जो भी मेरे पास
आएगा उसे मैं हरगिज़ निकाल न दूँगा। 38क्योंकि
मैं अपनी मरज़ी पूरी करने के लिए आसमान से
नहीं उतरा बल्कि उस की जिसने मुझे भेजा है।
39और जिसने मुझे भेजा उस की मरज़ी यह है
कि जितने भी उसने मुझे दिए हैं उनमें से मैं एक
को भी खो न दूँ बल्कि सबको क़ियामत के दिन
मुरदों में से फिर ज़िंदा करूँ। 40क्योंकि मेरे बाप
की मरज़ी यही है कि जो भी फ़रज़ंद को देखकर
उस पर ईमान लाए उसे अबदी ज़िंदगी हासिल
हो। ऐसे शख़्स को मैं क़ियामत के दिन मुरदों में
से फिर ज़िंदा करूँगा।”

41यह सुनकर यहूदी इसलिए बुड़बुड़ाने लगे कि
उसने कहा था, “मैं ही वह रोटी हूँ जो आसमान पर
से उतर आई है।” 42उन्होंने एतराज़ किया, “क्या
यह ईसा बिन यूसुफ़ नहीं, जिसके बाप और माँ
से हम वाक़िफ़ हैं? वह क्योंकर कह सकता है
कि ‘मैं आसमान से उतरा हूँ’?”

43ईसा ने जवाब में कहा, “आपस में मत
बुड़बुड़ाओ। 44सिर्फ़ वह शख़्स मेरे पास आ
सकता है जिसे बाप जिसने मुझे भेजा है मेरे पास
खींच लाया है। ऐसे शख़्स को मैं क़ियामत के
दिन मुरदों में से फिर ज़िंदा करूँगा। 45नबियों के
सहीफ़ों में लिखा है, ‘सब अल्लाह से तालीम
पाएँगे।’ जो भी अल्लाह की सुनकर उससे
सीखता है वह मेरे पास आ जाता है। 46इसका
मतलब यह नहीं कि किसी ने कभी बाप को
देखा। सिर्फ़ एक ही ने बाप को देखा है, वही जो
अल्लाह की तरफ़ से है। 47मैं तुमको सच बताता
हूँ कि जो ईमान रखता है उसे अबदी ज़िंदगी
हासिल है। 48ज़िंदगी की रोटी मैं हूँ। 49तुम्हारे
बापदादा रेगिस्तान में मन खाते रहे, तो भी वह
मर गए। 50लेकिन यहाँ आसमान से उतरनेवाली
ऐसी रोटी है जिसे खाकर इनसान नहीं मरता।
51मैं ही ज़िंदगी की वह रोटी हूँ जो आसमान से
उतर आई है। जो इस रोटी से खाए वह अबद तक
ज़िंदा रहेगा। और यह रोटी मेरा गोश्त है जो मैं
दुनिया को ज़िंदगी मुहैया करने की ख़ातिर पेश
करूँगा।”

52यहूदी बड़ी सरगरमी से एक दूसरे से बहस
करने लगे, “यह आदमी हमें किस तरह अपना
गोश्त खिला सकता है?”

53ईसा ने उनसे कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ
कि सिर्फ़ इब्ने-आदम का गोश्त खाने और उसका
ख़ून पीने ही से तुममें ज़िंदगी होगी। 54जो मेरा
गोश्त खाए और मेरा ख़ून पिए अबदी ज़िंदगी उस
की है और मैं उसे क़ियामत के दिन मुरदों में से
फिर ज़िंदा करूँगा। 55क्योंकि मेरा गोश्त हक़ीक़ी
ख़ुराक और मेरा ख़ून हक़ीक़ी पीने की चीज़ है।
56जो मेरा गोश्त खाता और मेरा ख़ून पीता है वह
मुझमें क़ायम रहता है और मैं उसमें। 57मैं उस
ज़िंदा बाप की वजह से ज़िंदा हूँ जिसने मुझे भेजा।
इसी तरह जो मुझे खाता है वह मेरी ही वजह से
ज़िंदा रहेगा। 58यही वह रोटी है जो आसमान से
उतरी है। तुम्हारे बापदादा मन खाने के बावुजूद
मर गए, लेकिन जो यह रोटी खाएगा वह अबद
तक ज़िंदा रहेगा।”

59ईसा ने यह बातें उस वक़्त कीं जब वह
कफ़र्नहूम में यहूदी इबादतख़ाने में तालीम दे रहा
था।

अबदी ज़िंदगी की बातें

60यह सुनकर उसके बहुत-से शागिर्दों ने कहा,
“यह बातें ना-गवार हैं। कौन इन्हें सुन सकता है!”
61ईसा को मालूम था कि मेरे शागिर्द मेरे बारे में
बुड़बुड़ा रहे हैं, इसलिए उसने कहा, “क्या तुमको
इन बातों से ठेस लगी है? 62तो फिर तुम क्या
सोचोगे जब इब्ने-आदम को ऊपर जाते देखोगे
जहाँ वह पहले था? 63अल्लाह का रूह ही ज़िंदा
करता है जबकि जिस्मानी ताक़त का कोई फ़ायदा
नहीं होता। जो बातें मैंने तुमको बताई हैं वह रूह
और ज़िंदगी हैं। 64लेकिन तुममें से कुछ हैं जो
ईमान नहीं रखते।” (ईसा तो शुरू से ही जानता
था कि कौन कौन ईमान नहीं रखते और कौन
मुझे दुश्मन के हवाले करेगा।) 65फिर उसने कहा,
“इसलिए मैंने तुमको बताया कि सिर्फ़ वह शख़्स
मेरे पास आ सकता है जिसे बाप की तरफ़ से यह
तौफ़ीक़ मिले।”

66उस वक़्त से उसके बहुत-से शागिर्द उलटे
पाँव फिर गए और आइंदा को उसके साथ न चले।
67तब ईसा ने बारह शागिर्दों से पूछा, “क्या तुम
भी चले जाना चाहते हो?”

68शमाऊन पतरस ने जवाब दिया, “ख़ुदा-
वंद, हम किसके पास जाएँ? अबदी ज़िंदगी की
बातें तो आप ही के पास हैं। 69और हमने ईमान
लाकर जान लिया है कि आप अल्लाह के क़ुद्दूस
हैं।”

70जवाब में ईसा ने कहा, “क्या मैंने तुम बारह
को नहीं चुना? तो भी तुममें से एक शख़्स शैतान
है।” 71(वह शमाऊन इस्करियोती के बेटे यहूदाह
की तरफ़ इशारा कर रहा था जो बारह शागिर्दों
में से एक था और जिसने बाद में उसे दुश्मन के
हवाले कर दिया।)

ईसा और उसके भाई

7 इसके बाद ईसा ने गलील के इलाक़े में
इधर-उधर सफ़र किया। वह यहूदिया में
फिरना नहीं चाहता था क्योंकि वहाँ के यहूदी उसे
क़त्ल करने का मौक़ा ढूँड रहे थे। 2लेकिन जब
यहूदी ईद बनाम झोंपड़ियों की ईद क़रीब आई
3तो उसके भाइयों ने उससे कहा, “यह जगह
छोड़कर यहूदिया चला जा ताकि तेरे पैरोकार
भी वह मोजिज़े देख लें जो तू करता है। 4जो
शख़्स चाहता है कि अवाम उसे जाने वह पोशीदगी
में काम नहीं करता। अगर तू इस क़िस्म का
मोजिज़ाना काम करता है तो अपने आपको
दुनिया पर ज़ाहिर कर।” 5(असल में ईसा के भाई
भी उस पर ईमान नहीं रखते थे।)

6ईसा ने उन्हें बताया, “अभी वह वक़्त नहीं
आया जो मेरे लिए मौज़ूँ है। लेकिन तुम जा
सकते हो, तुम्हारे लिए हर वक़्त मौज़ूँ है। 7दुनिया
तुमसे दुश्मनी नहीं रख सकती। लेकिन मुझसे वह
दुश्मनी रखती है, क्योंकि मैं उसके बारे में यह
गवाही देता हूँ कि उसके काम बुरे हैं। 8तुम ख़ुद
ईद पर जाओ। मैं नहीं जाऊँगा, क्योंकि अभी वह
वक़्त नहीं आया जो मेरे लिए मौज़ूँ है।” 9यह
कहकर वह गलील में ठहरा रहा।

ईसा झोंपड़ियों की ईद पर

10लेकिन बाद में, जब उसके भाई ईद पर जा
चुके थे तो वह भी गया, अगरचे अलानिया नहीं
बल्कि ख़ुफ़िया तौर पर। 11यहूदी ईद के मौक़े पर
उसे तलाश कर रहे थे। वह पूछते रहे, “वह आदमी
कहाँ है?”

12हुजूम में से कई लोग ईसा के बारे में बुड़बुड़ा
रहे थे। बाज़ ने कहा, “वह अच्छा बंदा है।” लेकिन
दूसरों ने एतराज़ किया, “नहीं, वह अवाम को
बहकाता है।” 13लेकिन किसी ने भी उसके बारे
में खुलकर बात न की, क्योंकि वह यहूदियों से
डरते थे।

14ईद का आधा हिस्सा गुज़र चुका था जब
ईसा बैतुल-मुक़द्दस में जाकर तालीम देने लगा।

15उसे सुनकर यहूदी हैरतज़दा हुए और कहा,
“यह आदमी किस तरह इतना इल्म रखता है
हालाँकि इसने कहीं से भी तालीम हासिल नहीं
की!”
16ईसा ने जवाब दिया, “जो तालीम मैं देता
हूँ वह मेरी अपनी नहीं बल्कि उस की है जिसने
मुझे भेजा। 17जो उस की मरज़ी पूरी करने के
लिए तैयार है वह जान लेगा कि मेरी तालीम
अल्लाह की तरफ़ से है या कि मेरी अपनी तरफ़
से। 18जो अपनी तरफ़ से बोलता है वह अपनी
ही इज़्ज़त चाहता है। लेकिन जो अपने भेजनेवाले
की इज़्ज़तो-जलाल बढ़ाने की कोशिश करता है
वह सच्चा है और उसमें नारास्ती नहीं है। 19क्या
मूसा ने तुमको शरीअत नहीं दी? तो फिर तुम
मुझे क़त्ल करने की कोशिश क्यों कर रहे हो?”
20हुजूम ने जवाब दिया, “तुम किसी बदरूह
की गिरिफ़्त में हो। कौन तुम्हें क़त्ल करने की
कोशिश कर रहा है?”
21ईसा ने उनसे कहा, “मैंने सबत के दिन एक
ही मोजिज़ा किया और तुम सब हैरतज़दा हुए।
22लेकिन तुम भी सबत के दिन काम करते हो।
तुम उस दिन अपने बच्चों का ख़तना करवाते
हो। और यह रस्म मूसा की शरीअत के मुताबिक़
ही है, अगरचे यह मूसा से नहीं बल्कि हमारे
बापदादा इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब से शुरू
हुई। 23क्योंकि शरीअत के मुताबिक़ लाज़िम है
कि बच्चे का ख़तना आठवें दिन करवाया जाए,
और अगर यह दिन सबत हो तो तुम फिर भी
अपने बच्चे का ख़तना करवाते हो ताकि शरीअत
की ख़िलाफ़वरज़ी न हो जाए। तो फिर तुम मुझसे
क्यों नाराज़ हो कि मैंने सबत के दिन एक आदमी
के पूरे जिस्म को शफ़ा दी? 24ज़ाहिरी सूरत की
बिना पर फ़ैसला न करो बल्कि बातिनी हालत
पहचानकर मुंसिफ़ाना फ़ैसला करो।”

क्या ईसा ही मसीह है?

25उस वक़्त यरूशलम के कुछ रहनेवाले कहने
लगे, “क्या यह वह आदमी नहीं है जिसे लोग
क़त्ल करने की कोशिश कर रहे हैं? 26ताहम
वह यहाँ खुलकर बात कर रहा है और कोई भी
उसे रोकने की कोशिश नहीं कर रहा। क्या हमारे
राहनुमाओं ने हक़ीक़त में जान लिया है कि यह
मसीह है? 27लेकिन जब मसीह आएगा तो
किसी को भी मालूम नहीं होगा कि वह कहाँ से
है। यह आदमी फ़रक़ है। हम तो जानते हैं कि यह
कहाँ से है।”
28ईसा बैतुल-मुक़द्दस में तालीम दे रहा था।
अब वह पुकार उठा, “तुम मुझे जानते हो और
यह भी जानते हो कि मैं कहाँ से हूँ। लेकिन मैं
अपनी तरफ़ से नहीं आया। जिसने मुझे भेजा है
वह सच्चा है और उसे तुम नहीं जानते। 29लेकिन
मैं उसे जानता हूँ, क्योंकि मैं उस की तरफ़ से हूँ
और उसने मुझे भेजा है।”
30तब उन्होंने उसे गिरिफ़्तार करने की कोशिश
की। लेकिन कोई भी उसको हाथ न लगा सका,
क्योंकि अभी उसका वक़्त नहीं आया था। 31तो
भी हुजूम के कई लोग उस पर ईमान लाए,
क्योंकि उन्होंने कहा, “जब मसीह आएगा तो
क्या वह इस आदमी से ज़्यादा इलाही निशान
दिखाएगा?”

पहरेदार उसे गिरिफ़्तार करने आते हैं

32फ़रीसियों ने देखा कि हुजूम में इस क़िस्म
की बातें धीमी धीमी आवाज़ के साथ फैल रही हैं।
चुनाँचे उन्होंने राहनुमा इमामों के साथ मिलकर
बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदार ईसा को गिरिफ़्तार
करने के लिए भेजे। 33लेकिन ईसा ने कहा, “मैं
सिर्फ़ थोड़ी देर और तुम्हारे साथ रहूँगा, फिर
मैं उसके पास वापस चला जाऊँगा जिसने मुझे
भेजा है। 34उस वक़्त तुम मुझे ढूँडोगे, मगर नहीं
पाओगे, क्योंकि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम नहीं आ
सकते।”
35यहूदी आपस में कहने लगे, “यह कहाँ जाना
चाहता है जहाँ हम उसे नहीं पा सकेंगे? क्या वह
बैरूने-मुल्क जाना चाहता है, वहाँ जहाँ हमारे लोग
यूनानियों में बिखरी हालत में रहते हैं? क्या वह

यूनानियों को तालीम देना चाहता है? 36मतलब क्या है जब वह कहता है, 'तुम मुझे ढूँडोगे मगर नहीं पाओगे' और 'जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते'।"

ज़िंदगी के पानी की नहरें

37ईद के आख़िरी दिन जो सबसे अहम है ईसा खड़ा हुआ और ऊँची आवाज़ से पुकार उठा, "जो प्यासा हो वह मेरे पास आए, 38और जो मुझ पर ईमान लाए वह पिए। कलामे-मुक़द्दस के मुताबिक़ 'उसके अंदर से ज़िंदगी के पानी की नहरें बह निकलेंगी'।" 39('ज़िंदगी के पानी' से वह रूहुल-क़ुद्स की तरफ़ इशारा कर रहा था जो उनको हासिल होता है जो ईसा पर ईमान लाते हैं। लेकिन वह उस वक़्त तक नाज़िल नहीं हुआ था, क्योंकि ईसा अब तक अपने जलाल को न पहुँचा था।)

सुननेवालों में नाइत्तफ़ाक़ी

40ईसा की यह बातें सुनकर हुजूम के कुछ लोगों ने कहा, "यह आदमी वाक़ई वह नबी है जिसके इंतज़ार में हम हैं।"

41दूसरों ने कहा, "यह मसीह है।"

लेकिन बाज़ ने एतराज़ किया, "मसीह गलील से किस तरह आ सकता है! 42पाक कलाम तो बयान करता है कि मसीह दाऊद के ख़ानदान और बैत-लहम से आएगा, उस गाँव से जहाँ दाऊद बादशाह पैदा हुआ।" 43यों ईसा की वजह से लोगों में फूट पड़ गई। 44कुछ तो उसे गिरिफ़्तार करना चाहते थे, लेकिन कोई भी उसको हाथ न लगा सका।

यहूदी राहनुमा ईसा पर ईमान नहीं रखते

45इतने में बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदार राहनुमा इमामों और फ़रीसियों के पास वापस आए। वह ईसा को लेकर नहीं आए थे, इसलिए राहनुमाओं ने पूछा, "तुम उसे क्यों नहीं लाए?"

46पहरेदारों ने जवाब दिया, "किसी ने कभी इस आदमी की तरह बात नहीं की।"

47फ़रीसियों ने तंज़न कहा, "क्या तुमको भी बहका दिया गया है? 48क्या राहनुमाओं या फ़रीसियों में कोई है जो उस पर ईमान लाया हो? कोई भी नहीं! 49लेकिन शरीअत से नावाक़िफ़ यह हुजूम लानती है!"

50इन राहनुमाओं में नीकुदेमुस भी शामिल था जो कुछ देर पहले ईसा के पास गया था। अब वह बोल उठा, 51"क्या हमारी शरीअत किसी पर यों फ़ैसला देने की इजाज़त देती है? नहीं, लाज़िम है कि उसे पहले अदालत में पेश किया जाए ताकि मालूम हो जाए कि उससे क्या कुछ सरज़द हुआ है।"

52दूसरों ने एतराज़ किया, "क्या तुम भी गलील के रहनेवाले हो? कलामे-मुक़द्दस में तफ़तीश करके ख़ुद देख लो कि गलील से कोई नबी नहीं आएगा।" 53यह कहकर हर एक अपने अपने घर चला गया।

ज़िनाकार औरत पर पहला पत्थर

8 ईसा ख़ुद ज़ैतून के पहाड़ पर चला गया। 2अगले दिन पौ फटते वक़्त वह दुबारा बैतुल-मुक़द्दस में आया। वहाँ सब लोग उसके गिर्द जमा हुए और वह बैठकर उन्हें तालीम देने लगा। 3इस दौरान शरीअत के उलमा और फ़रीसी एक औरत को लेकर आए जिसे ज़िना करते वक़्त पकड़ा गया था। उसे बीच में खड़ा करके 4उन्होंने ईसा से कहा, "उस्ताद, इस औरत को ज़िना करते वक़्त पकड़ा गया है। 5मूसा ने शरीअत में हमें हुक्म दिया है कि ऐसे लोगों को संगसार करना है। आप क्या कहते हैं?" 6इस सवाल से वह उसे फँसाना चाहते थे ताकि उस पर इलज़ाम लगाने का कोई बहाना उनके हाथ आ जाए। लेकिन ईसा झुक गया और अपनी उँगली से ज़मीन पर लिखने लगा।

7जब वह उससे जवाब का तक़ाज़ा करते रहे तो वह खड़ा होकर उनसे मुख़ातिब हुआ, "तुममें

से जिसने कभी गुनाह नहीं किया, वह पहला
पत्थर मारे।” 8फिर वह दुबारा झुककर ज़मीन
पर लिखने लगा। 9यह जवाब सुनकर इलज़ाम
लगानेवाले यके बाद दीगरे वहाँ से खिसक गए,
पहले बुज़ुर्ग, फिर बाक़ी सब। आख़िरकार ईसा
और दरमियान में खड़ी वह औरत अकेले रह गए।
10फिर उसने खड़े होकर कहा, “ऐ औरत, वह
सब कहाँ गए? क्या किसी ने तुझ पर फ़तवा
नहीं लगाया?”

11औरत ने जवाब दिया, “नहीं ख़ुदावंद।”

ईसा ने कहा, “मैं भी तुझ पर फ़तवा नहीं
लगाता। जा, आइंदा गुनाह न करना।”

ईसा दुनिया का नूर है

12फिर ईसा दुबारा लोगों से मुख़ातिब हुआ,
“दुनिया का नूर मैं हूँ। जो मेरी पैरवी करे वह
तारीकी में नहीं चलेगा, क्योंकि उसे ज़िंदगी का
नूर हासिल होगा।”

13फ़रीसियों ने एतराज़ किया, “आप तो अपने
बारे में गवाही दे रहे हैं। ऐसी गवाही मोतबर नहीं
होती।”

14ईसा ने जवाब दिया, “अगरचे मैं अपने बारे
में ही गवाही दे रहा हूँ तो भी वह मोतबर है।
क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं कहाँ से आया हूँ और
कहाँ को जा रहा हूँ। लेकिन तुमको तो मालूम
नहीं कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ जा रहा
हूँ। 15तुम इनसानी सोच के मुताबिक़ लोगों का
फ़ैसला करते हो, लेकिन मैं किसी का भी फ़ैसला
नहीं करता। 16और अगर फ़ैसला करूँ भी तो
मेरा फ़ैसला दुरुस्त है, क्योंकि मैं अकेला नहीं हूँ।
बाप जिसने मुझे भेजा है मेरे साथ है। 17तुम्हारी
शरीअत में लिखा है कि दो आदमियों की गवाही
मोतबर है। 18मैं ख़ुद अपने बारे में गवाही देता हूँ
जबकि दूसरा गवाह बाप है जिसने मुझे भेजा।”

19उन्होंने पूछा, “आपका बाप कहाँ है?” ईसा
ने जवाब दिया, “तुम न मुझे जानते हो, न मेरे बाप
को। अगर तुम मुझे जानते तो फिर मेरे बाप को
भी जानते।”

20ईसा ने यह बातें उस वक़्त कीं जब वह उस
जगह के क़रीब तालीम दे रहा था जहाँ लोग अपना
हदिया डालते थे। लेकिन किसी ने उसे गिरिफ़्तार
न किया क्योंकि अभी उसका वक़्त नहीं आया
था।

जहाँ मैं जा रहा हूँ तुम वहाँ नहीं जा सकते

21एक और बार ईसा उनसे मुख़ातिब हुआ, “मैं
जा रहा हूँ और तुम मुझे ढूँड ढूँडकर अपने गुनाह
में मर जाओगे। जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं
पहुँच सकते।”

22यहूदियों ने पूछा, “क्या वह ख़ुदकुशी करना
चाहता है? क्या वह इसी वजह से कहता है, ‘जहाँ
मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं पहुँच सकते’?”

23ईसा ने अपनी बात जारी रखी, “तुम नीचे
से हो जबकि मैं ऊपर से हूँ। तुम इस दुनिया के
हो जबकि मैं इस दुनिया का नहीं हूँ। 24मैं तुमको
बता चुका हूँ कि तुम अपने गुनाहों में मर जाओगे।
क्योंकि अगर तुम ईमान नहीं लाते कि मैं वही हूँ
तो तुम यक़ीनन अपने गुनाहों में मर जाओगे।”

25उन्होंने सवाल किया, “आप कौन हैं?”

ईसा ने जवाब दिया, “मैं वही हूँ जो मैं शुरू
से ही बताता आया हूँ। 26मैं तुम्हारे बारे में बहुत
कुछ कह सकता हूँ। बहुत-सी ऐसी बातें हैं जिनकी
बिना पर मैं तुमको मुजरिम ठहरा सकता हूँ।
लेकिन जिसने मुझे भेजा है वही सच्चा और
मोतबर है और मैं दुनिया को सिर्फ़ वह कुछ सुनाता
हूँ जो मैंने उससे सुना है।”

27सुननेवाले न समझे कि ईसा बाप का ज़िक्र
कर रहा है। 28चुनाँचे उसने कहा, “जब तुम इब्ने-
आदम को ऊँचे पर चढ़ाओगे तब ही तुम जान लोगे
कि मैं वही हूँ, कि मैं अपनी तरफ़ से कुछ नहीं
करता बल्कि सिर्फ़ वही सुनाता हूँ जो बाप ने मुझे
सिखाया है। 29और जिसने मुझे भेजा है वह मेरे
साथ है। उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा, क्योंकि मैं
हर वक़्त वही कुछ करता हूँ जो उसे पसंद आता
है।”

30यह बातें सुनकर बहुत-से लोग उस पर ईमान
लाए।

सच्चाई तुमको आज़ाद करेगी

31जो यहूदी उसका यक़ीन करते थे ईसा अब
उनसे हमकलाम हुआ, “अगर तुम मेरी तालीम
के ताबे रहोगे तब ही तुम मेरे सच्चे शागिर्द होगे।
32फिर तुम सच्चाई को जान लोगे और सच्चाई
तुमको आज़ाद कर देगी।”

33उन्होंने एतराज़ किया, “हम तो इब्राहीम की
औलाद हैं, हम कभी भी किसी के ग़ुलाम नहीं
रहे। फिर आप किस तरह कह सकते हैं कि हम
आज़ाद हो जाएंगे?”

34ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुमको सच बताता
हूँ कि जो भी गुनाह करता है वह गुनाह का
ग़ुलाम है। 35ग़ुलाम तो आरिज़ी तौर पर घर में
रहता है, लेकिन मालिक का बेटा हमेशा तक।
36इसलिए अगर फ़रज़ंद तुमको आज़ाद करे तो
तुम हक़ीक़तन आज़ाद होगे। 37मुझे मालूम है
कि तुम इब्राहीम की औलाद हो। लेकिन तुम मुझे
क़त्ल करने के दरपै हो, क्योंकि तुम्हारे अंदर मेरे
पैग़ाम के लिए गुंजाइश नहीं है। 38मैं तुमको वही
कुछ बताता हूँ जो मैंने बाप के हाँ देखा है, जबकि
तुम वही कुछ सुनाते हो जो तुमने अपने बाप से
सुना है।”

39उन्होंने कहा, “हमारा बाप इब्राहीम है।”
ईसा ने जवाब दिया, “अगर तुम इब्राहीम की
औलाद होते तो तुम उसके नमूने पर चलते।
40इसके बजाए तुम मुझे क़त्ल करने की तलाश
में हो, इसलिए कि मैंने तुमको वही सच्चाई सुनाई
है जो मैंने अल्लाह के हुज़ूर सुनी है। इब्राहीम ने
कभी भी इस क़िस्म का काम न किया। 41नहीं,
तुम अपने बाप का काम कर रहे हो।”

उन्होंने एतराज़ किया, “हम हरामज़ादे नहीं हैं।
अल्लाह ही हमारा वाहिद बाप है।”

42ईसा ने उनसे कहा, “अगर अल्लाह तुम्हारा
बाप होता तो तुम मुझसे मुहब्बत रखते, क्योंकि मैं
अल्लाह में से निकल आया हूँ। मैं अपनी तरफ़ से
नहीं आया बल्कि उसी ने मुझे भेजा है। 43तुम मेरी
ज़बान क्यों नहीं समझते? इसलिए कि तुम मेरी
बात सुन नहीं सकते। 44तुम अपने बाप इबलीस
से हो और अपने बाप की ख़ाहिशों पर अमल करने
के ख़ाहाँ रहते हो। वह शुरू ही से क़ातिल है और
सच्चाई पर क़ायम न रहा, क्योंकि उसमें सच्चाई
है नहीं। जब वह झूट बोलता है तो यह फ़ितरी
बात है, क्योंकि वह झूट बोलनेवाला और झूट
का बाप है। 45लेकिन मैं सच्ची बातें सुनाता हूँ
और यही वजह है कि तुमको मुझ पर यक़ीन नहीं
आता। 46क्या तुममें से कोई साबित कर सकता
है कि मुझसे कोई गुनाह सरज़द हुआ है? मैं तो
तुमको हक़ीक़त बता रहा हूँ। फिर तुमको मुझ पर
यक़ीन क्यों नहीं आता? 47जो अल्लाह से है वह
अल्लाह की बातें सुनता है। तुम यह इसलिए नहीं
सुनते कि तुम अल्लाह से नहीं हो।”

ईसा और इब्राहीम

48यहूदियों ने जवाब दिया, “क्या हमने ठीक
नहीं कहा कि तुम सामरी हो और किसी बदरूह
के क़ब्ज़े में हो?”

49ईसा ने कहा, “मैं बदरूह के क़ब्ज़े में नहीं
हूँ बल्कि अपने बाप की इज़्ज़त करता हूँ जबकि
तुम मेरी बेइज़्ज़ती करते हो। 50मैं ख़ुद अपनी
इज़्ज़त का ख़ाहाँ नहीं हूँ। लेकिन एक है जो
मेरी इज़्ज़त और जलाल का ख़याल रखता और
इनसाफ़ करता है। 51मैं तुमको सच बताता हूँ कि
जो भी मेरे कलाम पर अमल करता रहे वह मौत
को कभी नहीं देखेगा।”

52यह सुनकर लोगों ने कहा, “अब हमें पता
चल गया है कि तुम किसी बदरूह के क़ब्ज़े में हो।
इब्राहीम और नबी सब इंतक़ाल कर गए जबकि
तुम दावा करते हो, ‘जो भी मेरे कलाम पर अमल
करता रहे वह मौत का मज़ा कभी नहीं चखेगा।’
53क्या तुम हमारे बाप इब्राहीम से बड़े हो? वह
मर गया, और नबी भी मर गए। तुम अपने आपको
क्या समझते हो?”

54ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैं अपनी इज़्ज़त और जलाल बढ़ाता तो मेरा जलाल बातिल होता। लेकिन मेरा बाप ही मेरी इज़्ज़तो-जलाल बढ़ाता है, वही जिसके बारे में तुम दावा करते हो कि ‘वह हमारा ख़ुदा है।’ 55लेकिन हक़ीक़त में तुमने उसे नहीं जाना जबकि मैं उसे जानता हूँ। अगर मैं कहता कि मैं उसे नहीं जानता तो मैं तुम्हारी तरह झूटा होता। लेकिन मैं उसे जानता और उसके कलाम पर अमल करता हूँ। 56तुम्हारे बाप इब्राहीम ने ख़ुशी मनाई जब उसे मालूम हुआ कि वह मेरी आमद का दिन देखेगा, और वह उसे देखकर मसरूर हुआ।”

57यहूदियों ने एतराज़ किया, “तुम्हारी उम्र तो अभी पचास साल भी नहीं, तो फिर तुम किस तरह कह सकते हो कि तुमने इब्राहीम को देखा है?”

58ईसा ने उनसे कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ, इब्राहीम की पैदाइश से पेशतर ‘मैं हूँ’।”

59इस पर लोग उसे संगसार करने के लिए पत्थर उठाने लगे। लेकिन ईसा ग़ायब होकर बैतुल-मुक़द्दस से निकल गया।

अंधे की शफ़ा

9 चलते चलते ईसा ने एक आदमी को देखा जो पैदाइश का अंधा था। 2उसके शागिर्दों ने उससे पूछा, “उस्ताद, यह आदमी अंधा क्यों पैदा हुआ? क्या इसका कोई गुनाह है या इसके वालिदैन का?”

3ईसा ने जवाब दिया, “न इसका कोई गुनाह है और न इसके वालिदैन का। यह इसलिए हुआ कि इसकी ज़िंदगी में अल्लाह का काम ज़ाहिर हो जाए। 4अभी दिन है। लाज़िम है कि हम जितनी देर तक दिन है उसका काम करते रहें जिसने मुझे भेजा है। क्योंकि रात आनेवाली है, उस वक़्त कोई काम नहीं कर सकेगा। 5लेकिन जितनी देर तक मैं दुनिया में हूँ उतनी देर तक मैं दुनिया का नूर हूँ।”

6यह कहकर उसने ज़मीन पर थूककर मिट्टी सानी और उस की आँखों पर लगा दी। 7उसने उससे कहा, “जा, शिलोख़ के हौज़ में नहा ले।” (शिलोख़ का मतलब ‘भेजा हुआ’ है।) अंधे ने जाकर नहा लिया। जब वापस आया तो वह देख सकता था।

8उसके हमसाये और वह जिन्होंने पहले उसे भीक माँगते देखा था पूछने लगे, “क्या यह वही नहीं जो बैठा भीक माँगा करता था?”

9बाज़ ने कहा, “हाँ, वही है।”

औरों ने इनकार किया, “नहीं, यह सिर्फ़ उसका हमशक्ल है।”

लेकिन आदमी ने ख़ुद इसरार किया, “मैं वही हूँ।”

10उन्होंने उससे सवाल किया, “तेरी आँखें किस तरह बहाल हुईं?”

11उसने जवाब दिया, “वह आदमी जो ईसा कहलाता है उसने मिट्टी सानकर मेरी आँखों पर लगा दी। फिर उसने मुझे कहा, ‘शिलोख़ के हौज़ पर जा और नहा ले।’ मैं वहाँ गया और नहाते ही मेरी आँखें बहाल हो गईं।”

12उन्होंने पूछा, “वह कहाँ है?”

उसने जवाब दिया, “मुझे नहीं मालूम।”

फ़रीसी शफ़ा की तफ़तीश करते हैं

13तब वह शफ़ायाब अंधे को फ़रीसियों के पास ले गए। 14जिस दिन ईसा ने मिट्टी सानकर उस की आँखों को बहाल किया था वह सबत का दिन था। 15इसलिए फ़रीसियों ने भी उससे पूछ-गछ की कि उसे किस तरह बसारत मिल गई। आदमी ने जवाब दिया, “उसने मेरी आँखों पर मिट्टी लगा दी, फिर मैंने नहा लिया और अब देख सकता हूँ।”

16फ़रीसियों में से बाज़ ने कहा, “यह शख़्स अल्लाह की तरफ़ से नहीं है, क्योंकि सबत के दिन काम करता है।”

दूसरों ने एतराज़ किया, “गुनाहगार इस क़िस्म के इलाही निशान किस तरह दिखा सकता है?” यों उनमें फूट पड़ गई।

17फिर वह दुबारा उस आदमी से मुख़ातिब हुए
जो पहले अंधा था, “तू ख़ुद इसके बारे में क्या
कहता है? उसने तो तेरी ही आँखों को बहाल
किया है।”
उसने जवाब दिया, “वह नबी है।”
18यहूदियों को यक़ीन नहीं आ रहा था कि
वह वाक़ई अंधा था और फिर बहाल हो गया
है। इसलिए उन्होंने उसके वालिदैन को बुलाया।
19उन्होंने उनसे पूछा, “क्या यह तुम्हारा बेटा है,
वही जिसके बारे में तुम कहते हो कि वह अंधा
पैदा हुआ था? अब यह किस तरह देख सकता
है?”
20उसके वालिदैन ने जवाब दिया, “हम जानते
हैं कि यह हमारा बेटा है और कि यह पैदा होते
वक़्त अंधा था। 21लेकिन हमें मालूम नहीं कि
अब यह किस तरह देख सकता है या कि किसने
इसकी आँखों को बहाल किया है। इससे ख़ुद पता
करें, यह बालिग़ है। यह ख़ुद अपने बारे में बता
सकता है।” 22उसके वालिदैन ने यह इसलिए
कहा कि वह यहूदियों से डरते थे। क्योंकि वह
फ़ैसला कर चुके थे कि जो भी ईसा को मसीह
क़रार दे उसे यहूदी जमात से निकाल दिया जाए।
23यही वजह थी कि उसके वालिदैन ने कहा था,
“यह बालिग़ है, इससे ख़ुद पूछ लें।”
24एक बार फिर उन्होंने शफ़ायाब अंधे को
बुलाया, “अल्लाह को जलाल दे, हम तो जानते
हैं कि यह आदमी गुनाहगार है।”
25आदमी ने जवाब दिया, “मुझे क्या पता है
कि वह गुनाहगार है या नहीं, लेकिन एक बात मैं
जानता हूँ, पहले मैं अंधा था, और अब मैं देख
सकता हूँ!”
26फिर उन्होंने उससे सवाल किया, “उसने तेरे
साथ क्या किया? उसने किस तरह तेरी आँखों
को बहाल कर दिया?”
27उसने जवाब दिया, “मैं पहले भी आपको
बता चुका हूँ और आपने सुना नहीं। क्या आप भी
उसके शागिर्द बनना चाहते हैं?”
28इस पर उन्होंने उसे बुरा-भला कहा, “तू ही
उसका शागिर्द है, हम तो मूसा के शागिर्द हैं।
29हम तो जानते हैं कि अल्लाह ने मूसा से बात की
है, लेकिन इसके बारे में हम यह भी नहीं जानते
कि वह कहाँ से आया है।”
30आदमी ने जवाब दिया, “अजीब बात है,
उसने मेरी आँखों को शफ़ा दी है और फिर भी
आप नहीं जानते कि वह कहाँ से है। 31हम जानते
हैं कि अल्लाह गुनाहगारों की नहीं सुनता। वह तो
उस की सुनता है जो उसका ख़ौफ़ मानता और
उस की मरज़ी के मुताबिक़ चलता है। 32इब्तिदा
ही से यह बात सुनने में नहीं आई कि किसी ने
पैदाइशी अंधे की आँखों को बहाल कर दिया हो।
33अगर यह आदमी अल्लाह की तरफ़ से न होता
तो कुछ न कर सकता।”
34जवाब में उन्होंने उसे बताया, “तू जो
गुनाहआलूदा हालत में पैदा हुआ है क्या तू हमारा
उस्ताद बनना चाहता है?” यह कहकर उन्होंने
उसे जमात में से निकाल दिया।

रूहानी अंधापन

35जब ईसा को पता चला कि उसे निकाल
दिया गया है तो वह उसको मिला और पूछा,
“क्या तू इब्ने-आदम पर ईमान रखता है?”
36उसने कहा, “ख़ुदावंद, वह कौन है? मुझे
बताएँ ताकि मैं उस पर ईमान लाऊँ।”
37ईसा ने जवाब दिया, “तूने उसे देख लिया है
बल्कि वह तुझसे बात कर रहा है।”
38उसने कहा, “ख़ुदावंद, मैं ईमान रखता हूँ”
और उसे सिजदा किया।
39ईसा ने कहा, “मैं अदालत करने के लिए
इस दुनिया में आया हूँ, इसलिए कि अंधे देखें
और देखनेवाले अंधे हो जाएँ।”
40कुछ फ़रीसी जो साथ खड़े थे यह कुछ
सुनकर पूछने लगे, “अच्छा, हम भी अंधे हैं?”
41ईसा ने उनसे कहा, “अगर तुम अंधे होते
तो तुम क़ुसूरवार न ठहरते। लेकिन अब चूँकि

तुम दावा करते हो कि हम देख सकते हैं इसलिए
तुम्हारा गुनाह क़ायम रहता है।

चरवाहे की तमसील

10 मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो
दरवाज़े से भेड़ों के बाड़े में दाख़िल
नहीं होता बल्कि फलाँगकर अंदर घुस आता
है वह चोर और डाकू है। 2लेकिन जो दरवाज़े
से दाख़िल होता है वह भेड़ों का चरवाहा है।
3चौकीदार उसके लिए दरवाज़ा खोल देता है और
भेड़ें उस की आवाज़ सुनती हैं। वह अपनी हर एक
भेड़ का नाम लेकर उन्हें बुलाता और बाहर ले
जाता है। 4अपने पूरे गल्ले को बाहर निकालने
के बाद वह उनके आगे आगे चलने लगता है
और भेड़ें उसके पीछे पीछे चल पड़ती हैं, क्योंकि
वह उस की आवाज़ पहचानती हैं। 5लेकिन वह
किसी अजनबी के पीछे नहीं चलेंगी बल्कि उससे
भाग जाएँगी, क्योंकि वह उस की आवाज़ नहीं
पहचानतीं।”
6ईसा ने उन्हें यह तमसील पेश की, लेकिन वह
न समझे कि वह उन्हें क्या बताना चाहता है।

अच्छा चरवाहा

7इसलिए ईसा दुबारा इस पर बात करने लगा,
“मैं तुमको सच बताता हूँ कि भेड़ों के लिए
दरवाज़ा मैं हूँ। 8जितने भी मुझसे पहले आए वह
चोर और डाकू हैं। लेकिन भेड़ों ने उनकी न सुनी।
9मैं ही दरवाज़ा हूँ। जो भी मेरे ज़रीए अंदर आए
उसे नजात मिलेगी। वह आता जाता और हरी
चरागाहें पाता रहेगा। 10चोर तो सिर्फ़ चोरी करने,
ज़बह करने और तबाह करने आता है। लेकिन
मैं इसलिए आया हूँ कि वह ज़िंदगी पाएँ, बल्कि
कसरत की ज़िंदगी पाएँ।
11अच्छा चरवाहा मैं हूँ। अच्छा चरवाहा अपनी
भेड़ों के लिए अपनी जान देता है। 12मज़दूर
चरवाहे का किरदार अदा नहीं करता, क्योंकि भेड़ें
उस की अपनी नहीं होतीं। इसलिए ज्योंही कोई
भेड़िया आता है तो मज़दूर उसे देखते ही भेड़ों
को छोड़कर भाग जाता है। नतीजे में भेड़िया कुछ
भेड़ें पकड़ लेता और बाक़ियों को मुंतशिर कर
देता है। 13वजह यह है कि वह मज़दूर ही है और
भेड़ों की फ़िकर नहीं करता। 14अच्छा चरवाहा
मैं हूँ। मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ और वह मुझे
जानती हैं, 15बिलकुल उसी तरह जिस तरह बाप
मुझे जानता है और मैं बाप को जानता हूँ। और मैं
भेड़ों के लिए अपनी जान देता हूँ। 16मेरी और भी
भेड़ें हैं जो इस बाड़े में नहीं हैं। लाज़िम है कि उन्हें
भी ले आऊँ। वह भी मेरी आवाज़ सुनेंगी। फिर
एक ही गल्ला और एक ही गल्लाबान होगा।
17मेरा बाप मुझे इसलिए प्यार करता है कि
मैं अपनी जान देता हूँ ताकि उसे फिर ले लूँ।
18कोई मेरी जान मुझसे छीन नहीं सकता बल्कि
मैं उसे अपनी मरज़ी से दे देता हूँ। मुझे उसे देने
का इख़्तियार है और उसे वापस लेने का भी। यह
हुक्म मुझे अपने बाप की तरफ़ से मिला है।”
19इन बातों पर यहूदियों में दुबारा फूट पड़ गई।
20बहुतों ने कहा, “यह बदरूह की गिरिफ़्त में है,
यह दीवाना है। इसकी क्यों सुनें!”
21लेकिन औरों ने कहा, “यह ऐसी बातें नहीं हैं
जो बदरूह-गिरिफ़्ता शख़्स कर सके। क्या बदरूहें
अंधों की आँखें बहाल कर सकती हैं?”

ईसा को रद्द किया जाता है

22सर्दियों का मौसम था और ईसा बैतुल-
मुक़द्दस की मख़सूसियत की ईद बनाम हनूका के
दौरान यरूशलम में था। 23वह बैतुल-मुक़द्दस के
उस बरामदे में फिर रहा था जिसका नाम सुलेमान
का बरामदा था। 24यहूदी उसे घेरकर कहने लगे,
“आप हमें कब तक उलझन में रखेंगे? अगर आप
मसीह हैं तो हमें साफ़ साफ़ बता दें।”
25ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुमको बता चुका
हूँ, लेकिन तुमको यक़ीन नहीं आया। जो काम
मैं अपने बाप के नाम से करता हूँ वह मेरे गवाह
हैं। 26लेकिन तुम ईमान नहीं रखते क्योंकि तुम
मेरी भेड़ें नहीं हो। 27मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती
हैं। मैं उन्हें जानता हूँ और वह मेरे पीछे चलती

हैं। 28मैं उन्हें अबदी ज़िंदगी देता हूँ, इसलिए वह कभी हलाक नहीं होंगी। कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा, 29क्योंकि मेरे बाप ने उन्हें मेरे सुपुर्द किया है और वही सबसे बड़ा है। कोई उन्हें बाप के हाथ से छीन नहीं सकता। 30मैं और बाप एक हैं।”

31यह सुनकर यहूदी दुबारा पत्थर उठाने लगे ताकि ईसा को संगसार करें। 32उसने उनसे कहा, “मैंने तुम्हें बाप की तरफ़ से कई इलाही निशान दिखाए हैं। तुम मुझे इनमें से किस निशान की वजह से संगसार कर रहे हो?”

33यहूदियों ने जवाब दिया, “हम तुमको किसी अच्छे काम की वजह से संगसार नहीं कर रहे बल्कि कुफ़्र बकने की वजह से। तुम जो सिर्फ़ इनसान हो अल्लाह होने का दावा करते हो।”

34ईसा ने कहा, “क्या यह तुम्हारी शरीअत में नहीं लिखा है कि अल्लाह ने फ़रमाया, ‘तुम ख़ुदा हो’? 35उन्हें ‘ख़ुदा’ कहा गया जिन तक अल्लाह का यह पैग़ाम पहुँचाया गया। और हम जानते हैं कि कलामे-मुक़द्दस को मनसूख़ नहीं किया जा सकता। 36तो फिर तुम कुफ़्र बकने की बात क्यों करते हो जब मैं कहता हूँ कि मैं अल्लाह का फ़रज़ंद हूँ? आख़िर बाप ने ख़ुद मुझे मख़सूस करके दुनिया में भेजा है। 37अगर मैं अपने बाप के काम न करूँ तो मेरी बात न मानो। 38लेकिन अगर उसके काम करूँ तो बेशक मेरी बात न मानो, लेकिन कम अज़ कम उन कामों की गवाही तो मानो। फिर तुम जान लोगे और समझ जाओगे कि बाप मुझमें है और मैं बाप में हूँ।”

39एक बार फिर उन्होंने उसे गिरिफ़्तार करने की कोशिश की, लेकिन वह उनके हाथ से निकल गया।

40फिर ईसा दुबारा दरियाए-यरदन के पार उस जगह चला गया जहाँ यहया शुरू में बपतिस्मा दिया करता था। वहाँ वह कुछ देर ठहरा। 41बहुत-से लोग उसके पास आते रहे। उन्होंने कहा, “यहया ने कभी कोई इलाही निशान न दिखाया, लेकिन जो कुछ उसने इसके बारे में बयान किया, वह बिलकुल सहीह निकला।” 42और वहाँ बहुत-से लोग ईसा पर ईमान लाए।

लाज़र की मौत

11 उन दिनों में एक आदमी बीमार पड़ गया जिसका नाम लाज़र था। वह अपनी बहनों मरियम और मर्था के साथ बैत-अनियाह में रहता था। 2यह वही मरियम थी जिसने बाद में ख़ुदावंद पर ख़ुशबू उंडेलकर उसके पाँव अपने बालों से ख़ुश्क किए थे। उसी का भाई लाज़र बीमार था। 3चुनाँचे बहनों ने ईसा को इत्तला दी, “ख़ुदावंद, जिसे आप प्यार करते हैं वह बीमार है।”

4जब ईसा को यह ख़बर मिली तो उसने कहा, “इस बीमारी का अंजाम मौत नहीं है, बल्कि यह अल्लाह के जलाल के वास्ते हुआ है, ताकि इससे अल्लाह के फ़रज़ंद को जलाल मिले।”

5ईसा मर्था, मरियम और लाज़र से मुहब्बत रखता था। 6तो भी वह लाज़र के बारे में इत्तला मिलने के बाद दो दिन और वहीं ठहरा। 7फिर उसने अपने शागिर्दों से बात की, “आओ, हम दुबारा यहूदिया चले जाएँ।”

8शागिर्दों ने एतराज़ किया, “उस्ताद, अभी अभी वहाँ के यहूदी आपको संगसार करने की कोशिश कर रहे थे, फिर भी आप वापस जाना चाहते हैं?”

9ईसा ने जवाब दिया, “क्या दिन में रौशनी के बारह घंटे नहीं होते? जो शख़्स दिन के वक़्त चलता-फिरता है वह किसी भी चीज़ से नहीं टकराएगा, क्योंकि वह इस दुनिया की रौशनी के ज़रीए देख सकता है। 10लेकिन जो रात के वक़्त चलता है वह चीज़ों से टकरा जाता है, क्योंकि उसके पास रौशनी नहीं है।” 11फिर उसने कहा, “हमारा दोस्त लाज़र सो गया है। लेकिन मैं जाकर उसे जगा दूँगा।”

12शागिर्दों ने कहा, “ख़ुदावंद, अगर वह सो रहा है तो वह बच जाएगा।”

13उनका ख़याल था कि ईसा लाज़र की फ़ितरी
नींद का ज़िक्र कर रहा है जबकि हक़ीक़त में
वह उस की मौत की तरफ़ इशारा कर रहा था।
14इसलिए उसने उन्हें साफ़ बता दिया, “लाज़र
वफ़ात पा गया है। 15और तुम्हारी ख़ातिर मैं ख़ुश
हूँ कि मैं उसके मरते वक़्त वहाँ नहीं था, क्योंकि
अब तुम ईमान लाओगे। आओ, हम उसके पास
जाएँ।”
16तोमा ने जिसका लक़ब जुड़वाँ था अपने
साथी शागिर्दों से कहा, “चलो, हम भी वहाँ
जाकर उसके साथ मर जाएँ।”

ईसा क़ियामत और ज़िंदगी है

17वहाँ पहुँचकर ईसा को मालूम हुआ कि
लाज़र को क़ब्र में रखे चार दिन हो गए हैं।
18बैत-अनियाह का यरूशलम से फ़ासला तीन
किलोमीटर से कम था, 19और बहुत-से यहूदी
मर्था और मरियम को उनके भाई के बारे में
तसल्ली देने के लिए आए हुए थे।
20यह सुनकर कि ईसा आ रहा है मर्था उसे
मिलने गई। लेकिन मरियम घर में बैठी रही।
21मर्था ने कहा, “ख़ुदावंद, अगर आप यहाँ होते
तो मेरा भाई न मरता। 22लेकिन मैं जानती हूँ कि
अब भी अल्लाह आपको जो भी माँगेंगे देगा।”
23ईसा ने उसे बताया, “तेरा भाई जी उठेगा।”
24मर्था ने जवाब दिया, “जी, मुझे मालूम है
कि वह क़ियामत के दिन जी उठेगा, जब सब जी
उठेंगे।”
25ईसा ने उसे बताया, “क़ियामत और ज़िंदगी
तो मैं हूँ। जो मुझ पर ईमान रखे वह ज़िंदा रहेगा,
चाहे वह मर भी जाए। 26और जो ज़िंदा है और
मुझ पर ईमान रखता है वह कभी नहीं मरेगा।
मर्था, क्या तुझे इस बात का यक़ीन है?”
27मर्था ने जवाब दिया, “जी ख़ुदावंद, मैं ईमान
रखती हूँ कि आप ख़ुदा के फ़रज़ंद मसीह हैं, जिसे
दुनिया में आना था।”

ईसा रोता है

28यह कहकर मर्था वापस चली गई और चुपके
से मरियम को बुलाया, “उस्ताद आ गए हैं, वह
तुझे बुला रहे हैं।” 29यह सुनते ही मरियम उठकर
ईसा के पास गई। 30वह अभी गाँव के बाहर उसी
जगह ठहरा था जहाँ उस की मुलाक़ात मर्था से
हुई थी। 31जो यहूदी घर में मरियम के साथ बैठे
उसे तसल्ली दे रहे थे, जब उन्होंने देखा कि वह
जल्दी से उठकर निकल गई है तो वह उसके पीछे
हो लिए। क्योंकि वह समझ रहे थे कि वह मातम
करने के लिए अपने भाई की क़ब्र पर जा रही है।
32मरियम ईसा के पास पहुँच गई। उसे देखते
ही वह उसके पाँवों में गिर गई और कहने लगी,
“ख़ुदावंद, अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न
मरता।”
33जब ईसा ने मरियम और उसके साथियों को
रोते देखा तो उसे बड़ी रंजिश हुई। मुज़तरिब हालत
में 34उसने पूछा, “तुमने उसे कहाँ रखा है?”
उन्होंने जवाब दिया, “आएँ ख़ुदावंद, और देख
लें।”
35ईसा रो पड़ा। 36यहूदियों ने कहा, “देखो,
वह उसे कितना अज़ीज़ था।”
37लेकिन उनमें से बाज़ ने कहा, “इस आदमी
ने अंधे को शफ़ा दी। क्या यह लाज़र को मरने से
नहीं बचा सकता था?”

लाज़र को ज़िंदा कर दिया जाता है

38फिर ईसा दुबारा निहायत रंजीदा होकर क़ब्र
पर आया। क़ब्र एक ग़ार थी जिसके मुँह पर पत्थर
रखा गया था। 39ईसा ने कहा, “पत्थर को हटा
दो।”
लेकिन मरहूम की बहन मर्था ने एतराज़ किया,
“ख़ुदावंद, बदबू आएगी, क्योंकि उसे यहाँ पड़े
चार दिन हो गए हैं।”
40ईसा ने उससे कहा, “क्या मैंने तुझे नहीं
बताया कि अगर तू ईमान रखे तो अल्लाह का
जलाल देखेगी?” 41चुनाँचे उन्होंने पत्थर को हटा
दिया। फिर ईसा ने अपनी नज़र उठाकर कहा, “ऐ

बाप, मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि तूने मेरी सुन ली
है। 42मैं तो जानता हूँ कि तू हमेशा मेरी सुनता है।
लेकिन मैंने यह बात पास खड़े लोगों की ख़ातिर
की, ताकि वह ईमान लाएँ कि तूने मुझे भेजा है।”
43फिर ईसा ज़ोर से पुकार उठा, “लाज़र, निकल
आ!” 44और मुरदा निकल आया। अभी तक
उसके हाथ और पाँव पट्टियों से बँधे हुए थे जबकि
उसका चेहरा कपड़े में लिपटा हुआ था। ईसा ने
उनसे कहा, “इसके कफ़न को खोलकर इसे जाने
दो।”

ईसा के ख़िलाफ़ मनसूबाबंदी

45उन यहूदियों में से जो मरियम के पास आए
थे बहुत-से ईसा पर ईमान लाए जब उन्होंने वह
देखा जो उसने किया। 46लेकिन बाज़ फ़रीसियों
के पास गए और उन्हें बताया कि ईसा ने क्या
किया है। 47तब राहनुमा इमामों और फ़रीसियों ने
यहूदी अदालते-आलिया का इजलास मुनअक़िद
किया। उन्होंने एक दूसरे से पूछा, “हम क्या
कर रहे हैं? यह आदमी बहुत-से इलाही निशान
दिखा रहा है। 48अगर हम उसे खुला छोड़ें तो
आख़िरकार सब उस पर ईमान ले आएँगे। फिर
रोमी आकर हमारे बैतुल-मुक़द्दस और हमारे मुल्क
को तबाह कर देंगे।”

49उनमें से एक कायफ़ा था जो उस साल
इमामे-आज़म था। उसने कहा, “आप कुछ नहीं
समझते 50और इसका ख़याल भी नहीं करते कि
इससे पहले कि पूरी क़ौम हलाक हो जाए बेहतर
यह है कि एक आदमी उम्मत के लिए मर जाए।”
51उसने यह बात अपनी तरफ़ से नहीं की थी।
उस साल के इमामे-आज़म की हैसियत से ही
उसने यह पेशगोई की कि ईसा यहूदी क़ौम के
लिए मरेगा। 52और न सिर्फ़ इसके लिए बल्कि
अल्लाह के बिखरे हुए फ़रज़ंदों को जमा करके
एक करने के लिए भी।

53उस दिन से उन्होंने ईसा को क़त्ल करने
का इरादा कर लिया। 54इसलिए उसने अब से
अलानिया यहूदियों के दरमियान वक़्त न गुज़ारा,
बल्कि उस जगह को छोड़कर रेगिस्तान के क़रीब
एक इलाक़े में गया। वहाँ वह अपने शागिर्दों समेत
एक गाँव बनाम इफ़राईम में रहने लगा।

55फिर यहूदियों की ईदे-फ़सह क़रीब आ गई।
देहात से बहुत-से लोग अपने आपको पाक
करवाने के लिए ईद से पहले पहले यरूशलम
पहुँचे। 56वहाँ वह ईसा का पता करते और बैतुल-
मुक़द्दस में खड़े आपस में बात करते रहे, “क्या
ख़याल है? क्या वह तहवार पर नहीं आएगा?”
57लेकिन राहनुमा इमामों और फ़रीसियों ने हुक्म
दिया था, “अगर किसी को मालूम हो जाए कि
ईसा कहाँ है तो वह इत्तला दे ताकि हम उसे
गिरिफ़्तार कर लें।”

ईसा को बैत-अनियाह में मसह किया जाता है

12 फ़सह की ईद में अभी छः दिन बाक़ी
थे कि ईसा बैत-अनियाह पहुँचा। यह
वह जगह थी जहाँ उस लाज़र का घर था जिसे
ईसा ने मुरदों में से ज़िंदा किया था। 2वहाँ
उसके लिए एक ख़ास खाना बनाया गया। मर्था
खानेवालों की ख़िदमत कर रही थी जबकि लाज़र
ईसा और बाक़ी मेहमानों के साथ खाने में शरीक
था। 3फिर मरियम ने आधा लिटर ख़ालिस
जटामासी का निहायत क़ीमती इत्र लेकर ईसा
के पाँवों पर उंडेल दिया और उन्हें अपने बालों से
पोंछकर ख़ुश्क किया। ख़ुशबू पूरे घर में फैल गई।
4लेकिन ईसा के शागिर्द यहूदाह इस्करियोती ने
एतराज़ किया (बाद में उसी ने ईसा को दुश्मन
के हवाले कर दिया)। उसने कहा, 5“इस इत्र
की क़ीमत चाँदी के 300 सिक्के थी। इसे क्यों
नहीं बेचा गया ताकि इसके पैसे ग़रीबों को दिए
जाते?” 6उसने यह बात इसलिए नहीं की कि
उसे ग़रीबों की फ़िकर थी। असल में वह चोर था।
वह शागिर्दों का ख़ज़ानची था और जमाशुदा पैसों
में से बददियानती करता रहता था।

7लेकिन ईसा ने कहा, “उसे छोड़ दे! उसने
मेरी तदफ़ीन की तैयारी के लिए यह किया है।

8ग़रीब तो हमेशा तुम्हारे पास रहेंगे, लेकिन मैं
हमेशा तुम्हारे पास नहीं रहूँगा।”

लाज़र के ख़िलाफ़ मनसूबाबंदी

9इतने में यहूदियों की बड़ी तादाद को मालूम
हुआ कि ईसा वहाँ है। वह न सिर्फ़ ईसा से मिलने
के लिए आए बल्कि लाज़र से भी जिसे उसने
मुरदों में से ज़िंदा किया था। 10इसलिए राहनुमा
इमामों ने लाज़र को भी क़त्ल करने का मनसूबा
बनाया। 11क्योंकि उस की वजह से बहुत-से
यहूदी उनमें से चले गए और ईसा पर ईमान ले
आए थे।

यरूशलम में ईसा का पुरजोश इस्तक़बाल

12अगले दिन ईद के लिए आए हुए लोगों को
पता चला कि ईसा यरूशलम आ रहा है। एक
बड़ा हुजूम 13खजूर की डालियाँ पकड़े शहर से
निकलकर उससे मिलने आया। चलते चलते वह
चिल्लाकर नारे लगा रहे थे,

“होशाना![a]
मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है!
इसराईल का बादशाह मुबारक है!”

14ईसा को कहीं से एक जवान गधा मिल गया
और वह उस पर बैठ गया, जिस तरह कलामे-
मुक़द्दस में लिखा है,

15“ऐ सिय्यून बेटी, मत डर!
देख, तेरा बादशाह
गधे के बच्चे पर सवार आ रहा है।”

16उस वक़्त उसके शागिर्दों को इस बात की
समझ न आई। लेकिन बाद में जब ईसा अपने
जलाल को पहुँचा तो उन्हें याद आया कि लोगों
ने उसके साथ यह कुछ किया था और वह समझ
गए कि कलामे-मुक़द्दस में इसका ज़िक्र भी है।
17जो हुजूम उस वक़्त ईसा के साथ था जब
उसने लाज़र को मुरदों में से ज़िंदा किया था, वह
दूसरों को इसके बारे में बताता रहा था। 18इसी
वजह से इतने लोग ईसा से मिलने के लिए आए
थे, उन्होंने उसके इस इलाही निशान के बारे में
सुना था। 19यह देखकर फ़रीसी आपस में कहने
लगे, “आप देख रहे हैं कि बात नहीं बन रही।
देखो, तमाम दुनिया उसके पीछे हो ली है।”

कुछ यूनानी ईसा को तलाश करते हैं

20कुछ यूनानी भी उनमें थे जो फ़सह की ईद
के मौक़े पर परस्तिश करने के लिए आए हुए थे।
21अब वह फ़िलिप्पुस से मिलने आए जो गलील
के बैत-सैदा से था। उन्होंने कहा, “जनाब, हम
ईसा से मिलना चाहते हैं।”

22फ़िलिप्पुस ने अंदरियास को यह बात बताई
और फिर वह मिलकर ईसा के पास गए और उसे
यह ख़बर पहुँचाई। 23लेकिन ईसा ने जवाब दिया,
“अब वक़्त आ गया है कि इब्ने-आदम को जलाल
मिले। 24मैं तुमको सच बताता हूँ कि जब तक
गंदुम का दाना ज़मीन में गिरकर मर न जाए वह
अकेला ही रहता है। लेकिन जब वह मर जाता है
तो बहुत-सा फल लाता है। 25जो अपनी जान
को प्यार करता है वह उसे खो देगा, और जो
इस दुनिया में अपनी जान से दुश्मनी रखता है
वह उसे अबद तक महफ़ूज़ रखेगा। 26अगर कोई
मेरी ख़िदमत करना चाहे तो वह मेरे पीछे हो ले,
क्योंकि जहाँ मैं हूँ वहाँ मेरा ख़ादिम भी होगा। और
जो मेरी ख़िदमत करे मेरा बाप उस की इज़्ज़त
करेगा।

ईसा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

27अब मेरा दिल मुज़तरिब है। मैं क्या कहूँ?
क्या मैं कहूँ, ‘ऐ बाप, मुझे इस वक़्त से बचाए
रख’? नहीं, मैं तो इसी लिए आया हूँ। 28ऐ बाप,
अपने नाम को जलाल दे।”

तब आसमान से एक आवाज़ सुनाई दी, “मैं
उसे जलाल दे चुका हूँ और दुबारा भी जलाल
दूँगा।”

[a]होशाना (इबरानी : मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ इसमें हम्दो-सना का उनसुर भी पाया जाता है।

29हुजूम के जो लोग वहाँ खड़े थे उन्होंने
यह सुनकर कहा, “बादल गरज रहे हैं।” औरों
ने ख़याल पेश किया, “कोई फ़रिश्ता उससे
हमकलाम हुआ है।”
30ईसा ने उन्हें बताया, “यह आवाज़ मेरे वास्ते
नहीं बल्कि तुम्हारे वास्ते थी। 31अब दुनिया की
अदालत करने का वक़्त आ गया है, अब दुनिया
के हुक्मरान को निकाल दिया जाएगा। 32और
मैं ख़ुद ज़मीन से ऊँचे पर चढ़ाए जाने के बाद
सबको अपने पास खींच लूँगा।” 33इन अलफ़ाज़
से उसने इस तरफ़ इशारा किया कि वह किस
तरह की मौत मरेगा।
34हुजूम बोल उठा, “कलामे-मुक़द्दस से हमने
सुना है कि मसीह अबद तक क़ायम रहेगा। तो
फिर आपकी यह कैसी बात है कि इब्ने-आदम को
ऊँचे पर चढ़ाया जाना है? आख़िर इब्ने-आदम है
कौन?”
35ईसा ने जवाब दिया, “नूर थोड़ी देर और
तुम्हारे पास रहेगा। जितनी देर वह मौजूद है इस
नूर में चलते रहो ताकि तारीकी तुम पर छा न
जाए। जो अंधेरे में चलता है उसे नहीं मालूम कि
वह कहाँ जा रहा है। 36नूर के तुम्हारे पास से चले
जाने से पहले पहले उस पर ईमान लाओ ताकि
तुम नूर के फ़रज़ंद बन जाओ।”

लोग ईमान नहीं रखते

यह कहने के बाद ईसा चला गया और ग़ायब हो
गया। 37अगरचे ईसा ने यह तमाम इलाही निशान
उनके सामने ही दिखाए तो भी वह उस पर ईमान
न लाए। 38यों यसायाह नबी की पेशगोई पूरी हुई,

“ऐ रब, कौन हमारे पैग़ाम पर ईमान लाया?
और रब की क़ुदरत किस पर ज़ाहिर हुई?”

39चुनाँचे वह ईमान न ला सके, जिस तरह
यसायाह नबी ने कहीं और फ़रमाया है,

40“अल्लाह ने उनकी आँखों को अंधा
और उनके दिल को बेहिस कर दिया है,
ऐसा न हो कि वह अपनी आँखों से देखें,
अपने दिल से समझें,
मेरी तरफ़ रुजू करें
और मैं उन्हें शफ़ा दूँ।”

41यसायाह ने यह इसलिए फ़रमाया क्यों-
कि उसने ईसा का जलाल देखकर उसके बारे में
बात की।
42तो भी बहुत-से लोग ईसा पर ईमान रखते
थे। उनमें कुछ राहनुमा भी शामिल थे। लेकिन वह
इसका अलानिया इक़रार नहीं करते थे, क्योंकि
वह डरते थे कि फ़रीसी हमें यहूदी जमात से
ख़ारिज कर देंगे। 43असल में वह अल्लाह की
इज़्ज़त की निसबत इनसान की इज़्ज़त को ज़्यादा
अज़ीज़ रखते थे।

ईसा का कलाम लोगों की अदालत करेगा

44फिर ईसा पुकार उठा, “जो मुझ पर ईमान
रखता है वह न सिर्फ़ मुझ पर बल्कि उस पर ईमान
रखता है जिसने मुझे भेजा है। 45और जो मुझे
देखता है वह उसे देखता है जिसने मुझे भेजा है।
46मैं नूर की हैसियत से इस दुनिया में आया हूँ
ताकि जो भी मुझ पर ईमान लाए वह तारीकी में
न रहे। 47जो मेरी बातें सुनकर उन पर अमल नहीं
करता मैं उस की अदालत नहीं करूँगा, क्योंकि
मैं दुनिया की अदालत करने के लिए नहीं आया
बल्कि उसे नजात देने के लिए। 48तो भी एक
है जो उस की अदालत करता है। जो मुझे रद्द
करके मेरी बातें क़बूल नहीं करता मेरा पेश किया
गया कलाम ही क़ियामत के दिन उस की अदालत
करेगा। 49क्योंकि जो कुछ मैंने बयान किया है वह
मेरी तरफ़ से नहीं है। मेरे भेजनेवाले बाप ही ने
मुझे हुक्म दिया कि क्या कहना और क्या सुनाना
है। 50और मैं जानता हूँ कि उसका हुक्म अबदी
ज़िंदगी तक पहुँचाता है। चुनाँचे जो कुछ मैं सुनाता
हूँ वही कुछ है जो बाप ने मुझे बताया है।”

ईसा अपने शागिर्दों के पाँव धोता है

13 फ़सह की ईद अब शुरू होनेवाली थी।
ईसा जानता था कि वह वक़्त आ गया
है कि मुझे इस दुनिया को छोड़कर बाप के पास

जाना है। गो उसने हमेशा दुनिया में अपने लोगों से
मुहब्बत रखी थी, लेकिन अब उसने आख़िरी हद
तक उन पर अपनी मुहब्बत का इज़हार किया।
2फिर शाम का खाना तैयार हुआ। उस वक़्त
इबलीस शमाऊन इस्करियोती के बेटे यहूदाह के
दिल में ईसा को दुश्मन के हवाले करने का इरादा
डाल चुका था। 3ईसा जानता था कि बाप ने सब
कुछ मेरे सुपुर्द कर दिया है और कि मैं अल्लाह में
से निकल आया और अब उसके पास वापस जा
रहा हूँ। 4चुनाँचे उसने दस्तरख़ान से उठकर अपना
लिबास उतार दिया और कमर पर तौलिया बाँध
लिया। 5फिर वह बासन में पानी डालकर शागिर्दों
के पाँव धोने और बँधे हुए तौलिये से पोंछकर
ख़ुश्क करने लगा। 6जब पतरस की बारी आई
तो उसने कहा, "ख़ुदावंद, आप मेरे पाँव धोना
चाहते हैं?"
7ईसा ने जवाब दिया, "इस वक़्त तू नहीं
समझता कि मैं क्या कर रहा हूँ, लेकिन बाद में
यह तेरी समझ में आ जाएगा।"
8पतरस ने एतराज़ किया, "मैं कभी भी
आपको मेरे पाँव धोने नहीं दूँगा!"
ईसा ने जवाब दिया, "अगर मैं तुझे न धोऊँ तो
मेरे साथ तेरा कोई हिस्सा नहीं होगा।"
9यह सुनकर पतरस ने कहा, "तो फिर
ख़ुदावंद, न सिर्फ़ मेरे पाँवों बल्कि मेरे हाथों और
सर को भी धोएँ!"
10ईसा ने जवाब दिया, "जिस शख़्स ने नहा
लिया है उसे सिर्फ़ अपने पाँवों को धोने की ज़रूरत
होती है, क्योंकि वह पूरे तौर पर पाक-साफ़ है।
तुम पाक-साफ़ हो, लेकिन सबके सब नहीं।"
11(ईसा को मालूम था कि कौन उसे दुश्मन के
हवाले करेगा। इसलिए उसने कहा कि सबके सब
पाक-साफ़ नहीं हैं।)
12उन सबके पाँव धोने के बाद ईसा दुबारा
अपना लिबास पहनकर बैठ गया। उसने सवाल
किया, "क्या तुम समझते हो कि मैंने तुम्हारे
लिए क्या किया है? 13तुम मुझे 'उस्ताद' और
'ख़ुदावंद' कहकर मुख़ातिब करते हो और यह
सहीह है, क्योंकि मैं यही कुछ हूँ। 14मैं, तुम्हारे
ख़ुदावंद और उस्ताद ने तुम्हारे पाँव धोए। इसलिए
अब तुम्हारा फ़र्ज़ भी है कि एक दूसरे के पाँव धोया
करो। 15मैंने तुमको एक नमूना दिया है ताकि तुम
भी वही करो जो मैंने तुम्हारे साथ किया है। 16मैं
तुमको सच बताता हूँ कि ग़ुलाम अपने मालिक
से बड़ा नहीं होता, न पैग़ंबर अपने भेजनेवाले से।
17अगर तुम यह जानते हो तो इस पर अमल भी
करो, फिर ही तुम मुबारक होगे।
18मैं तुम सबकी बात नहीं कर रहा। जिन्हें मैंने
चुन लिया है उन्हें मैं जानता हूँ। लेकिन कलामे-
मुक़द्दस की उस बात का पूरा होना ज़रूर है, 'जो
मेरी रोटी खाता है उसने मुझ पर लात उठाई है।'
19मैं तुमको इससे पहले कि वह पेश आए यह
अभी बता रहा हूँ, ताकि जब वह पेश आए तो
तुम ईमान लाओ कि मैं वही हूँ। 20मैं तुमको सच
बताता हूँ कि जो शख़्स उसे क़बूल करता है जिसे
मैंने भेजा है वह मुझे क़बूल करता है। और जो मुझे
क़बूल करता है वह उसे क़बूल करता है जिसने
मुझे भेजा है।"

ईसा को दुश्मन के हवाले किया जाता है

21इन अलफ़ाज़ के बाद ईसा निहायत
मुज़तरिब हुआ और कहा, "मैं तुमको सच बताता
हूँ कि तुममें से एक मुझे दुश्मन के हवाले कर
देगा।"
22शागिर्द उलझन में एक दूसरे को देखकर
सोचने लगे कि ईसा किसकी बात कर रहा है।
23एक शागिर्द जिसे ईसा प्यार करता था उसके
क़रीबतरीन बैठा था। 24पतरस ने उसे इशारा
किया कि वह उससे दरियाफ़्त करे कि वह
किसकी बात कर रहा है।
25उस शागिर्द ने ईसा की तरफ़ सर झुकाकर
पूछा, "ख़ुदावंद, यह कौन है?"
26ईसा ने जवाब दिया, "जिसे मैं रोटी का
लुक़्मा शोर्ब में डुबोकर दूँ, वही है।" फिर लुक़्मे
को डुबोकर उसने शमाऊन इस्करियोती के बेटे
यहूदाह को दे दिया। 27ज्योंही यहूदाह ने यह

लुक़मा ले लिया इबलीस उसमें समा गया। ईसा ने
उसे बताया, “जो कुछ करना है वह जल्दी से कर
ले।” 28लेकिन मेज़ पर बैठे लोगों में से किसी
को मालूम न हुआ कि ईसा ने यह क्यों कहा।
29बाज़ का ख़याल था कि चूँकि यहूदाह ख़ज़ानची
था इसलिए वह उसे बता रहा है कि ईद के लिए
दरकार चीज़ें ख़रीद ले या ग़रीबों में कुछ तक़सीम
कर दे।

30चुनाँचे ईसा से यह लुक़मा लेते ही यहूदाह
बाहर निकल गया। रात का वक़्त था।

ईसा का नया हुक्म

31यहूदाह के चले जाने के बाद ईसा ने कहा,
“अब इब्ने-आदम ने जलाल पाया और अल्लाह
ने उसमें जलाल पाया है। 32हाँ, चूँकि अल्लाह को
उसमें जलाल मिल गया है इसलिए अल्लाह अपने
में फ़रज़ंद को जलाल देगा। और वह यह जलाल
फ़ौरन देगा। 33मेरे बच्चो, मैं थोड़ी देर और तुम्हारे
पास ठहरूँगा। तुम मुझे तलाश करोगे, और जो
कुछ मैं यहूदियों को बता चुका हूँ वह अब तुमको
भी बताता हूँ, जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं
आ सकते। 34मैं तुमको एक नया हुक्म देता हूँ,
यह कि एक दूसरे से मुहब्बत रखो। जिस तरह मैंने
तुमसे मुहब्बत रखी उसी तरह तुम भी एक दूसरे से
मुहब्बत करो। 35अगर तुम एक दूसरे से मुहब्बत
रखोगे तो सब जान लेंगे कि तुम मेरे शागिर्द हो।”

पतरस के इनकार की पेशगोई

36पतरस ने पूछा, “ख़ुदावंद, आप कहाँ जा रहे
हैं?”

ईसा ने जवाब दिया, “जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ
तू मेरे पीछे नहीं आ सकता। लेकिन बाद में तू मेरे
पीछे आ जाएगा।”

37पतरस ने सवाल किया, “ख़ुदावंद, मैं
आपके पीछे अभी क्यों नहीं जा सकता? मैं
आपके लिए अपनी जान तक देने को तैयार हूँ।”

38लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “तू मेरे लिए
अपनी जान देना चाहता है? मैं तुझे सच बताता
हूँ कि मुरग़ के बाँग देने से पहले पहले तू तीन
मरतबा मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।

ईसा बाप के पास जाने की राह है

14 तुम्हारा दिल न घबराए। तुम अल्लाह
पर ईमान रखते हो, मुझ पर भी ईमान
रखो। 2मेरे बाप के घर में बेशुमार मकान हैं। अगर
ऐसा न होता तो क्या मैं तुमको बताता कि मैं
तुम्हारे लिए जगह तैयार करने के लिए वहाँ जा
रहा हूँ? 3और अगर मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह
तैयार करूँ तो वापस आकर तुमको अपने साथ ले
जाऊँगा ताकि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम भी हो। 4और
जहाँ मैं जा रहा हूँ उस की राह तुम जानते हो।”

5तोमा बोल उठा, “ख़ुदावंद, हमें मालूम नहीं
कि आप कहाँ जा रहे हैं। तो फिर हम उस की राह
किस तरह जानें?”

6ईसा ने जवाब दिया, “राह और हक़ और
ज़िंदगी मैं हूँ। कोई मेरे वसीले के बग़ैर बाप के पास
नहीं आ सकता। 7अगर तुमने मुझे जान लिया है
तो इसका मतलब है कि तुम मेरे बाप को भी जान
लोगे। और अब से ऐसा है भी। तुम उसे जानते हो
और तुमने उसको देख लिया है।”

8फ़िलिप्पुस ने कहा, “ऐ ख़ुदावंद, बाप को हमें
दिखाएँ। बस यही हमारे लिए काफ़ी है।”

9ईसा ने जवाब दिया, “फ़िलिप्पुस, मैं इतनी
देर से तुम्हारे साथ हूँ, क्या इसके बावुजूद तू मुझे
नहीं जानता? जिसने मुझे देखा उसने बाप को
देखा है। तो फिर तू क्योंकर कहता है, ‘बाप को
हमें दिखाएँ’? 10क्या तू ईमान नहीं रखता कि मैं
बाप में हूँ और बाप मुझमें है? जो बातें में तुमको
बताता हूँ वह मेरी नहीं बल्कि मुझमें रहनेवाले
बाप की तरफ़ से हैं। वही अपना काम कर रहा
है। 11मेरी बात का यक़ीन करो कि मैं बाप में हूँ
और बाप मुझमें है। या कम अज़ कम उन कामों
की बिना पर यक़ीन करो जो मैंने किए हैं। 12मैं
तुमको सच बताता हूँ कि जो मुझ पर ईमान रखे
वह वही कुछ करेगा जो मैं करता हूँ। न सिर्फ़ यह
बल्कि वह इनसे भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं

बाप के पास जा रहा हूँ। 13और जो कुछ तुम मेरे नाम में माँगो मैं दूँगा ताकि बाप को फ़रज़ंद में जलाल मिल जाए। 14जो कुछ तुम मेरे नाम में मुझसे चाहो वह मैं करूँगा।

रूहुल-क़ुद्स देने का वादा

15अगर तुम मुझे प्यार करते हो तो मेरे अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारोगे। 16और मैं बाप से गुज़ारिश करूँगा तो वह तुमको एक और मददगार देगा जो अबद तक तुम्हारे साथ रहेगा 17यानी सच्चाई का रूह, जिसे दुनिया पा नहीं सकती, क्योंकि वह न तो उसे देखती न जानती है। लेकिन तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है और आइंदा तुम्हारे अंदर रहेगा।

18मैं तुमको यतीम छोड़कर नहीं जाऊँगा बल्कि तुम्हारे पास वापस आऊँगा। 19थोड़ी देर के बाद दुनिया मुझे नहीं देखेगी, लेकिन तुम मुझे देखते रहोगे। चूँकि मैं ज़िंदा हूँ इसलिए तुम भी ज़िंदा रहोगे। 20जब वह दिन आएगा तो तुम जान लोगे कि मैं अपने बाप में हूँ, तुम मुझमें हो और मैं तुममें।

21जिसके पास मेरे अहकाम हैं और जो उनके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारता है, वही मुझे प्यार करता है। और जो मुझे प्यार करता है उसे मेरा बाप प्यार करेगा। मैं भी उसे प्यार करूँगा और अपने आपको उस पर ज़ाहिर करूँगा।"

22यहूदाह (यहूदाह इस्करियोती नहीं) ने पूछा, "ख़ुदावंद, क्या वजह है कि आप अपने आपको सिर्फ़ हम पर ज़ाहिर करेंगे और दुनिया पर नहीं?"

23ईसा ने जवाब दिया, "अगर कोई मुझे प्यार करे तो वह मेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारेगा। मेरा बाप ऐसे शख़्स को प्यार करेगा और हम उसके पास आकर उसके साथ सुकूनत करेंगे। 24जो मुझसे मुहब्बत नहीं करता वह मेरी बातों के मुताबिक़ ज़िंदगी नहीं गुज़ारता। और जो कलाम तुम मुझसे सुनते हो वह मेरा अपना कलाम नहीं है बल्कि बाप का है जिसने मुझे भेजा है।

25यह सब कुछ मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए तुमको बताया है। 26लेकिन बाद में रूहुल-क़ुद्स, जिसे बाप मेरे नाम से भेजेगा तुमको सब कुछ सिखाएगा। यह मददगार तुमको हर बात की याद दिलाएगा जो मैंने तुमको बताई है।

27मैं तुम्हारे पास सलामती छोड़े जाता हूँ, अपनी ही सलामती तुमको दे देता हूँ। और मैं इसे यों नहीं देता जिस तरह दुनिया देती है। तुम्हारा दिल न घबराए और न डरे। 28तुमने मुझसे सुन लिया है कि 'मैं जा रहा हूँ और तुम्हारे पास वापस आऊँगा।' अगर तुम मुझसे मुहब्बत रखते तो तुम इस बात पर ख़ुश होते कि मैं बाप के पास जा रहा हूँ, क्योंकि बाप मुझसे बड़ा है। 29मैंने तुमको पहले से बता दिया है, इससे पेशतर कि यह हो, ताकि जब पेश आए तो तुम ईमान लाओ। 30अब से मैं तुमसे ज़्यादा बातें नहीं करूँगा, क्योंकि इस दुनिया का हुक्मरान आ रहा है। उसे मुझ पर कोई क़ाबू नहीं है, 31लेकिन दुनिया यह जान ले कि मैं बाप को प्यार करता हूँ और वही कुछ करता हूँ जिसका हुक्म वह मुझे देता है।

अब उठो, हम यहाँ से चलें।

ईसा अंगूर की हक़ीक़ी बेल है

15 मैं अंगूर की हक़ीक़ी बेल हूँ और मेरा बाप माली है। 2वह मेरी हर शाख़ को जो फल नहीं लाती काटकर फेंक देता है। लेकिन जो शाख़ फल लाती है उस की वह काँट-छाँट करता है ताकि ज़्यादा फल लाए। 3उस कलाम के ज़रीए जो मैंने तुमको सुनाया है तुम तो पाक-साफ़ हो चुके हो। 4मुझमें क़ायम रहो तो मैं भी तुममें क़ायम रहूँगा। जो शाख़ बेल से कट गई है वह फल नहीं ला सकती। बिलकुल इसी तरह तुम भी अगर तुम मुझमें क़ायम नहीं रहते फल नहीं ला सकते।

5मैं ही अंगूर की बेल हूँ, और तुम उस की शाख़ें हो। जो मुझमें क़ायम रहता है और मैं उसमें वह बहुत-सा फल लाता है, क्योंकि मुझसे अलग होकर तुम कुछ नहीं कर सकते। 6जो मुझमें

क़ायम नहीं रहता और न मैं उसमें उसे बेफ़ायदा शाख़ की तरह बाहर फेंक दिया जाता है। ऐसी शाख़ें सूख जाती हैं और लोग उनका ढेर लगाकर उन्हें आग में झोंक देते हैं जहाँ वह जल जाती हैं। 7अगर तुम मुझमें क़ायम रहो और मैं तुममें तो जो जी चाहे माँगो, वह तुमको दिया जाएगा। 8जब तुम बहुत-सा फल लाते और यों मेरे शागिर्द साबित होते हो तो इससे मेरे बाप को जलाल मिलता है। 9जिस तरह बाप ने मुझसे मुहब्बत रखी है उसी तरह मैंने तुमसे भी मुहब्बत रखी है। अब मेरी मुहब्बत में क़ायम रहो। 10जब तुम मेरे अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते हो तो तुम मेरी मुहाब्बत में क़ायम रहते हो। मैं भी इसी तरह अपने बाप के अहकाम के मुताबिक़ चलता हूँ और यों उस की मुहब्बत में क़ायम रहता हूँ।

11मैंने तुमको यह इसलिए बताया है ताकि मेरी ख़ुशी तुममें हो बल्कि तुम्हारा दिल ख़ुशी से भरकर छलक उठे। 12मेरा हुक्म यह है कि एक दूसरे को वैसे प्यार करो जैसे मैंने तुमको प्यार किया है। 13इससे बड़ी मुहब्बत है नहीं कि कोई अपने दोस्तों के लिए अपनी जान दे दे। 14तुम मेरे दोस्त हो अगर तुम वह कुछ करो जो मैं तुमको बताता हूँ। 15अब से मैं नहीं कहता कि तुम ग़ुलाम हो, क्योंकि ग़ुलाम नहीं जानता कि उसका मालिक क्या करता है। इसके बजाए मैंने कहा है कि तुम दोस्त हो, क्योंकि मैंने तुमको सब कुछ बताया है जो मैंने अपने बाप से सुना है। 16तुमने मुझे नहीं चुना बल्कि मैंने तुमको चुन लिया है। मैंने तुमको मुक़र्रर किया कि जाकर फल लाओ, ऐसा फल जो क़ायम रहे। फिर बाप तुमको वह कुछ देगा जो तुम मेरे नाम में माँगोगे। 17मेरा हुक्म यही है कि एक दूसरे से मुहब्बत रखो।

दुनिया की दुश्मनी

18अगर दुनिया तुमसे दुश्मनी रखे तो यह बात ज़हन में रखो कि उसने तुमसे पहले मुझसे दुश्मनी रखी है। 19अगर तुम दुनिया के होते तो दुनिया तुमको अपना समझकर प्यार करती। लेकिन तुम दुनिया के नहीं हो। मैंने तुमको दुनिया से अलग करके चुन लिया है। इसलिए दुनिया तुमसे दुश्मनी रखती है। 20वह बात याद करो जो मैंने तुमको बताई कि ग़ुलाम अपने मालिक से बड़ा नहीं होता। अगर उन्होंने मुझे सताया है तो तुम्हें भी सताएँगे। और अगर उन्होंने मेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी तो वह तुम्हारी बातों पर भी अमल करेंगे। 21लेकिन तुम्हारे साथ जो कुछ भी करेंगे, मेरे नाम की वजह से करेंगे, क्योंकि वह उसे नहीं जानते जिसने मुझे भेजा है। 22अगर मैं आया न होता और उनसे बात न की होती तो वह क़ुसूरवार न ठहरते। लेकिन अब उनके गुनाह का कोई भी उज़्र बाक़ी नहीं रहा। 23जो मुझसे दुश्मनी रखता है वह मेरे बाप से भी दुश्मनी रखता है। 24अगर मैंने उनके दरमियान ऐसा काम न किया होता जो किसी और ने नहीं किया तो वह क़ुसूरवार न ठहरते। लेकिन अब उन्होंने सब कुछ देखा है और फिर भी मुझसे और मेरे बाप से दुश्मनी रखी है। 25और ऐसा होना भी था ताकि कलामे-मुक़द्दस की यह पेशगोई पूरी हो जाए कि 'उन्होंने बिलावजह मुझसे कीना रखा है।'

26जब वह मददगार आएगा जिसे मैं बाप की तरफ़ से तुम्हारे पास भेजूँगा तो वह मेरे बारे में गवाही देगा। वह सच्चाई का रूह है जो बाप में से निकलता है। 27तुमको भी मेरे बारे में गवाही देना है, क्योंकि तुम इब्तिदा से मेरे साथ रहे हो।

16 मैंने तुमको यह इसलिए बताया है ताकि तुम गुमराह न हो जाओ। 2वह तुमको यहूदी जमातों से निकाल देंगे, बल्कि वह वक़्त भी आनेवाला है कि जो भी तुमको मार डालेगा वह समझेगा, 'मैंने अल्लाह की ख़िदमत की है।' 3वह इस क़िस्म की हरकतें इसलिए करेंगे कि उन्होंने न बाप को जाना है, न मुझे। 4मैंने तुमको यह बातें इसलिए बताई हैं कि जब उनका वक़्त आ जाए तो तुमको याद आए कि मैंने तुम्हें आगाह कर दिया था।

रूहुल-क़ुद्स की ख़िदमत

मैंने अब तक तुमको यह नहीं बताया क्योंकि
मैं तुम्हारे साथ था। 5लेकिन अब मैं उसके पास
जा रहा हूँ जिसने मुझे भेजा है। तो भी तुममें से
कोई मुझसे नहीं पूछता, 'आप कहाँ जा रहे हैं?'
6इसके बजाए तुम्हारे दिल ग़मज़दा हैं कि मैंने
तुमको ऐसी बातें बताई हैं। 7लेकिन मैं तुमको
सच बताता हूँ कि तुम्हारे लिए फ़ायदामंद है कि
मैं जा रहा हूँ। अगर मैं न जाऊँ तो मददगार तुम्हारे
पास नहीं आएगा। लेकिन अगर मैं जाऊँ तो मैं उसे
तुम्हारे पास भेज दूँगा। 8और जब वह आएगा तो
गुनाह, रास्तबाज़ी और अदालत के बारे में दुनिया
की ग़लती को बेनिक़ाब करके यह ज़ाहिर करेगा :
9गुनाह के बारे में यह कि लोग मुझ पर ईमान नहीं
रखते, 10रास्तबाज़ी के बारे में यह कि मैं बाप के
पास जा रहा हूँ और तुम मुझे अब से नहीं देखोगे,
11और अदालत के बारे में यह कि इस दुनिया के
हुक्मरान की अदालत हो चुकी है।

12मुझे तुमको मज़ीद बहुत कुछ बताना है,
लेकिन इस वक़्त तुम उसे बरदाश्त नहीं कर
सकते। 13जब सच्चाई का रूह आएगा तो वह
पूरी सच्चाई की तरफ़ तुम्हारी राहनुमाई करेगा।
वह अपनी मरज़ी से बात नहीं करेगा बल्कि सिर्फ़
वही कुछ कहेगा जो वह ख़ुद सुनेगा। वही तुमको
मुस्तक़बिल के बारे में भी बताएगा। 14और वह
इसमें मुझे जलाल देगा कि वह तुमको वही कुछ
सुनाएगा जो उसे मुझसे मिला होगा। 15जो कुछ
भी बाप का है वह मेरा है। इसलिए मैंने कहा, 'रूह
तुमको वही कुछ सुनाएगा जो उसे मुझसे मिला
होगा।'

अब दुख फिर सुख

16थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे। फिर
थोड़ी देर के बाद तुम मुझे दुबारा देख लोगे।"

17उसके कुछ शागिर्द आपस में बात करने लगे,
"ईसा के यह कहने से क्या मुराद है कि 'थोड़ी देर
के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे, फिर थोड़ी देर के बाद
मुझे दुबारा देख लोगे'? और इसका क्या मतलब
है, 'मैं बाप के पास जा रहा हूँ'?" 18और वह
सोचते रहे, "यह किस क़िस्म की 'थोड़ी देर' है
जिसका ज़िक्र वह कर रहे हैं? हम उनकी बात
नहीं समझते।"

19ईसा ने जान लिया कि वह मुझसे इसके बारे
में सवाल करना चाहते हैं। इसलिए उसने कहा,
"क्या तुम एक दूसरे से पूछ रहे हो कि मेरी इस
बात का क्या मतलब है कि 'थोड़ी देर के बाद
तुम मुझे नहीं देखोगे, फिर थोड़ी देर के बाद मुझे
दुबारा देख लोगे'? 20मैं तुमको सच बताता हूँ
कि तुम रो रोकर मातम करोगे जबकि दुनिया
ख़ुश होगी। तुम ग़म करोगे, लेकिन तुम्हारा ग़म
ख़ुशी में बदल जाएगा। 21जब किसी औरत के
बच्चा पैदा होनेवाला होता है तो उसे ग़म और
तकलीफ़ होती है क्योंकि उसका वक़्त आ गया
है। लेकिन ज्योंही बच्चा पैदा हो जाता है तो माँ
ख़ुशी के मारे कि एक इनसान दुनिया में आ गया
है अपनी तमाम मुसीबत भूल जाती है। 22यही
तुम्हारी हालत है। क्योंकि अब तुम ग़मज़दा हो,
लेकिन मैं तुमसे दुबारा मिलूँगा। उस वक़्त तुमको
ख़ुशी होगी, ऐसी ख़ुशी जो तुमसे कोई छीन न
लेगा।

23उस दिन तुम मुझसे कुछ नहीं पूछोगे। मैं
तुमको सच बताता हूँ कि जो कुछ तुम मेरे नाम
में बाप से माँगोगे वह तुमको देगा। 24अब तक
तुमने मेरे नाम में कुछ नहीं माँगा। माँगो तो तुमको
मिलेगा। फिर तुम्हारी ख़ुशी पूरी हो जाएगी।

दुनिया पर फ़तह

25मैंने तुमको यह तमसीलों में बताया है।
लेकिन एक दिन आएगा जब मैं ऐसा नहीं करूँगा।
उस वक़्त मैं तमसीलों में बात नहीं करूँगा बल्कि
तुमको बाप के बारे में साफ़ साफ़ बता दूँगा।
26उस दिन तुम मेरा नाम लेकर माँगोगे। मेरे कहने
का मतलब यह नहीं कि मैं ही तुम्हारी ख़ातिर बाप
से दरख़ास्त करूँगा। 27क्योंकि बाप ख़ुद तुमको
प्यार करता है, इसलिए कि तुमने मुझे प्यार किया
है और ईमान लाए हो कि मैं अल्लाह में से निकल

आया हूँ। 28मैं बाप में से निकलकर दुनिया में
आया हूँ। और अब मैं दुनिया को छोड़कर बाप के
पास वापस जाता हूँ।”
29इस पर उसके शागिर्दों ने कहा, “अब आप
तमसीलों में नहीं बल्कि साफ़ साफ़ बात कर रहे
हैं। 30अब हमें समझ आई है कि आप सब कुछ
जानते हैं और कि इसकी ज़रूरत नहीं कि कोई
आपकी पूछ-गछ करे। इसलिए हम ईमान रखते
हैं कि आप अल्लाह में से निकलकर आए हैं।”
31ईसा ने जवाब दिया, “अब तुम ईमान रखते
हो? 32देखो, वह वक़्त आ रहा है बल्कि आ चुका
है जब तुम तित्तर-बित्तर हो जाओगे। मुझे अकेला
छोड़कर हर एक अपने घर चला जाएगा। तो भी
मैं अकेला नहीं हूँगा क्योंकि बाप मेरे साथ है।
33मैंने तुमको इसलिए यह बात बताई ताकि तुम
मुझमें सलामती पाओ। दुनिया में तुम मुसीबत में
फँसे रहते हो। लेकिन हौसला रखो, मैं दुनिया पर
ग़ालिब आया हूँ।”

ईसा अपने शागिर्दों के लिए दुआ करता है

17 यह कहकर ईसा ने अपनी नज़र
आसमान की तरफ़ उठाई और दुआ
की, “ऐ बाप, वक़्त आ गया है। अपने फ़रज़ंद को
जलाल दे ताकि फ़रज़ंद तुझे जलाल दे। 2क्योंकि
तूने उसे तमाम इनसानों पर इख़्तियार दिया है
ताकि वह उन सबको अबदी ज़िंदगी दे जो तूने
उसे दिए हैं। 3और अबदी ज़िंदगी यह है कि वह
तुझे जान लें जो वाहिद और सच्चा ख़ुदा है और
ईसा मसीह को भी जान लें जिसे तूने भेजा है।
4मैंने तुझे ज़मीन पर जलाल दिया और उस काम
की तकमील की जिसकी ज़िम्मेदारी तूने मुझे दी
थी। 5और अब मुझे अपने हुज़ूर जलाल दे, ऐ
बाप, वही जलाल जो मैं दुनिया की तख़लीक़ से
पेशतर तेरे हुज़ूर रखता था।
6मैंने तेरा नाम उन लोगों पर ज़ाहिर किया जिन्हें
तूने दुनिया से अलग करके मुझे दिया है। वह तेरे
ही थे। तूने उन्हें मुझे दिया और उन्होंने तेरे कलाम
के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी है। 7अब उन्होंने जान
लिया है कि जो कुछ भी तूने मुझे दिया है वह
तेरी तरफ़ से है। 8क्योंकि जो बातें तूने मुझे दीं
मैंने उन्हें दी हैं। नतीजे में उन्होंने यह बातें क़बूल
करके हक़ीक़ी तौर पर जान लिया कि मैं तुझमें
से निकलकर आया हूँ। साथ साथ वह ईमान भी
लाए कि तूने मुझे भेजा है।
9मैं उनके लिए दुआ करता हूँ, दुनिया के लिए
नहीं बल्कि उनके लिए जिन्हें तूने मुझे दिया है,
क्योंकि वह तेरे ही हैं। 10जो भी मेरा है वह तेरा
है और जो तेरा है वह मेरा है। चुनाँचे मुझे उनमें
जलाल मिला है। 11अब से मैं दुनिया में नहीं हूँगा।
लेकिन यह दुनिया में रह गए हैं जबकि मैं तेरे
पास आ रहा हूँ। क़ुद्दूस बाप, अपने नाम में उन्हें
महफ़ूज़ रख, उस नाम में जो तूने मुझे दिया है,
ताकि वह एक हों जैसे हम एक हैं। 12जितनी देर
मैं उनके साथ रहा मैंने उन्हें तेरे नाम में महफ़ूज़
रखा, उसी नाम में जो तूने मुझे दिया था। मैंने
यों उनकी निगहबानी की कि उनमें से एक भी
हलाक नहीं हुआ सिवाए हलाकत के फ़रज़ंद के।
यों कलाम की पेशगोई पूरी हुई। 13अब तो मैं तेरे
पास आ रहा हूँ। लेकिन मैं दुनिया में होते हुए यह
बयान कर रहा हूँ ताकि उनके दिल मेरी ख़ुशी से
भरकर छलक उठें। 14मैंने उन्हें तेरा कलाम दिया
है और दुनिया ने उनसे दुश्मनी रखी, क्योंकि यह
दुनिया के नहीं हैं, जिस तरह मैं भी दुनिया का नहीं
हूँ। 15मेरी दुआ यह नहीं है कि तू उन्हें दुनिया से
उठा ले बल्कि यह कि उन्हें इबलीस से महफ़ूज़
रखे। 16वह दुनिया के नहीं हैं जिस तरह मैं भी
दुनिया का नहीं हूँ। 17उन्हें सच्चाई के वसीले से
मख़सूसो-मुक़द्दस कर। तेरा कलाम ही सच्चाई है।
18जिस तरह तूने मुझे दुनिया में भेजा है उसी तरह
मैंने भी उन्हें दुनिया में भेजा है। 19उनकी ख़ातिर
मैं अपने आपको मख़सूस करता हूँ, ताकि उन्हें
भी सच्चाई के वसीले से मख़सूसो-मुक़द्दस किया
जाए।
20मेरी दुआ न सिर्फ़ इन्हीं के लिए है, बल्कि
उन सबके लिए भी जो इनका पैग़ाम सुनकर मुझ
पर ईमान लाएँगे 21ताकि सब एक हों। जिस तरह

तू ऐ बाप, मुझमें है और मैं तुझमें हूँ उसी तरह वह
भी हममें हों ताकि दुनिया यक़ीन करे कि तूने मुझे
भेजा है। 22मैंने उन्हें वह जलाल दिया है जो तूने
मुझे दिया है ताकि वह एक हों जिस तरह हम एक
हैं, 23मैं उनमें और तू मुझमें। वह कामिल तौर पर
एक हों ताकि दुनिया जान ले कि तूने मुझे भेजा
और कि तूने उनसे मुहब्बत रखी है जिस तरह
मुझसे रखी है।

24ऐ बाप, मैं चाहता हूँ कि जो तूने मुझे दिए
हैं वह भी मेरे साथ हों, वहाँ जहाँ मैं हूँ, कि वह
मेरे जलाल को देखें, वह जलाल जो तूने इसलिए
मुझे दिया है कि तूने मुझे दुनिया की तख़लीक़ से
पेशतर प्यार किया है। 25ऐ रास्त बाप, दुनिया
तुझे नहीं जानती, लेकिन मैं तुझे जानता हूँ। और
यह शागिर्द जानते हैं कि तूने मुझे भेजा है। 26मैंने
तेरा नाम उन पर ज़ाहिर किया और इसे ज़ाहिर
करता रहूँगा ताकि तेरी मुझसे मुहब्बत उनमें हो
और मैं उनमें हूँ।”

ईसा की गिरिफ़्तारी

18 यह कहकर ईसा अपने शागिर्दों के
साथ निकला और वादीए-क़िदरोन
को पार करके एक बाग़ में दाख़िल हुआ। 2यहूदाह
जो उसे दुश्मन के हवाले करनेवाला था वह
भी इस जगह से वाक़िफ़ था, क्योंकि ईसा
वहाँ अपने शागिर्दों के साथ जाया करता था।
3राहनुमा इमामों और फ़रीसियों ने यहूदाह को
रोमी फ़ौजियों का दस्ता और बैतुल-मुक़द्दस के
कुछ पहरेदार दिए थे। अब यह मशालें, लालटैन
और हथियार लिए बाग़ में पहुँचे। 4ईसा को
मालूम था कि उसे क्या पेश आएगा। चुनाँचे उसने
निकलकर उनसे पूछा, “तुम किस को ढूँड रहे
हो?”

5उन्होंने जवाब दिया, “ईसा नासरी को।”

ईसा ने उन्हें बताया, “मैं ही हूँ।”

यहूदाह जो उसे दुश्मन के हवाले करना चाहता
था, वह भी उनके साथ खड़ा था। 6जब ईसा ने
एलान किया, “मैं ही हूँ,” तो सब पीछे हटकर
ज़मीन पर गिर पड़े। 7एक और बार ईसा ने उनसे
सवाल किया, “तुम किस को ढूँड रहे हो?”

उन्होंने जवाब दिया, “ईसा नासरी को।”

8उसने कहा, “मैं तुमको बता चुका हूँ कि मैं
ही हूँ। अगर तुम मुझे ढूँड रहे हो तो इनको जाने
दो।” 9यों उस की यह बात पूरी हुई, “मैंने उनमें
से जो तूने मुझे दिए हैं एक को भी नहीं खोया।”

10शमाऊन पतरस के पास तलवार थी। अब
उसने उसे मियान से निकालकर इमामे-आज़म
के ग़ुलाम का दहना कान उड़ा दिया (ग़ुलाम का
नाम मलख़ुस था)। 11लेकिन ईसा ने पतरस से
कहा, “तलवार को मियान में रख। क्या मैं वह
प्याला न पियूँ जो बाप ने मुझे दिया है?”

ईसा हन्ना के सामने

12फिर फ़ौजी दस्ते, उनके अफ़सर और बैतुल-
मुक़द्दस के यहूदी पहरेदारों ने ईसा को गिरिफ़्तार
करके बाँध लिया। 13पहले वह उसे हन्ना के पास
ले गए। हन्ना उस साल के इमामे-आज़म कायफ़ा
का सुसर था। 14कायफ़ा ही ने यहूदियों को यह
मशवरा दिया था कि बेहतर यह है कि एक ही
आदमी उम्मत के लिए मर जाए।

पतरस ईसा को जानने से इनकार करता है

15शमाऊन पतरस किसी और शागिर्द के साथ
ईसा के पीछे हो लिया था। यह दूसरा शागिर्द
इमामे-आज़म का जाननेवाला था, इसलिए वह
ईसा के साथ इमामे-आज़म के सहन में दाख़िल
हुआ। 16पतरस बाहर दरवाज़े पर खड़ा रहा।
फिर इमामे-आज़म का जाननेवाला शागिर्द दुबारा
निकल आया। उसने गेट की निगरानी करनेवाली
औरत से बात की तो उसे पतरस को अपने साथ
अंदर ले जाने की इजाज़त मिली। 17उस औरत ने
पतरस से पूछा, “तुम भी इस आदमी के शागिर्द
हो कि नहीं?”

उसने जवाब दिया, “नहीं, मैं नहीं हूँ।”

18ठंड थी, इसलिए ग़ुलामों और पहरेदारों ने
लकड़ी के कोयलों से आग जलाई। अब वह उसके

पास खड़े ताप रहे थे। पतरस भी उनके साथ खड़ा ताप रहा था।

इमामे-आज़म ईसा की पूछ-गछ करता है

19इतने में इमामे-आज़म ईसा की पूछ-गछ करके उसके शागिर्दों और तालीम के बारे में तफ़तीश करने लगा। 20ईसा ने जवाब में कहा, "मैंने दुनिया में खुलकर बात की है। मैं हमेशा यहूदी इबादतख़ानों और बैतुल-मुक़द्दस में तालीम देता रहा, वहाँ जहाँ तमाम यहूदी जमा हुआ करते हैं। पोशीदगी में तो मैंने कुछ नहीं कहा। 21आप मुझसे क्यों पूछ रहे हैं? उनसे दरियाफ़्त करें जिन्होंने मेरी बातें सुनी हैं। उनको मालूम है कि मैंने क्या कुछ कहा है।"

22इस पर साथ खड़े बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदारों में से एक ने ईसा के मुँह पर थप्पड़ मारकर कहा, "क्या यह इमामे-आज़म से बात करने का तरीक़ा है जब वह तुमसे कुछ पूछे?"

23ईसा ने जवाब दिया, "अगर मैंने बुरी बात की है तो साबित कर। लेकिन अगर सच कहा, तो तूने मुझे क्यों मारा?"

24फिर हन्ना ने ईसा को बँधी हुई हालत में इमामे-आज़म कायफ़ा के पास भेज दिया।

पतरस दुबारा ईसा को जानने से इनकार करता है

25शमाऊन पतरस अब तक आग के पास खड़ा ताप रहा था। इतने में दूसरे उससे पूछने लगे, "तुम भी उसके शागिर्द हो कि नहीं?"

लेकिन पतरस ने इनकार किया, "नहीं, मैं नहीं हूँ।"

26फिर इमामे-आज़म का एक ग़ुलाम बोल उठा जो उस आदमी का रिश्तेदार था जिसका कान पतरस ने उड़ा दिया था, "क्या मैंने तुमको बाग़ में उसके साथ नहीं देखा था?"

27पतरस ने एक बार फिर इनकार किया, और इनकार करते ही मुरग़ की बाँग सुनाई दी।

ईसा को पीलातुस के सामने पेश किया जाता है

28फिर यहूदी ईसा को कायफ़ा से लेकर रोमी गवर्नर के महल बनाम प्रैटोरियुम के पास पहुँच गए। अब सुबह हो चुकी थी और चूँकि यहूदी फ़सह की ईद के खाने में शरीक होना चाहते थे, इसलिए वह महल में दाख़िल न हुए, वरना वह नापाक हो जाते। 29चुनाँचे पीलातुस निकलकर उनके पास आया और पूछा, "तुम इस आदमी पर क्या इलज़ाम लगा रहे हो?"

30उन्होंने जवाब दिया, "अगर यह मुजरिम न होता तो हम इसे आपके हवाले न करते।"

31पीलातुस ने कहा, "फिर इसे ले जाओ और अपनी शरई अदालतों में पेश करो।"

लेकिन यहूदियों ने एतराज़ किया, "हमें किसी को सज़ाए-मौत देने की इजाज़त नहीं।" 32ईसा ने इस तरफ़ इशारा किया था कि वह किस तरह मरेगा और अब उस की यह बात पूरी हुई।

33तब पीलातुस फिर अपने महल में गया। वहाँ से उसने ईसा को बुलाया और उससे पूछा, "क्या तुम यहूदियों के बादशाह हो?"

34ईसा ने पूछा, "क्या आप अपनी तरफ़ से यह सवाल कर रहे हैं, या औरों ने आपको मेरे बारे में बताया है?"

35पीलातुस ने जवाब दिया, "क्या मैं यहूदी हूँ? तुम्हारी अपनी क़ौम और राहनुमा इमामों ही ने तुम्हें मेरे हवाले किया है। तुमसे क्या कुछ सरज़द हुआ है?"

36ईसा ने कहा, "मेरी बादशाही इस दुनिया की नहीं है। अगर वह इस दुनिया की होती तो मेरे ख़ादिम सख़्त जिद्दो-जहद करते ताकि मुझे यहूदियों के हवाले न किया जाता। लेकिन ऐसा नहीं है। अब मेरी बादशाही यहाँ की नहीं है।"

37पीलातुस ने कहा, "तो फिर तुम वाक़ई बादशाह हो?"

ईसा ने जवाब दिया, "आप सहीह कहते हैं, मैं बादशाह हूँ। मैं इसी मक़सद के लिए पैदा होकर

दुनिया में आया कि सच्चाई की गवाही दूँ। जो भी
सच्चाई की तरफ़ से है वह मेरी सुनता है।”
38पीलातुस ने पूछा, “सच्चाई क्या है?”

ईसा को सज़ाए-मौत सुनाई जाती है

फिर वह दुबारा निकलकर यहूदियों के पास
गया। उसने एलान किया, “मुझे उसे मुजरिम
ठहराने की कोई वजह नहीं मिली। 39लेकिन
तुम्हारी एक रस्म है जिसके मुताबिक़ मुझे ईदे-
फ़सह के मौक़े पर तुम्हारे लिए एक क़ैदी को रिहा
करना है। क्या तुम चाहते हो कि मैं ‘यहूदियों के
बादशाह’ को रिहा कर दूँ?”
40लेकिन जवाब में लोग चिल्लाने लगे, “नहीं,
इसको नहीं बल्कि बर-अब्बा को।” (बर-अब्बा
डाकू था।)

19 फिर पीलातुस ने ईसा को कोड़े
लगवाए। 2फ़ौजियों ने काँटेदार
टहनियों का एक ताज बनाकर उसके सर पर
रख दिया। उन्होंने उसे अरग़वानी रंग का लिबास
भी पहनाया। 3फिर उसके सामने आकर वह
कहते, “ऐ यहूदियों के बादशाह, आदाब!” और
उसे थप्पड़ मारते थे।
4एक बार फिर पीलातुस निकल आया और
यहूदियों से बात करने लगा, “देखो, मैं इसे तुम्हारे
पास बाहर ला रहा हूँ ताकि तुम जान लो कि मुझे
इसे मुजरिम ठहराने की कोई वजह नहीं मिली।”
5फिर ईसा काँटेदार ताज और अरग़वानी रंग का
लिबास पहने बाहर आया। पीलातुस ने उनसे
कहा, “लो यह है वह आदमी।”
6उसे देखते ही राहनुमा इमाम और उनके
मुलाज़िम चीख़ने लगे, “इसे मसलूब करें, इसे
मसलूब करें!”
पीलातुस ने उनसे कहा, “तुम ही इसे ले जाकर
मसलूब करो। क्योंकि मुझे इसे मुजरिम ठहराने
की कोई वजह नहीं मिली।”
7यहूदियों ने इसरार किया, “हमारे पास
शरीअत है और इस शरीअत के मुताबिक़ लाज़िम
है कि वह मारा जाए। क्योंकि इसने अपने आपको
अल्लाह का फ़रज़ंद क़रार दिया है।”
8यह सुनकर पीलातुस मज़ीद डर गया।
9दुबारा महल में जाकर ईसा से पूछा, “तुम कहाँ
से आए हो?”
लेकिन ईसा ख़ामोश रहा। 10पीलातुस ने उससे
कहा, “अच्छा, तुम मेरे साथ बात नहीं करते?
क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मुझे तुम्हें रिहा करने
और मसलूब करने का इख़्तियार है?”
11ईसा ने जवाब दिया, “आपको मुझ पर
इख़्तियार न होता अगर वह आपको ऊपर से न
दिया गया होता। इस वजह से उस शख़्स से ज़्यादा
संगीन गुनाह हुआ है जिसने मुझे दुश्मन के हवाले
कर दिया है।”
12इसके बाद पीलातुस ने उसे आज़ाद करने
की कोशिश की। लेकिन यहूदी चीख़ चीख़कर
कहने लगे, “अगर आप इसे रिहा करें तो आप
रोमी शहनशाह क़ैसर के दोस्त साबित नहीं होंगे।
जो भी बादशाह होने का दावा करे वह शहनशाह
की मुख़ालफ़त करता है।”
13इस तरह की बातें सुनकर पीलातुस ईसा
को बाहर ले आया। फिर वह जज की कुरसी
पर बैठ गया। उस जगह का नाम “पच्चीकारी”
था। (अरामी ज़बान में वह गब्बता कहलाती थी।)
14अब दोपहर के तक़रीबन बारह बज गए थे। उस
दिन ईद के लिए तैयारियाँ की जाती थीं, क्योंकि
अगले दिन ईद का आग़ाज़ था। पीलातुस बोल
उठा, “लो, तुम्हारा बादशाह!”
15लेकिन वह चिल्लाते रहे, “ले जाएँ इसे, ले
जाएँ! इसे मसलूब करें!”
पीलातुस ने सवाल किया, “क्या मैं तुम्हारे
बादशाह को सलीब पर चढ़ाऊँ?”
राहनुमा इमामों ने जवाब दिया, “सिवाए
शहनशाह के हमारा कोई बादशाह नहीं है।”
16फिर पीलातुस ने ईसा को उनके हवाले कर
दिया ताकि उसे मसलूब किया जाए।

ईसा को मसलूब किया जाता है

चुनाँचे वह ईसा को लेकर चले गए। 17वह
अपनी सलीब उठाए शहर से निकला और उस
जगह पहुँचा जिसका नाम खोपड़ी (अरामी ज़बान
में गुलगुता) था। 18वहाँ उन्होंने उसे सलीब पर
चढ़ा दिया। साथ साथ उन्होंने उसके बाएँ और
दाएँ हाथ दो और आदमियों को मसलूब किया।
19पीलातुस ने एक तख़्ती बनवाकर उसे ईसा की
सलीब पर लगवा दिया। तख़्ती पर लिखा था,
'ईसा नासरी, यहूदियों का बादशाह।' 20बहुत-से
यहूदियों ने यह पढ़ लिया, क्योंकि मसलूबियत
का मक़ाम शहर के क़रीब था और यह जुमला
अरामी, लातीनी और यूनानी ज़बानों में लिखा
था। 21यह देखकर यहूदियों के राहनुमा इमामों
ने एतराज़ किया, "'यहूदियों का बादशाह' न
लिखें बल्कि यह कि 'इस आदमी ने यहूदियों का
बादशाह होने का दावा किया'।"

22पीलातुस ने जवाब दिया, "जो कुछ मैंने
लिख दिया सो लिख दिया।"

23ईसा को सलीब पर चढ़ाने के बाद फ़ौजियों
ने उसके कपड़े लेकर चार हिस्सों में बाँट लिए, हर
फ़ौजी के लिए एक हिस्सा। लेकिन चोग़ा बेजोड़
था। वह ऊपर से लेकर नीचे तक बुना हुआ एक
ही टुकड़े का था। 24इसलिए फ़ौजियों ने कहा,
"आओ, इसे फाड़कर तक़सीम न करें बल्कि
इस पर क़ुरा डालें।" यों कलामे-मुक़द्दस की यह
पेशगोई पूरी हुई, "उन्होंने आपस में मेरे कपड़े बाँट
लिए और मेरे लिबास पर क़ुरा डाला।" फ़ौजियों
ने यही कुछ किया।

25कुछ ख़वातीन भी ईसा की सलीब के क़रीब
खड़ी थीं : उस की माँ, उस की ख़ाला, क्लोपास
की बीवी मरियम और मरियम मग्दलीनी। 26जब
ईसा ने अपनी माँ को उस शागिर्द के साथ खड़े
देखा जो उसे प्यारा था तो उसने कहा, "ऐ ख़ातून,
देखें आपका बेटा यह है।"
27और उस शागिर्द से उसने कहा, "देख, तेरी
माँ यह है।" उस वक़्त से उस शागिर्द ने ईसा की
माँ को अपने घर रखा।

ईसा की मौत

28इसके बाद जब ईसा ने जान लिया कि मेरा
मिशन तकमील तक पहुँच चुका है तो उसने
कहा, "मुझे प्यास लगी है।" (इससे भी कलामे-
मुक़द्दस की एक पेशगोई पूरी हुई।)

29क़रीब मै के सिरके से भरा बरतन पड़ा था।
उन्होंने एक इस्पंज सिरके में डुबोकर उसे ज़ूफ़े
की शाख़ पर लगा दिया और उठाकर ईसा के मुँह
तक पहुँचाया। 30यह सिरका पीने के बाद ईसा
बोल उठा, "काम मुकम्मल हो गया है।" और
सर झुकाकर उसने अपनी जान अल्लाह के सुपुर्द
कर दी।

ईसा का पहलू छेदा जाता है

31फ़सह की तैयारी का दिन था और अगले
दिन ईद का आग़ाज़ और एक ख़ास सबत था।
इसलिए यहूदी नहीं चाहते थे कि मसलूब हुई लाशें
अगले दिन तक सलीबों पर लटकी रहें। चुनाँचे
उन्होंने पीलातुस से गुज़ारिश की कि वह उनकी
टाँगें तुड़वाकर उन्हें सलीबों से उतारने दे। 32तब
फ़ौजियों ने आकर ईसा के साथ मसलूब किए
जानेवाले आदमियों की टाँगें तोड़ दीं, पहले एक
की फिर दूसरे की। 33जब वह ईसा के पास आए
तो उन्होंने देखा कि वह फ़ौत हो चुका है, इसलिए
उन्होंने उस की टाँगें न तोड़ीं। 34इसके बजाए एक
ने नेज़े से ईसा का पहलू छेद दिया। ज़ख़म से
फ़ौरन ख़ून और पानी बह निकला। 35(जिसने
यह देखा है उसने गवाही दी है और उस की गवाही
सच्ची है। वह जानता है कि वह हक़ीक़त बयान
कर रहा है और उस की गवाही का मक़सद यह
है कि आप भी ईमान लाएँ।) 36यह यों हुआ
ताकि कलामे-मुक़द्दस की यह पेशगोई पूरी हो
जाए, "उस की एक हड्डी भी तोड़ी नहीं जाएगी।"

37कलामे-मुक़द्दस में यह भी लिखा है, “वह उस
पर नज़र डालेंगे जिसे उन्होंने छेदा है।”

ईसा को दफ़नाया जाता है

38बाद में अरिमतियाह के रहनेवाले यूसुफ़ ने
पीलातुस से ईसा की लाश उतारने की इजाज़त
माँगी। (यूसुफ़ ईसा का ख़ुफ़िया शागिर्द था,
क्योंकि वह यहूदियों से डरता था।) इसकी
इजाज़त मिलने पर वह आया और लाश को उतार
लिया। 39नीकुदेमुस भी साथ था, वह आदमी
जो गुज़रे दिनों में रात के वक़्त ईसा से मिलने
आया था। नीकुदेमुस अपने साथ मुर और ऊद की
तक़रीबन 34 किलोग्राम ख़ुशबू लेकर आया था।
40यहूदी जनाज़े की रसूमात के मुताबिक़ उन्होंने
लाश पर ख़ुशबू लगाकर उसे पट्टियों से लपेट
दिया। 41सलीबों के क़रीब एक बाग़ था और
बाग़ में एक नई क़ब्र थी जो अब तक इस्तेमाल
नहीं की गई थी। 42उसके क़रीब होने के सबब से
उन्होंने ईसा को उसमें रख दिया, क्योंकि फ़सह
की तैयारी का दिन था और अगले दिन ईद का
आग़ाज़ था।

ख़ाली क़ब्र

20 हफ़्ते का दिन गुज़र गया तो इतवार
को मरियम मग्दलीनी सुबह-सवेरे
क़ब्र के पास आई। अभी अंधेरा था। वहाँ पहुँचकर
उसने देखा कि क़ब्र के मुँह पर का पत्थर एक
तरफ़ हटाया गया है। 2मरियम दौड़कर शमाऊन
पतरस और ईसा को प्यारे शागिर्द के पास आई।
उसने इत्तला दी, “वह ख़ुदावंद को क़ब्र से ले गए
हैं, और हमें मालूम नहीं कि उन्होंने उसे कहाँ रख
दिया है।”

3तब पतरस दूसरे शागिर्द समेत क़ब्र की तरफ़
चल पड़ा। 4दोनों दौड़ रहे थे, लेकिन दूसरा शागिर्द
ज़्यादा तेज़रफ़्तार था। वह पहले क़ब्र पर पहुँच
गया। 5उसने झुककर अंदर झाँका तो कफ़न की
पट्टियाँ वहाँ पड़ी नज़र आईं। लेकिन वह अंदर न
गया। 6फिर शमाऊन पतरस उसके पीछे पहुँचकर
क़ब्र में दाख़िल हुआ। उसने भी देखा कि कफ़न
की पट्टियाँ वहाँ पड़ी हैं 7और साथ वह कपड़ा
भी जिसमें ईसा का सर लिपटा हुआ था। यह
कपड़ा तह किया गया था और पट्टियों से अलग
पड़ा था। 8फिर दूसरा शागिर्द जो पहले पहुँच गया
था, वह भी दाख़िल हुआ। जब उसने यह देखा तो
वह ईमान लाया। 9(लेकिन अब भी वह कलामे-
मुक़द्दस की यह पेशगोई नहीं समझते थे कि उसे
मुरदों में से जी उठना है।) 10फिर दोनों शागिर्द
घर वापस चले गए।

ईसा मरियम मग्दलीनी पर ज़ाहिर होता है

11लेकिन मरियम रो रोकर क़ब्र के सामने खड़ी
रही। और रोते हुए उसने झुककर क़ब्र में झाँका
12तो क्या देखती है कि दो फ़रिश्ते सफ़ेद लिबास
पहने हुए वहाँ बैठे हैं जहाँ पहले ईसा की लाश
पड़ी थी, एक उसके सिरहाने और दूसरा वहाँ जहाँ
पहले उसके पाँव थे। 13उन्होंने मरियम से पूछा,
“ऐ ख़ातून, तू क्यों रो रही है?”

उसने कहा, “वह मेरे ख़ुदावंद को ले गए हैं,
और मालूम नहीं कि उन्होंने उसे कहाँ रख दिया
है।”

14फिर उसने पीछे मुड़कर ईसा को वहाँ खड़े
देखा, लेकिन उसने उसे न पहचाना। 15ईसा ने
पूछा, “ऐ ख़ातून, तू क्यों रो रही है, किस को ढूँड
रही है?”

यह सोचकर कि वह माली है उसने कहा,
“जनाब, अगर आप उसे ले गए हैं तो मुझे बता दें
कि उसे कहाँ रख दिया है ताकि उसे ले जाऊँ।”

16ईसा ने उससे कहा, “मरियम!”

वह उस की तरफ़ मुड़ी और बोल उठी,
“रब्बूनी!” (इसका मतलब अरामी ज़बान में
उस्ताद है।)

17ईसा ने कहा, “मेरे साथ चिमटी न रह,
क्योंकि अभी मैं ऊपर, बाप के पास नहीं गया।
लेकिन भाइयों के पास जा और उन्हें बता, ‘मैं
अपने बाप और तुम्हारे बाप के पास वापस जा
रहा हूँ, अपने ख़ुदा और तुम्हारे ख़ुदा के पास’।”

18चुनाँचे मरियम मग्दलीनी शागिर्दों के पास गई और उन्हें इत्तला दी, "मैंने ख़ुदावंद को देखा है और उसने मुझसे यह बातें कहीं।"

ईसा अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर होता है

19उस इतवार की शाम को शागिर्द जमा थे। उन्होंने दरवाज़ों पर ताले लगा दिए थे क्योंकि वह यहूदियों से डरते थे। अचानक ईसा उनके दरमियान आ खड़ा हुआ और कहा, "तुम्हारी सलामती हो," 20और उन्हें अपने हाथों और पहलू को दिखाया। ख़ुदावंद को देखकर वह निहायत ख़ुश हुए। 21ईसा ने दुबारा कहा, "तुम्हारी सलामती हो! जिस तरह बाप ने मुझे भेजा उसी तरह मैं तुमको भेज रहा हूँ।" 22फिर उन पर फूँककर उसने फ़रमाया, "रूहुल-क़ुद्स को पा लो। 23अगर तुम किसी के गुनाहों को मुआफ़ करो तो वह मुआफ़ किए जाएंगे। और अगर तुम उन्हें मुआफ़ न करो तो वह मुआफ़ नहीं किए जाएंगे।"

तोमा शक करता है

24बारह शागिर्दों में से तोमा जिसका लक़ब जुड़वाँ था ईसा के आने पर मौजूद न था। 25चुनाँचे दूसरे शागिर्दों ने उसे बताया, "हमने ख़ुदावंद को देखा है!" लेकिन तोमा ने कहा, "मुझे यक़ीन नहीं आता। पहले मुझे उसके हाथों में कीलों के निशान नज़र आएँ और मैं उनमें अपनी उँगली डालूँ, पहले मैं अपने हाथ को उसके पहलू के ज़ख़्म में डालूँ। फिर ही मुझे यक़ीन आएगा।"

26एक हफ़्ता गुज़र गया। शागिर्द दुबारा मकान में जमा थे। इस मरतबा तोमा भी साथ था। अगरचे दरवाज़ों पर ताले लगे थे फिर भी ईसा उनके दरमियान आकर खड़ा हुआ। उसने कहा, "तुम्हारी सलामती हो!" 27फिर वह तोमा से मुख़ातिब हुआ, "अपनी उँगली को मेरे हाथों और अपने हाथ को मेरे पहलू के ज़ख़्म में डाल और बेएतक़ाद न हो बल्कि ईमान रख।"

28तोमा ने जवाब में उससे कहा, "ऐ मेरे ख़ुदावंद! ऐ मेरे ख़ुदा!"

29फिर ईसा ने उसे बताया, "क्या तू इसलिए ईमान लाया है कि तूने मुझे देखा है? मुबारक हैं वह जो मुझे देखे बग़ैर मुझ पर ईमान लाते हैं।"

इस किताब का मक़सद

30ईसा ने अपने शागिर्दों की मौजूदगी में मज़ीद बहुत-से ऐसे इलाही निशान दिखाए जो इस किताब में दर्ज नहीं हैं। 31लेकिन जितने दर्ज हैं उनका मक़सद यह है कि आप ईमान लाएँ कि ईसा ही मसीह यानी अल्लाह का फ़रज़ंद है और आपको इस ईमान के वसीले से उसके नाम से ज़िंदगी हासिल हो।

ईसा झील पर शागिर्दों पर ज़ाहिर होता है

21 इसके बाद ईसा एक बार फिर अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर हुआ जब वह तिबरियास यानी गलील की झील पर थे। यह यों हुआ। 2कुछ शागिर्द शमाऊन पतरस के साथ जमा थे, तोमा जो जुड़वाँ कहलाता था, नतनेल जो गलील के क़ाना से था, ज़बदी के दो बेटे और मज़ीद दो शागिर्द।

3शमाऊन पतरस ने कहा, "मैं मछली पकड़ने जा रहा हूँ।"

दूसरों ने कहा, "हम भी साथ जाएंगे।" चुनाँचे वह निकलकर कश्ती पर सवार हुए। लेकिन उस पूरी रात एक भी मछली हाथ न आई। 4सुबह-सवेरे ईसा झील के किनारे पर आ खड़ा हुआ। लेकिन शागिर्दों को मालूम नहीं था कि वह ईसा ही है। 5उसने उनसे पूछा, "बच्चो, क्या तुम्हें खाने के लिए कुछ मिल गया?"

उन्होंने जवाब दिया, "नहीं।"

6उसने कहा, "अपना जाल कश्ती के दाएँ हाथ डालो, फिर तुमको कुछ मिलेगा।" उन्होंने ऐसा किया तो मछलियों की इतनी बड़ी तादाद थी कि वह जाल कश्ती तक न ला सके।

7इस पर ख़ुदावंद के प्यारे शागिर्द ने पतरस से
कहा, “यह तो ख़ुदावंद है।” यह सुनते ही कि
ख़ुदावंद है शमाऊन पतरस अपनी चादर ओढ़कर
पानी में कूद पड़ा (उसने चादर को काम करने के
लिए उतार लिया था।) 8दूसरे शागिर्द कश्ती पर
सवार उसके पीछे आए। वह किनारे से ज़्यादा दूर
नहीं थे, तक़रीबन सौ मीटर के फ़ासले पर थे।
इसलिए वह मछलियों से भरे जाल को पानी में
खींच खींचकर ख़ुश्की तक लाए। 9जब वह कश्ती
से उतरे तो देखा कि लकड़ी के कोयलों की आग
पर मछलियाँ भुनी जा रही हैं और साथ रोटी भी
है। 10ईसा ने उनसे कहा, “उन मछलियों में से
कुछ ले आओ जो तुमने अभी पकड़ी हैं।”

11शमाऊन पतरस कश्ती पर गया और जाल
को ख़ुश्की पर घसीट लाया। यह जाल 153 बड़ी
मछलियों से भरा हुआ था, तो भी वह न फटा।
12ईसा ने उनसे कहा, “आओ, नाश्ता कर लो।”
किसी भी शागिर्द ने सवाल करने की जुर्रत न की
कि “आप कौन हैं?” क्योंकि वह तो जानते थे
कि यह ख़ुदावंद ही है। 13फिर ईसा आया और
रोटी लेकर उन्हें दी और इसी तरह मछली भी उन्हें
खिलाई।

14ईसा के जी उठने के बाद यह तीसरी बार थी
कि वह अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर हुआ।

ईसा का पतरस से सवाल

15नाश्ते के बाद ईसा शमाऊन पतरस से
मुख़ातिब हुआ, “यूहन्ना के बेटे शमाऊन, क्या
तू इनकी निसबत मुझसे ज़्यादा मुहब्बत करता
है?”

उसने जवाब दिया, “जी ख़ुदावंद, आप तो
जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूँ।”

ईसा बोला, “फिर मेरे लेलों को चरा।” 16तब
ईसा ने एक और मरतबा पूछा, “शमाऊन यूहन्ना
के बेटे, क्या तू मुझसे मुहब्बत करता है?”

उसने जवाब दिया, “जी ख़ुदावंद, आप तो
जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूँ।”

ईसा बोला, “फिर मेरी भेड़ों की गल्ला-
बानी कर।” 17तीसरी बार ईसा ने उससे पूछा,
“शमाऊन यूहन्ना के बेटे, क्या तू मुझे प्यार करता
है?”

तीसरी दफ़ा यह सवाल सुनने से पतरस को
बड़ा दुख हुआ। उसने कहा, “ख़ुदावंद, आपको
सब कुछ मालूम है। आप तो जानते हैं कि मैं
आपको प्यार करता हूँ।”

ईसा ने उससे कहा, “मेरी भेड़ों को चरा।

18मैं तुझे सच बताता हूँ कि जब तू जवान था
तो तू ख़ुद अपनी कमर बाँधकर जहाँ जी चाहता
घुमता-फिरता था। लेकिन जब तू बूढ़ा होगा तो तू
अपने हाथों को आगे बढ़ाएगा और कोई और तेरी
कमर बाँधकर तुझे ले जाएगा जहाँ तेरा दिल नहीं
करेगा।” 19(ईसा की यह बात इस तरफ़ इशारा
थी कि पतरस किस क़िस्म की मौत से अल्लाह
को जलाल देगा।) फिर उसने उसे बताया, “मेरे
पीछे चल।”

ईसा और दूसरा शागिर्द

20पतरस ने मुड़कर देखा कि जो शागिर्द ईसा
को प्यारा था वह उनके पीछे चल रहा है। यह
वही शागिर्द था जिसने शाम के खाने के दौरान
ईसा की तरफ़ सर झुकाकर पूछा था, “ख़ुदावंद,
कौन आपको दुश्मन के हवाले करेगा?” 21अब
उसे देखकर पतरस ने सवाल किया, “ख़ुदावंद,
इसके साथ क्या होगा?”

22ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैं चाहूँ कि यह
मेरे वापस आने तक ज़िंदा रहे तो तुझे क्या? बस
तू मेरे पीछे चलता रह।”

23नतीजे में भाइयों में यह ख़याल फैल गया कि
यह शागिर्द नहीं मरेगा। लेकिन ईसा ने यह बात
नहीं की थी। उसने सिर्फ़ यह कहा था, “अगर मैं
चाहूँ कि यह मेरे वापस आने तक ज़िंदा रहे तो
तुझे क्या?”

24यह वह शागिर्द है जिसने इन बातों की गवाही
देकर इन्हें क़लमबंद कर दिया है। और हम जानते
हैं कि उस की गवाही सच्ची है।

ख़ुलासा

25ईसा ने इसके अलावा भी बहुत कुछ किया। अगर उसका हर काम क़लमबंद किया जाता तो मेरे ख़याल में पूरी दुनिया में यह किताबें रखने की गुंजाइश न होती।

रसूलों के आमाल

1 मुअज़्ज़ज़ थियुफ़िलुस, पहली कि-
ताब में मैंने सब कुछ बयान किया जो
ईसा ने शुरू से लेकर 2उस दिन तक किया
और सिखाया, जब उसे आसमान पर उठाया
गया। जाने से पहले उसने अपने चुने हुए रसूलों
को रूहुल-क़ुद्स की मारिफ़त मज़ीद हिदायात
दीं। 3अपने दुख उठाने और मौत सहने के बाद
उसने अपने आपको ज़ाहिर करके उन्हें बहुत-सी
दलीलों से क़ायल किया कि वह वाक़ई ज़िंदा है।
वह चालीस दिन के दौरान उन पर ज़ाहिर होता
और उन्हें अल्लाह की बादशाही के बारे में बताता
रहा। 4जब वह अभी उनके साथ था उसने उन्हें
हुक्म दिया, "यरूशलम को न छोड़ना बल्कि इस
इंतज़ार में यहीं ठहरो कि बाप का वादा पूरा हो
जाए, वह वादा जिसके बारे में मैंने तुमको आगाह
किया है। 5क्योंकि यहया ने तो पानी से बपतिस्मा
दिया, लेकिन तुमको थोड़े दिनों के बाद रूहुल-
क़ुद्स से बपतिस्मा दिया जाएगा।"

ईसा को उठाया जाता है

6जो वहाँ जमा थे उन्होंने उससे पूछा,
"ख़ुदावंद, क्या आप इसी वक़्त इसराईल के लिए
उस की बादशाही दुबारा क़ायम करेंगे?"

7ईसा ने जवाब दिया, "यह जानना तुम्हारा
काम नहीं है बल्कि सिर्फ़ बाप का जो ऐसे औक़ात
और तारीखें मुक़र्रर करने का इख़्तियार रखता है।
8लेकिन तुम्हें रूहुल-क़ुद्स की क़ुव्वत मिलेगी जो
तुम पर नाज़िल होगा। फिर तुम यरूशलम, पूरे
यहूदिया और सामरिया बल्कि दुनिया की इंतहा
तक मेरे गवाह होगे।" 9यह कहकर वह उनके
देखते देखते उठा लिया गया। और एक बादल
ने उसे उनकी नज़रों से ओझल कर दिया।

10वह अभी आसमान की तरफ़ देख ही रहे थे
कि अचानक दो आदमी उनके पास आ खड़े हुए।
दोनों सफ़ेद लिबास पहने हुए थे। 11उन्होंने कहा,
"गलील के मर्दो, आप क्यों खड़े आसमान की
तरफ़ देख रहे हैं? यही ईसा जिसे आपके पास
से आसमान पर उठाया गया है उसी तरह वापस
आएगा जिस तरह आपने उसे ऊपर जाते हुए देखा
है।"

यहूदाह का जा-नशीन

12फिर वह ज़ैतून के पहाड़ से यरूशलम शहर
वापस चले गए। (यह पहाड़ शहर से तक़रीबन
एक किलोमीटर दूर है।) 13वहाँ पहुँचकर वह उस
बालाख़ाने में दाख़िल हुए जिसमें वह ठहरे हुए
थे, यानी पतरस, यूहन्ना, याक़ूब और अंदरियास,
फ़िलिप्पुस और तोमा, बरतुलमाई और मत्ती,
याक़ूब बिन हलफ़ई, शमाऊन मुजाहिद और
यहूदाह बिन याक़ूब। 14यह सब यकदिल होकर
दुआ में लगे रहे। कुछ औरतें, ईसा की माँ मरियम
और उसके भाई भी साथ थे।

15उन दिनों में पतरस भाइयों में खड़ा हुआ।
उस वक़्त तक़रीबन 120 लोग जमा थे। उसने
कहा, 16“भाइयो, लाज़िम था कि कलामे-
मुक़द्दस की वह पेशगोई पूरी हो जो रूहुल-क़ुद्स
ने दाऊद की मारिफ़त यहूदाह के बारे में की।
यहूदाह उनका राहनुमा बन गया जिन्होंने ईसा को
गिरिफ़्तार किया, 17गो उसे हममें शुमार किया
जाता था और वह इसी ख़िदमत में हमारे साथ
शरीक था।”

18(जो पैसे यहूदाह को उसके ग़लत काम के
लिए मिल गए थे उनसे उसने एक खेत ख़रीद
लिया था। वहाँ वह सर के बल गिर गया, उसका
पेट फट गया और उस की तमाम अंतड़ियाँ बाहर
निकल पडीं। 19इसका चर्चा यरूशलम के तमाम
बाशिंदों में फैल गया, इसलिए यह खेत उनकी
मादरी ज़बान में हक़ल-दमा के नाम से मशहूर
हुआ जिसका मतलब है ख़ून का खेत।)

20पतरस ने अपनी बात जारी रखी, “यही
बात ज़बूर की किताब में लिखी है, ‘उस की
रिहाइशगाह सुनसान हो जाए, कोई उसमें आबाद
न हो।’ यह भी लिखा है, ‘कोई और उस की
ज़िम्मेदारी उठाए।’ 21चुनाँचे अब ज़रूरी है कि
हम यहूदाह की जगह किसी और को चुन लें। यह
शख़्स उन मर्दों में से एक हो जो उस पूरे वक़्त
के दौरान हमारे साथ सफ़र करते रहे जब ख़ुदावंद
ईसा हमारे साथ था, 22यानी उसके यहया के हाथ
से बपतिस्मा लेने से लेकर उस वक़्त तक जब उसे
हमारे पास से उठाया गया। लाज़िम है कि उनमें
से एक हमारे साथ ईसा के जी उठने का गवाह
हो।”

23चुनाँचे उन्होंने दो आदमी पेश किए, यूसुफ़
जो बरसब्बा कहलाता था (उसका दूसरा नाम
यूसतुस था) और मत्तियाह। 24फिर उन्होंने दुआ
की, “ऐ ख़ुदावंद, तू हर एक के दिल से वाक़िफ़
है। हम पर ज़ाहिर कर कि तूने इन दोनों में
से किस को चुना है 25ताकि वह उस ख़िदमत
की ज़िम्मेदारी उठाए जो यहूदाह छोड़कर वहाँ
चला गया जहाँ उसे जाना ही था।” 26यह
कहकर उन्होंने दोनों का नाम लेकर क़ुरा डाला
तो मत्तियाह का नाम निकला। लिहाज़ा उसे भी
ग्यारह रसूलों में शामिल कर लिया गया।

रूहुल-क़ुद्स की आमद

2 फिर ईदे-पंतिकुस्त का दिन आया। सब
एक जगह जमा थे 2कि अचानक
आसमान से ऐसी आवाज़ आई जैसे शदीद आँधी
चल रही हो। पूरा मकान जिसमें वह बैठे थे इस
आवाज़ से गूँज उठा। 3और उन्हें शोले की लौएँ
जैसी नज़र आईं जो अलग अलग होकर उनमें से
हर एक पर उतरकर ठहर गईं। 4सब रूहुल-क़ुद्स
से भर गए और मुख़्तलिफ़ ग़ैरमुल्की ज़बानों में
बोलने लगे, हर एक उस ज़बान में जो बोलने की
रूहुल-क़ुद्स ने उसे तौफ़ीक़ दी।

5उस वक़्त यरूशलम में ऐसे ख़ुदातरस यहूदी
ठहरे हुए थे जो आसमान तले की हर क़ौम
में से थे। 6जब यह आवाज़ सुनाई दी तो एक
बड़ा हुजूम जमा हुआ। सब घबरा गए क्योंकि
हर एक ने ईमानदारों को अपनी मादरी ज़बान
में बोलते सुना। 7सख़्त हैरतज़दा होकर वह
कहने लगे, “क्या यह सब गलील के रहनेवाले
नहीं हैं? 8तो फिर यह किस तरह हो सकता
है कि हममें से हर एक उन्हें अपनी मादरी
ज़बान में बातें करते सुन रहा है 9जबकि हमारे
ममालिक यह हैं : पारथिया, मादिया, ऐलाम,
मसोपुतामिया, यहूदिया, कप्पदुकिया, पुंतुस,
आसिया, 10फ़रूगिया, पंफ़ीलिया, मिसर और
लिबिया का वह इलाक़ा जो कुरेन के इर्दगिर्द है।
रोम से भी लोग मौजूद हैं। 11यहाँ यहूदी भी हैं
और ग़ैरयहूदी नौमुरीद भी, क्रेते के लोग और अरब
के बाशिंदे भी। और अब हम सबके सब इनको
अपनी अपनी ज़बान में अल्लाह के अज़ीम कामों
का ज़िक्र करते सुन रहे हैं।” 12सब दंग रह गए।
उलझन में पड़कर वह एक दूसरे से पूछने लगे,
“इसका क्या मतलब है?”

13लेकिन कुछ लोग उनका मज़ाक़ उड़ा-
कर कहने लगे, “यह बस नई मै पीकर नशे में
धुत हो गए हैं।”

पतरस का पैग़ाम

14फिर पतरस बाक़ी ग्यारह रसूलों समेत खड़ा
होकर ऊँची आवाज़ से उनसे मुख़ातिब हुआ,
“सुनें, यहूदी भाइयो और यरूशलम के तमाम
रहनेवालो! जान लें और ग़ौर से मेरी बात सुन
लें! 15आपका ख़याल है कि यह लोग नशे में
हैं। लेकिन ऐसा नहीं है। देखें, अभी तो सुबह के
नौ बजे का वक़्त है। 16अब वह कुछ हो रहा है
जिसकी पेशगोई योएल नबी ने की थी,

17‘अल्लाह फ़रमाता है
 कि आख़िरी दिनों में
मैं अपने रूह को
 तमाम इनसानों पर उंडेल दूँगा।
तुम्हारे बेटे-बेटियाँ नबुव्वत करेंगे,
तुम्हारे नौजवान रोयाएँ
और तुम्हारे बुज़ुर्ग ख़ाब देखेंगे।
18उन दिनों में मैं अपने रूह को
 अपने ख़ादिमों और ख़ादिमाओं पर भी
 उंडेल दूँगा,
और वह नबुव्वत करेंगे।
19मैं ऊपर आसमान पर मोजिज़े
 दिखाऊँगा
और नीचे ज़मीन पर इलाही निशान
 ज़ाहिर करूँगा,
ख़ून, आग और धुएँ के बादल।
20सूरज तारीक हो जाएगा,
चाँद का रंग ख़ून-सा हो जाएगा,
और फिर रब का अज़ीम और जलाली दिन
 आएगा।
21उस वक़्त जो भी रब का नाम लेगा
 नजात पाएगा।’

22इसराईल के मर्दो, मेरी बात सुनें! अल्लाह
ने आपके सामने ही ईसा नासरी की तसदीक़ की,
क्योंकि उसने उसके वसीले से आपके दरमियान
अजूबे, मोजिज़े और इलाही निशान दिखाए। आप
ख़ुद इस बात से वाक़िफ़ हैं। 23लेकिन अल्लाह
को पहले ही इल्म था कि क्या होना है, क्योंकि
उसने ख़ुद अपनी मरज़ी से मुक़र्रर किया था कि
ईसा को दुश्मन के हवाले कर दिया जाए। चुनाँचे
आपने बेदीन लोगों के ज़रीए उसे सलीब पर
चढ़वाकर क़त्ल किया। 24लेकिन अल्लाह ने उसे
मौत की अज़ियतनाक गिरिफ़्त से आज़ाद करके
ज़िंदा कर दिया, क्योंकि मुमकिन ही नहीं था कि
मौत उसे अपने क़ब्ज़े में रखे। 25चुनाँचे दाऊद ने
उसके बारे में कहा,

‘रब हर वक़्त मेरी आँखों के सामने रहा।
वह मेरे दहने हाथ रहता है
ताकि मैं न डगमगाऊँ।
26इसलिए मेरा दिल शादमान है,
और मेरी ज़बान ख़ुशी के नारे लगाती है।
हाँ, मेरा बदन पुरउम्मीद ज़िंदगी गुज़ारेगा।
27क्योंकि तू मेरी जान को
 पाताल में नहीं छोड़ेगा,
और न अपने मुक़द्दस को गलने-सड़ने
 की नौबत तक पहुँचने देगा।
28तूने मुझे ज़िंदगी की राहों से
 आगाह कर दिया है,
और तू अपने हुज़ूर मुझे ख़ुशी से
 सरशार करेगा।’

29मेरे भाइयो, अगर इजाज़त हो तो मैं आपको
दिलेरी से अपने बुज़ुर्ग दाऊद के बारे में कुछ
बताऊँ। वह तो फ़ौत होकर दफ़नाया गया और
उस की क़ब्र आज तक हमारे दरमियान मौजूद
है। 30लेकिन वह नबी था और जानता था कि
अल्लाह ने क़सम खाकर मुझसे वादा किया
है कि वह मेरी औलाद में से एक को मेरे
तख़्त पर बिठाएगा। 31मज़कूरा आयात में दाऊद
मुस्तक़बिल में देखकर मसीह के जी उठने का
ज़िक्र कर रहा है, यानी कि न उसे पाताल में
छोड़ा गया, न उसका बदन गलने-सड़ने की नौबत
तक पहुँचा। 32अल्लाह ने इसी ईसा को ज़िंदा कर
दिया है और हम सब इसके गवाह हैं। 33अब उसे

सरफ़राज़ करके ख़ुदा के दहने हाथ बिठाया गया
और बाप की तरफ़ से उसे मौऊदा रूहुल-क़ुद्स
मिल गया है। इसी को उसने हम पर उंडेल दिया,
जिस तरह आप देख और सुन रहे हैं। 34दाऊद
ख़ुद तो आसमान पर नहीं चढ़ा, तो भी उसने
फ़रमाया,

‘रब ने मेरे रब से कहा,
मेरे दहने हाथ बैठ
35जब तक मैं तेरे दुश्मनों को
तेरे पाँवों की चौकी न बना दूँ।’

36चुनाँचे पूरा इसराईल यक़ीन जाने कि जिस
ईसा को आपने मसलूब किया है उसे ही अल्लाह
ने ख़ुदावंद और मसीह बना दिया है।”

37पतरस की यह बातें सुनकर लोगों के दिल
छिद गए। उन्होंने पतरस और बाक़ी रसूलों से
पूछा, “भाइयो, फिर हम क्या करें?”

38पतरस ने जवाब दिया, “आपमें से हर एक
तौबा करके ईसा के नाम पर बपतिस्मा ले ताकि
आपके गुनाह मुआफ़ कर दिए जाएँ। फिर आपको
रूहुल-क़ुद्स की नेमत मिल जाएगी। 39क्योंकि
यह देने का वादा आपसे और आपके बच्चों से
किया गया है, बल्कि उनसे भी जो दूर के हैं,
उन सबसे जिन्हें रब हमारा ख़ुदा अपने पास
बुलाएगा।”

40पतरस ने मज़ीद बहुत-सी बातों से उन्हें
नसीहत की और समझाया कि “इस टेढ़ी नसल
से निकलकर नजात पाएँ।” 41जिन्होंने पतरस
की बात क़बूल की उनका बपतिस्मा हुआ। यों
उस दिन जमात में तक़रीबन 3,000 अफ़राद का
इज़ाफ़ा हुआ। 42यह ईमानदार रसूलों से तालीम
पाने, रिफ़ाक़त रखने और रिफ़ाक़ती खानों और
दुआओं में शरीक होते रहे।

ईमानदारों की हैरतअंगेज़ ज़िंदगी

43सब पर ख़ौफ़ छा गया और रसूलों की तरफ़
से बहुत-से मोजिज़े और इलाही निशान दिखाए
गए। 44जो भी ईमान लाते थे वह एक जगह
जमा होते थे। उनकी हर चीज़ मुश्तरका होती थी।
45अपनी मिलकियत और माल फ़रोख़्त करके
उन्होंने हर एक को उस की ज़रूरत के मुताबिक़
दिया। 46रोज़ाना वह यकदिली से बैतुल-मुक़द्दस
में जमा होते रहे। साथ साथ वह मसीह की याद में
अपने घरों में रोटी तोड़ते, बड़ी ख़ुशी और सादगी
से रिफ़ाक़ती खाना खाते 47और अल्लाह की
तमजीद करते रहे। उस वक़्त वह तमाम लोगों के
मंज़ूरे-नज़र थे। और ख़ुदावंद रोज़ बरोज़ जमात
में नजातयाफ़्ता लोगों का इज़ाफ़ा करता रहा।

लँगड़े आदमी की शफ़ा

3 एक दोपहर पतरस और यूहन्ना दुआ करने
के लिए बैतुल-मुक़द्दस की तरफ़ चल पड़े।
तीन बज गए थे। 2उस वक़्त लोग एक पैदाइशी
लँगड़े को उठाकर वहाँ ला रहे थे। रोज़ाना उसे
सहन के उस दरवाज़े के पास लाया जाता था
जो ‘ख़ूबसूरत दरवाज़ा’ कहलाता था ताकि वह
बैतुल-मुक़द्दस के सहनों में दाख़िल होनेवालों से
भीक माँग सके। 3पतरस और यूहन्ना बैतुल-
मुक़द्दस में दाख़िल होनेवाले थे तो लँगड़ा उनसे
भीक माँगने लगा। 4पतरस और यूहन्ना ग़ौर
से उस की तरफ़ देखने लगे। फिर पतरस ने
कहा, “हमारी तरफ़ देखें।” 5इस तवक़्क़ो से कि
उसे कुछ मिलेगा लँगड़ा उनकी तरफ़ मुतवज्जिह
हुआ। 6लेकिन पतरस ने कहा, “मेरे पास न तो
चाँदी है, न सोना, लेकिन जो कुछ है वह आपको
दे देता हूँ। नासरत के ईसा मसीह के नाम से
उठें और चलें-फिरें!” 7उसने उसका दहना हाथ
पकड़कर उसे खड़ा किया। उसी वक़्त लँगड़े के
पाँव और टख़ने मज़बूत हो गए। 8वह उछलकर
खड़ा हुआ और चलने-फिरने लगा। फिर वह
चलते, कूदते और अल्लाह की तमजीद करते हुए
उनके साथ बैतुल-मुक़द्दस में दाख़िल हुआ। 9और
तमाम लोगों ने उसे चलते-फिरते और अल्लाह
की तमजीद करते हुए देखा। 10जब उन्होंने जान
लिया कि यह वही आदमी है जो ख़ूबसूरत नामी
दरवाज़े पर बैठा भीक माँगा करता था तो वह उस
की तबदीली देखकर दंग रह गए।

बैतुल-मुक़द्दस में पतरस का पैग़ाम

11वह सब दौड़कर सुलेमान के बरामदे में आए जहाँ भीक माँगनेवाला अब तक पतरस और यूहन्ना से लिपटा हुआ था। 12यह देखकर पतरस उनसे मुख़ातिब हुआ, "इसराईल के हज़रात, आप यह देखकर क्यों हैरान हैं? आप क्यों घूर घूरकर हमारी तरफ़ देख रहे हैं गोया हमने अपनी ज़ाती ताक़त या दीनदारी के बाइस यह किया है कि यह आदमी चल-फिर सके? 13यह हमारे बापदादा के ख़ुदा, इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब के ख़ुदा की तरफ़ से है जिसने अपने बंदे ईसा को जलाल दिया है। यह वही ईसा है जिसे आपने दुश्मन के हवाले करके पीलातुस के सामने रद्द किया, अगरचे वह उसे रिहा करने का फ़ैसला कर चुका था। 14आपने उस क़ुद्दूस और रास्तबाज़ को रद्द करके तक़ाज़ा किया कि पीलातुस उसके एवज़ एक क़ातिल को रिहा करके आपको दे दे। 15आपने ज़िंदगी के सरदार को क़त्ल किया, लेकिन अल्लाह ने उसे मुरदों में से ज़िंदा कर दिया। हम इस बात के गवाह हैं। 16आप तो इस आदमी से वाक़िफ़ हैं जिसे देख रहे हैं। अब वह ईसा के नाम पर ईमान लाने से बहाल हो गया है, क्योंकि जो ईमान ईसा के ज़रीए मिलता है उसी ने इस आदमी को आपके सामने पूरी सेहतमंदी अता की।

17मेरे भाइयो, मैं जानता हूँ कि आप और आपके राहनुमाओं को सहीह इल्म नहीं था, इसलिए आपने ऐसा किया। 18लेकिन अल्लाह ने वह कुछ पूरा किया जिसकी पेशगोई उसने तमाम नबियों की मारिफ़त की थी, यानी यह कि उसका मसीह दुख उठाएगा। 19अब तौबा करें और अल्लाह की तरफ़ रुजू लाएँ ताकि आपके गुनाहों को मिटाया जाए। 20फिर आपको रब के हुज़ूर से ताज़गी के दिन मुयस्सर आएँगे और वह दुबारा ईसा यानी मसीह को भेज देगा जिसे आपके लिए मुक़र्रर किया गया है। 21लाज़िम है कि वह उस वक़्त तक आसमान पर रहे जब तक अल्लाह सब कुछ बहाल न कर दे, जिस तरह वह इब्तिदा से अपने मुक़द्दस नबियों की ज़बानी फ़रमाता आया है। 22क्योंकि मूसा ने कहा, 'रब तुम्हारा ख़ुदा तुम्हारे वास्ते तुम्हारे भाइयों में से मुझ जैसे नबी को बरपा करेगा। जो भी बात वह कहे उस की सुनना। 23जो नहीं सुनेगा उसे मिटाकर क़ौम से निकाल दिया जाएगा।' 24और समुएल से लेकर हर नबी ने इन दिनों की पेशगोई की है। 25आप तो इन नबियों की औलाद और उस अहद के वारिस हैं जो अल्लाह ने आपके बापदादा से क़ायम किया था, क्योंकि उसने इब्राहीम से कहा था, 'तेरी औलाद से दुनिया की तमाम क़ौमें बरकत पाएँगी।' 26जब अल्लाह ने अपने बंदे ईसा को बरपा किया तो पहले उसे आपके पास भेज दिया ताकि वह आपमें से हर एक को उस की बुरी राहों से फेरकर बरकत दे।"

पतरस और यूहन्ना यहूदी अदालते-आलिया के सामने

4 पतरस और यूहन्ना लोगों से बात कर ही रहे थे कि इमाम, बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदारों का कप्तान और सदूक़ी उनके पास पहुँचे। 2वह नाराज़ थे कि रसूल ईसा के जी उठने की मुनादी करके लोगों को मुरदों में से जी उठने की तालीम दे रहे हैं। 3उन्होंने उन्हें गिरिफ़्तार करके अगले दिन तक जेल में डाल दिया, क्योंकि शाम हो चुकी थी। 4लेकिन जिन्होंने उनका पैग़ाम सुन लिया था उनमें से बहुत-से लोग ईमान लाए। यों ईमानदारों में मर्दों की तादाद बढ़कर तक़रीबन 5,000 तक पहुँच गई।

5अगले दिन यरूशलम में यहूदी अदालते-आलिया के सरदारों, बुज़ुर्गों और शरीअत के उलमा का इजलास मुनअक़िद हुआ। 6इमामे-आज़म हन्ना और इसी तरह कायफ़ा, यूहन्ना, सिकंदर और इमामे-आज़म के ख़ानदान के दीगर मर्द भी शामिल थे। 7उन्होंने दोनों को अपने दरमियान खड़ा करके पूछा, "तुमने यह काम किस क़ुव्वत और नाम से किया?"

8पतरस ने रूहुल-क़ुद्स से मामूर होकर उनसे
कहा, “क़ौम के राहनुमाओ और बुज़ुर्गो, 9आज
हमारी पूछ-गछ की जा रही है कि हमने माज़ूर
आदमी पर रहम का इज़हार किसके वसीले से
किया कि उसे शफ़ा मिल गई है। 10तो फिर
आप सब और पूरी क़ौम इसराईल जान ले कि
यह नासरत के ईसा मसीह के नाम से हुआ है,
जिसे आपने मसलूब किया और जिसे अल्लाह ने
मुरदों में से ज़िंदा कर दिया। यह आदमी उसी के
वसीले से सेहत पाकर यहाँ आपके सामने खड़ा
है। 11ईसा वह पत्थर है जिसके बारे में कलामे-
मुक़द्दस में लिखा है, ‘जिस पत्थर को मकान
बनानेवालों ने रद्द किया वह कोने का बुनियादी
पत्थर बन गया।’ और आप ही ने उसे रद्द कर दिया
है। 12किसी दूसरे के वसीले से नजात हासिल
नहीं होती, क्योंकि आसमान के तले हम इनसानों
को कोई और नाम नहीं बख़्शा गया जिसके वसीले
से हम नजात पा सकें।”

13पतरस और यूहन्ना की बातें सुनकर लोग
हैरान हुए क्योंकि वह दिलेरी से बात कर रहे थे
अगरचे वह न तो आलिम थे, न उन्होंने शरीअत
की ख़ास तालीम पाई थी। साथ साथ सुननेवालों
ने यह भी जान लिया कि दोनों ईसा के साथी
हैं। 14लेकिन चूँकि वह अपनी आँखों से उस
आदमी को देख रहे थे जो शफ़ा पाकर उनके
साथ खड़ा था इसलिए वह इसके ख़िलाफ़ कोई
बात न कर सके। 15चुनाँचे उन्होंने उन दोनों को
इजलास में से बाहर जाने को कहा और आपस
में सलाह-मशवरा करने लगे, 16“हम इन लोगों
के साथ क्या सुलूक करें? बात वाज़िह है कि
उनके ज़रीए एक इलाही निशान दिखाया गया है।
इसका यरूशलम के तमाम बाशिंदों को इल्म हुआ
है। हम इसका इनकार नहीं कर सकते। 17लेकिन
लाज़िम है कि उन्हें धमकी देकर हुक्म दें कि वह
किसी भी शख़्स से यह नाम लेकर बात न करें,
वरना यह मामला क़ौम में मज़ीद फैल जाएगा।”

18चुनाँचे उन्होंने दोनों को बुलाकर हुक्म दिया
कि वह आइंदा ईसा के नाम से न कभी बोलें और
न तालीम दें।

19लेकिन पतरस और यूहन्ना ने जवाब में कहा,
“आप ख़ुद फ़ैसला कर लें, क्या यह अल्लाह के
नज़दीक ठीक है कि हम उस की निसबत आपकी
बात मानें? 20मुमकिन ही नहीं कि जो कुछ हमने
देख और सुन लिया है उसे दूसरों को सुनाने से
बाज़ रहें।”

21तब इजलास के मेंबरान ने दोनों को मज़ीद
धमकियाँ देकर छोड़ दिया। वह फ़ैसला न कर
सके कि क्या सज़ा दें, क्योंकि तमाम लोग पतरस
और यूहन्ना के इस काम की वजह से अल्लाह की
तमजीद कर रहे थे। 22क्योंकि जिस आदमी को
मोजिज़ाना तौर पर शफ़ा मिली थी वह चालीस
साल से ज़्यादा लँगड़ा रहा था।

दिलेरी के लिए दुआ

23उनकी रिहाई के बाद पतरस और यूहन्ना
अपने साथियों के पास वापस गए और सब कुछ
सुनाया जो राहनुमा इमामों और बुज़ुर्गों ने उन्हें
बताया था। 24यह सुनकर तमाम ईमानदारों ने
मिलकर ऊँची आवाज़ से दुआ की, “ऐ आक़ा,
तूने आसमानो-ज़मीन और समुंदर को और जो
कुछ उनमें है ख़लक़ किया है। 25और तूने अपने
ख़ादिम हमारे बाप दाऊद के मुँह से रूहुल-क़ुद्स
की मारिफ़त कहा,

‘अक़वाम क्यों तैश में आ गई हैं?
उम्मतें क्यों बेकार साज़िशें कर रही हैं?
26दुनिया के बादशाह उठ खड़े हुए,
हुक्मरान रब और उसके मसीह के ख़िलाफ़
जमा हो गए हैं।’

27और वाक़ई यही कुछ इस शहर में हुआ।
हेरोदेस अंतिपास, पुंतियुस पीलातुस, ग़ैरयहूदी
और यहूदी सब तेरे मुक़द्दस ख़ादिम ईसा के
ख़िलाफ़ जमा हुए जिसे तूने मसह किया था।
28लेकिन जो कुछ उन्होंने किया वह तूने अपनी
क़ुदरत और मरज़ी से पहले ही से मुक़र्रर किया

था। [29]ऐ रब, अब उनकी धमकियों पर ग़ौर कर।
अपने ख़ादिमों को अपना कलाम सुनाने की बड़ी
दिलेरी अता फ़रमा। [30]अपनी क़ुदरत का इज़हार
कर ताकि हम तेरे मुक़द्दस ख़ादिम ईसा के नाम से
शफ़ा, इलाही निशान और मोजिज़े दिखा सकें।”

[31]दुआ के इख़्तिताम पर वह जगह हिल गई
जहाँ वह जमा थे। सब रूहुल-क़ुद्स से मामूर हो
गए और दिलेरी से अल्लाह का कलाम सुनाने
लगे।

ईमानदारों की मुश्तरका मिलकियत

[32]ईमानदारों की पूरी जमात यकदिल थी।
किसी ने भी अपनी मिलकियत की किसी चीज़ के
बारे में नहीं कहा कि यह मेरी है बल्कि उनकी हर
चीज़ मुश्तरका थी। [33]और रसूल बड़े इख़्तियार
के साथ ख़ुदावंद ईसा के जी उठने की गवाही देते
रहे। अल्लाह की बड़ी मेहरबानी उन सब पर थी।
[34]उनमें से कोई भी ज़रूरतमंद नहीं था, क्योंकि
जिसके पास भी ज़मीनें या मकान थे उसने उन्हें
फ़रोख़्त करके रक़म [35]रसूलों के पाँवों में रख दी।
यों जमाशुदा पैसों में से हर एक को उतने दिए
जाते जितनों की उसे ज़रूरत होती थी।

[36]मसलन यूसुफ़ नामी एक आदमी था
जिसका नाम रसूलों ने बरनबास (हौसला-
अफ़्ज़ाई का बेटा) रखा था। वह लावी
क़बीले से और जज़ीराए-क़ुबरुस का रहने-
वाला था। [37]उसने अपना एक खेत फ़रोख़्त
करके पैसे रसूलों के पाँवों में रख दिए।

हननियाह और सफ़ीरा

5 एक और आदमी था जिसने अपनी बीवी के
साथ मिलकर अपनी कोई ज़मीन बेच दी।
उनके नाम हननियाह और सफ़ीरा थे। [2]लेकिन
हननियाह पूरी रक़म रसूलों के पास न लाया
बल्कि उसमें से कुछ अपने लिए रख छोड़ा और
बाक़ी रसूलों के पाँवों में रख दिया। उस की बीवी
भी इस बात से वाक़िफ़ थी। [3]लेकिन पतरस ने
कहा, “हननियाह, इबलीस ने आपके दिल को यों
क्यों भर दिया है कि आपने रूहुल-क़ुद्स से झूट
बोला है? क्योंकि आपने ज़मीन की रक़म के कुछ
पैसे अपने पास रख लिए हैं। [4]क्या यह ज़मीन
फ़रोख़्त करने से पहले आपकी नहीं थी? और
उसे बेचकर क्या आप पैसे जैसे चाहते इस्तेमाल
नहीं कर सकते थे? आपने क्यों अपने दिल में
यह ठान लिया? आपने हमें नहीं बल्कि अल्लाह
को धोका दिया है।”

[5]यह सुनते ही हननियाह फ़र्श पर गिरकर मर
गया। और तमाम सुननेवालों पर बड़ी दहशत तारी
हो गई। [6]जमात के नौजवानों ने उठकर लाश को
कफ़न में लपेट दिया और उसे बाहर ले जाकर
दफ़न कर दिया।

[7]तक़रीबन तीन घंटे गुज़र गए तो उस की बीवी
अंदर आई। उसे मालूम न था कि शौहर को क्या
हुआ है।

[8]पतरस ने उससे पूछा, “मुझे बताएँ, क्या
आपको अपनी ज़मीन के लिए इतनी ही रक़म
मिली थी?”

सफ़ीरा ने जवाब दिया, “जी, इतनी ही रक़म
थी।”

[9]पतरस ने कहा, “क्यों आप दोनों रब के रूह
को आज़माने पर मुत्तफ़िक़ हुए? देखो, जिन्होंने
आपके ख़ाविंद को दफ़नाया है वह दरवाज़े पर
खड़े हैं और आपको भी उठाकर बाहर ले जाएंगे।”
[10]उसी लमहे सफ़ीरा पतरस के पाँवों में गिरकर
मर गई। नौजवान अंदर आए तो उस की लाश
देखकर उसे भी बाहर ले गए और उसके शौहर के
पास दफ़न कर दिया। [11]पूरी जमात बल्कि हर
सुननेवाले पर बड़ा ख़ौफ़ तारी हो गया।

मोजिज़े

[12]रसूलों की मारिफ़त अवाम में बहुत-से
इलाही निशान और मोजिज़े ज़ाहिर हुए। उस
वक़्त तमाम ईमानदार यकदिली से बैतुल-मुक़द्दस
में सुलेमान के बरामदे में जमा हुआ करते थे।
[13]बाक़ी लोग उनसे क़रीबी ताल्लुक़ रखने की
जुर्रत नहीं करते थे, अगरचे अवाम उनकी बहुत

इज़्ज़त करते थे। 14तो भी ख़ुदावंद पर ईमान
रखनेवाले मर्दो-ख़वातीन की तादाद बढ़ती गई।
15लोग अपने मरीज़ों को चारपाइयों और चटाइयों
पर रखकर सड़कों पर लाते थे ताकि जब पतरस
वहाँ से गुज़रे तो कम अज़ कम उसका साया
किसी न किसी पर पड़ जाए। 16बहुत-से लोग
यरूशलम के इर्दगिर्द की आबादियों से भी अपने
मरीज़ों और बदरूह-गिरिफ़्ता अज़ीज़ों को लाते,
और सब शफ़ा पाते थे।

रसूलों की ईज़ारसानी

17फिर इमामे-आज़म सदूक़ी फ़िरक़े के तमाम
साथियों के साथ हरकत में आया। हसद से
जलकर 18उन्होंने रसूलों को गिरिफ़्तार करके
अवामी जेल में डाल दिया। 19लेकिन रात
को रब का एक फ़रिश्ता क़ैदख़ाने के दरवाज़ों
को खोलकर उन्हें बाहर लाया। उसने कहा,
20“जाओ, बैतुल-मुक़द्दस में खड़े होकर लोगों को
इस नई ज़िंदगी से मुताल्लिक़ सब बातें सुनाओ।”
21फ़रिश्ते की सुनकर रसूल सुबह-सवेरे बैतुल-
मुक़द्दस में जाकर तालीम देने लगे।

अब ऐसा हुआ कि इमामे-आज़म अपने
साथियों समेत पहुँचा और यहूदी अदालते-
आलिया का इजलास मुनअक़िद किया। इसमें
इसराईल के तमाम बुज़ुर्ग शरीक हुए। फिर उन्होंने
अपने मुलाज़िमों को क़ैदख़ाने में भेज दिया ताकि
रसूलों को लाकर उनके सामने पेश किया जाए।
22लेकिन जब वह वहाँ पहुँचे तो पता चला कि
रसूल जेल में नहीं हैं। वह वापस आए और कहने
लगे, 23“जब हम पहुँचे तो जेल बड़ी एहतियात
से बंद थी और दरवाज़ों पर पहरेदार खड़े थे।
लेकिन जब हम दरवाज़ों को खोलकर अंदर गए
तो वहाँ कोई नहीं था!” 24यह सुनकर बैतुल-
मुक़द्दस के पहरेदारों का कप्तान और राहनुमा
इमाम बड़ी उलझन में पड़ गए और सोचने लगे
कि अब क्या होगा? 25इतने में कोई आकर
कहने लगा, “बात सुनें, जिन आदमियों को आपने
जेल में डाला था वह बैतुल-मुक़द्दस में खड़े लोगों
को तालीम दे रहे हैं।” 26तब बैतुल-मुक़द्दस के
पहरेदारों का कप्तान अपने मुलाज़िमों के साथ
रसूलों के पास गया और उन्हें लाया, लेकिन
ज़बरदस्ती नहीं, क्योंकि वह डरते थे कि जमाशुदा
लोग उन्हें संगसार न कर दें।

27चुनाँचे उन्होंने रसूलों को लाकर इज-
लास के सामने खड़ा किया। इमामे-आज़म उनसे
मुख़ातिब हुआ, 28“हमने तो तुमको सख़्ती से
मना किया था कि इस आदमी का नाम लेकर
तालीम न दो। इसके बरअक्स तुमने न सिर्फ़
अपनी तालीम यरूशलम की हर जगह तक पहुँचा
दी है बल्कि हमें इस आदमी की मौत के ज़िम्मेदार
भी ठहराना चाहते हो।”

29पतरस और बाक़ी रसूलों ने जवाब दिया,
“लाज़िम है कि हम पहले अल्लाह की सुनें, फिर
इनसान की। 30हमारे बापदादा के ख़ुदा ने ईसा
को ज़िंदा कर दिया, उसी शख़्स को जिसे आपने
सलीब पर चढ़वाकर मार डाला था। 31अल्लाह ने
उसी को हुक्मरान और नजातदहिंदा की हैसियत
से सरफ़राज़ करके अपने दहने हाथ बिठा लिया
ताकि वह इसराईल को तौबा और गुनाहों की
मुआफ़ी का मौक़ा फ़राहम करे। 32हम ख़ुद इन
बातों के गवाह हैं और रूहुल-क़ुद्स भी, जिसे
अल्लाह ने अपने फ़रमाँबरदारों को दे दिया है।”

33यह सुनकर अदालत के लोग तैश में आकर
उन्हें क़त्ल करना चाहते थे। 34लेकिन एक
फ़रीसी आलिम इजलास में खड़ा हुआ जिसका
नाम जमलियेल था। पूरी क़ौम में वह इज़्ज़तदार
था। उसने हुक्म दिया कि रसूलों को थोड़ी देर
के लिए इजलास से निकाल दिया जाए। 35फिर
उसने कहा, “मेरे इसराईली भाइयो, ग़ौर से सोचें
कि आप इन आदमियों के साथ क्या करेंगे।
36क्योंकि कुछ देर हुई थियूदास उठकर कहने
लगा कि मैं कोई ख़ास शख़्स हूँ। तक़रीबन
400 आदमी उसके पीछे लग गए। लेकिन उसे
क़त्ल किया गया और उसके पैरोकार बिखर गए।
उनकी सरगरमियों से कुछ न हुआ। 37इसके बाद
मर्दुमशुमारी के दिनों में यहूदाह गलीली उठा।

उसने भी काफ़ी लोगों को अपने पैरोकार बनाकर
बग़ावत करने पर उकसाया। लेकिन उसे भी
मार दिया गया और उसके पैरोकार मुंतशिर हुए।
38यह पेशे-नज़र रखकर मेरा मशवरा यह है कि
इन लोगों को छोड़ दें, इन्हें जाने दें। अगर इनका
इरादा या सरगरमियाँ इनसानी हैं तो सब कुछ
ख़ुद बख़ुद ख़त्म हो जाएगा। 39लेकिन अगर यह
अल्लाह की तरफ़ से है तो आप इन्हें ख़त्म नहीं
कर सकेंगे। ऐसा न हो कि आख़िरकार आप
अल्लाह ही के ख़िलाफ़ लड़ रहे हों।”

हाज़िरीन ने उस की बात मान ली। 40उन्होंने
रसूलों को बुलाकर उनको कोड़े लगवाए। फिर
उन्होंने उन्हें ईसा का नाम लेकर बोलने से मना
किया और फिर जाने दिया। 41रसूल यहूदी
अदालते-आलिया से निकलकर चले गए। यह
बात उनके लिए बड़ी ख़ुशी का बाइस थी कि
अल्लाह ने हमें इस लायक़ समझा है कि ईसा के
नाम की ख़ातिर बेइज़्ज़त हो जाएँ। 42इसके बाद
भी वह रोज़ाना बैतुल-मुक़द्दस और मुख़्तलिफ़
घरों में जा जाकर सिखाते और इस ख़ुशख़बरी
की मुनादी करते रहे कि ईसा ही मसीह है।

रसूलों के सात मददगार

6 उन दिनों में जब ईसा के शागिर्दों की तादाद
बढ़ती गई तो यूनानी ज़बान बोलनेवाले
ईमानदार इबरानी बोलनेवाले ईमानदारों के बारे
में बुड़बुड़ाने लगे। उन्होंने कहा, “जब रोज़मर्रा
का खाना तक़सीम होता है तो हमारी बेवाओं को
नज़रंदाज़ किया जाता है।” 2तब बारह रसूलों ने
शागिर्दों की पूरी जमात को इकट्ठा करके कहा,
“यह ठीक नहीं कि हम अल्लाह का कलाम
सिखाने की ख़िदमत को छोड़कर खाना तक़सीम
करने में मसरूफ़ रहें। 3भाइयो, यह बात पेशे-
नज़र रखकर अपने में से सात आदमी चुन लें,
जिनके नेक किरदार की आप तसदीक़ कर सकते
हैं और जो रूहुल-क़ुद्स और हिकमत से मामूर
हैं। फिर हम उन्हें खाना तक़सीम करने की यह
ज़िम्मेदारी देकर 4अपना पूरा वक़्त दुआ और
कलाम की ख़िदमत में सर्फ़ कर सकेंगे।”

5यह बात पूरी जमात को पसंद आई और
उन्होंने सात आदमी चुन लिए : स्तिफ़नुस
(जो ईमान और रूहुल-क़ुद्स से मामूर था),
फ़िलिप्पुस, प्रुख़ुरुस, नीकानोर, तीमोन,
परमिनास और अंताकिया का नीकुलाउस।
(नीकुलाओस ग़ैरयहूदी था जिसने ईसा पर ईमान
लाने से पहले यहूदी मज़हब को अपना लिया
था।) 6इन सात आदमियों को रसूलों के सामने
पेश किया गया तो उन्होंने इन पर हाथ रखकर
दुआ की।

7यों अल्लाह का पैग़ाम फैलता गया।
यरूशलम में ईमानदारों की तादाद निहायत बढ़ती
गई और बैतुल-मुक़द्दस के बहुत-से इमाम भी
ईमान ले आए।

स्तिफ़नुस की गिरिफ़्तारी

8स्तिफ़नुस अल्लाह के फ़ज़ल और क़ु-
व्वत से मामूर था और लोगों के दरमियान
बड़े बड़े मोजिज़े और इलाही निशान दिखाता
था। 9एक दिन कुछ यहूदी स्तिफ़नुस से
बहस करने लगे। (वह कुरेन, इस्कंदरिया,
किलिकिया और सूबा आसिया के रहनेवाले
थे और उनके इबादतख़ाने का नाम लिबर-
तीनियों यानी आज़ाद किए गए ग़ुलामों का
इबादतख़ाना था।) 10लेकिन वह न उस की
हिकमत का सामना कर सके, न उस रूह का
जो कलाम करते वक़्त उस की मदद करता था।
11इसलिए उन्होंने बाज़ आदमियों को यह कहने
को उकसाया कि “इसने मूसा और अल्लाह के
बारे में कुफ़र बका है। हम ख़ुद इसके गवाह
हैं।” 12यों आम लोगों, बुज़ुर्गों और शरीअत के
उलमा में हलचल मच गई। वह स्तिफ़नुस पर
चढ़ आए और उसे घसीटकर यहूदी अदालते-
आलिया के पास लाए। 13वहाँ उन्होंने झूटे गवाह
खड़े किए जिन्होंने कहा, “यह आदमी बैतुल-
मुक़द्दस और शरीअत के ख़िलाफ़ बातें करने से

बाज़ नहीं आता। 14हमने इसके मुँह से सुना है कि ईसा नासरी यह मक़ाम तबाह करेगा और वह रस्मो-रिवाज बदल देगा जो मूसा ने हमारे सुपुर्द किए हैं।” 15जब इजलास में बैठे तमाम लोग घूर घूरकर स्तिफ़नुस की तरफ़ देखने लगे तो उसका चेहरा फ़रिश्ते का-सा नज़र आया।

स्तिफ़नुस की तक़रीर

7 इमामे-आज़म ने पूछा, “क्या यह सच है?”

2स्तिफ़नुस ने जवाब दिया, “भाइयो और बुज़ुर्गो, मेरी बात सुनें। जलाल का ख़ुदा हमारे बाप इब्राहीम पर ज़ाहिर हुआ जब वह अभी मसोपुतामिया में आबाद था। उस वक़्त वह हारान में मुंतक़िल नहीं हुआ था। 3अल्लाह ने उससे कहा, ‘अपने वतन और अपनी क़ौम को छोड़कर इस मुल्क में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा।’
4चुनाँचे वह कसदियों के मुल्क को छोड़कर हारान में रहने लगा। वहाँ उसका बाप फ़ौत हुआ तो अल्लाह ने उसे इस मुल्क में मुंतक़िल किया जिसमें आप आज तक आबाद हैं। 5उस वक़्त अल्लाह ने उसे इस मुल्क में कोई भी मौरूसी ज़मीन न दी थी, एक मुरब्बा फ़ुट तक भी नहीं। लेकिन उसने उससे वादा किया, ‘मैं इस मुल्क को तेरे और तेरी औलाद के क़ब्ज़े में कर दूँगा,’ अगरचे उस वक़्त इब्राहीम के हाँ कोई बच्चा पैदा नहीं हुआ था। 6अल्लाह ने उसे यह भी बताया, ‘तेरी औलाद ऐसे मुल्क में रहेगी जो उसका नहीं होगा। वहाँ वह अजनबी और ग़ुलाम होगी, और उस पर 400 साल तक बहुत ज़ुल्म किया जाएगा। 7लेकिन मैं उस क़ौम की अदालत करूँगा जिसने उसे ग़ुलाम बनाया होगा। इसके बाद वह उस मुल्क में से निकलकर इस मक़ाम पर मेरी इबादत करेंगे।’ 8फिर अल्लाह ने इब्राहीम को ख़तना का अहद दिया। चुनाँचे जब इब्राहीम का बेटा इसहाक़ पैदा हुआ तो बाप ने आठवें दिन उसका ख़तना किया। यह सिलसिला जारी रहा जब इसहाक़ का बेटा याक़ूब पैदा हुआ और याक़ूब के बारह बेटे, हमारे बारह क़बीलों के सरदार।

9यह सरदार अपने भाई यूसुफ़ से हसद करने लगे और इसलिए उसे बेच दिया। यों वह ग़ुलाम बनकर मिसर पहुँचा। लेकिन अल्लाह उसके साथ रहा 10और उसे उस की तमाम मुसीबतों से रिहाई दी। उसने उसे दानाई अता करके इस क़ाबिल बना दिया कि वह मिसर के बादशाह फ़िरौन का मंज़ूरे-नज़र हो जाए। यों फ़िरौन ने उसे मिसर और अपने पूरे घराने पर हुक्मरान मुक़र्रर किया। 11फिर तमाम मिसर और कनान में काल पड़ा। लोग बड़ी मुसीबत में पड़ गए और हमारे बापदादा के पास भी ख़ुराक ख़त्म हो गई। 12याक़ूब को पता चला कि मिसर में अब तक अनाज है, इसलिए उसने अपने बेटों को अनाज ख़रीदने को वहाँ भेज दिया।
13जब उन्हें दूसरी बार वहाँ जाना पड़ा तो यूसुफ़ ने अपने आपको अपने भाइयों पर ज़ाहिर किया, और फ़िरौन को यूसुफ़ के ख़ानदान के बारे में आगाह किया गया। 14इसके बाद यूसुफ़ ने अपने बाप याक़ूब और तमाम रिश्तेदारों को बुला लिया। कुल 75 अफ़राद आए। 15यों याक़ूब मिसर पहुँचा। वहाँ वह और हमारे बापदादा मर गए।
16उन्हें सिकम में लाकर उस क़ब्र में दफ़नाया गया जो इब्राहीम ने हमोर की औलाद से पैसे देकर ख़रीदी थी।

17फिर वह वक़्त क़रीब आ गया जिसका वादा अल्लाह ने इब्राहीम से किया था। मिसर में हमारी क़ौम की तादाद बहुत बढ़ चुकी थी। 18लेकिन होते होते एक नया बादशाह तख़्तनशीन हुआ जो यूसुफ़ से नावाक़िफ़ था। 19उसने हमारी क़ौम का इस्तेह्साल करके उनसे बदसुलूकी की और उन्हें अपने शीरख़ार बच्चों को ज़ाया करने पर मजबूर किया। 20उस वक़्त मूसा पैदा हुआ। वह अल्लाह के नज़दीक ख़ूबसूरत बच्चा था और तीन माह तक अपने बाप के घर में पाला गया। 21इसके बाद वालिदैन को उसे छोड़ना पड़ा, लेकिन फ़िरौन की बेटी ने उसे लेपालक बनाकर अपने बेटे के तौर पर पाला। 22और मूसा को मिसरियों की हिकमत

के हर शोबे में तरबियत मिली। उसे बोलने और
अमल करने की ज़बरदस्त क़ाबिलियत हासिल
थी।

23जब वह चालीस साल का था तो उसे अपनी
क़ौम इसराईल के लोगों से मिलने का ख़याल
आया। 24जब उसने उनके पास जाकर देखा कि
एक मिसरी किसी इसराईली पर तशद्दुद कर रहा
है तो उसने इसराईली की हिमायत करके मज़लूम
का बदला लिया और मिसरी को मार डाला।
25उसका ख़याल तो यह था कि मेरे भाइयों को
समझ आएगी कि अल्लाह मेरे वसीले से उन्हें
रिहाई देगा, लेकिन ऐसा नहीं था। 26अगले दिन
वह दो इसराईलियों के पास से गुज़रा जो आपस
में लड़ रहे थे। उसने सुलह कराने की कोशिश
में कहा, 'मर्दो, आप तो भाई हैं। आप क्यों एक
दूसरे से ग़लत सुलूक कर रहे हैं?' 27लेकिन
जो आदमी दूसरे से बदसुलूकी कर रहा था उसने
मूसा को एक तरफ़ धकेलकर कहा, 'किसने
आपको हम पर हुक्मरान और क़ाज़ी मुक़र्रर किया
है? 28क्या आप मुझे भी क़त्ल करना चाहते
हैं जिस तरह कल मिसरी को मार डाला था?'
29यह सुनकर मूसा फ़रार होकर मुल्के-मिदियान
में अजनबी के तौर पर रहने लगा। वहाँ उसके दो
बेटे पैदा हुए।

30चालीस साल के बाद एक फ़रिश्ता जलती
हुई काँटेदार झाड़ी के शोले में उस पर ज़ाहिर
हुआ। उस वक़्त मूसा सीना पहाड़ के क़रीब
रेगिस्तान में था। 31यह मंज़र देखकर मूसा हैरान
हुआ। जब वह उसका मुआयना करने के लिए
क़रीब पहुँचा तो रब की आवाज़ सुनाई दी, 32'मैं
तेरे बापदादा का ख़ुदा, इब्राहीम, इसहाक़ और
याक़ूब का ख़ुदा हूँ।' मूसा थरथराने लगा और उस
तरफ़ देखने की जुर्रत न की। 33फिर रब ने उससे
कहा, 'अपनी जूतियाँ उतार, क्योंकि तू मुक़द्दस
ज़मीन पर खड़ा है। 34मैंने मिसर में अपनी क़ौम
की बुरी हालत देखी और उनकी आहें सुनी हैं,
इसलिए उन्हें बचाने के लिए उतर आया हूँ। अब
जा, मैं तुझे मिसर भेजता हूँ।'

35यों अल्लाह ने उस शख़्स को उनके पास
भेज दिया जिसे वह यह कहकर रद्द कर चुके
थे कि 'किसने आपको हम पर हुक्मरान और
क़ाज़ी मुक़र्रर किया है?' जलती हुई काँटेदार
झाड़ी में मौजूद फ़रिश्ते की मारिफ़त अल्लाह ने
मूसा को उनके पास भेज दिया ताकि वह उनका
हुक्मरान और नजातदहिंदा बन जाए। 36और वह
मोजिज़े और इलाही निशान दिखाकर उन्हें मिसर
से निकाल लाया, फिर बहरे-क़ुलज़ुम से गुज़रकर
40 साल के दौरान रेगिस्तान में उनकी राहनुमाई
की। 37मूसा ने ख़ुद इसराईलियों को बताया,
'अल्लाह तुम्हारे वास्ते तुम्हारे भाइयों में से मुझ
जैसे नबी को बरपा करेगा।' 38मूसा रेगिस्तान में
क़ौम की जमात में शरीक था। एक तरफ़ वह उस
फ़रिश्ते के साथ था जो सीना पहाड़ पर उससे
बातें करता था, दूसरी तरफ़ हमारे बापदादा के
साथ। फ़रिश्ते से उसे ज़िंदगीबख़्श बातें मिल गईं
जो उसे हमारे सुपुर्द करनी थीं।

39लेकिन हमारे बापदादा ने उस की सुनने से
इनकार करके उसे रद्द कर दिया। दिल ही दिल
में वह मिसर की तरफ़ रुजू कर चुके थे। 40वह
हारून से कहने लगे, 'आएँ, हमारे लिए देवता बना
दें जो हमारे आगे आगे चलते हुए हमारी राहनुमाई
करें। क्योंकि क्या मालूम कि उस बंदे मूसा को
क्या हुआ है जो हमें मिसर से निकाल लाया।'
41उसी वक़्त उन्होंने बछड़े का बुत बनाकर उसे
क़ुरबानियाँ पेश कीं और अपने हाथों के काम की
ख़ुशी मनाई। 42इस पर अल्लाह ने अपना मुँह फेर
लिया और उन्हें सितारों की पूजा की गिरिफ़्त में
छोड़ दिया, बिलकुल उसी तरह जिस तरह नबियों
के सहीफ़े में लिखा है,

'ऐ इसराईल के घराने,
जब तुम रेगिस्तान में घुमते-फिरते थे
तो क्या तुमने उन 40 सालों के दौरान
कभी मुझे ज़बह और ग़ल्ला
  की क़ुरबानियाँ पेश कीं?
43नहीं, उस वक़्त भी
  तुम मलिक देवता का ताबूत

और रिफ़ान देवता का सितारा
उठाए फिरते थे,
गो तुमने अपने हाथों से यह बुत
पूजा करने के लिए बना लिए थे।
इसलिए मैं तुम्हें जिलावतन करके
बाबल के पार बसा दूँगा।’

44रेगिस्तान में हमारे बापदादा के पास
मुलाक़ात का ख़ैमा था। उसे उस नमूने के
मुताबिक़ बनाया गया था जो अल्लाह ने मूसा
को दिखाया था। 45मूसा की मौत के बाद हमारे
बापदादा ने उसे विरसे में पाकर अपने साथ ले
लिया जब उन्होंने यशुअ की राहनुमाई में इस
मुल्क में दाख़िल होकर उस पर क़ब्ज़ा कर लिया।
उस वक़्त अल्लाह उसमें आबाद क़ौमों को उनके
आगे आगे निकालता गया। यों मुलाक़ात का
ख़ैमा दाऊद बादशाह के ज़माने तक मुल्क में
रहा। 46दाऊद अल्लाह का मंज़ूरे-नज़र था। उसने
याक़ूब के ख़ुदा को एक सुकूनतगाह मुहैया करने
की इजाज़त माँगी। 47लेकिन सुलेमान को उसके
लिए मकान बनाने का एज़ाज़ हासिल हुआ।

48हक़ीक़त में अल्लाह तआला इनसान के हाथ
के बनाए हुए मकानों में नहीं रहता। नबी रब का
फ़रमान यों बयान करता है,

49‘आसमान मेरा तख़्त है
और ज़मीन मेरे पाँवों की चौकी,
तो फिर तुम मेरे लिए किस क़िस्म
का घर बनाओगे?
वह जगह कहाँ है जहाँ मैं आराम करूँगा?
50क्या मेरे हाथ ने
यह सब कुछ नहीं बनाया?’

51ऐ गरदनकश लोगो! बेशक आपका ख़तना
हुआ है जो अल्लाह की क़ौम का ज़ाहिरी निशान
है। लेकिन उसका आपके दिलों और कानों पर
कुछ भी असर नहीं हुआ। आप अपने बापदादा
की तरह हमेशा रूहुल-क़ुद्स की मुख़ालफ़त करते
रहते हैं। 52क्या कभी कोई नबी था जिसे आपके
बापदादा ने न सताया? उन्होंने उन्हें भी क़त्ल
किया जिन्होंने रास्तबाज़ मसीह की पेशगोई की,
उस शख़्स की जिसे आपने दुश्मनों के हवाले
करके मार डाला। 53आप ही को फ़रिश्तों के हाथ
से अल्लाह की शरीअत हासिल हुई मगर उस पर
अमल नहीं किया।”

स्तिफ़नुस को संगसार किया जाता है

54स्तिफ़नुस की यह बातें सुनकर इजलास के
लोग तैश में आकर दाँत पीसने लगे। 55लेकिन
स्तिफ़नुस रूहुल-क़ुद्स से मामूर अपनी नज़र
उठाकर आसमान की तरफ़ तकने लगा। वहाँ
उसे अल्लाह का जलाल नज़र आया, और ईसा
अल्लाह के दहने हाथ खड़ा था। 56उसने कहा,
“देखो, मुझे आसमान खुला हुआ दिखाई दे रहा
है और इब्ने-आदम अल्लाह के दहने हाथ खड़ा
है!”

57यह सुनते ही उन्होंने चीख़ चीख़कर हाथों
से अपने कानों को बंद कर लिया और मिलकर
उस पर झपट पड़े। 58फिर वह उसे शहर से
निकालकर संगसार करने लगे। और जिन लोगों
ने उसके ख़िलाफ़ गवाही दी थी उन्होंने अपनी
चादरें उतारकर एक जवान आदमी के पाँवों में
रख दीं। उस आदमी का नाम साऊल था। 59जब
वह स्तिफ़नुस को संगसार कर रहे थे तो उसने
दुआ करके कहा, “ऐ ख़ुदावंद ईसा, मेरी रूह को
क़बूल कर।” 60फिर घुटने टेककर उसने ऊँची
आवाज़ से कहा, “ऐ ख़ुदावंद, उन्हें इस गुनाह के
ज़िम्मेदार न ठहरा।” यह कहकर वह इंतक़ाल कर
गया।

8 और साऊल को भी स्तिफ़नुस का क़त्ल
मंज़ूर था।

साऊल जमात को सताता है

उस दिन यरूशलम में मौजूद जमात सख़्त
ईज़ारसानी की ज़द में आ गई। इसलिए सिवाए
रसूलों के तमाम ईमानदार यहूदिया और सामरिया
के इलाक़ों में तित्तर-बित्तर हो गए। 2कुछ
ख़ुदातरस आदमियों ने स्तिफ़नुस को दफ़न करके
रो रोकर उसका मातम किया।

3लेकिन साऊल ईसा की जमात को तबाह
करने पर तुला हुआ था। उसने घर घर जाकर
ईमानदार मर्दो-ख़वातीन को निकाल दिया और
उन्हें घसीटकर क़ैदख़ाने में डलवा दिया।

ख़ुशख़बरी सामरिया में फैल जाती है

4जो ईमानदार बिखर गए थे वह जगह जगह
जाकर अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाते फिरे। 5इस
तरह फ़िलिप्पुस सामरिया के किसी शहर को
गया और वहाँ के लोगों को मसीह के बारे में
बताया। 6जो कुछ भी फ़िलिप्पुस ने कहा और
जो भी इलाही निशान उसने दिखाए, उस पर
सुननेवाले हुजूम ने यकदिल होकर तवज्जुह दी।
7बहुत-से लोगों में से बदरूहें ज़ोरदार चीख़ें मार
मारकर निकल गईं, और बहुत-से मफ़लूजों और
लँगड़ों को शफ़ा मिल गई। 8यों उस शहर में बड़ी
शादमानी फैल गई।

9वहाँ काफ़ी अरसे से एक आदमी रहता था
जिसका नाम शमाऊन था। वह जादूगर था और
उसके हैरतअंगेज़ काम से सामरिया के लोग बहुत
मुतअस्सिर थे। उसका अपना दावा था कि मैं
कोई ख़ास शख़्स हूँ। 10इसलिए सब लोग छोटे
से लेकर बड़े तक उस पर ख़ास तवज्जुह देते
थे। उनका कहना था, 'यह आदमी वह इलाही
क़ुव्वत है जो अज़ीम कहलाती है।' 11वह इसलिए
उसके पीछे लग गए थे कि उसने उन्हें बड़ी देर
से अपने हैरतअंगेज़ कामों से मुतअस्सिर कर
रखा था। 12लेकिन अब लोग फ़िलिप्पुस की
अल्लाह की बादशाही और ईसा के नाम के बारे में
ख़ुशख़बरी पर ईमान ले आए, और मर्दो-ख़वातीन
ने बपतिस्मा लिया। 13ख़ुद शमाऊन ने भी ईमान
लाकर बपतिस्मा लिया और फ़िलिप्पुस के साथ
रहा। जब उसने वह बड़े इलाही निशान और
मोजिज़े देखे जो फ़िलिप्पुस के हाथ से ज़ाहिर हुए
तो वह हक्का-बक्का रह गया।

14जब यरूशलम में रसूलों ने सुना कि
सामरिया ने अल्लाह का कलाम क़बूल कर
लिया है तो उन्होंने पतरस और यूहन्ना को उनके
पास भेज दिया। 15वहाँ पहुँचकर उन्होंने उनके
लिए दुआ की कि उन्हें रूहुल-क़ुद्स मिल जाए,
16क्योंकि अभी रूहुल-क़ुद्स उन पर नाज़िल नहीं
हुआ था बल्कि उन्हें सिर्फ़ ख़ुदावंद ईसा के नाम में
बपतिस्मा दिया गया था। 17अब जब पतरस और
यूहन्ना ने अपने हाथ उन पर रखे तो उन्हें रूहुल-
क़ुद्स मिल गया।

18शमाऊन ने देखा कि जब रसूल लोगों पर
हाथ रखते हैं तो उनको रूहुल-क़ुद्स मिलता है।
इसलिए उसने उन्हें पैसे पेश करके 19कहा, "मुझे
भी यह इख़्तियार दे दें कि जिस पर मैं हाथ रखूँ
उसे रूहुल-क़ुद्स मिल जाए।"

20लेकिन पतरस ने जवाब दिया, "आपके पैसे
आपके साथ ग़ारत हो जाएँ, क्योंकि आपने सोचा
कि अल्लाह की नेमत पैसों से ख़रीदी जा सकती
है। 21इस ख़िदमत में आपका कोई हिस्सा नहीं है,
क्योंकि आपका दिल अल्लाह के सामने ख़ालिस
नहीं है। 22अपनी इस शरारत से तौबा करके
ख़ुदावंद से दुआ करें। शायद वह आपको इस
इरादे की मुआफ़ी दे जो आपने दिल में रखा है।
23क्योंकि मैं देखता हूँ कि आप कड़वे पित से भरे
और नारास्ती के बंधन में जकड़े हुए हैं।"

24शमाऊन ने कहा, "फिर ख़ुदावंद से मेरे लिए
दुआ करें कि आपकी मज़कूरा मुसीबतों में से मुझ
पर कोई न आए।"

25ख़ुदावंद के कलाम की गवाही देने और उस
की मुनादी करने के बाद पतरस और यूहन्ना
वापस यरूशलम के लिए रवाना हुए। रास्ते में
उन्होंने सामरिया के बहुत-से देहातों में अल्लाह
की ख़ुशख़बरी सुनाई।

फ़िलिप्पुस और एथोपिया का अफ़सर

26एक दिन रब के फ़रिश्ते ने फ़िलिप्पुस से
कहा, "उठकर जुनूब की तरफ़ उस राह पर
जा जो रेगिस्तान में से गुज़रकर यरूशलम से
ग़ज़्ज़ा को जाती है।" 27फ़िलिप्पुस उठकर रवाना
हुआ। चलते चलते उस की मुलाक़ात एथोपिया
की मलिका कंदाके के एक ख़्वाजासरा से हुई।

मलिका के पूरे ख़ज़ाने पर मुक़र्रर यह दरबारी
इबादत करने के लिए यरूशलम गया था 28और
अब अपने मुल्क में वापस जा रहा था। उस
वक़्त वह रथ में सवार यसायाह नबी की किताब
की तिलावत कर रहा था। 29रूहुल-क़ुद्स ने
फ़िलिप्पुस से कहा, “उसके पास जाकर रथ
के साथ हो ले।” 30फ़िलिप्पुस दौड़कर रथ के
पास पहुँचा तो सुना कि वह यसायाह नबी की
किताब की तिलावत कर रहा है। उसने पूछा,
“क्या आपको उस सबकी समझ आती है जो
आप पढ़ रहे हैं?”

31दरबारी ने जवाब दिया, “मैं क्योंकर समझूँ
जब तक कोई मेरी राहनुमाई न करे?” और उसने
फ़िलिप्पुस को रथ में सवार होने की दावत दी।
32कलामे-मुक़द्दस का जो हवाला वह पढ़ रहा था
यह था,

‘उसे भेड़ की तरह
ज़बह करने के लिए ले गए।
जिस तरह लेला बाल कतरनेवाले
के सामने ख़ामोश रहता है,
उसी तरह उसने अपना मुँह न खोला।
33उस की तज़लील की गई
और उसे इनसाफ़ न मिला।
कौन उस की नसल बयान कर सकता है?
क्योंकि उस की जान
दुनिया से छीन ली गई।’

34दरबारी ने फ़िलिप्पुस से पूछा, “मेहर-
बानी करके मुझे बता दीजिए कि नबी यहाँ
किसका ज़िक्र कर रहा है, अपना या किसी और
का?” 35जवाब में फ़िलिप्पुस ने कलामे-मुक़द्दस
के इसी हवाले से शुरू करके उसे ईसा के बारे
में ख़ुशख़बरी सुनाई। 36सड़क पर सफ़र करते
करते वह एक जगह से गुज़रे जहाँ पानी था।
ख़्वाजासरा ने कहा, “देखें, यहाँ पानी है। अब मुझे
बपतिस्मा लेने से कौन-सी चीज़ रोक सकती है?”
37[फ़िलिप्पुस ने कहा, “अगर आप पूरे दिल से
ईमान लाएँ तो ले सकते हैं।” उसने जवाब दिया,
“मैं ईमान रखता हूँ कि ईसा मसीह अल्लाह का
फ़रज़ंद है।”]

38उसने रथ को रोकने का हुक्म दिया। दोनों
पानी में उतर गए और फ़िलिप्पुस ने उसे बपतिस्मा
दिया। 39जब वह पानी से निकल आए तो
ख़ुदावंद का रूह फ़िलिप्पुस को उठा ले गया।
इसके बाद ख़्वाजासरा ने उसे फिर कभी न देखा,
लेकिन उसने ख़ुशी मनाते हुए अपना सफ़र जारी
रखा। 40इतने में फ़िलिप्पुस को अशदूद शहर में
पाया गया। वह वहाँ और क़ैसरिया तक के तमाम
शहरों में से गुज़रकर अल्लाह की ख़ुशख़बरी
सुनाता गया।

पौलुस की तबदीली

9 अब तक साऊल ख़ुदावंद के शागिर्दों
को धमकाने और क़त्ल करने के दरपै
था। उसने इमामे-आज़म के पास जाकर 2उससे
गुज़ारिश की कि “मुझे दमिश्क़ में यहूदी
इबादतख़ानों के लिए सिफ़ारिशी ख़त लिखकर
दें ताकि वह मेरे साथ तावुन करें। क्योंकि मैं वहाँ
मसीह की राह पर चलनेवालों को ख़ाह वह मर्द
हों या ख़वातीन ढूँडकर और बाँधकर यरूशलम
लाना चाहता हूँ।”

3वह इस मक़सद से सफ़र करके दमिश्क़
के क़रीब पहुँचा ही था कि अचानक आस-
मान की तरफ़ से एक तेज़ रौशनी उसके गिर्द
चमकी। 4वह ज़मीन पर गिर पड़ा तो एक आवाज़
सुनाई दी, “साऊल, साऊल, तू मुझे क्यों सताता
है?”

5उसने पूछा, “ख़ुदावंद, आप कौन हैं?”

आवाज़ ने जवाब दिया, “मैं ईसा हूँ जिसे तू
सताता है। 6अब उठकर शहर में जा। वहाँ तुझे
बताया जाएगा कि तुझे क्या करना है।”

7साऊल के पास खड़े हमसफ़र दम बख़ुद रह
गए। आवाज़ तो वह सुन रहे थे, लेकिन उन्हें
कोई नज़र न आया। 8साऊल ज़मीन पर से उठा,
लेकिन जब उसने अपनी आँखें खोलीं तो मालूम
हुआ कि वह अंधा है। चुनाँचे उसके साथी उसका

हाथ पकड़कर उसे दमिश्क़ ले गए। 9वहाँ तीन दिन के दौरान वह अंधा रहा। इतने में उसने न कुछ खाया, न पिया।

10उस वक़्त दमिश्क़ में ईसा का एक शागिर्द रहता था जिसका नाम हननियाह था। अब ख़ुदावंद रोया में उससे हमकलाम हुआ, “हननियाह!”

उसने जवाब दिया, “जी ख़ुदावंद, मैं हाज़िर हूँ।”

11ख़ुदावंद ने फ़रमाया, “उठ, उस गली में जा जो ‘सीधी’ कहलाती है। वहाँ यहूदाह के घर में तरसुस के एक आदमी का पता करना जिसका नाम साऊल है। क्योंकि देख, वह दुआ कर रहा है। 12और रोया में उसने देख लिया है कि एक आदमी बनाम हननियाह मेरे पास आकर अपने हाथ मुझ पर रखेगा। इससे मेरी आँखें बहाल हो जाएँगी।”

13हननियाह ने एतराज़ किया, “ऐ ख़ुदावंद, मैंने बहुत-से लोगों से उस शख़्स की शरीर हरकतों के बारे में सुना है। यरूशलम में उसने तेरे मुक़द्दसों के साथ बहुत ज़्यादती की है। 14अब उसे राहनुमा इमामों से इख़्तियार मिल गया है कि यहाँ भी हर एक को गिरिफ़्तार करे जो तेरी इबादत करता है।”

15लेकिन ख़ुदावंद ने कहा, “जा, यह आदमी मेरा चुना हुआ वसीला है जो मेरा नाम ग़ैरयहूदियों, बादशाहों और इसराईलियों तक पहुँचाएगा। 16और मैं उसे दिखा दूँगा कि उसे मेरे नाम की ख़ातिर कितना दुख उठाना पड़ेगा।”

17चुनाँचे हननियाह मज़कूरा घर के पास गया, उसमें दाख़िल हुआ और अपने हाथ साऊल पर रख दिए। उसने कहा, “साऊल भाई, ख़ुदावंद ईसा जो आप पर ज़ाहिर हुआ जब आप यहाँ आ रहे थे उसी ने मुझे भेजा है ताकि आप दुबारा देख पाएँ और रूहुल-क़ुद्स से मामूर हो जाएँ।” 18यह कहते ही छिलकों जैसी कोई चीज़ साऊल की आँखों पर से गिरी और वह दुबारा देखने लगा। उसने उठकर बपतिस्मा लिया, 19फिर कुछ खाना खाकर नए सिरे से तक़वियत पाई।

साऊल दमिश्क़ में अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाता है

साऊल कई दिन शागिर्दों के साथ दमिश्क़ में रहा। 20उसी वक़्त वह सीधा यहूदी इबादतख़ानों में जाकर एलान करने लगा कि ईसा अल्लाह का फ़रज़ंद है।

21और जिसने भी उसे सुना वह हैरान रह गया और पूछा, “क्या यह वह आदमी नहीं जो यरूशलम में ईसा की इबादत करनेवालों को हलाक कर रहा था? और क्या वह इस मक़सद से यहाँ नहीं आया कि ऐसे लोगों को बाँधकर राहनुमा इमामों के पास ले जाए?”

22लेकिन साऊल रोज़ बरोज़ ज़ोर पकड़ता गया, और चूँकि उसने साबित किया कि ईसा वादा किया हुआ मसीह है इसलिए दमिश्क़ में आबाद यहूदी उलझन में पड़ गए।

23चुनाँचे काफ़ी दिनों के बाद उन्होंने मिलकर उसे क़त्ल करने का मनसूबा बनाया। 24लेकिन साऊल को पता चल गया। यहूदी दिन-रात शहर के दरवाज़ों की पहरादारी करते रहे ताकि उसे क़त्ल करें, 25इसलिए उसके शागिर्दों ने उसे रात के वक़्त टोकरे में बिठाकर शहर की चारदीवारी के एक सूराख़ में से उतार दिया।

साऊल यरूशलम में

26साऊल यरूशलम वापस चला गया। वहाँ उसने शागिर्दों से राबिता करने की कोशिश की, लेकिन सब उससे डरते थे, क्योंकि उन्हें यक़ीन नहीं आया था कि वह वाक़ई ईसा का शागिर्द बन गया है। 27फिर बरनबास उसे रसूलों के पास ले आया। उसने उन्हें साऊल के बारे में सब कुछ बताया, कि उसने दमिश्क़ की तरफ़ सफ़र करते वक़्त रास्ते में ख़ुदावंद को देखा, कि ख़ुदावंद उससे हमकलाम हुआ था और उसने दमिश्क़ में दिलेरी से ईसा के नाम से बात की थी। 28चुनाँचे

साऊल उनके साथ रहकर आज़ादी से यरूशलम
में फिरने और दिलेरी से ख़ुदावंद ईसा के नाम
से कलाम करने लगा। 29उसने यूनानी ज़बान
बोलनेवाले यहूदियों से भी मुख़ातिब होकर बहस
की, लेकिन जवाब में वह उसे क़त्ल करने की
कोशिश करने लगे। 30जब भाइयों को मालूम
हुआ तो उन्होंने उसे क़ैसरिया पहुँचा दिया और
जहाज़ में बिठाकर तरसुस के लिए रवाना कर
दिया।

31इस पर यहूदिया, गलील और सामरिया के
पूरे इलाक़े में फैली हुई जमात को अमनो-अमान
हासिल हुआ। रूहुल-क़ुद्स की हिमायत से उस
की तामीरो-तक़वियत हुई, वह ख़ुदा का ख़ौफ़
मानकर चलती रही और तादाद में भी बढ़ती गई।

पतरस लुद्दा और याफ़ा में

32एक दिन जब पतरस जगह जगह सफ़र कर
रहा था तो वह लुद्दा में आबाद मुक़द्दसों के पास
भी आया। 33वहाँ उस की मुलाक़ात एक आदमी
बनाम ऐनियास से हुई। ऐनियास मफ़लूज था।
वह आठ साल से बिस्तर से उठ न सका था।
34पतरस ने उससे कहा, "ऐनियास, ईसा मसीह
आपको शफ़ा देता है। उठकर अपना बिस्तर समेट
लें।" ऐनियास फ़ौरन उठ खड़ा हुआ। 35जब लुद्दा
और मैदानी इलाक़े शारून के तमाम रहनेवालों ने
उसे देखा तो उन्होंने ख़ुदावंद की तरफ़ रुजू किया।

36याफ़ा में एक औरत थी जो शागिर्द थी और
नेक काम करने और ख़ैरात देने में बहुत आगे
थी। उसका नाम तबीता (ग़ज़ाला) था। 37उन्हीं
दिनों में वह बीमार होकर फ़ौत हो गई। लोगों ने
उसे ग़ुस्ल देकर बालाख़ाने में रख दिया। 38लुद्दा
याफ़ा के क़रीब है, इसलिए जब शागिर्दों ने सुना
कि पतरस लुद्दा में है तो उन्होंने उसके पास
दो आदमियों को भेजकर इलतमास की, "सीधे
हमारे पास आएँ और देर न करें।" 39पतरस
उठकर उनके साथ चला गया। वहाँ पहुँचकर लोग
उसे बालाख़ाने में ले गए। तमाम बेवाओं ने उसे
घेर लिया और रोते चिल्लाते वह सारी क़मीसें और
बाक़ी लिबास दिखाने लगीं जो तबीता ने उनके
लिए बनाए थे जब वह अभी ज़िंदा थी। 40लेकिन
पतरस ने उन सबको कमरे से निकाल दिया और
घुटने टेककर दुआ की। फिर लाश की तरफ़
मुड़कर उसने कहा, "तबीता, उठें!" औरत ने
अपनी आँखें खोल दीं। पतरस को देखकर वह बैठ
गई। 41पतरस ने उसका हाथ पकड़ लिया और
उठने में उस की मदद की। फिर उसने मुक़द्दसों
और बेवाओं को बुलाकर तबीता को ज़िंदा उनके
सुपुर्द किया। 42यह वाक़िया पूरे याफ़ा में मशहूर
हुआ, और बहुत-से लोग ख़ुदावंद ईसा पर ईमान
लाए। 43पतरस काफ़ी दिनों तक याफ़ा में रहा।
वहाँ वह चमड़ा रँगनेवाले एक आदमी के घर ठहरा
जिसका नाम शमाऊन था।

पतरस और कुरनेलियुस

10 क़ैसरिया में एक रोमी अफ़सर[a]
रहता था जिसका नाम कुरने-
लियुस था। वह उस पलटन के सौ फ़ौजियों
पर मुक़र्रर था जो इतालवी कहलाती थी।
2कुरनेलियुस अपने पूरे घराने समेत दीनदार और
ख़ुदातरस था। वह फ़ैयाज़ी से ख़ैरात देता और
मुतवातिर दुआ में लगा रहता था। 3एक दिन उसने
तीन बजे दोपहर के वक़्त रोया देखी। उसमें उसने
साफ़ तौर पर अल्लाह का एक फ़रिश्ता देखा जो
उसके पास आया और कहा, "कुरनेलियुस!"

4वह घबरा गया और उसे ग़ौर से देखते हुए
कहा, "मेरे आक़ा, फ़रमाएँ।"

फ़रिश्ते ने कहा, "तुम्हारी दुआओं और ख़ैरात
की क़ुरबानी अल्लाह के हुज़ूर पहुँच गई है और
मंज़ूर है। 5अब कुछ आदमी याफ़ा भेज दो।
वहाँ एक आदमी बनाम शमाऊन है जो पतरस
कहलाता है। उसे बुलाकर ले आओ। 6पतरस
एक चमड़ा रँगनेवाले का मेहमान है जिसका नाम
शमाऊन है। उसका घर समुंदर के क़रीब वाक़े
है।"

[a]सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

7ज्योंही फ़रिश्ता चला गया कुरनेलियुस ने दो
नौकरों और अपने ख़िदमतगार फ़ौजियों में से एक
ख़ुदातरस आदमी को बुलाया। 8सब कुछ सुनाकर
उसने उन्हें याफ़ा भेज दिया।

9अगले दिन पतरस दोपहर तक़रीबन बारह बजे
दुआ करने के लिए छत पर चढ़ गया। उस वक़्त
कुरनेलियुस के भेजे हुए आदमी याफ़ा शहर के
क़रीब पहुँच गए थे। 10पतरस को भूक लगी और
वह कुछ खाना चाहता था। जब उसके लिए खाना
तैयार किया जा रहा था तो वह वज्द की हालत में
आ गया। 11उसने देखा कि आसमान खुल गया
है और एक चीज़ ज़मीन पर उतर रही है, कतान
की बड़ी चादर जैसी जो अपने चार कोनों से नीचे
उतारी जा रही है। 12चादर में तमाम क़िस्म के
जानवर हैं : चार पाँवों रखनेवाले, रेंगनेवाले और
परिंदे। 13फिर एक आवाज़ उससे मुख़ातिब हुई,
"उठ, पतरस। कुछ ज़बह करके खा!"

14पतरस ने एतराज़ किया, "हरगिज़ नहीं
ख़ुदावंद, मैंने कभी भी हराम या नापाक खाना
नहीं खाया।"

15लेकिन यह आवाज़ दुबारा उससे हम-
कलाम हुई, "जो कुछ अल्लाह ने पाक कर दिया
है उसे नापाक क़रार न दे।" 16यही कुछ तीन
मरतबा हुआ, फिर चादर को अचानक आसमान
पर वापस उठा लिया गया।

17पतरस बड़ी उलझन में पड़ गया। वह अभी
सोच रहा था कि इस रोया का क्या मतलब है
तो कुरनेलियुस के भेजे हुए आदमी शमाऊन के
घर का पता करके उसके गेट पर पहुँच गए।
18आवाज़ देकर उन्होंने पूछा, "क्या शमाऊन जो
पतरस कहलाता है आपके मेहमान हैं?"

19पतरस अभी रोया पर ग़ौर कर ही रहा था कि
रूहुल-क़ुद्स उससे हमकलाम हुआ, "शमाऊन,
तीन मर्द तेरी तलाश में हैं। 20उठ और छत से
उतरकर उनके साथ चला जा। मत झिजकना,
क्योंकि मैं ही ने उन्हें तेरे पास भेजा है।" 21चुनाँचे
पतरस उन आदमियों के पास गया और उनसे
कहा, "मैं वही हूँ जिसे आप ढूँड रहे हैं। आप क्यों
मेरे पास आए हैं?"

22उन्होंने जवाब दिया, "हम सौ फ़ौजियों पर
मुक़र्रर अफ़सर कुरनेलियुस के घर से आए हैं।
वह इनसाफ़परवर और ख़ुदातरस आदमी हैं।
पूरी यहूदी क़ौम इसकी तसदीक़ कर सकती है।
एक मुक़द्दस फ़रिश्ते ने उन्हें हिदायत दी कि
वह आपको अपने घर बुलाकर आपका पैग़ाम
सुनें।" 23यह सुनकर पतरस उन्हें अंदर ले गया
और उनकी मेहमान-नवाज़ी की। अगले दिन वह
उठकर उनके साथ रवाना हुआ। याफ़ा के कुछ
भाई भी साथ गए। 24एक दिन के बाद वह
क़ैसरिया पहुँच गया। कुरनेलियुस उनके इंतज़ार
में था। उसने अपने रिश्तेदारों और क़रीबी दोस्तों
को भी अपने घर जमा कर रखा था। 25जब
पतरस घर में दाख़िल हुआ तो कुरनेलियुस
ने उसके सामने गिरकर उसे सिजदा किया।
26लेकिन पतरस ने उसे उठाकर कहा, "उठें।
मैं भी इनसान ही हूँ।" 27और उससे बातें करते
करते वह अंदर गया और देखा कि बहुत-से लोग
जमा हो गए हैं। 28उसने उनसे कहा, "आप
जानते हैं कि किसी यहूदी के लिए किसी ग़ैरयहूदी
से रिफ़ाक़त रखना या उसके घर में जाना मना है।
लेकिन अल्लाह ने मुझे दिखाया है कि मैं किसी
को भी हराम या नापाक क़रार न दूँ। 29इस वजह
से जब मुझे बुलाया गया तो मैं एतराज़ किए बग़ैर
चला आया। अब मुझे बता दीजिए कि आपने मुझे
क्यों बुलाया है?"

30कुरनेलियुस ने जवाब दिया, "चार दिन की
बात है कि मैं इसी वक़्त दोपहर तीन बजे दुआ कर
रहा था। अचानक एक आदमी मेरे सामने आ खड़ा
हुआ। उसके कपड़े चमक रहे थे। 31उसने कहा,
'कुरनेलियुस, अल्लाह ने तुम्हारी दुआ सुन ली
और तुम्हारी ख़ैरात का ख़याल किया है। 32अब
किसी को याफ़ा भेजकर शमाऊन को बुला लो जो
पतरस कहलाता है। वह चमड़ा रँगनेवाले शमाऊन
का मेहमान है। शमाऊन का घर समुंदर के क़रीब
वाक़े है।' 33यह सुनते ही मैंने अपने लोगों को

आपको बुलाने के लिए भेज दिया। अच्छा हुआ
कि आप आ गए हैं। अब हम सब अल्लाह के हुज़ूर
हाज़िर हैं ताकि वह कुछ सुनें जो रब ने आपको
हमें बताने को कहा है।”

पतरस की तक़रीर

34फिर पतरस बोल उठा, “अब मैं समझ
गया हूँ कि अल्लाह वाक़ई जानिबदार नहीं,
35बल्कि हर किसी को क़बूल करता है जो उसका
ख़ौफ़ मानता और रास्त काम करता है। 36आप
अल्लाह की उस ख़ुशख़बरी से वाक़िफ़ हैं जो
उसने इसराईलियों को भेजी, यह ख़ुशख़बरी कि
ईसा मसीह के वसीले से सलामती आई है। ईसा
मसीह सबका ख़ुदावंद है। 37आपको वह कुछ
मालूम है जो गलील से शुरू होकर यहूदिया के
पूरे इलाक़े में हुआ यानी उस बपतिस्मे के बाद
जिसकी मुनादी यहया ने की। 38और आप जानते
हैं कि अल्लाह ने ईसा नासरी को रूहुल-क़ुद्स
और क़ुव्वत से मसह किया और कि इस पर उसने
जगह जगह जाकर नेक काम किया और इबलीस
के दबे हुए तमाम लोगों को शफ़ा दी, क्योंकि
अल्लाह उसके साथ था। 39जो कुछ भी उसने
मुल्के-यहूद और यरूशलम में किया, उसके गवाह
हम ख़ुद हैं। गो लोगों ने उसे लकड़ी पर लटकाकर
क़त्ल कर दिया 40लेकिन अल्लाह ने तीसरे दिन
उसे मुरदों में से ज़िंदा किया और उसे लोगों पर
ज़ाहिर किया। 41वह पूरी क़ौम पर तो ज़ाहिर नहीं
हुआ बल्कि हम पर जिनको अल्लाह ने पहले से
चुन लिया था ताकि हम उसके गवाह हों। हमने
उसके जी उठने के बाद उसके साथ खाने-पीने
की रिफ़ाक़त भी रखी। 42उस वक़्त उसने हमें
हुक्म दिया कि मुनादी करके क़ौम को गवाही दो
कि ईसा वही है जिसे अल्लाह ने ज़िंदों और मुरदों
पर मुंसिफ़ मुक़र्रर किया है। 43तमाम नबी उस
की गवाही देते हैं कि जो भी उस पर ईमान लाए
उसे उसके नाम के वसीले से गुनाहों की मुआफ़ी
मिल जाएगी।”

रूहुल-क़ुद्स ग़ैरयहूदियों पर नाज़िल होता है

44पतरस अभी यह बात कर ही रहा था कि
तमाम सुननेवालों पर रूहुल-क़ूदस नाज़िल हुआ।
45जो यहूदी ईमानदार पतरस के साथ आए थे
वह हक्का-बक्का रह गए कि रूहुल-क़ुद्स की
नेमत ग़ैरयहूदियों पर भी उंडेली गई है, 46क्योंकि
उन्होंने देखा कि वह ग़ैरज़बानें बोल रहे और
अल्लाह की तमजीद कर रहे हैं। तब पतरस ने
कहा, 47“अब कौन इनको बपतिस्मा लेने से रोक
सकता है? इन्हें तो हमारी तरह रूहुल-क़ुद्स
हासिल हुआ है।” 48और उसने हुक्म दिया कि
उन्हें ईसा मसीह के नाम से बपतिस्मा दिया जाए।
इसके बाद उन्होंने पतरस से गुज़ारिश की कि कुछ
दिन हमारे पास ठहरें।

यरूशलम की जमात में पतरस की रिपोर्ट

11 यह ख़बर रसूलों और यहूदिया
के बाक़ी भाइयों तक पहुँची कि
ग़ैरयहूदियों ने भी अल्लाह का कलाम क़बूल
किया है। 2चुनाँचे जब पतरस यरूशलम वापस
आया तो यहूदी ईमानदार उस पर एतराज़ करने
लगे, 3“आप ग़ैरयहूदियों के घर में गए और उनके
साथ खाना भी खाया।” 4फिर पतरस ने उनके
सामने तरतीब से सब कुछ बयान किया जो हुआ
था।

5“मैं याफ़ा शहर में दुआ कर रहा था कि वज्द
की हालत में आकर रोया देखी। आसमान से एक
चीज़ ज़मीन पर उतर रही है, कतान की बड़ी चादर
जैसी जो अपने चारों कोनों से उतारी जा रही है।
उतरती उतरती वह मुझ तक पहुँच गई। 6जब
मैंने ग़ौर से देखा तो पता चला कि उसमें तमाम
क़िस्म के जानवर हैं : चार पाँववाले, रेंगनेवाले
और परिंदे। 7फिर एक आवाज़ मुझसे मुख़ातिब
हुई, ‘पतरस, उठ! कुछ ज़बह करके खा!’ 8मैंने
एतराज़ किया, ‘हरगिज़ नहीं, ख़ुदावंद, मैंने कभी
भी हराम या नापाक खाना नहीं खाया।’ 9लेकिन
यह आवाज़ दुबारा मुझसे हमकलाम हुई, ‘जो
कुछ अल्लाह ने पाक कर दिया है उसे नापाक

क़रार न दे।’ 10तीन मरतबा ऐसा हुआ, फिर
चादर को जानवरों समेत वापस आसमान पर उठा
लिया गया। 11उसी वक़्त तीन आदमी उस घर
के सामने रुक गए जहाँ मैं ठहरा हुआ था। उन्हें
क़ैसरिया से मेरे पास भेजा गया था। 12रूहुल-
क़ुद्स ने मुझे बताया कि मैं बग़ैर झिजके उनके
साथ चला जाऊँ। यह मेरे छः भाई भी मेरे साथ
गए। हम रवाना होकर उस आदमी के घर में
दाख़िल हुए जिसने मुझे बुलाया था। 13उसने
हमें बताया कि एक फ़रिश्ता घर में उस पर
ज़ाहिर हुआ था जिसने उसे कहा था, ‘किसी को
याफ़ा भेजकर शमाऊन को बुला लो जो पतरस
कहलाता है। 14उसके पास वह पैग़ाम है जिसके
ज़रीए तुम अपने पूरे घराने समेत नजात पाओगे।’
15जब मैं वहाँ बोलने लगा तो रूहुल-क़ुद्स उन पर
नाज़िल हुआ, बिलकुल उसी तरह जिस तरह वह
शुरू में हम पर हुआ था। 16फिर मुझे वह बात याद
आई जो ख़ुदावंद ने कही थी, ‘यहया ने तुमको
पानी से बपतिस्मा दिया, लेकिन तुम्हें रूहुल-
क़ुद्स से बपतिस्मा दिया जाएगा।’ 17अल्लाह ने
उन्हें वही नेमत दी जो उसने हमें भी दी थी जो
ख़ुदावंद ईसा मसीह पर ईमान लाए थे। तो फिर
मैं कौन था कि अल्लाह को रोकता?”

18पतरस की यह बातें सुनकर यरूशलम के
ईमानदार एतराज़ करने से बाज़ आए और
अल्लाह की तमजीद करने लगे। उन्होंने कहा,
“तो इसका मतलब है कि अल्लाह ने ग़ैरयहूदियों
को भी तौबा करने और अबदी ज़िंदगी पाने का
मौक़ा दिया है।”

अंताकिया में जमात

19जो ईमानदार स्तिफ़नुस की मौत के बाद
की ईज़ारसानी से बिखर गए थे वह फ़ेनीके,
क़ुबरुस और अंताकिया तक पहुँच गए। जहाँ
भी वह जाते वहाँ अल्लाह का पैग़ाम सुनाते
अलबत्ता सिर्फ़ यहूदियों को। 20लेकिन उनमें से
कुरेन और क़ुबरुस के कुछ आदमी अंताकिया
शहर जाकर यूनानियों को भी ख़ुदावंद ईसा के
बारे में ख़ुशख़बरी सुनाने लगे। 21ख़ुदावंद की
क़ुदरत उनके साथ थी, और बहुत-से लोगों ने
ईमान लाकर ख़ुदावंद की तरफ़ रुजू किया।
22इसकी ख़बर यरूशलम की जमात तक पहुँच
गई तो उन्होंने बरनबास को अंताकिया भेज दिया।
23जब वह वहाँ पहुँचा और देखा कि अल्लाह के
फ़ज़ल से क्या कुछ हुआ है तो वह ख़ुश हुआ।
उसने उन सबकी हौसलाअफ़ज़ाई की कि वह पूरी
लग्न से ख़ुदावंद के साथ लिपटे रहें। 24बरनबास
नेक आदमी था जो रूहुल-क़ुद्स और ईमान से
मामूर था। चुनाँचे उस वक़्त बहुत-से लोग ख़ुदावंद
की जमात में शामिल हुए।

25इसके बाद वह साऊल की तलाश में तरसुस
चला गया। 26जब उसे मिला तो वह उसे
अंताकिया ले आया। वहाँ वह दोनों एक पूरे साल
तक जमात में शामिल होते और बहुत-से लोगों
को सिखाते रहे। अंताकिया पहला मक़ाम था जहाँ
ईमानदार मसीही कहलाने लगे।

27उन दिनों कुछ नबी यरूशलम से आकर
अंताकिया पहुँच गए। 28एक का नाम अगबुस
था। वह खड़ा हुआ और रूहुल-क़ुद्स की मारिफ़त
पेशगोई की कि रोम की पूरी ममलकत में
सख़्त काल पड़ेगा। (यह बात उस वक़्त पूरी
हुई जब शहनशाह क्लौदियुस की हुकूमत थी।)
29अगबुस की बात सुनकर अंताकिया के शागिर्दों
ने फ़ैसला किया कि हममें से हर एक अपनी माली
गुंजाइश के मुताबिक़ कुछ दे ताकि उसे यहूदिया
में रहनेवाले भाइयों की इमदाद के लिए भेजा जा
सके। 30उन्होंने अपने इस हदिये को बरनबास
और साऊल के सुपुर्द करके वहाँ के बुज़ुर्गों को
भेज दिया।

मज़ीद ईज़ारसानी

12 उन दिनों में बादशाह हेरोदेस
अग्रिप्पा जमात के कुछ ईमान-
दारों को गिरिफ़्तार करके उनसे बदसुलूकी करने
लगा। 2इस सिलसिले में उसने याक़ूब रसूल
(यूहन्ना के भाई) को तलवार से क़त्ल करवाया।

3जब उसने देखा कि यह हरकत यहूदियों को
पसंद आई है तो उसने पतरस को भी गिरिफ़्तार
कर लिया। उस वक़्त बेख़मीरी रोटी की ईद मनाई
जा रही थी। 4उसने उसे जेल में डालकर चार
दस्तों के हवाले कर दिया कि उस की पहरादारी
करें (हर दस्ते में चार फ़ौजी थे)। ख़याल था कि
ईद के बाद ही पतरस को अवाम के सामने खड़ा
करके उस की अदालत की जाए। 5यों पतरस
क़ैदख़ाने में रहा। लेकिन ईमानदारों की जमात
लगातार उसके लिए दुआ करती रही।

पतरस की रिहाई

6फिर अदालत का दिन क़रीब आ गया। पतरस
रात के वक़्त सो रहा था। अगले दिन हेरोदेस उसे
पेश करना चाहता था। पतरस दो फ़ौजियों के
दरमियान लेटा हुआ था जो दो ज़ंजीरों से उसके
साथ बँधे हुए थे। दीगर फ़ौजी दरवाज़े के सामने
पहरा दे रहे थे। 7अचानक एक तेज़ रौशनी कोठड़ी
में चमक उठी और रब का एक फ़रिश्ता पतरस
के सामने आ खड़ा हुआ। उसने उसके पहलू को
झटका देकर उसे जगा दिया और कहा, “जल्दी
करो! उठो!” तब पतरस की कलाइयों पर की
ज़ंजीरें गिर गईं। 8फिर फ़रिश्ते ने उसे बताया,
“अपने कपड़े और जूते पहन लो।” पतरस ने
ऐसा ही किया। फ़रिश्ते ने कहा, “अब अपनी
चादर ओढ़कर मेरे पीछे हो लो।” 9चुनाँचे पतरस
कोठड़ी से निकलकर फ़रिश्ते के पीछे हो लिया
अगरचे उसे अब तक समझ नहीं आई थी कि जो
कुछ हो रहा है हक़ीक़ी है। उसका ख़याल था कि
मैं रोया देख रहा हूँ। 10दोनों पहले पहरे से गुज़र
गए, फिर दूसरे से और यों शहर में पहुँचानेवाले
लोहे के गेट के पास आए। यह ख़ुद बख़ुद खुल
गया और वह दोनों निकलकर एक गली में चलने
लगे। चलते चलते फ़रिश्ते ने अचानक पतरस को
छोड़ दिया।

11फिर पतरस होश में आ गया। उसने कहा,
“वाक़ई, ख़ुदावंद ने अपने फ़रिश्ते को मेरे पास
भेजकर मुझे हेरोदेस के हाथ से बचाया है। अब
यहूदी क़ौम की तवक़्क़ो पूरी नहीं होगी।”

12जब यह बात उसे समझ आई तो वह यूहन्ना
मरक़ुस की माँ मरियम के घर चला गया। वहाँ
बहुत-से अफ़राद जमा होकर दुआ कर रहे थे।
13पतरस ने गेट खटखटाया तो एक नौकरानी
देखने के लिए आई। उसका नाम रुदी था। 14जब
उसने पतरस की आवाज़ पहचान ली तो वह ख़ुशी
के मारे गेट को खोलने के बजाए दौड़कर अंदर
चली गई और बताया, “पतरस गेट पर खड़े हैं!”
15हाज़िरीन ने कहा, “होश में आओ!” लेकिन
वह अपनी बात पर अड़ी रही। फिर उन्होंने कहा,
“यह उसका फ़रिश्ता होगा।”

16अब तक पतरस बाहर खड़ा खटखटा रहा
था। चुनाँचे उन्होंने गेट को खोल दिया। पतरस
को देखकर वह हैरान रह गए। 17लेकिन उसने
अपने हाथ से ख़ामोश रहने का इशारा किया और
उन्हें सारा वाक़िया सुनाया कि ख़ुदावंद मुझे किस
तरह जेल से निकाल लाया है। “याक़ूब और बाक़ी
भाइयों को भी यह बताना,” यह कहकर वह कहीं
और चला गया।

18अगली सुबह जेल के फ़ौजियों में बड़ी
हलचल मच गई कि पतरस का क्या हुआ है।
19जब हेरोदेस ने उसे ढूँडा और न पाया तो उसने
पहरेदारों का बयान लेकर उन्हें सज़ाए-मौत दे दी।

इसके बाद वह यहूदिया से चला गया और
क़ैसरिया में रहने लगा।

हेरोदेस अग्रिप्पा की मौत

20उस वक़्त वह सूर और सैदा के बाशिंदों
से निहायत नाराज़ था। इसलिए दोनों शहरों
के नुमाइंदे मिलकर सुलह की दरख़ास्त करने
के लिए उसके पास आए। वजह यह थी कि
उनकी ख़ुराक हेरोदेस के मुल्क से हासिल होती
थी। उन्होंने बादशाह के महल के इंचार्ज ब्लस्तुस
को इस पर आमादा किया कि वह उनकी मदद
करे 21और बादशाह से मिलने का दिन मुक़र्रर
किया। जब वह दिन आया तो हेरोदेस अपना

शाही लिबास पहनकर तख़्त पर बैठ गया और
एक अलानिया तक़रीर की। 22अवाम ने नारे लगा
लगाकर पुकारा, “यह अल्लाह की आवाज़ है,
इनसान की नहीं।” 23वह अभी यह कह रहे थे
कि रब के फ़रिश्ते ने हेरोदेस को मारा, क्योंकि
उसने लोगों की परस्तिश क़बूल करके अल्लाह
को जलाल नहीं दिया था। वह बीमार हुआ और
कीड़ों ने उसके जिस्म को खा खाकर ख़त्म कर
दिया। इसी हालत में वह मर गया।

24लेकिन अल्लाह का कलाम बढ़ता और
फैलता गया।

25इतने में बरनबास और साऊल अंता-
किया का हदिया लेकर यरूशलम पहुँच चुके थे।
उन्होंने पैसे वहाँ के बुज़ुर्गों के सुपुर्द कर दिए और
फिर यूहन्ना मरक़ुस को साथ लेकर वापस चले
गए।

बरनबास और साऊल को तबलीग़ी ख़िदमत के लिए चुना जाता है

13 अंताकिया की जमात में कई नबी और
उस्ताद थे : बरनबास, शमाऊन जो
काला कहलाता था, लूकियुस कुरेनी, मनाहेम
जिसने बादशाह हेरोदेस अंतिपास के साथ
परवरिश पाई थी और साऊल। 2एक दिन जब वह
रोज़ा रखकर ख़ुदावंद की परस्तिश कर रहे थे तो
रूहुल-क़ुद्स उनसे हमकलाम हुआ, “बरनबास
और साऊल को उस ख़ास काम के लिए अलग
करो जिसके लिए मैंने उन्हें बुलाया है।”

3इस पर उन्होंने मज़ीद रोज़े रखे और दुआ की,
फिर उन पर अपने हाथ रखकर उन्हें रुख़सत कर
दिया।

क़ुबरुस में

4यों बरनबास और साऊल को रूहुल-क़ुद्स
की तरफ़ से भेजा गया। पहले वह साहिली
शहर सलूकिया गए और वहाँ जहाज़ में बैठकर
जज़ीराए-क़ुबरुस के लिए रवाना हुए। 5जब
वह सलमीस शहर पहुँचे तो उन्होंने यहूदियों
के इबादतख़ानों में जाकर अल्लाह का कलाम
सुनाया। यूहन्ना मरक़ुस मददगार के तौर पर
उनके साथ था।

6पूरे जज़ीरे में से सफ़र करते करते वह पाफ़ुस
शहर तक पहुँच गए। वहाँ उनकी मुलाक़ात एक
यहूदी जादूगर से हुई जिसका नाम बर-ईसा
था। वह झूटा नबी था 7और जज़ीरे के गवर्नर
सिरगियुस पौलुस की ख़िदमत के लिए हाज़िर
रहता था। सिरगियुस एक समझदार आदमी था।
उसने बरनबास और साऊल को अपने पास बुला
लिया क्योंकि वह अल्लाह का कलाम सुनने का
ख़ाहिशमंद था। 8लेकिन जादूगर इलीमास (बर-
ईसा का दूसरा नाम) ने उनकी मुख़ालफ़त करके
गवर्नर को ईमान से बाज़ रखने की कोशिश की।
9फिर साऊल जो पौलुस भी कहलाता है रूहुल-
क़ुद्स से मामूर हुआ और ग़ौर से उस की तरफ़
देखने लगा। 10उसने कहा, “इबलीस के फ़रज़ंद!
तू हर क़िस्म के धोके और बदी से भरा हुआ है
और हर इनसाफ़ का दुश्मन है। क्या तू ख़ुदावंद
की सीधी राहों को बिगाड़ने की कोशिश से बाज़
न आएगा? 11अब ख़ुदावंद तुझे सज़ा देगा। तू
अंधा होकर कुछ देर के लिए सूरज की रौशनी
नहीं देखेगा।”

उसी लमहे धुंध और तारीकी जादूगर पर छा गई
और वह टटोल टटोलकर किसी को तलाश करने
लगा जो उस की राहनुमाई करे। 12यह माजरा
देखकर गवर्नर ईमान लाया, क्योंकि ख़ुदावंद की
तालीम ने उसे हैरतज़दा कर दिया था।

पिसिदिया के शहर अंताकिया में मुनादी

13फिर पौलुस और उसके साथी जहाज़ पर
सवार हुए और पाफ़ुस से रवाना होकर पिरगा
शहर पहुँच गए जो पंफ़ीलिया में है। वहाँ यूहन्ना
मरक़ुस उन्हें छोड़कर यरूशलम वापस चला गया।
14लेकिन पौलुस और बरनबास आगे निकलकर
पिसिदिया में वाक़े शहर अंताकिया पहुँचे जहाँ
वह सबत के दिन यहूदी इबादतख़ाने में जाकर
बैठ गए। 15तौरेत और नबियों के सहीफ़ों की

तिलावत के बाद इबादतख़ाने के राहनुमाओं ने
उन्हें कहला भेजा, “भाइयो, अगर आपके पास
लोगों के लिए कोई नसीहत की बात है तो उसे पेश
करें।” 16पौलुस खड़ा हुआ और हाथ का इशारा
करके बोलने लगा,

“इसराईल के मर्दो और ख़ुदातरस ग़ैर-
यहूदियो, मेरी बात सुनें! 17इस क़ौम इस-
राईल के ख़ुदा ने हमारे बापदादा को चुनकर उन्हें
मिसर में ही ताक़तवर बना दिया जहाँ वह अजनबी
थे। फिर वह उन्हें बड़ी क़ुदरत के साथ वहाँ से
निकाल लाया। 18जब वह रेगिस्तान में फिर रहे
थे तो वह चालीस साल तक उन्हें बरदाश्त करता
रहा। 19इसके बाद उसने मुल्के-कनान में सात
क़ौमों को तबाह करके उनकी ज़मीन इसराईल
को विरसे में दी। 20इतने में तक़रीबन 450 साल
गुज़र गए।

यशुअ की मौत पर अल्लाह ने उन्हें समुएल नबी
के दौर तक क़ाज़ी दिए ताकि उनकी राहनुमाई
करें। 21फिर इनसे तंग आकर उन्होंने बादशाह
माँगा, इसलिए उसने उन्हें साऊल बिन क़ीस दे
दिया जो बिनयमीन के क़बीले का था। साऊल
चालीस साल तक उनका बादशाह रहा, 22फिर
अल्लाह ने उसे हटाकर दाऊद को तख़्त पर
बिठा दिया। दाऊद वही आदमी है जिसके बारे
में अल्लाह ने गवाही दी, ‘मैंने दाऊद बिन यस्सी
में एक ऐसा आदमी पाया है जो मेरी सोच रखता
है। जो कुछ भी मैं चाहता हूँ उसे वह करेगा।’
23इसी बादशाह की औलाद में से ईसा निकला
जिसका वादा अल्लाह कर चुका था और जिसे
उसने इसराईल को नजात देने के लिए भेज
दिया। 24उसके आने से पेशतर यहया बपतिस्मा
देनेवाले ने एलान किया कि इसराईल की पूरी
क़ौम को तौबा करके बपतिस्मा लेने की ज़रूरत
है। 25अपनी ख़िदमत के इख़्तिताम पर उसने
कहा, ‘तुम्हारे नज़दीक मैं कौन हूँ? मैं वह नहीं हूँ
जो तुम समझते हो। लेकिन मेरे बाद वह आ रहा
है जिसके जूतों के तसमे मैं खोलने के लायक़ भी
नहीं हूँ।’

26भाइयो, इब्राहीम के फ़रज़ंदो और ख़ुदा
का ख़ौफ़ माननेवाले ग़ैरयहूदियो! नजात का
पैग़ाम हमें ही भेज दिया गया है। 27यरूशलम
के रहनेवालों और उनके राहनुमाओं ने ईसा को
न पहचाना बल्कि उसे मुजरिम ठहराया। यों
उनकी मारिफ़त नबियों की वह पेशगोइयाँ पूरी
हुईं जिनकी तिलावत हर सबत को की जाती है।
28और अगरचे उन्हें सज़ाए-मौत देने की वजह
न मिली तो भी उन्होंने पीलातुस से गुज़ारिश
की कि वह उसे सज़ाए-मौत दे। 29जब उनकी
मारिफ़त ईसा के बारे में तमाम पेशगोइयाँ पूरी
हुईं तो उन्होंने उसे सलीब से उतारकर क़ब्र में
रख दिया। 30लेकिन अल्लाह ने उसे मुरदों में
से ज़िंदा कर दिया 31और वह बहुत दिनों तक
अपने उन पैरोकारों पर ज़ाहिर होता रहा जो उसके
साथ गलील से यरूशलम आए थे। यह अब हमारी
क़ौम के सामने उसके गवाह हैं। 32और अब हम
आपको यह ख़ुशख़बरी सुनाने आए हैं कि जो
वादा अल्लाह ने हमारे बापदादा के साथ किया,
33उसे उसने ईसा को ज़िंदा करके हमारे लिए
जो उनकी औलाद हैं पूरा कर दिया है। यों दूसरे
ज़बूर में लिखा है, ‘तू मेरा फ़रज़ंद है, आज मैं
तेरा बाप बन गया हूँ।’ 34इस हक़ीक़त का ज़िक्र
भी कलामे-मुक़द्दस में किया गया है कि अल्लाह
उसे मुरदों में से ज़िंदा करके कभी गलने-सड़ने
नहीं देगा : ‘मैं तुम्हें उन मुक़द्दस और अनमिट
मेहरबानियों से नवाज़ूँगा जिनका वादा दाऊद से
किया था।’ 35यह बात एक और हवाले में पेश
की गई है, ‘तू अपने मुक़द्दस को गलने-सड़ने की
नौबत तक पहुँचने नहीं देगा।’ 36इस हवाले का
ताल्लुक़ दाऊद के साथ नहीं है, क्योंकि दाऊद
अपने ज़माने में अल्लाह की मरज़ी की ख़िदमत
करने के बाद फ़ौत होकर अपने बापदादा से
जा मिला। उस की लाश गलकर ख़त्म हो गई।
37बल्कि यह हवाला किसी और का ज़िक्र करता
है, उसका जिसे अल्लाह ने ज़िंदा कर दिया और
जिसका जिस्म गलने-सड़ने से दोचार न हुआ।
38भाइयो, अब मेरी यह बात जान लें, हम इसकी

मुनादी करने आए हैं कि आपको इस शख़्स ईसा
के वसीले से अपने गुनाहों की मुआफ़ी मिलती
है। मूसा की शरीअत आपको किसी तरह भी
रास्तबाज़ क़रार नहीं दे सकती थी, 39लेकिन
अब जो भी ईसा पर ईमान लाए उसे हर लिहाज़
से रास्तबाज़ क़रार दिया जाता है। 40इसलिए
ख़बरदार! ऐसा न हो कि वह बात आप पर पूरी
उतरे जो नबियों के सहीफ़ों में लिखी है,

41‘ग़ौर करो, मज़ाक़ उड़ानेवालो!
हैरतज़दा होकर हलाक हो जाओ।
क्योंकि मैं तुम्हारे जीते-जी
एक ऐसा काम करूँगा
जिसकी जब ख़बर सुनोगे
तो तुम्हें यक़ीन नहीं आएगा’।”

42जब पौलुस और बरनबास इबादतख़ाने से
निकलने लगे तो लोगों ने उनसे गुज़ारिश की,
“अगले सबत हमें इन बातों के बारे में मज़ीद कुछ
बताएँ।” 43इबादत के बाद बहुत-से यहूदी और
यहूदी ईमान के नौमुरीद पौलुस और बरनबास
के पीछे हो लिए, और दोनों ने उनसे बात करके
उनकी हौसलाअफ़्ज़ाई की कि अल्लाह के फ़ज़ल
पर क़ायम रहें।

44अगले सबत के दिन तक़रीबन तमाम शहर
ख़ुदावंद का कलाम सुनने को जमा हुआ।
45लेकिन जब यहूदियों ने हुजूम को देखा तो
वह हसद से जल गए और पौलुस की बातों
की तरदीद करके कुफ़र बकने लगे। 46इस पर
पौलुस और बरनबास ने उनसे साफ़ साफ़ कह
दिया, “लाज़िम था कि अल्लाह का कलाम पहले
आपको सुनाया जाए। लेकिन चूँकि आप उसे
मुस्तरद करके अपने आपको अबदी ज़िंदगी के
लायक़ नहीं समझते इसलिए हम अब ग़ैरयहूदियों
की तरफ़ रुख़ करते हैं। 47क्योंकि ख़ुदावंद ने हमें
यही हुक्म दिया जब उसने फ़रमाया, ‘मैंने तुझे
दीगर अक़वाम की रौशनी बना दी है ताकि तू मेरी
नजात को दुनिया की इंतहा तक पहुँचाए’।”

48यह सुनकर ग़ैरयहूदी ख़ुश हुए और ख़ुदावंद
के कलाम की तमजीद करने लगे। और जितने
अबदी ज़िंदगी के लिए मुक़र्रर किए गए थे वह
ईमान लाए।

49यों ख़ुदावंद का कलाम पूरे इलाक़े में फैल
गया। 50फिर यहूदियों ने शहर के लीडरों और
यहूदी ईमान रखनेवाली कुछ बारसूख ग़ैरयहूदी
ख़वातीन को उकसाकर लोगों को पौलुस और
बरनबास को सताने पर उभारा। आख़िरकार उन्हें
शहर की सरहद्दों से निकाल दिया गया। 51इस पर
वह उनके ख़िलाफ़ गवाही के तौर पर अपने जूतों
से गर्द झाड़कर आगे बढ़े और इकुनियुम शहर
पहुँच गए। 52और अंताकिया के शागिर्द ख़ुशी
और रूहुल-क़ुद्स से भरे रहे।

इकुनियुम में

14 इकुनियुम में पौलुस और बर-
नबास यहूदी इबादतख़ाने में जाकर
इतने इख़्तियार से बोले कि यहूदियों और
ग़ैरयहूदियों की बड़ी तादाद ईमान ले आई।
2लेकिन जिन यहूदियों ने ईमान लाने से इनकार
किया उन्होंने ग़ैरयहूदियों को उकसाकर भाइयों
के बारे में उनके ख़यालात ख़राब कर दिए। 3तो
भी रसूल काफ़ी देर तक वहाँ ठहरे। उन्होंने दिलेरी
से ख़ुदावंद के बारे में तालीम दी और ख़ुदावंद ने
अपने फ़ज़ल के पैग़ाम की तसदीक़ की। उसने
उनके हाथों इलाही निशान और मोजिज़े रूनुमा
होने दिए। 4लेकिन शहर में आबाद लोग दो गुरोहों
में बट गए। कुछ यहूदियों के हक़ में थे और कुछ
रसूलों के हक़ में।

5फिर कुछ ग़ैरयहूदियों और यहूदियों में जोश
आ गया। उन्होंने अपने लीडरों समेत फ़ैसला
किया कि हम पौलुस और बरनबास की तज़लील
करके उन्हें संगसार करेंगे। 6लेकिन जब रसूलों
को पता चला तो वह हिजरत करके लुकाउनिया
के शहरों लुस्तरा, दिरबे और इर्दगिर्द के इलाक़े में
7अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाते रहे।

लुस्तरा और दिरबे

8लुस्तरा में पौलुस और बरनबास की मुलाक़ात
एक आदमी से हुई जिसके पाँवों में ताक़त नहीं
थी। वह पैदाइश ही से लँगड़ा था और कभी भी
चल-फिर न सका था। वह वहाँ बैठा 9उनकी
बातें सुन रहा था कि पौलुस ने ग़ौर से उस की
तरफ़ देखा। उसने जान लिया कि उस आदमी
में रिहाई पाने के लायक़ ईमान है। 10इसलिए
वह ऊँची आवाज़ से बोला, “अपने पाँवों पर खड़े
हो जाएँ!” वह उछलकर खड़ा हुआ और चलने-
फिरने लगा। 11पौलुस का यह काम देखकर
हुजूम अपनी मक़ामी ज़बान में चिल्ला उठा, “इन
आदमियों की शक्ल में देवता हमारे पास उतर
आए हैं।” 12उन्होंने बरनबास को यूनानी देवता
ज़ियूस क़रार दिया और पौलुस को देवता हिरमेस,
क्योंकि कलाम सुनाने की ख़िदमत ज़्यादातर वह
अंजाम देता था। 13इस पर शहर से बाहर वाक़े
ज़ियूस के मंदिर का पुजारी शहर के दरवाज़े पर
बैल और फूलों के हार ले आया और हुजूम के
साथ क़ुरबानियाँ चढ़ाने की तैयारियाँ करने लगा।

14यह सुनकर बरनबास और साऊल रसूल
अपने कपड़ों को फाड़कर हुजूम में जा घुसे और
चिल्लाने लगे, 15“मर्दो, यह आप क्या कर रहे
हैं? हम भी आप जैसे इनसान हैं। हम तो आपको
अल्लाह की यह ख़ुशख़बरी सुनाने आए हैं कि
आप इन बेकार चीज़ों को छोड़कर ज़िंदा ख़ुदा
की तरफ़ रुजू फ़रमाएँ जिसने आसमानो-ज़मीन,
समुंदर और जो कुछ उनमें है पैदा किया है।
16माज़ी में उसने तमाम ग़ैरयहूदी क़ौमों को खुला
छोड़ दिया था कि वह अपनी अपनी राह पर चलें।
17तो भी उसने ऐसी चीज़ें आपके पास रहने दी
हैं जो उस की गवाही देती हैं। उस की मेहरबानी
इससे ज़ाहिर होती है कि वह आपको बारिश
भेजकर हर मौसम की फ़सलें मुहैया करता है और
आप सेर होकर ख़ुशी से भर जाते हैं।” 18इन
अलफ़ाज़ के बावुजूद पौलुस और बरनबास ने
बड़ी मुश्किल से हुजूम को उन्हें क़ुरबानियाँ चढ़ाने
से रोका।

19फिर कुछ यहूदी पिसिदिया के अंता-
किया और इकुनियुम से वहाँ आए और हुजूम
को अपनी तरफ़ मायल किया। उन्होंने पौलुस
को संगसार किया और शहर से बाहर घसीटकर
ले गए। उनका ख़याल था कि वह मर गया है,
20लेकिन जब शागिर्द उसके गिर्द जमा हुए तो वह
उठकर शहर की तरफ़ वापस चल पड़ा। अगले
दिन वह बरनबास समेत दिरबे चला गया।

शाम के अंताकिया में वापसी

21दिरबे में उन्होंने अल्लाह की ख़ुशख़बरी
सुनाकर बहुत-से शागिर्द बनाए। फिर वह मुड़कर
लुस्तरा, इकुनियुम और पिसिदिया के अंताकिया
वापस आए। 22हर जगह उन्होंने शागिर्दों के दिल
मज़बूत करके उनकी हौसलाअफ़्ज़ाई की कि वह
ईमान में साबितक़दम रहें। उन्होंने कहा, “लाज़िम
है कि हम बहुत-सी मुसीबतों में से गुज़रकर
अल्लाह की बादशाही में दाख़िल हों।” 23पौलुस
और बरनबास ने हर जमात में बुज़ुर्ग भी मुक़र्रर
किए। उन्होंने रोज़े रखकर दुआ की और उन्हें उस
ख़ुदावंद के सुपुर्द किया जिस पर वह ईमान लाए
थे।

24यों पिसिदिया के इलाक़े में से सफ़र करते
करते वह पंफ़ीलिया पहुँचे। 25उन्होंने पिरगा
में कलामे-मुक़द्दस सुनाया और फिर उतरकर
अत्तलिया पहुँचे। 26वहाँ से वह जहाज़ में बैठकर
शाम के शहर अंताकिया के लिए रवाना हुए, उस
शहर के लिए जहाँ ईमानदारों ने उन्हें इस तबलीग़ी
सफ़र के लिए अल्लाह के फ़ज़ल के सुपुर्द किया
था। यों उन्होंने अपनी इस ख़िदमत को पूरा किया।

27अंताकिया पहुँचकर उन्होंने ईमानदारों को
जमा करके उन तमाम कामों का बयान किया
जो अल्लाह ने उनके वसीले से किए थे। साथ
साथ उन्होंने यह भी बताया कि अल्लाह ने किस
तरह ग़ैरयहूदियों के लिए भी ईमान का दरवाज़ा

खोल दिया है। 28और वह काफ़ी देर तक वहाँ के
शागिर्दों के पास ठहरे रहे।

यरूशलम में मुशावरती इजतिमा

15 उस वक़्त कुछ आदमी यहूदिया से
आकर शाम के अंताकिया में भाइयों
को यह तालीम देने लगे, "लाज़िम है कि आपका
मूसा की शरीअत के मुताबिक़ ख़तना किया
जाए, वरना आप नजात नहीं पा सकेंगे।" 2इससे
उनके और बरनबास और पौलुस के दरमियान
नाइत्तफ़ाक़ी पैदा हो गई और दोनों उनके साथ
ख़ूब बहस-मुबाहसा करने लगे। आख़िरकार
जमात ने पौलुस और बरनबास को मुक़र्रर किया
कि वह चंद एक और मक़ामी ईमानदारों के साथ
यरूशलम जाएँ और वहाँ के रसूलों और बुज़ुर्गों
को यह मामला पेश करें।

3चुनाँचे जमात ने उन्हें रवाना किया और वह
फ़ेनीके और सामरिया में से गुज़रे। रास्ते में उन्होंने
मक़ामी ईमानदारों को तफ़सील से बताया कि
ग़ैरयहूदी किस तरह ख़ुदावंद की तरफ़ रुजू ला
रहे हैं। यह सुनकर तमाम भाई निहायत ख़ुश
हुए। 4जब वह यरूशलम पहुँच गए तो जमात ने
अपने रसूलों और बुज़ुर्गों समेत उनका इस्तक़बाल
किया। फिर पौलुस और बरनबास ने सब कुछ
बयान किया जो उनकी मारिफ़त हुआ था। 5यह
सुनकर कुछ ईमानदार खड़े हुए जो फ़रीसी फ़िरक़े
में से थे। उन्होंने कहा, "लाज़िम है कि ग़ैरयहूदियों
का ख़तना किया जाए और उन्हें हुक्म दिया जाए
कि वह मूसा की शरीअत के मुताबिक़ ज़िंदगी
गुज़ारें।"

6रसूल और बुज़ुर्ग इस मामले पर ग़ौर करने
के लिए जमा हुए। 7बहुत बहस-मुबाहसा के बाद
पतरस खड़ा हुआ और कहा, "भाइयो, आप
जानते हैं कि अल्लाह ने बहुत देर हुई आपमें से
मुझे चुन लिया कि ग़ैरयहूदियों को अल्लाह की
ख़ुशख़बरी सुनाऊँ ताकि वह ईमान लाएँ। 8और
अल्लाह ने जो दिलों को जानता है इस बात की
तसदीक़ की है, क्योंकि उसने उन्हें वही रूहुल-
क़ुद्स बख़्शा है जो उसने हमें भी दिया था। 9उसने
हममें और उनमें कोई भी फ़रक़ न रखा बल्कि
ईमान से उनके दिलों को भी पाक कर दिया।
10चुनाँचे आप अल्लाह को इसमें क्यों आज़मा
रहे हैं कि आप ग़ैरयहूदी शागिर्दों की गरदन पर
एक ऐसा जुआ रखना चाहते हैं जो न हम और न
हमारे बापदादा उठा सकते थे? 11देखें, हम तो
ईमान रखते हैं कि हम सब एक ही तरीक़े यानी
ख़ुदावंद ईसा के फ़ज़्ल ही से नजात पाते हैं।"

12तमाम लोग चुप रहे तो पौलुस और बरनबास
उन्हें उन इलाही निशानों और मोजिज़ों के बारे
में बताने लगे जो अल्लाह ने उनकी मारिफ़त
ग़ैरयहूदियों के दरमियान किए थे। 13जब उनकी
बात ख़त्म हुई तो याक़ूब ने कहा, "भाइयो,
मेरी बात सुनें! 14शमाऊन ने बयान किया है
कि अल्लाह ने किस तरह पहला क़दम उठाकर
ग़ैरयहूदियों पर अपनी फ़िकरमंदी का इज़हार
किया और उनमें से अपने लिए एक क़ौम चुन
ली। 15और यह बात नबियों की पेशगोइयों के
भी मुताबिक़ है। चुनाँचे लिखा है,

16'इसके बाद मैं वापस आकर
दाऊद के तबाहशुदा घर को
    नए सिरे से तामीर करूँगा,
मैं उसके खंडरात
    दुबारा तामीर करके बहाल करूँगा
17ताकि लोगों का बचा-खुचा हिस्सा
    और वह तमाम क़ौमें
मुझे ढूँडें जिन पर मेरे नाम का ठप्पा
    लगा है।
यह रब का फ़रमान है,
और वह यह करेगा भी'
18बल्कि यह उसे अज़ल से मालूम है।

19यही पेशे-नज़र रखकर मेरी राय यह है कि
हम उन ग़ैरयहूदियों को जो अल्लाह की तरफ़
रुजू कर रहे हैं ग़ैरज़रूरी तकलीफ़ न दें। 20इसके
बजाए बेहतर यह है कि हम उन्हें लिखकर हिदायत
दें कि वह इन चीज़ों से परहेज़ करें : ऐसे खानों
से जो बुतों को पेश किए जाने से नापाक हैं,

ज़िनाकारी से, ऐसे जानवरों का गोश्त खाने से
जिन्हें गला घूँटकर मार दिया गया हो और ख़ून
खाने से। 21क्योंकि मूसवी शरीअत की मुनादी
करनेवाले कई नसलों से हर शहर में रह रहे हैं।
जिस शहर में भी जाएँ हर सबत के दिन शरीअत
की तिलावत की जाती है।”

ग़ैरयहूदी ईमानदारों के नाम ख़त

22फिर रसूलों और बुज़ुर्गों ने पूरी जमात समेत
फ़ैसला किया कि हम अपने में से कुछ आदमी
चुनकर पौलुस और बरनबास के हमराह शाम
के शहर अंताकिया भेज दें। दो को चुना गया
जो भाइयों में राहनुमा थे, यहूदाह बरसब्बा और
सीलास। 23उनके हाथ उन्होंने यह ख़त भेजा,

“यरूशलम के रसूलों और बुज़ुर्गों की तरफ़ से
जो आपके भाई हैं।

अज़ीज़ ग़ैरयहूदी भाइयो जो अंताकिया, शाम
और किलिकिया में रहते हैं, अस्सलामु अलैकुम!

24सुना है कि हममें से कुछ लोगों ने आपके
पास आकर आपको परेशान करके बेचैन कर
दिया है, हालाँकि हमने उन्हें नहीं भेजा था।
25इसलिए हम सब इस पर मुत्तफ़िक़ हुए कि
कुछ आदमियों को चुनकर अपने प्यारे भाइयों
बरनबास और पौलुस के हमराह आपके पास
भेजें। 26बरनबास और पौलुस ऐसे लोग हैं
जिन्होंने हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह की ख़ातिर
अपनी जान ख़तरे में डाल दी है। 27उनके साथी
यहूदाह और सीलास हैं जिनको हमने इसलिए
भेजा कि वह ज़बानी भी उन बातों की तसदीक़
करें जो हमने लिखी हैं।

28हम और रूहुल-क़ुद्स इस पर मुत्तफ़िक़ हुए
हैं कि आप पर सिवाए इन ज़रूरी बातों के कोई
बोझ न डालें : 29बुतों को पेश किया गया खाना
मत खाना, ख़ून मत खाना, ऐसे जानवरों का
गोश्त मत खाना जो गला घूँटकर मार दिए गए
हों। इसके अलावा ज़िनाकारी न करें। इन चीज़ों
से बाज़ रहेंगे तो अच्छा करेंगे। ख़ुदा हाफ़िज़।”

30पौलुस, बरनबास और उनके साथी रुख़सत
होकर अंताकिया चले गए। वहाँ पहुँचकर उन्होंने
जमात इकट्ठी करके उसे ख़त दे दिया। 31उसे
पढ़कर ईमानदार उसके हौसलाअफ़्ज़ा पैग़ाम पर
ख़ुश हुए। 32यहूदाह और सीलास ने भी जो ख़ुद
नबी थे भाइयों की हौसलाअफ़्ज़ाई और मज़बूती
के लिए काफ़ी बातें कीं। 33वह कुछ देर के लिए
वहाँ ठहरे, फिर मक़ामी भाइयों ने उन्हें सलामती
से अलविदा कहा ताकि वह भेजनेवालों के पास
वापस जा सकें। 34[लेकिन सीलास को वहाँ
ठहरना अच्छा लगा।]

35पौलुस और बरनबास ख़ुद कुछ और देर
अंताकिया में रहे। वहाँ वह बहुत-से और लोगों
के साथ ख़ुदावंद के कलाम की तालीम देते और
उस की मुनादी करते रहे।

पौलुस और बरनबास जुदा हो जाते हैं

36कुछ दिनों के बाद पौलुस ने बरनबास से
कहा, “आओ, हम मुड़कर उन तमाम शहरों में
जाएँ जहाँ हमने ख़ुदावंद के कलाम की मुनादी की
है और वहाँ के भाइयों से मुलाक़ात करके उनका
हाल मालूम करें।” 37बरनबास मुत्तफ़िक़ होकर
यूहन्ना मरक़ुस को साथ ले जाना चाहता था,
38लेकिन पौलुस ने इसरार किया कि वह साथ न
जाए, क्योंकि यूहन्ना मरक़ुस पहले दौरे के दौरान
ही पंफ़ीलिया में उन्हें छोड़कर उनके साथ ख़िदमत
करने से बाज़ आया था। 39इससे उनमें इतना
सख़्त इख़्तिलाफ़ पैदा हुआ कि वह एक दूसरे से
जुदा हो गए। बरनबास यूहन्ना मरक़ुस को साथ
लेकर जहाज़ में बैठ गया और क़ुबरुस चला गया,
40जबकि पौलुस ने सीलास को ख़िदमत के लिए
चुन लिया। मक़ामी भाइयों ने उन्हें ख़ुदावंद के
फ़ज़ल के सुपुर्द किया और वह रवाना हुए। 41यों
पौलुस जमातों को मज़बूत करते करते शाम और
किलिकिया में से गुज़रा।

तीमुथियुस का चुनाव

16 चलते चलते वह दिरबे पहुँचा, फिर
लुस्तरा। वहाँ एक शागिर्द बनाम
तीमुथियुस रहता था। उस की यहूदी माँ ईमान
लाई थी जबकि बाप यूनानी था। 2लुस्तरा और
इकुनियुम के भाइयों ने उस की अच्छी रिपोर्ट
दी, 3इसलिए पौलुस उसे सफ़र पर अपने साथ
ले जाना चाहता था। उस इलाक़े के यहूदियों
का लिहाज़ करके उसने तीमुथियुस का ख़तना
करवाया, क्योंकि सब लोग इससे वाक़िफ़ थे
कि उसका बाप यूनानी है। 4फिर शहर बशहर
जाकर उन्होंने मक़ामी जमातों को यरूशलम के
रसूलों और बुज़ुर्गों के वह फ़ैसले पहुँचाए जिनके
मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारनी थी। 5यों जमातें ईमान
में मज़बूत हुईं और तादाद में रोज़ बरोज़ बढ़ती
गईं।

त्रोआस में पौलुस की रोया

6रूहुल-क़ुद्स ने उन्हें सूबा आसिया में कलामे-
मुक़द्दस की मुनादी करने से रोक लिया, इसलिए
वह फ़रूगिया और गलतिया के इलाक़े में से
गुज़रे। 7मूसिया के क़रीब आकर उन्होंने शिमाल
की तरफ़ सूबा बिथुनिया में दाख़िल होने की
कोशिश की। लेकिन ईसा के रूह ने उन्हें वहाँ
भी जाने न दिया, 8इसलिए वह मूसिया में से
गुज़रकर बंदरगाह त्रोआस पहुँचे। 9वहाँ पौलुस
ने रात के वक़्त रोया देखी जिसमें शिमाली यूनान
में वाक़े सूबा मकिदुनिया का एक आदमी खड़ा
उससे इलतमास कर रहा था, “समुंदर को पार
करके मकिदुनिया आएँ और हमारी मदद करें!”
10ज्योंही उसने यह रोया देखी हम मकिदुनिया
जाने की तैयारियाँ करने लगे। क्योंकि हमने रोया
से यह नतीजा निकाला कि अल्लाह ने हमें उस
इलाक़े के लोगों को ख़ुशख़बरी सुनाने के लिए
बुलाया है।

फ़िलिप्पी में लुदिया की तबदीली

11हम त्रोआस में जहाज़ पर सवार होकर सीधे
जज़ीराए-समुतराके के लिए रवाना हुए। फिर
अगले दिन आगे निकलकर नयापुलिस पहुँचे।
12वहाँ जहाज़ से उतरकर हम फ़िलिप्पी चले
गए, जो सूबा मकिदुनिया के उस ज़िले का सदर
शहर था और रोमी नौआबादी था। इस शहर में
हम कुछ दिन ठहरे। 13सबत के दिन हम शहर
से निकलकर दरिया के किनारे गए, जहाँ हमारी
तवक़्क़ो थी कि यहूदी दुआ के लिए जमा होंगे।
वहाँ हम बैठकर कुछ ख़वातीन से बात करने लगे
जो इकट्ठी हुई थीं। 14उनमें से थुआतीरा शहर की
एक औरत थी जिसका नाम लुदिया था। उसका
पेशा क़ीमती अरग़वानी रंग के कपड़े की तिजारत
था और वह अल्लाह की परस्तिश करनेवाली
ग़ैरयहूदी थी। ख़ुदावंद ने उसके दिल को खोल
दिया, और उसने पौलुस की बातों पर तवज्जुह
दी। 15उसके और उसके घरवालों के बपतिस्मा
लेने के बाद उसने हमें अपने घर में ठहरने की
दावत दी। उसने कहा, “अगर आप समझते हैं
कि मैं वाक़ई ख़ुदावंद पर ईमान लाई हूँ तो मेरे घर
आकर ठहरें।” यों उसने हमें मजबूर किया।

फ़िलिप्पी की जेल में

16एक दिन हम दुआ की जगह की तरफ़ जा
रहे थे कि हमारी मुलाक़ात एक लौंडी से हुई जो
एक बदरूह के ज़रीए लोगों की क़िस्मत का हाल
बताती थी। इससे वह अपने मालिकों के लिए
बहुत-से पैसे कमाती थी। 17वह पौलुस और हमारे
पीछे पड़कर चीख़ चीख़कर कहने लगी, “यह
आदमी अल्लाह तआला के ख़ादिम हैं जो आपको
नजात की राह बताने आए हैं।” 18यह सिलसिला
रोज़ बरोज़ जारी रहा। आख़िरकार पौलुस तंग
आकर मुड़ा और बदरूह से कहा, “मैं तुझे ईसा
मसीह के नाम से हुक्म देता हूँ कि लड़की में से
निकल जा!” उसी लमहे वह निकल गई।
19उसके मालिकों को मालूम हुआ कि पैसे
कमाने की उम्मीद जाती रही तो वह पौलुस और

सीलास को पकड़कर चौक में बैठे इक़तिदार रखनेवालों के सामने घसीट ले गए। 20उन्हें मजिस्ट्रेटों के सामने पेश करके वह चिल्लाने लगे, "यह आदमी हमारे शहर में हलचल पैदा कर रहे हैं। यह यहूदी हैं 21और ऐसे रस्मो-रिवाज का प्रचार कर रहे हैं जिन्हें क़बूल करना और अदा करना हम रोमियों के लिए जायज़ नहीं।" 22हुजूम भी आ मिला और पौलुस और सीलास के ख़िलाफ़ बातें करने लगा।

इस पर मजिस्ट्रेटों ने हुक्म दिया कि उनके कपड़े उतारे और उन्हें लाठी से मारा जाए। 23उन्होंने उनकी ख़ूब पिटाई करवाकर उन्हें क़ैदख़ाने में डाल दिया और दारोग़े से कहा कि एहतियात से उनकी पहरादारी करो। 24चुनाँचे उसने उन्हें जेल के सबसे अंदरूनी हिस्से में ले जाकर उनके पाँव काठ में डाल दिए।

25अब ऐसा हुआ कि पौलुस और सीलास आधी रात के क़रीब दुआ कर रहे और अल्लाह की तमजीद के गीत गा रहे थे और बाक़ी क़ैदी सुन रहे थे। 26अचानक बड़ा ज़लज़ला आया और क़ैदख़ाने की पूरी इमारत बुनियादों तक हिल गई। फ़ौरन तमाम दरवाज़े खुल गए और तमाम क़ैदियों की ज़ंजीरें खुल गईं। 27दारोग़ा जाग उठा। जब उसने देखा कि जेल के दरवाज़े खुले हैं तो वह अपनी तलवार निकालकर ख़ुदकुशी करने लगा, क्योंकि ऐसा लग रहा था कि क़ैदी फ़रार हो गए हैं। 28लेकिन पौलुस चिल्ला उठा, "मत करें! अपने आपको नुक़सान न पहुँचाएँ। हम सब यहीं हैं।"

29दारोग़े ने चराग़ मँगवा लिया और भागकर अंदर आया। लरज़ते लरज़ते वह पौलुस और सीलास के सामने गिर गया। 30फिर उन्हें बाहर ले जाकर उसने पूछा, "साहबो, मुझे नजात पाने के लिए क्या करना है?"

31उन्होंने जवाब दिया, "ख़ुदावंद ईसा पर ईमान लाएँ तो आप और आपके घराने को नजात मिलेगी।" 32फिर उन्होंने उसे और उसके तमाम घरवालों को ख़ुदावंद का कलाम सुनाया। 33और रात की उसी घड़ी दारोग़े ने उन्हें ले जाकर उनके ज़ख़मों को धोया। इसके बाद उसका और उसके सारे घरवालों का बपतिस्मा हुआ। 34फिर उसने उन्हें अपने घर में लाकर खाना खिलाया। अल्लाह पर ईमान लाने के बाइस उसने और उसके तमाम घरवालों ने बड़ी ख़ुशी मनाई।

35जब दिन चढ़ा तो मजिस्ट्रेटों ने अपने अफ़सरों को दारोग़े के पास भिजवा दिया कि वह पौलुस और सीलास को रिहा करे।

36चुनाँचे दारोग़े ने पौलुस को उनका पैग़ाम पहुँचा दिया, "मजिस्ट्रेटों ने हुक्म दिया है कि आप और सीलास को रिहा कर दिया जाए। अब निकलकर सलामती से चले जाएँ।"

37लेकिन पौलुस ने एतराज़ किया। उसने उनसे कहा, "उन्होंने हमें अवाम के सामने ही और अदालत में पेश किए बग़ैर मारकर जेल में डाल दिया है हालाँकि हम रोमी शहरी हैं। और अब वह हमें चुपके से निकालना चाहते हैं? हरगिज़ नहीं! अब वह ख़ुद आएँ और हमें बाहर ले जाएँ।"

38अफ़सरों ने मजिस्ट्रेटों को यह ख़बर पहुँचाई। जब उन्हें मालूम हुआ कि पौलुस और सीलास रोमी शहरी हैं तो वह घबरा गए। 39वह ख़ुद उन्हें समझाने के लिए आए और जेल से बाहर लाकर गुज़ारिश की कि शहर को छोड़ दें। 40चुनाँचे पौलुस और सीलास जेल से निकल आए। लेकिन पहले वह लुदिया के घर गए जहाँ वह भाइयों से मिले और उनकी हौसलाअफ़्ज़ाई की। फिर वह चले गए।

थिस्सलुनीके में

17 अंफ़िपुलिस और अपुल्लोनिया से होकर पौलुस और सीलास थिस्सलुनीके शहर पहुँच गए जहाँ यहूदी इबादतख़ाना था। 2अपनी आदत के मुताबिक़ पौलुस उसमें गया और लगातार तीन सबतों के दौरान कलामे-मुक़द्दस से दलायल दे देकर यहूदियों को क़ायल करने की कोशिश करता रहा। 3उसने कलामे-मुक़द्दस की तशरीह करके

साबित किया कि मसीह का दुख उठाना और
मुरदों में से जी उठना लाज़िम था। उसने कहा,
“जिस ईसा की मैं ख़बर दे रहा हूँ, वही मसीह
है।” 4यहूदियों में से कुछ क़ायल होकर पौलुस
और सीलास से वाबस्ता हो गए, जिनमें ख़ुदातरस
यूनानियों की बड़ी तादाद और बारसूख ख़वातीन
भी शरीक थीं।

5यह देखकर बाक़ी यहूदी हसद करने लगे।
उन्होंने गलियों में आवारा फिरनेवाले कुछ शरीर
आदमी इकट्ठे करके जुलूस निकाला और शहर में
हलचल मचा दी। फिर यासोन के घर पर हमला
करके उन्होंने पौलुस और सीलास को ढूँडा ताकि
उन्हें अवामी इजलास के सामने पेश करें। 6लेकिन
वह वहाँ नहीं थे, इसलिए वह यासोन और चंद एक
और ईमानदार भाइयों को शहर के मजिस्ट्रेटों के
सामने लाए। उन्होंने चीख़कर कहा, “यह लोग
पूरी दुनिया में गड़बड़ पैदा कर रहे हैं और अब
यहाँ भी आ गए हैं। 7यासोन ने उन्हें अपने घर
में ठहराया है। यह सब शहनशाह के अहकाम
की ख़िलाफ़वरज़ी कर रहे हैं, क्योंकि यह किसी
और को बादशाह मानते हैं जिसका नाम ईसा
है।” 8इस तरह की बातों से उन्होंने हुजूम और
मजिस्ट्रेटों में बड़ा हंगामा पैदा किया। 9चुनाँचे
मजिस्ट्रेटों ने यासोन और दूसरों से ज़मानत ली
और फिर उन्हें छोड़ दिया।

बेरिया में

10उसी रात भाइयों ने पौलुस और सीलास
को बेरिया भेज दिया। वहाँ पहुँचकर वह यहूदी
इबादतख़ाने में गए। 11यह लोग थिस्सलुनीके के
यहूदियों की निसबत ज़्यादा खुले ज़हन के थे। यह
बड़े शौक़ से पौलुस और सीलास की बातें सुनते
और रोज़ बरोज़ कलामे-मुक़द्दस की तफ़तीश
करते रहे कि क्या वाक़ई ऐसा है जैसा हमें बताया
जा रहा है? 12नतीजे में इनमें से बहुत-से यहूदी
ईमान लाए और साथ साथ बहुत-सी बारसूख
यूनानी ख़वातीन और मर्द भी। 13लेकिन फिर
थिस्सलुनीके के यहूदियों को यह ख़बर मिली कि
पौलुस बेरिया में अल्लाह का कलाम सुना रहा
है। वह वहाँ भी पहुँचे और लोगों को उकसाकर
हलचल मचा दी। 14इस पर भाइयों ने पौलुस को
फ़ौरन साहिल पर भेज दिया, लेकिन सीलास और
तीमुथियुस बेरिया में पीछे रह गए। 15जो आदमी
पौलुस को साहिल तक पहुँचाने आए थे वह उसके
साथ अथेने तक गए। वहाँ वह उसे छोड़कर वापस
चले गए। उनके हाथ पौलुस ने सीलास और
तीमुथियुस को ख़बर भेजी कि जितनी जल्दी हो
सके बेरिया को छोड़कर मेरे पास आ जाएँ।

अथेने में

16अथेने शहर में सीलास और तीमुथियुस
का इंतज़ार करते करते पौलुस बड़े जोश
में आ गया, क्योंकि उसने देखा कि पूरा
शहर बुतों से भरा हुआ है। 17वह यहूदी
इबादतख़ाने में जाकर यहूदियों और ख़ुदा-
तरस ग़ैरयहूदियों से बहस करने लगा। साथ साथ
वह रोज़ाना चौक में भी जाकर वहाँ पर मौजूद
लोगों से गुफ़्तगू करता रहा। 18इपिकूरी और
स्तोयकी फ़लसफ़ी[a] भी उससे बहस करने लगे।
जब पौलुस ने उन्हें ईसा और उसके जी उठने की
ख़ुशख़बरी सुनाई तो बाज़ ने पूछा, “यह बकवासी
इन बातों से क्या कहना चाहता है जो इसने इधर-
उधर से चुनकर जोड़ दी हैं?”

दूसरों ने कहा, “लगता है कि वह अजनबी
देवताओं की ख़बर दे रहा है।” 19वह उसे
साथ लेकर शहर की मजलिसे-शूरा में गए जो
अरियोपगुस नामी पहाड़ी पर मुनअक़िद होती थी।
उन्होंने दरख़ास्त की, “क्या हमें मालूम हो सकता
है कि आप कौन-सी नई तालीम पेश कर रहे हैं?
20आप तो हमें अजीबो-ग़रीब बातें सुना रहे हैं।
अब हम उनका सहीह मतलब जानना चाहते हैं।”
21(बात यह थी कि अथेने के तमाम बाशिंदे शहर
में रहनेवाले परदेसियों समेत अपना पूरा वक़्त

[a]यानी रवाक़ियत के फ़लसफ़ी।

इसमें सर्फ़ करते थे कि ताज़ा ताज़ा ख़यालात
सुनें या सुनाएँ।)
22पौलुस मजलिस में खड़ा हुआ और कहा,
“अथेने के हज़रात, मैं देखता हूँ कि आप हर
लिहाज़ से बहुत मज़हबी लोग हैं। 23क्योंकि जब
मैं शहर में से गुज़र रहा था तो उन चीज़ों पर
ग़ौर किया जिनकी पूजा आप करते हैं। चलते
चलते मैंने एक ऐसी क़ुरबानगाह भी देखी जिस
पर लिखा था, ‘नामालूम ख़ुदा की क़ुरबानगाह।’
अब मैं आपको उस ख़ुदा की ख़बर देता हूँ जिसकी
पूजा आप करते तो हैं मगर आप उसे जानते नहीं।
24यह वह ख़ुदा है जिसने दुनिया और उसमें मौजूद
हर चीज़ की तख़लीक़ की। वह आसमानो-ज़मीन
का मालिक है, इसलिए वह इनसानी हाथों के
बनाए हुए मंदिरों में सुकूनत नहीं करता। 25और
इनसानी हाथ उस की ख़िदमत नहीं कर सकते,
क्योंकि उसे कोई भी चीज़ दरकार नहीं होती।
इसके बजाए वही सबको ज़िंदगी और साँस मुहैया
करके उनकी तमाम ज़रूरियात पूरी करता है।
26उसी ने एक शख़्स को ख़लक़ किया ताकि
दुनिया की तमाम क़ौमें उससे निकलकर पूरी
दुनिया में फैल जाएँ। उसने हर क़ौम के औक़ात
और सरहद्दें भी मुक़र्रर कीं। 27मक़सद यह था
कि वह ख़ुदा को तलाश करें। उम्मीद यह थी कि
वह टटोल टटोलकर उसे पाएँ, अगरचे वह हममें
से किसी से दूर नहीं होता। 28क्योंकि उसमें हम
जीते, हरकत करते और वुजूद रखते हैं। आपके
अपने कुछ शायरों ने भी फ़रमाया है, ‘हम भी
उसके फ़रज़ंद हैं।’ 29अब चूँकि हम अल्लाह के
फ़रज़ंद हैं इसलिए हमारा उसके बारे में तसव्वुर
यह नहीं होना चाहिए कि वह सोने, चाँदी या पत्थर
का कोई मुजस्समा हो जो इनसान की महारत
और डिज़ायन से बनाया गया हो। 30माज़ी में
ख़ुदा ने इस क़िस्म की जहालत को नज़रंदाज़
किया, लेकिन अब वह हर जगह के लोगों को
तौबा का हुक्म देता है। 31क्योंकि उसने एक
दिन मुक़र्रर किया है जब वह इनसाफ़ से दुनिया
की अदालत करेगा। और वह यह अदालत एक
शख़्स की मारिफ़त करेगा जिसको वह मुतैयिन
कर चुका है और जिसकी तसदीक़ उसने इससे
की है कि उसने उसे मुरदों में से ज़िंदा कर दिया
है।”
32मुरदों की क़ियामत का ज़िक्र सुनकर बाज़
ने पौलुस का मज़ाक़ उड़ाया। लेकिन बाज़ ने
कहा, “हम किसी और वक़्त इसके बारे में आपसे
मज़ीद सुनना चाहते हैं।” 33फिर पौलुस मजलिस
से निकलकर चला गया। 34कुछ लोग उससे
वाबस्ता होकर ईमान ले आए। उनमें से मजलिसे-
शूरा का मेंबर दियोनीसियुस था और एक औरत
बनाम दमरिस। कुछ और भी थे।

कुरिंथुस में

18 इसके बाद पौलुस अथेने को छोड़कर
कुरिंथुस शहर आया। 2वहाँ उस की
मुलाक़ात एक यहूदी से हुई जिसका नाम
अकविला था। वह पुंतुस का रहनेवाला था और
थोड़ी देर पहले अपनी बीवी प्रिसकिल्ला समेत
इटली से आया था। वजह यह थी कि शहनशाह
क्लौदियुस ने हुक्म सादिर किया था कि तमाम
यहूदी रोम को छोड़कर चले जाएँ। उन लोगों के
पास पौलुस गया 3और चूँकि उनका पेशा भी ख़ैमे
सिलाई करना था इसलिए वह उनके घर ठहरकर
रोज़ी कमाने लगा। 4साथ साथ उसने हर सबत
को यहूदी इबादतख़ाने में तालीम देकर यहूदियों
और यूनानियों को क़ायल करने की कोशिश की।
5जब सीलास और तीमुथियुस मकि-
दुनिया से आए तो पौलुस अपना पूरा वक़्त
कलाम सुनाने में सर्फ़ करने लगा। उसने यहूदियों
को गवाही दी कि ईसा कलामे-मुक़द्दस में बयान
किया गया मसीह है। 6लेकिन जब वह उस की
मुख़ालफ़त करके उस की तज़लील करने लगे तो
उसने एहतजाज में अपने कपड़ों से गर्द झाड़कर
कहा, “आप ख़ुद अपनी हलाकत के ज़िम्मेदार
हैं, मैं बेक़ुसूर हूँ। अब से मैं ग़ैरयहूदियों के पास
जाया करूँगा।” 7फिर वह वहाँ से निकलकर
इबादतख़ाने के साथवाले घर में गया। वहाँ तितुस

यूसतुस रहता था जो यहूदी नहीं था, लेकिन
ख़ुदा का ख़ौफ़ मानता था। 8और क्रिसपुस जो
इबादतख़ाने का राहनुमा था अपने घराने समेत
ख़ुदावंद पर ईमान लाया। कुरिंथुस के बहुत सारे
और लोगों ने भी जब पौलुस की बातें सुनीं तो
ईमान लाए और बपतिस्मा लिया।

9एक रात ख़ुदावंद रोया में पौलुस से हमकलाम
हुआ, "मत डर! कलाम करता जा और ख़ामोश
न हो, 10क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ। कोई हमला करके
तुझे नुक़सान नहीं पहुँचाएगा, क्योंकि इस शहर में
मेरे बहुत-से लोग हैं।" 11फिर पौलुस मज़ीद डेढ़
साल वहाँ ठहरकर लोगों को अल्लाह का कलाम
सिखाता रहा।

12उन दिनों में जब गल्लियो सूबा अख़या
का गवर्नर था तो यहूदी मुत्तहिद होकर
पौलुस के ख़िलाफ़ जमा हुए और उसे अदा-
लत में गल्लियो के सामने लाए। 13उन्होंने कहा,
"यह आदमी लोगों को ऐसे तरीक़े से अल्लाह की
इबादत करने पर उकसा रहा है जो हमारी शरीअत
के ख़िलाफ़ है।"

14पौलुस जवाब में कुछ कहने को था कि
गल्लियो ख़ुद यहूदियों से मुख़ातिब हुआ, "सुनें,
यहूदी मर्दो! अगर आपका इलज़ाम कोई
नाइनसाफ़ी या संगीन जुर्म होता तो आपकी
बात क़ाबिले-बरदाश्त होती। 15लेकिन आपका
झगड़ा मज़हबी तालीम, नामों और आपकी यहूदी
शरीअत से ताल्लुक़ रखता है, इसलिए उसे ख़ुद
हल करें। मैं इस मामले में फ़ैसला करने के
लिए तैयार नहीं हूँ।" 16यह कहकर उसने उन्हें
अदालत से भगा दिया। 17इस पर हुजूम ने यहूदी
इबादतख़ाने के राहनुमा सोसथिनेस को पकड़कर
अदालत के सामने उस की पिटाई की। लेकिन
गल्लियो ने परवा न की।

अंताकिया तक वापसी का सफ़र

18इसके बाद भी पौलुस बहुत दिन कुरिंथुस में
रहा। फिर भाइयों को ख़ैरबाद कहकर वह क़रीब
के शहर किंख़रिया गया जहाँ उसने किसी मन्नत
के पूरे होने पर अपने सर के बाल मुँडवा दिए।
इसके बाद वह प्रिसकिल्ला और अकविला के
साथ जहाज़ पर सवार होकर मुल्के-शाम के लिए
रवाना हुआ। 19पहले वह इफ़िसुस पहुँचे जहाँ
पौलुस ने प्रिसकिल्ला और अकविला को छोड़
दिया। वहाँ भी उसने यहूदी इबादतख़ाने में जाकर
यहूदियों से बहस की। 20उन्होंने उससे दरख़ास्त
की कि मज़ीद वक़्त उनके साथ गुज़ारे, लेकिन
उसने इनकार किया 21और उन्हें ख़ैरबाद कहकर
कहा, "अगर अल्लाह की मरज़ी हो तो मैं आपके
पास वापस आऊँगा।" फिर वह जहाज़ पर सवार
होकर इफ़िसुस से रवाना हुआ।

22सफ़र करते करते वह क़ैसरिया पहुँच गया,
जहाँ से वह यरूशलम जाकर मक़ामी जमात से
मिला। इसके बाद वह अंताकिया वापस चला
गया 23जहाँ वह कुछ देर ठहरा। फिर आगे
निकलकर वह गलतिया और फ़रूगिया के इलाक़े
में से गुज़रते हुए वहाँ के तमाम ईमानदारों को
मज़बूत करता गया।

अपुल्लोस इफ़िसुस और कुरिंथुस में

24इतने में एक फ़सीह यहूदी जिसे कलामे-
मुक़द्दस का ज़बरदस्त इल्म था इफ़िसुस पहुँच
गया था। उसका नाम अपुल्लोस था। वह मिसर
के शहर इस्कंदरिया का रहनेवाला था। 25उसे
ख़ुदावंद की राह के बारे में तालीम दी गई थी
और वह बड़ी सरगरमी से लोगों को ईसा के बारे
में सिखाता रहा। उस की यह तालीम सहीह थी
अगरचे वह अभी तक सिर्फ़ यहया का बपतिस्मा
जानता था। 26इफ़िसुस के यहूदी इबादतख़ाने
में वह बड़ी दिलेरी से कलाम करने लगा। यह
सुनकर प्रिसकिल्ला और अकविला ने उसे एक
तरफ़ ले जाकर उसके सामने अल्लाह की राह को
मज़ीद तफ़सील से बयान किया। 27अपुल्लोस
सूबा अख़या जाने का ख़याल रखता था तो
इफ़िसुस के भाइयों ने उस की हौसलाअफ़ज़ाई
की। उन्होंने वहाँ के शागिर्दों को ख़त लिखा कि
वह उसका इस्तक़बाल करें। जब वह वहाँ पहुँचा

तो उनके लिए बड़ी मदद का बाइस बना जो
अल्लाह के फ़ज़्ल से ईमान लाए थे, 28क्योंकि
वह अलानिया मुबाहसों में ज़बरदस्त दलायल से
यहूदियों पर ग़ालिब आया और कलामे-मुक़द्दस
से साबित किया कि ईसा मसीह है।

पौलुस इफ़िसुस में

19 जब अपुल्लोस कुरिंथुस में ठहरा हुआ
था तो पौलुस एशियाए-कूचक के
अंदरूनी इलाक़े में से सफ़र करते करते साहिली
शहर इफ़िसुस में आया। वहाँ उसे कुछ शागिर्द
मिले 2जिनसे उसने पूछा, "क्या आपको ईमान
लाते वक़्त रूहुल-क़ुद्स मिला?"

उन्होंने जवाब दिया, "नहीं, हमने तो रूहुल-
क़ुद्स का ज़िक्र तक नहीं सुना।"

3उसने पूछा, "तो आपको कौन-सा बप-
तिस्मा दिया गया?"

उन्होंने जवाब दिया, "यहया का।"

4पौलुस ने कहा, "यहया ने बपतिस्मा दिया
जब लोगों ने तौबा की। लेकिन उसने ख़ुद उन्हें
बताया, 'मेरे बाद आनेवाले पर ईमान लाओ,
यानी ईसा पर'।"

5यह सुनकर उन्होंने ख़ुदावंद ईसा के नाम
पर बपतिस्मा लिया। 6और जब पौलुस ने
अपने हाथ उन पर रखे तो उन पर रूहुल-
क़ुदस नाज़िल हुआ, और वह ग़ैरज़बानें
बोलने और नबुव्वत करने लगे। 7इन आद-
मियों की कुल तादाद तक़रीबन बारह थी।

8पौलुस यहूदी इबादतख़ाने में गया और तीन
महीने के दौरान यहूदियों से दिलेरी से बात करता
रहा। उनके साथ बहस करके उसने उन्हें अल्लाह
की बादशाही के बारे में क़ायल करने की कोशिश
की। 9लेकिन कुछ अड़ गए। वह अल्लाह के ताबे
न हुए बल्कि अवाम के सामने ही अल्लाह की
राह को बुरा-भला कहने लगे। इस पर पौलुस ने
उन्हें छोड़ दिया। शागिर्दों को भी अलग करके वह
उनके साथ तुरन्नुस के लैक्चर हाल में जमा हुआ
करता था जहाँ वह रोज़ाना उन्हें तालीम देता रहा।
10यह सिलसिला दो साल तक जारी रहा। यों
सूबा आसिया के तमाम लोगों को ख़ुदावंद का
कलाम सुनने का मौक़ा मिला, ख़ाह वह यहूदी थे
या यूनानी।

राहनुमा इमाम स्किवा के सात बेटे

11अल्लाह ने पौलुस की मारिफ़त ग़ैर-
मामूली मोजिज़े किए, 12यहाँ तक कि जब रूमाल
या एप्रन उसके बदन से लगाने के बाद मरीज़ों पर
रखे जाते तो उनकी बीमारियाँ जाती रहतीं और
बदरूहें निकल जातीं। 13वहाँ कुछ ऐसे यहूदी भी
थे जो जगह जगह जाकर बदरूहें निकालते थे।
अब वह बदरूहों के बंधन में फँसे लोगों पर ख़ुदावंद
ईसा का नाम इस्तेमाल करने की कोशिश करके
कहने लगे, "मैं तुझे उस ईसा के नाम से निकलने
का हुक्म देता हूँ जिसकी मुनादी पौलुस करता
है।" 14एक यहूदी राहनुमा इमाम बनाम स्किवा
के सात बेटे ऐसा करते थे।

15लेकिन एक दफ़ा जब यही कोशिश कर रहे
थे तो बदरूह ने जवाब दिया, "ईसा को तो मैं
जानती हूँ और पौलुस को भी, लेकिन तुम कौन
हो?"

16फिर वह आदमी जिसमें बदरूह थी उन पर
झपटकर सब पर ग़ालिब आ गया। उसका उन
पर इतना सख़्त हमला हुआ कि वह नंगे और
ज़ख़मी हालत में भागकर उस घर से निकल
गए। 17इस वाक़िये की ख़बर इफ़िसुस के तमाम
रहनेवाले यहूदियों और यूनानियों में फैल गई। उन
पर ख़ौफ़ तारी हुआ और ख़ुदावंद ईसा के नाम की
ताज़ीम हुई। 18जो ईमान लाए थे उनमें से बहुतेरों
ने आकर अलानिया अपने गुनाहों का इक़रार
किया। 19जादूगरी करनेवालों की बड़ी तादाद ने
अपनी जादूमंत्र की किताबें इकट्ठी करके अवाम
के सामने जला दीं। पूरी किताबों का हिसाब किया
गया तो उनकी कुल रक़म चाँदी के पचास हज़ार
सिक्के थी। 20यों ख़ुदावंद का कलाम ज़बरदस्त
तरीक़े से बढ़ता और ज़ोर पकड़ता गया।

इफ़िसुस में हंगामा

21इन वाक़ियात के बाद पौलुस ने मकि-
दुनिया और अख़या में से गुज़रकर यरूशलम
जाने का फ़ैसला किया। उसने कहा, “इसके बाद
लाज़िम है कि मैं रोम भी जाऊँ।” 22उसने अपने
दो मददगारों तीमुथियुस और इरास्तुस को आगे
मकिदुनिया भेज दिया जबकि वह ख़ुद मज़ीद कुछ
देर के लिए सूबा आसिया में ठहरा रहा।

23तक़रीबन उस वक़्त अल्लाह की राह एक
शदीद हंगामे का बाइस हो गई। 24यह यों हुआ,
इफ़िसुस में एक चाँदी की अशया बनानेवाला
रहता था जिसका नाम देमेतरियुस था। वह चाँदी
से अरतमिस देवी के मंदिर बनवाता था, और
उसके काम से दस्तकारों का कारोबार ख़ूब चलता
था। 25अब उसने इस काम से ताल्लुक़ रखनेवाले
दीगर दस्तकारों को जमा करके उनसे कहा,
“हज़रात, आपको मालूम है कि हमारी दौलत इस
कारोबार पर मुनहसिर है। 26आपने यह भी देख
और सुन लिया है कि इस आदमी पौलुस ने न
सिर्फ़ इफ़िसुस बल्कि तक़रीबन पूरे सूबा आसिया
में बहुत-से लोगों को भटकाकर क़ायल कर लिया
है कि हाथों के बने देवता हक़ीक़त में देवता नहीं
होते। 27न सिर्फ़ यह ख़तरा है कि हमारे कारोबार
की बदनामी हो बल्कि यह भी कि अज़ीम देवी
अरतमिस के मंदिर का असरो-रसूख़ जाता रहेगा,
कि अरतमिस ख़ुद जिसकी पूजा सूबा आसिया
और पूरी दुनिया में की जाती है अपनी अज़मत
खो बैठे।”

28यह सुनकर वह तैश में आकर चीख़ने-
चिल्लाने लगे, “इफ़िसियों की अरतमिस देवी
अज़ीम है!” 29पूरे शहर में हलचल मच गई।
लोगों ने पौलुस के मकिदुनी हमसफ़र गयुस
और अरिस्तरख़ुस को पकड़ लिया और मिलकर
तमाशागाह में दौड़े आए। 30यह देखकर पौलुस
भी अवाम के इस इजलास में जाना चाहता था,
लेकिन शागिर्दों ने उसे रोक लिया। 31इसी तरह
उसके कुछ दोस्तों ने भी जो सूबा आसिया के
अफ़सर थे उसे ख़बर भेजकर मिन्नत की कि वह
न जाए। 32इजलास में बड़ी अफ़रा-तफ़री थी।
कुछ यह चीख़ रहे थे, कुछ वह। ज़्यादातर लोग
जमा होने की वजह जानते भी न थे। 33यहूदियों
ने सिकंदर को आगे कर दिया। साथ साथ हुजूम
के कुछ लोग उसे हिदायात देते रहे। उसने हाथ
से ख़ामोश हो जाने का इशारा किया ताकि वह
इजलास के सामने अपना दिफ़ा करे। 34लेकिन
जब उन्होंने जान लिया कि वह यहूदी है तो वह
तक़रीबन दो घंटों तक चिल्लाकर नारा लगाते रहे,
“इफ़िसुस की अरतमिस देवी अज़ीम है!”

35आख़िरकार बलदिया का चीफ़ सैक्रटरी उन्हें
ख़ामोश कराने में कामयाब हुआ। फिर उसने
कहा, “इफ़िसुस के हज़रात, किस को मालूम
नहीं कि इफ़िसुस अज़ीम अरतमिस देवी के मंदिर
का मुहाफ़िज़ है! पूरी दुनिया जानती है कि हम
उसके उस मुजस्समे के निगरान हैं जो आसमान
से गिरकर हमारे पास पहुँच गया। 36यह हक़ीक़त
तो नाक़ाबिले-इनकार है। चुनाँचे लाज़िम है कि
आप चुप-चाप रहें और जल्दबाज़ी न करें। 37आप
यह आदमी यहाँ लाए हैं हालाँकि न तो वह मंदिरों
को लूटनेवाले हैं, न उन्होंने देवी की बेहुरमती
की है। 38अगर देमेतरियुस और उसके साथवाले
दस्तकारों का किसी पर इलज़ाम है तो इसके लिए
कचहरियाँ और गवर्नर होते हैं। वहाँ जाकर वह
एक दूसरे से मुक़दमा लड़ें। 39अगर आप मज़ीद
कोई मामला पेश करना चाहते हैं तो उसे हल करने
के लिए क़ानूनी मजलिस होती है। 40अब हम इस
ख़तरे में हैं कि आज के वाक़ियात के बाइस हम पर
फ़साद का इलज़ाम लगाया जाएगा। क्योंकि जब
हमसे पूछा जाएगा तो हम इस क़िस्म के बेतरतीब
और नाजायज़ इजतिमा का कोई जवाज़ पेश नहीं
कर सकेंगे।” 41यह कहकर उसने इजलास को
बरख़ास्त कर दिया।

मकिदुनिया और अख़या में

20 जब शहर में अफ़रा-तफ़री ख़त्म हुई
तो पौलुस ने शागिर्दों को बुलाकर

उनकी हौसलाअफ़्ज़ाई की। फिर वह उन्हें ख़ैरबाद
कहकर मकिदुनिया के लिए रवाना हुआ। 2वहाँ
पहुँचकर उसने जगह बजगह जाकर बहुत-सी
बातों से ईमानदारों की हौसलाअफ़्ज़ाई की। यों
चलते चलते वह यूनान पहुँच गया 3जहाँ वह तीन
माह तक ठहरा। वह मुल्के-शाम के लिए जहाज़
पर सवार होनेवाला था कि पता चला कि यहूदियों
ने उसके ख़िलाफ़ साज़िश की है। इस पर उसने
मकिदुनिया से होकर वापस जाने का फ़ैसला
किया। 4उसके कई हमसफ़र थे : बेरिया से पुरुस
का बेटा सोपतरुस, थिस्सलुनीके से अरिस्तरख़ुस
और सिकुंदुस, दिरबे से गयुस, तीमुथियुस और
सूबा आसिया से तुख़िकुस और त्रुफ़िमुस। 5यह
आदमी आगे निकलकर त्रोआस चले गए जहाँ
उन्होंने हमारा इंतज़ार किया। 6बेख़मीरी रोटी की
ईद के बाद हम फ़िलिप्पी के क़रीब जहाज़ पर
सवार हुए और पाँच दिन के बाद उनके पास
त्रोआस पहुँच गए। वहाँ हम सात दिन रहे।

त्रोआस में पौलुस की अलविदाई मीटिंग

7इतवार को हम अशाए-रब्बानी मनाने के लिए
जमा हुए। पौलुस लोगों से बात करने लगा और
चूँकि वह अगले दिन रवाना होनेवाला था इसलिए
वह आधी रात तक बोलता रहा। 8ऊपर की
मनज़िल में जिस कमरे में हम जमा थे वहाँ
बहुत-से चराग़ जल रहे थे। 9एक जवान खिड़की
की दहलीज़ पर बैठा था। उसका नाम यूतिख़ुस
था। ज्यों-ज्यों पौलुस की बातें लंबी होती जा
रही थीं उस पर नींद ग़ालिब आती जा रही थी।
आख़िरकार वह गहरी नींद में तीसरी मनज़िल से
ज़मीन पर गिर गया। जब लोगों ने नीचे पहुँचकर
उसे ज़मीन पर से उठाया तो वह जान-बहक़ हो
चुका था। 10लेकिन पौलुस उतरकर उस पर झुक
गया और उसे अपने बाज़ुओं में ले लिया। उसने
कहा, "मत घबराएँ, वह ज़िंदा है।" 11फिर वह
वापस ऊपर आ गया, अशाए-रब्बानी मनाई और
खाना खाया। उसने अपनी बातें पौ फटने तक
जारी रखीं, फिर रवाना हुआ। 12और उन्होंने
जवान को ज़िंदा हालत में वहाँ से लेकर बहुत
तसल्ली पाई।

त्रोआस से मीलेतुस तक

13हम आगे निकलकर अस्सुस के लिए जहाज़
पर सवार हुए। ख़ुद पौलुस ने इंतज़ाम करवाया
था कि वह पैदल जाकर अस्सुस में हमारे जहाज़
पर आएगा। 14वहाँ वह हमसे मिला और हम उसे
जहाज़ पर लाकर मतुलेने पहुँचे। 15अगले दिन
हम ख़ियुस के जज़ीरे से गुज़रे। उससे अगले दिन
हम सामुस के जज़ीरे के क़रीब आए। इसके बाद
के दिन हम मीलेतुस पहुँच गए। 16पौलुस पहले
से फ़ैसला कर चुका था कि मैं इफ़िसुस में नहीं
ठहरूँगा बल्कि आगे निकलूँगा, क्योंकि वह जल्दी
में था। वह जहाँ तक मुमकिन था पंतिकुस्त की
ईद से पहले पहले यरूशलम पहुँचना चाहता था।

इफ़िसुस के बुज़ुर्गों के लिए पौलुस की अलविदाई तक़रीर

17मीलेतुस से पौलुस ने इफ़िसुस की जमात
के बुज़ुर्गों को बुला लिया। 18जब वह पहुँचे तो
उसने उनसे कहा, "आप जानते हैं कि मैं सूबा
आसिया में पहला क़दम उठाने से लेकर पूरा
वक़्त आपके साथ किस तरह रहा। 19मैंने बड़ी
इंकिसारी से ख़ुदावंद की ख़िदमत की है। मुझे
बहुत आँसू बहाने पड़े और यहूदियों की साज़िशों
से मुझ पर बहुत आज़माइशें आईं। 20मैंने आपके
फ़ायदे की कोई भी बात आपसे छुपाए न रखी
बल्कि आपको अलानिया और घर घर जाकर
तालीम देता रहा। 21मैंने यहूदियों को यूनानियों
समेत गवाही दी कि उन्हें तौबा करके अल्लाह
की तरफ़ रुजू करने और हमारे ख़ुदावंद ईसा पर
ईमान लाने की ज़रूरत है। 22और अब मैं रूहुल-
क़ुद्स से बँधा हुआ यरूशलम जा रहा हूँ। मैं नहीं
जानता कि मेरे साथ क्या कुछ होगा, 23लेकिन
इतना मुझे मालूम है कि रूहुल-क़ुद्स मुझे शहर
बशहर इस बात से आगाह कर रहा है कि मुझे क़ैद
और मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा। 24ख़ैर,

मैं अपनी ज़िंदगी को किसी तरह भी अहम नहीं
समझता। अहम बात सिर्फ़ यह है कि मैं अपना वह
मिशन और ज़िम्मेदारी पूरी करूँ जो ख़ुदावंद ईसा
ने मेरे सुपुर्द की है। और वह ज़िम्मेदारी यह है कि
मैं लोगों को गवाही देकर यह ख़ुशख़बरी सुनाऊँ
कि अल्लाह ने अपने फ़ज़ल से उनके लिए क्या
कुछ किया है।
25और अब मैं जानता हूँ कि आप सब जिन्हें
मैंने अल्लाह की बादशाही का पैग़ाम सुना दिया
है मुझे इसके बाद कभी नहीं देखेंगे। 26इसलिए
मैं आज ही आपको बताता हूँ कि अगर आपमें
से कोई भी हलाक हो जाए तो मैं बेक़ुसूर हूँ,
27क्योंकि मैं आपको अल्लाह की पूरी मरज़ी
बताने से न झिजका। 28चुनाँचे ख़बरदार रहकर
अपना और उस पूरे गल्ले का ख़याल रखना
जिस पर रूहुल-क़ुदस ने आपको मुक़र्रर किया
है। निगरानों और चरवाहों की हैसियत से अल्लाह
की जमात की ख़िदमत करें, उस जमात की
जिसे उसने अपने ही फ़रज़ंद के ख़ून से हासिल
किया है। 29मुझे मालूम है कि मेरे जाने के बाद
वहशी भेड़िये आपमें घुस आएँगे जो गल्ले को नहीं
छोड़ेंगे। 30आपके दरमियान से भी आदमी उठकर
सच्चाई को तोड़-मरोड़कर बयान करेंगे ताकि
शागिर्दों को अपने पीछे लगा लें। 31इसलिए
जागते रहें! यह बात ज़हन में रखें कि मैं तीन
साल के दौरान दिन-रात हर एक को समझाने से
बाज़ न आया। मेरे आँसुओं को याद रखें जो मैंने
आपके लिए बहाए हैं।
32और अब मैं आपको अल्लाह और उसके
फ़ज़ल के कलाम के सुपुर्द करता हूँ। यही कलाम
आपकी तामीर करके आपको वह मीरास मुहैया
करने के क़ाबिल है जो अल्लाह तमाम मुक़द्दस
किए गए लोगों को देता है। 33मैंने किसी के
भी सोने, चाँदी या कपड़ों का लालच न किया।
34आप ख़ुद जानते हैं कि मैंने अपने इन हाथों से
काम करके न सिर्फ़ अपनी बल्कि अपने साथियों
की ज़रूरियात भी पूरी कीं। 35अपने हर काम में
मैं आपको दिखाता रहा कि लाज़िम है कि हम
इस क़िस्म की मेहनत करके कमज़ोरों की मदद
करें। क्योंकि हमारे सामने ख़ुदावंद ईसा के यह
अलफ़ाज़ होने चाहिएँ कि देना लेने से मुबारक
है।”
36यह सब कुछ कहकर पौलुस ने घुटने टेककर
उन सबके साथ दुआ की। 37सब ख़ूब रोए और
उसको गले लगा लगाकर बोसे दिए। 38उन्हें
ख़ासकर पौलुस की इस बात से तकलीफ़ हुई कि
‘आप इसके बाद मुझे कभी नहीं देखेंगे।’ फिर वह
उसके साथ जहाज़ तक गए।

पौलुस यरूशलम जाता है

21 मुश्किल से इफ़िसुस के बुज़ुर्गों से
अलग होकर हम रवाना हुए और सीधे
जज़ीराए-कोस पहुँच गए। अगले दिन हम रुदुस
आए और वहाँ से पतरा पहुँचे। 2पतरा में फ़ेनीके
के लिए जहाज़ मिल गया तो हम उस पर सवार
होकर रवाना हुए। 3जब क़ुबरुस दूर से नज़र
आया तो हम उसके जुनूब में से गुज़रकर शाम के
शहर सूर पहुँच गए जहाँ जहाज़ को अपना सामान
उतारना था। 4जहाज़ से उतरकर हमने मक़ामी
शागिर्दों को तलाश किया और सात दिन उनके
साथ ठहरे। उन ईमानदारों ने रूहुल-क़ुद्स की
हिदायत से पौलुस को समझाने की कोशिश की
कि वह यरूशलम न जाए। 5जब हम एक हफ़्ते
के बाद जहाज़ पर वापस चले गए तो पूरी जमात
बाल-बच्चों समेत हमारे साथ शहर से निकलकर
साहिल तक आई। वहीं हमने घुटने टेककर दुआ
की 6और एक दूसरे को अलविदा कहा। फिर हम
दुबारा जहाज़ पर सवार हुए जबकि वह अपने घरों
को लौट गए।
7सूर से अपना सफ़र जारी रखकर हम
पतुलिमयिस पहुँचे जहाँ हमने मक़ामी ईमानदारों
को सलाम किया और एक दिन उनके साथ
गुज़ारा। 8अगले दिन हम रवाना होकर क़ैसरिया
पहुँच गए। वहाँ हम फ़िलिप्पुस के घर ठहरे। यह
वही फ़िलिप्पुस था जो अल्लाह की ख़ुशख़बरी का
मुनाद था और जिसे इब्तिदाई दिनों में यरूशलम में

खाना तक़सीम करने के लिए छः और आदमियों
के साथ मुक़र्रर किया गया था। 9उस की चार
ग़ैरशादीशुदा बेटियाँ थीं जो नबुव्वत की नेमत
रखती थीं। 10कई दिन गुज़र गए तो यहूदिया
से एक नबी आया जिसका नाम अगबुस था।
11जब वह हमसे मिलने आया तो उसने पौलुस
की पेटी लेकर अपने पाँवों और हाथों को बाँध
लिया और कहा, "रूहुल-क़ुद्स फ़रमाता है कि
यरूशलम में यहूदी इस पेटी के मालिक को यों
बाँधकर ग़ैरयहूदियों के हवाले करेंगे।"

12यह सुनकर हमने मक़ामी ईमानदारों समेत
पौलुस को समझाने की ख़ूब कोशिश की कि वह
यरूशलम न जाए। 13लेकिन उसने जवाब दिया,
"आप क्यों रोते और मेरा दिल तोड़ते हैं? देखें,
मैं ख़ुदावंद ईसा के नाम की ख़ातिर यरूशलम में
न सिर्फ़ बाँधे जाने बल्कि उसके लिए अपनी जान
तक देने को तैयार हूँ।"

14हम उसे क़ायल न कर सके, इसलिए हम
यह कहते हुए ख़ामोश हो गए कि "ख़ुदावंद की
मरज़ी पूरी हो।"

15इसके बाद हम तैयारियाँ करके यरू-
शलम चले गए। 16क़ैसरिया के कुछ शागिर्द भी
हमारे साथ चले और हमें मनासोन के घर पहुँचा
दिया जहाँ हमें ठहरना था। मनासोन क़ुबरुस का
था और जमात के इब्तिदाई दिनों में ईमान लाया
था।

पौलुस याक़ूब से मिलता है

17जब हम यरूशलम पहुँचे तो मक़ामी भाइयों
ने गरमजोशी से हमारा इस्तक़बाल किया।
18अगले दिन पौलुस हमारे साथ याक़ूब से मिलने
गया। तमाम मक़ामी बुज़ुर्ग भी हाज़िर हुए। 19उन्हें
सलाम करके पौलुस ने तफ़सील से बयान किया
कि अल्लाह ने उस की ख़िदमत की मारिफ़त
ग़ैरयहूदियों में क्या किया था। 20यह सुनकर
उन्होंने अल्लाह की तमजीद की। फिर उन्होंने
कहा, "भाई, आपको मालूम है कि हज़ारों यहूदी
ईमान लाए हैं। और सब बड़ी सरगरमी से शरीअत
पर अमल करते हैं। 21उन्हें आपके बारे में ख़बर दी
गई है कि आप ग़ैरयहूदियों के दरमियान रहनेवाले
यहूदियों को तालीम देते हैं कि वह मूसा की
शरीअत को छोड़कर न अपने बच्चों का ख़तना
करवाएँ और न हमारे रस्मो-रिवाज के मुताबिक़
ज़िंदगी गुज़ारें। 22अब हम क्या करें? वह तो
ज़रूर सुनेंगे कि आप यहाँ आ गए हैं। 23इसलिए
हम चाहते हैं कि आप यह करें : हमारे पास चार
मर्द हैं जिन्होंने मन्नत मानकर उसे पूरा कर लिया
है। 24अब उन्हें साथ लेकर उनकी तहारत की
रसूमात में शरीक हो जाएँ। उनके अख़राजात भी
आप बरदाश्त करें ताकि वह अपने सरों को मुँडवा
सकें। फिर सब जान लेंगे कि जो कुछ आपके
बारे में कहा जाता है वह झूट है और कि आप
भी शरीअत के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं।
25जहाँ तक ग़ैरयहूदी ईमानदारों की बात है हम
उन्हें अपना फ़ैसला ख़त के ज़रीए भेज चुके हैं कि
वह इन चीज़ों से परहेज़ करें : बुतों को पेश किया
गया खाना, ख़ून, ऐसे जानवरों का गोश्त जिन्हें
गला घूँटकर मार दिया गया हो और ज़िनाकारी।"

26चुनाँचे अगले दिन पौलुस उन आदमियों को
साथ लेकर उनकी तहारत की रसूमात में शरीक
हुआ। फिर वह बैतुल-मुक़द्दस में उस दिन का
एलान करने गया जब तहारत के दिन पूरे हो
जाएंगे और उन सबके लिए क़ुरबानी पेश की
जाएगी।

बैतुल-मुक़द्दस में पौलुस की गिरिफ़्तारी

27इस रस्म के लिए मुक़र्ररा सात दिन ख़त्म
होने को थे कि सूबा आसिया के कुछ यहूदियों
ने पौलुस को बैतुल-मुक़द्दस में देखा। उन्होंने पूरे
हुजूम में हलचल मचाकर उसे पकड़ लिया 28और
चीख़ने लगे, "इसराईल के हज़रात, हमारी मदद
करें! यह वही आदमी है जो हर जगह तमाम लोगों
को हमारी क़ौम, हमारी शरीअत और इस मक़ाम
के ख़िलाफ़ तालीम देता है। न सिर्फ़ यह बल्कि
इसने बैतुल-मुक़द्दस में ग़ैरयहूदियों को लाकर इस
मुक़द्दस जगह की बेहुरमती भी की है।" 29(यह

आख़िरी बात उन्होंने इसलिए की क्योंकि उन्होंने
शहर में इफ़िसुस के ग़ैरयहूदी त्रुफ़िमुस को पौलुस
के साथ देखा और ख़याल किया था कि वह उसे
बैतुल-मुक़द्दस में लाया है।)
30पूरे शहर में हंगामा बरपा हुआ और लोग
चारों तरफ़ से दौड़कर आए। पौलुस को पकड़कर
उन्होंने उसे बैतुल-मुक़द्दस से बाहर घसीट लिया।
ज्योंही वह निकल गए बैतुल-मुक़द्दस के सहन के
दरवाज़ों को बंद कर दिया गया। 31वह उसे मार
डालने की कोशिश कर रहे थे कि रोमी पलटन
के कमाँडर को ख़बर मिल गई, “पूरे यरूशलम
में हलचल मच गई है।” 32यह सुनते ही उसने
अपने फ़ौजियों और अफ़सरों को इकट्ठा किया
और दौड़कर उनके साथ हुजूम के पास उतर
गया। जब हुजूम ने कमाँडर और उसके फ़ौजियों
को देखा तो वह पौलुस की पिटाई करने से
रुक गया। 33कमाँडर ने नज़दीक आकर उसे
गिरिफ़्तार किया और दो ज़ंजीरों से बाँधने का
हुक्म दिया। फिर उसने पूछा, “यह कौन है?
इसने क्या किया है?” 34हुजूम में से बाज़ कुछ
चिल्लाए और बाज़ कुछ। कमाँडर कोई यक़ीनी
बात मालूम न कर सका, क्योंकि अफ़रा-तफ़री
और शोर-शराबा बहुत था। इसलिए उसने हुक्म
दिया कि पौलुस को क़िले में ले जाया जाए।
35वह क़िले की सीढ़ी तक पहुँच तो गए, लेकिन
फिर हुजूम इतना बेकाबू हो गया कि फ़ौजियों को
उसे अपने कंधों पर उठाकर चलना पड़ा। 36लोग
उनके पीछे पीछे चलते और चीख़ते-चिल्लाते रहे,
“उसे मार डालो! उसे मार डालो!”

पौलुस अपना दिफ़ा करता है

37वह पौलुस को क़िले में ले जा रहे थे कि
उसने कमाँडर से पूछा, “क्या आपसे एक बात
करने की इजाज़त है?”
कमाँडर ने कहा, “अच्छा, आप यूनानी बोल
लेते हैं? 38तो क्या आप वही मिसरी नहीं हैं जो
कुछ देर पहले हुकूमत के ख़िलाफ़ उठकर चार
हज़ार दहशतगरदों को रेगिस्तान में लाया था?”
39पौलुस ने जवाब दिया, “मैं यहूदी और
किलिकिया के मरकज़ी शहर तरसुस का शहरी
हूँ। मेहरबानी करके मुझे लोगों से बात करने दें।”
40कमाँडर मान गया और पौलुस ने सीढ़ी
पर खड़े होकर हाथ से इशारा किया। जब सब
ख़ामोश हो गए तो पौलुस अरामी ज़बान में उनसे
मुख़ातिब हुआ,

22 “भाइयो और बुज़ुर्गो, मेरी बात सुनें
कि मैं अपने दिफ़ा में कुछ बताऊँ।”
2जब उन्होंने सुना कि वह अरामी ज़बान में बोल
रहा है तो वह मज़ीद ख़ामोश हो गए। पौलुस ने
अपनी बात जारी रखी।
3“मैं यहूदी हूँ और किलिकिया के शहर
तरसुस में पैदा हुआ। लेकिन मैंने इसी शहर
यरूशलम में परवरिश पाई और जमलियेल के
ज़ेरे-निगरानी तालीम हासिल की। उन्होंने मुझे
तफ़सील और एहतियात से हमारे बापदादा की
शरीअत सिखाई। उस वक़्त मैं भी आपकी तरह
अल्लाह के लिए सरगरम था। 4इसलिए मैंने इस
नई राह के पैरोकारों का पीछा किया और मर्दों
और ख़वातीन को गिरिफ़्तार करके जेल में डलवा
दिया यहाँ तक कि मरवा भी दिया। 5इमामे-
आज़म और यहूदी अदालते-आलिया के मेंबरान
इस बात की तसदीक़ कर सकते हैं। उन्हीं से
मुझे दमिश्क़ में रहनेवाले यहूदी भाइयों के लिए
सिफ़ारिशी ख़त मिल गए ताकि मैं वहाँ भी जाकर
इस नए फ़िरक़े के लोगों को गिरिफ़्तार करके
सज़ा देने के लिए यरूशलम लाऊँ।

पौलुस की तबदीली का बयान

6मैं इस मक़सद के लिए दमिश्क़ के क़रीब
पहुँच गया था कि अचानक आसमान की तरफ़
से एक तेज़ रौशनी मेरे गिर्द चमकी। 7मैं ज़मीन
पर गिर पड़ा तो एक आवाज़ सुनाई दी, ‘साऊल,
साऊल, तू मुझे क्यों सताता है?’ 8मैंने पूछा,
‘ख़ुदावंद, आप कौन हैं?’ आवाज़ ने जवाब
दिया, ‘मैं ईसा नासरी हूँ जिसे तू सताता है।’ 9मेरे
हमसफ़रों ने रौशनी को तो देखा, लेकिन मुझसे

मुख़ातिब होनेवाले की आवाज़ न सुनी। 10मैंने पूछा, 'ख़ुदावंद, मैं क्या करूँ?' ख़ुदावंद ने जवाब दिया, 'उठकर दमिश्क़ में जा। वहाँ तुझे वह सारा काम बताया जाएगा जो अल्लाह तेरे ज़िम्मे लगाने का इरादा रखता है।' 11रौशनी की तेज़ी ने मुझे अंधा कर दिया था, इसलिए मेरे साथी मेरा हाथ पकड़कर मुझे दमिश्क़ ले गए।

12वहाँ एक आदमी रहता था जिसका नाम हननियाह था। वह शरीअत का कटर पैरोकार था और वहाँ के रहनेवाले यहूदियों में नेकनाम। 13वह आया और मेरे पास खड़े होकर कहा, 'साऊल भाई, दुबारा बीना हो जाएँ!' उसी लमहे मैं उसे देख सका। 14फिर उसने कहा, 'हमारे बापदादा के ख़ुदा ने आपको इस मक़सद के लिए चुन लिया है कि आप उस की मरज़ी जानकर उसके रास्त ख़ादिम को देखें और उसके अपने मुँह से उस की आवाज़ सुनें। 15जो कुछ आपने देख और सुन लिया है उस की गवाही आप तमाम लोगों को देंगे। 16चुनाँचे आप क्यों देर कर रहे हैं? उठें और उसके नाम में बपतिस्मा लें ताकि आपके गुनाह धुल जाएँ।'

पौलुस की ग़ैरयहूदियों में ख़िदमत का बुलावा

17जब मैं यरूशलम वापस आया तो मैं एक दिन बैतुल-मुक़द्दस में गया। वहाँ दुआ करते करते मैं वज्द की हालत में आ गया 18और ख़ुदावंद को देखा। उसने फ़रमाया, 'जल्दी कर! यरूशलम को फ़ौरन छोड़ दे क्योंकि लोग मेरे बारे में तेरी गवाही को क़बूल नहीं करेंगे।' 19मैंने एतराज़ किया, 'ऐ ख़ुदावंद, वह तो जानते हैं कि मैंने जगह बजगह इबादतख़ाने में जाकर तुझ पर ईमान रखनेवालों को गिरिफ़्तार किया और उनकी पिटाई करवाई। 20और उस वक़्त भी जब तेरे शहीद स्तिफ़नुस को क़त्ल किया जा रहा था मैं साथ खड़ा था। मैं राज़ी था और उन लोगों के कपड़ों की निगरानी कर रहा था जो उसे संगसार कर रहे थे।' 21लेकिन ख़ुदावंद ने कहा, 'जा, क्योंकि मैं तुझे दूर-दराज़ इलाक़ों में ग़ैरयहूदियों के पास भेज दूँगा'।"

22यहाँ तक हुजूम पौलुस की बातें सुनता रहा। लेकिन अब वह चिल्ला उठे, "इसे हटा दो! इसे जान से मार दो! यह ज़िंदा रहने के लायक़ नहीं!" 23वह चीख़ें मार मारकर अपनी चादरें उतारने और हवा में गर्द उड़ाने लगे। 24इस पर कमाँडर ने हुक्म दिया कि पौलुस को क़िले में ले जाया जाए और कोड़े लगाकर उस की पूछ-गछ की जाए। क्योंकि वह मालूम करना चाहता था कि लोग किस वजह से पौलुस के ख़िलाफ़ यों चीख़ें मार रहे हैं। 25जब वह उसे कोड़े लगाने के लिए लेकर जा रहे थे तो पौलुस ने साथ खड़े अफ़सर[a] से कहा, "क्या आपके लिए जायज़ है कि एक रोमी शहरी के कोड़े लगवाएँ और वह भी अदालत में पेश किए बग़ैर?"

26अफ़सर ने जब यह सुना तो कमाँडर के पास जाकर उसे इत्तला दी, "आप क्या करने को हैं? यह आदमी तो रोमी शहरी है!"

27कमाँडर पौलुस के पास आया और पूछा, "मुझे सहीह बताएँ, क्या आप रोमी शहरी हैं?"

पौलुस ने जवाब दिया, "जी हाँ।"

28कमाँडर ने कहा, "मैं तो बड़ी रक़म देकर शहरी बना हूँ।"

पौलुस ने जवाब दिया, "लेकिन मैं तो पैदाइशी शहरी हूँ।"

29यह सुनते ही वह फ़ौजी जो उस की पूछ-गछ करने को थे पीछे हट गए। कमाँडर ख़ुद घबरा गया कि मैंने एक रोमी शहरी को ज़ंजीरों में जकड़ रखा है।

पौलुस यहूदी अदालते-आलिया के सामने

30अगले दिन कमाँडर साफ़ मालूम करना चाहता था कि यहूदी पौलुस पर क्यों इलज़ाम लगा रहे हैं। इसलिए उसने राहनुमा इमामों और यहूदी अदालते-आलिया के तमाम मेंबरान का इजलास मुनअक़िद करने का हुक्म दिया। फिर

[a]सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

पौलुस को आज़ाद करके क़िले से नीचे लाया और उनके सामने खड़ा किया।

23 पौलुस ने ग़ौर से अदालते-आलिया के मेंबरान की तरफ़ देखकर कहा, “भाइयो, आज तक मैंने साफ़ ज़मीर के साथ अल्लाह के सामने ज़िंदगी गुज़ारी है।” 2इस पर इमामे-आज़म हननियाह ने पौलुस के क़रीब खड़े लोगों से कहा कि वह उसके मुँह पर थप्पड़ मारें। 3पौलुस ने उससे कहा, “मक्कार![a] अल्लाह तुमको ही मारेगा, क्योंकि तुम यहाँ बैठे शरीअत के मुताबिक़ मेरा फ़ैसला करना चाहते हो जबकि मुझे मारने का हुक्म देकर ख़ुद शरीअत की ख़िलाफ़वरज़ी कर रहे हो!”

4पौलुस के क़रीब खड़े आदमियों ने कहा, “तुम अल्लाह के इमामे-आज़म को बुरा कहने की जुर्रत क्योंकर करते हो?”

5पौलुस ने जवाब दिया, “भाइयो, मुझे मालूम न था कि वह इमामे-आज़म हैं, वरना ऐसे अलफ़ाज़ इस्तेमाल न करता। क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में लिखा है कि अपनी क़ौम के हाकिमों को बुरा-भला मत कहना।”

6पौलुस को इल्म था कि अदालते-आलिया के कुछ लोग सदूक़ी हैं जबकि दीगर फ़रीसी हैं। इसलिए वह इजलास में पुकार उठा, “भाइयो, मैं फ़रीसी बल्कि फ़रीसी का बेटा भी हूँ। मुझे इसलिए अदालत में पेश किया गया है कि मैं मुरदों में से जी उठने की उम्मीद रखता हूँ।”

7इस बात से फ़रीसी और सदूक़ी एक दूसरे से झगड़ने लगे और इजलास के अफ़राद दो गुरोहों में बट गए। 8वजह यह थी कि सदूक़ी नहीं मानते कि हम जी उठेंगे। वह फ़रिश्तों और रूहों का भी इनकार करते हैं। इसके मुक़ाबले में फ़रीसी यह सब कुछ मानते हैं। 9होते होते बड़ा शोर मच गया। फ़रीसी फ़िरक़े के कुछ आलिम खड़े होकर जोश से बहस करने लगे, “हमें इस आदमी में कोई ग़लती नज़र नहीं आती, शायद कोई रूह या फ़रिश्ता इससे हमकलाम हुआ हो।”

10झगड़े ने इतना ज़ोर पकड़ा कि कमाँडर डर गया, क्योंकि ख़तरा था कि वह पौलुस के टुकड़े कर डालें। इसलिए उसने अपने फ़ौजियों को हुक्म दिया कि वह उतरें और पौलुस को यहूदियों के बीच में से छीनकर क़िले में वापस लाएँ।

11उसी रात ख़ुदावंद पौलुस के पास आ खड़ा हुआ और कहा, “हौसला रख, क्योंकि जिस तरह तूने यरूशलम में मेरे बारे में गवाही दी है लाज़िम है कि इसी तरह रोम शहर में भी गवाही दे।”

पौलुस के ख़िलाफ़ साज़िश

12अगले दिन कुछ यहूदियों ने साज़िश करके क़सम खाई, “हम न तो कुछ खाएँगे, न पिएँगे जब तक पौलुस को क़त्ल न कर लें।” 13चालीस से ज़्यादा मर्दों ने इस साज़िश में हिस्सा लिया। 14वह राहनुमा इमामों और बुज़ुर्गों के पास गए और कहा, “हमने पक्की क़सम खाई है कि कुछ नहीं खाएँगे जब तक पौलुस को क़त्ल न कर लें। 15अब ज़रा यहूदी अदालते-आलिया के साथ मिलकर कमाँडर से गुज़ारिश करें कि वह उसे दुबारा आपके पास लाएँ। बहाना यह पेश करें कि आप मज़ीद तफ़सील से उसके मामले का जायज़ा लेना चाहते हैं। जब उसे लाया जाएगा तो हम उसके यहाँ पहुँचने से पहले पहले उसे मार डालने के लिए तैयार होंगे।”

16लेकिन पौलुस के भानजे को इस बात का पता चल गया। उसने क़िले में जाकर पौलुस को इत्तला दी। 17इस पर पौलुस ने रोमी अफ़सरों[b] में से एक को बुलाकर कहा, “इस जवान को कमाँडर के पास ले जाएँ। इसके पास उनके लिए ख़बर है।” 18अफ़सर भानजे को कमाँडर के पास ले गया और कहा, “क़ैदी पौलुस ने मुझे बुलाकर मुझसे गुज़ारिश की कि इस नौजवान को आपके पास ले आऊँ। उसके पास आपके लिए ख़बर है।”

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : सफेदी की हुई दीवार।

[b]सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

19कमाँडर नौजवान का हाथ पकड़कर दूसरों
से अलग हो गया। फिर उसने पूछा, “क्या ख़बर
है जो आप मुझे बताना चाहते हैं?”
20उसने जवाब दिया, “यहूदी आपसे दरख़ास्त
करने पर मुत्तफ़िक़ हो गए हैं कि आप कल
पौलुस को दुबारा यहूदी अदालते-आलिया के
सामने लाएँ। बहाना यह होगा कि वह और ज़्यादा
तफ़सील से उसके बारे में मालूमात हासिल करना
चाहते हैं। 21लेकिन उनकी बात न मानें, क्योंकि
उनमें से चालीस से ज़्यादा आदमी उस की ताक
में बैठे हैं। उन्होंने क़सम खाई है कि हम न कुछ
खाएँगे न पिएँगे जब तक उसे क़त्ल न कर लें।
वह अभी तैयार बैठे हैं और सिर्फ़ इस इंतज़ार में
हैं कि आप उनकी बात मानें।”
22कमाँडर ने नौजवान को रुख़सत करके
कहा, “जो कुछ आपने मुझे बता दिया है उसका
किसी से ज़िक्र न करना।”

पौलुस को गवर्नर फ़ेलिक्स के पास भेजा जाता है

23फिर कमाँडर ने अपने अफ़सरों में से दो को
बुलाया जो सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर थे। उसने
हुक्म दिया, “दो सौ फ़ौजी, सत्तर घुड़सवार और
दो सौ नेज़ाबाज़ तैयार करें। उन्हें आज रात को नौ
बजे क़ैसरिया जाना है। 24पौलुस के लिए भी घोड़े
तैयार रखना ताकि वह सहीह-सलामत गवर्नर के
पास पहुँचे।” 25फिर उसने यह ख़त लिखा,
26“अज़ : क्लौदियुस लूसियास
मुअज़्ज़ज़ गवर्नर फ़ेलिक्स को सलाम।
27यहूदी इस आदमी को पकड़कर क़त्ल करने को
थे। मुझे पता चला कि यह रोमी शहरी है, इसलिए
मैंने अपने दस्तों के साथ आकर इसे निकालकर
बचा लिया। 28मैं मालूम करना चाहता था कि
वह क्यों इस पर इलज़ाम लगा रहे हैं, इसलिए मैं
उतरकर इसे उनकी अदालते-आलिया के सामने
लाया। 29मुझे मालूम हुआ कि उनका इलज़ाम
उनकी शरीअत से ताल्लुक़ रखता है। लेकिन
इसने ऐसा कुछ नहीं किया जिसकी बिना पर
यह जेल में डालने या सज़ाए-मौत के लायक़ हो।
30फिर मुझे इत्तला दी गई कि इस आदमी को
क़त्ल करने की साज़िश की गई है, इसलिए मैंने
इसे फ़ौरन आपके पास भेज दिया। मैंने इलज़ाम
लगानेवालों को भी हुक्म दिया कि वह इस पर
अपना इलज़ाम आपको ही पेश करें।”
31फ़ौजियों ने उसी रात कमाँडर का हुक्म पूरा
किया। पौलुस को साथ लेकर वह अंतीपतरिस
तक पहुँच गए। 32अगले दिन प्यादे क़िले को
वापस चले जबकि घुड़सवारों ने पौलुस को लेकर
सफ़र जारी रखा। 33क़ैसरिया पहुँचकर उन्होंने
पौलुस को ख़त समेत गवर्नर फ़ेलिक्स के सामने
पेश किया। 34उसने ख़त पढ़ लिया और फिर
पौलुस से पूछा, “आप किस सूबे के हैं?” पौलुस
ने कहा, “किलिकिया का।” 35इस पर गवर्नर
ने कहा, “मैं आपकी समाअत उस वक़्त करूँगा
जब आप पर इलज़ाम लगानेवाले पहुँचेंगे।” और
उसने हुक्म दिया कि हेरोदेस के महल में पौलुस
की पहरादारी की जाए।

पौलुस पर मुक़दमा

24 पाँच दिन के बाद इमामे-आज़म
हननियाह, कुछ यहूदी बुज़ुर्ग और एक
वकील बनाम तिरतुल्लुस क़ैसरिया आए ताकि
गवर्नर के सामने पौलुस पर अपना इलज़ाम पेश
करें। 2पौलुस को बुलाया गया तो तिरतुल्लुस ने
फ़ेलिक्स को यहूदियों का इलज़ाम पेश किया,
“आपके ज़ेरे-हुकूमत हमें बड़ा अमनो-अमान
हासिल है, और आपकी दूरअंदेशी से इस मुल्क
में बहुत तरक़्क़ी हुई है। 3मुअज़्ज़ज़ फ़ेलिक्स, इन
तमाम बातों के लिए हम आपके ख़ास ममनून हैं।
4लेकिन मैं नहीं चाहता कि आप मेरी बातों से हद
से ज़्यादा थक जाएँ। अर्ज़ सिर्फ़ यह है कि आप
हम पर मेहरबानी का इज़हार करके एक लमहे
के लिए हमारे मामले पर तवज्जुह दें। 5हमने इस
आदमी को अवाम दुश्मन पाया है जो पूरी दुनिया
के यहूदियों में फ़साद पैदा करता रहता है। यह
नासरी फ़िरक़े का एक सरग़ना है 6और हमारे

बैतुल-मुक़द्दस की बेहुरमती करने की कोशिश
कर रहा था जब हमने इसे पकड़ा [ताकि अपनी
शरीअत के मुताबिक़ इस पर मुक़दमा चलाएँ।
7मगर लूसियास कमाँडर आकर इसे ज़बरदस्ती
हमसे छीनकर ले गया और हुक्म दिया कि इसके
मुद्दई आपके पास हाज़िर हों।] 8इसकी पूछ-गछ
करके आप ख़ुद हमारे इलज़ामात की तसदीक़
करा सकते हैं।" 9फिर बाक़ी यहूदियों ने उस की
हाँ में हाँ मिलाकर कहा कि यह वाक़ई ऐसा ही है।

पौलुस का दिफ़ा

10गवर्नर ने इशारा किया कि पौलुस अपनी
बात पेश करे। उसने जवाब में कहा,

"मैं जानता हूँ कि आप कई सालों से इस
क़ौम के जज मुक़र्रर हैं, इसलिए ख़ुशी से आपको
अपना दिफ़ा पेश करता हूँ। 11आप ख़ुद मालूम
कर सकते हैं कि मुझे यरूशलम गए सिर्फ़ बारह
दिन हुए हैं। जाने का मक़सद इबादत में शरीक
होना था। 12वहाँ न मैंने बैतुल-मुक़द्दस में किसी
से बहस-मुबाहसा किया, न शहर के किसी
इबादतख़ाने में या किसी और जगह हलचल
मचाई। इन लोगों ने भी मेरी कोई ऐसी हरकत
नहीं देखी। 13जो इलज़ाम यह मुझ पर लगा रहे
हैं उसका कोई भी सबूत पेश नहीं कर सकते।
14बेशक मैं तसलीम करता हूँ कि मैं उसी राह पर
चलता हूँ जिसे यह बिदअत क़रार देते हैं। लेकिन
मैं अपने बापदादा के ख़ुदा की परस्तिश करता
हूँ। जो कुछ भी शरीअत और नबियों के सहीफ़ों
में लिखा है उसे मैं मानता हूँ। 15और मैं अल्लाह
पर वही उम्मीद रखता हूँ जो यह भी रखते हैं, कि
क़ियामत का एक दिन होगा जब वह रास्तबाज़ों
और नारास्तों को मुरदों में से ज़िंदा कर देगा।
16इसलिए मेरी पूरी कोशिश यही होती है कि हर
वक़्त मेरा ज़मीर अल्लाह और इनसान के सामने
साफ़ हो।

17कई सालों के बाद मैं यरूशलम वापस
आया। मेरे पास क़ौम के ग़रीबों के लिए
ख़ैरात थी और मैं बैतुल-मुक़द्दस में क़ुर-
बानियाँ भी पेश करना चाहता था। 18मुझ पर
इलज़ाम लगानेवालों ने मुझे बैतुल-मुक़द्दस में
देखा जब मैं तहारत की रसूमात अदा कर रहा
था। उस वक़्त न कोई हुजूम था, न फ़साद।
19लेकिन सूबा आसिया के कुछ यहूदी वहाँ थे।
अगर उन्हें मेरे ख़िलाफ़ कोई शिकायत है तो उन्हें
ही यहाँ हाज़िर होकर मुझ पर इलज़ाम लगाना
चाहिए। 20या यह लोग ख़ुद बताएँ कि जब मैं
यहूदी अदालते-आलिया के सामने खड़ा था तो
उन्होंने मेरा क्या जुर्म मालूम किया। 21सिर्फ़ यह
एक जुर्म हो सकता है कि मैंने उस वक़्त उनके
हुज़ूर पुकारकर यह बात बयान की, 'आज मुझ
पर इसलिए इलज़ाम लगाया जा रहा है कि मैं
ईमान रखता हूँ कि मुरदे जी उठेंगे'।"

22फ़ेलिक्स ने जो ईसा की राह से ख़ूब वाक़िफ़
था मुक़दमा मुलतवी कर दिया। उसने कहा, "जब
कमाँडर लूसियास आएँगे फिर मैं फ़ैसला दूँगा।"
23उसने पौलुस पर मुक़र्रर अफ़सर[a] को हुक्म
दिया कि वह उस की पहरादारी तो करे लेकिन
उसे कुछ सहूलियात भी दे और उसके अज़ीज़ों
को उससे मिलने और उस की ख़िदमत करने से
न रोके।

पौलुस फ़ेलिक्स और द्रूसिल्ला के सामने

24कुछ दिनों के बाद फ़ेलिक्स अपनी अहलिया
द्रूसिल्ला के हमराह वापस आया। द्रूसिल्ला यहूदी
थी। पौलुस को बुलाकर उन्होंने ईसा पर ईमान
के बारे में उस की बातें सुनीं। 25लेकिन जब
रास्तबाज़ी, ज़ब्ते-नफ़स और आनेवाली अदालत
के मज़ामीन छिड़ गए तो फ़ेलिक्स ने घबराकर
उस की बात काटी, "फ़िलहाल काफ़ी है। अब
इजाज़त है, जब मेरे पास वक़्त होगा मैं आपको
बुला लूँगा।" 26साथ साथ वह यह उम्मीद भी
रखता था कि पौलुस रिश्वत देगा, इसलिए वह
कई बार उसे बुलाकर उससे बात करता रहा।

[a]सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

27दो साल गुज़र गए तो फ़ेलिक्स की जगह पुरकियुस फ़ेस्तुस आ गया। ताहम उसने पौलुस को क़ैदख़ाने में छोड़ दिया, क्योंकि वह यहूदियों के साथ रिआयत बरतना चाहता था।

पौलुस शहनशाह से अपील करता है

25 क़ैसरिया पहुँचने के तीन दिन बाद फ़ेस्तुस यरूशलम चला गया। 2वहाँ राहनुमा इमामों और बाक़ी यहूदी राहनुमाओं ने उसके सामने पौलुस पर अपने इलज़ामात पेश किए। उन्होंने बड़े ज़ोर से 3मिन्नत की कि वह उनकी रिआयत करके पौलुस को यरूशलम मुंतक़िल करे। वजह यह थी कि वह घात में बैठकर रास्ते में पौलुस को क़त्ल करना चाहते थे। 4लेकिन फ़ेस्तुस ने जवाब दिया, “पौलुस को क़ैसरिया में रखा गया है और मैं ख़ुद वहाँ जाने को हूँ। 5अगर उससे कोई जुर्म सरज़द हुआ है तो आपके कुछ राहनुमा मेरे साथ वहाँ जाकर उस पर इलज़ाम लगाएँ।”

6फ़ेस्तुस ने मज़ीद आठ दस दिन उनके साथ गुज़ारे, फिर क़ैसरिया चला गया। अगले दिन वह अदालत करने के लिए बैठा और पौलुस को लाने का हुक्म दिया। 7जब पौलुस पहुँचा तो यरूशलम से आए हुए यहूदी उसके इर्दगिर्द खड़े हुए और उस पर कई संजीदा इलज़ामात लगाए, लेकिन वह कोई भी बात साबित न कर सके। 8पौलुस ने अपना दिफ़ा करके कहा, “मुझसे न यहूदी शरीअत, न बैतुल-मुक़द्दस और न शहनशाह के ख़िलाफ़ जुर्म सरज़द हुआ है।”

9लेकिन फ़ेस्तुस यहूदियों के साथ रि-आयत बरतना चाहता था, इसलिए उसने पूछा, “क्या आप यरूशलम जाकर वहाँ की अदालत में मेरे सामने पेश किए जाने के लिए तैयार हैं?”

10पौलुस ने जवाब दिया, “मैं शहनशाह की रोमी अदालत में खड़ा हूँ और लाज़िम है कि यहीं मेरा फ़ैसला किया जाए। आप भी इससे ख़ूब वाक़िफ़ हैं कि मैंने यहूदियों से कोई नाइनसाफ़ी नहीं की। 11अगर मुझसे कोई ऐसा काम सरज़द हुआ हो जो सज़ाए-मौत के लायक़ हो तो मैं मरने से इनकार नहीं करूँगा। लेकिन अगर बेक़ुसूर हूँ तो किसी को भी मुझे इन आदमियों के हवाले करने का हक़ नहीं है। मैं शहनशाह से अपील करता हूँ!”

12यह सुनकर फ़ेस्तुस ने अपनी कौंसल से मशवरा करके कहा, “आपने शहनशाह से अपील की है, इसलिए आप शहनशाह ही के पास जाएंगे।”

पौलुस अग्रिप्पा और बिरनीके के सामने

13कुछ दिन गुज़र गए तो अग्रिप्पा बादशाह अपनी बहन बिरनीके के साथ फ़ेस्तुस से मिलने आया। 14वह कई दिन वहाँ ठहरे रहे। इतने में फ़ेस्तुस ने पौलुस के मामले पर बादशाह के साथ बात की। उसने कहा, “यहाँ एक क़ैदी है जिसे फ़ेलिक्स छोड़कर चला गया है। 15जब मैं यरूशलम गया तो राहनुमा इमामों और यहूदी बुज़ुर्गों ने उस पर इलज़ामात लगाकर उसे मुजरिम क़रार देने का तक़ाज़ा किया। 16मैंने उन्हें जवाब दिया, ‘रोमी क़ानून किसी को अदालत में पेश किए बग़ैर मुजरिम क़रार नहीं देता। लाज़िम है कि उसे पहले इलज़ाम लगानेवालों का सामना करने का मौक़ा दिया जाए ताकि अपना दिफ़ा कर सके।’ 17जब उस पर इलज़ाम लगानेवाले यहाँ पहुँचे तो मैंने ताख़ीर न की। मैंने अगले ही दिन अदालत मुनअक़िद करके पौलुस को पेश करने का हुक्म दिया। 18लेकिन जब उसके मुख़ालिफ़ इलज़ाम लगाने के लिए खड़े हुए तो वह ऐसे जुर्म नहीं थे जिनकी तवक़्क़ो मैं कर रहा था। 19उनका उसके साथ कोई और झगड़ा था जो उनके अपने मज़हब और एक मुरदा आदमी बनाम ईसा से ताल्लुक़ रखता है। इस ईसा के बारे में पौलुस दावा करता है कि वह ज़िंदा है। 20मैं उलझन में पड़ गया क्योंकि मुझे मालूम नहीं था कि किस तरह इस मामले का सहीह जायज़ा लूँ। चुनाँचे मैंने पूछा, ‘क्या आप यरूशलम जाकर वहाँ अदालत में पेश किए जाने के लिए तैयार हैं?’ 21लेकिन

पौलुस ने अपील की, 'शहनशाह ही मेरा फ़ैसला
करे।' फिर मैंने हुक्म दिया कि उसे उस वक़्त तक
क़ैद में रखा जाए जब तक उसे शहनशाह के पास
भेजने का इंतज़ाम न करवा सकूँ।"
22अग्रिप्पा ने फ़ेस्तुस से कहा, "मैं भी उस
शख़्स को सुनना चाहता हूँ।"
उसने जवाब दिया, "कल ही आप उसको सुन
लेंगे।"
23अगले दिन अग्रिप्पा और बिरनीके बड़ी
धूमधाम के साथ आए और बड़े फ़ौजी अफ़सरों
और शहर के नामवर आदमियों के साथ दीवाने-
आम में दाख़िल हुए। फ़ेस्तुस के हुक्म पर
पौलुस को अंदर लाया गया। 24फ़ेस्तुस ने
कहा, "अग्रिप्पा बादशाह और तमाम ख़वातीनो-
हज़रात! आप यहाँ एक आदमी को देखते हैं
जिसके बारे में तमाम यहूदी ख़ाह वह यरूशलम के
रहनेवाले हों, ख़ाह यहाँ के, शोर मचाकर सज़ाए-
मौत का तक़ाज़ा कर रहे हैं। 25मेरी दानिस्त में
तो इसने कोई ऐसा काम नहीं किया जो सज़ाए-
मौत के लायक़ हो। लेकिन इसने शहनशाह से
अपील की है, इसलिए मैंने इसे रोम भेजने का
फ़ैसला किया है। 26लेकिन मैं शहनशाह को
क्या लिख दूँ? क्योंकि इस पर कोई साफ़
इलज़ाम नहीं लगाया गया। इसलिए मैं इसे आप
सबके सामने लाया हूँ, ख़ासकर अग्रिप्पा बादशाह
आपके सामने, ताकि आप इसकी तफ़तीश करें
और मैं कुछ लिख सकूँ। 27क्योंकि मुझे बेतुकी-
सी बात लग रही है कि हम एक क़ैदी को रोम भेजें
जिस पर अब तक साफ़ इलज़ामात नहीं लगाए
गए हैं।"

पौलुस का अग्रिप्पा के सामने दिफ़ा

26 अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, "आपको
अपने दिफ़ा में बोलने की इजाज़त
है।" पौलुस ने हाथ से इशारा करके अपने दिफ़ा
में बोलने का आग़ाज़ किया,
2"अग्रिप्पा बादशाह, मैं अपने आपको
ख़ुशनसीब समझता हूँ कि आज आप ही मेरा
यह दिफ़ाई बयान सुन रहे हैं जो मुझे यहूदियों के
तमाम इलज़ामात के जवाब में देना पड़ रहा है।
3ख़ासकर इसलिए कि आप यहूदियों के रस्मो-
रिवाज और तनाज़ों से वाक़िफ़ हैं। मेरी अर्ज़ है
कि आप सब्र से मेरी बात सुनें।
4तमाम यहूदी जानते हैं कि मैंने जवानी से
लेकर अब तक अपनी क़ौम बल्कि यरूशलम में
किस तरह ज़िंदगी गुज़ारी। 5वह मुझे बड़ी देर से
जानते हैं और अगर चाहें तो इसकी गवाही भी दे
सकते हैं कि मैं फ़रीसी की ज़िंदगी गुज़ारता था,
हमारे मज़हब के उसी फ़िरक़े की जो सबसे कटर
है। 6और आज मेरी अदालत इस वजह से की
जा रही है कि मैं उस वादे पर उम्मीद रखता हूँ जो
अल्लाह ने हमारे बापदादा से किया। 7हक़ीक़त में
यह वही उम्मीद है जिसकी वजह से हमारे बारह
क़बीले दिन-रात और बड़ी लग्न से अल्लाह की
इबादत करते रहते हैं और जिसकी तकमील के
लिए वह तड़पते हैं। तो भी ऐ बादशाह, यह लोग
मुझ पर यह उम्मीद रखने का इलज़ाम लगा रहे हैं।
8लेकिन आप सबको यह ख़याल क्यों नाक़ाबिले-
यक़ीन लगता है कि अल्लाह मुरदों को ज़िंदा कर
देता है?
9पहले मैं भी समझता था कि हर मुमकिन
तरीक़े से ईसा नासरी की मुख़ालफ़त करना मेरा
फ़र्ज़ है। 10और यह मैंने यरूशलम में किया भी।
राहनुमा इमामों से इख़्तियार लेकर मैंने वहाँ के
बहुत-से मुक़द्दसों को जेल में डलवा दिया। और
जब कभी उन्हें सज़ाए-मौत देने का फ़ैसला करना
था तो मैंने भी इस हक़ में वोट दिया। 11मैं तमाम
इबादतख़ानों में गया और बहुत दफ़ा उन्हें सज़ा
दिलाकर ईसा के बारे में कुफ़र बकने पर मजबूर
करने की कोशिश करता रहा। मैं इतने तैश में आ
गया था कि उनकी ईज़ारसानी की ग़रज़ से बैरूने-
मुल्क भी गया।

पौलुस अपनी तबदीली का ज़िक्र करता है

12एक दिन मैं राहनुमा इमामों से इख़्तियार
और इजाज़तनामा लेकर दमिश्क़ जा रहा था।

13दोपहर तक़रीबन बारह बजे मैं सड़क पर चल
रहा था कि एक रौशनी देखी जो सूरज से ज़्यादा
तेज़ थी। वह आसमान से आकर मेरे और मेरे
हमसफ़रों के गिर्दागिर्द चमकी। 14हम सब ज़मीन
पर गिर गए और मैंने अरामी ज़बान में एक आवाज़
सुनी, ‘साऊल, साऊल, तू मुझे क्यों सताता है?
यों मेरे आँकुस के ख़िलाफ़ पाँव मारना तेरे लिए
ही दुश्वारी का बाइस है।’ 15मैंने पूछा, ‘ख़ुदावंद,
आप कौन हैं?’ ख़ुदावंद ने जवाब दिया, ‘मैं ईसा
हूँ, वही जिसे तू सताता है। 16लेकिन अब उठकर
खड़ा हो जा, क्योंकि मैं तुझे अपना ख़ादिम और
गवाह मुक़र्रर करने के लिए तुझ पर ज़ाहिर हुआ
हूँ। जो कुछ तूने देखा है उस की तुझे गवाही देनी
है और उस की भी जो मैं आइंदा तुझ पर ज़ाहिर
करूँगा। 17मैं तुझे तेरी अपनी क़ौम से बचाए
रखूँगा और उन ग़ैरयहूदी क़ौमों से भी जिनके पास
तुझे भेजूँगा। 18तू उनकी आँखों को खोल देगा
ताकि वह तारीकी और इबलीस के इख़्तियार से
नूर और अल्लाह की तरफ़ रुजू करें। फिर उनके
गुनाहों को मुआफ़ कर दिया जाएगा और वह
उनके साथ आसमानी मीरास में शरीक होंगे जो
मुझ पर ईमान लाने से मुक़द्दस किए गए हैं।’

पौलुस अपनी ख़िदमत का बयान करता है

19ऐ अग्रिप्पा बादशाह, जब मैंने यह सुना तो
मैंने इस आसमानी रोया की नाफ़रमानी न की
20बल्कि इस बात की मुनादी की कि लोग तौबा
करके अल्लाह की तरफ़ रुजू करें और अपने
अमल से अपनी तबदीली का इज़हार भी करें।
मैंने इसकी तबलीग़ पहले दमिश्क़ में की, फिर
यरूशलम और पूरे यहूदिया में और इसके बाद
ग़ैरयहूदी क़ौमों में भी। 21इसी वजह से यहूदियों
ने मुझे बैतुल-मुक़द्दस में पकड़कर क़त्ल करने की
कोशिश की। 22लेकिन अल्लाह ने आज तक मेरी
मदद की है, इसलिए मैं यहाँ खड़ा होकर छोटों
और बड़ों को अपनी गवाही दे सकता हूँ। जो कुछ
मैं सुनाता हूँ वह वही कुछ है जो मूसा और नबियों
ने कहा है, 23कि मसीह दुख उठाकर पहला शख़्स
होगा जो मुरदों में से जी उठेगा और कि वह यों
अपनी क़ौम और ग़ैरयहूदियों के सामने अल्लाह
के नूर का प्रचार करेगा।”

24अचानक फ़ेस्तुस पौलुस की बात काट-
कर चिल्ला उठा, “पौलुस, होश में आओ! इल्म
की ज़्यादती ने तुम्हें दीवाना कर दिया है।”

25पौलुस ने जवाब दिया, “मुअज़्ज़ज़ फ़ेस्तुस,
मैं दीवाना नहीं हूँ। मेरी यह बातें हक़ीक़ी और
माक़ूल हैं। 26बादशाह सलामत इनसे वाक़िफ़ हैं,
इसलिए मैं उनसे खुलकर बात कर सकता हूँ। मुझे
यक़ीन है कि यह सब कुछ उनसे छुपा नहीं रहा,
क्योंकि यह पोशीदगी में या किसी कोने में नहीं
हुआ। 27ऐ अग्रिप्पा बादशाह, क्या आप नबियों
पर ईमान रखते हैं? बल्कि मैं जानता हूँ कि आप
उन पर ईमान रखते हैं।”

28अग्रिप्पा ने कहा, “आप तो बड़ी जल्दी से
मुझे क़ायल करके मसीही बनाना चाहते हैं।”

29पौलुस ने जवाब दिया, “जल्द या बदेर मैं
अल्लाह से दुआ करता हूँ कि न सिर्फ़ आप बल्कि
तमाम हाज़िरीन मेरी मानिंद बन जाएँ, सिवाए मेरी
ज़ंजीरों के।”

30फिर बादशाह, गवर्नर, बिरनीके और बाक़ी
सब उठकर चले गए। 31वहाँ से निकलकर
वह एक दूसरे से बात करने लगे। सब इस
पर मुत्तफ़िक़ थे कि “इस आदमी ने कुछ नहीं
किया जो सज़ाए-मौत या क़ैद के लायक़ हो।”
32और अग्रिप्पा ने फ़ेस्तुस से कहा, “अगर इसने
शहनशाह से अपील न की होती तो इसे रिहा
किया जा सकता था।”

पौलुस का रोम की तरफ़ सफ़र

27 जब हमारा इटली के लिए सफ़र
मुतैयिन किया गया तो पौलुस को
चंद एक और क़ैदियों समेत एक रोमी अफ़सर[a]
के हवाले किया गया जिसका नाम यूलियुस था
जो शाही पलटन पर मुक़र्रर था। 2अरिस्तरख़ुस

[a]सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

भी हमारे साथ था। वह थिस्सलुनीके शहर का
मकिदुनी आदमी था। हम अद्रमित्तियुम शहर के
एक जहाज़ पर सवार हुए जिसे सूबा आसिया की
चंद बंदरगाहों को जाना था। 3अगले दिन हम सैदा
पहुँचे तो यूलियुस ने मेहरबानी करके पौलुस को
शहर में उसके दोस्तों के पास जाने की इजाज़त दी
ताकि वह उस की ज़रूरियात पूरी कर सकें। 4जब
हम वहाँ से रवाना हुए तो मुख़ालिफ़ हवाओं की
वजह से जज़ीराए-क़ुबरुस और सूबा आसिया के
दरमियान से गुज़रे। 5फिर खुले समुंदर पर चलते
चलते हम किलिकिया और पंफ़ीलिया के समुंदर
से गुज़रकर सूबा लूकिया के शहर मूरा पहुँचे।
6वहाँ क़ैदियों पर मुक़र्रर अफ़सर को पता चला
कि इस्कंदरिया का एक मिसरी जहाज़ इटली जा
रहा है। उस पर उसने हमें सवार किया।

7कई दिन हम आहिस्ता आहिस्ता चले और
बड़ी मुश्किल से कनिदुस के क़रीब पहुँचे। लेकिन
मुख़ालिफ़ हवा की वजह से हमने जज़ीराए-क्रेते
की तरफ़ रुख़ किया और सलमोने शहर के
क़रीब से गुज़रकर क्रेते की आड़ में सफ़र किया।
8लेकिन वहाँ हम साहिल के साथ साथ चलते हुए
बड़ी मुश्किल से एक जगह पहुँचे जिसका नाम
‘हसीन-बंदर’ था। शहर लसया उसके क़रीब वाक़े
था।

9बहुत वक़्त ज़ाया हो गया था और अब
बहरी सफ़र ख़तरनाक भी हो चुका था, क्योंकि
कफ़्फ़ारा का दिन (तक़रीबन नवंबर के शुरू में)
गुज़र चुका था। इसलिए पौलुस ने उन्हें आगाह
किया, 10“हज़रात, मुझे पता है कि आगे जाकर
हम पर बड़ी मुसीबत आएगी। हमें जहाज़, मालो-
असबाब और जानों का नुक़सान उठाना पड़ेगा।”
11लेकिन क़ैदियों पर मुक़र्रर रोमी अफ़सर ने उस
की बात नज़रंदाज़ करके जहाज़ के नाख़ुदा और
मालिक की बात मानी। 12चूँकि ‘हसीन-बंदर’
में जहाज़ को सर्दियों के मौसम के लिए रखना
मुश्किल था इसलिए अकसर लोग आगे फ़ेनिक्स
तक पहुँचकर सर्दियों का मौसम गुज़ारना चाहते
थे। क्योंकि फ़ेनिक्स जज़ीराए-क्रेते की अच्छी
बंदरगाह थी जो सिर्फ़ जुनूब-मग़रिब और शिमाल-
मग़रिब की तरफ़ खुली थी।

समुंदर पर तूफ़ान

13चुनाँचे एक दिन जब जुनूब की सिम्त से
हलकी-सी हवा चलने लगी तो मल्लाहों ने सोचा
कि हमारा इरादा पूरा हो गया है। वह लंगर
उठाकर क्रेते के साहिल के साथ साथ चलने लगे।
14लेकिन थोड़ी ही देर के बाद मौसम बदल गया
और उन पर जज़ीरे की तरफ़ से एक तूफ़ानी
हवा टूट पड़ी जो बादे-शिमाल-मशरिक़ी कहलाती
है। 15जहाज़ हवा के क़ाबू में आ गया और हवा
की तरफ़ रुख़ न कर सका, इसलिए हमने हार
मानकर जहाज़ को हवा के साथ साथ चलने
दिया। 16जब हम एक छोटे जज़ीरा बनाम कौदा
की आड़ में से गुज़रने लगे तो हमने बड़ी मुश्किल
से बचाव-कश्ती को जहाज़ पर उठाकर महफ़ूज़
रखा। (अब तक वह रस्से से जहाज़ के साथ
खींची जा रही थी।) 17फिर मल्लाहों ने जहाज़
के ढाँचे को ज़्यादा मज़बूत बनाने की ख़ातिर
उसके इर्दगिर्द रस्से बाँधे। ख़ौफ़ यह था कि जहाज़
शिमाली अफ़्रीक़ा के क़रीब पड़े चोरबालू में धँस
जाए। (इन रेतों का नाम सूरतिस था।) इससे
बचने के लिए उन्होंने लंगर डाल दिया[a] ताकि
जहाज़ कुछ आहिस्ता चले। यों जहाज़ हवा के
साथ चलते चलते आगे बढ़ा। 18अगले दिन भी
तूफ़ान जहाज़ को इतनी शिद्दत से झँझोड़ रहा था
कि मल्लाह मालो-असबाब को समुंदर में फेंकने
लगे। 19तीसरे दिन उन्होंने अपने ही हाथों से
जहाज़ चलाने का कुछ सामान समुंदर में फेंक
दिया। 20तूफ़ान की शिद्दत बहुत दिनों के बाद
भी ख़त्म न हुई। न सूरज और न सितारे नज़र
आए यहाँ तक कि आख़िरकार हमारे बचने की
हर उम्मीद जाती रही।

[a]लंगर यानी छोटा लंगर जिसकी मदद से जहाज़ का रुख़
एक ही सिम्त में रखा जाता है।

21काफ़ी देर से दिल नहीं चाहता था कि खाना
खाया जाए। आख़िरकार पौलुस ने लोगों के बीच
में खड़े होकर कहा, “हज़रात, बेहतर होता कि
आप मेरी बात मानकर क्रेते से रवाना न होते।
फिर आप इस मुसीबत और ख़सारे से बच जाते।
22लेकिन अब मैं आपको नसीहत करता हूँ कि
हौसला रखें। आपमें से एक भी नहीं मरेगा। सिर्फ़
जहाज़ तबाह हो जाएगा। 23क्योंकि पिछली रात
एक फ़रिश्ता मेरे पास आ खड़ा हुआ, उसी ख़ुदा
का फ़रिश्ता जिसका मैं बंदा हूँ और जिसकी
इबादत मैं करता हूँ। 24उसने कहा, ‘पौलुस, मत
डर। लाज़िम है कि तुझे शहनशाह के सामने पेश
किया जाए। और अल्लाह अपनी मेहरबानी से
तेरे वास्ते तमाम हमसफ़रों की जानें भी बचाए
रखेगा।’ 25इसलिए हौसला रखें, क्योंकि मेरा
अल्लाह पर ईमान है कि ऐसा ही होगा जिस तरह
उसने फ़रमाया है। 26लेकिन जहाज़ को किसी
जज़ीरे के साहिल पर चढ़ जाना है।”

27तूफ़ान की चौधवीं रात जहाज़ बहीराए-
अदरिया पर बहे चला जा रहा था कि तक़रीबन
आधी रात को मल्लाहों ने महसूस किया कि
साहिल नज़दीक आ रहा है। 28पानी की गहराई
की पैमाइश करके उन्हें मालूम हुआ कि वह 120
फ़ुट थी। थोड़ी देर के बाद उस की गहराई 90
फ़ुट हो चुकी थी। 29वह डर गए, क्योंकि उन्होंने
अंदाज़ा लगाया कि ख़तरा है कि हम साहिल
पर पड़ी चट्टानों से टकरा जाएँ। इसलिए उन्होंने
जहाज़ के पिछले हिस्से से चार लंगर डालकर
दुआ की कि दिन जल्दी से चढ़ जाए। 30उस
वक़्त मल्लाहों ने जहाज़ से फ़रार होने की कोशिश
की। उन्होंने यह बहाना बनाकर कि हम जहाज़ के
सामने से भी लंगर डालना चाहते हैं बचाव-कश्ती
पानी में उतरने दी। 31इस पर पौलुस ने क़ैदियों
पर मुक़र्रर अफ़सर और फ़ौजियों से कहा, “अगर
यह आदमी जहाज़ पर न रहें तो आप सब मर
जाएंगे।” 32चुनाँचे उन्होंने बचाव-कश्ती के रस्से
को काटकर उसे खुला छोड़ दिया।

33पौ फटनेवाली थी कि पौलुस ने सबको
समझाया कि वह कुछ खा लें। उसने कहा,
“आपने चौदह दिन से इज़तिराब की हालत में
रहकर कुछ नहीं खाया। 34अब मेहरबानी करके
कुछ खा लें। यह आपके बचाव के लिए ज़रूरी
है, क्योंकि आप न सिर्फ़ बच जाएंगे बल्कि
आपका एक बाल भी बीका नहीं होगा।” 35यह
कहकर उसने कुछ रोटी ली और उन सबके
सामने अल्लाह से शुक्रगुज़ारी की दुआ की।
फिर उसे तोड़कर खाने लगा। 36इससे दूसरों
की हौसलाअफ़्ज़ाई हुई और उन्होंने भी कुछ
खाना खाया। 37जहाज़ पर हम 276 अफ़राद थे।
38जब सब सेर हो गए तो गंदुम को भी समुंदर में
फेंका गया ताकि जहाज़ और हलका हो जाए।

जहाज़ टुकड़े टुकड़े हो जाता है

39जब दिन चढ़ गया तो मल्लाहों ने साहिली
इलाक़े को न पहचाना। लेकिन एक ख़लीज नज़र
आई जिसका साहिल अच्छा था। उन्हें ख़याल
आया कि शायद हम जहाज़ को वहाँ ख़ुश्की
पर चढ़ा सकें। 40चुनाँचे उन्होंने लंगरों के रस्से
काटकर उन्हें समुंदर में छोड़ दिया। फिर उन्होंने
वह रस्से खोल दिए जिनसे पतवार बँधे होते थे
और सामनेवाले बादबान को चढ़ाकर हवा के ज़ोर
से साहिल की तरफ़ रुख़ किया। 41लेकिन चलते
चलते जहाज़ एक चोरबालू से टकराकर उस पर
चढ़ गया। जहाज़ का माथा धँस गया यहाँ तक
कि वह हिल भी न सका जबकि उसका पिछला
हिस्सा मौजों की टक्करों से टुकड़े टुकड़े होने
लगा।

42फ़ौजी क़ैदियों को क़त्ल करना चाहते थे
ताकि वह जहाज़ से तैरकर फ़रार न हो सकें।
43लेकिन उन पर मुक़र्रर अफ़सर पौलुस को
बचाना चाहता था, इसलिए उसने उन्हें ऐसा करने
न दिया। उसने हुक्म दिया कि पहले वह सब जो
तैर सकते हैं पानी में छलाँग लगाकर किनारे तक
पहुँचें। 44बाक़ियों को तख़्तों या जहाज़ के किसी

टुकड़े को पकड़कर पहुँचना था। यों सब सहीह-
सलामत साहिल तक पहुँचे।

जज़ीराए-मिलिते में

28 तूफ़ान से बचने पर हमें मालूम
हुआ कि जज़ीरे का नाम मिलिते
है। 2मक़ामी लोगों ने हमें ग़ैरमामूली मेहर-
बानी दिखाई। उन्होंने आग जलाकर हमारा
इस्तक़बाल किया, क्योंकि बारिश शुरू हो चुकी
थी और ठंड थी। 3पौलुस ने भी लकड़ी का ढेर
जमा किया। लेकिन ज्योंही उसने उसे आग में
फेंका एक ज़हरीला साँप आग की तपिश से
भागकर निकल आया और पौलुस के हाथ से
चिमटकर उसे डस लिया। 4मक़ामी लोगों ने साँप
को पौलुस के हाथ से लगे देखा तो एक दूसरे से
कहने लगे, "यह आदमी ज़रूर क़ातिल होगा। गो
यह समुंदर से बच गया, लेकिन इनसाफ़ की देवी
इसे जीने नहीं देती।" 5लेकिन पौलुस ने साँप को
झटककर आग में फेंक दिया, और साँप का कोई
बुरा असर उस पर न हुआ। 6लोग इस इंतज़ार में
रहे कि वह सूज जाए या अचानक गिर पड़े, लेकिन
काफ़ी देर के बाद भी कुछ न हुआ। इस पर उन्होंने
अपना ख़याल बदलकर उसे देवता क़रार दिया।

7क़रीब ही जज़ीरे के सबसे बड़े आदमी की
ज़मीनें थीं। उसका नाम पुबलियुस था। उसने
अपने घर में हमारा इस्तक़बाल किया और
तीन दिन तक हमारी ख़ूब मेहमान-नवाज़ी की।
8उसका बाप बीमार पड़ा था, वह बुख़ार और
पेचिश के मरज़ में मुब्तला था। पौलुस उसके
कमरे में गया, उसके लिए दुआ की और अपने
हाथ उस पर रख दिए। इस पर मरीज़ को शफ़ा
मिली। 9जब यह हुआ तो जज़ीरे के बाक़ी तमाम
मरीज़ों ने पौलुस के पास आकर शफ़ा पाई।
10नतीजे में उन्होंने कई तरह से हमारी इज़्ज़त
की। और जब रवाना होने का वक़्त आ गया तो
उन्होंने हमें वह सब कुछ मुहैया किया जो सफ़र
के लिए दरकार था।

जज़ीराए-मिलिते से रोम तक

11जज़ीरे पर तीन माह गुज़र गए। फिर हम एक
जहाज़ पर सवार हुए जो सर्दियों के मौसम के लिए
वहाँ ठहर गया था। यह जहाज़ इस्कंदरिया का
था और उसके माथे पर जुड़वाँ देवताओं 'कास्टर'
और 'पोल्लुक्स' की मूरत नसब थी। हम वहाँ से
रुख़सत होकर 12सुरकूसा शहर पहुँचे। तीन दिन
के बाद 13हम वहाँ से रेगियुम शहर गए जहाँ हम
सिर्फ़ एक दिन ठहरे। फिर जुनूब से हवा उठी,
इसलिए हम अगले दिन पुतियोली पहुँचे। 14इस
शहर में हमारी मुलाक़ात कुछ भाइयों से हुई।
उन्होंने हमें अपने पास एक हफ़्ता रहने की दावत
दी। यों हम रोम पहुँच गए। 15रोम के भाइयों
ने हमारे बारे में सुन रखा था, और कुछ हमारा
इस्तक़बाल करने के लिए क़सबा बनाम अप्पियुस
के चौक तक आए जबकि कुछ सिर्फ़ 'तीन-
सराय' तक आ सके। उन्हें देखकर पौलुस ने
अल्लाह का शुक्र किया और नया हौसला पाया।

रोम में

16हमारे रोम में पहुँचने पर पौलुस को अपने
किराए के मकान में रहने की इजाज़त मिली, गो
एक फ़ौजी उस की पहरादारी करने के लिए उसके
साथ रहा।

17तीन दिन गुज़र गए तो पौलुस ने यहूदी
राहनुमाओं को बुलाया। जब वह जमा हुए तो
उसने उनसे कहा, "भाइयो, मुझे यरूशलम में
गिरिफ़्तार करके रोमियों के हवाले कर दिया गया
हालाँकि मैंने अपनी क़ौम या अपने बापदादा के
रस्मो-रिवाज के ख़िलाफ़ कुछ नहीं किया था।
18रोमी मेरा जायज़ा लेकर मुझे रिहा करना चाहते
थे, क्योंकि उन्हें मुझे सज़ाए-मौत देने का कोई
सबब न मिला था। 19लेकिन यहूदियों ने एतराज़
किया और यों मुझे शहनशाह से अपील करने पर
मजबूर कर दिया गया, गो मेरा यह इरादा नहीं
है कि मैं अपनी क़ौम पर कोई इलज़ाम लगाऊँ।
20मैंने इसलिए आपको बुलाया ताकि आपसे
मिलूँ और गुफ़्तगू करूँ। मैं उस शख़्स की ख़ातिर

इन ज़ंजीरों से जकड़ा हुआ हूँ जिसके आने की
उम्मीद इसराईल रखता है।”
21यहूदियों ने उसे जवाब दिया, “हमें यहूदिया
से आपके बारे में कोई भी ख़त नहीं मिला। और
जितने भाई वहाँ से आए हैं उनमें से एक ने भी
आपके बारे में न तो कोई मनफ़ी रिपोर्ट दी न
कोई बुरी बात बताई। 22लेकिन हम आपसे सुनना
चाहते हैं कि आपके ख़यालात क्या हैं, क्योंकि हम
इतना जानते हैं कि हर जगह लोग इस फ़िरक़े के
ख़िलाफ़ बातें कर रहे हैं।”
23चुनाँचे उन्होंने मिलने का एक दिन मुक़र्रर
किया। जब यहूदी दुबारा उस जगह आए जहाँ
पौलुस रहता था तो उनकी तादाद बहुत ज़्यादा
थी। सुबह से लेकर शाम तक उसने अल्लाह की
बादशाही बयान की और उस की गवाही दी। उसने
उन्हें मूसा की शरीअत और नबियों के हवालाजात
पेश कर करके ईसा के बारे में क़ायल करने की
कोशिश की। 24कुछ तो क़ायल हो गए, लेकिन
बाक़ी ईमान न लाए। 25उनमें नाइत्तफ़ाक़ी पैदा
हुई तो वह चले गए। जब वह जाने लगे तो पौलुस
ने उनसे कहा, “रूहुल-क़ुद्स ने यसायाह नबी की
मारिफ़त आपके बापदादा से ठीक कहा कि
26जा, इस क़ौम को बता,
‘तुम अपने कानों से सुनोगे
मगर कुछ नहीं समझोगे,
तुम अपनी आँखों से देखोगे
मगर कुछ नहीं जानोगे।
27क्योंकि इस क़ौम का दिल
बेहिस हो गया है।
वह मुश्किल से अपने कानों से सुनते हैं,
उन्होंने अपनी आँखों को बंद कर रखा है,
ऐसा न हो कि वह अपनी आँखों से देखें,
अपने कानों से सुनें,
अपने दिल से समझें,
मेरी तरफ़ रुजू करें
और मैं उन्हें शफ़ा दूँ’।”
28पौलुस ने अपनी बात इन अलफ़ाज़ से ख़त्म
की, “अब जान लें कि अल्लाह की तरफ़ से यह
नजात ग़ैरयहूदियों को भी पेश की गई है और वह
सुनेंगे भी!”
29[जब उसने यह कहा तो यहूदी आपस में
बहस-मुबाहसा करते हुए चले गए।]
30पौलुस पूरे दो साल अपने किराए के घर
में रहा। जो भी उसके पास आया उसका उसने
इस्तक़बाल करके 31दिलेरी से अल्लाह की
बादशाही की मुनादी की और ख़ुदावंद ईसा मसीह
की तालीम दी। और किसी ने मुदाख़लत न की।

रोमियों के नाम
पौलुस रसूल का ख़त

सलाम

1 यह ख़त मसीह ईसा के ग़ुलाम पौलुस की
तरफ़ से है जिसे रसूल होने के लिए बुलाया
और अल्लाह की ख़ुशख़बरी की मुनादी करने के
लिए अलग किया गया है।

2पाक नविश्तों में दर्ज इस ख़ुशख़बरी का वादा
अल्लाह ने पहले ही अपने नबियों से कर रखा
था। 3और यह पैग़ाम उसके फ़रज़ंद ईसा के बारे
में है। इनसानी लिहाज़ से वह दाऊद की नसल
से पैदा हुआ, 4जबकि रूहुल-क़ुद्स के लिहाज़ से
वह क़ुदरत के साथ अल्लाह का फ़रज़ंद ठहरा जब
वह मुरदों में से जी उठा। यह है हमारे ख़ुदावंद ईसा
मसीह के बारे में अल्लाह की ख़ुशख़बरी। 5मसीह
से हमें रसूली इख़्तियार का यह फ़ज़ल हासिल
हुआ है कि हम तमाम ग़ैरयहूदियों में मुनादी करें
ताकि वह ईमान लाकर उसके ताबे हो जाएँ और
यों मसीह के नाम को जलाल मिले। 6आप भी
उन ग़ैरयहूदियों में से हैं, जो ईसा मसीह के बुलाए
हुए हैं।

7मैं आप सबको लिख रहा हूँ जो रोम में
अल्लाह के प्यारे हैं और मख़सूसो-मुक़द्दस होने
के लिए बुलाए गए हैं।

ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावंद ईसा मसीह
आपको फ़ज़ल और सलामती अता करें।

रोम जाने की आरज़ू

8अव्वल, मैं आप सबके लिए ईसा मसीह के
वसीले से अपने ख़ुदा का शुक्र करता हूँ, क्योंकि
पूरी दुनिया में आपके ईमान का चर्चा हो रहा
है। 9ख़ुदा ही मेरा गवाह है जिसकी ख़िदमत मैं
अपनी रूह में करता हूँ जब मैं उसके फ़रज़ंद के
बारे में ख़ुशख़बरी फैलाता हूँ, मैं लगातार आपको
याद करता रहता हूँ 10और हर वक़्त अपनी
दुआओं में मिन्नत करता हूँ कि अल्लाह मुझे
आख़िरकार आपके पास आने की कामयाबी अता
करे। 11क्योंकि मैं आपसे मिलने का आरज़ूमंद
हूँ। मैं चाहता हूँ कि मेरे ज़रीए आपको कुछ रूहानी
बरकत मिल जाए और यों आप मज़बूत हो जाएँ।
12यानी आने का मक़सद यह है कि मेरे ईमान से
आपकी हौसलाअफ़्ज़ाई की जाए और इसी तरह
आपके ईमान से मेरा हौसला भी बढ़ जाए।

13भाइयो, आपके इल्म में हो कि मैंने बहुत
दफ़ा आपके पास आने का इरादा किया। क्योंकि
जिस तरह दीगर ग़ैरयहूदी अक़वाम में मेरी
ख़िदमत से फल पैदा हुआ है उसी तरह आपमें
भी फल देखना चाहता हूँ। लेकिन आज तक मुझे
रोका गया है। 14बात यह है कि यह ख़िदमत
सरंजाम देना मेरा फ़र्ज़ है, ख़ाह यूनानियों में हो
या ग़ैरयूनानियों में, ख़ाह दानाओं में हो या नादानों
में। 15यही वजह है कि मैं आपको भी जो रोम में

रहते हैं अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाने का मुश्ताक़
हूँ।

अल्लाह की ख़ुशख़बरी की क़ुदरत

16मैं तो ख़ुशख़बरी के सबब से शर्माता नहीं,
क्योंकि यह अल्लाह की क़ुदरत है जो हर एक
को जो ईमान लाता है नजात देती है, पहले
यहूदियों को, फिर ग़ैरयहूदियों को। 17क्योंकि
इस ख़ुशख़बरी में अल्लाह की ही रास्तबाज़ी
ज़ाहिर होती है, वह रास्तबाज़ी जो शुरू से आख़िर
तक ईमान पर मबनी है। यही बात कलामे-मुक़द्दस
में दर्ज है जब लिखा है, "रास्तबाज़ ईमान ही से
जीता रहेगा।"

इनसान पर अल्लाह का ग़ज़ब

18लेकिन अल्लाह का ग़ज़ब आसमान पर से
उन तमाम बेदीन और नारास्त लोगों पर नाज़िल
होता है जो सच्चाई को अपनी नारास्ती से दबाए
रखते हैं। 19जो कुछ अल्लाह के बारे में मालूम हो
सकता है वह तो उन पर ज़ाहिर है, हाँ अल्लाह
ने ख़ुद यह उन पर ज़ाहिर किया है। 20क्योंकि
दुनिया की तख़लीक़ से लेकर आज तक इनसान
अल्लाह की अनदेखी फ़ितरत यानी उस की
अज़ली क़ुदरत और उलूहियत मख़लूक़ात का
मुशाहदा करने से पहचान सकता है। इसलिए
उनके पास कोई उज़्र नहीं। 21अल्लाह को जानने
के बावुजूद उन्होंने उसे वह जलाल न दिया जो
उसका हक़ है, न उसका शुक्र अदा किया बल्कि
वह बातिल ख़यालात में पड़ गए और उनके
बेसमझ दिलों पर तारीकी छा गई। 22वह दावा तो
करते थे कि हम दाना हैं, लेकिन अहमक़ साबित
हुए। 23यों उन्होंने ग़ैरफ़ानी ख़ुदा को जलाल
देने के बजाए ऐसे बुतों की पूजा की जो फ़ानी
इनसान, परिंदों, चौपाइयों और रेंगनेवाले जानवरों
की सूरत में बनाए गए थे।

24इसलिए अल्लाह ने उन्हें उन नजिस कामों में
छोड़ दिया जो उनके दिल करना चाहते थे। नतीजे
में उनके जिस्म एक दूसरे से बेहुर्मत होते रहे।
25हाँ, उन्होंने अल्लाह के बारे में सच्चाई को रद्द
करके झूट को अपना लिया और मख़लूक़ात की
परस्तिश और ख़िदमत की, न कि ख़ालिक़ की,
जिसकी तारीफ़ अबद तक होती रहे, आमीन।

26यही वजह है कि अल्लाह ने उन्हें उनकी
शर्मनाक शहवतों में छोड़ दिया। उनकी ख़वातीन
ने फ़ितरती जिंसी ताल्लुक़ात के बजाए
ग़ैरफ़ितरती ताल्लुक़ात रखे। 27इसी तरह मर्द
ख़वातीन के साथ फ़ितरती ताल्लुक़ात छोड़कर
एक दूसरे की शहवत में मस्त हो गए। मर्दों ने
मर्दों के साथ बेहया हरकतें करके अपने बदनों में
अपनी इस गुमराही का मुनासिब बदला पाया।

28और चूँकि उन्होंने अल्लाह को जानने से
इनकार कर दिया इसलिए उसने उन्हें उनकी
मकरूह सोच में छोड़ दिया। और इसलिए वह ऐसी
हरकतें करते रहते हैं जो कभी नहीं करनी चाहिएँ।
29वह हर तरह की नारास्ती, शर, लालच और
बुराई से भरे हुए हैं। वह हसद, ख़ूनरेज़ी, झगड़े,
फ़रेब और कीनावरी से लबरेज़ हैं। वह चुग़ली
खानेवाले, 30तोहमत लगानेवाले, अल्लाह से
नफ़रत करनेवाले, सरकश, मग़रूर, शेख़ीबाज़,
बदी को ईजाद करनेवाले, माँ-बाप के नाफ़रमान,
31बेसमझ, बेवफ़ा, संगदिल और बेरहम हैं।
32अगरचे वह अल्लाह का फ़रमान जानते हैं कि
ऐसा करनेवाले सज़ाए-मौत के मुस्तहिक़ हैं तो भी
वह ऐसा करते हैं। न सिर्फ़ यह बल्कि वह ऐसा
करनेवाले दीगर लोगों को शाबाश भी देते हैं।

अल्लाह की रास्त अदालत

2 ऐ इनसान, क्या तू दूसरों को मुजरिम
ठहराता है? तू जो कोई भी हो तेरा कोई
उज़्र नहीं। क्योंकि तू ख़ुद भी वही कुछ करता
है जिसमें तू दूसरों को मुजरिम ठहराता है और
यों अपने आपको भी मुजरिम क़रार देता है।
2अब हम जानते हैं कि ऐसे काम करनेवालों पर
अल्लाह का फ़ैसला मुंसिफ़ाना है। 3ताहम तू
वही कुछ करता है जिसमें तू दूसरों को मुजरिम
ठहराता है। क्या तू समझता है कि ख़ुद अल्लाह

की अदालत से बच जाएगा? 4या क्या तू उस
की वसी मेहरबानी, तहम्मुल और सब्र को हक़ीर
जानता है? क्या तुझे मालूम नहीं कि अल्लाह
की मेहरबानी तुझे तौबा तक ले जाना चाहती है?
5लेकिन तू हटधर्म है, तू तौबा करने के लिए तैयार
नहीं और यों अपनी सज़ा में इज़ाफ़ा करता जा
रहा है, वह सज़ा जो उस दिन दी जाएगी जब
अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल होगा, जब उस की
रास्त अदालत ज़ाहिर होगी। 6अल्लाह हर एक
को उसके कामों का बदला देगा। 7कुछ लोग
साबितक़दमी से नेक काम करते और जलाल,
इज़्ज़त और बक़ा के तालिब रहते हैं। उन्हें अल्लाह
अबदी ज़िंदगी अता करेगा। 8लेकिन कुछ लोग
ख़ुदग़रज़ हैं और सच्चाई की नहीं बल्कि नारास्ती
की पैरवी करते हैं। उन पर अल्लाह का ग़ज़ब और
क़हर नाज़िल होगा। 9मुसीबत और परेशानी हर
उस इनसान पर आएगी जो बुराई करता है, पहले
यहूदी पर, फिर यूनानी पर। 10लेकिन जलाल,
इज़्ज़त और सलामती हर उस इनसान को हासिल
होगी जो नेकी करता है, पहले यहूदी को, फिर
यूनानी को। 11क्योंकि अल्लाह किसी का भी
तरफ़दार नहीं।

12ग़ैरयहूदियों के पास मूसवी शरीअत नहीं है,
इसलिए वह शरीअत के बग़ैर ही गुनाह करके
हलाक हो जाते हैं। यहूदियों के पास शरीअत है,
लेकिन वह भी नहीं बचेंगे। क्योंकि जब वह गुनाह
करते हैं तो शरीअत ही उन्हें मुजरिम ठहराती है।
13क्योंकि अल्लाह के नज़दीक यह काफ़ी नहीं
कि हम शरीअत की बातें सुनें बल्कि वह हमें उस
वक़्त ही रास्तबाज़ क़रार देता है जब शरीअत पर
अमल भी करते हैं। 14और गो ग़ैरयहूदियों के पास
शरीअत नहीं होती लेकिन जब भी वह फ़ितरती
तौर पर वह कुछ करते हैं जो शरीअत फ़रमाती
है तो ज़ाहिर करते हैं कि गो हमारे पास शरीअत
नहीं तो भी हम अपने आपके लिए ख़ुद शरीअत
हैं। 15इसमें वह साबित करते हैं कि शरीअत के
तक़ाज़े उनके दिल पर लिखे हुए हैं। उनका ज़मीर
भी इसकी गवाही देता है, क्योंकि उनके ख़यालात
कभी एक दूसरे की मज़म्मत और कभी एक दूसरे
का दिफ़ा भी करते हैं। 16ग़रज़, मेरी ख़ुशख़बरी
के मुताबिक़ हर एक को उस दिन अपना अज्र
मिलेगा जब अल्लाह ईसा मसीह की मारिफ़त
इनसानों की पोशीदा बातों की अदालत करेगा।

यहूदी और शरीअत

17अच्छा, तू अपने आपको यहूदी कहता है।
तू शरीअत पर इनहिसार करता और अल्लाह के
साथ अपने ताल्लुक़ पर फ़ख़र करता है। 18तू उस
की मरज़ी को जानता है और शरीअत की तालीम
पाने के बाइस सहीह राह की पहचान रखता
है। 19तुझे पूरा यक़ीन है, 'मैं अंधों का क़ायद,
तारीकी में बसनेवालों की रौशनी, 20बेसमझों
का मुअल्लिम और बच्चों का उस्ताद हूँ।' एक
लिहाज़ से यह दुरुस्त भी है, क्योंकि शरीअत
की सूरत में तेरे पास इल्मो-इरफ़ान और सच्चाई
मौजूद है। 21अब बता, तू जो औरों को सिखाता
है अपने आपको क्यों नहीं सिखाता? तू जो
चोरी न करने की मुनादी करता है, ख़ुद चोरी
क्यों करता है? 22तू जो औरों को ज़िना करने
से मना करता है, ख़ुद ज़िना क्यों करता है? तू
जो बुतों से घिन खाता है, ख़ुद मंदिरों को क्यों
लूटता है? 23तू जो शरीअत पर फ़ख़र करता
है, क्यों इसकी ख़िलाफ़वरज़ी करके अल्लाह की
बेइज़्ज़ती करता है? 24यह वही बात है जो
कलामे-मुक़द्दस में लिखी है, "तुम्हारे सबब से
ग़ैरयहूदियों में अल्लाह के नाम पर कुफ़र बका
जाता है।"

25ख़तने का फ़ायदा तो उस वक़्त होता है जब
तू शरीअत पर अमल करता है। लेकिन अगर तू
उस की हुक्मअदूली करता है तो तू नामख़तून
जैसा है। 26इसके बरअक्स अगर नामख़तून
ग़ैरयहूदी शरीअत के तक़ाज़ों को पूरा करता है
तो क्या अल्लाह उसे मख़तून यहूदी के बराबर
नहीं ठहराएगा? 27चुनाँचे जो नामख़तून ग़ैरयहूदी
शरीअत पर अमल करते हैं वह आप यहूदियों
को मुजरिम ठहराएँगे जिनका ख़तना हुआ है और

जिनके पास शरीअत है, क्योंकि आप शरीअत पर
अमल नहीं करते। 28आप इस बिना पर हक़ीक़ी
यहूदी नहीं हैं कि आपके वालिदैन यहूदी थे या
आपके बदन का ख़तना ज़ाहिरी तौर पर हुआ है।
29बल्कि हक़ीक़ी यहूदी वह है जो बातिन में यहूदी
है। और हक़ीक़ी ख़तना उस वक़्त होता है जब
दिल का ख़तना हुआ है। ऐसा ख़तना शरीअत से
नहीं बल्कि रूहुल-क़ुद्स के वसीले से किया जाता
है। और ऐसे यहूदी को इनसान की तरफ़ से नहीं
बल्कि अल्लाह की तरफ़ से तारीफ़ मिलती है।

3 तो क्या यहूदी होने का या ख़तना का कोई
फ़ायदा है? 2जी हाँ, हर तरह का! अव्वल
तो यह कि अल्लाह का कलाम उनके सुपुर्द किया
गया है। 3अगर उनमें से बाज़ बेवफ़ा निकले तो
क्या हुआ? क्या इससे अल्लाह की वफ़ादारी भी
ख़त्म हो जाएगी? 4कभी नहीं! लाज़िम है कि
अल्लाह सच्चा ठहरे गो हर इनसान झूटा है। यों
कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, “लाज़िम है कि तू
बोलते वक़्त रास्त ठहरे और अदालत करते वक़्त
ग़ालिब आए।”

5कोई कह सकता है, “हमारी नारास्ती का
एक अच्छा मक़सद होता है, क्योंकि इससे लोगों
पर अल्लाह की रास्ती ज़ाहिर होती है। तो क्या
अल्लाह बेइनसाफ़ नहीं होगा अगर वह अपना
ग़ज़ब हम पर नाज़िल करे?” (मैं इनसानी
ख़याल पेश कर रहा हूँ)। 6हरगिज़ नहीं! अगर
अल्लाह रास्त न होता तो फिर वह दुनिया की
अदालत किस तरह कर सकता?

7शायद कोई और एतराज़ करे, “अगर मेरा
झूट अल्लाह की सच्चाई को कसरत से नुमायाँ
करता है और यों उसका जलाल बढ़ता है तो
वह मुझे क्योंकर गुनाहगार क़रार दे सकता है?”
8कुछ लोग हम पर यह कुफ़र भी बकते हैं कि
हम कहते हैं, “आओ, हम बुराई करें ताकि भलाई
निकले।” इनसाफ़ का तक़ाज़ा है कि ऐसे लोगों
को मुजरिम ठहराया जाए।

कोई रास्तबाज़ नहीं

9अब हम क्या कहें? क्या हम यहूदी दूसरों से
बरतर हैं? बिलकुल नहीं। हम तो पहले ही यह
इलज़ाम लगा चुके हैं कि यहूदी और यूनानी सब
ही गुनाह के क़ब्ज़े में हैं। 10कलामे-मुक़द्दस में यों
लिखा है,

“कोई नहीं जो रास्तबाज़ है,
एक भी नहीं।
11कोई नहीं जो समझदार है,
कोई नहीं जो अल्लाह का तालिब है।
12अफ़सोस, सब सहीह राह से भटक गए,
सबके सब बिगड़ गए हैं।
कोई नहीं जो भलाई करता हो,
एक भी नहीं।
13उनका गला खुली क़ब्र है,
उनकी ज़बान फ़रेब देती है।
उनके होंटों में साँप का ज़हर है।
14उनका मुँह
लानत और कड़वाहट से भरा है।
15उनके पाँव
ख़ून बहाने के लिए जल्दी करते हैं।
16अपने पीछे वह तबाही-ओ-बरबादी
छोड़ जाते हैं,
17और वह सलामती की राह नहीं जानते।
18उनकी आँखों के सामने
ख़ुदा का ख़ौफ़ नहीं होता।”

19अब हम जानते हैं कि शरीअत जो कुछ
फ़रमाती है उन्हें फ़रमाती है जिनके सुपुर्द वह
की गई है। मक़सद यह है कि हर इनसान के
बहाने ख़त्म किए जाएँ और तमाम दुनिया अल्लाह
के सामने मुजरिम ठहरे। 20क्योंकि शरीअत के
तक़ाज़े पूरे करने से कोई भी उसके सामने
रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता, बल्कि शरीअत का
काम यह है कि हमारे अंदर गुनाहगार होने का
एहसास पैदा करे।

रास्तबाज़ होने के लिए ईमान ज़रूरी है

21लेकिन अब अल्लाह ने हम पर एक राह का
इनकिशाफ़ किया है जिससे हम शरीअत के बग़ैर
ही उसके सामने रास्तबाज़ ठहर सकते हैं। तौरेत
और नबियों के सहीफ़े भी इसकी तसदीक़ करते
हैं। 22राह यह है कि जब हम ईसा मसीह पर ईमान
लाते हैं तो अल्लाह हमें रास्तबाज़ क़रार देता है।
और यह राह सबके लिए है। क्योंकि कोई भी
फ़रक़ नहीं, 23सबने गुनाह किया, सब अल्लाह
के उस जलाल से महरूम हैं जिसका वह तक़ाज़ा
करता है, 24और सब मुफ़्त में अल्लाह के फ़ज़ल
ही से रास्तबाज़ ठहराए जाते हैं, उस फ़िदिये के
वसीले से जो मसीह ईसा ने दिया। 25क्योंकि
अल्लाह ने ईसा को उसके ख़ून के बाइस कफ़्फ़ारा
का वसीला बनाकर पेश किया, ऐसा कफ़्फ़ारा
जिससे ईमान लानेवालों को गुनाहों की मुआफ़ी
मिलती है। यों अल्लाह ने अपनी रास्ती ज़ाहिर
की, पहले माज़ी में जब वह अपने सब्रो-तहम्मुल
में गुनाहों की सज़ा देने से बाज़ रहा 26और अब
मौजूदा ज़माने में भी। इससे वह ज़ाहिर करता
है कि वह रास्त है और हर एक को रास्तबाज़
ठहराता है जो ईसा पर ईमान लाया है।

27अब हमारा फ़ख़र कहाँ रहा? उसे तो ख़त्म
कर दिया गया है। किस शरीअत से? क्या
आमाल की शरीअत से? नहीं, बल्कि ईमान की
शरीअत से। 28क्योंकि हम कहते हैं कि इनसान
को ईमान से रास्तबाज़ ठहराया जाता है, न कि
आमाल से। 29क्या अल्लाह सिर्फ़ यहूदियों का
ख़ुदा है? ग़ैरयहूदियों का नहीं? हाँ, ग़ैरयहूदियों
का भी है। 30क्योंकि अल्लाह एक ही है जो
मख़तून और नामख़तून दोनों को ईमान ही से
रास्तबाज़ ठहराएगा। 31फिर क्या हम शरीअत
को ईमान से मनसूख़ करते हैं? हरगिज़ नहीं,
बल्कि हम शरीअत को क़ायम रखते हैं।

इब्राहीम ईमान से रास्तबाज़ ठहरा

4 इब्राहीम जिस्मानी लिहाज़ से हमारा बाप
था। तो रास्तबाज़ ठहरने के सिलसिले में
उसका क्या तजरबा था? 2हम कह सकते हैं कि
अगर वह शरीअत पर अमल करने से रास्तबाज़
ठहरता तो वह अपने आप पर फ़ख़र कर सकता
था। लेकिन अल्लाह के नज़दीक उसके पास
अपने आप पर फ़ख़र करने का कोई सबब न था।
3क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, "इब्राहीम
ने अल्लाह पर भरोसा रखा। इस बिना पर अल्लाह
ने उसे रास्तबाज़ क़रार दिया।" 4जब लोग काम
करते हैं तो उनकी मज़दूरी कोई ख़ास मेहरबानी
क़रार नहीं दी जाती, बल्कि यह तो उनका हक़
बनता है। 5लेकिन जब लोग काम नहीं करते
बल्कि अल्लाह पर ईमान रखते हैं जो बेदीनों को
रास्तबाज़ क़रार देता है तो उनका कोई हक़ नहीं
बनता। वह उनके ईमान ही की बिना पर रास्तबाज़
क़रार दिए जाते हैं। 6दाऊद यही बात बयान करता
है जब वह उस शख़्स को मुबारक कहता है जिसे
अल्लाह बग़ैर आमाल के रास्तबाज़ ठहराता है,

7"मुबारक हैं वह
जिनके जरायम मुआफ़ किए गए,
जिनके गुनाह ढाँपे गए हैं।
8मुबारक है वह
जिसका गुनाह रब हिसाब में
नहीं लाएगा।"

9क्या यह मुबारकबादी सिर्फ़ मख़तूनों के लिए
है या नामख़तूनों के लिए भी? हम तो बयान कर
चुके हैं कि इब्राहीम ईमान की बिना पर रास्तबाज़
ठहरा। 10उसे किस हालत में रास्तबाज़ ठहराया
गया? ख़तना कराने के बाद या पहले? ख़तने
के बाद नहीं बल्कि पहले। 11और ख़तना का
जो निशान उसे मिला वह उस की रास्तबाज़ी की
मुहर थी, वह रास्तबाज़ी जो उसे ख़तना कराने से
पेशतर मिली, उस वक़्त जब वह ईमान लाया।
यों वह उन सबका बाप है जो बग़ैर ख़तना कराए
ईमान लाए हैं और इस बिना पर रास्तबाज़ ठहरते
हैं। 12साथ ही वह ख़तना करानेवालों का बाप भी
है, लेकिन उनका जिनका न सिर्फ़ ख़तना हुआ है
बल्कि जो हमारे बाप इब्राहीम के उस ईमान के

नक़्शे-क़दम पर चलते हैं जो वह ख़तना कराने से
पेशतर रखता था।

अल्लाह का वादा ईमान से हासिल होता है

13जब अल्लाह ने इब्राहीम और उस की
औलाद से वादा किया कि वह दुनिया का वारिस
होगा तो उसने यह इसलिए नहीं किया कि
इब्राहीम ने शरीअत की पैरवी की बल्कि इसलिए
कि वह ईमान लाया और यों रास्तबाज़ ठहराया
गया। 14क्योंकि अगर वह वारिस हैं जो शरीअत
के पैरोकार हैं तो फिर ईमान बेअसर ठहरा और
अल्लाह का वादा मिट गया। 15शरीअत अल्लाह
का ग़ज़ब ही पैदा करती है। लेकिन जहाँ कोई
शरीअत नहीं वहाँ उस की ख़िलाफ़वरज़ी भी नहीं।
16चुनाँचे यह मीरास ईमान से मिलती है ताकि
इसकी बुनियाद अल्लाह का फ़ज़ल हो और
इसका वादा इब्राहीम की तमाम नसल के लिए हो,
न सिर्फ़ शरीअत के पैरोकारों के लिए बल्कि उनके
लिए भी जो इब्राहीम का-सा ईमान रखते हैं।
यही हम सबका बाप है। 17यों अल्लाह कलामे-
मुक़द्दस में उससे वादा करता है, “मैंने तुझे बहुत
क़ौमों का बाप बना दिया है।” अल्लाह ही के
नज़दीक इब्राहीम हम सबका बाप है। क्योंकि
उसका ईमान उस ख़ुदा पर था जो मुरदों को ज़िंदा
करता और जिसके हुक्म पर वह कुछ पैदा होता
है जो पहले नहीं था। 18उम्मीद की कोई किरण
दिखाई नहीं देती थी, फिर भी इब्राहीम उम्मीद के
साथ ईमान रखता रहा कि मैं ज़रूर बहुत क़ौमों का
बाप बनूँगा। और आख़िरकार ऐसा ही हुआ, जैसा
कलामे-मुक़द्दस में वादा किया गया था कि “तेरी
औलाद इतनी ही बेशुमार होगी।” 19और इब्राहीम
का ईमान कमज़ोर न पड़ा, हालाँकि उसे मालूम
था कि मैं तक़रीबन सौ साल का हूँ और मेरा
और सारा के बदन गोया मुरदा हैं, अब बच्चे पैदा
करने की उम्र सारा के लिए गुज़र चुकी है। 20तो
भी इब्राहीम का ईमान ख़त्म न हुआ, न उसने
अल्लाह के वादे पर शक किया बल्कि ईमान में
वह मज़ीद मज़बूत हुआ और अल्लाह को जलाल
देता रहा। 21उसे पुख़्ता यक़ीन था कि अल्लाह
अपने वादे को पूरा करने की क़ुदरत रखता है।
22उसके इस ईमान की वजह से अल्लाह ने उसे
रास्तबाज़ क़रार दिया। 23कलामे-मुक़द्दस में यह
बात कि अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ क़रार दिया न
सिर्फ़ उस की ख़ातिर लिखी गई 24बल्कि हमारी
ख़ातिर भी। क्योंकि अल्लाह हमें भी रास्तबाज़
क़रार देगा अगर हम उस पर ईमान रखें जिसने
हमारे ख़ुदावंद ईसा को मुरदों में से ज़िंदा किया।
25हमारी ही ख़ताओं की वजह से उसे मौत के
हवाले किया गया, और हमें ही रास्तबाज़ क़रार
देने के लिए उसे ज़िंदा किया गया।

रास्तबाज़ी का अंजाम

5 अब चूँकि हमें ईमान से रास्तबाज़ क़रार
दिया गया है इसलिए अल्लाह के साथ
हमारी सुलह है। इस सुलह का वसीला हमारा
ख़ुदावंद ईसा मसीह है। 2हमारे ईमान लाने पर
उसने हमें फ़ज़ल के उस मक़ाम तक पहुँचाया
जहाँ हम आज क़ायम हैं। और यों हम इस उम्मीद
पर फ़ख़र करते हैं कि हम अल्लाह के जलाल
में शरीक होंगे। 3न सिर्फ़ यह बल्कि हम उस
वक़्त भी फ़ख़र करते हैं जब हम मुसीबतों में
फँसे होते हैं। क्योंकि हम जानते हैं कि मुसीबत
से साबितक़दमी पैदा होती है, 4साबितक़दमी से
पुख़्तगी और पुख़्तगी से उम्मीद। 5और उम्मीद हमें
शरमिंदा होने नहीं देती, क्योंकि अल्लाह ने हमें
रूहुल-क़ुद्स देकर उसके वसीले से हमारे दिलों
में अपनी मुहब्बत उंडेली है।
6क्योंकि हम अभी कमज़ोर ही थे तो मसीह
ने हम बेदीनों की ख़ातिर अपनी जान दे दी।
7मुश्किल से ही कोई किसी रास्तबाज़ की ख़ातिर
अपनी जान देगा। हाँ, मुमकिन है कि कोई किसी
नेकोकार के लिए अपनी जान देने की जुर्रत करे।
8लेकिन अल्लाह ने हमसे अपनी मुहब्बत का
इज़हार यों किया कि मसीह ने उस वक़्त हमारी
ख़ातिर अपनी जान दी जब हम गुनाहगार ही थे।
9हमें मसीह के ख़ून से रास्तबाज़ ठहराया गया

है। तो यह बात कितनी यक़ीनी है कि हम उसके
वसीले से अल्लाह के ग़ज़ब से बचेंगे। 10हम अभी
अल्लाह के दुश्मन ही थे जब उसके फ़रज़ंद की
मौत के वसीले से हमारी उसके साथ सुलह हो
गई। तो फिर यह बात कितनी यक़ीनी है कि हम
उस की ज़िंदगी के वसीले से नजात भी पाएँगे।
11न सिर्फ़ यह बल्कि अब हम अल्लाह पर फ़ख़र
करते हैं और यह हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के
वसीले से है, जिसने हमारी सुलह कराई है।

आदम और मसीह

12जब आदम ने गुनाह किया तो उस एक ही
शख़्स से गुनाह दुनिया में आया। इस गुनाह के
साथ साथ मौत भी आकर सब आदमियों में फैल
गई, क्योंकि सबने गुनाह किया। 13शरीअत के
इनकिशाफ़ से पहले गुनाह तो दुनिया में था,
लेकिन जहाँ शरीअत नहीं होती वहाँ गुनाह का
हिसाब नहीं किया जाता। 14ताहम आदम से
लेकर मूसा तक मौत की हुकूमत जारी रही, उन
पर भी जिन्होंने आदम की-सी हुक्मअदूली न की।

अब आदम आनेवाले ईसा मसीह की तरफ़
इशारा था। 15लेकिन इन दोनों में बड़ा फ़रक़
है। जो नेमत अल्लाह मुफ़्त में देता है वह आदम
के गुनाह से मुताबिक़त नहीं रखती। क्योंकि इस
एक शख़्स आदम की ख़िलाफ़वरज़ी से बहुत-से
लोग मौत की ज़द में आ गए, लेकिन अल्लाह का
फ़ज़ल कहीं ज़्यादा मुअस्सिर है, वह मुफ़्त नेमत
जो बहुतों को उस एक शख़्स ईसा मसीह में मिली
है। 16हाँ, अल्लाह की इस नेमत और आदम के
गुनाह में बहुत फ़रक़ है। उस एक शख़्स आदम
के गुनाह के नतीजे में हमें तो मुजरिम क़रार दिया
गया, लेकिन अल्लाह की मुफ़्त नेमत का असर
यह है कि हमें रास्तबाज़ क़रार दिया जाता है,
गो हमसे बेशुमार गुनाह सरज़द हुए हैं। 17इस
एक शख़्स आदम के गुनाह के नतीजे में मौत सब
पर हुकूमत करने लगी। लेकिन इस एक शख़्स
ईसा मसीह का काम कितना ज़्यादा मुअस्सिर
था। जितने भी अल्लाह का वाफ़िर फ़ज़ल और
रास्तबाज़ी की नेमत पाते हैं वह मसीह के वसीले
से अबदी ज़िंदगी में हुकूमत करेंगे।

18चुनाँचे जिस तरह एक ही शख़्स के गुनाह
के बाइस सब लोग मुजरिम ठहरे उसी तरह एक
ही शख़्स के रास्त अमल से वह दरवाज़ा खुल
गया जिसमें दाख़िल होकर सब लोग रास्तबाज़
ठहर सकते और ज़िंदगी पा सकते हैं। 19जिस
तरह एक ही शख़्स की नाफ़रमानी से बहुत-से
लोग गुनाहगार बन गए, उसी तरह एक ही शख़्स
की फ़रमाँबरदारी से बहुत-से लोग रास्तबाज़ बन
जाएंगे।

20शरीअत इसलिए दरमियान में आ गई कि
ख़िलाफ़वरज़ी बढ़ जाए। लेकिन जहाँ गुनाह
ज़्यादा हुआ वहाँ अल्लाह का फ़ज़ल इससे भी
ज़्यादा हो गया। 21चुनाँचे जिस तरह गुनाह
मौत की सूरत में हुकूमत करता था उसी तरह
अब अल्लाह का फ़ज़ल हमें रास्तबाज़ ठहराकर
हुकूमत करता है। यों हमें अपने ख़ुदावंद ईसा
मसीह की बदौलत अबदी ज़िंदगी हासिल होती
है।

मसीह में नई ज़िंदगी

6 क्या इसका मतलब यह है कि हम गुनाह
करते रहें ताकि अल्लाह के फ़ज़ल में
इज़ाफ़ा हो? 2हरगिज़ नहीं! हम तो मरकर गुनाह
से लाताल्लुक़ हो गए हैं। तो फिर हम किस तरह
गुनाह को अपने आप पर हुकूमत करने दे सकते
हैं? 3या क्या आपको मालूम नहीं कि हम सब
जिन्हें बपतिस्मा दिया गया है इससे मसीह ईसा
की मौत में शामिल हो गए हैं? 4क्योंकि बपतिस्मे
से हमें दफ़नाया गया और उस की मौत में शामिल
किया गया ताकि हम मसीह की तरह नई ज़िंदगी
गुज़ारें, जिसे बाप की जलाली क़ुदरत ने मुरदों में
से ज़िंदा किया।

5चूँकि इस तरह हम उस की मौत में उसके
साथ पैवस्त हो गए हैं इसलिए हम उसके जी
उठने में भी उसके साथ पैवस्त होंगे। 6क्योंकि
हम जानते हैं कि हमारा पुराना इनसान मसीह के

साथ मसलूब हो गया ताकि गुनाह के क़ब्ज़े में यह
जिस्म नेस्त हो जाए और यों हम गुनाह के ग़ुलाम
न रहें। 7क्योंकि जो मर गया वह गुनाह से आज़ाद
हो गया है। 8और हमारा ईमान है कि चूँकि हम
मसीह के साथ मर गए हैं इसलिए हम उसके साथ
ज़िंदा भी होंगे, 9क्योंकि हम जानते हैं कि मसीह
मुरदों में से जी उठा है और अब कभी नहीं मरेगा।
अब मौत का उस पर कोई इख़्तियार नहीं। 10मरते
वक़्त वह हमेशा के लिए गुनाह की हुकूमत से
निकल गया, और अब जब वह दुबारा ज़िंदा है
तो उस की ज़िंदगी अल्लाह के लिए मख़सूस है।
11आप भी अपने आपको ऐसा समझें। आप भी
मरकर गुनाह की हुकूमत से निकल गए हैं और
अब आपकी मसीह में ज़िंदगी अल्लाह के लिए
मख़सूस है।

12चुनाँचे गुनाह आपके फ़ानी बदन में हुकूमत
न करे। ध्यान दें कि आप उस की बुरी ख़ाहिशात
के ताबे न हो जाएँ। 13अपने बदन के किसी भी
अज़ु को गुनाह की ख़िदमत के लिए पेश न करें, न
उसे नारास्ती का हथियार बनने दें। इसके बजाए
अपने आपको अल्लाह की ख़िदमत के लिए पेश
करें। क्योंकि पहले आप मुरदा थे, लेकिन अब
आप ज़िंदा हो गए हैं। चुनाँचे अपने तमाम आज़ा
को अल्लाह की ख़िदमत के लिए पेश करें और
उन्हें रास्ती के हथियार बनने दें। 14आइंदा गुनाह
आप पर हुकूमत नहीं करेगा, क्योंकि आप अपनी
ज़िंदगी शरीअत के तहत नहीं गुज़ारते बल्कि
अल्लाह के फ़ज़ल के तहत।

रास्तबाज़ी के ग़ुलाम

15अब सवाल यह है, चूँकि हम शरीअत के
तहत नहीं बल्कि फ़ज़ल के तहत हैं तो क्या
इसका मतलब यह है कि हमें गुनाह करने के लिए
खुला छोड़ दिया गया है? हरगिज़ नहीं! 16क्या
आपको मालूम नहीं कि जब आप अपने आपको
किसी के ताबे करके उसके ग़ुलाम बन जाते हैं
तो आप उस मालिक के ग़ुलाम हैं जिसके ताबे
आप हैं? या तो गुनाह आपका मालिक बनकर
आपको मौत तक ले जाएगा, या फ़रमाँबरदारी
आपकी मालिकन बनकर आपको रास्तबाज़ी तक
ले जाएगी। 17दर-हक़ीक़त आप पहले गुनाह के
ग़ुलाम थे, लेकिन ख़ुदा का शुक्र है कि अब
आप पूरे दिल से उसी तालीम के ताबे हो गए
हैं जो आपके सुपुर्द की गई है। 18अब आपको
गुनाह से आज़ाद कर दिया गया है, रास्तबाज़ी
ही आपकी मालिकन बन गई है। 19(आपकी
फ़ितरती कमज़ोरी की वजह से मैं ग़ुलामी की
यह मिसाल दे रहा हूँ ताकि आप मेरी बात समझ
पाएँ।) पहले आपने अपने आज़ा को नजासत
और बेदीनी की ग़ुलामी में दे रखा था जिसके
नतीजे में आपकी बेदीनी बढ़ती गई। लेकिन अब
आप अपने आज़ा को रास्तबाज़ी की ग़ुलामी में दे
दें ताकि आप मुक़द्दस बन जाएँ।

20जब गुनाह आपका मालिक था तो आप
रास्तबाज़ी से आज़ाद थे। 21और इसका नतीजा
क्या था? जो कुछ आपने उस वक़्त किया उससे
आपको आज शर्म आती है और उसका अंजाम
मौत है। 22लेकिन अब आप गुनाह की ग़ुलामी
से आज़ाद होकर अल्लाह के ग़ुलाम बन गए
हैं, जिसके नतीजे में आप मख़सूसो-मुक़द्दस बन
जाते हैं और जिसका अंजाम अबदी ज़िंदगी है।
23क्योंकि गुनाह का अज्र मौत है जबकि अल्लाह
हमारे ख़ुदावंद मसीह ईसा के वसीले से हमें अबदी
ज़िंदगी की मुफ़्त नेमत अता करता है।

शादी की मिसाल

7 भाइयो, आप तो शरीअत से वाक़िफ़
हैं। तो क्या आप नहीं जानते कि
शरीअत उस वक़्त तक इनसान पर इख़्ति-
यार रखती है जब तक वह ज़िंदा है? 2शादी की
मिसाल लें। जब किसी औरत की शादी होती है
तो शरीअत उसका शौहर के साथ बंधन उस वक़्त
तक क़ायम रखती है जब तक शौहर ज़िंदा है।
अगर शौहर मर जाए तो फिर वह इस बंधन से
आज़ाद हो गई। 3चुनाँचे अगर वह अपने ख़ाविंद
के जीते-जी किसी और मर्द की बीवी बन जाए

तो उसे ज़िनाकार क़रार दिया जाता है। लेकिन अगर उसका शौहर मर जाए तो वह शरीअत से आज़ाद हुई। अब वह किसी दूसरे मर्द की बीवी बने तो ज़िनाकार नहीं ठहरती।
4मेरे भाइयो, यह बात आप पर भी सादिक़ आती है। जब आप मसीह के बदन का हिस्सा बन गए तो आप मरकर शरीअत के इख़्तियार से आज़ाद हो गए। अब आप उसके साथ पैवस्त हो गए हैं जिसे मुरदों में से ज़िंदा किया गया ताकि हम अल्लाह की ख़िदमत में फल लाएँ।
5क्योंकि जब हम अपनी पुरानी फ़ितरत के तहत ज़िंदगी गुज़ारते थे तो शरीअत हमारी गुनाहआलूदा रग़बतों को उकसाती थी। फिर यही रग़बतें हमारे आज़ा पर असरअंदाज़ होती थीं और नतीजे में हम ऐसा फल लाते थे जिसका अंजाम मौत है।
6लेकिन अब हम मरकर शरीअत के बंधन से आज़ाद हो गए हैं। अब हम शरीअत की पुरानी ज़िंदगी के तहत ख़िदमत नहीं करते बल्कि रूहुल-क़ुद्स की नई ज़िंदगी के तहत।

शरीअत और गुनाह

7क्या इसका मतलब यह है कि शरीअत ख़ुद गुनाह है? हरगिज़ नहीं! बात तो यह है कि अगर शरीअत मुझ पर मेरे गुनाह ज़ाहिर न करती तो मुझे इनका कुछ पता न चलता। मसलन अगर शरीअत न बताती, “लालच न करना” तो मुझे दर-हक़ीक़त मालूम न होता कि लालच क्या है।
8लेकिन गुनाह ने इस हुक्म से फ़ायदा उठाकर मुझमें हर तरह का लालच पैदा कर दिया। इसके बरअक्स जहाँ शरीअत नहीं होती वहाँ गुनाह मुरदा है और ऐसा काम नहीं कर पाता।
9एक वक़्त था जब मैं शरीअत के बग़ैर ज़िंदगी गुज़ारता था। लेकिन ज्योंही हुक्म मेरे सामने आया तो गुनाह में जान आ गई
10और मैं मर गया। इस तरह मालूम हुआ कि जिस हुक्म का मक़सद मेरी ज़िंदगी को क़ायम रखना था वही मेरी मौत का बाइस बन गया।
11क्योंकि गुनाह ने हुक्म से फ़ायदा उठाकर मुझे बहकाया और हुक्म से ही मुझे मार डाला।
12लेकिन शरीअत ख़ुद मुक़द्दस है और इसके अहकाम मुक़द्दस, रास्त और अच्छे हैं।
13क्या इसका मतलब यह है कि जो अच्छा है वही मेरे लिए मौत का बाइस बन गया? हरगिज़ नहीं! गुनाह ही ने यह किया। इस अच्छी चीज़ को इस्तेमाल करके उसने मेरे लिए मौत पैदा कर दी ताकि गुनाह ज़ाहिर हो जाए। यों हुक्म के ज़रीए गुनाह की संजीदगी हद से ज़्यादा बढ़ जाती है।

हमारे अंदर की कशमकश

14हम जानते हैं कि शरीअत रूहानी है। लेकिन मेरी फ़ितरत इनसानी है, मुझे गुनाह की ग़ुलामी में बेचा गया है।
15दर-हक़ीक़त मैं नहीं समझता कि क्या करता हूँ। क्योंकि मैं वह काम नहीं करता जो करना चाहता हूँ बल्कि वह जिससे मुझे नफ़रत है।
16लेकिन अगर मैं वह करता हूँ जो नहीं करना चाहता तो ज़ाहिर है कि मैं मुत्तफ़िक़ हूँ कि शरीअत अच्छी है।
17और अगर ऐसा है तो फिर मैं यह काम ख़ुद नहीं कर रहा बल्कि गुनाह जो मेरे अंदर सुकूनत करता है।
18मुझे मालूम है कि मेरे अंदर यानी मेरी पुरानी फ़ितरत में कोई अच्छी चीज़ नहीं बसती। अगरचे मुझमें नेक काम करने का इरादा तो मौजूद है लेकिन मैं उसे अमली जामा नहीं पहना सकता।
19जो नेक काम मैं करना चाहता हूँ वह नहीं करता बल्कि वह बुरा काम करता हूँ जो करना नहीं चाहता।
20अब अगर मैं वह काम करता हूँ जो मैं नहीं करना चाहता तो इसका मतलब है कि मैं ख़ुद नहीं कर रहा बल्कि वह गुनाह जो मेरे अंदर बसता है।

21चुनाँचे मुझे एक और तरह की शरीअत काम करती हुई नज़र आती है, और वह यह है कि जब मैं नेक काम करने का इरादा रखता हूँ तो बुराई आ मौजूद होती है।
22हाँ, अपने बातिन में तो मैं ख़ुशी से अल्लाह की शरीअत को मानता हूँ।
23लेकिन मुझे अपने आज़ा में एक और तरह की शरीअत दिखाई देती है, ऐसी शरीअत जो मेरी समझ की शरीअत के ख़िलाफ़ लड़कर मुझे गुनाह की शरीअत का क़ैदी बना देती है, उस शरीअत

का जो मेरे आज़ा में मौजूद है। 24हाय, मेरी हालत
कितनी बुरी है! मुझे इस बदन से जिसका अंजाम
मौत है कौन छुड़ाएगा? 25ख़ुदा का शुक्र है जो
हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के वसीले से यह काम
करता है।

ग़रज़ यही मेरी हालत है, मसीह के बग़ैर मैं
अल्लाह की शरीअत की ख़िदमत सिर्फ़ अपनी
समझ से कर सकता हूँ जबकि मेरी पुरानी
फ़ितरत गुनाह की शरीअत की ग़ुलाम रहकर उसी
की ख़िदमत करती है।

रूह में ज़िंदगी

8 अब जो मसीह ईसा में हैं उन्हें मुजरिम नहीं
ठहराया जाता। 2क्योंकि रूह की शरीअत
ने जो हमें मसीह में ज़िंदगी अता करती है तुझे
गुनाह और मौत की शरीअत से आज़ाद कर
दिया है। 3मूसवी शरीअत हमारी पुरानी फ़ितरत
की कमज़ोर हालत की वजह से हमें न बचा
सकी। इसलिए अल्लाह ने वह कुछ किया जो
शरीअत के बस में न था। उसने अपना फ़रज़ंद
भेज दिया ताकि वह गुनाहगार का-सा जिस्म
इख़्तियार करके हमारे गुनाहों का कफ़्फ़ारा दे।
इस तरह अल्लाह ने पुरानी फ़ितरत में मौजूद
गुनाह को मुजरिम ठहराया 4ताकि हममें शरीअत
का तक़ाज़ा पूरा हो जाए, हम जो पुरानी फ़ितरत
के मुताबिक़ नहीं बल्कि रूह के मुताबिक़ चलते
हैं। 5जो पुरानी फ़ितरत के इख़्तियार में हैं वह
पुरानी सोच रखते हैं जबकि जो रूह के इख़्तियार
में हैं वह रूहानी सोच रखते हैं। 6पुरानी फ़ितरत
की सोच का अंजाम मौत है जबकि रूह की सोच
ज़िंदगी और सलामती पैदा करती है। 7पुरानी
फ़ितरत की सोच अल्लाह से दुश्मनी रखती है।
यह अपने आपको अल्लाह की शरीअत के ताबे
नहीं रखती, न ही ऐसा कर सकती है। 8इसलिए
वह लोग अल्लाह को पसंद नहीं आ सकते जो
पुरानी फ़ितरत के इख़्तियार में हैं।

9लेकिन आप पुरानी फ़ितरत के इख़्तियार में
नहीं बल्कि रूह के इख़्तियार में हैं। शर्त यह
है कि रूहुल-क़ुद्स आपमें बसा हुआ हो। अगर
किसी में मसीह का रूह नहीं तो वह मसीह का
नहीं। 10लेकिन अगर मसीह आपमें है तो फिर
आपका बदन गुनाह की वजह से मुरदा है जबकि
रूहुल-क़ुद्स आपको रास्तबाज़ ठहराने की वजह
से आपके लिए ज़िंदगी का बाइस है। 11उसका
रूह आपमें बसता है जिसने ईसा को मुरदों में
से ज़िंदा किया। और चूँकि रूहुल-क़ुद्स आपमें
बसता है इसलिए अल्लाह इसके ज़रीए आपके
फ़ानी बदनों को भी मसीह की तरह ज़िंदा करेगा।

12चुनाँचे मेरे भाइयो, हमारी पुरानी फ़ित-
रत का कोई हक़ न रहा कि हमें अपने मुताबिक़
ज़िंदगी गुज़ारने पर मजबूर करे। 13क्योंकि अगर
आप अपनी पुरानी फ़ितरत के मुताबिक़ ज़िंदगी
गुज़ारें तो आप हलाक हो जाएंगे। लेकिन अगर
आप रूहुल-क़ुद्स की क़ुव्वत से अपनी पुरानी
फ़ितरत के ग़लत कामों को नेस्तो-नाबूद करें तो
फिर आप ज़िंदा रहेंगे। 14जिसकी भी राहनुमाई
रूहुल-क़ुद्स करता है वह अल्लाह का फ़रज़ंद है।
15क्योंकि अल्लाह ने जो रूह आपको दिया है
उसने आपको ग़ुलाम बनाकर ख़ौफ़ज़दा हालत
में नहीं रखा बल्कि आपको अल्लाह के फ़रज़ंद
बना दिया है, और उसी के ज़रीए हम पुकारकर
अल्लाह को "अब्बा" यानी "ऐ बाप" कह सकते
हैं। 16रूहुल-क़ुद्स ख़ुद हमारी रूह के साथ
मिलकर गवाही देता है कि हम अल्लाह के फ़रज़ंद
हैं। 17और चूँकि हम उसके फ़रज़ंद हैं इसलिए
हम वारिस हैं, अल्लाह के वारिस और मसीह के
हममीरास। क्योंकि अगर हम मसीह के दुख में
शरीक हों तो उसके जलाल में भी शरीक होंगे।

आइंदा का जलाल

18मेरे ख़याल में हमारा मौजूदा दुख उस
आनेवाले जलाल की निसबत कुछ भी नहीं जो
हम पर ज़ाहिर होगा। 19हाँ, तमाम कायनात यह
देखने के लिए तड़पती है कि अल्लाह के फ़रज़ंद
ज़ाहिर हो जाएँ, 20क्योंकि कायनात अल्लाह
की लानत के तहत आकर फ़ानी हो गई है। यह

उस की अपनी नहीं बल्कि अल्लाह की मरज़ी
थी जिसने उस पर यह लानत भेजी। तो भी यह
उम्मीद दिलाई गई 21कि एक दिन कायनात को
ख़ुद उस की फ़ानी हालत की ग़ुलामी से छुड़ाया
जाएगा। उस वक़्त वह अल्लाह के फ़रज़ंदों की
जलाली आज़ादी में शरीक हो जाएगी। 22क्योंकि
हम जानते हैं कि आज तक तमाम कायनात
कराहती और दर्दे-ज़ह में तड़पती रहती है। 23न
सिर्फ़ कायनात बल्कि हम ख़ुद भी अंदर ही अंदर
कराहते हैं, गो हमें आनेवाले जलाल का पहला
फल रूहुल-क़ुद्स की सूरत में मिल चुका है। हम
कराहते कराहते शिद्दत से इस इंतज़ार में हैं कि यह
बात ज़ाहिर हो जाए कि हम अल्लाह के फ़रज़ंद
हैं और हमारे बदनों को नजात मिले। 24क्योंकि
नजात पाते वक़्त हमें यह उम्मीद दिलाई गई।
लेकिन अगर वह कुछ नज़र आ चुका होता
जिसकी उम्मीद हम रखते तो यह दर-हक़ीक़त
उम्मीद न होती। कौन उस की उम्मीद रखे जो
उसे नज़र आ चुका है? 25लेकिन चूँकि हम उस
की उम्मीद रखते हैं जो अभी नज़र नहीं आया तो
लाज़िम है कि हम सब्र से उसका इंतज़ार करें।

26इसी तरह रूहुल-क़ुद्स भी हमारी कमज़ोर
हालत में हमारी मदद करता है, क्योंकि हम नहीं
जानते कि किस तरह मुनासिब दुआ माँगें। लेकिन
रूहुल-क़ुद्स ख़ुद नाक़ाबिले-बयान आहें भरते हुए
हमारी शफ़ाअत करता है। 27और ख़ुदा बाप जो
तमाम दिलों की तहक़ीक़ करता है रूहुल-क़ुद्स
की सोच को जानता है, क्योंकि पाक रूह अल्लाह
की मरज़ी के मुताबिक़ मुक़द्दसीन की शफ़ाअत
करता है।

28और हम जानते हैं कि जो अल्लाह से
मुहब्बत रखते हैं उनके लिए सब कुछ मिलकर
भलाई का बाइस बनता है, उनके लिए जो उसके
इरादे के मुताबिक़ बुलाए गए हैं। 29क्योंकि
अल्लाह ने पहले से अपने लोगों को चुन लिया,
उसने पहले से उन्हें इसके लिए मुक़र्रर किया
कि वह उसके फ़रज़ंद के हमशक्ल बन जाएँ
और यों मसीह बहुत-से भाइयों में पहलौठा हो।
30लेकिन जिन्हें उसने पहले से मुक़र्रर किया उन्हें
उसने बुलाया भी, जिन्हें उसने बुलाया उन्हें उसने
रास्तबाज़ भी ठहराया और जिन्हें उसने रास्तबाज़
ठहराया उन्हें उसने जलाल भी बख़्शा।

अल्लाह की मसीह में मुहब्बत

31इन तमाम बातों के जवाब में हम क्या कहें?
अगर अल्लाह हमारे हक़ में है तो कौन हमारे
ख़िलाफ़ हो सकता है? 32उसने अपने फ़रज़ंद
को भी दरेग़ न किया बल्कि उसे हम सबके
लिए दुश्मन के हवाले कर दिया। जिसने हमें
अपने फ़रज़ंद को दे दिया क्या वह हमें उसके
साथ सब कुछ मुफ़्त नहीं देगा? 33अब कौन
अल्लाह के चुने हुए लोगों पर इलज़ाम लगाएगा
जब अल्लाह ख़ुद उन्हें रास्तबाज़ क़रार देता है?
34कौन हमें मुजरिम ठहराएगा जब मसीह ईसा
ने हमारे लिए अपनी जान दी? बल्कि हमारी
ख़ातिर इससे भी ज़्यादा हुआ। उसे ज़िंदा किया
गया और वह अल्लाह के दहने हाथ बैठ गया,
जहाँ वह हमारी शफ़ाअत करता है। 35ग़रज़ कौन
हमें मसीह की मुहब्बत से जुदा करेगा? क्या
कोई मुसीबत, तंगी, ईज़ारसानी, काल, नंगापन,
ख़तरा या तलवार? 36जैसे कलामे-मुक़द्दस में
लिखा है, “तेरी ख़ातिर हमें दिन-भर मौत का
सामना करना पड़ता है, लोग हमें ज़बह होनेवाली
भेड़ों के बराबर समझते हैं।” 37कोई बात नहीं,
क्योंकि मसीह हमारे साथ है और हमसे मुहब्बत
रखता है। उसके वसीले से हम इन सब ख़तरों
के रूबरू ज़बरदस्त फ़तह पाते हैं। 38क्योंकि
मुझे यक़ीन है कि हमें उस की मुहब्बत से कोई
चीज़ जुदा नहीं कर सकती : न मौत और न
ज़िंदगी, न फ़रिश्ते और न हुक्मरान, न हाल और
न मुस्तक़बिल, न ताक़तें, 39न नशेब और न
फ़राज़, न कोई और मख़लूक़ हमें अल्लाह की
उस मुहब्बत से जुदा कर सकेगी जो हमें हमारे
ख़ुदावंद मसीह ईसा में हासिल है।

अल्लाह और उस की क़ौम

9 मैं मसीह में सच कहता हूँ, झूट नहीं बोलता, और मेरा ज़मीर भी रूहुल-क़ुद्स में इसकी गवाही देता है 2कि मैं दिल में अपने यहूदी हमवतनों के लिए शदीद ग़म और मुसलसल दर्द महसूस करता हूँ। 3काश मेरे भाई और ख़ूनी रिश्तेदार नजात पाएँ! इसके लिए मैं ख़ुद मलऊन और मसीह से जुदा होने के लिए भी तैयार हूँ। 4अल्लाह ने उन्हीं को जो इसराईली हैं अपने फ़रज़ंद बनने के लिए मुक़र्रर किया था। उन्हीं पर उसने अपना जलाल ज़ाहिर किया, उन्हीं के साथ अपने अहद बाँधे और उन्हीं को शरीअत अता की। वही हक़ीक़ी इबादत और अल्लाह के वादों के हक़दार हैं, 5वही इब्राहीम और याक़ूब की औलाद हैं और उन्हीं में से जिस्मानी लिहाज़ से मसीह आया। अल्लाह की तमजीदो-तारीफ़ अबद तक हो जो सब पर हुकूमत करता है! आमीन।

6कहने का मतलब यह नहीं कि अल्लाह अपना वादा पूरा न कर सका। बात यह नहीं है बल्कि यह कि वह सब हक़ीक़ी इसराईली नहीं हैं जो इसराईली क़ौम से हैं। 7और सब इब्राहीम की हक़ीक़ी औलाद नहीं हैं जो उस की नसल से हैं। क्योंकि अल्लाह ने कलामे-मुक़द्दस में इब्राहीम से फ़रमाया, "तेरी नसल इसहाक़ ही से क़ायम रहेगी।" 8चुनाँचे लाज़िम नहीं कि इब्राहीम की तमाम फ़ितरती औलाद अल्लाह के फ़रज़ंद हों बल्कि सिर्फ़ वही इब्राहीम की हक़ीक़ी औलाद समझे जाते हैं जो अल्लाह के वादे के मुताबिक़ उसके फ़रज़ंद बन गए हैं। 9और वादा यह था, "मुक़र्ररा वक़्त पर मैं वापस आऊँगा तो सारा के बेटा होगा।"

10लेकिन न सिर्फ़ सारा के साथ ऐसा हुआ बल्कि इसहाक़ की बीवी रिबक़ा के साथ भी। एक ही मर्द यानी हमारे बाप इसहाक़ से उसके जुड़वाँ बच्चे पैदा हुए। 11लेकिन बच्चे अभी पैदा नहीं हुए थे न उन्होंने कोई नेक या बुरा काम किया था कि माँ को अल्लाह से एक पैग़ाम मिला। इस पैग़ाम से ज़ाहिर होता है कि अल्लाह लोगों को अपने इरादे के मुताबिक़ चुन लेता है। 12और उसका यह चुनाव उनके नेक आमाल पर मबनी नहीं होता बल्कि उसके बुलावे पर। पैग़ाम यह था, "बड़ा छोटे की ख़िदमत करेगा।" 13यह भी कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, "याक़ूब मुझे प्यारा था, जबकि एसौ से मैं मुतनफ़्फ़िर रहा।"

14क्या इसका मतलब यह है कि अल्लाह बेइनसाफ़ है? हरगिज़ नहीं! 15क्योंकि उसने मूसा से कहा, "मैं जिस पर मेहरबान होना चाहूँ उस पर मेहरबान होता हूँ और जिस पर रहम करना चाहूँ उस पर रहम करता हूँ।" 16चुनाँचे सब कुछ अल्लाह के रहम पर ही मबनी है। इसमें इनसान की मरज़ी या कोशिश का कोई दख़ल नहीं। 17यों अल्लाह अपने कलाम में मिसर के बादशाह फ़िरौन से मुख़ातिब होकर फ़रमाता है, "मैंने तुझे इसलिए बरपा किया है कि तुझमें अपनी क़ुदरत का इज़हार करूँ और यों तमाम दुनिया में मेरे नाम का प्रचार किया जाए।" 18ग़रज़, यह अल्लाह ही की मरज़ी है कि वह किस पर रहम करे और किस को सख़्त कर दे।

अल्लाह का ग़ज़ब और रहम

19शायद कोई कहे, "अगर यह बात है तो फिर अल्लाह किस तरह हम पर इलज़ाम लगा सकता है जब हमसे ग़लतियाँ होती हैं? हम तो उस की मरज़ी का मुक़ाबला नहीं कर सकते।" 20यह न कहें। आप इनसान होते हुए कौन हैं कि अल्लाह के साथ बहस-मुबाहसा करें? क्या जिसको तश्कील दिया गया है वह तश्कील देनेवाले से कहता है, "तूने मुझे इस तरह क्यों बना दिया?" 21क्या कुम्हार का हक़ नहीं है कि गारे के एक ही लौंदे से मुख़्तलिफ़ क़िस्म के बरतन बनाए, कुछ बाइज़्ज़त इस्तेमाल के लिए और कुछ ज़िल्लतआमेज़ इस्तेमाल के लिए? 22यह बात अल्लाह पर भी सादिक़ आती है। गो वह अपना ग़ज़ब नाज़िल करना और अपनी क़ुदरत ज़ाहिर करना चाहता था, लेकिन उसने बड़े सब्रो-तहम्मुल

से वह बरतन बरदाश्त किए जिन पर उसका ग़ज़ब
आना है और जो हलाकत के लिए तैयार किए
गए हैं। 23उसने यह इसलिए किया ताकि अपना
जलाल कसरत से उन बरतनों पर ज़ाहिर करे जिन
पर उसका फ़ज़ल है और जो पहले से जलाल पाने
के लिए तैयार किए गए हैं। 24और हम उनमें से हैं
जिनको उसने चुन लिया है, न सिर्फ़ यहूदियों में से
बल्कि ग़ैरयहूदियों में से भी। 25यों वह ग़ैरयहूदियों
के नाते से होसेअ की किताब में फ़रमाता है,

“मैं उसे ‘मेरी क़ौम’ कहूँगा
जो मेरी क़ौम न थी,
और उसे ‘मेरी प्यारी’ कहूँगा
जो मुझे प्यारी न थी।”
26और “जहाँ उन्हें बताया गया
कि ‘तुम मेरी क़ौम नहीं’
वहाँ वह ‘ज़िंदा ख़ुदा के फ़रज़ंद’
कहलाएँगे।”

27और यसायाह नबी इसराईल के बारे में
पुकारता है, “गो इसराईली साहिल पर की रेत
जैसे बेशुमार क्यों न हों तो भी सिर्फ़ एक बचे हुए
हिस्से को नजात मिलेगी। 28क्योंकि रब अपना
फ़रमान मुकम्मल तौर पर और तेज़ी से दुनिया
में पूरा करेगा।” 29यसायाह ने यह बात एक और
पेशगोई में भी की, “अगर रब्बुल-अफ़वाज हमारी
कुछ औलाद ज़िंदा न छोड़ता तो हम सदूम की
तरह मिट जाते, हमारा अमूरा जैसा सत्यानास हो
जाता।”

इसराईल के लिए पौलुस की दुआ

30इससे हम क्या कहना चाहते हैं? यह कि गो
ग़ैरयहूदी रास्तबाज़ी की तलाश में न थे तो भी उन्हें
रास्तबाज़ी हासिल हुई, ऐसी रास्तबाज़ी जो ईमान
से पैदा हुई। 31इसके बरअक्स इसराईलियों को
यह हासिल न हुई, हालाँकि वह ऐसी शरीअत
की तलाश में रहे जो उन्हें रास्तबाज़ ठहराए।
32इसकी क्या वजह थी? यह कि वह अपनी
तमाम कोशिशों में ईमान पर इनहिसार नहीं करते
थे बल्कि अपने नेक आमाल पर। उन्होंने राह में
पड़े पत्थर से ठोकर खाई। 33यह बात कलामे-
मुक़द्दस में लिखी भी है,

“देखो मैं सिय्यून में एक पत्थर रख देता हूँ
जो ठोकर का बाइस बनेगा,
एक चट्टान जो ठेस लगने का सबब होगी।
लेकिन जो उस पर ईमान लाएगा
उसे शरमिंदा नहीं किया जाएगा।”

10 भाइयो, मेरी दिली आरज़ू और
मेरी अल्लाह से दुआ यह है कि
इसराईलियों को नजात मिले। 2मैं इसकी
तसदीक़ कर सकता हूँ कि वह अल्लाह की ग़ैरत
रखते हैं। लेकिन इस ग़ैरत के पीछे रूहानी समझ
नहीं होती। 3वह उस रास्तबाज़ी से नावाक़िफ़ रहे
हैं जो अल्लाह की तरफ़ से है। इसकी बजाए वह
अपनी ज़ाती रास्तबाज़ी क़ायम करने की कोशिश
करते रहे हैं। यों उन्होंने अपने आपको अल्लाह की
रास्तबाज़ी के ताबे नहीं किया। 4क्योंकि मसीह में
शरीअत का मक़सद पूरा हो गया, हाँ वह अंजाम
तक पहुँच गई है। चुनाँचे जो भी मसीह पर ईमान
रखता है वही रास्तबाज़ ठहरता है।

सबके लिए रास्तबाज़ी

5मूसा ने उस रास्तबाज़ी के बारे में लिखा जो
शरीअत से हासिल होती है, “जो शख़्स यों करेगा
वह जीता रहेगा।” 6लेकिन जो रास्तबाज़ी ईमान
से हासिल होती है वह कहती है, “अपने दिल
में न कहना कि ‘कौन आसमान पर चढ़ेगा?’
(ताकि मसीह को नीचे ले आए)। 7यह भी न
कहना कि ‘कौन पाताल में उतरेगा?’ (ताकि
मसीह को मुरदों में से वापस ले आए)।” 8तो
फिर क्या करना चाहिए? ईमान की रास्तबाज़ी
फ़रमाती है, “यह कलाम तेरे क़रीब बल्कि तेरे मुँह
और दिल में मौजूद है।” कलाम से मुराद ईमान
का वह पैग़ाम है जो हम सुनाते हैं। 9यानी यह
कि अगर तू अपने मुँह से इक़रार करे कि ईसा
ख़ुदावंद है और दिल से ईमान लाए कि अल्लाह
ने उसे मुरदों में से ज़िंदा कर दिया तो तुझे नजात
मिलेगी। 10क्योंकि जब हम दिल से ईमान लाते

हैं तो अल्लाह हमें रास्तबाज़ क़रार देता है, और
जब हम अपने मुँह से इक़रार करते हैं तो हमें
नजात मिलती है। 11यों कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता
है, “जो भी उस पर ईमान लाए उसे शरमिंदा नहीं
किया जाएगा।” 12इसमें कोई फ़रक़ नहीं कि वह
यहूदी हो या ग़ैरयहूदी। क्योंकि सबका एक ही
ख़ुदावंद है, जो फ़ैयाज़ी से हर एक को देता है जो
उसे पुकारता है। 13क्योंकि “जो भी ख़ुदावंद का
नाम लेगा नजात पाएगा।”

14लेकिन वह किस तरह उसे पुकार सकेंगे
अगर वह उस पर कभी ईमान नहीं लाए? और
वह किस तरह उस पर ईमान ला सकते हैं अगर
उन्होंने कभी उसके बारे में सुना नहीं? और वह
किस तरह उसके बारे में सुन सकते हैं अगर
किसी ने उन्हें यह पैग़ाम सुनाया नहीं? 15और
सुनानेवाले किस तरह दूसरों के पास जाएंगे अगर
उन्हें भेजा न गया? इसलिए कलामे-मुक़द्दस
फ़रमाता है, “उनके क़दम कितने प्यारे हैं जो
ख़ुशख़बरी सुनाते हैं।” 16लेकिन सबने अल्लाह
की यह ख़ुशख़बरी क़बूल नहीं की। यों यसायाह
नबी फ़रमाता है, “ऐ रब, कौन हमारे पैग़ाम पर
ईमान लाया?” 17ग़रज़, ईमान पैग़ाम सुनने से
पैदा होता है, यानी मसीह का कलाम सुनने से।

18तो फिर सवाल यह है कि क्या इसराई-
लियों ने यह पैग़ाम नहीं सुना? उन्होंने इसे ज़रूर
सुना। कलामे-मुक़द्दस में लिखा है,

“उनकी आवाज़ निकल कर
पूरी दुनिया में सुनाई दी,
उनके अलफ़ाज़
दुनिया की इंतहा तक पहुँच गए।”

19तो क्या इसराईल को इस बात की समझ न
आई? नहीं, उसे ज़रूर समझ आई। पहले मूसा
इसका जवाब देता है,

“मैं ख़ुद ही तुम्हें ग़ैरत दिलाऊँगा,
एक ऐसी क़ौम के ज़रीए
जो हक़ीक़त में क़ौम नहीं है।
एक नादान क़ौम के ज़रीए
मैं तुम्हें ग़ुस्सा दिलाऊँगा।”

20और यसायाह नबी यह कहने की जुर्रत
करता है,

“जो मुझे तलाश नहीं करते थे
उन्हें मैंने मुझे पाने का मौक़ा दिया,
जो मेरे बारे में दरियाफ़्त नहीं करते थे
उन पर मैं ज़ाहिर हुआ।”

21लेकिन इसराईल के बारे में
वह फ़रमाता है,
“दिन-भर मैंने अपने हाथ फैलाए रखे
ताकि एक नाफ़रमान और सरकश क़ौम
का इस्तक़बाल करूँ।”

इसराईल पर अल्लाह का रहम

11 तो क्या इसका यह मतलब है कि
अल्लाह ने अपनी क़ौम को रद्द किया
है? हरगिज़ नहीं! मैं तो ख़ुद इसराईली हूँ।
इब्राहीम मेरा भी बाप है, और मैं बिनयमीन के
क़बीले का हूँ। 2अल्लाह ने अपनी क़ौम को
पहले से चुन लिया था। वह किस तरह उसे रद्द
करेगा! क्या आपको मालूम नहीं कि कलामे-
मुक़द्दस में इलियास नबी के बारे में क्या लिखा
है? इलियास ने अल्लाह के सामने इसराईली
क़ौम की शिकायत करके कहा, 3“ऐ रब, उन्होंने
तेरे नबियों को क़त्ल किया और तेरी क़ुरबानगाहों
को गिरा दिया है। मैं अकेला ही बचा हूँ, और
वह मुझे भी मार डालने के दरपै हैं।” 4इस पर
अल्लाह ने उसे क्या जवाब दिया? “मैंने अपने
लिए 7,000 मर्दों को बचा लिया है जिन्होंने अपने
घुटने बाल देवता के सामने नहीं टेके।” 5आज भी
यही हालत है। इसराईल का एक छोटा हिस्सा बच
गया है जिसे अल्लाह ने अपने फ़ज़ल से चुन लिया
है। 6और चूँकि यह अल्लाह के फ़ज़ल से हुआ है
इसलिए यह उनकी अपनी कोशिशों से नहीं हुआ।
वरना फ़ज़ल फ़ज़ल ही न रहता।

7ग़रज़, जिस चीज़ की तलाश में इसराईल रहा
वह पूरी क़ौम को हासिल नहीं हुई बल्कि सिर्फ़
उसके एक चुने हुए हिस्से को। बाक़ी सबको

फ़ज़ल के बारे में बेहिस कर दिया गया, 8जिस
तरह कलामे-मुक़द्दस में लिखा है,
“आज तक अल्लाह ने उन्हें
ऐसी हालत में रखा है
कि उनकी रूह मदहोश है,
उनकी आँखें देख नहीं सकतीं
और उनके कान सुन नहीं सकते।”
9और दाऊद फ़रमाता है,
“उनकी मेज़
उनके लिए फंदा और जाल बन जाए,
इससे वह ठोकर खाकर
अपने ग़लत कामों का मुआवज़ा पाएँ।
10उनकी आँखें तारीक हो जाएँ
ताकि वह देख न सकें,
उनकी कमर हमेशा झुकी रहे।”
11तो क्या अल्लाह की क़ौम ठोकर खाकर यों
गिर गई कि कभी बहाल नहीं होगी? हरगिज़
नहीं! उस की ख़ताओं की वजह से अल्लाह ने
ग़ैरयहूदियों को नजात पाने का मौक़ा दिया ताकि
इसराईली ग़ैरत खाएँ। 12यों यहूदियों की ख़ताएँ
दुनिया के लिए भरपूर बरकत का बाइस बन गईं,
और उनका नुक़सान ग़ैरयहूदियों के लिए भरपूर
बरकत का बाइस बन गया। तो फिर यह बरकत
कितनी और ज़्यादा होगी जब यहूदियों की पूरी
तादाद इसमें शामिल हो जाएगी!

ग़ैरयहूदियों की नजात

13आपको जो ग़ैरयहूदी हैं मैं यह बताता हूँ,
अल्लाह ने मुझे ग़ैरयहूदियों के लिए रसूल बनाया
है, इसलिए मैं अपनी इस ख़िदमत पर ज़ोर देता
हूँ। 14क्योंकि मैं चाहता हूँ कि मेरी क़ौम के लोग
यह देखकर ग़ैरत खाएँ और उनमें से कुछ बच
जाएँ। 15जब उन्हें रद्द किया गया तो बाक़ी दुनिया
की अल्लाह के साथ सुलह हो गई। तो फिर क्या
होगा जब उन्हें दुबारा क़बूल किया जाएगा? यह
मुरदों में से जी उठने के बराबर होगा!
16जब आप फ़सल के पहले आटे से रोटी
बनाकर अल्लाह के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करते
हैं तो बाक़ी सारा आटा भी मख़सूसो-मुक़द्दस है।
और जब दरख़्त की जड़ें मुक़द्दस हैं तो उस की
शाख़ें भी मुक़द्दस हैं। 17ज़ैतून के दरख़्त की कुछ
शाख़ें तोड़ दी गई हैं और उनकी जगह जंगली
ज़ैतून के दरख़्त की एक शाख़ पैवंद की गई है।
आप ग़ैरयहूदी इस जंगली शाख़ से मुताबिक़त
रखते हैं। जिस तरह यह दूसरे दरख़्त की जड़ से
रस और तक़वियत पाती है उसी तरह आप भी
यहूदी क़ौम की रूहानी जड़ से तक़वियत पाते हैं।
18चुनाँचे आपका दूसरी शाख़ों के सामने शेख़ी
मारने का हक़ नहीं। और अगर आप शेख़ी मारें
तो यह ख़याल करें कि आप जड़ को क़ायम नहीं
रखते बल्कि जड़ आपको।
19शायद आप इस पर एतराज़ करें, “हाँ,
लेकिन दूसरी शाख़ें तोड़ी गईं ताकि मैं पैवंद किया
जाऊँ।” 20बेशक, लेकिन याद रखें, दूसरी शाख़ें
इसलिए तोड़ी गईं कि वह ईमान नहीं रखती थीं
और आप इसलिए उनकी जगह लगे हैं कि आप
ईमान रखते हैं। चुनाँचे अपने आप पर फ़ख़र
न करें बल्कि ख़ौफ़ रखें। 21अल्लाह ने असली
शाख़ें बचने न दीं। अगर आप इस तरह की
हरकतें करें तो क्या वह आपको छोड़ देगा?
22यहाँ हमें अल्लाह की मेहरबानी और सख़्ती
नज़र आती है—जो गिर गए हैं उनके सिलसिले
में उस की सख़्ती, लेकिन आपके सिलसिले में
उस की मेहरबानी। और यह मेहरबानी रहेगी जब
तक आप उस की मेहरबानी से लिपटे रहेंगे।
वरना आपको भी दरख़्त से काट डाला जाएगा।
23और अगर यहूदी अपने कुफ़र से बाज़ आएँ
तो उनकी पैवंदकारी दुबारा दरख़्त के साथ की
जाएगी, क्योंकि अल्लाह ऐसा करने पर क़ादिर
है। 24आख़िर आप ख़ुद क़ुदरती तौर पर ज़ैतून
के जंगली दरख़्त की शाख़ थे जिसे अल्लाह ने
तोड़कर क़ुदरती क़वानीन के ख़िलाफ़ ज़ैतून के
असल दरख़्त पर लगाया। तो फिर वह कितनी
ज़्यादा आसानी से यहूदियों की तोड़ी गई शाख़ें
दुबारा उनके अपने दरख़्त में लगा देगा!

अल्लाह का रहम सब पर

25भाइयो, मैं चाहता हूँ कि आप एक भेद
से वाक़िफ़ हो जाएँ, क्योंकि यह आपको अपने
आपको दाना समझने से बाज़ रखेगा। भेद यह है
कि इसराईल का एक हिस्सा अल्लाह के फ़ज़ल
के बारे में बेहिस हो गया है, और उस की यह
हालत उस वक़्त तक रहेगी जब तक ग़ैरयहूदियों
की पूरी तादाद अल्लाह की बादशाही में दाख़िल
न हो जाए। 26फिर पूरा इसराईल नजात पाएगा।
यह कलामे-मुक़द्दस में भी लिखा है,

“छुड़ानेवाला सिय्यून से आएगा।
वह बेदीनी को याक़ूब से हटा देगा।
27और यह मेरा उनके साथ अहद होगा
जब मैं उनके गुनाहों को
उनसे दूर करूँगा।”

28चूँकि यहूदी अल्लाह की ख़ुशख़बरी क़बूल
नहीं करते इसलिए वह अल्लाह के दुश्मन हैं, और
यह बात आपके लिए फ़ायदे का बाइस बन गई है।
तो भी वह अल्लाह को प्यारे हैं, इसलिए कि उसने
उनके बापदादा इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब
को चुन लिया था। 29क्योंकि जब भी अल्लाह
किसी को अपनी नेमतों से नवाज़कर बुलाता है
तो उस की यह नेमतें और बुलावे कभी नहीं मिटने
की। 30माज़ी में ग़ैरयहूदी अल्लाह के ताबे नहीं
थे, लेकिन अब अल्लाह ने आप पर यहूदियों की
नाफ़रमानी की वजह से रहम किया है। 31अब
इसके उलट है कि यहूदी ख़ुद आप पर किए गए
रहम की वजह से अल्लाह के ताबे नहीं हैं, और
लाज़िम है कि अल्लाह उन पर भी रहम करे।
32क्योंकि उसने सबको नाफ़रमानी के क़ैदी बना
दिया है ताकि सब पर रहम करे।

अल्लाह की तमजीद

33वाह! अल्लाह की दौलत, हिकमत और
इल्म क्या ही गहरा है। कौन उसके फ़ैसलों की तह
तक पहुँच सकता है! कौन उस की राहों का खोज
लगा सकता है! 34कलामे-मुक़द्दस यों फ़रमाता
है,

“किसने रब की सोच को जाना?
या कौन इतना इल्म रखता है
कि वह उसे मशवरा दे?
35क्या किसी ने कभी उसे कुछ दिया
कि उसे इसका मुआवज़ा देना पड़े?”

36क्योंकि सब कुछ उसी ने पैदा किया है, सब
कुछ उसी के ज़रीए और उसी के जलाल के लिए
क़ायम है। उसी की तमजीद अबद तक होती रहे!
आमीन।

पूरी ज़िंदगी अल्लाह की ख़िदमत में

12 भाइयो, अल्लाह ने आप पर कितना
रहम किया है! अब ज़रूरी है कि आप
अपने बदनों को अल्लाह के लिए मख़सूस करें,
कि वह एक ऐसी ज़िंदा और मुक़द्दस क़ुरबानी बन
जाएँ जो उसे पसंद आए। ऐसा करने से आप उस
की माक़ूल इबादत करेंगे। 2इस दुनिया के साँचे
में न ढल जाएँ बल्कि अल्लाह को आपकी सोच
की तजदीद करने दें ताकि आप वह शक्लो-सूरत
अपना सकें जो उसे पसंद है। फिर आप अल्लाह
की मरज़ी को पहचान सकेंगे, वह कुछ जो अच्छा,
पसंदीदा और कामिल है।

3उस रहम की बिना पर जो अल्लाह ने मुझ पर
किया मैं आपमें से हर एक को हिदायत देता हूँ
कि अपनी हक़ीक़ी हैसियत को जानकर अपने
आपको इससे ज़्यादा न समझें। क्योंकि जिस
पैमाने से अल्लाह ने हर एक को ईमान बख़्शा
है उसी के मुताबिक़ वह समझदारी से अपनी
हक़ीक़ी हैसियत को जान ले। 4हमारे एक ही
जिस्म में बहुत-से आज़ा हैं, और हर एक अज़ु का
फ़रक़ फ़रक़ काम होता है। 5इसी तरह गो हम
बहुत हैं, लेकिन मसीह में एक ही बदन हैं, जिसमें
हर अज़ु दूसरों के साथ जुड़ा हुआ है। 6अल्लाह ने
अपने फ़ज़ल से हर एक को मुख़्तलिफ़ नेमतों से
नवाज़ा है। अगर आपकी नेमत नबुव्वत करना है
तो अपने ईमान के मुताबिक़ नबुव्वत करें। 7अगर
आपकी नेमत ख़िदमत करना है तो ख़िदमत करें।
अगर आपकी नेमत तालीम देना है तो तालीम दें।

8अगर आपकी नेमत हौसलाअफ़्ज़ाई करना है तो
हौसलाअफ़्ज़ाई करें। अगर आपकी नेमत दूसरों
की ज़रूरियात पूरी करना है तो ख़ुलूसदिली से
यही करें। अगर आपकी नेमत राहनुमाई करना
है तो सरगरमी से राहनुमाई करें। अगर आपकी
नेमत रहम करना है तो ख़ुशी से रहम करें।
9आपकी मुहब्बत महज़ दिखावे की न हो। जो
कुछ बुरा है उससे नफ़रत करें और जो कुछ अच्छा
है उसके साथ लिपटे रहें। 10आपकी एक दूसरे
के लिए बरादराना मुहब्बत सरगरम हो। एक दूसरे
की इज़्ज़त करने में आप ख़ुद पहला क़दम उठाएँ।
11आपका जोश ढीला न पड़ जाए बल्कि रूहानी
सरगरमी से ख़ुदावंद की ख़िदमत करें। 12उम्मीद
में ख़ुश, मुसीबत में साबितक़दम और दुआ में
लगे रहें। 13जब मुक़द्दसीन ज़रूरतमंद हैं तो उनकी
मदद करने में शरीक हों। मेहमान-नवाज़ी में लगे
रहें।
14जो आपको ईज़ा पहुँचाएँ उनको बरकत
दें। उन पर लानत मत करें बल्कि बरकत चाहें।
15ख़ुशी मनानेवालों के साथ ख़ुशी मनाएँ और
रोनेवालों के साथ रोएँ। 16एक दूसरे के साथ
अच्छे ताल्लुक़ात रखें। ऊँची सोच न रखें बल्कि
दबे हुओं से रिफ़ाक़त रखें। अपने आपको दाना
मत समझें।
17अगर कोई आपसे बुरा सुलूक करे तो बदले
में उससे बुरा सुलूक न करना। ध्यान रखें कि
जो कुछ सबकी नज़र में अच्छा है वही अमल में
लाएँ। 18अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश करें कि
जहाँ तक मुमकिन हो सबके साथ मेल-मिलाप
रखें। 19अज़ीज़ो, इंतक़ाम मत लें बल्कि अल्लाह
के ग़ज़ब को बदला लेने का मौक़ा दें। क्योंकि
कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, "रब फ़रमाता है,
इंतक़ाम लेना मेरा ही काम है, मैं ही बदला लूँगा।"
20इसके बजाए "अगर तेरा दुश्मन भूका हो तो
उसे खाना खिला, अगर प्यासा हो तो पानी पिला।
क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सर पर जलते हुए
कोयलों का ढेर लगाएगा।" 21अपने पर बुराई को
ग़ालिब न आने दें बल्कि भलाई से आप बुराई पर
ग़ालिब आएँ।

रिआया के फ़रायज़

13 हर शख़्स इख़्तियार रखनेवाले
हुक्मरानों के ताबे रहे, क्योंकि तमाम
इख़्तियार अल्लाह की तरफ़ से है। जो इख़्तियार
रखते हैं उन्हें अल्लाह की तरफ़ से मुक़र्रर किया
गया है। 2चुनाँचे जो हुक्मरान की मुख़ालफ़त
करता है वह अल्लाह के फ़रमान की मुख़ालफ़त
करता और यों अपने आप पर अल्लाह की
अदालत लाता है। 3क्योंकि हुक्मरान उनके लिए
ख़ौफ़ का बाइस नहीं होते जो सहीह काम करते
हैं बल्कि उनके लिए जो ग़लत काम करते हैं।
क्या आप हुक्मरान से ख़ौफ़ खाए बग़ैर ज़िंदगी
गुज़ारना चाहते हैं? तो फिर वह कुछ करें जो
अच्छा है तो वह आपको शाबाश देगा। 4क्योंकि
वह अल्लाह का ख़ादिम है जो आपकी बेहतरी के
लिए ख़िदमत करता है। लेकिन अगर आप ग़लत
काम करें तो डरें, क्योंकि वह अपनी तलवार
को ख़ाहमख़ाह थामे नहीं रखता। वह अल्लाह
का ख़ादिम है और उसका ग़ज़ब ग़लत काम
करनेवाले पर नाज़िल होता है। 5इसलिए लाज़िम
है कि आप हुकूमत के ताबे रहें, न सिर्फ़ सज़ा
से बचने के लिए बल्कि इसलिए भी कि आपके
ज़मीर पर दाग़ न लगे।
6यही वजह है कि आप टैक्स अदा करते हैं,
क्योंकि सरकारी मुलाज़िम अल्लाह के ख़ादिम हैं
जो इस ख़िदमत को सरंजाम देने में लगे रहते हैं।
7चुनाँचे हर एक को वह कुछ दें जो उसका हक़
है, टैक्स लेनेवाले को टैक्स और कस्टम ड्यूटी
लेनेवाले को कस्टम ड्यूटी। जिसका ख़ौफ़ रखना
आप पर फ़र्ज़ है उसका ख़ौफ़ मानें और जिसका
एहतराम करना आप पर फ़र्ज़ है उसका एहतराम
करें।

एक दूसरे के लिए फ़रायज़

8किसी के भी क़र्ज़दार न रहें। सिर्फ़ एक क़र्ज़
है जो आप कभी नहीं उतार सकते, एक दूसरे
से मुहब्बत रखने का क़र्ज़। यह करते रहें क्योंकि
जो दूसरों से मुहब्बत रखता है उसने शरीअत के
तमाम तक़ाज़े पूरे किए हैं। 9मसलन शरीअत में
लिखा है, "क़त्ल न करना, ज़िना न करना, चोरी
न करना, लालच न करना।" और दीगर जितने
अहकाम हैं इस एक ही हुक्म में समाए हुए हैं कि
"अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू
अपने आपसे रखता है।" 10जो किसी से मुहब्बत
रखता है वह उससे ग़लत सुलूक नहीं करता। यों
मुहब्बत शरीअत के तमाम तक़ाज़े पूरे करती है।

11ऐसा करना लाज़िम है, क्योंकि आप ख़ुद
इस वक़्त की अहमियत को जानते हैं कि नींद
से जाग उठने की घड़ी आ चुकी है। क्योंकि जब
हम ईमान लाए थे तो हमारी नजात इतनी क़रीब
नहीं थी जितनी कि अब है। 12रात ढलनेवाली
है और दिन निकलनेवाला है। इसलिए आएँ, हम
तारीकी के काम गंदे कपड़ों की तरह उतारकर नूर
के हथियार बाँध लें। 13हम शरीफ़ ज़िंदगी गुज़ारें,
ऐसे लोगों की तरह जो दिन की रौशनी में चलते
हैं। इसलिए लाज़िम है कि हम इन चीज़ों से बाज़
रहें : बदमस्तों की रंगरलियों और शराबनोशी से,
ज़िनाकारी और ऐयाशी से, और झगड़े और हसद
से। 14इसके बजाए ख़ुदावंद ईसा मसीह को पहन
लें और अपनी पुरानी फ़ितरत की परवरिश यों न
करें कि गुनाहआलूदा ख़ाहिशात बेदार हो जाएँ।

एक दूसरे को मुजरिम मत ठहराना

14 जिसका ईमान कमज़ोर है उसे क़बूल
करें, और उसके साथ बहस-मुबाहसा
न करें। 2एक का ईमान तो उसे हर चीज़ खाने की
इजाज़त देता है जबकि कमज़ोर ईमान रखनेवाला
सिर्फ़ सब्ज़ियाँ खाता है। 3जो सब कुछ खाता है
वह उसे हक़ीर न जाने जो यह नहीं कर सकता।
और जो यह नहीं कर सकता वह उसे मुजरिम न
ठहराए जो सब कुछ खाता है, क्योंकि अल्लाह
ने उसे क़बूल किया है। 4आप कौन हैं कि किसी
और के ग़ुलाम का फ़ैसला करें? उसका अपना
मालिक फ़ैसला करेगा कि वह खड़ा रहे या गिर
जाए। और वह ज़रूर खड़ा रहेगा, क्योंकि ख़ुदावंद
उसे क़ायम रखने पर क़ादिर है।

5कुछ लोग एक दिन को दूसरे दिनों की निसबत
ज़्यादा अहम क़रार देते हैं जबकि दूसरे तमाम
दिनों की अहमियत बराबर समझते हैं। आप जो
भी ख़याल रखें, हर एक उसे पूरे यक़ीन के साथ
रखे। 6जो एक दिन को ख़ास क़रार देता है वह
इससे ख़ुदावंद की ताज़ीम करना चाहता है। इसी
तरह जो सब कुछ खाता है वह इससे ख़ुदावंद को
जलाल देना चाहता है। यह इससे ज़ाहिर होता
है कि वह इसके लिए ख़ुदा का शुक्र करता है।
लेकिन जो कुछ खानों से परहेज़ करता है वह भी
ख़ुदा का शुक्र करके इससे उस की ताज़ीम करना
चाहता है। 7बात यह है कि हममें से कोई नहीं जो
सिर्फ़ अपने वास्ते ज़िंदगी गुज़ारता है और कोई
नहीं जो सिर्फ़ अपने वास्ते मरता है। 8अगर हम
ज़िंदा हैं तो इसलिए कि ख़ुदावंद को जलाल दें,
और अगर हम मरें तो इसलिए कि हम ख़ुदावंद
को जलाल दें। ग़रज़ हम ख़ुदावंद ही के हैं, ख़ाह
ज़िंदा हों या मुरदा। 9क्योंकि मसीह इसी मक़सद
के लिए मुआ और जी उठा कि वह मुरदों और
ज़िंदों दोनों का मालिक हो। 10तो फिर आप जो
सिर्फ़ सब्ज़ी खाते हैं अपने भाई को मुजरिम क्यों
ठहराते हैं? और आप जो सब कुछ खाते हैं अपने
भाई को हक़ीर क्यों जानते हैं? याद रखें कि एक
दिन हम सब अल्लाह के तख़्ते-अदालत के सामने
खड़े होंगे। 11कलामे-मुक़द्दस में यही लिखा है,

रब फ़रमाता है, "मेरी हयात की क़सम,
हर घुटना मेरे सामने झुकेगा
और हर ज़बान
अल्लाह की तमजीद करेगी।"

12हाँ, हममें से हर एक को अल्लाह के सामने
अपनी ज़िंदगी का जवाब देना पड़ेगा।

दूसरों के लिए गिरने का बाइस न बनना

13चुनाँचे आएँ, हम एक दूसरे को मुजरिम न
ठहराएँ। पूरे अज़्म के साथ इसका ख़याल रखें
कि आप अपने भाई के लिए ठोकर खाने या गुनाह
में गिरने का बाइस न बनें। 14मुझे ख़ुदावंद मसीह
में इल्म और यक़ीन है कि कोई भी खाना बज़ाते-
ख़ुद नापाक नहीं है। लेकिन जो किसी खाने को
नापाक समझता है उसके लिए वह खाना नापाक
ही है। 15अगर आप अपने भाई को अपने किसी
खाने के बाइस परेशान कर रहे हैं तो आप मुहब्बत
की रूह में ज़िंदगी नहीं गुज़ार रहे। अपने भाई
को अपने खाने से हलाक न करें। याद रखें कि
मसीह ने उसके लिए अपनी जान दी है। 16ऐसा
न हो कि लोग उस अच्छी चीज़ पर कुफ़्र बकें
जो आपको मिल गई है। 17क्योंकि अल्लाह की
बादशाही खाने-पीने की चीज़ों पर क़ायम नहीं है
बल्कि रास्तबाज़ी, सुलह-सलामती और रूहुल-
क़ुद्स में ख़ुशी पर। 18जो यों मसीह की ख़िदमत
करता है वह अल्लाह को पसंद और इनसानों को
मंज़ूर है।

19चुनाँचे आएँ, हम पूरी जिद्दो-जहद के साथ
वह कुछ करने की कोशिश करें जो सुलह-
सलामती और एक दूसरे की रूहानी तामीरो-
तरक़्क़ी का बाइस है। 20अल्लाह का काम किसी
खाने की ख़ातिर बरबाद न करें। हर खाना पाक
है, लेकिन अगर आप कुछ खाते हैं जिससे दूसरे
को ठेस लगे तो यह ग़लत है। 21बेहतर यह है
कि न आप गोश्त खाएँ, न मै पिएँ और न कोई
और क़दम उठाएँ जिससे आपका भाई ठोकर
खाए। 22जो भी ईमान आप इस नाते से रखते हैं
वह आप और अल्लाह तक महदूद रहे। मुबारक
है वह जो किसी चीज़ को जायज़ क़रार देकर
अपने आपको मुजरिम नहीं ठहराता। 23लेकिन
जो शक करते हुए कोई खाना खाता है उसे
मुजरिम ठहराया जाता है, क्योंकि उसका यह
अमल ईमान पर मबनी नहीं है। और जो भी अमल
ईमान पर मबनी नहीं होता वह गुनाह है।

बुर्दबारी

15 हम ताक़तवरों का फ़र्ज़ है कि
कमज़ोरों की कमज़ोरियाँ बर-
दाश्त करें। हम सिर्फ़ अपने आपको ख़ुश करने
की ख़ातिर ज़िंदगी न गुज़ारें 2बल्कि हर एक अपने
पड़ोसी को उस की बेहतरी और रूहानी तामीरो-
तरक़्क़ी के लिए ख़ुश करे। 3क्योंकि मसीह ने भी
ख़ुद को ख़ुश रखने के लिए ज़िंदगी नहीं गुज़ारी।
कलामे-मुक़द्दस में उसके बारे में यही लिखा है,
"जो तुझे गालियाँ देते हैं उनकी गालियाँ मुझ पर
आ गई हैं।" 4यह सब कुछ हमें हमारी नसीहत
के लिए लिखा गया ताकि हम साबितक़दमी
और कलामे-मुक़द्दस की हौसलाअफ़्ज़ा बातों
से उम्मीद पाएँ। 5अब साबितक़दमी और हौसला
देनेवाला ख़ुदा आपको तौफ़ीक़ दे कि आप मसीह
ईसा का नमूना अपनाकर यगांगत की रूह में
एक दूसरे के साथ ज़िंदगी गुज़ारें। 6तब ही आप
मिलकर एक ही आवाज़ के साथ ख़ुदा, हमारे
ख़ुदावंद ईसा मसीह के बाप को जलाल दे सकेंगे।

ग़ैरयहूदियों के लिए ख़ुशख़बरी

7चुनाँचे जिस तरह मसीह ने आपको क़बूल
किया है उसी तरह एक दूसरे को भी क़बूल करें
ताकि अल्लाह को जलाल मिले। 8याद रखें कि
मसीह अल्लाह की सदाक़त का इज़हार करके
यहूदियों का ख़ादिम बना ताकि उन वादों की
तसदीक़ करे जो इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब से
किए गए थे। 9वह इसलिए भी ख़ादिम बना कि
ग़ैरयहूदी अल्लाह को उस रहम के लिए जलाल
दें जो उसने उन पर किया है। कलामे-मुक़द्दस में
यही लिखा है,

"इसलिए मैं अक़वाम में
 तेरी हम्दो-सना करूँगा,
तेरे नाम की तारीफ़ में गीत गाऊँगा।"

10यह भी लिखा है,

"ऐ दीगर क़ौमो,
 उस की उम्मत के साथ ख़ुशी मनाओ!"

11फिर लिखा है,

“ऐ तमाम अक़्वाम, रब की तमजीद करो!
ऐ तमाम उम्मतो, उस की सताइश करो!”
12और यसायाह नबी यह फ़रमाता है,
“यस्सी की जड़ से
एक कोंपल फूट निकलेगी,
एक ऐसा आदमी उठेगा
जो क़ौमों पर हुकूमत करेगा।
ग़ैरयहूदी उस पर आस रखेंगे।”
13उम्मीद का ख़ुदा आपको ईमान रखने के
बाइस हर ख़ुशी और सलामती से मामूर करे ताकि
रूहुल-क़ुद्स की क़ुदरत से आपकी उम्मीद बढ़कर
दिल से छलक जाए।

दिलेरी से लिखने की वजह

14मेरे भाइयो, मुझे पूरा यक़ीन है कि आप
ख़ुद भलाई से मामूर हैं, कि आप हर तरह का
इल्मो-इरफ़ान रखते हैं और एक दूसरे को नसीहत
करने के क़ाबिल भी हैं। 15तो भी मैंने याद दिलाने
की ख़ातिर आपको कई बातें लिखने की दिलेरी
की है। क्योंकि मैं अल्लाह के फ़ज़ल से 16आप
ग़ैरयहूदियों के लिए मसीह ईसा का ख़ादिम
हूँ। और मैं अल्लाह की ख़ुशख़बरी फैलाने में
बैतुल-मुक़द्दस के इमाम की-सी ख़िदमत सरंजाम
देता हूँ ताकि आप एक ऐसी क़ुरबानी बन जाएँ
जो अल्लाह को पसंद आए और जिसे रूहुल-
क़ुद्स ने उसके लिए मख़सूसो-मुक़द्दस किया
हो। 17चुनाँचे मैं मसीह ईसा में अल्लाह के
सामने अपनी ख़िदमत पर फ़ख़र कर सकता हूँ।
18क्योंकि मैं सिर्फ़ उस काम के बारे में बात करने
की जुर्रत करूँगा जो मसीह ने मेरी मारिफ़त किया
है और जिससे ग़ैरयहूदी अल्लाह के ताबे हो गए
हैं। हाँ, मसीह ही ने यह काम कलाम और अमल
से, 19इलाही निशानों और मोजिज़ों की क़ुव्वत से
और अल्लाह के रूह की क़ुदरत से सरंजाम दिया
है। यों मैंने यरूशलम से लेकर सूबा इल्लुरिकुम
तक सफ़र करते करते अल्लाह की ख़ुशख़बरी
फैलाने की ख़िदमत पूरी की है। 20और मैं इसे
अपनी इज़्ज़त का बाइस समझा कि ख़ुशख़बरी
वहाँ सुनाऊँ जहाँ मसीह के बारे में ख़बर नहीं
पहुँची। क्योंकि मैं ऐसी बुनियाद पर तामीर नहीं
करना चाहता था जो किसी और ने डाली थी।
21कलामे-मुक़द्दस यही फ़रमाता है,
“जिन्हें उसके बारे में नहीं बताया गया
वह देखेंगे,
और जिन्होंने नहीं सुना
उन्हें समझ आएगी।”

पौलुस का रोम जाने का इरादा

22यही वजह है कि मुझे इतनी दफ़ा आपके
पास आने से रोका गया है। 23लेकिन अब मेरी
इन इलाक़ों में ख़िदमत पूरी हो चुकी है। और
चूँकि मैं इतने सालों से आपके पास आने का
आरज़ूमंद रहा हूँ 24इसलिए अब यह ख़ाहिश पूरी
करने की उम्मीद रखता हूँ। क्योंकि मैंने स्पेन
जाने का मनसूबा बनाया है। उम्मीद है कि रास्ते
में आपसे मिलूँगा और आप आगे के सफ़र के
लिए मेरी मदद कर सकेंगे। लेकिन पहले मैं कुछ
देर के लिए आपकी रिफ़ाक़त से लुत्फ़अंदोज़
होना चाहता हूँ। 25इस वक़्त मैं यरूशलम जा
रहा हूँ ताकि वहाँ के मुक़द्दसीन की ख़िदमत करूँ।
26क्योंकि मकिदुनिया और अख़या की जमातों ने
यरूशलम के उन मुक़द्दसीन के लिए हदिया जमा
करने का फ़ैसला किया है जो ग़रीब हैं। 27उन्होंने
यह ख़ुशी से किया और दरअसल यह उनका फ़र्ज़
भी है। ग़ैरयहूदी तो यहूदियों की रूहानी बरकतों
में शरीक हुए हैं, इसलिए ग़ैरयहूदियों का फ़र्ज़
है कि वह यहूदियों को भी अपनी माली बरकतों
में शरीक करके उनकी ख़िदमत करें। 28चुनाँचे
अपना यह फ़र्ज़ अदा करने और मक़ामी भाइयों
का यह सारा फल यरूशलम के ईमानदारों तक
पहुँचाने के बाद मैं आपके पास से होता हुआ
स्पेन जाऊँगा। 29और मैं जानता हूँ कि जब मैं
आपके पास आऊँगा तो मसीह की पूरी बरकत
लेकर आऊँगा।

30भाइयो, मैं हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह और
रूहुल-क़ुद्स की मुहब्बत को याद दिलाकर

आपसे मिन्नत करता हूँ कि आप मेरे लिए
अल्लाह से दुआ करें और यों मेरी रूहानी जंग
में शरीक हो जाएँ। 31इसके लिए दुआ करें कि
मैं सूबा यहूदिया के ग़ैरईमानदारों से बचा रहूँ और
कि मेरी यरूशलम में ख़िदमत वहाँ के मुक़द्दसीन
को पसंद आए। 32क्योंकि मैं चाहता हूँ कि जब मैं
अल्लाह की मरज़ी से आपके पास आऊँगा तो मेरे
दिल में ख़ुशी हो और हम एक दूसरे की रिफ़ाक़त
से तरो-ताज़ा हो जाएँ। 33सलामती का ख़ुदा आप
सबके साथ हो। आमीन।

सलामो-दुआ

16 हमारी बहन फ़ीबे आपके पास आ रही
है। वह किंख़रिया शहर की जमात
में ख़ादिमा है। मैं उस की सिफ़ारिश करता हूँ
2बल्कि ख़ुदावंद में अर्ज़ है कि आप उसका वैसे
ही इस्तक़बाल करें जैसे कि मुक़द्दसीन को करना
चाहिए। जिस मामले में भी उसे आपकी मदद की
ज़रूरत हो उसमें उसका साथ दें, क्योंकि उसने
बहुत लोगों की बल्कि मेरी भी मदद की है।

3प्रिसकिल्ला और अकविला को मेरा
सलाम देना जो मसीह ईसा में मेरे हम-
ख़िदमत रहे हैं। 4उन्होंने मेरे लिए अपनी जान
पर खेला। न सिर्फ़ मैं बल्कि ग़ैरयहूदियों की
जमातें उनकी एहसानमंद हैं। 5उनके घर में जमा
होनेवाली जमात को भी मेरा सलाम देना।

मेरे अज़ीज़ दोस्त इपिनेतुस को मेरा सलाम
देना। वह सूबा आसिया में मसीह का पहला
पैरोकार यानी उस इलाक़े की फ़सल का पहला
फल था। 6मरियम को मेरा सलाम जिसने आपके
लिए बड़ी मेहनत-मशक़्क़त की है। 7अंदरूनीकुस
और यूनिया को मेरा सलाम। वह मेरे हमवतन हैं
और जेल में मेरे साथ वक़्त गुज़ारा है। रसूलों में
वह नुमायाँ हैसियत रखते हैं, और वह मुझसे पहले
मसीह के पीछे हो लिए थे।

8अंपलियातुस को सलाम। वह ख़ुदावंद में
मुझे अज़ीज़ है। 9मसीह में हमारे हमख़िदमत
उर्बानुस को सलाम और इसी तरह मेरे अज़ीज़
दोस्त इस्तख़ुस को भी। 10अपेल्लिस को सलाम
जिसकी मसीह के साथ वफ़ादारी को आज़माया
गया है। अरिस्तुबूलुस के घरवालों को सलाम।
11मेरे हमवतन हेरोदियोन को सलाम और इसी
तरह नरकिस्सुस के उन घरवालों को भी जो
मसीह के पीछे हो लिए हैं।

12त्रूफ़ेना और त्रूफ़ोसा को सलाम जो ख़ुदावंद
की ख़िदमत में मेहनत-मशक़्क़त करती हैं। मेरी
अज़ीज़ बहन परसिस को सलाम जिसने ख़ुदावंद
की ख़िदमत में बड़ी मेहनत-मशक़्क़त की है।
13हमारे ख़ुदावंद के चुने हुए भाई रूफ़ुस को
सलाम और इसी तरह उस की माँ को भी
जो मेरी माँ भी है। 14असिंकरितुस, फ़लिगोन,
हिरमेस, पतरोबास, हिरमास और उनके साथी
भाइयों को मेरा सलाम देना। 15फ़िलुलुगुस और
यूलिया, नेरियूस और उस की बहन, उलिं-
पास और उनके साथ तमाम मुक़द्दसीन को
सलाम।

16एक दूसरे को मुक़द्दस बोसा देकर सलाम
करें। मसीह की तमाम जमातों की तरफ़ से
आपको सलाम।

आख़िरी हिदायात

17भाइयो, मैं आपको ताकीद करता हूँ कि
आप उनसे ख़बरदार रहें जो पार्टीबाज़ी और ठोकर
का बाइस बनते हैं। यह उस तालीम के ख़िलाफ़
है जो आपको दी गई है। उनसे किनारा करें
18क्योंकि ऐसे लोग हमारे ख़ुदावंद मसीह की
ख़िदमत नहीं कर रहे बल्कि अपने पेट की।
वह अपनी मीठी और चिकनी-चुपड़ी बातों से
सादालौह लोगों के दिलों को धोका देते हैं।
19आपकी फ़रमाँबरदारी की ख़बर सब तक पहुँच
गई है। यह देखकर मैं आपके बारे में ख़ुश हूँ।
लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप अच्छा काम करने
के लिहाज़ से दानिशमंद और बुरा काम करने
के लिहाज़ से बेक़ुसूर हों। 20सलामती का ख़ुदा
जल्द ही इबलीस को आपके पाँवों तले कुचलवा
डालेगा।

हमारे ख़ुदावंद ईसा का फ़ज़्ल आपके साथ हो।
21मेरा हमख़िदमत तीमुथियुस आपको सलाम
देता है, और इसी तरह मेरे हमवतन लूकियुस,
यासोन और सोसिपातरुस।
22मैं, तिरतियुस इस ख़त का कातिब हूँ। मेरी
तरफ़ से भी ख़ुदावंद में आपको सलाम।
23गयुस की तरफ़ से आपको सलाम। मैं
और पूरी जमात उसके मेहमान रहे हैं। शहर के
ख़ज़ानची इरास्तुस और हमारे भाई क्वारतुस भी
आपको सलाम कहते हैं। 24[हमारे ख़ुदावंद ईसा
का फ़ज़्ल आप सबके साथ होता रहे।]

आख़िरी दुआ

25अल्लाह की तमजीद हो, जो आपको
मज़बूत करने पर क़ादिर है, क्योंकि ईसा मसीह
के बारे में उस ख़ुशख़बरी से जो मैं सुनाता हूँ और
उस भेद के इनकिशाफ़ से जो अज़ल से पोशीदा
रहा वह आपको क़ायम रख सकता है। 26अब
इस भेद की हक़ीक़त नबियों के सहीफ़ों से ज़ाहिर
की गई है और अबदी ख़ुदा के हुक्म पर तमाम
क़ौमों को मालूम हो गई है ताकि सब ईमान लाकर
अल्लाह के ताबे हो जाएँ।
27अल्लाह की तमजीद हो जो वाहिद
दानिशमंद है। उसी का ईसा मसीह के वसीले से
अबद तक जलाल होता रहे! आमीन।

कुरिंथियों के नाम
पौलुस रसूल का पहला ख़त

सलाम

1 यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है, जो
अल्लाह के इरादे से मसीह ईसा का
बुलाया हुआ रसूल है, और हमारे भाई सोसथिनेस
की तरफ़ से।
2मैं कुरिंथुस में मौजूद अल्लाह की जमात को
लिख रहा हूँ, आपको जिन्हें मसीह ईसा में मुक़द्दस
किया गया है, जिन्हें मुक़द्दस होने के लिए बुलाया
गया है। साथ ही यह ख़त उन तमाम लोगों के नाम
भी है जो हर जगह हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह का
नाम लेते हैं जो उनका और हमारा ख़ुदावंद है।
3हमारा ख़ुदा बाप और ख़ुदावंद ईसा मसीह
आपको फ़ज़ल और सलामती अता करें।

शुक्र

4मैं हमेशा आपके लिए ख़ुदा का शुक्र करता
हूँ कि उसने आपको मसीह ईसा में इतना फ़ज़ल
बख़्शा है। 5आपको उसमें हर लिहाज़ से दौलतमंद
किया गया है, हर क़िस्म की तक़रीर और इल्मो-
इरफ़ान में। 6क्योंकि मसीह की गवाही ने आपके
दरमियान ज़ोर पकड़ लिया है, 7इसलिए आपको
हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के ज़ुहूर का इंतज़ार
करते करते किसी भी बरकत में कमी नहीं।
8वही आपको आख़िर तक मज़बूत बनाए रखेगा,
इसलिए आप हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह की दूसरी
आमद के दिन बेइलज़ाम ठहरेंगे। 9अल्लाह पर
पूरा एतमाद किया जा सकता है जिसने आपको
बुलाकर अपने फ़रज़ंद हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह
की रिफ़ाक़त में शरीक किया है।

कुरिंथियों की पार्टीबाज़ी

10भाइयो, मैं अपने ख़ुदावंद ईसा मसीह के
नाम में आपको ताकीद करता हूँ कि आप सब
एक ही बात कहें। आपके दरमियान पार्टीबाज़ी
नहीं बल्कि एक ही सोच और एक ही राय होनी
चाहिए। 11क्योंकि मेरे भाइयो, आपके बारे में
मुझे ख़लोए के घरवालों से मालूम हुआ है कि
आप झगड़ों में उलझ गए हैं। 12मतलब यह है
कि आपमें से कोई कहता है, “मैं पौलुस की पार्टी
का हूँ,” कोई “मैं अपुल्लोस की पार्टी का हूँ,”
कोई “मैं कैफ़ा की पार्टी का हूँ” और कोई कि
“मैं मसीह की पार्टी का हूँ।” 13क्या मसीह बट
गया? क्या आपकी ख़ातिर पौलुस को सलीब पर
चढ़ाया गया? या क्या आपको पौलुस के नाम से
बपतिस्मा दिया गया?
14ख़ुदा का शुक्र है कि मैंने आपमें से किसी
को बपतिस्मा नहीं दिया सिवाए क्रिसपुस और
गयुस के। 15इसलिए कोई नहीं कह सकता कि
मैंने पौलुस के नाम से बपतिस्मा पाया है। 16हाँ
मैंने स्तिफ़नास के घराने को भी बपतिस्मा दिया।

लेकिन जहाँ तक मेरा ख़याल है इसके अलावा
किसी और को बपतिस्मा नहीं दिया। 17मसीह
ने मुझे बपतिस्मा देने के लिए रसूल बनाकर नहीं
भेजा बल्कि इसलिए कि अल्लाह की ख़ुशख़बरी
सुनाऊँ। और यह काम मुझे दुनियावी हिकमत से
आरास्ता तक़रीर से नहीं करना है ताकि मसीह
की सलीब की ताक़त बेअसर न हो जाए।

सलीब का पैग़ाम

18क्योंकि सलीब का पैग़ाम उनके लिए
जिनका अंजाम हलाकत है बेवुक़ूफ़ी है जबकि
हमारे लिए जिनका अंजाम नजात है यह अल्लाह
की क़ुदरत है। 19चुनाँचे पाक नविश्तों में लिखा
है,

“मैं दानिशमंदों की दानिश को
तबाह करूँगा
और समझदारों की समझ को
रद्द करूँगा।”

20अब दानिशमंद शख़्स कहाँ है? आलिम कहाँ
है? इस जहान का मुनाज़रे का माहिर कहाँ है?
क्या अल्लाह ने दुनिया की हिकमतो-दानाई को
बेवुक़ूफ़ी साबित नहीं किया?

21क्योंकि अगरचे दुनिया अल्लाह की दानाई
से घिरी हुई है तो भी दुनिया ने अपनी दानाई
की बदौलत अल्लाह को न पहचाना। इसलिए
अल्लाह को पसंद आया कि वह सलीब के
पैग़ाम की बेवुक़ूफ़ी के ज़रीए ही ईमान रखनेवालों
को नजात दे। 22यहूदी तक़ाज़ा करते हैं कि
इलाही बातों की तसदीक़ इलाही निशानों से
की जाए जबकि यूनानी दानाई के वसीले से
इनकी तसदीक़ के ख़ाहाँ हैं। 23इसके मुक़ाबले
में हम मसीहे-मसलूब की मुनादी करते हैं। यहूदी
इससे ठोकर खाकर नाराज़ हो जाते हैं जबकि
ग़ैरयहूदी इसे बेवुक़ूफ़ी क़रार देते हैं। 24लेकिन
जो अल्लाह के बुलाए हुए हैं, ख़ाह वह यहूदी
हों ख़ाह यूनानी, उनके लिए मसीह अल्लाह
की क़ुदरत और अल्लाह की दानाई होता है।
25क्योंकि अल्लाह की जो बात बेवुक़ूफ़ी लगती
है वह इनसान की दानाई से ज़्यादा दानिशमंद है।
और अल्लाह की जो बात कमज़ोर लगती है वह
इनसान की ताक़त से ज़्यादा ताक़तवर है।

26भाइयो, इस पर ग़ौर करें कि आपका क्या
हाल था जब ख़ुदा ने आपको बुलाया। आपमें
से कम हैं जो दुनिया के मेयार के मुताबिक़
दाना हैं, कम हैं जो ताक़तवर हैं, कम हैं जो
आली ख़ानदान से हैं। 27बल्कि जो दुनिया की
निगाह में बेवुक़ूफ़ है उसे अल्लाह ने चुन लिया
ताकि दानाओं को शरमिंदा करे। और जो दुनिया
में कमज़ोर है उसे अल्लाह ने चुन लिया ताकि
ताक़तवरों को शरमिंदा करे। 28इसी तरह जो
दुनिया के नज़दीक ज़लील और हक़ीर है उसे
अल्लाह ने चुन लिया। हाँ, जो कुछ भी नहीं है
उसे उसने चुन लिया ताकि उसे नेस्त करे जो
बज़ाहिर कुछ है। 29चुनाँचे कोई भी अल्लाह के
सामने अपने पर फ़ख़र नहीं कर सकता। 30यह
अल्लाह की तरफ़ से है कि आप मसीह ईसा में हैं।
अल्लाह की बख़्शिश से ईसा ख़ुद हमारी दानाई,
हमारी रास्तबाज़ी, हमारी तक़दीस और हमारी
मख़लसी बन गया है। 31इसलिए जिस तरह
कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता है, “फ़ख़र करनेवाला
ख़ुदावंद ही पर फ़ख़र करे।”

पौलुस की सादा मुनादी

2 भाइयो, मुझ पर भी ग़ौर करें। जब
मैं आपके पास आया तो मैंने आपको
अल्लाह का भेद मोटे मोटे अलफ़ाज़ में या
फ़लसफ़ियाना हिकमत का इज़हार करते हुए न
सुनाया। 2वजह क्या थी? यह कि मैंने इरादा कर
रखा था कि आपके दरमियान होते हुए मैं ईसा
मसीह के सिवा और कुछ न जानूँ, ख़ासकर यह
कि उसे मसलूब किया गया। 3हाँ मैं कमज़ोरहाल,
ख़ौफ़ खाते और बहुत थरथराते हुए आपके पास
आया। 4और गुफ़्तगू और मुनादी करते हुए मैंने
दुनियावी हिकमत के बड़े ज़ोरदार अलफ़ाज़ की
मारिफ़त आपको क़ायल करने की कोशिश न
की, बल्कि रूहुल-क़ुद्स और अल्लाह की क़ुदरत

ने मेरी बातों की तसदीक़ की, 5ताकि आपका
ईमान इनसानी हिकमत पर मबनी न हो बल्कि
अल्लाह की क़ुदरत पर।

ग़लत और सहीह दानाई

6दानाई की बातें हम उस वक़्त करते हैं जब
कामिल ईमान रखनेवालों के दरमियान होते हैं।
लेकिन यह दानाई मौजूदा जहान की नहीं और न
इस जहान के हाकिमों ही की है जो मिटनेवाले
हैं। 7बल्कि हम ख़ुदा ही की दानाई की बातें करते
हैं जो भेद की सूरत में छुपी रही है। अल्लाह ने
तमाम ज़मानों से पेशतर मुक़र्रर किया है कि यह
दानाई हमारे जलाल का बाइस बने। 8इस जहान
के किसी भी हाकिम ने इस दानाई को न पहचाना,
क्योंकि अगर वह पहचान लेते तो फिर वह हमारे
जलाली ख़ुदावंद को मसलूब न करते। 9दानाई के
बारे में पाक नविश्ते भी यही कहते हैं,

"जो न किसी आँख ने देखा,
न किसी कान ने सुना,
और न इनसान के ज़हन में आया,
उसे अल्लाह ने उनके लिए तैयार कर दिया
जो उससे मुहब्बत रखते हैं।"

10लेकिन अल्लाह ने यही कुछ अपने रूह की
मारिफ़त हम पर ज़ाहिर किया क्योंकि उसका
रूह हर चीज़ का खोज लगाता है, यहाँ तक कि
अल्लाह की गहराइयों का भी। 11इनसान के
बातिन से कौन वाक़िफ़ है सिवाए इनसान की
रूह के जो उसके अंदर है? इसी तरह अल्लाह से
ताल्लुक़ रखनेवाली बातों को कोई नहीं जानता
सिवाए अल्लाह के रूह के। 12और हमें दुनिया
की रूह नहीं मिली बल्कि वह रूह जो अल्लाह की
तरफ़ से है ताकि हम उस की अताकरदा बातों को
जान सकें।

13यही कुछ हम बयान करते हैं, लेकिन ऐसे
अलफ़ाज़ में नहीं जो इनसानी हिकमत से हमें
सिखाया गया बल्कि रूहुल-क़ुद्स से। यों हम
रूहानी हक़ीक़तों की तशरीह रूहानी लोगों के
लिए करते हैं। 14जो शख़्स रूहानी नहीं है वह
अल्लाह के रूह की बातों को क़बूल नहीं करता
क्योंकि वह उसके नज़दीक बेवुक़ूफ़ी हैं। वह उन्हें
पहचान नहीं सकता क्योंकि उनकी परख सिर्फ़
रूहानी शख़्स ही कर सकता है। 15वही हर चीज़
परख लेता है जबकि उस की अपनी परख कोई
नहीं कर सकता। 16चुनाँचे पाक कलाम में लिखा
है,

"किसने रब की सोच को जाना?
कौन उसको तालीम देगा?"
लेकिन हम मसीह की सोच रखते हैं।

कुरिंथुस की बचगाना हालत

3 भाइयो, मैं आपसे रूहानी लोगों की बातें
न कर सका बल्कि सिर्फ़ जिस्मानी लोगों
की। क्योंकि आप अब तक मसीह में छोटे बच्चे हैं।
2मैंने आपको दूध पिलाया, ठोस ग़िज़ा न खिलाई,
क्योंकि आप उस वक़्त इस क़ाबिल नहीं थे बल्कि
अब तक नहीं हैं। 3अभी तक आप जिस्मानी
हैं, क्योंकि आपमें हसद और झगड़ा पाया जाता
है। क्या इससे यह साबित नहीं होता कि आप
जिस्मानी हैं और रूह के बग़ैर चलते हैं? 4जब
कोई कहता है, "मैं पौलुस की पार्टी का हूँ" और
दूसरा, "मैं अपुल्लोस की पार्टी का हूँ" तो क्या
इससे यह ज़ाहिर नहीं होता कि आप रूहानी नहीं
बल्कि इनसानी सोच रखते हैं?

पौलुस और अपुल्लोस की हैसियत

5अपुल्लोस की क्या हैसियत है और पौलुस
की क्या? दोनों नौकर हैं जिनके वसीले से
आप ईमान लाए। और हममें से हर एक ने वही
ख़िदमत अंजाम दी जो ख़ुदावंद ने उसके सुपुर्द
की। 6मैंने पौदे लगाए, अपुल्लोस पानी देता रहा,
लेकिन अल्लाह ने उन्हें उगने दिया। 7लिहाज़ा
पौदा लगानेवाला और आबपाशी करनेवाला दोनों
कुछ भी नहीं, बल्कि ख़ुदा ही सब कुछ है जो
पौदे को फलने-फूलने देता है। 8पौदा लगाने और
पानी देनेवाला एक जैसे हैं, अलबत्ता हर एक
को उस की मेहनत के मुताबिक़ मज़दूरी मिलेगी।

9क्योंकि हम अल्लाह के मुआविन हैं जबकि आप
अल्लाह का खेत और उस की इमारत हैं।
10अल्लाह के उस फ़ज़ल के मुताबिक़ जो
मुझे बख़्शा गया मैंने एक दानिशमंद ठेकेदार की
तरह बुनियाद रखी। इसके बाद कोई और उस
पर इमारत तामीर कर रहा है। लेकिन हर एक
ध्यान रखे कि वह बुनियाद पर इमारत किस तरह
बना रहा है। 11क्योंकि बुनियाद रखी जा चुकी है
और वह है ईसा मसीह। इसके अलावा कोई भी
मज़ीद कोई बुनियाद नहीं रख सकता। 12जो भी
इस बुनियाद पर कुछ तामीर करे वह मुख़्तलिफ़
मवाद तो इस्तेमाल कर सकता है, मसलन सोना,
चाँदी, क़ीमती पत्थर, लकड़ी, सूखी घास या
भूसा, 13लेकिन आख़िर में हर एक का काम
ज़ाहिर हो जाएगा। क़ियामत के दिन कुछ पोशीदा
नहीं रहेगा बल्कि आग सब कुछ ज़ाहिर कर देगी।
वह साबित कर देगी कि हर किसी ने कैसा काम
किया है। 14अगर उसका तामीरी काम न जला
जो उसने इस बुनियाद पर किया तो उसे अज्र
मिलेगा। 15अगर उसका काम जल गया तो उसे
नुक़सान पहुँचेगा। ख़ुद तो वह बच जाएगा मगर
जलते जलते।
16क्या आपको मालूम नहीं कि आप अल्लाह
का घर हैं, और आपमें अल्लाह का रूह सुकूनत
करता है? 17अगर कोई अल्लाह के घर को
तबाह करे तो अल्लाह उसे तबाह करेगा, क्योंकि
अल्लाह का घर मख़सूसो-मुक़द्दस है और यह घर
आप ही हैं।

अपने बारे में शेख़ी न मारना

18कोई अपने आपको फ़रेब न दे। अगर आपमें
से कोई समझे कि वह इस दुनिया की नज़र में
दानिशमंद है तो फिर ज़रूरी है कि वह बेवुक़ूफ़
बने ताकि वाक़ई दानिशमंद हो जाए। 19क्योंकि
इस दुनिया की हिकमत अल्लाह की नज़र में
बेवुक़ूफ़ी है। चुनाँचे मुक़द्दस नविश्तों में लिखा
है, "वह दानिशमंदों को उनकी अपनी चालाकी
के फंदे में फँसा देता है।" 20यह भी लिखा है,
"रब दानिशमंदों के ख़यालात को जानता है कि
वह बातिल हैं।" 21ग़रज़ कोई किसी इनसान के
बारे में शेख़ी न मारे। सब कुछ तो आपका है।
22पौलुस, अपुल्लोस, कैफ़ा, दुनिया, ज़िंदगी,
मौत, मौजूदा जहान के और मुस्तक़बिल के उमूर
सब कुछ आपका है। 23लेकिन आप मसीह के हैं
और मसीह अल्लाह का है।

ख़ुदावंद के ख़ादिम और उनका काम

4 ग़रज़ लोग हमें मसीह के ख़ादिम समझें,
ऐसे निगरान जिन्हें अल्लाह के भेदों को
खोलने की ज़िम्मेदारी दी गई है। 2अब निगरानों
का फ़र्ज़ यह है कि उन पर पूरा एतमाद किया जा
सके। 3मुझे इस बात की ज़्यादा फ़िकर नहीं कि
आप या कोई दुनियावी अदालत मेरा एहतसाब
करे, बल्कि मैं ख़ुद भी अपना एहतसाब नहीं
करता। 4मुझे किसी ग़लती का इल्म नहीं है
अगरचे यह बात मुझे रास्तबाज़ क़रार देने के
लिए काफ़ी नहीं है। ख़ुदावंद ख़ुद मेरा एहतसाब
करता है। 5इसलिए वक़्त से पहले किसी बात
का फ़ैसला न करें। उस वक़्त तक इंतज़ार करें
जब तक ख़ुदावंद न आए। क्योंकि वही तारीकी
में छुपी हुई चीज़ों को रौशनी में लाएगा और
दिलों की मनसूबाबंदियों को ज़ाहिर कर देगा। उस
वक़्त अल्लाह ख़ुद हर फ़रद की मुनासिब तारीफ़
करेगा।

कुरिंथियों की शेख़ीबाज़ी

6भाइयो, मैंने इन बातों का इतलाक़ अपने
और अपुल्लोस पर किया ताकि आप हम पर ग़ौर
करते हुए अल्लाह के कलाम की हुदूद जान लें
जिनसे तजावुज़ करना मुनासिब नहीं। फिर आप
फूलकर एक शख़्स की हिमायत करके दूसरे की
मुख़ालफ़त नहीं करेंगे। 7क्योंकि कौन आपको
किसी दूसरे से अफ़ज़ल क़रार देता है? जो
कुछ आपके पास है क्या वह आपको मुफ़्त नहीं
मिला? और अगर मुफ़्त मिला तो इस पर शेख़ी

क्यों मारते हैं गोया कि आपने उसे अपनी मेहनत
से हासिल किया हो?
8वाह जी वाह! आप सेर हो चुके हैं। आप
अमीर बन चुके हैं। आप हमारे बग़ैर बादशाह बन
चुके हैं। काश आप बादशाह बन चुके होते ताकि
हम भी आपके साथ हुकूमत करते! 9इसके
बजाए मुझे लगता है कि अल्लाह ने हमारे लिए जो
उसके रसूल हैं रोमी तमाशागाह में सबसे निचला
दर्जा मुक़र्रर किया है, जो उन लोगों के लिए
मख़सूस होता है जिन्हें सज़ाए-मौत का फ़ैसला
सुनाया गया हो। हाँ, हम दुनिया, फ़रिश्तों और
इनसानों के सामने तमाशा बन गए हैं। 10हम
तो मसीह की ख़ातिर बेवुक़ूफ़ बन गए हैं जबकि
आप मसीह में समझदार ख़याल किए जाते हैं।
हम कमज़ोर हैं जबकि आप ताक़तवर। आपकी
इज़्ज़त की जाती है जबकि हमारी बेइज़्ज़ती।
11अब तक हमें भूक और प्यास सताती है। हम
चीथड़ों में मलबूस गोया नंगे फिरते हैं। हमें मुक्के
मारे जाते हैं। हमारी कोई मुस्तक़िल रिहाइशगाह
नहीं। 12और बड़ी मशक़्क़त से हम अपने हाथों
से रोज़ी कमाते हैं। लान-तान करनेवालों को हम
बरकत देते हैं, ईज़ा देनेवालों को बरदाश्त करते
हैं। 13जो हमें बुरा-भला कहते हैं उन्हें हम दुआ
देते हैं। अब तक हम दुनिया का कूड़ा-करकट और
ग़िलाज़त बने फिरते हैं।

पौलुस कुरिंथियों का रूहानी बाप है

14मैं आपको शरमिंदा करने के लिए यह नहीं
लिख रहा, बल्कि अपने प्यारे बच्चे जानकर
समझाने की ग़रज़ से। 15बेशक मसीह ईसा में
आपके उस्ताद तो बेशुमार हैं, लेकिन बाप कम
हैं। क्योंकि मसीह ईसा में मैं ही आपको अल्लाह
की ख़ुशख़बरी सुनाकर आपका बाप बना। 16अब
मैं ताकीद करता हूँ कि आप मेरे नमूने पर चलें।
17इसलिए मैंने तीमुथियुस को आपके पास भेज
दिया जो ख़ुदावंद में मेरा प्यारा और वफ़ादार बेटा
है। वह आपको मसीह ईसा में मेरी उन हिदायात
की याद दिलाएगा जो मैं हर जगह और ईमानदारों
की हर जमात में देता हूँ।
18आपमें से बाज़ यों फूल गए हैं जैसे मैं अब
आपके पास कभी नहीं आऊँगा। 19लेकिन अगर
ख़ुदावंद की मरज़ी हुई तो जल्द आकर मालूम
करूँगा कि क्या यह फूले हुए लोग सिर्फ़ बातें कर
रहे हैं या कि अल्लाह की क़ुदरत उनमें काम कर
रही है। 20क्योंकि अल्लाह की बादशाही ख़ाली
बातों से ज़ाहिर नहीं होती बल्कि अल्लाह की
क़ुदरत से। 21क्या आप चाहते हैं कि मैं छड़ी
लेकर आपके पास आऊँ या प्यार और हलीमी
की रूह में?

ज़िनाकारी

5 यह बात हमारे कानों तक पहुँची है कि
आपके दरमियान ज़िनाकारी हो रही है,
बल्कि ऐसी ज़िनाकारी जिसे ग़ैरयहूदी भी रवा
नहीं समझते। कहते हैं कि आपमें से किसी ने
अपनी सौतेली माँ[a] से शादी कर रखी है। 2कमाल
है कि आप इस फ़ेल पर नादिम नहीं बल्कि फूले
फिर रहे हैं! क्या मुनासिब न होता कि आप दुख
महसूस करके इस बदी के मुरतकिब को अपने
दरमियान से ख़ारिज कर देते? 3गो मैं जिस्म
के लिहाज़ से आपके पास नहीं, लेकिन रूह के
लिहाज़ से ज़रूर हूँ। और मैं उस शख़्स पर फ़तवा
इस तरह दे चुका हूँ जैसे कि मैं आपके दरमियान
मौजूद हूँ। 4जब आप हमारे ख़ुदावंद ईसा के नाम
में जमा होंगे तो मैं रूह में आपके साथ हूँगा और
हमारे ख़ुदावंद ईसा की क़ुदरत भी। 5उस वक़्त
ऐसे शख़्स को इबलीस के हवाले करें ताकि सिर्फ़
उसका जिस्म हलाक हो जाए, लेकिन उस की
रूह ख़ुदावंद के दिन रिहाई पाए।
6आपका फ़ख़र करना अच्छा नहीं। क्या
आपको मालूम नहीं कि जब हम थोड़ा-सा ख़मीर
ताज़ा गुँधे हुए आटे में मिलाते हैं तो वह सारे

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : बाप की बीवी, लेकिन ग़ालिबन इससे
मुराद सौतेली माँ है।

आटे को ख़मीर कर देता है? 7अपने आपको
ख़मीर से पाक-साफ़ करके ताज़ा गुँधा हुआ आटा
बन जाएँ। दर-हक़ीक़त आप हैं भी पाक, क्योंकि
हमारा ईदे-फ़सह का लेला मसीह हमारे लिए
ज़बह हो चुका है। 8इसलिए आइए हम पुराने
ख़मीरी आटे यानी बुराई और बदी को दूर करके
ताज़ा गुँधे हुए आटे यानी ख़ुलूस और सच्चाई की
रोटियाँ बनाकर फ़सह की ईद मनाएँ।

9मैंने ख़त में लिखा था कि आप ज़िनाकारों
से ताल्लुक़ न रखें। 10मेरा मतलब यह नहीं था
कि आप इस दुनिया के ज़िनाकारों से ताल्लुक़
मुंक़ते कर लें या इस दुनिया के लालचियों, लुटेरों
और बुतपरस्तों से। अगर आप ऐसा करते तो
लाज़िम होता कि आप दुनिया ही से कूच कर
जाते। 11नहीं, मेरा मतलब यह था कि आप ऐसे
शख़्स से ताल्लुक़ न रखें जो मसीह में तो भाई
कहलाता है मगर है वह ज़िनाकार या लालची या
बुतपरस्त या गाली-गलोच करनेवाला या शराबी
या लुटेरा। ऐसे शख़्स के साथ खाना तक भी न
खाएँ।

12मैं उन लोगों की अदालत क्यों करता फिरूँ
जो ईमानदारों की जमात से बाहर हैं? क्या
आप ख़ुद भी सिर्फ़ उनकी अदालत नहीं करते जो
जमात के अंदर हैं? 13बाहरवालों की अदालत
तो ख़ुदा ही करेगा। कलामे-मुक़द्दस में यों लिखा
है, 'शरीर को अपने दरमियान से निकाल दो।'

मुक़दमाबाज़ी

6 आपमें यह जुर्रत कैसे पैदा हुई कि जब
किसी का किसी दूसरे ईमानदार के साथ
तनाज़ा हो तो वह अपना झगड़ा बेदीनों के सामने
ले जाता है न कि मुक़द्दसों के सामने? 2क्या आप
नहीं जानते कि मुक़द्दसीन दुनिया की अदालत
करेंगे? और अगर आप दुनिया की अदालत करेंगे
तो क्या आप इस क़ाबिल नहीं कि छोटे मोटे
झगड़ों का फ़ैसला कर सकें? 3क्या आपको
मालूम नहीं कि हम फ़रिश्तों की अदालत करेंगे?
तो फिर क्या हम रोज़मर्रा के मामलात को नहीं
निपटा सकते? 4और इस क़िस्म के मामलात
को फ़ैसल करने के लिए आप ऐसे लोगों को
क्यों मुक़र्रर करते हैं जो जमात की निगाह में कोई
हैसियत नहीं रखते? 5यह बात मैं आपको शर्म
दिलाने के लिए कहता हूँ। क्या आपमें एक भी
सयाना शख़्स नहीं जो अपने भाइयों के माबैन
फ़ैसला करने के क़ाबिल हो? 6लेकिन नहीं। भाई
अपने ही भाई पर मुक़दमा चलाता है और वह भी
ग़ैरईमानदारों के सामने।

7अव्वल तो आपसे यह ग़लती हुई कि आप एक
दूसरे से मुक़दमाबाज़ी करते हैं। अगर कोई आपसे
नाइनसाफ़ी कर रहा हो तो क्या बेहतर नहीं कि
आप उसे ऐसा करने दें? और अगर कोई आपको
ठग रहा हो तो क्या यह बेहतर नहीं कि आप उसे
ठगने दें? 8इसके बरअक्स आपका यह हाल है
कि आप ख़ुद ही नाइनसाफ़ी करते और ठगते
हैं और वह भी अपने भाइयों को। 9क्या आप
नहीं जानते कि नाइनसाफ़ अल्लाह की बादशाही
मीरास में नहीं पाएँगे? फ़रेब न खाएँ! हरामकार,
बुतपरस्त, ज़िनाकार, हमजिंसपरस्त, लौंडेबाज़,
10चोर, लालची, शराबी, बदज़बान, लुटेरे, यह
सब अल्लाह की बादशाही मीरास में नहीं पाएँगे।
11आपमें से कुछ ऐसे थे भी। लेकिन आपको
धोया गया, आपको मुक़द्दस किया गया, आपको
ख़ुदावंद ईसा मसीह के नाम और हमारे ख़ुदा के
रूह से रास्तबाज़ बनाया गया है।

जिस्म अल्लाह का घर है

12मेरे लिए सब कुछ जायज़ है, लेकिन सब
कुछ मुफ़ीद नहीं। मेरे लिए सब कुछ जायज़ तो है,
लेकिन मैं किसी भी चीज़ को इजाज़त नहीं दूँगा
कि मुझ पर हुकूमत करे। 13बेशक ख़ुराक पेट के
लिए और पेट ख़ुराक के लिए है, मगर अल्लाह
दोनों को नेस्त कर देगा। लेकिन हम इससे यह
नतीजा नहीं निकाल सकते कि जिस्म ज़िनाकारी
के लिए है। हरगिज़ नहीं! जिस्म ख़ुदावंद के लिए
है और ख़ुदावंद जिस्म के लिए। 14अल्लाह ने

अपनी क़ुदरत से ख़ुदावंद ईसा को ज़िंदा किया
और इसी तरह वह हमें भी ज़िंदा करेगा।
15क्या आप नहीं जानते कि आपके जिस्म
मसीह के आज़ा हैं? तो क्या मैं मसीह के आज़ा
को लेकर फ़ाहिशा के आज़ा बनाऊँ? हरगिज़
नहीं। 16क्या आपको मालूम नहीं कि जो फ़ाहिशा
से लिपट जाता है वह उसके साथ एक तन हो
जाता है? जैसे पाक नविश्तों में लिखा है, "वह
दोनों एक हो जाते हैं।" 17इसके बरअक्स जो
ख़ुदावंद से लिपट जाता है वह उसके साथ एक
रूह हो जाता है।
18ज़िनाकारी से भागें! इनसान से सरज़द
होनेवाला हर गुनाह उसके जिस्म से बाहर होता
है सिवाए ज़िना के। ज़िनाकार तो अपने ही जिस्म
का गुनाह करता है। 19क्या आप नहीं जानते कि
आपका बदन रूहुल-क़ुद्स का घर है जो आपके
अंदर सुकूनत करता है और जो आपको अल्लाह
की तरफ़ से मिला है? आप अपने मालिक नहीं
हैं 20क्योंकि आपको क़ीमत अदा करके ख़रीदा
गया है। अब अपने बदन से अल्लाह को जलाल
दें।

इज़्दिवाजी ज़िंदगी

7 अब मैं आपके सवालात का जवाब देता
हूँ। बेशक अच्छा है कि मर्द शादी न करे।
2लेकिन ज़िनाकारी से बचने की ख़ातिर हर
मर्द की अपनी बीवी और हर औरत का अपना
शौहर हो। 3शौहर अपनी बीवी का हक़ अदा करे
और इसी तरह बीवी अपने शौहर का। 4बीवी
अपने जिस्म पर इख़्तियार नहीं रखती बल्कि
उसका शौहर। इसी तरह शौहर भी अपने जिस्म
पर इख़्तियार नहीं रखता बल्कि उस की बीवी।
5चुनाँचे एक दूसरे से जुदा न हों सिवाए इसके
कि आप दोनों बाहमी रज़ामंदी से एक वक़्त
मुक़र्रर कर लें ताकि दुआ के लिए ज़्यादा फ़ुरसत
मिल सके। लेकिन इसके बाद आप दुबारा इकट्ठे
हो जाएँ ताकि इबलीस आपके बेज़ब्त नफ़्स से
फ़ायदा उठाकर आपको आज़माइश में न डाले।
6यह मैं हुक्म के तौर पर नहीं बल्कि आपके
हालात के पेशे-नज़र रिआयतन कह रहा हूँ। 7मैं
चाहता हूँ कि तमाम लोग मुझ जैसे ही हों। लेकिन
हर एक को अल्लाह की तरफ़ से अलग नेमत
मिली है, एक को यह नेमत, दूसरे को वह।

तलाक़ और ग़ैरईमानदार से शादी

8मैं ग़ैरशादीशुदा अफ़राद और बेवाओं से यह
कहता हूँ कि अच्छा हो अगर आप मेरी तरह
ग़ैरशादीशुदा रहें। 9लेकिन अगर आप अपने आप
पर क़ाबू न रख सकें तो शादी कर लें। क्योंकि
इससे पेशतर कि आपके शहवानी जज़बात
बेलगाम होने लगें बेहतर यह है कि आप शादी
कर लें।
10शादीशुदा जोड़ों को मैं नहीं बल्कि ख़ुदावंद
हुक्म देता है कि बीवी अपने शौहर से ताल्लुक़
मुंक़ते न करे। 11अगर वह ऐसा कर चुकी हो तो
दूसरी शादी न करे या अपने शौहर से सुलह कर
ले। इसी तरह शौहर भी अपनी बीवी को तलाक़
न दे।
12दीगर लोगों को ख़ुदावंद नहीं बल्कि मैं
नसीहत करता हूँ कि अगर किसी ईमानदार भाई
की बीवी ईमान नहीं लाई, लेकिन वह शौहर
के साथ रहने पर राज़ी हो तो फिर वह अपनी
बीवी को तलाक़ न दे। 13इसी तरह अगर किसी
ईमानदार ख़ातून का शौहर ईमान नहीं लाया,
लेकिन वह बीवी के साथ रहने पर रज़ामंद हो तो
वह अपने शौहर को तलाक़ न दे। 14क्योंकि जो
शौहर ईमान नहीं लाया उसे उस की ईमानदार
बीवी की मारिफ़त मुक़द्दस ठहराया गया है और
जो बीवी ईमान नहीं लाई उसे उसके ईमानदार
शौहर की मारिफ़त मुक़द्दस क़रार दिया गया
है। अगर ऐसा न होता तो आपके बच्चे नापाक
होते, मगर अब वह मुक़द्दस हैं। 15लेकिन अगर
ग़ैरईमानदार शौहर या बीवी अपना ताल्लुक़ मुंक़ते
कर ले तो उसे जाने दें। ऐसी सूरत में ईमानदार
भाई या बहन इस बंधन से आज़ाद हो गए। मगर
अल्लाह ने आपको सुलह-सलामती की ज़िंदगी

गुज़ारने के लिए बुलाया है। 16बहन, मुमकिन
है आप अपने ख़ाविंद की नजात का बाइस बन
जाएँ। या भाई, मुमकिन है आप अपनी बीवी की
नजात का बाइस बन जाएँ।

अल्लाह की तरफ़ से मुक़र्ररा राह पर रहें

17हर शख़्स उसी राह पर चले जो ख़ुदावंद ने
उसके लिए मुक़र्रर की और उस हालत में जिसमें
अल्लाह ने उसे बुलाया है। ईमानदारों की तमाम
जमातों के लिए मेरी यही हिदायत है। 18अगर
किसी को मख़तून हालत में बुलाया गया तो
वह नामख़तून होने की कोशिश न करे। अगर
किसी को नामख़तूनी की हालत में बुलाया गया
तो वह अपना ख़तना न करवाए। 19न ख़तना
कुछ चीज़ है और न ख़तने का न होना, बल्कि
अल्लाह के अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारना
ही सब कुछ है। 20हर शख़्स उसी हैसियत में रहे
जिसमें उसे बुलाया गया था। 21क्या आप ग़ुलाम
थे जब ख़ुदावंद ने आपको बुलाया? यह बात
आपको परेशान न करे। अलबत्ता अगर आपको
आज़ाद होने का मौक़ा मिले तो इससे ज़रूर
फ़ायदा उठाएँ। 22क्योंकि जो उस वक़्त ग़ुलाम
था जब ख़ुदावंद ने उसे बुलाया वह अब ख़ुदावंद
का आज़ाद किया हुआ है। इसी तरह जो आज़ाद
था जब उसे बुलाया गया वह अब मसीह का
ग़ुलाम है। 23आपको क़ीमत देकर ख़रीदा गया
है, इसलिए इनसान के ग़ुलाम न बनें। 24भाइयो,
हर शख़्स जिस हालत में बुलाया गया उसी में वह
अल्लाह के सामने क़ायम रहे।

ग़ैरशादीशुदा लोग

25कुँवारियों के बारे में मुझे ख़ुदावंद की तरफ़
से कोई ख़ास हुक्म नहीं मिला। तो भी मैं जिसे
अल्लाह ने अपनी रहमत से क़ाबिले-एतमाद
बनाया है आप पर अपनी राय का इज़हार करता
हूँ।

26मेरी दानिस्त में मौजूदा मुसीबत के पेशे-
नज़र इनसान के लिए अच्छा है कि ग़ैरशादीशुदा
रहे। 27अगर आप किसी ख़ातून के साथ शादी के
बंधन में बँध चुके हैं तो फिर इस बंधन को तोड़ने
की कोशिश न करें। लेकिन अगर आप शादी के
बंधन में नहीं बँधे तो फिर इसके लिए कोशिश
न करें। 28ताहम अगर आपने शादी कर ही ली
है तो आपने गुनाह नहीं किया। इसी तरह अगर
कुँवारी शादी कर चुकी है तो यह गुनाह नहीं। मगर
ऐसे लोग जिस्मानी तौर पर मुसीबत में पड़ जाएंगे
जबकि मैं आपको इससे बचाना चाहता हूँ।

29भाइयो, मैं तो यह कहता हूँ कि वक़्त थोड़ा
है। आइंदा शादीशुदा ऐसे ज़िंदगी बसर करें जैसे
कि ग़ैरशादीशुदा हैं। 30रोनेवाले ऐसे हों जैसे नहीं
रो रहे। ख़ुशी मनानेवाले ऐसे हों जैसे ख़ुशी नहीं
मना रहे। ख़रीदनेवाले ऐसे हों जैसे उनके पास
कुछ भी नहीं। 31दुनिया से फ़ायदा उठानेवाले
ऐसे हों जैसे इसका कोई फ़ायदा नहीं। क्योंकि
इस दुनिया की मौजूदा शक्लो-सूरत ख़त्म होती
जा रही है।

32मैं तो चाहता हूँ कि आप फ़िकरों से आज़ाद
रहें। ग़ैरशादीशुदा शख़्स ख़ुदावंद के मामलों की
फ़िकर में रहता है कि किस तरह उसे ख़ुश करे।
33इसके बरअक्स शादीशुदा शख़्स दुनियावी
फ़िकर में रहता है कि किस तरह अपनी बीवी
को ख़ुश करे। 34यों वह बड़ी कशमकश में
मुब्तला रहता है। इसी तरह ग़ैरशादीशुदा ख़ातून
और कुँवारी ख़ुदावंद की फ़िकर में रहती है
कि वह जिस्मानी और रूहानी तौर पर उसके
लिए मख़सूसो-मुक़द्दस हो। इसके मुक़ाबले में
शादीशुदा ख़ातून दुनियावी फ़िकर में रहती है कि
अपने ख़ाविंद को किस तरह ख़ुश करे।

35मैं यह आप ही के फ़ायदे के लिए कहता
हूँ। मक़सद यह नहीं कि आप पर पाबंदियाँ लगाई
जाएँ बल्कि यह कि आप शराफ़त, साबितक़दमी
और यकसूई के साथ ख़ुदावंद की हुज़ूरी में चलें।

36अगर कोई समझता है, 'मैं अपनी कुँवारी
मंगेतर से शादी न करने से उसका हक़ मार रहा
हूँ' या यह कि 'मेरी उसके लिए ख़ाहिश हद से
ज़्यादा है, इसलिए शादी होनी चाहिए' तो फिर वह

अपने इरादे को पूरा करे, यह गुनाह नहीं। वह शादी कर ले। 37लेकिन इसके बरअक्स अगर उसने शादी न करने का पुख़्ता अज़म कर लिया है और वह मजबूर नहीं बल्कि अपने इरादे पर इख़्तियार रखता है और उसने अपने दिल में फ़ैसला कर लिया है कि अपनी कुँवारी लड़की को ऐसे ही रहने दे तो उसने अच्छा किया। 38ग़रज़ जिसने अपनी कुँवारी मंगेतर से शादी कर ली है उसने अच्छा किया है, लेकिन जिसने नहीं की उसने और भी अच्छा किया है।

39जब तक ख़ाविंद ज़िंदा है बीवी को उससे रिश्ता तोड़ने की इजाज़त नहीं। ख़ाविंद की वफ़ात के बाद वह आज़ाद है कि जिससे चाहे शादी कर ले, मगर सिर्फ़ ख़ुदावंद में। 40लेकिन मेरी दानिस्त में अगर वह ऐसे ही रहे तो ज़्यादा मुबारक होगी। और मैं समझता हूँ कि मुझमें भी अल्लाह का रूह है।

बुतों की क़ुरबानियाँ

8 अब मैं बुतों की क़ुरबानी के बारे में बात करता हूँ। हम जानते हैं कि हम सब साहबे-इल्म हैं। इल्म इनसान के फूलने का बाइस बनता है जबकि मुहब्बत उस की तामीर करती है। 2जो समझता है कि उसने कुछ जान लिया है उसने अब तक उस तरह नहीं जाना जिस तरह उसको जानना चाहिए। 3लेकिन जो अल्लाह से मुहब्बत रखता है उसे अल्लाह ने जान लिया है।

4बुतों की क़ुरबानी खाने के ज़िम्न में हम जानते हैं कि दुनिया में बुत कोई चीज़ नहीं और कि रब के सिवा कोई और ख़ुदा नहीं है। 5बेशक आसमानो-ज़मीन पर कई नाम-निहाद देवता होते हैं, हाँ दरअसल बहुतेरे देवताओं और ख़ुदावंदों की पूजा की जाती है। 6तो भी हम जानते हैं कि फ़क़त एक ही ख़ुदा है, हमारा बाप जिसने सब कुछ पैदा किया है और जिसके लिए हम ज़िंदगी गुज़ारते हैं। और एक ही ख़ुदावंद है यानी ईसा मसीह जिसके वसीले से सब कुछ वुजूद में आया है और जिससे हमें ज़िंदगी हासिल है।

7लेकिन हर किसी को इसका इल्म नहीं। बाज़ ईमानदार तो अब तक यह सोचने के आदी हैं कि बुत का वुजूद है। इसलिए जब वह किसी बुत की क़ुरबानी का गोश्त खाते हैं तो वह समझते हैं कि हम ऐसा करने से उस बुत की पूजा कर रहे हैं। यों उनका ज़मीर कमज़ोर होने की वजह से आलूदा हो जाता है। 8हक़ीक़त तो यह है कि हमारा अल्लाह को पसंद आना इस बात पर मबनी नहीं कि हम क्या खाते हैं और क्या नहीं खाते। न परहेज़ करने से हमें कोई नुक़सान पहुँचता है और न खा लेने से कोई फ़ायदा।

9लेकिन ख़बरदार रहें कि आपकी यह आज़ादी कमज़ोरों के लिए ठोकर का बाइस न बने। 10क्योंकि अगर कोई कमज़ोरज़मीर शख़्स आपको बुतख़ाने में खाना खाते हुए देखे तो क्या उसे उसके ज़मीर के ख़िलाफ़ बुतों की क़ुरबानियाँ खाने पर उभारा नहीं जाएगा? 11इस तरह आपका कमज़ोर भाई जिसकी ख़ातिर मसीह क़ुरबान हुआ आपके इल्मो-इरफ़ान की वजह से हलाक हो जाएगा। 12जब आप इस तरह अपने भाइयों का गुनाह करते और उनके कमज़ोर ज़मीर को मजरूह करते हैं तो आप मसीह का ही गुनाह करते हैं। 13इसलिए अगर ऐसा खाना मेरे भाई को सहीह राह से भटकाने का बाइस बने तो मैं कभी गोश्त नहीं खाऊँगा ताकि अपने भाई की गुमराही का बाइस न बनूँ।

रसूल का हक़

9 क्या मैं आज़ाद नहीं? क्या मैं मसीह का रसूल नहीं? क्या मैंने ईसा को नहीं देखा जो हमारा ख़ुदावंद है? क्या आप ख़ुदावंद में मेरी मेहनत का फल नहीं हैं? 2अगरचे मैं दूसरों के नज़दीक मसीह का रसूल नहीं, लेकिन आपके नज़दीक तो ज़रूर हूँ। ख़ुदावंद में आप ही मेरी रिसालत पर मुहर हैं।

3जो मेरी बाज़पुर्स करना चाहते हैं उन्हें मैं अपने दिफ़ा में कहता हूँ, 4क्या हमें खाने-पीने का हक़ नहीं? 5क्या हमें हक़ नहीं कि शादी करके अपनी

बीवी को साथ लिए फिरें? दूसरे रसूल और
ख़ुदावंद के भाई और कैफ़ा तो ऐसा ही करते हैं।
6क्या मुझे और बरनबास ही को अपनी ख़िदमत
के अज्र में कुछ पाने का हक़ नहीं? 7कौन-सा
फ़ौजी अपने ख़र्च पर जंग लड़ता है? कौन अंगूर
का बाग़ लगाकर उसके फल से अपना हिस्सा
नहीं पाता? या कौन रेवड़ की गल्लाबानी करके
उसके दूध से अपना हिस्सा नहीं पाता?

8क्या मैं यह फ़क़त इनसानी सोच के तहत
कह रहा हूँ? क्या शरीअत भी यही नहीं कहती?
9तौरेत में लिखा है, “जब तू फ़सल गाहने के लिए
उस पर बैल चलने देता है तो उसका मुँह बाँधकर
न रखना।” क्या अल्लाह सिर्फ़ बैलों की फ़िकर
करता है 10या वह हमारी ख़ातिर यह फ़रमाता है?
हाँ, ज़रूर हमारी ख़ातिर क्योंकि हल चलानेवाला
इस उम्मीद पर चलाता है कि उसे कुछ मिलेगा।
इसी तरह गाहनेवाला इस उम्मीद पर गाहता है कि
वह पैदावार में से अपना हिस्सा पाएगा। 11हमने
आपके लिए रूहानी बीज बोया है। तो क्या यह
नामुनासिब है अगर हम आपसे जिस्मानी फ़सल
काटें? 12अगर दूसरों को आपसे अपना हिस्सा
लेने का हक़ है तो क्या हमारा उनसे ज़्यादा हक़
नहीं बनता?

लेकिन हमने इस हक़ से फ़ायदा नहीं उठाया।
हम सब कुछ बरदाश्त करते हैं ताकि मसीह की
ख़ुशख़बरी के लिए किसी भी तरह से रुकावट का
बाइस न बनें। 13क्या आप नहीं जानते कि बैतुल-
मुक़द्दस में ख़िदमत करनेवालों की ज़रूरियात
बैतुल-मुक़द्दस ही से पूरी की जाती हैं? जो
क़ुरबानियाँ चढ़ाने के काम में मसरूफ़ रहते हैं
उन्हें क़ुरबानियों से ही हिस्सा मिलता है। 14इसी
तरह ख़ुदावंद ने मुक़र्रर किया है कि इंजील की
ख़ुशख़बरी की मुनादी करनेवालों की ज़रूरियात
उनसे पूरी की जाएँ जो इस ख़िदमत से फ़ायदा
उठाते हैं।

15लेकिन मैंने किसी तरह भी इससे फ़ायदा
नहीं उठाया, और न इसलिए लिखा है कि मेरे
साथ ऐसा सुलूक किया जाए। नहीं, इससे पहले
कि फ़ख़र करने का मेरा यह हक़ मुझसे छीन
लिया जाए बेहतर यह है कि मैं मर जाऊँ।
16लेकिन अल्लाह की ख़ुशख़बरी की मुनादी
करना मेरे लिए फ़ख़र का बाइस नहीं। मैं तो यह
करने पर मजबूर हूँ। मुझ पर अफ़सोस अगर इस
ख़ुशख़बरी की मुनादी न करूँ। 17अगर मैं यह
अपनी मरज़ी से करता तो फिर अज्र का मेरा हक़
बनता। लेकिन ऐसा नहीं है बल्कि ख़ुदा ही ने मुझे
यह ज़िम्मेदारी दी है। 18तो फिर मेरा अज्र क्या है?
यह कि मैं इंजील की ख़ुशख़बरी मुफ़्त सुनाऊँ और
अपने उस हक़ से फ़ायदा न उठाऊँ जो मुझे उस
की मुनादी करने से हासिल है।

19अगरचे मैं सब लोगों से आज़ाद हूँ फिर
भी मैंने अपने आपको सबका ग़ुलाम बना लिया
ताकि ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को जीत लूँ। 20मैं
यहूदियों के दरमियान यहूदी की मानिंद बना
ताकि यहूदियों को जीत लूँ। मूसवी शरीअत के
तहत ज़िंदगी गुज़ारनेवालों के दरमियान मैं उनकी
मानिंद बना ताकि उन्हें जीत लूँ, गो मैं शरीअत के
मातहत नहीं। 21मूसवी शरीअत के बग़ैर ज़िंदगी
गुज़ारनेवालों के दरमियान मैं उन्हीं की मानिंद बना
ताकि उन्हें जीत लूँ। इसका मतलब यह नहीं कि
मैं अल्लाह की शरीअत के ताबे नहीं हूँ। हक़ीक़त
में मैं मसीह की शरीअत के तहत ज़िंदगी गुज़ारता
हूँ। 22मैं कमज़ोरों के लिए कमज़ोर बना ताकि
उन्हें जीत लूँ। सबके लिए मैं सब कुछ बना ताकि
हर मुमकिन तरीक़े से बाज़ को बचा सकूँ। 23जो
कुछ भी करता हूँ अल्लाह की ख़ुशख़बरी के वास्ते
करता हूँ ताकि इसकी बरकात में शरीक हो जाऊँ।

24क्या आप नहीं जानते कि स्टेडियम में दौड़ते
तो सब ही हैं, लेकिन इनाम एक ही शख़्स हासिल
करता है? चुनाँचे ऐसे दौड़ें कि आप ही जीतें।
25खेलों में शरीक होनेवाला हर शख़्स अपने
आपको सख़्त नज़मो-ज़ब्त का पाबंद रखता है।
वह फ़ानी ताज पाने के लिए ऐसा करते हैं, लेकिन
हम ग़ैरफ़ानी ताज पाने के लिए। 26चुनाँचे मैं हर
वक़्त मनज़िले-मक़सूद को पेशे-नज़र रखते हुए
दौड़ता हूँ। और मैं इसी तरह बाक्सिंग भी करता

हूँ, मैं हवा में मुक्के नहीं मारता बल्कि निशाने को। 27मैं अपने बदन को मारता कूटता और इसे अपना ग़ुलाम बनाता हूँ, ऐसा न हो कि दूसरों में मुनादी करके ख़ुद नामक़बूल ठहरूँ।

इसराईल का इबरतनाक तजरबा

10 भाइयो, मैं नहीं चाहता कि आप इस बात से नावाक़िफ़ रहें कि हमारे बापदादा सब बादल के नीचे थे। वह सब समुंदर में से गुज़रे। 2उन सबने बादल और समुंदर में मूसा का बपतिस्मा लिया। 3सबने एक ही रूहानी ख़ुराक खाई 4और सबने एक ही रूहानी पानी पिया। क्योंकि मसीह रूहानी चट्टान की सूरत में उनके साथ साथ चलता रहा और वही उन सबको पानी पिलाता रहा। 5इसके बावुजूद उनमें से बेशतर लोग अल्लाह को पसंद न आए, इसलिए वह रेगिस्तान में हलाक हो गए।

6यह सब कुछ हमारी इबरत के लिए वाक़े हुआ ताकि हम उन लोगों की तरह बुरी चीज़ों की हवस न करें। 7उनमें से बाज़ की तरह बुतपरस्त न बनें, जैसे मुक़द्दस नविश्तों में लिखा है, "लोग खाने-पीने के लिए बैठ गए और फिर उठकर रंगरलियों में अपने दिल बहलाने लगे।" 8हम ज़िना भी न करें जैसे उनमें से बाज़ ने किया और नतीजे में एक ही दिन में 23,000 अफ़राद ढेर हो गए। 9हम ख़ुदावंद की आज़माइश भी न करें जिस तरह उनमें से बाज़ ने की और नतीजे में साँपों से हलाक हुए। 10और न बुड़बुड़ाएँ जिस तरह उनमें से बाज़ बुड़बुड़ाने लगे और नतीजे में हलाक करनेवाले फ़रिश्ते के हाथों मारे गए।

11यह माजरे इबरत की ख़ातिर उन पर वाक़े हुए और हम अख़ीर ज़माने में रहनेवालों की नसीहत के लिए लिखे गए।

12ग़रज़ जो समझता है कि वह मज़बूती से खड़ा है, ख़बरदार रहे कि गिर न पड़े। 13आप सिर्फ़ ऐसी आज़माइशों में पड़े हैं जो इनसान के लिए आम होती हैं। और अल्लाह वफ़ादार है। वह आपको आपकी ताक़त से ज़्यादा आज़माइश में नहीं पड़ने देगा। जब आप आज़माइश में पड़ जाएंगे तो वह उसमें से निकलने की राह भी पैदा कर देगा ताकि आप उसे बरदाश्त कर सकें।

अशाए-रब्बानी और बुतपरस्ती में तज़ाद

14ग़रज़ मेरे प्यारो, बुतपरस्ती से भागें। 15मैं आपको समझदार जानकर बात कर रहा हूँ। आप ख़ुद मेरी इस बात का फ़ैसला करें। 16जब हम अशाए-रब्बानी के मौक़े पर बरकत के प्याले को बरकत देकर उसमें से पीते हैं तो क्या हम यों मसीह के ख़ून में शरीक नहीं होते? और जब हम रोटी तोड़कर खाते हैं तो क्या मसीह के बदन में शरीक नहीं होते? 17रोटी तो एक ही है, इसलिए हम जो बहुत-से हैं एक ही बदन हैं, क्योंकि हम सब एक ही रोटी में शरीक होते हैं।

18बनी इसराईल पर ग़ौर करें। क्या बैतुल-मुक़द्दस में क़ुरबानियाँ खानेवाले क़ुरबानगाह की रिफ़ाक़त में शरीक नहीं होते? 19क्या मैं यह कहना चाहता हूँ कि बुतों के चढ़ावे की कोई हैसियत है? या कि बुत की कोई हैसियत है? हरगिज़ नहीं। 20मैं यह कहता हूँ कि जो क़ुरबानियाँ वह गुज़राँते हैं अल्लाह को नहीं बल्कि शयातीन को गुज़राँते हैं। और मैं नहीं चाहता कि आप शयातीन की रिफ़ाक़त में शरीक हों। 21आप ख़ुदावंद के प्याले और साथ ही शयातीन के प्याले से नहीं पी सकते। आप ख़ुदावंद के रिफ़ाक़ती खाने और साथ ही शयातीन के रिफ़ाक़ती खाने में शरीक नहीं हो सकते। 22या क्या हम अल्लाह की ग़ैरत को उकसाना चाहते हैं? क्या हम उससे ताक़तवर हैं?

दूसरों के ज़मीर का लिहाज़ करना

23सब कुछ रवा तो है, लेकिन सब कुछ मुफ़ीद नहीं। सब कुछ जायज़ तो है, लेकिन सब कुछ हमारी तामीरो-तरक़्क़ी का बाइस नहीं होता। 24हर कोई अपने ही फ़ायदे की तलाश में न रहे बल्कि दूसरे के।

25बाज़ार में जो कुछ बिकता है उसे खाएँ और
अपने ज़मीर को मुतमइन करने की ख़ातिर पूछ-
गछ न करें, 26क्योंकि “ज़मीन और जो कुछ उस
पर है रब का है।”

27अगर कोई ग़ैरईमानदार आपकी दावत करे
और आप उस दावत को क़बूल कर लें तो आपके
सामने जो कुछ भी रखा जाए उसे खाएँ। अपने
ज़मीर के इतमीनान के लिए तफ़तीश न करें।
28लेकिन अगर कोई आपको बता दे, “यह बुतों
का चढ़ावा है” तो फिर उस शख़्स की ख़ातिर
जिसने आपको आगाह किया है और ज़मीर की
ख़ातिर उसे न खाएँ। 29मतलब है अपने ज़मीर की
ख़ातिर नहीं बल्कि दूसरे के ज़मीर की ख़ातिर।
क्योंकि यह किस तरह हो सकता है कि किसी
दूसरे का ज़मीर मेरी आज़ादी के बारे में फ़ैसला
करे? 30अगर मैं ख़ुदा का शुक्र करके किसी खाने
में शरीक होता हूँ तो फिर मुझे क्यों बुरा कहा
जाए? मैं तो उसे ख़ुदा का शुक्र करके खाता हूँ।

31चुनाँचे सब कुछ अल्लाह के जलाल की
ख़ातिर करें, ख़ाह आप खाएँ, पिएँ या और कुछ
करें। 32किसी के लिए ठोकर का बाइस न बनें,
न यहूदियों के लिए, न यूनानियों के लिए और
न अल्लाह की जमात के लिए। 33इसी तरह मैं
भी सबको पसंद आने की हर मुमकिन कोशिश
करता हूँ। मैं अपने ही फ़ायदे के ख़याल में नहीं
रहता बल्कि दूसरों के ताकि बहुतेरे नजात पाएँ।

11 मेरे नमूने पर चलें जिस तरह मैं मसीह
के नमूने पर चलता हूँ।

इबादत में ख़वातीन का किरदार

2शाबाश कि आप हर तरह से मुझे याद रखते
हैं। आपने रिवायात को यों महफ़ूज़ रखा है जिस
तरह मैंने उन्हें आपके सुपुर्द किया था। 3लेकिन मैं
आपको एक और बात से आगाह करना चाहता
हूँ। हर मर्द का सर मसीह है जबकि औरत का
सर मर्द और मसीह का सर अल्लाह है। 4अगर
कोई मर्द सर ढाँककर दुआ या नबुव्वत करे तो
वह अपने सर की बेइज़्ज़ती करता है। 5और अगर
कोई ख़ातून नंगे सर दुआ या नबुव्वत करे तो वह
अपने सर की बेइज़्ज़ती करती है, गोया वह सर
मुंडी है। 6जो औरत अपने सर पर दोपट्टा नहीं लेती
वह टिंड करवाए। लेकिन अगर टिंड करवाना या
सर मुँडवाना उसके लिए बेइज़्ज़ती का बाइस है
तो फिर वह अपने सर को ज़रूर ढाँके। 7लेकिन
मर्द के लिए लाज़िम है कि वह अपने सर को न
ढाँके क्योंकि वह अल्लाह की सूरत और जलाल
को मुनअकिस करता है। लेकिन औरत मर्द का
जलाल मुनअकिस करती है, 8क्योंकि पहला
मर्द औरत से नहीं निकला बल्कि औरत मर्द से
निकली है। 9मर्द को औरत के लिए ख़लक़ नहीं
किया गया बल्कि औरत को मर्द के लिए। 10इस
वजह से औरत फ़रिश्तों को पेशे-नज़र रखकर
अपने सर पर दोपट्टा ले जो उस पर इख़्तियार का
निशान है। 11लेकिन याद रहे कि ख़ुदावंद में न
औरत मर्द के बग़ैर कुछ है और न मर्द औरत के
बग़ैर। 12क्योंकि अगरचे इब्तिदा में औरत मर्द से
निकली, लेकिन अब मर्द औरत ही से पैदा होता
है। और हर शै अल्लाह से निकलती है।

13आप ख़ुद फ़ैसला करें। क्या मुनासिब है कि
कोई औरत अल्लाह के सामने नंगे सर दुआ करे?
14क्या फ़ितरत भी यह नहीं सिखाती कि लंबे
बाल मर्द की बेइज़्ज़ती का बाइस हैं 15जबकि
औरत के लंबे बाल उस की इज़्ज़त का मूजिब
हैं? क्योंकि बाल उसे ढाँपने के लिए दिए गए हैं।
16लेकिन इस सिलसिले में अगर कोई झगड़ने
का शौक़ रखे तो जान ले कि न हमारा यह दस्तूर
है, न अल्लाह की जमातों का।

अशाए-रब्बानी

17मैं आपको एक और हिदायत देता हूँ।
लेकिन इस सिलसिले में मेरे पास आपके लिए
तारीफ़ी अलफ़ाज़ नहीं, क्योंकि आपका जमा
होना आपकी बेहतरी का बाइस नहीं होता बल्कि
नुक़सान का बाइस। 18अव्वल तो मैं सुनता हूँ
कि जब आप जमात की सूरत में इकट्ठे होते हैं
तो आपके दरमियान पार्टीबाज़ी नज़र आती है।

और किसी हद तक मुझे इसका यक़ीन भी है।
19लाज़िम है कि आपके दरमियान मुख़्तलिफ़
पार्टियाँ नज़र आएँ ताकि आपमें से वह ज़ाहिर
हो जाएँ जो आज़माने के बाद भी सच्चे निकलें।
20जब आप जमा होते हैं तो जो खाना आप खाते
हैं उसका अशाए-रब्बानी से कोई ताल्लुक़ नहीं
रहा। 21क्योंकि हर शख़्स दूसरों का इंतज़ार किए
बग़ैर अपना खाना खाने लगता है। नतीजे में एक
भूका रहता है जबकि दूसरे को नशा हो जाता है।
22ताज्जुब है! क्या खाने-पीने के लिए आपके
घर नहीं? या क्या आप अल्लाह की जमात को
हक़ीर जानकर उनको जो ख़ाली हाथ आए हैं
शरमिंदा करना चाहते हैं? मैं क्या कहूँ? क्या
आपको शाबाश दूँ? इसमें मैं आपको शाबाश
नहीं दे सकता।

23क्योंकि जो कुछ मैंने आपके सुपुर्द किया
है वह मुझे ख़ुदावंद ही से मिला है। जिस रात
ख़ुदावंद ईसा को दुश्मन के हवाले कर दिया गया
उसने रोटी लेकर 24शुक्रगुज़ारी की दुआ की और
उसे टुकड़े करके कहा, "यह मेरा बदन है जो
तुम्हारे लिए दिया जाता है। मुझे याद करने के
लिए यही किया करो।" 25इसी तरह उसने खाने
के बाद प्याला लेकर कहा, "मै का यह प्याला
वह नया अहद है जो मेरे ख़ून के ज़रीए क़ायम
किया जाता है। जब कभी इसे पियो तो मुझे याद
करने के लिए पियो।" 26क्योंकि जब भी आप
यह रोटी खाते और यह प्याला पीते हैं तो ख़ुदावंद
की मौत का एलान करते हैं, जब तक वह वापस
न आए।

27चुनाँचे जो नालायक़ तौर पर ख़ुदावंद की
रोटी खाए और उसका प्याला पिए वह ख़ुदावंद के
बदन और ख़ून का गुनाह करता है और क़ुसूरवार
ठहरेगा। 28हर शख़्स अपने आपको परखकर ही
इस रोटी में से खाए और प्याले में से पिए। 29जो
रोटी खाते और प्याला पीते वक़्त ख़ुदावंद के
बदन का एहतराम नहीं करता वह अपने आप
पर अल्लाह की अदालत लाता है। 30इसी लिए
आपके दरमियान बहुतेरे कमज़ोर और बीमार हैं
बल्कि बहुत-से मौत की नींद सो चुके हैं। 31अगर
हम अपने आपको जाँचते तो अल्लाह की अदालत
से बचे रहते। 32लेकिन ख़ुदावंद हमारी अदालत
करने से हमारी तरबियत करता है ताकि हम
दुनिया के साथ मुजरिम न ठहरें।

33ग़रज़ मेरे भाइयो, जब आप खाने के लिए
जमा होते हैं तो एक दूसरे का इंतज़ार करें।
34अगर किसी को भूक लगी हो तो वह अपने
घर में ही खाना खा ले ताकि आपका जमा
होना आपकी अदालत का बाइस न ठहरे। दीगर
हिदायात मैं आपको उस वक़्त दूँगा जब आपके
पास आऊँगा।

एक रूह और मुख़्तलिफ़ नेमतें

12 भाइयो, मैं नहीं चाहता कि आप
रूहानी नेमतों के बारे में नावाक़िफ़
रहें। 2आप जानते हैं कि ईमान लाने से पेशतर
आपको बार बार बहकाया और गूँगे बुतों की
तरफ़ खींचा जाता था। 3इसी के पेशे-नज़र मैं
आपको आगाह करता हूँ कि अल्लाह के रूह की
हिदायत से बोलनेवाला कभी नहीं कहेगा, "ईसा
पर लानत।" और रूहुल-क़ुद्स की हिदायत से
बोलनेवाले के सिवा कोई नहीं कहेगा, "ईसा
ख़ुदावंद है।"

4गो तरह तरह की नेमतें होती हैं, लेकिन
रूह एक ही है। 5तरह तरह की ख़िदमतें होती
हैं, लेकिन ख़ुदावंद एक ही है। 6अल्लाह अपनी
क़ुदरत का इज़हार मुख़्तलिफ़ अंदाज़ से करता
है, लेकिन ख़ुदा एक ही है जो सबमें हर तरह का
काम करता है। 7हममें से हर एक में रूहुल-क़ुद्स
का इज़हार किसी नेमत से होता है। यह नेमतें
इसलिए दी जाती हैं ताकि हम एक दूसरे की मदद
करें। 8एक को रूहुल-क़ुद्स हिकमत का कलाम
अता करता है, दूसरे को वही रूह इल्मो-इरफ़ान
का कलाम। 9तीसरे को वही रूह पुख़्ता ईमान देता
है और चौथे को वही एक रूह शफ़ा देने की नेमतें।
10वह एक को मोजिज़े करने की ताक़त देता है,
दूसरे को नबुव्वत करने की सलाहियत और तीसरे

को मुख़्तलिफ़ रूहों में इम्तियाज़ करने की नेमत।
एक को उससे ग़ैरज़बानें बोलने की नेमत मिलती
है और दूसरे को इनका तरजुमा करने की। 11वही
एक रूह यह तमाम नेमतें तक़सीम करता है। और
वही फ़ैसला करता है कि किस को क्या नेमत
मिलनी है।

एक जिस्म और मुख़्तलिफ़ आज़ा

12इनसानी जिस्म के बहुत-से आज़ा होते हैं,
लेकिन यह तमाम आज़ा एक ही बदन को तश्कील
देते हैं। मसीह का बदन भी ऐसा है। 13ख़ाह
हम यहूदी थे या यूनानी, ग़ुलाम थे या आज़ाद,
बपतिस्मे से हम सबको एक ही रूह की मारिफ़त
एक ही बदन में शामिल किया गया है, हम सबको
एक ही रूह पिलाया गया है।

14बदन के बहुत-से हिस्से होते हैं, न सिर्फ़
एक। 15फ़र्ज़ करें कि पाँव कहे, "मैं हाथ नहीं हूँ
इसलिए बदन का हिस्सा नहीं।" क्या यह कहने
पर उसका बदन से ताल्लुक़ ख़त्म हो जाएगा?
16या फ़र्ज़ करें कि कान कहे, "मैं आँख नहीं हूँ
इसलिए बदन का हिस्सा नहीं।" क्या यह कहने
पर उसका बदन से नाता टूट जाएगा? 17अगर
पूरा जिस्म आँख ही होता तो फिर सुनने की
सलाहियत कहाँ होती? अगर सारा बदन कान ही
होता तो फिर सूँघने का क्या बनता? 18लेकिन
अल्लाह ने जिस्म के मुख़्तलिफ़ आज़ा बनाकर हर
एक को वहाँ लगाया जहाँ वह चाहता था। 19अगर
एक ही अज़ु पूरा जिस्म होता तो फिर यह किस
क़िस्म का जिस्म होता? 20नहीं, बहुत-से आज़ा
होते हैं, लेकिन जिस्म एक ही है।

21आँख हाथ से नहीं कह सकती, "मुझे तेरी
ज़रूरत नहीं," न सर पाँवों से कह सकता है,
"मुझे तुम्हारी ज़रूरत नहीं।" 22बल्कि अगर देखा
जाए तो अकसर ऐसा होता है कि जिस्म के जो
आज़ा ज़्यादा कमज़ोर लगते हैं उनकी ज़्यादा
ज़रूरत होती है। 23वह आज़ा जिन्हें हम कम
इज़्ज़त के लायक़ समझते हैं उन्हें हम ज़्यादा
इज़्ज़त के साथ ढाँप लेते हैं, और वह आज़ा
जिन्हें हम शर्म से छुपाकर रखते हैं उन्हीं का
हम ज़्यादा एहतराम करते हैं। 24इसके बरअक्स
हमारे इज़्ज़तदार आज़ा को इसकी ज़रूरत ही नहीं
होती कि हम उनका ख़ास एहतराम करें। लेकिन
अल्लाह ने जिस्म को इस तरह तरतीब दिया
कि उसने कमक़दर आज़ा को ज़्यादा इज़्ज़तदार
ठहराया, 25ताकि जिस्म के आज़ा में तफ़रक़ा न
हो बल्कि वह एक दूसरे की फ़िकर करें। 26अगर
एक अज़ु दुख में हो तो उसके साथ दीगर तमाम
आज़ा भी दुख महसूस करते हैं। अगर एक अज़ु
सरफ़राज़ हो जाए तो उसके साथ बाक़ी तमाम
आज़ा भी मसरूर होते हैं।

27आप सब मिलकर मसीह का बदन हैं और
इनफ़िरादी तौर पर उसके मुख़्तलिफ़ आज़ा।
28और अल्लाह ने अपनी जमात में पहले रसूल,
दूसरे नबी और तीसरे उस्ताद मुक़र्रर किए हैं। फिर
उसने ऐसे लोग भी मुक़र्रर किए हैं जो मोजिज़े
करते, शफ़ा देते, दूसरों की मदद करते, इंतज़ाम
चलाते और मुख़्तलिफ़ क़िस्म की ग़ैरज़बानें बोलते
हैं। 29क्या सब रसूल हैं? क्या सब नबी हैं?
क्या सब उस्ताद हैं? क्या सब मोजिज़े करते हैं?
30क्या सबको शफ़ा देने की नेमतें हासिल हैं?
क्या सब ग़ैरज़बानें बोलते हैं? क्या सब इनका
तरजुमा करते हैं? 31लेकिन आप उन नेमतों की
तलाश में रहें जो अफ़ज़ल हैं।

अब मैं आपको इससे कहीं उम्दा राह बताता
हूँ।

मुहब्बत

13 अगर मैं इनसानों और फ़रिश्तों की
ज़बानें बोलूँ, लेकिन मुहब्बत न रखूँ
तो फिर मैं बस गूँजता हुआ घड़ियाल या
ठनठनाती हुई झाँझ ही हूँ। 2अगर मेरी नबुव्वत
की नेमत हो और मुझे तमाम भेदों और हर इल्म
से वाक़िफ़ियत हो, साथ ही मेरा ऐसा ईमान हो
कि पहाड़ों को खिसका सकूँ, लेकिन मेरा दिल
मुहब्बत से ख़ाली हो तो मैं कुछ भी नहीं। 3अगर
मैं अपना सारा माल ग़रीबों में तक़सीम कर दूँ

बल्कि अपना बदन जलाए जाने के लिए दे दूँ,
लेकिन मेरा दिल मुहब्बत से ख़ाली हो तो मुझे
कुछ फ़ायदा नहीं।

4मुहब्बत सब्र से काम लेती है, मुहब्बत
मेहरबान है। न यह हसद करती है न डींगें मारती
है। यह फूलती भी नहीं। 5मुहब्बत बदतमीज़ी
नहीं करती न अपने ही फ़ायदे की तलाश में
रहती है। यह जल्दी से ग़ुस्से में नहीं आ जाती
और दूसरों की ग़लतियों का रिकार्ड नहीं रखती।
6यह नाइनसाफ़ी देखकर ख़ुश नहीं होती बल्कि
सच्चाई के ग़ालिब आने पर ही ख़ुशी मनाती है।
7यह हमेशा दूसरों की कमज़ोरियाँ बरदाश्त करती
है, हमेशा एतमाद करती है, हमेशा उम्मीद रखती
है, हमेशा साबितक़दम रहती है।

8मुहब्बत कभी ख़त्म नहीं होती। इसके
मुक़ाबले में नबुव्वतें ख़त्म हो जाएँगी, ग़ैरज़बानें
जाती रहेंगी, इल्म मिट जाएगा। 9क्योंकि इस
वक़्त हमारा इल्म नामुकम्मल है और हमारी
नबुव्वत सब कुछ ज़ाहिर नहीं करती। 10लेकिन
जब वह कुछ आएगा जो कामिल है तो यह अधूरी
चीज़ें जाती रहेंगी।

11जब मैं बच्चा था तो बच्चे की तरह बोलता,
बच्चे की-सी सोच रखता और बच्चे की-सी समझ
से काम लेता था। लेकिन अब मैं बालिग़ हूँ,
इसलिए मैंने बच्चे का-सा अंदाज़ छोड़ दिया है।
12इस वक़्त हमें आईने में धुँधला-सा दिखाई
देता है, लेकिन उस वक़्त हम रूबरू देखेंगे। अब
मैं जुज़वी तौर पर जानता हूँ, लेकिन उस वक़्त
कामिल तौर से जान लूँगा, ऐसे ही जैसे अल्लाह
ने मुझे पहले से जान लिया है।

13ग़रज़ ईमान, उम्मीद और मुहब्बत तीनों
क़ायम रहते हैं, लेकिन इनमें अफ़ज़ल मुहब्बत
है।

नबुव्वत और ग़ैरज़बानें

14 मुहब्बत का दामन थामे रखें।
लेकिन साथ ही रूहानी नेमतों
को सरगरमी से इस्तेमाल में लाएँ, ख़ु-
सूसन नबुव्वत की नेमत को। 2ग़ैरज़बान
बोलनेवाला लोगों से नहीं बल्कि अल्लाह से
बात करता है। कोई उस की बात नहीं समझता
क्योंकि वह रूह में भेद की बातें करता है।
3इसके बरअक्स नबुव्वत करनेवाला लोगों से
ऐसी बातें करता है जो उनकी तामीरो-तरक़्क़ी,
हौसलाअफ़्ज़ाई और तसल्ली का बाइस बनती
हैं। 4ग़ैरज़बान बोलनेवाला अपनी तामीरो-
तरक़्क़ी करता है जबकि नबुव्वत करनेवाला
जमात की।

5मैं चाहता हूँ कि आप सब ग़ैरज़बानें बोलें,
लेकिन इससे ज़्यादा यह ख़ाहिश रखता हूँ कि
आप नबुव्वत करें। नबुव्वत करनेवाला ग़ैरज़बानें
बोलनेवाले से अहम है। हाँ, ग़ैरज़बानें बोलनेवाला
भी अहम है बशर्तेकि अपनी ज़बान का तरजुमा
करे, क्योंकि इससे ख़ुदा की जमात की तामीरो-
तरक़्क़ी होती है।

6भाइयो, अगर मैं आपके पास आकर
ग़ैरज़बानें बोलूँ, लेकिन मुकाशफ़े, इल्म, नबुव्वत
और तालीम की कोई बात न करूँ तो आपको क्या
फ़ायदा होगा? 7बेजान साज़ों पर ग़ौर करने से भी
यही बात सामने आती है। अगर बाँसरी या सरोद
को किसी ख़ास सुर के मुताबिक़ न बजाया जाए
तो फिर सुननेवाले किस तरह पहचान सकेंगे कि
इन पर क्या क्या पेश किया जा रहा है? 8इसी
तरह अगर बिगुल की आवाज़ जंग के लिए तैयार
हो जाने के लिए साफ़ तौर से न बजे तो क्या
फ़ौजी कमरबस्ता हो जाएंगे? 9अगर आप साफ़
साफ़ बात न करें तो आपकी हालत भी ऐसी ही
होगी। फिर आपकी बात कौन समझेगा? क्योंकि
आप लोगों से नहीं बल्कि हवा से बातें करेंगे।
10इस दुनिया में बहुत ज़्यादा ज़बानें बोली जाती हैं
और इनमें से कोई भी नहीं जो बेमानी हो। 11अगर
मैं किसी ज़बान से वाक़िफ़ नहीं तो मैं उस ज़बान
में बोलनेवाले के नज़दीक अजनबी ठहरूँगा और
वह मेरे नज़दीक। 12यह उसूल आप पर भी लागू
होता है। चूँकि आप रूहानी नेमतों के लिए तड़पते
हैं तो फिर ख़ासकर उन नेमतों में माहिर बनने की

कोशिश करें जो ख़ुदा की जमात को तामीर करती
हैं।
13चुनाँचे ग़ैरज़बान बोलनेवाला दुआ करे कि
इसका तरजुमा भी कर सके। 14क्योंकि अगर
मैं ग़ैरज़बान में दुआ करूँ तो मेरी रूह तो दुआ
करती है मगर मेरी अक़्ल बेअमल रहती है। 15तो
फिर क्या करूँ? मैं रूह में दुआ करूँगा, लेकिन
अक़्ल को भी इस्तेमाल करूँगा। मैं रूह में हम्दो-
सना करूँगा, लेकिन अक़्ल को भी इस्तेमाल में
लाऊँगा। 16अगर आप सिर्फ़ रूह में हम्दो-सना
करें तो हाज़िरीन में से जो आपकी बात नहीं
समझता वह किस तरह आपकी शुक्रगुज़ारी पर
“आमीन” कह सकेगा? उसे तो आपकी बातों
की समझ ही नहीं आई। 17बेशक आप अच्छी
तरह ख़ुदा का शुक्र कर रहे होंगे, लेकिन इससे
दूसरे शख़्स की तामीरो-तरक़्क़ी नहीं होगी।
18मैं ख़ुदा का शुक्र करता हूँ कि आप सबकी
निसबत ज़्यादा ग़ैरज़बानों में बात करता हूँ।
19फिर भी मैं ख़ुदा की जमात में ऐसी बातें
पेश करना चाहता हूँ जो दूसरे समझ सकें और
जिनसे वह तरबियत हासिल कर सकें। क्योंकि
ग़ैरज़बानों में बोली गई बेशुमार बातों की निसबत
पाँच तरबियत देनेवाले अलफ़ाज़ कहीं बेहतर हैं।
20भाइयो, बच्चों जैसी सोच से बाज़ आएँ।
बुराई के लिहाज़ से तो ज़रूर बच्चे बने रहें,
लेकिन समझ में बालिग़ बन जाएँ। 21शरीअत
में लिखा है, “रब फ़रमाता है कि मैं ग़ैरज़बानों
और अजनबियों के होंटों की मारिफ़त इस क़ौम
से बात करूँगा। लेकिन वह फिर भी मेरी नहीं
सुनेंगे।” 22इससे ज़ाहिर होता है कि ग़ैरज़बानें
ईमानदारों के लिए इम्तियाज़ी निशान नहीं होतीं
बल्कि ग़ैरईमानदारों के लिए। इसके बरअक्स
नबुव्वत ग़ैरईमानदारों के लिए इम्तियाज़ी निशान
नहीं होती बल्कि ईमानदारों के लिए।
23अब फ़र्ज़ करें कि ईमानदार एक जगह जमा
हैं और तमाम हाज़िरीन ग़ैरज़बानें बोल रहे हैं।
इसी असना में ग़ैरज़बान को न समझनेवाले या
ग़ैरईमानदार आ शामिल होते हैं। आपको इस
हालत में देखकर क्या वह आपको दीवाना क़रार
नहीं देंगे? 24इसके मुक़ाबले में अगर तमाम लोग
नबुव्वत कर रहे हों और कोई ग़ैरईमानदार अंदर
आए तो क्या होगा? वह सब उसे क़ायल कर
लेंगे कि गुनाहगार है और सब उसे परख लेंगे।
25यों उसके दिल की पोशीदा बातें ज़ाहिर हो
जाएँगी, वह गिरकर अल्लाह को सिजदा करेगा
और तसलीम करेगा कि फ़िलहक़ीक़त अल्लाह
आपके दरमियान मौजूद है।

जमात में तरतीब की ज़रूरत

26भाइयो, फिर क्या होना चाहिए? जब आप
जमा होते हैं तो हर एक के पास कोई गीत या
तालीम या मुकाशफ़ा या ग़ैरज़बान या इसका
तरजुमा हो। इन सबका मक़सद ख़ुदा की जमात
की तामीरो-तरक़्क़ी हो। 27ग़ैरज़बान में बोलते
वक़्त सिर्फ़ दो या ज़्यादा से ज़्यादा तीन अशख़ास
बोलें और वह भी बारी बारी। साथ ही कोई
उनका तरजुमा भी करे। 28अगर कोई तरजुमा
करनेवाला न हो तो ग़ैरज़बान बोलनेवाला जमात
में ख़ामोश रहे, अलबत्ता उसे अपने आपसे और
अल्लाह से बात करने की आज़ादी है। 29नबियों
में से दो या तीन नबुव्वत करें और दूसरे उनकी
बातों की सेहत को परखें। 30अगर इस दौरान
किसी बैठे हुए शख़्स को कोई मुकाशफ़ा मिले
तो पहला शख़्स ख़ामोश हो जाए। 31क्योंकि
आप सब बारी बारी नबुव्वत कर सकते हैं ताकि
तमाम लोग सीखें और उनकी हौसलाअफ़्ज़ाई
हो। 32नबियों की रूहें नबियों के ताबे रहती हैं,
33क्योंकि अल्लाह बेतरतीबी का नहीं बल्कि
सलामती का ख़ुदा है।
जैसा मुक़द्दसीन की तमाम जमातों का दस्तूर
है 34ख़वातीन जमात में ख़ामोश रहें। उन्हें बोलने
की इजाज़त नहीं, बल्कि वह फ़रमाँबरदार रहें।
शरीअत भी यही फ़रमाती है। 35अगर वह कुछ
सीखना चाहें तो अपने घर पर अपने शौहर से पूछ
लें, क्योंकि औरत का ख़ुदा की जमात में बोलना
शर्म की बात है।

36क्या अल्लाह का कलाम आपमें से निकला
है, या क्या वह सिर्फ़ आप ही तक पहुँचा है?
37अगर कोई ख़याल करे कि मैं नबी हूँ या ख़ास
रूहानी हैसियत रखता हूँ तो वह जान ले कि जो
कुछ मैं आपको लिख रहा हूँ वह ख़ुदावंद का हुक्म
है। 38जो यह नज़रंदाज़ करता है उसे ख़ुद भी
नज़रंदाज़ किया जाएगा।

39ग़रज़ भाइयो, नबुव्वत करने के लिए तड़पते
रहें, अलबत्ता किसी को ग़ैरज़बानें बोलने से न
रोकें। 40लेकिन सब कुछ शायस्तगी और तरतीब
से अमल में आए।

मसीह का जी उठना

15 भाइयो, मैं आपकी तवज्जुह उस
ख़ुशख़बरी की तरफ़ दिलाता हूँ जो
मैंने आपको सुनाई, वही ख़ुशख़बरी जिसे आपने
क़बूल किया और जिस पर आप क़ायम भी हैं।
2इसी पैग़ाम के वसीले से आपको नजात मिलती
है। शर्त यह है कि आप वह बातें ज्यों की त्यों थामे
रखें जिस तरह मैंने आप तक पहुँचाई हैं। बेशक
यह बात इस पर मुनहसिर है कि आपका ईमान
लाना बेमक़सद नहीं था।

3क्योंकि मैंने इस पर ख़ास ज़ोर दिया कि
वही कुछ आपके सुपुर्द करूँ जो मुझे भी मिला
है। यह कि मसीह ने पाक नविश्तों के मुताबिक़
हमारे गुनाहों की ख़ातिर अपनी जान दी, 4फिर
वह दफ़न हुआ और तीसरे दिन पाक नविश्तों के
मुताबिक़ जी उठा। 5वह पतरस को दिखाई दिया,
फिर बारह शागिर्दों को। 6इसके बाद वह एक ही
वक़्त पाँच सौ से ज़्यादा भाइयों पर ज़ाहिर हुआ।
उनमें से बेशतर अब तक ज़िंदा हैं अगरचे चंद एक
इंतक़ाल कर चुके हैं। 7फिर याक़ूब ने उसे देखा,
फिर तमाम रसूलों ने।

8और सबके बाद वह मुझ पर भी ज़ाहिर हुआ,
मुझ पर जो गोया क़बल अज़ वक़्त पैदा हुआ।
9क्योंकि रसूलों में मेरा दर्जा सबसे छोटा है,
बल्कि मैं तो रसूल कहलाने के भी लायक़ नहीं,
इसलिए कि मैंने अल्लाह की जमात को ईज़ा
पहुँचाई। 10लेकिन मैं जो कुछ हूँ अल्लाह के
फ़ज़ल ही से हूँ। और जो फ़ज़ल उसने मुझ पर
किया वह बेअसर न रहा, क्योंकि मैंने उन सबसे
ज़्यादा जाँफ़िशानी से काम किया है। अलबत्ता
यह काम मैंने ख़ुद नहीं बल्कि अल्लाह के फ़ज़ल
ने किया है जो मेरे साथ था। 11ख़ैर, यह काम मैंने
किया या उन्होंने, हम सब उसी पैग़ाम की मुनादी
करते हैं जिस पर आप ईमान लाए हैं।

जी उठने पर एतराज़

12अब मुझे यह बताएँ, हम तो मुनादी करते
हैं कि मसीह मुरदों में से जी उठा है। तो फिर
आपमें से कुछ लोग कैसे कह सकते हैं कि मुरदे
जी नहीं उठते? 13अगर मुरदे जी नहीं उठते तो
मतलब यह हुआ कि मसीह भी नहीं जी उठा।
14और अगर मसीह जी नहीं उठा तो फिर हमारी
मुनादी अबस होती और आपका ईमान लाना भी
बेफ़ायदा होता। 15नीज़ हम अल्लाह के बारे में
झूटे गवाह साबित होते। क्योंकि हम गवाही देते
हैं कि अल्लाह ने मसीह को ज़िंदा किया जबकि
अगर वाक़ई मुरदे नहीं जी उठते तो वह भी ज़िंदा
नहीं हुआ। 16ग़रज़ अगर मुरदे जी नहीं उठते
तो फिर मसीह भी नहीं जी उठा। 17और अगर
मसीह नहीं जी उठा तो आपका ईमान बेफ़ायदा
है और आप अब तक अपने गुनाहों में गिरिफ़्तार
हैं। 18हाँ, इसके मुताबिक़ जिन्होंने मसीह में होते
हुए इंतक़ाल किया है वह सब हलाक हो गए हैं।
19चुनाँचे अगर मसीह पर हमारी उम्मीद सिर्फ़
इसी ज़िंदगी तक महदूद है तो हम इनसानों में
सबसे ज़्यादा क़ाबिले-रहम हैं।

मसीह वाक़ई जी उठा है

20लेकिन मसीह वाक़ई मुरदों में से जी उठा
है। वह इंतक़ाल किए हुओं की फ़सल का पहला
फल है। 21चूँकि इनसान के वसीले से मौत
आई, इसलिए इनसान ही के वसीले से मुरदों के
जी उठने की भी राह खुली। 22जिस तरह सब
इसलिए मरते हैं कि वह आदम के फ़रज़ंद हैं उसी

तरह सब ज़िंदा किए जाएंगे जो मसीह के हैं।
23लेकिन जी उठने की एक तरतीब है। मसीह तो
फ़सल के पहले फल की हैसियत से जी उठ चुका
है जबकि उसके लोग उस वक़्त जी उठेंगे जब वह
वापस आएगा। 24इसके बाद ख़ातमा होगा। तब
हर हुकूमत, इख़्तियार और क़ुव्वत को नेस्त करके
वह बादशाही को ख़ुदा बाप के हवाले कर देगा।
25क्योंकि लाज़िम है कि मसीह उस वक़्त तक
हुकूमत करे जब तक अल्लाह तमाम दुश्मनों को
उसके पाँवों के नीचे न कर दे। 26आख़िरी दुश्मन
जिसे नेस्त किया जाएगा मौत होगी। 27क्योंकि
अल्लाह के बारे में कलामे-मुक़द्दस में लिखा है,
"उसने सब कुछ उस (यानी मसीह) के पाँवों के
नीचे कर दिया।" जब कहा गया है कि सब कुछ
मसीह के मातहत कर दिया गया है, तो ज़ाहिर
है कि इसमें अल्लाह शामिल नहीं जिसने सब
कुछ मसीह के मातहत किया है। 28जब सब कुछ
मसीह के मातहत कर दिया गया तब फ़रज़ंद ख़ुद
भी उसी के मातहत हो जाएगा जिसने सब कुछ
उसके मातहत किया। यों अल्लाह सबमें सब कुछ
होगा।

जी उठने के पेशे-नज़र ज़िंदगी गुज़ारना

29अगर मुरदे वाक़ई जी नहीं उठते तो फिर वह
लोग क्या करेंगे जो मुरदों की ख़ातिर बपतिस्मा
लेते हैं? अगर मुरदे जी नहीं उठेंगे तो फिर वह
उनकी ख़ातिर क्यों बपतिस्मा लेते हैं? 30और
हम भी हर वक़्त अपनी जान ख़तरे में क्यों डाले
हुए हैं? 31भाइयो, मैं रोज़ाना मरता हूँ। यह बात
उतनी ही यक़ीनी है जितनी यह कि आप हमारे
ख़ुदावंद मसीह ईसा में मेरा फ़ख़र हैं। 32अगर मैं
सिर्फ़ इसी ज़िंदगी की उम्मीद रखते हुए इफ़िसुस
में वहशी दरिंदों से लड़ा तो मुझे क्या फ़ायदा
हुआ? अगर मुरदे जी नहीं उठते तो इस क़ौल
के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारना बेहतर होगा कि
"आओ, हम खाएँ-पिएँ, क्योंकि कल तो मर ही
जाना है।"
33फ़रेब न खाएँ, बुरी सोहबत अच्छी आदतों
को बिगाड़ देती है। 34पूरे तौर पर होश में आएँ
और गुनाह न करें। आपमें से बाज़ ऐसे हैं जो
अल्लाह के बारे में कुछ नहीं जानते। यह बात मैं
आपको शर्म दिलाने के लिए कहता हूँ।

मुरदे किस तरह जी उठेंगे

35शायद कोई सवाल उठाए, "मुरदे किस तरह
जी उठते हैं? और जी उठने के बाद उनका जिस्म
कैसा होगा?" 36भई, अक़्ल से काम लें। जो
बीज आप बोते हैं वह उस वक़्त तक नहीं उगता
जब तक कि मर न जाए। 37जो आप बोते हैं
वह वही पौदा नहीं है जो बाद में उगेगा बल्कि
महज़ एक नंगा-सा दाना है, ख़ाह गंदुम का हो
या किसी और चीज़ का। 38लेकिन अल्लाह उसे
ऐसा जिस्म देता है जैसा वह मुनासिब समझता
है। हर क़िस्म के बीज को वह उसका ख़ास जिस्म
अता करता है।
39तमाम जानदारों को एक जैसा जिस्म नहीं
मिला बल्कि इनसानों को और क़िस्म का,
मवेशियों को और क़िस्म का, परिंदों को और
क़िस्म का, और मछलियों को और क़िस्म का।
40इसके अलावा आसमानी जिस्म भी हैं और
ज़मीनी जिस्म भी। आसमानी जिस्मों की शान
और है और ज़मीनी जिस्मों की शान और।
41सूरज की शान और है, चाँद की शान और,
और सितारों की शान और, बल्कि एक सितारा
शान में दूसरे सितारे से फ़रक़ है।
42मुरदों का जी उठना भी ऐसा ही है। जिस्म
फ़ानी हालत में बोया जाता है और लाफ़ानी हालत
में जी उठता है। 43वह ज़लील हालत में बोया
जाता है और जलाली हालत में जी उठता है। वह
कमज़ोर हालत में बोया जाता है और क़वी हालत
में जी उठता है। 44फ़ितरती जिस्म बोया जाता है
और रूहानी जिस्म जी उठता है। जहाँ फ़ितरती
जिस्म है वहाँ रूहानी जिस्म भी होता है। 45पाक
नविश्तों में भी लिखा है कि पहले इनसान आदम
में जान आ गई। लेकिन आख़िरी आदम ज़िंदा

करनेवाली रूह बना। 46रूहानी जिस्म पहले नहीं था बल्कि फ़ितरती जिस्म, फिर रूहानी जिस्म हुआ। 47पहला इनसान ज़मीन की मिट्टी से बना था, लेकिन दूसरा आसमान से आया। 48जैसा पहला ख़ाकी इनसान था वैसे ही दीगर ख़ाकी इनसान भी हैं, और जैसा आसमान से आया हुआ इनसान है वैसे ही दीगर आसमानी इनसान भी हैं। 49यों हम इस वक़्त ख़ाकी इनसान की शक्लो-सूरत रखते हैं जबकि हम उस वक़्त आसमानी इनसान की शक्लो-सूरत रखेंगे।

मौत पर फ़तह

50भाइयो, मैं यह कहना चाहता हूँ कि ख़ाकी इनसान का मौजूदा जिस्म अल्लाह की बादशाही को मीरास में नहीं पा सकता। जो कुछ फ़ानी है वह लाफ़ानी चीज़ों को मीरास में नहीं पा सकता।

51देखो मैं आपको एक भेद बताता हूँ। हम सब वफ़ात नहीं पाएँगे, लेकिन सब ही बदल जाएंगे। 52और यह अचानक, आँख झपकते में, आख़िरी बिगुल बजते ही रूनुमा होगा। क्योंकि बिगुल बजने पर मुरदे लाफ़ानी हालत में जी उठेंगे और हम बदल जाएंगे। 53क्योंकि लाज़िम है कि यह फ़ानी जिस्म बक़ा का लिबास पहन ले और मरनेवाला जिस्म अबदी ज़िंदगी का। 54जब इस फ़ानी और मरनेवाले जिस्म ने बक़ा और अबदी ज़िंदगी का लिबास पहन लिया होगा तो फिर वह कलाम पूरा होगा जो पाक नविश्तों में लिखा है कि

“मौत इलाही फ़तह का लुक़्मा हो गई है।
55ऐ मौत, तेरी फ़तह कहाँ रही?
ऐ मौत, तेरा डंक कहाँ रहा?”

56मौत का डंक गुनाह है और गुनाह शरीअत से तक़वियत पाता है। 57लेकिन ख़ुदा का शुक्र है जो हमें हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के वसीले से फ़तह बख़्शता है।

58ग़रज़, मेरे प्यारे भाइयो, मज़बूत बने रहें। कोई चीज़ आपको डाँवाँडोल न कर दे। हमेशा ख़ुदावंद की ख़िदमत जाँफ़िशानी से करें, यह जानते हुए कि ख़ुदावंद के लिए आपकी मेहनत-मशक़्क़त रायगाँ नहीं जाएगी।

यरूशलम की जमात के लिए चंदा

16 रही चंदे की बात जो यरूशलम के मुक़द्दसीन के लिए जमा किया जा रहा है तो उसी हिदायत पर अमल करें जो मैं गलतिया की जमातों को दे चुका हूँ। 2हर इतवार को आपमें से हर कोई अपने कमाए हुए पैसों में से कुछ इस चंदे के लिए मख़सूस करके अपने पास रख छोड़े। फिर मेरे आने पर हदियाजात जमा करने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। 3जब मैं आऊँगा तो ऐसे अफ़राद को जो आपके नज़दीक क़ाबिले-एतमाद हैं ख़ुतूत देकर यरूशलम भेजूँगा ताकि वह आपका हदिया वहाँ तक पहुँचा दें। 4अगर मुनासिब हो कि मैं भी जाऊँ तो वह मेरे साथ जाएंगे।

5मैं मकिदुनिया से होकर आपके पास आऊँगा क्योंकि मकिदुनिया में से सफ़र करने का इरादा रखता हूँ। 6शायद आपके पास थोड़े अरसे के लिए ठहरूँ, लेकिन यह भी मुमकिन है कि सर्दियों का मौसम आप ही के साथ काटूँ ताकि मेरे बाद के सफ़र के लिए आप मेरी मदद कर सकें। 7मैं नहीं चाहता कि इस दफ़ा मुख़्तसर मुलाक़ात के बाद चलता बनूँ, बल्कि मेरी ख़ाहिश है कि कुछ वक़्त आपके साथ गुज़ारूँ। शर्त यह है कि ख़ुदावंद मुझे इजाज़त दे।

8लेकिन ईदे-पंतिकुस्त तक मैं इफ़िसुस में ही ठहरूँगा, 9क्योंकि यहाँ मेरे सामने मुअस्सिर काम के लिए एक बड़ा दरवाज़ा खुल गया है और साथ ही बहुत-से मुख़ालिफ़ भी पैदा हो गए हैं।

10अगर तीमुथियुस आए तो इसका ख़याल रखें कि वह बिलाख़ौफ़ आपके पास रह सके। मेरी तरह वह भी ख़ुदावंद के खेत में फ़सल काट रहा है। 11इसलिए कोई उसे हक़ीर न जाने। उसे सलामती से सफ़र पर रवाना करें ताकि वह मुझ तक पहुँचे, क्योंकि मैं और दीगर भाई उसके मुंतज़िर हैं।

12भाई अपुल्लोस की मैंने बड़ी हौसला-
अफ़ज़ाई की है कि वह दीगर भाइयों के साथ
आपके पास आए, लेकिन अल्लाह को क़तअन
मंज़ूर न था। ताहम मौक़ा मिलने पर वह ज़रूर
आएगा।

नसीहतें और सलाम

13जागते रहें, ईमान में साबितक़दम रहें,
मरदानगी दिखाएँ, मज़बूत बने रहें। 14सब कुछ
मुहब्बत से करें।

15भाइयो, मैं एक बात में आपको नसीहत
करना चाहता हूँ। आप जानते हैं कि स्तिफ़-
नास का घराना अख़या का पहला फल है और
कि उन्होंने अपने आपको मुक़द्दसीन की ख़िदमत
के लिए वक़्फ़ कर रखा है। 16आप ऐसे लोगों के
ताबे रहें और साथ ही हर उस शख़्स के जो उनके
साथ ख़िदमत के काम में जाँफ़िशानी करता है।

17स्तिफ़नास, फ़ुरतूनातुस और अख़ीकुस के
पहुँचने पर मैं बहुत ख़ुश हुआ, क्योंकि उन्होंने
वह कमी पूरी कर दी जो आपकी ग़ैरहाज़िरी से
पैदा हुई थी। 18उन्होंने मेरी रूह को और साथ ही
आपकी रूह को भी ताज़ा किया है। ऐसे लोगों की
क़दर करें।

19आसिया की जमातें आपको सलाम
कहती हैं। अकविला और प्रिसकिल्ला आप-
को ख़ुदावंद में पुरजोश सलाम कहते हैं और
उनके साथ वह जमात भी जो उनके घर में जमा
होती है। 20तमाम भाई आपको सलाम कहते हैं।
एक दूसरे को मुक़द्दस बोसा देते हुए सलाम कहें।

21यह सलाम मैं यानी पौलुस अपने हाथ से
लिखता हूँ।

22लानत उस शख़्स पर जो ख़ुदावंद से मुहब्बत
नहीं रखता।

ऐ हमारे ख़ुदावंद, आ! 23ख़ुदावंद ईसा का
फ़ज़ल आपके साथ रहे।

24मसीह ईसा में आप सबको मेरा प्यार।

कुरिंथियों के नाम
पौलुस रसूल का दूसरा ख़त

1 यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है, जो
अल्लाह की मरज़ी से मसीह ईसा का
रसूल है। साथ ही यह भाई तीमुथियुस की तरफ़
से भी है।
मैं कुरिंथुस में अल्लाह की जमात और सूबा
अख़या में मौजूद तमाम मुक़द्दसीन को यह लिख
रहा हूँ।
2ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावंद ईसा मसीह
आपको फ़ज़ल और सलामती अता करें।

अल्लाह की हम्दो-सना

3हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के ख़ुदा और बाप
की तमजीद हो, जो रहम का बाप और तमाम तरह
की तसल्ली का ख़ुदा है। 4जब भी हम मुसीबत
में फँस जाते हैं तो वह हमें तसल्ली देता है ताकि
हम औरों को भी तसल्ली दे सकें। फिर जब वह
किसी मुसीबत से दोचार होते हैं तो हम भी उनको
उसी तरह तसल्ली दे सकते हैं जिस तरह अल्लाह
ने हमें तसल्ली दी है। 5क्योंकि जितनी कसरत
से मसीह की-सी मुसीबतें हम पर आ जाती हैं
उतनी कसरत से अल्लाह मसीह के ज़रीए हमें
तसल्ली देता है। 6जब हम मुसीबतों से दोचार
होते हैं तो यह बात आपकी तसल्ली और नजात
का बाइस बनती है। जब हमारी तसल्ली होती
है तो यह आपकी भी तसल्ली का बाइस बनती
है। यों आप भी सब्र से वह कुछ बरदाश्त करने
के क़ाबिल बन जाते हैं जो हम बरदाश्त कर रहे
हैं। 7चुनाँचे हमारी आपके बारे में उम्मीद पुख़्ता
रहती है। क्योंकि हम जानते हैं कि जिस तरह
आप हमारी मुसीबतों में शरीक हैं उसी तरह आप
उस तसल्ली में भी शरीक हैं जो हमें हासिल होती
है।
8भाइयो, हम आपको उस मुसीबत से आगाह
करना चाहते हैं जिसमें हम सूबा आसिया में फँस
गए। हम पर दबाव इतना शदीद था कि उसे
बरदाश्त करना नामुमकिन-सा हो गया और हम
जान से हाथ धो बैठे। 9हमने महसूस किया कि
हमें सज़ाए-मौत दी गई है। लेकिन यह इसलिए
हुआ ताकि हम अपने आप पर भरोसा न करें
बल्कि अल्लाह पर जो मुरदों को ज़िंदा कर देता
है। 10उसी ने हमें ऐसी हैबतनाक मौत से बचाया
और वह आइंदा भी हमें बचाएगा। और हमने उस
पर उम्मीद रखी है कि वह हमें एक बार फिर
बचाएगा। 11आप भी अपनी दुआओं से हमारी
मदद कर रहे हैं। यह कितनी ख़ूबसूरत बात है कि
अल्लाह बहुतों की दुआओं को सुनकर हम पर
मेहरबानी करेगा और नतीजे में बहुतेरे हमारे लिए
शुक्र करेंगे।

पौलुस के मनसूबों में तबदीली

12यह बात हमारे लिए फ़ख़र का बाइस है
कि हमारा ज़मीर साफ़ है। क्योंकि हमने अल्लाह
के सामने सादादिली और ख़ुलूस से ज़िंदगी
गुज़ारी है, और हमने अपनी इनसानी हिकमत पर
इनहिसार नहीं किया बल्कि अल्लाह के फ़ज़ल
पर। दुनिया में और ख़ासकर आपके साथ हमारा
रवैया ऐसा ही रहा है। 13हम तो आपको ऐसी
कोई बात नहीं लिखते जो आप पढ़ या समझ
नहीं सकते। और मुझे उम्मीद है कि आपको पूरे
तौर पर समझ आएगी, 14अगरचे आप फ़िलहाल
सब कुछ नहीं समझते। क्योंकि जब आपको सब
कुछ समझ आएगा तब आप ख़ुदावंद ईसा के दिन
हम पर उतना फ़ख़र कर सकेंगे जितना हम आप
पर।

15चूँकि मुझे इसका पूरा यक़ीन था इसलिए
मैं पहले आपके पास आना चाहता था ताकि
आपको दुगनी बरकत मिल जाए। 16ख़याल यह
था कि मैं आपके हाँ से होकर मकिदुनिया जाऊँ
और वहाँ से आपके पास वापस आऊँ। फिर आप
सूबा यहूदिया के सफ़र के लिए तैयारियाँ करने
में मेरी मदद करके मुझे आगे भेज सकते थे।
17आप मुझे बताएँ कि क्या मैंने यह मनसूबा
यों ही बनाया था? क्या मैं दुनियावी लोगों की
तरह मनसूबे बना लेता हूँ जो एक ही लमहे में
"जी हाँ" और "जी नहीं" कहते हैं? 18लेकिन
अल्लाह वफ़ादार है और वह मेरा गवाह है कि हम
आपके साथ बात करते वक़्त "नहीं" को "हाँ"
के साथ नहीं मिलाते। 19क्योंकि अल्लाह का
फ़रज़ंद ईसा मसीह जिसकी मुनादी मैं, सीलास
और तीमुथियुस ने की वह भी ऐसा नहीं है। उसने
कभी भी "हाँ" को "नहीं" के साथ नहीं मिलाया
बल्कि उसमें अल्लाह की हतमी "जी हाँ" वुजूद
में आई। 20क्योंकि वही अल्लाह के तमाम वादों
की "हाँ" है। इसलिए हम उसी के वसीले से
"आमीन" (जी हाँ) कहकर अल्लाह को जलाल
देते हैं। 21और अल्लाह ख़ुद हमें और आपको
मसीह में मज़बूत कर देता है। उसी ने हमें मसह
करके मख़सूस किया है। 22उसी ने हम पर अपनी
मुहर लगाकर ज़ाहिर किया है कि हम उस की
मिलकियत हैं और उसी ने हमें रूहुल-क़ुद्स देकर
अपने वादों का बयाना अदा किया है।

23अगर मैं झूट बोलूँ तो अल्लाह मेरे ख़िलाफ़
गवाही दे। बात यह है कि मैं आपको बचाने के
लिए कुरिंथुस वापस न आया। 24मतलब यह नहीं
कि हम ईमान के मामले में आप पर हुकूमत करना
चाहते हैं। नहीं, हम आपके साथ मिलकर ख़िदमत
करते हैं ताकि आप ख़ुशी से भर जाएँ, क्योंकि
आप तो ईमान की मारिफ़त क़ायम हैं।

2 चुनाँचे मैंने फ़ैसला किया कि मैं दुबारा
आपके पास नहीं आऊँगा, वरना आपको
बहुत ग़म खाना पड़ेगा। 2क्योंकि अगर मैं आपको
दुख पहुँचाऊँ तो कौन मुझे ख़ुश करेगा? यह
वह शख़्स नहीं करेगा जिसे मैंने दुख पहुँचाया है।
3यही वजह है कि मैंने आपको यह लिख दिया।
मैं नहीं चाहता था कि आपके पास आकर उन्हीं
लोगों से ग़म खाऊँ जिन्हें मुझे ख़ुश करना चाहिए।
क्योंकि मुझे आप सबके बारे में यक़ीन है कि
मेरी ख़ुशी आप सबकी ख़ुशी है। 4मैंने आपको
निहायत रंजीदा और परेशान हालत में आँसू बहा
बहाकर लिख दिया। मक़सद यह नहीं था कि
आप ग़मगीन हो जाएँ बल्कि मैं चाहता था कि
आप जान लें कि मैं आपसे कितनी गहरी मुहब्बत
रखता हूँ।

मुजरिम को मुआफ़ कर दिया जाए

5अगर किसी ने दुख पहुँचाया है तो मुझे नहीं
बल्कि किसी हद तक आप सबको (मैं ज़्यादा
सख़्ती से बात नहीं करना चाहता)। 6लेकिन
मज़कूरा शख़्स के लिए यह काफ़ी है कि उसे
जमात के अकसर लोगों ने सज़ा दी है। 7अब
ज़रूरी है कि आप उसे मुआफ़ करके तसल्ली
दें, वरना वह ग़म खा खाकर तबाह हो जाएगा।
8चुनाँचे मैं इस पर ज़ोर देना चाहता हूँ कि आप
उसे अपनी मुहब्बत का एहसास दिलाएँ। 9मैंने

यह मालूम करने के लिए आपको लिखा कि
क्या आप इमतहान में पूरे उतरेंगे और हर बात
में ताबे रहेंगे। **10**जिसे आप कुछ मुआफ़ करते
हैं उसे मैं भी मुआफ़ करता हूँ। और जो कुछ
मैंने मुआफ़ किया, अगर मुझे कुछ मुआफ़ करने
की ज़रूरत थी, वह मैंने आपकी ख़ातिर मसीह
के हुज़ूर मुआफ़ किया है **11**ताकि इबलीस हमसे
फ़ायदा न उठाए। क्योंकि हम उस की चालों से
ख़ूब वाक़िफ़ हैं।

त्रोआस में पौलुस की परेशानी

12जब मैं मसीह की ख़ुशख़बरी सुनाने के लिए
त्रोआस गया तो ख़ुदावंद ने मेरे लिए आगे ख़िदमत
करने का एक दरवाज़ा खोल दिया। **13**लेकिन
जब मुझे अपना भाई तितुस वहाँ न मिला तो
मैं बेचैन हो गया और उन्हें ख़ैरबाद कहकर सूबा
मकिदुनिया चला गया।

मसीह में फ़तह

14लेकिन ख़ुदा का शुक्र है! वही हमारे आगे
आगे चलता है और हम मसीह के क़ैदी बनकर
उस की फ़तह मनाते हुए उसके पीछे पीछे चलते
हैं। यों अल्लाह हमारे वसीले से हर जगह मसीह के
बारे में इल्म ख़ुशबू की तरह फैलाता है। **15**क्योंकि
हम मसीह की ख़ुशबू हैं जो अल्लाह तक पहुँचती
है और साथ साथ लोगों में भी फैलती है, नजात
पानेवालों में भी और हलाक होनेवालों में भी।
16बाज़ लोगों के लिए हम मौत की मोहलक बू
हैं जबकि बाज़ के लिए हम ज़िंदगीबख़्श ख़ुशबू
हैं। तो कौन यह ज़िम्मेदारी निभाने के लायक़ है?
17क्योंकि हम अकसर लोगों की तरह अल्लाह
के कलाम की तिजारत नहीं करते, बल्कि यह
जानकर कि हम अल्लाह के हुज़ूर में हैं और उसके
भेजे हुए हैं हम ख़ुलूसदिली से लोगों से बात करते
हैं।

नए अहद के ख़ादिम

3 क्या हम दुबारा अपनी ख़ूबियों का ढंडोरा
पीट रहे हैं? या क्या हम बाज़ लोगों की
मानिंद हैं जिन्हें आपको सिफ़ारिशी ख़त देने या
आपसे ऐसे ख़त लिखवाने की ज़रूरत होती है?
2नहीं, आप तो ख़ुद हमारा ख़त हैं जो हमारे दिलों
पर लिखा हुआ है। सब इसे पहचान और पढ़
सकते हैं। **3**यह साफ़ ज़ाहिर है कि आप मसीह का
ख़त हैं जो उसने हमारी ख़िदमत के ज़रीए लिख
दिया है। और यह ख़त स्याही से नहीं बल्कि ज़िंदा
ख़ुदा के रूह से लिखा गया, पत्थर की तख़्तियों
पर नहीं बल्कि इनसानी दिलों पर।
4हम यह इसलिए यक़ीन से कह सकते हैं
क्योंकि हम मसीह के वसीले से अल्लाह पर
एतमाद रखते हैं। **5**हमारे अंदर तो कुछ नहीं है
जिसकी बिना पर हम दावा कर सकते कि हम यह
काम करने के लायक़ हैं। नहीं, हमारी लियाक़त
अल्लाह की तरफ़ से है। **6**उसी ने हमें नए अहद
के ख़ादिम होने के लायक़ बना दिया है। और यह
अहद लिखी हुई शरीअत पर मबनी नहीं है बल्कि
रूह पर, क्योंकि लिखी हुई शरीअत के असर से
हम मर जाते हैं जबकि रूह हमें ज़िंदा कर देता है।
7शरीअत के हुरूफ़ पत्थर की तख़्तियों पर
कंदा किए गए और जब उसे दिया गया तो
अल्लाह का जलाल ज़ाहिर हुआ। यह जलाल
इतना तेज़ था कि इसराईली मूसा के चेहरे को
लगातार देख न सके। अगर उस चीज़ का जलाल
इतना तेज़ था जो अब मनसूख़ है **8**तो क्या रूह
के निज़ाम का जलाल इससे कहीं ज़्यादा नहीं
होगा? **9**अगर पुराना निज़ाम जो हमें मुजरिम
ठहराता था जलाली था तो फिर नया निज़ाम
जो हमें रास्तबाज़ क़रार देता है कहीं ज़्यादा
जलाली होगा। **10**हाँ, पहले निज़ाम का जलाल
नए निज़ाम के ज़बरदस्त जलाल की निसबत कुछ
भी नहीं है। **11**और अगर उस पुराने निज़ाम का
जलाल बहुत था जो अब मनसूख़ है तो फिर उस

नए निज़ाम का जलाल कहीं ज़्यादा होगा जो
क़ायम रहेगा।

12पस चूँकि हम ऐसी उम्मीद रखते हैं इसलिए
बड़ी दिलेरी से ख़िदमत करते हैं। 13हम मूसा की
मानिंद नहीं हैं जिसने शरीअत सुनाने के इख़्तिताम
पर अपने चेहरे पर निक़ाब डाल लिया ताकि
इसराईली उसे तकते न रहें जो अब मनसूख़ है।
14तो भी वह ज़हनी तौर पर अड़ गए, क्योंकि
आज तक जब पुराने अहदनामे की तिलावत की
जाती है तो यही निक़ाब क़ायम है। आज तक
निक़ाब को हटाया नहीं गया क्योंकि यह अहद
सिर्फ़ मसीह में मनसूख़ होता है। 15हाँ, आज तक
जब मूसा की शरीअत पढ़ी जाती है तो यह निक़ाब
उनके दिलों पर पड़ा रहता है। 16लेकिन जब भी
कोई ख़ुदावंद की तरफ़ रुजू करता है तो यह
निक़ाब हटाया जाता है, 17क्योंकि ख़ुदावंद रूह
है और जहाँ ख़ुदावंद का रूह है वहाँ आज़ादी है।
18चुनाँचे हम सब जिनके चेहरों से निक़ाब हटाया
गया है ख़ुदावंद का जलाल मुनअकिस करते और
क़दम बक़दम जलाल पाते हुए मसीह की सूरत में
बदलते जाते हैं। यह ख़ुदावंद ही का काम है जो
रूह है।

मिट्टी के बरतनों में रूहानी ख़ज़ाना

4 पस चूँकि हमें अल्लाह के रहम से यह
ख़िदमत सौंपी गई है इसलिए हम बेदिल
नहीं हो जाते। 2हमने छुपी हुई शर्मनाक बातें
मुस्तरद कर दी हैं। न हम चालाकी से काम करते,
न अल्लाह के कलाम में तहरीफ़ करते हैं। बल्कि
हमें अपनी सिफ़ारिश की ज़रूरत भी नहीं, क्योंकि
जब हम अल्लाह के हुज़ूर लोगों पर हक़ीक़त को
ज़ाहिर करते हैं तो हमारी नेकनामी ख़ुद बख़ुद
हर एक के ज़मीर पर ज़ाहिर हो जाती है। 3और
अगर हमारी ख़ुशख़बरी निक़ाब तले छुपी हुई
भी हो तो वह सिर्फ़ उनके लिए छुपी हुई है जो
हलाक हो रहे हैं। 4इस जहान के शरीर ख़ुदा ने
उनके ज़हनों को अंधा कर दिया है जो ईमान नहीं
रखते। इसलिए वह अल्लाह की ख़ुशख़बरी की
जलाली रौशनी नहीं देख सकते। वह यह पैग़ाम
नहीं समझ सकते जो मसीह के जलाल के बारे
में है, उसके बारे में जो अल्लाह की सूरत है।
5क्योंकि हम अपना प्रचार नहीं करते बल्कि ईसा
मसीह का पैग़ाम सुनाते हैं कि वह ख़ुदावंद है।
अपने आपको हम ईसा की ख़ातिर आपके ख़ादिम
क़रार देते हैं। 6क्योंकि जिस ख़ुदा ने फ़रमाया,
“अंधेरे में से रौशनी चमके,” उसने हमारे दिलों में
अपनी रौशनी चमकने दी ताकि हम अल्लाह का
वह जलाल जान लें जो ईसा मसीह के चेहरे से
चमकता है।

7लेकिन हम जिनके अंदर यह ख़ज़ाना है आम
मिट्टी के बरतनों की मानिंद हैं ताकि ज़ाहिर हो कि
यह ज़बरदस्त क़ुव्वत हमारी तरफ़ से नहीं बल्कि
अल्लाह की तरफ़ से है। 8लोग हमें चारों तरफ़ से
दबाते हैं, लेकिन कोई हमें कुचलकर ख़त्म नहीं
कर सकता। हम उलझन में पड़ जाते हैं, लेकिन
उम्मीद का दामन हाथ से जाने नहीं देते। 9लोग
हमें ईज़ा देते हैं, लेकिन हमें अकेला नहीं छोड़ा
जाता। लोगों के धक्कों से हम ज़मीन पर गिर
जाते हैं, लेकिन हम तबाह नहीं होते। 10हर वक़्त
हम अपने बदन में ईसा की मौत लिए फिरते हैं
ताकि ईसा की ज़िंदगी भी हमारे बदन में ज़ाहिर
हो जाए। 11क्योंकि हर वक़्त हमें ज़िंदा हालत में
ईसा की ख़ातिर मौत के हवाले कर दिया जाता है
ताकि उस की ज़िंदगी हमारे फ़ानी बदन में ज़ाहिर
हो जाए। 12यों हममें मौत का असर काम करता
है जबकि आपमें ज़िंदगी का असर।

13कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, “मैं ईमान
लाया और इसलिए बोला।” हमें ईमान का यही
रूह हासिल है इसलिए हम भी ईमान लाने की
वजह से बोलते हैं। 14क्योंकि हम जानते हैं कि
जिसने ख़ुदावंद ईसा को मुरदों में से ज़िंदा कर
दिया है वह ईसा के साथ हमें भी ज़िंदा करके आप
लोगों समेत अपने हुज़ूर खड़ा करेगा। 15यह सब
कुछ आपके फ़ायदे के लिए है। यों अल्लाह का
फ़ज़ल आगे बढ़ते बढ़ते मज़ीद बहुत-से लोगों तक
पहुँच रहा है और नतीजे में वह अल्लाह को जलाल

देकर शुक्रगुज़ारी की दुआओं में बहुत इज़ाफ़ा कर
रहे हैं।

ईमान की ज़िंदगी

16इसी वजह से हम बेदिल नहीं हो जाते। बेशक
ज़ाहिरी तौर पर हम ख़त्म हो रहे हैं, लेकिन अंदर
ही अंदर रोज़ बरोज़ हमारी तजदीद होती जा रही
है। 17क्योंकि हमारी मौजूदा मुसीबत हलकी और
पल-भर की है, और वह हमारे लिए एक ऐसा
अबदी जलाल पैदा कर रही है जिसकी निसबत
मौजूदा मुसीबत कुछ भी नहीं। 18इसलिए हम
देखी हुई चीज़ों पर ग़ौर नहीं करते बल्कि अनदेखी
चीज़ों पर। क्योंकि देखी हुई चीज़ें आरिज़ी हैं,
जबकि अनदेखी चीज़ें अबदी हैं।

5 हम तो जानते हैं कि जब हमारी दुनियावी
झोंपड़ी जिसमें हम रहते हैं गिराई जाएगी
तो अल्लाह हमें आसमान पर एक मकान देगा,
एक ऐसा अबदी घर जिसे इनसानी हाथों ने
नहीं बनाया होगा। 2इसलिए हम इस झोंपड़ी में
कराहते हैं और आसमानी घर पहन लेने की शदीद
आरज़ू रखते हैं, 3क्योंकि जब हम उसे पहन लेंगे
तो हम नंगे नहीं पाए जाएंगे। 4इस झोंपड़ी में रहते
हुए हम बोझ तले कराहते हैं। क्योंकि हम अपना
फ़ानी लिबास उतारना नहीं चाहते बल्कि उस पर
आसमानी घर का लिबास पहन लेना चाहते हैं
ताकि ज़िंदगी वह कुछ निगल जाए जो फ़ानी
है। 5अल्लाह ने ख़ुद हमें इस मक़सद के लिए
तैयार किया है और उसी ने हमें रूहुल-क़ुद्स को
आनेवाले जलाल के बैआने के तौर पर दे दिया है।

6चुनाँचे हम हमेशा हौसला रखते हैं। हम जानते
हैं कि जब तक अपने बदन में रिहाइशपज़ीर हैं
उस वक़्त तक ख़ुदावंद के घर से दूर हैं। 7हम
ज़ाहिरी चीज़ों पर भरोसा नहीं करते बल्कि ईमान
पर चलते हैं। 8हाँ, हमारा हौसला बुलंद है बल्कि
हम ज़्यादा यह चाहते हैं कि अपने जिस्मानी घर से
रवाना होकर ख़ुदावंद के घर में रहें। 9लेकिन ख़ाह
हम अपने बदन में हों या न, हम इसी कोशिश में
रहते हैं कि ख़ुदावंद को पसंद आएँ। 10क्योंकि
लाज़िम है कि हम सब मसीह के तख़्ते-अदालत
के सामने हाज़िर हो जाएँ। वहाँ हर एक को उस
काम का अज्र मिलेगा जो उसने अपने बदन में
रहते हुए किया है, ख़ाह वह अच्छा था या बुरा।

मसीह के वसीले से हमारी अल्लाह के साथ दोस्ती

11अब हम ख़ुदावंद के ख़ौफ़ को जानकर लोगों
को समझाने की कोशिश करते हैं। हम तो अल्लाह
के सामने पूरे तौर पर ज़ाहिर हैं। और मैं उम्मीद
रखता हूँ कि हम आपके ज़मीर के सामने भी
ज़ाहिर हैं। 12क्या हम यह बात करके दुबारा
अपनी सिफ़ारिश कर रहे हैं? नहीं, आपको हम
पर फ़ख़र करने का मौक़ा दे रहे हैं ताकि आप
उनके जवाब में कुछ कह सकें जो ज़ाहिरी बातों
पर शेख़ी मारते और दिली बातें नज़रंदाज़ करते
हैं। 13क्योंकि अगर हम बेख़ुद हुए तो अल्लाह की
ख़ातिर, और अगर होश में हैं तो आपकी ख़ातिर।
14बात यह है कि मसीह की मुहब्बत हमें मजबूर
कर देती है, क्योंकि हम इस नतीजे पर पहुँच गए
हैं कि एक सबके लिए मुआ। इसका मतलब है
कि सब ही मर गए हैं। 15और वह सबके लिए
इसलिए मुआ ताकि जो ज़िंदा हैं वह अपने लिए
न जिएँ बल्कि उसके लिए जो उनकी ख़ातिर मुआ
और फिर जी उठा।

16इस वजह से हम अब से किसी को भी
दुनियावी निगाह से नहीं देखते। पहले तो हम
मसीह को भी इस ज़ावीए से देखते थे, लेकिन
यह वक़्त गुज़र गया है। 17चुनाँचे जो मसीह में
है वह नया मख़लूक़ है। पुरानी ज़िंदगी जाती रही
और नई ज़िंदगी शुरू हो गई है। 18यह सब कुछ
अल्लाह की तरफ़ से है जिसने मसीह के वसीले से
अपने साथ हमारा मेल-मिलाप कर लिया है। और
उसी ने हमें मेल-मिलाप कराने की ख़िदमत की
ज़िम्मेदारी दी है। 19इस ख़िदमत के तहत हम यह
पैग़ाम सुनाते हैं कि अल्लाह ने मसीह के वसीले से
अपने साथ दुनिया की सुलह कराई और लोगों के

गुनाहों को उनके ज़िम्मे न लगाया। सुलह कराने
का यह पैग़ाम उसने हमारे सुपुर्द कर दिया।
20पस हम मसीह के एलची हैं और अल्लाह
हमारे वसीले से लोगों को समझाता है। हम मसीह
के वास्ते आपसे मिन्नत करते हैं कि अल्लाह की
सुलह की पेशकश को क़बूल करें ताकि उस की
आपके साथ सुलह हो जाए। 21मसीह बेगुनाह
था, लेकिन अल्लाह ने उसे हमारी ख़ातिर गुनाह
ठहराया ताकि हमें उसमें रास्तबाज़ क़रार दिया
जाए।

6 अल्लाह के हमख़िदमत होते हुए हम
आपसे मिन्नत करते हैं कि जो फ़ज़ल
आपको मिला है वह ज़ाया न जाए। 2क्योंकि
अल्लाह फ़रमाता है, “क़बूलियत के वक़्त मैंने
तेरी सुनी, नजात के दिन तेरी मदद की।” सुनें!
अब क़बूलियत का वक़्त आ गया है, अब नजात
का दिन है।

3हम किसी के लिए भी ठोकर का बाइस नहीं
बनते ताकि लोग हमारी ख़िदमत में नुक़्स न
निकाल सकें। 4हाँ, हमें सिफ़ारिश की ज़रूरत ही
नहीं, क्योंकि अल्लाह के ख़ादिम होते हुए हम
हर हालत में अपनी नेकनामी ज़ाहिर करते हैं :
जब हम सब्र से मुसीबतें, मुश्किलात और आफ़तें
बरदाश्त करते हैं, 5जब लोग हमें मारते और क़ैद
में डालते हैं, जब हम बेकाबू हुजूमों का सामना
करते हैं, जब हम मेहनत-मशक़्क़त करते, रात के
वक़्त जागते और भूके रहते हैं, 6जब हम अपनी
पाकीज़गी, इल्म, सब्र और मेहरबान सुलूक का
इज़हार करते हैं, जब हम रूहुल-क़ुद्स के वसीले
से हक़ीक़ी मुहब्बत रखते, 7सच्ची बातें करते और
अल्लाह की क़ुदरत से लोगों की ख़िदमत करते
हैं। हम अपनी नेकनामी इसमें भी ज़ाहिर करते हैं
कि हम दोनों हाथों से रास्तबाज़ी के हथियार थामे
रखते हैं। 8हम अपनी ख़िदमत जारी रखते हैं, चाहे
लोग हमारी इज़्ज़त करें चाहे बेइज़्ज़ती, चाहे वह
हमारी बुरी रिपोर्ट दें चाहे अच्छी। अगरचे हमारी
ख़िदमत सच्ची है, लेकिन लोग हमें दग़ाबाज़
क़रार देते हैं। 9अगरचे लोग हमें जानते हैं तो
भी हमें नज़रंदाज़ किया जाता है। हम मरते मरते
ज़िंदा रहते हैं और लोग हमें मार मारकर क़त्ल नहीं
कर सकते। 10हम ग़म खा खाकर हर वक़्त ख़ुश
रहते हैं, हम ग़रीब हालत में बहुतों को दौलतमंद
बना देते हैं। हमारे पास कुछ नहीं है, तो भी हमें
सब कुछ हासिल है।

11कुरिंथुस के अज़ीज़ो, हमने खुलकर आपसे
बात की है, हमारा दिल आपके लिए कुशादा हो
गया है। 12जो जगह हमने दिल में आपको दी है
वह अब तक कम नहीं हुई। लेकिन आपके दिलों में
हमारे लिए कोई जगह नहीं रही। 13अब मैं आपसे
जो मेरे बच्चे हैं दरख़ास्त करता हूँ कि जवाब में हमें
भी अपने दिलों में जगह दें।

ग़ैरमसीही असरात से ख़बरदार

14ग़ैरईमानदारों के साथ मिलकर एक जुए तले
ज़िंदगी न गुज़ारें, क्योंकि रास्ती का नारास्ती से
क्या वास्ता है? या रौशनी तारीकी के साथ
क्या ताल्लुक़ रख सकती है? 15मसीह और
इबलीस के दरमियान क्या मुताबिक़त हो सकती
है? ईमानदार का ग़ैरईमानदार के साथ क्या
वास्ता है? 16अल्लाह के मक़्दिस और बुतों में
क्या इत्तफ़ाक़ हो सकता है? हम तो ज़िंदा ख़ुदा
का घर हैं। अल्लाह ने यों फ़रमाया है,

“मैं उनके दरमियान सुकूनत करूँगा
और उनमें फिरूँगा।
मैं उनका ख़ुदा हूँगा,
और वह मेरी क़ौम होंगे।”
17चुनाँचे रब फ़रमाता है,
“इसलिए उनमें से निकल आओ
और उनसे अलग हो जाओ।
किसी नापाक चीज़ को न छूना,
तो फिर मैं तुम्हें क़बूल करूँगा।
18मैं तुम्हारा बाप हूँगा
और तुम मेरे बेटे-बेटियाँ होगे,
रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है।”

7 मेरे अज़ीज़ो, यह तमाम वादे हमसे किए
गए हैं। इसलिए आएँ, हम अपने आपको

हर उस चीज़ से पाक-साफ़ करें जो जिस्म और
रूह को आलूदा कर देती है। और हम ख़ुदा के
ख़ौफ़ में मुकम्मल तौर पर मुक़द्दस बनने के लिए
कोशाँ रहें।

पौलुस की ख़ुशी

2हमें अपने दिल में जगह दें। न हमने किसी
से नाइनसाफ़ी की, न किसी को बिगाड़ा या
उससे ग़लत फ़ायदा उठाया। 3मैं यह बात आपको
मुजरिम ठहराने के लिए नहीं कह रहा। मैं आपको
पहले बता चुका हूँ कि आप हमें इतने अज़ीज़
हैं कि हम आपके साथ मरने और जीने के लिए
तैयार हैं। 4इसलिए मैं आपसे खुलकर बात करता
हूँ और मैं आप पर बड़ा फ़ख़र भी करता हूँ। इस
नाते से मुझे पूरी तसल्ली है, और हमारी तमाम
मुसीबतों के बावुजूद मेरी ख़ुशी की इंतहा नहीं।

5क्योंकि जब हम मकिदुनिया पहुँचे तो हम
जिस्म के लिहाज़ से आराम न कर सके। मुसीबतों
ने हमें हर तरफ़ से घेर लिया। दूसरों की तरफ़
से झगड़ों से और दिल में तरह तरह के डर से
निपटना पड़ा। 6लेकिन अल्लाह ने जो दबे हुओं
को तसल्ली बख़्शता है तितुस के आने से हमारी
हौसलाअफ़्ज़ाई की। 7हमारा हौसला न सिर्फ़
उसके आने से बढ़ गया बल्कि उन हौसलाअफ़्ज़ा
बातों से भी जिनसे आपने उसे तसल्ली दी। उसने
हमें आपकी आरज़ू, आपकी आहो-ज़ारी और मेरे
लिए आपकी सरगरमी के बारे में रिपोर्ट दी। यह
सुनकर मेरी ख़ुशी मज़ीद बढ़ गई।

8क्योंकि अगरचे मैंने आपको अपने ख़त से
दुख पहुँचाया तो भी मैं पछताता नहीं। पहले
तो मैं ख़त लिखने से पछताया, लेकिन अब मैं
देखता हूँ कि जो दुख उसने आपको पहुँचाया
वह सिर्फ़ आरिज़ी था 9और उसने आपको तौबा
तक पहुँचाया। यह सुनकर मैं अब ख़ुशी मनाता
हूँ, इसलिए नहीं कि आपको दुख उठाना पड़ा
है बल्कि इसलिए कि इस दुख ने आपको तौबा
तक पहुँचाया। अल्लाह ने यह दुख अपनी मरज़ी
पूरी कराने के लिए इस्तेमाल किया, इसलिए
आपको हमारी तरफ़ से कोई नुक़सान न पहुँचा।
10क्योंकि जो दुख अल्लाह अपनी मरज़ी पूरी
कराने के लिए इस्तेमाल करता है उससे तौबा
पैदा होती है और उसका अंजाम नजात है। इसमें
पछताने की गुंजाइश ही नहीं। इसके बरअक्स
दुनियावी दुख का अंजाम मौत है। 11आप ख़ुद
देखें कि अल्लाह के इस दुख ने आपमें क्या
पैदा किया है : कितनी संजीदगी, अपना दिफ़ा
करने का कितना जोश, ग़लत हरकतों पर कितना
ग़ुस्सा, कितना ख़ौफ़, कितनी चाहत, कितनी
सरगरमी। आप सज़ा देने के लिए कितने तैयार
थे! आपने हर लिहाज़ से साबित किया है कि
आप इस मामले में बेक़ुसूर हैं।

12ग़रज़, अगरचे मैंने आपको लिखा, लेकिन
मक़सद यह नहीं था कि ग़लत हरकतें करनेवाले
के बारे में लिखूँ या उसके बारे में जिसके साथ
ग़लत काम किया गया। नहीं, मक़सद यह था कि
अल्लाह के हुज़ूर आप पर ज़ाहिर हो जाए कि
आप हमारे लिए कितने सरगरम हैं। 13यही वजह
है कि हमारा हौसला बढ़ गया है।

लेकिन न सिर्फ़ हमारी हौसलाअफ़्ज़ाई हुई है
बल्कि हम यह देखकर बेइंतहा ख़ुश हुए कि तितुस
कितना ख़ुश था। वह क्यों ख़ुश था? इसलिए कि
उस की रूह आप सबसे तरो-ताज़ा हुई। 14उसके
सामने मैंने आप पर फ़ख़र किया था, और मैं
शरमिंदा नहीं हुआ क्योंकि यह बात दुरुस्त साबित
हुई है। जिस तरह हमने आपको हमेशा सच्ची
बातें बताई हैं उसी तरह तितुस के सामने आप
पर हमारा फ़ख़र भी दुरुस्त निकला। 15आप
उसे निहायत अज़ीज़ हैं क्योंकि वह आप सबकी
फ़रमाँबरदारी याद करता है, कि आपने डरते और
काँपते हुए उसे ख़ुशआमदीद कहा। 16मैं ख़ुश हूँ
कि मैं हर लिहाज़ से आप पर एतमाद कर सकता
हूँ।

यहूदिया के ग़रीबों के लिए हदिया

8 भाइयो, हम आपकी तवज्जुह उस फ़ज़्ल
की तरफ़ दिलाना चाहते हैं जो अल्लाह ने

सूबा मकिदुनिया की जमातों पर किया। 2जिस
मुसीबत में वह फँसे हुए हैं उससे उनकी सख़्त
आज़माइश हुई। तो भी उनकी बेइंतहा ख़ुशी और
शदीद ग़ुरबत का नतीजा यह निकला कि उन्होंने
बड़ी फ़ैयाज़दिली से हदिया दिया। 3मैं गवाह हूँ कि
जितना वह दे सके उतना उन्होंने दे दिया बल्कि
इससे भी ज़्यादा। अपनी ही तरफ़ से 4उन्होंने बड़े
ज़ोर से हमसे मिन्नत की कि हमें भी यहूदिया
के मुक़द्दसीन की ख़िदमत करने का मौक़ा दें,
हम भी देने के फ़ज़ल में शरीक होना चाहते हैं।
5और उन्होंने हमारी उम्मीद से कहीं ज़्यादा किया!
अल्लाह की मरज़ी से उनका पहला क़दम यह
था कि उन्होंने अपने आपको ख़ुदावंद के लिए
मख़सूस किया। उनका दूसरा क़दम यह था कि
उन्होंने अपने आपको हमारे लिए मख़सूस किया।
6इस पर हमने तितुस की हौसलाअफ़्ज़ाई की
कि वह आपके पास भी हदिया जमा करने का
वह सिलसिला अंजाम तक पहुँचाए जो उसने
शुरू किया था। 7आपके पास सब कुछ कसरत
से पाया जाता है, ख़ाह ईमान हो, ख़ाह कलाम,
इल्म, मुकम्मल सरगरमी या हमसे मुहब्बत हो।
अब इस बात का ख़याल रखें कि आप यह हदिया
देने में भी अपनी कसीर दौलत का इज़हार करें।

8मेरी तरफ़ से यह कोई हुक्म नहीं है। लेकिन
दूसरों की सरगरमी के पेशे-नज़र मैं आपकी भी
मुहब्बत परख रहा हूँ कि वह कितनी हक़ीक़ी है।
9आप तो जानते हैं कि हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह
ने आप पर कैसा फ़ज़ल किया है, कि अगरचे वह
दौलतमंद था तो भी वह आपकी ख़ातिर ग़रीब बन
गया ताकि आप उस की ग़ुरबत से दौलतमंद बन
जाएँ।

10इस मामले में मेरा मशवरा सुनें, क्योंकि वह
आपके लिए मुफ़ीद साबित होगा। पिछले साल
आप पहली जमात थे जो न सिर्फ़ हदिया देने
लगी बल्कि इसे देना भी चाहती थी। 11अब उसे
तकमील तक पहुँचाएँ जो आपने शुरू कर रखा है।
देने का जो शौक़ आप रखते हैं वह अमल में लाया
जाए। उतना दें जितना आप दे सकें। 12क्योंकि
अगर आप देने का शौक़ रखते हैं तो फिर अल्लाह
आपका हदिया उस बिना पर क़बूल करेगा जो
आप दे सकते हैं, उस बिना पर नहीं जो आप नहीं
दे सकते।

13कहने का मतलब यह नहीं कि दूसरों को
आराम दिलाने के बाइस आप ख़ुद मुसीबत में पड़
जाएँ। बात सिर्फ़ यह है कि लोगों के हालात कुछ
बराबर होने चाहिएँ। 14इस वक़्त तो आपके पास
बहुत है और आप उनकी ज़रूरत पूरी कर सकते
हैं। बाद में किसी वक़्त जब उनके पास बहुत होगा
तो वह आपकी ज़रूरत भी पूरी कर सकेंगे। यों
आपके हालात कुछ बराबर रहेंगे, 15जिस तरह
कलामे-मुक़द्दस में भी लिखा है, "जिसने ज़्यादा
जमा किया था उसके पास कुछ न बचा। लेकिन
जिसने कम जमा किया था उसके पास भी काफ़ी
था।"

तितुस और उसके साथी

16ख़ुदा का शुक्र है जिसने तितुस के दिल में
वही जोश पैदा किया है जो मैं आपके लिए रखता
हूँ। 17जब हमने उस की हौसलाअफ़्ज़ाई की कि
वह आपके पास जाए तो वह न सिर्फ़ इसके
लिए तैयार हुआ बल्कि बड़ा सरगरम होकर ख़ुद
बख़ुद आपके पास जाने के लिए रवाना हुआ।
18हमने उसके साथ उस भाई को भेज दिया
जिसकी ख़िदमत की तारीफ़ तमाम जमातें करती
हैं, क्योंकि उसे अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाने की
नेमत मिली है। 19उसे न सिर्फ़ आपके पास जाना
है बल्कि जमातों ने उसे मुक़र्रर किया है कि जब
हम हदिये को यरूशलम ले जाएंगे तो वह हमारे
साथ जाए। यों हम यह ख़िदमत अदा करते वक़्त
ख़ुदावंद को जलाल देंगे और अपनी सरगरमी का
इज़हार करेंगे।

20क्योंकि उस बड़े हदिये के पेशे-नज़र जो हम
ले जाएंगे हम इससे बचना चाहते हैं कि किसी
को हम पर शक करने का मौक़ा मिले। 21हमारी
पूरी कोशिश यह है कि वही कुछ करें जो न सिर्फ़

ख़ुदावंद की नज़र में दुरुस्त है बल्कि इनसान की
नज़र में भी।
22उनके साथ हमने एक और भाई को भी
भेज दिया जिसकी सरगरमी हमने कई मौक़ों
पर परखी है। अब वह मज़ीद सरगरम हो गया
है, क्योंकि वह आप पर बड़ा एतमाद करता है।
23जहाँ तक तितुस का ताल्लुक़ है, वह मेरा साथी
और हमख़िदमत है। और जो भाई उसके साथ
हैं उन्हें जमातों ने भेजा है। वह मसीह के लिए
इज़्ज़त का बाइस हैं। 24उन पर अपनी मुहब्बत
का इज़हार करके यह ज़ाहिर करें कि हम आप
पर क्यों फ़ख़र करते हैं। फिर यह बात ख़ुदा की
दीगर जमातों को भी नज़र आएगी।

मुक़द्दसीन की मदद

9 असल में इसकी ज़रूरत नहीं कि मैं
आपको उस काम के बारे में लिखूँ जो हमें
यहूदिया के मुक़द्दसीन की ख़िदमत में करना है।
2क्योंकि मैं आपकी गरमजोशी जानता हूँ, और
मैं मकिदुनिया के ईमानदारों के सामने आप पर
फ़ख़र करता रहा हूँ कि “अख़या के लोग पिछले
साल से देने के लिए तैयार थे।” यों आपकी
सरगरमी ने ज़्यादातर लोगों को ख़ुद देने के लिए
उभारा। 3अब मैंने इन भाइयों को भेज दिया है
ताकि हमारा आप पर फ़ख़र बेबुनियाद न निकले
बल्कि जिस तरह मैंने कहा था आप तैयार रहें।
4ऐसा न हो कि जब मैं मकिदुनिया के कुछ
भाइयों को साथ लेकर आपके पास पहुँचूँगा तो
आप तैयार न हूँ। उस वक़्त मैं, बल्कि आप भी
शरमिंदा होंगे कि मैंने आप पर इतना एतमाद
किया है। 5इसलिए मैंने इस बात पर ज़ोर देना
ज़रूरी समझा कि भाई पहले ही आपके पास
आकर उस हदिये का इंतज़ाम करें जिसका वादा
आपने किया है। क्योंकि मैं चाहता हूँ कि मेरे आने
तक यह हदिया जमा किया गया हो और ऐसा न
लगे जैसा इसे मुश्किल से आपसे निकालना पड़ा।
इसके बजाए आपकी सख़ावत ज़ाहिर हो जाए।
6याद रहे कि जो शख़्स बीज को बचा बचाकर
बोता है उस की फ़सल भी उतनी कम होगी।
लेकिन जो बहुत बीज बोता है उस की फ़सल भी
बहुत ज़्यादा होगी। 7हर एक उतना दे जितना देने
के लिए उसने पहले अपने दिल में ठहरा लिया
है। वह इसमें तकलीफ़ या मजबूरी महसूस न
करे, क्योंकि अल्लाह उससे मुहब्बत रखता है जो
ख़ुशी से देता है। 8और अल्लाह इस क़ाबिल है
कि आपको आपकी ज़रूरियात से कहीं ज़्यादा
दे। फिर आपके पास हर वक़्त और हर लिहाज़
से काफ़ी होगा बल्कि इतना ज़्यादा कि आप हर
क़िस्म का नेक काम कर सकेंगे। 9चुनाँचे कलामे-
मुक़द्दस में यह भी लिखा है, “उसने फ़ैयाज़ी
से ज़रूरतमंदों में ख़ैरात बिखेर दी, उस की
रास्तबाज़ी हमेशा तक क़ायम रहेगी।” 10ख़ुदा
ही बीज बोनेवाले को बीज मुहैया करता और
उसे खाने के लिए रोटी देता है। और वह आपको
भी बीज देकर उसमें इज़ाफ़ा करेगा और आपकी
रास्तबाज़ी की फ़सल उगने देगा। 11हाँ, वह
आपको हर लिहाज़ से दौलतमंद बना देगा और
आप हर मौक़े पर फ़ैयाज़ी से दे सकेंगे। चुनाँचे
जब हम आपका हदिया उनके पास ले जाएंगे
जो ज़रूरतमंद हैं तो वह ख़ुदा का शुक्र करेंगे।
12यों आप न सिर्फ़ मुक़द्दसीन की ज़रूरियात
पूरी करेंगे बल्कि वह आपकी इस ख़िदमत से
इतने मुतअस्सिर हो जाएंगे कि वह बड़े जोश
से ख़ुदा का भी शुक्रिया अदा करेंगे। 13आपकी
ख़िदमत के नतीजे में वह अल्लाह को जलाल देंगे।
क्योंकि आपकी उन पर और तमाम ईमानदारों
पर सख़ावत का इज़हार साबित करेगा कि आप
मसीह की ख़ुशख़बरी न सिर्फ़ तसलीम करते हैं
बल्कि उसके ताबे भी रहते हैं। 14और जब वह
आपके लिए दुआ करेंगे तो आपके आरज़ूमंद
रहेंगे, इसलिए कि अल्लाह ने आपको कितना
बड़ा फ़ज़्ल दे दिया है। 15अल्लाह का उस की
नाक़ाबिले-बयान बख़्शिश के लिए शुक्र हो!

पौलुस अपनी ख़िदमत का दिफ़ा करता है

10 मैं आपसे अपील करता हूँ, मैं पौलुस
जिसके बारे में कहा जाता है कि मैं
आपके रूबरू आजिज़ होता हूँ और सिर्फ़ आपसे
दूर होकर दिलेर होता हूँ। मसीह की हलीमी और
नरमी के नाम में 2मैं आपसे मिन्नत करता हूँ
कि मुझे आपके पास आकर इतनी दिलेरी से
उन लोगों से निपटना न पड़े जो समझते हैं कि
हमारा चाल-चलन दुनियावी है। क्योंकि फ़िलहाल
ऐसा लगता है कि इसकी ज़रूरत होगी। 3बेशक
हम इनसान ही हैं, लेकिन हम दुनिया की तरह
जंग नहीं लड़ते। 4और जो हथियार हम इस जंग
में इस्तेमाल करते हैं वह इस दुनिया के नहीं हैं,
बल्कि उन्हें अल्लाह की तरफ़ से क़िले ढा देने की
क़ुव्वत हासिल है। इनसे हम ग़लत ख़यालात के
ढाँचे 5और हर ऊँची चीज़ ढा देते हैं जो अल्लाह के
इल्मो-इरफ़ान के ख़िलाफ़ खड़ी हो जाती है। और
हम हर ख़याल को क़ैद करके मसीह के ताबे कर
देते हैं। 6हाँ, आपके पूरे तौर पर ताबे हो जाने पर
हम हर नाफ़रमानी की सज़ा देने के लिए तैयार
होंगे।

7आप सिर्फ़ ज़ाहिरी बातों पर ग़ौर कर रहे हैं।
अगर किसी को इस बात का एतमाद हो कि वह
मसीह का है तो वह इसका भी ख़याल करे कि
हम भी उसी की तरह मसीह के हैं। 8क्योंकि
अगर मैं उस इख़्तियार पर मज़ीद फ़ख़र भी करूँ
जो ख़ुदावंद ने हमें दिया है तो भी मैं शरमिंदा
नहीं हूँगा। ग़ौर करें कि उसने हमें आपको ढा देने
का नहीं बल्कि आपकी रूहानी तामीर करने का
इख़्तियार दिया है। 9मैं नहीं चाहता कि ऐसा लगे
जैसे मैं आपको अपने ख़तों से डराने की कोशिश
कर रहा हूँ। 10क्योंकि बाज़ कहते हैं, "पौलुस के
ख़त ज़ोरदार और ज़बरदस्त हैं, लेकिन जब वह
ख़ुद हाज़िर होता है तो वह कमज़ोर और उसके
बोलने का तर्ज़ हिक़ारतआमेज़ है।" 11ऐसे लोग
इस बात का ख़याल करें कि जो बातें हम आपसे
दूर होते हुए अपने ख़तों में पेश करते हैं उन्हीं बातों
पर हम अमल करेंगे जब आपके पास आएँगे।

12हम तो अपने आपको उनमें शुमार नहीं करते
जो अपनी तारीफ़ करके अपनी सिफ़ारिश करते
रहते हैं, न अपना उनके साथ मुवाज़ना करते हैं।
वह कितने बेसमझ हैं जब वह अपने आपको
मेयार बनाकर उसी पर अपने आपको जाँचते
हैं और अपना मुवाज़ना अपने आपसे करते हैं।
13लेकिन हम मुनासिब हद से ज़्यादा फ़ख़र नहीं
करेंगे बल्कि सिर्फ़ उस हद तक जो अल्लाह ने
हमारे लिए मुक़र्रर किया है। और आप भी इस हद
के अंदर आ जाते हैं। 14इसमें हम मुनासिब हद से
ज़्यादा फ़ख़र नहीं कर रहे, क्योंकि हम तो मसीह
की ख़ुशख़बरी लेकर आप तक पहुँच गए हैं। अगर
ऐसा न होता तो फिर और बात होती। 15हम ऐसे
काम पर फ़ख़र नहीं करते जो दूसरों की मेहनत से
सरंजाम दिया गया है। इसमें भी हम मुनासिब हद्दों
के अंदर रहते हैं, बल्कि हम यह उम्मीद रखते हैं
कि आपका ईमान बढ़ जाए और यों हमारी क़दरो-
क़ीमत भी अल्लाह की मुक़र्ररा हद तक बढ़ जाए।
ख़ुदा करे कि आपमें हमारा यह काम इतना बढ़
जाए 16कि हम अल्लाह की ख़ुशख़बरी आपसे
आगे जाकर भी सुना सकें। क्योंकि हम उस काम
पर फ़ख़र नहीं करना चाहते जिसे दूसरे कर चुके
हैं।

17कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, "फ़ख़र
करनेवाला ख़ुदावंद ही पर फ़ख़र करे।" 18जब
लोग अपनी तारीफ़ करके अपनी सिफ़ारिश करते
हैं तो इसमें क्या है! इससे वह सहीह साबित
नहीं होते, बल्कि अहम बात यह है कि ख़ुदावंद
ही इसकी तसदीक़ करे।

पौलुस और झूटे रसूल

11 ख़ुदा करे कि जब मैं अपनी हमाक़त
का कुछ इज़हार करता हूँ तो आप
मुझे बरदाश्त करें। हाँ, ज़रूर मुझे बरदाश्त करें,
2क्योंकि मैं आपके लिए अल्लाह की-सी ग़ैरत
रखता हूँ। मैंने आपका रिश्ता एक ही मर्द के

साथ बाँधा, और मैं आपको पाकदामन कुँवारी की
हैसियत से उस मर्द मसीह के हुज़ूर पेश करना
चाहता था। 3लेकिन अफ़सोस, मुझे डर है कि
आप हव्वा की तरह गुनाह में गिर जाएंगे, कि
जिस तरह साँप ने अपनी चालाकी से हव्वा को
धोका दिया उसी तरह आपकी सोच भी बिगड़
जाएगी और वह ख़ुलूसदिली और पाक लग्न ख़त्म
हो जाएगी जो आप मसीह के लिए महसूस करते
हैं। 4क्योंकि आप ख़ुशी से हर एक को बरदाश्त
करते हैं जो आपके पास आकर एक फ़रक़ क़िस्म
का ईसा पेश करता है, एक ऐसा ईसा जो हमने
आपको पेश नहीं किया था। और आप एक ऐसी
रूह और ऐसी “ख़ुशख़बरी” क़बूल करते हैं जो
उस रूह और ख़ुशख़बरी से बिलकुल फ़रक़ है जो
आपको हमसे मिली थी।

5मेरा नहीं ख़याल कि मैं इन नाम-निहाद
‘ख़ास’ रसूलों की निसबत कम हूँ। 6हो सकता
है कि मैं बोलने में माहिर नहीं हूँ, लेकिन यह मेरे
इल्म के बारे में नहीं कहा जा सकता। यह हमने
आपको साफ़ साफ़ और हर लिहाज़ से दिखाया
है।

7मैंने अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाने के लिए
आपसे कोई भी मुआवज़ा न लिया। यों मैंने अपने
आपको नीचा कर दिया ताकि आपको सरफ़राज़
कर दिया जाए। क्या इसमें मुझसे ग़लती हुई?
8जब मैं आपकी ख़िदमत कर रहा था तो मुझे
ख़ुदा की दीगर जमातों से पैसे मिल रहे थे, यानी
आपकी मदद करने के लिए मैं उन्हें लूट रहा था।
9और जब मैं आपके पास था और ज़रूरतमंद था
तो मैं किसी पर बोझ न बना, क्योंकि जो भाई
मकिदुनिया से आए उन्होंने मेरी ज़रूरियात पूरी
कीं। माज़ी में मैं आप पर बोझ न बना और आइंदा
भी नहीं बनूँगा। 10मसीह की उस सच्चाई की
क़सम जो मेरे अंदर है, अख़या के पूरे सूबे में कोई
मुझे इस पर फ़ख़र करने से नहीं रोकेगा। 11मैं यह
क्यों कह रहा हूँ? इसलिए कि मैं आपसे मुहब्बत
नहीं रखता? ख़ुदा ही जानता है कि मैं आपसे
मुहब्बत रखता हूँ।

12और जो कुछ मैं अब कर रहा हूँ वही करता
रहूँगा, ताकि मैं नाम-निहाद रसूलों को वह मौक़ा
न दूँ जो वह ढूँड रहे हैं। क्योंकि यही उनका
मक़सद है कि वह फ़ख़र करके यह कह सकें कि
वह हम जैसे हैं। 13ऐसे लोग तो झूटे रसूल हैं,
धोकेबाज़ मज़दूर जिन्होंने मसीह के रसूलों का
रूप धार लिया है। 14और क्या अजब, क्योंकि
इबलीस भी नूर के फ़रिश्ते का रूप धारकर घुमता-
फिरता है। 15तो फिर यह बड़ी बात नहीं कि
उसके चेले रास्तबाज़ी के ख़ादिम का रूप धारकर
घुमते-फिरते हैं। उनका अंजाम उनके आमाल के
मुताबिक़ ही होगा।

रसूल होने की वजह से पौलुस की ईज़ारसानी

16मैं दुबारा कहता हूँ कि कोई मुझे अहमक़ न
समझे। लेकिन अगर आप यह सोचें भी तो कम
अज़ कम मुझे अहमक़ की हैसियत से क़बूल करें
ताकि मैं भी थोड़ा-बहुत अपने आप पर फ़ख़र
करूँ। 17असल में जो कुछ मैं अब बयान कर
रहा हूँ वह ख़ुदावंद को पसंद नहीं है, बल्कि मैं
अहमक़ की तरह बात कर रहा हूँ। 18लेकिन चूँकि
इतने लोग जिस्मानी तौर पर फ़ख़र कर रहे हैं
इसलिए मैं भी फ़ख़र करूँगा। 19बेशक आप ख़ुद
इतने दानिशमंद हैं कि आप अहमक़ों को ख़ुशी
से बरदाश्त करते हैं। 20हाँ, बल्कि आप यह भी
बरदाश्त करते हैं जब लोग आपको ग़ुलाम बनाते,
आपको लूटते, आपसे ग़लत फ़ायदा उठाते, नख़रे
करते और आपको थप्पड़ मारते हैं। 21यह कहकर
मुझे शर्म आती है कि हम इतने कमज़ोर थे कि हम
ऐसा न कर सके।

लेकिन अगर कोई किसी बात पर फ़ख़र करने
की जुर्रत करे (मैं अहमक़ की-सी बात कर रहा
हूँ) तो मैं भी उतनी ही जुर्रत करूँगा। 22क्या वह
इबरानी हैं? मैं भी हूँ। क्या वह इसराईली हैं?
मैं भी हूँ। क्या वह इब्राहीम की औलाद हैं? मैं
भी हूँ। 23क्या वह मसीह के ख़ादिम हैं? (अब
तो मैं गोया बेख़ुद हो गया हूँ कि इस तरह की

बातें कर रहा हूँ!) मैं उनसे ज़्यादा मसीह की
ख़िदमत करता हूँ। मैंने उनसे कहीं ज़्यादा मेहनत-
मशक़्क़त की, ज़्यादा दफ़ा जेल में रहा, मेरे ज़्यादा
सख़्ती से कोड़े लगाए गए और मैं बार बार मरने
के ख़तरों में रहा हूँ। 24मुझे यहूदियों से पाँच दफ़ा
39 कोड़ों की सज़ा मिली है। 25तीन दफ़ा रोमियों
ने मुझे लाठी से मारा। एक बार मुझे संगसार
किया गया। जब मैं समुंदर में सफ़र कर रहा था
तो तीन मरतबा मेरा जहाज़ तबाह हुआ। हाँ, एक
दफ़ा मुझे जहाज़ के तबाह होने पर एक पूरी रात
और दिन समुंदर में गुज़ारना पड़ा। 26मेरे बेशुमार
सफ़रों के दौरान मुझे कई तरह के ख़तरों का
सामना करना पड़ा, दरियाओं और डाकुओं का
ख़तरा, अपने हमवतनों और ग़ैरयहूदियों के हमलों
का ख़तरा। जहाँ भी मैं गया हूँ वहाँ यह ख़तरे
मौजूद रहे, ख़ाह मैं शहर में था, ख़ाह ग़ैरआबाद
इलाक़े में या समुंदर में। झूटे भाइयों की तरफ़
से भी ख़तरे रहे हैं। 27मैंने जाँफ़िशानी से सख़्त
मेहनत-मशक़्क़त की है और कई रात जागता रहा
हूँ, मैं भूका और प्यासा रहा हूँ, मैंने बहुत रोज़े रखे
हैं। मुझे सर्दी और नंगेपन का तजरबा हुआ है।
28और यह उन फ़िकरों के अलावा है जो मैं ख़ुदा
की तमाम जमातों के लिए महसूस करता हूँ और
जो मुझे दबाती रहती हैं। 29जब कोई कमज़ोर है
तो मैं अपने आपको भी कमज़ोर महसूस करता
हूँ। जब किसी को ग़लत राह पर लाया जाता है
तो मैं उसके लिए शदीद रंजिश महसूस करता हूँ।

30अगर मुझे फ़ख़र करना पड़े तो मैं उन चीज़ों
पर फ़ख़र करूँगा जो मेरी कमज़ोर हालत ज़ाहिर
करती हैं। 31हमारा ख़ुदा और ख़ुदावंद ईसा का
बाप (उस की हम्दो-सना अबद तक हो) जानता
है कि मैं झूट नहीं बोल रहा। 32जब मैं दमिश्क़
शहर में था तो बादशाह अरितास के गवर्नर ने शहर
के तमाम दरवाज़ों पर अपने पहरेदार मुक़र्रर किए
ताकि वह मुझे गिरिफ़्तार करें। 33लेकिन शहर की
फ़सील में एक दरीचा था, और मुझे एक टोकरे
में रखकर वहाँ से उतारा गया। यों मैं उसके हाथों
से बच निकला।

पौलुस पर कई बातों का इनकिशाफ़

12 लाज़िम है कि मैं कुछ और फ़ख़र
करूँ। अगरचे इसका कोई फ़ायदा
नहीं, लेकिन अब मैं उन रोयाओं और
इनकिशाफ़ात का ज़िक्र करूँगा जो ख़ुदावंद ने
मुझ पर ज़ाहिर किए। 2मैं मसीह में एक आदमी
को जानता हूँ जिसे चौदह साल हुए छीनकर तीसरे
आसमान तक पहुँचाया गया। मुझे नहीं पता कि
उसे यह तजरबा जिस्म में या इसके बाहर हुआ।
ख़ुदा जानता है। 3हाँ, ख़ुदा ही जानता है कि वह
जिस्म में था या नहीं। लेकिन यह मैं जानता हूँ
4कि उसे छीनकर फ़िर्दौस में लाया गया जहाँ
उसने नाक़ाबिले-बयान बातें सुनीं, ऐसी बातें
जिनका ज़िक्र करना इनसान के लिए रवा नहीं।
5इस क़िस्म के आदमी पर मैं फ़ख़र करूँगा,
लेकिन अपने आप पर नहीं। मैं सिर्फ़ उन बातों
पर फ़ख़र करूँगा जो मेरी कमज़ोर हालत को
ज़ाहिर करती हैं। 6अगर मैं फ़ख़र करना चाहता
तो इसमें अहमक़ न होता, क्योंकि मैं हक़ीक़त
बयान करता। लेकिन मैं यह नहीं करूँगा, क्योंकि
मैं चाहता हूँ कि सबकी मेरे बारे में राय सिर्फ़ उस
पर मुनहसिर हो जो मैं करता या बयान करता हूँ।
कोई मुझे इससे ज़्यादा न समझे।

7लेकिन मुझे इन आला इनकिशाफ़ात की
वजह से एक काँटा चुभो दिया गया, एक
तकलीफ़देह चीज़ जो मेरे जिस्म में धँसी रहती
है ताकि मैं फूल न जाऊँ। इबलीस का यह पैग़ंबर
मेरे मुक्के मारता रहता है ताकि मैं मग़रूर न हो
जाऊँ। 8तीन बार मैंने ख़ुदावंद से इल्तिजा की
कि वह इसे मुझसे दूर करे। 9लेकिन उसने मुझे
यही जवाब दिया, “मेरा फ़ज़्ल तेरे लिए काफ़ी है,
क्योंकि मेरी क़ुदरत का पूरा इज़हार तेरी कमज़ोर
हालत ही में होता है।” इसलिए मैं मज़ीद ख़ुशी से
अपनी कमज़ोरियों पर फ़ख़र करूँगा ताकि मसीह
की क़ुदरत मुझ पर ठहरी रहे। 10यही वजह है
कि मैं मसीह की ख़ातिर कमज़ोरियों, गालियों,
मजबूरियों, ईज़ारसानियों और परेशानियों में ख़ुश

हूँ, क्योंकि जब मैं कमज़ोर होता हूँ तब ही मैं
ताक़तवर होता हूँ।

पौलुस की कुरिंथियों के लिए फ़िकर

11मैं बेवुक़ूफ़ बन गया हूँ, लेकिन आपने मुझे
मजबूर कर दिया है। चाहिए था कि आप ही दूसरों
के सामने मेरे हक़ में बात करते। क्योंकि बेशक
मैं कुछ भी नहीं हूँ, लेकिन इन नाम-निहाद ख़ास
रसूलों के मुक़ाबले में मैं किसी भी लिहाज़ से कम
नहीं हूँ। 12जो मुतअद्दिद इलाही निशान, मोजिज़े
और ज़बरदस्त काम मेरे वसीले से हुए वह साबित
करते हैं कि मैं रसूल हूँ। हाँ, वह बड़ी साबितक़दमी
से आपके दरमियान किए गए। 13जो ख़िदमत
मैंने आपके दरमियान की, क्या वह ख़ुदा की दीगर
जमातों में मेरी ख़िदमत की निसबत कम थी?
हरगिज़ नहीं! इसमें फ़रक़ सिर्फ़ यह था कि मैं
आपके लिए माली बोझ न बना। मुझे मुआफ़ करें
अगर मुझसे इसमें ग़लती हुई है।

14अब मैं तीसरी बार आपके पास आने के लिए
तैयार हूँ। इस मरतबा भी मैं आपके लिए बोझ
का बाइस नहीं बनूँगा, क्योंकि मैं आपका माल
नहीं बल्कि आप ही को चाहता हूँ। आख़िर बच्चों
को माँ-बाप की मदद के लिए माल जमा नहीं
करना चाहिए बल्कि माँ-बाप को बच्चों के लिए।
15मैं तो बड़ी ख़ुशी से आपके लिए हर ख़र्चा उठा
लूँगा बल्कि अपने आपको भी ख़र्च कर दूँगा। क्या
आप मुझे कम प्यार करेंगे अगर मैं आपसे ज़्यादा
मुहब्बत रखूँ?

16ठीक है, मैं आपके लिए बोझ न बना। लेकिन
बाज़ सोचते हैं कि मैं चालाक हूँ और आपको धोके
से अपने जाल में फँसा लिया। 17किस तरह?
जिन लोगों को मैंने आपके पास भेजा क्या मैंने
उनमें से किसी के ज़रीए आपसे ग़लत फ़ायदा
उठाया? 18मैंने तितुस की हौसलाअफ़्ज़ाई की
कि वह आपके पास जाए और दूसरे भाई को
भी साथ भेज दिया। क्या तितुस ने आपसे ग़लत
फ़ायदा उठाया? हरगिज़ नहीं! क्योंकि हम दोनों
एक ही रूह में एक ही राह पर चलते हैं।

19आप काफ़ी देर से सोच रहे होंगे कि हम
आपके सामने अपना दिफ़ा कर रहे हैं। लेकिन
ऐसा नहीं है बल्कि हम मसीह में होते हुए अल्लाह
के हुज़ूर ही यह कुछ बयान कर रहे हैं। और मेरे
अज़ीज़ो, जो कुछ भी हम करते हैं हम आपकी
तामीर करने के लिए करते हैं। 20मुझे डर है कि
जब मैं आऊँगा तो न आपकी हालत मुझे पसंद
आएगी, न मेरी हालत आपको। मुझे डर है कि
आपमें झगड़ा, हसद, ग़ुस्सा, ख़ुदग़रज़ी, बुहतान,
गपबाज़ी, ग़ुरूर और बेतरतीबी पाई जाएगी।
21हाँ, मुझे डर है कि अगली दफ़ा जब आऊँगा
तो अल्लाह मुझे आपके सामने नीचा दिखाएगा,
और मैं उन बहुतों के लिए ग़म खाऊँगा जिन्होंने
माज़ी में गुनाह करके अब तक अपनी नापाकी,
ज़िनाकारी और ऐयाशी से तौबा नहीं की।

आख़िरी तंबीह और सलाम

13 अब मैं तीसरी दफ़ा आपके पास आ
रहा हूँ। कलामे-मुक़द्दस के मुताबिक़
लाज़िम है कि हर इलज़ाम की तसदीक़ दो या
तीन गवाहों से की जाए। 2जब मैं दूसरी दफ़ा
आपके पास आया था तो मैंने पहले से आपको
आगाह किया था। अब मैं आपसे दूर यह बात
दुबारा कहता हूँ कि जब मैं वापस आऊँगा तो न
वह बचेंगे जिन्होंने पहले गुनाह किया था न दीगर
लोग। 3जो भी सबूत आप माँग रहे हैं कि मसीह
मेरे ज़रीए बोलता है वह मैं आपको दूँगा। आपके
साथ सुलूक में मसीह कमज़ोर नहीं है। नहीं, वह
आपके दरमियान ही अपनी क़ुव्वत का इज़हार
करता है। 4क्योंकि अगरचे उसे कमज़ोर हालत
में मसलूब किया गया, लेकिन अब वह अल्लाह
की क़ुदरत से ज़िंदा है। इसी तरह हम भी उसमें
कमज़ोर हैं, लेकिन अल्लाह की क़ुदरत से हम
आपकी ख़िदमत करते वक़्त उसके साथ ज़िंदा
हैं।

5अपने आपको जाँचकर मालूम करें कि क्या
आपका ईमान क़ायम है? ख़ुद अपने आपको
परखें। क्या आप नहीं जानते कि ईसा मसीह

आपमें है? अगर नहीं तो इसका मतलब होता कि
आपका ईमान नामक़बूल साबित होता। 6लेकिन
मुझे उम्मीद है कि आप इतना पहचान लेंगे कि
जहाँ तक हमारा ताल्लुक़ है हम नामक़बूल साबित
नहीं हुए हैं। 7हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि
आपसे कोई ग़लती न हो जाए। बात यह नहीं
कि लोगों के सामने हम सहीह निकलें बल्कि यह
कि आप सहीह काम करें, चाहे लोग हमें ख़ुद
नाकाम क्यों न क़रार दें। 8क्योंकि हम हक़ीक़त
के ख़िलाफ़ खड़े नहीं हो सकते बल्कि सिर्फ़ उसके
हक़ में। 9हम ख़ुश हैं जब आप ताक़तवर हैं गो हम
ख़ुद कमज़ोर हैं। और हमारी दुआ यह है कि आप
कामिल हो जाएँ। 10यही वजह है कि मैं आपसे
दूर रहकर लिखता हूँ। फिर जब मैं आऊँगा तो
मुझे अपना इख़्तियार इस्तेमाल करके आप पर
सख़्ती नहीं करनी पड़ेगी। क्योंकि ख़ुदावंद ने मुझे
यह इख़्तियार आपको ढा देने के लिए नहीं बल्कि
आपको तामीर करने के लिए दिया है।

11भाइयो, आख़िर में मैं आपको सलाम कहता
हूँ। सुधर जाएँ, एक दूसरे की हौसलाअफ़्ज़ाई
करें, एक ही सोच रखें और सुलह-सलामती के
साथ ज़िंदगी गुज़ारें। फिर मुहब्बत और सलामती
का ख़ुदा आपके साथ होगा।

12एक दूसरे को मुक़द्दस बोसा देना। तमाम
मुक़द्दसीन आपको सलाम कहते हैं।

13ख़ुदावंद ईसा मसीह का फ़ज़ल, अल्लाह
की मुहब्बत और रूहुल-क़ुद्स की रिफ़ाक़त आप
सबके साथ होती रहे।

गलतियों के नाम
पौलुस रसूल का ख़त

1 यह ख़त पौलुस रसूल की तरफ़ से है। मुझे
न किसी गुरोह ने मुक़र्रर किया न किसी
शख़्स ने बल्कि ईसा मसीह और ख़ुदा बाप ने
जिसने उसे मुरदों में से ज़िंदा कर दिया। 2तमाम
भाई भी जो मेरे साथ हैं गलतिया की जमातों को
सलाम कहते हैं।

3ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावंद ईसा मसीह
आपको फ़ज़्ल और सलामती अता करें।

4मसीह वही है जिसने अपने आपको हमारे
गुनाहों की ख़ातिर क़ुरबान कर दिया और यों हमें
इस मौजूदा शरीर जहान से बचा लिया है, क्योंकि
यह अल्लाह हमारे बाप की मरज़ी थी। 5उसी का
जलाल अबद तक होता रहे! आमीन।

एक ही ख़ुशख़बरी

6मैं हैरान हूँ! आप इतनी जल्दी से उसे तर्क
कर रहे हैं जिसने मसीह के फ़ज़्ल से आपको
बुलाया। और अब आप एक फ़रक़ क़िस्म की
"ख़ुशख़बरी" के पीछे लग गए हैं। 7असल में यह
अल्लाह की ख़ुशख़बरी है नहीं। बस कुछ लोग
आपको उलझन में डालकर मसीह की ख़ुशख़बरी
में तबदीली लाना चाहते हैं। 8हमने तो असली
ख़ुशख़बरी सुनाई और जो इससे फ़रक़ पैग़ाम
सुनाता है उस पर लानत, ख़ाह हम ख़ुद ऐसा
करें ख़ाह आसमान से कोई फ़रिश्ता उतरकर यह
ग़लत पैग़ाम सुनाए। 9हम यह पहले बयान कर
चुके हैं और अब मैं दुबारा कहता हूँ कि अगर
कोई आपको ऐसी "ख़ुशख़बरी" सुनाए जो उससे
फ़रक़ है जिसे आपने क़बूल किया है तो उस पर
लानत!

10क्या मैं इसमें यह कोशिश कर रहा हूँ कि
लोग मुझे क़बूल करें? हरगिज़ नहीं! मैं चाहता हूँ
कि अल्लाह मुझे क़बूल करे। क्या मेरी कोशिश
यह है कि मैं लोगों को पसंद आऊँ? अगर मैं अब
तक ऐसा करता तो मसीह का ख़ादिम न होता।

पौलुस किस तरह रसूल बन गया

11भाइयो, मैं चाहता हूँ कि आप जान लें कि
जो ख़ुशख़बरी मैंने सुनाई वह इनसान की तरफ़
से नहीं है। 12न मुझे यह पैग़ाम किसी इनसान से
मिला, न यह मुझे किसी ने सिखाया है बल्कि ईसा
मसीह ने ख़ुद मुझ पर यह पैग़ाम ज़ाहिर किया।

13आपने तो ख़ुद सुन लिया है कि मैं उस वक़्त
किस तरह ज़िंदगी गुज़ारता था जब यहूदी मज़हब
का पैरोकार था। उस वक़्त मैंने कितने जोश और
शिद्दत से अल्लाह की जमात को ईज़ा पहुँचाई।
मेरी पूरी कोशिश यह थी कि यह जमात ख़त्म हो
जाए। 14यहूदी मज़हब के लिहाज़ से मैं अकसर
दीगर हमउम्र यहूदियों पर सबक़त ले गया था। हाँ,

मैं अपने बापदादा की रिवायतों की पैरवी में हद
से ज़्यादा सरगरम था।
15लेकिन अल्लाह ने अपने फ़ज़ल से मुझे पैदा
होने से पेशतर ही चुनकर अपनी ख़िदमत करने
के लिए बुलाया। और जब उसने अपनी मरज़ी
से 16अपने फ़रज़ंद को मुझ पर ज़ाहिर किया
ताकि मैं उसके बारे में ग़ैरयहूदियों को ख़ुशख़बरी
सुनाऊँ तो मैंने किसी भी शख़्स से मशवरा न
लिया। 17उस वक़्त मैं यरूशलम भी न गया ताकि
उनसे मिलूँ जो मुझसे पहले रसूल थे बल्कि मैं
सीधा अरब चला गया और बाद में दमिश्क़ वापस
आया। 18इसके तीन साल बाद ही मैं पतरस से
शनासा होने के लिए यरूशलम गया। वहाँ मैं पंद्रह
दिन उसके साथ रहा। 19इसके अलावा मैंने सिर्फ़
ख़ुदावंद के भाई याक़ूब को देखा, किसी और
रसूल को नहीं।
20जो कुछ मैं लिख रहा हूँ अल्लाह गवाह है कि
वह सहीह है। मैं झूट नहीं बोल रहा।
21बाद में मैं मुल्के-शाम और किलिकिया चला
गया। 22उस वक़्त सूबा यहूदिया में मसीह की
जमातें मुझे नहीं जानती थीं। 23उन तक सिर्फ़
यह ख़बर पहुँची थी कि जो आदमी पहले हमें
ईज़ा पहुँचा रहा था वह अब ख़ुद उस ईमान की
ख़ुशख़बरी सुनाता है जिसे वह पहले ख़त्म करना
चाहता था। 24यह सुनकर उन्होंने मेरी वजह से
अल्लाह की तमजीद की।

पौलुस और दीगर रसूल

2 चौदह साल के बाद मैं दुबारा यरू-
शलम गया। इस दफ़ा बरनबास साथ था।
मैं तितुस को भी साथ लेकर गया। 2मैं एक
मुकाशफ़े की वजह से गया जो अल्लाह ने मुझ
पर ज़ाहिर किया था। मेरी अलहदगी में उनके साथ
मीटिंग हुई जो असरो-रसूख़ रखते हैं। इसमें मैंने
उन्हें वह ख़ुशख़बरी पेश की जो मैं ग़ैरयहूदियों
को सुनाता हूँ। मैं नहीं चाहता था कि जो दौड़ मैं
दौड़ रहा हूँ या माज़ी में दौड़ा था वह आख़िरकार
बेफ़ायदा निकले। 3उस वक़्त वह यहाँ तक मेरे
हक़ में थे कि उन्होंने तितुस को भी अपना
ख़तना करवाने पर मजबूर नहीं किया, अगरचे
वह ग़ैरयहूदी है। 4और चंद यही चाहते थे। लेकिन
यह झूटे भाई थे जो चुपके से अंदर घुस आए थे
ताकि जासूस बनकर हमारी उस आज़ादी के बारे
में मालूमात हासिल कर लें जो हमें मसीह में मिली
है। यह हमें ग़ुलाम बनाना चाहते थे, 5लेकिन हमने
लमहा-भर उनकी बात न मानी और न उनके ताबे
हुए ताकि अल्लाह की ख़ुशख़बरी की सच्चाई
आपके दरमियान क़ायम रहे।
6और जो राहनुमा समझे जाते थे उन्होंने मेरी
बात में कोई इज़ाफ़ा न किया। (असल में मुझे
कोई परवा नहीं कि उनका असरो-रसूख़ था कि
नहीं। अल्लाह तो इनसान की ज़ाहिरी हालत
का लिहाज़ नहीं करता।) 7बहरहाल उन्होंने देखा
कि अल्लाह ने मुझे ग़ैरयहूदियों को मसीह की
ख़ुशख़बरी सुनाने की ज़िम्मेदारी दी थी, बिलकुल
उसी तरह जिस तरह उसने पतरस को यहूदियों
को यह पैग़ाम सुनाने की ज़िम्मेदारी दी थी।
8क्योंकि जो काम अल्लाह यहूदियों के रसूल
पतरस की ख़िदमत के वसीले से कर रहा था
वही काम वह मेरे वसीले से भी कर रहा था, जो
ग़ैरयहूदियों का रसूल हूँ। 9याक़ूब, पतरस और
यूहन्ना को जमात के सतून माना जाता था। जब
उन्होंने जान लिया कि अल्लाह ने इस नाते से
मुझे ख़ास फ़ज़ल दिया है तो उन्होंने मुझसे और
बरनबास से दहना हाथ मिलाकर इसका इज़हार
किया कि वह हमारे साथ हैं। यों हम मुत्तफ़िक़ हुए
कि बरनबास और मैं ग़ैरयहूदियों में ख़िदमत करेंगे
और वह यहूदियों में। 10उन्होंने सिर्फ़ एक बात पर
ज़ोर दिया कि हम ज़रूरतमंदों को याद रखें, वही
बात जिसे मैं हमेशा करने के लिए कोशाँ रहा हूँ।

अंताकिया में पौलुस पतरस को मलामत करता है

11लेकिन जब पतरस अंताकिया शहर आया
तो मैंने रूबरू उस की मुख़ालफ़त की, क्योंकि वह
अपने रवय्ये के सबब से मुजरिम ठहरा। 12जब

वह आया तो पहले वह ग़ैरयहूदी ईमानदारों के
साथ खाना खाता रहा। लेकिन फिर याक़ूब के
कुछ अज़ीज़ आए। उसी वक़्त पतरस पीछे हटकर
ग़ैरयहूदियों से अलग हुआ, क्योंकि वह उनसे
डरता था जो ग़ैरयहूदियों का ख़तना करवाने के
हक़ में थे। 13बाक़ी यहूदी भी इस रियाकारी में
शामिल हुए, यहाँ तक कि बरनबास को भी उनकी
रियाकारी से बहकाया गया। 14जब मैंने देखा कि
वह उस सीधी राह पर नहीं चल रहे हैं जो अल्लाह
की ख़ुशख़बरी की सच्चाई पर मबनी है तो मैंने
सबके सामने पतरस से कहा, “आप यहूदी हैं।
लेकिन आप ग़ैरयहूदी की तरह ज़िंदगी गुज़ार रहे
हैं, यहूदी की तरह नहीं। तो फिर यह कैसी बात है
कि आप ग़ैरयहूदियों को यहूदी रिवायात की पैरवी
करने पर मजबूर कर रहे हैं?”

सब ईमान से नजात पाते हैं

15बेशक हम पैदाइशी यहूदी हैं और ‘ग़ैरयहूदी
गुनाहगार’ नहीं हैं। 16लेकिन हम जानते हैं कि
इनसान को शरीअत की पैरवी करने से रास्तबाज़
नहीं ठहराया जाता बल्कि ईसा मसीह पर ईमान
लाने से। हम भी मसीह ईसा पर ईमान लाए हैं
ताकि हमें रास्तबाज़ क़रार दिया जाए, शरीअत
की पैरवी करने से नहीं बल्कि मसीह पर ईमान
लाने से। क्योंकि शरीअत की पैरवी करने से
किसी को भी रास्तबाज़ क़रार नहीं दिया जाएगा।
17लेकिन अगर मसीह में रास्तबाज़ ठहरने की
कोशिश करते करते हम ख़ुद गुनाहगार साबित
हो जाएँ तो क्या इसका मतलब यह है कि मसीह
गुनाह का ख़ादिम है? हरगिज़ नहीं! 18अगर
मैं शरीअत के उस निज़ाम को दुबारा तामीर करूँ
जो मैंने ढा दिया तो फिर मैं ज़ाहिर करता हूँ कि
मैं मुजरिम हूँ। 19क्योंकि जहाँ तक शरीअत का
ताल्लुक़ है मैं मुरदा हूँ। मुझे शरीअत ही से मारा
गया है ताकि अल्लाह के लिए जी सकूँ। मुझे
मसीह के साथ मसलूब किया गया 20और यों
मैं ख़ुद ज़िंदा न रहा बल्कि मसीह मुझमें ज़िंदा
है। अब जो ज़िंदगी मैं इस जिस्म में गुज़ारता
हूँ वह अल्लाह के फ़रज़ंद पर ईमान लाने से
गुज़ारता हूँ। उसी ने मुझसे मुहब्बत रखकर मेरे
लिए अपनी जान दी। 21मैं अल्लाह का फ़ज़ल रद्द
करने से इनकार करता हूँ। क्योंकि अगर किसी
को शरीअत की पैरवी करने से रास्तबाज़ ठहराया
जा सकता तो इसका मतलब यह होता कि मसीह
का मरना अबस था।

शरीअत या ईमान

3 नासमझ गलतियो! किसने आप पर जादू
कर दिया? आपकी आँखों के सामने ही
ईसा मसीह और उस की सलीबी मौत को साफ़
साफ़ पेश किया गया। 2मुझे एक बात बताएँ,
क्या आपको शरीअत की पैरवी करने से रूहुल-
क़ुद्स मिला? हरगिज़ नहीं! वह आपको उस
वक़्त मिला जब आप मसीह के बारे में पैग़ाम
सुनकर उस पर ईमान लाए। 3क्या आप इतने
बेसमझ हैं? आपकी रूहानी ज़िंदगी रूहुल-क़ुद्स
के वसीले से शुरू हुई। तो अब आप यह काम
अपनी इनसानी कोशिशों से किस तरह तकमील
तक पहुँचाना चाहते हैं? 4आपको कई तरह के
तजरबे हासिल हुए हैं। क्या यह सब बेफ़ायदा थे?
यक़ीनन यह बेफ़ायदा नहीं थे। 5क्या अल्लाह
इसलिए आपको अपना रूह देता और आपके
दरमियान मोजिज़े करता है कि आप शरीअत की
पैरवी करते हैं? हरगिज़ नहीं, बल्कि इसलिए कि
आप मसीह के बारे में पैग़ाम सुनकर ईमान लाए
हैं।

6इब्राहीम की मिसाल लें। उसने अल्लाह पर
भरोसा किया और इस बिना पर अल्लाह ने उसे
रास्तबाज़ क़रार दिया। 7तो फिर आपको जान
लेना चाहिए कि इब्राहीम की हक़ीक़ी औलाद वह
लोग हैं जो ईमान रखते हैं। 8कलामे-मुक़द्दस ने
इस बात की पेशगोई की कि अल्लाह ग़ैरयहूदियों
को ईमान के ज़रीए रास्तबाज़ क़रार देगा। यों
उसने इब्राहीम को यह ख़ुशख़बरी सुनाई, “तमाम
क़ौमें तुझसे बरकत पाएँगी।” 9इब्राहीम ईमान
लाया, इसलिए उसे बरकत मिली। इसी तरह

सबको ईमान लाने पर इब्राहीम की-सी बरकत
मिलती है।
10लेकिन जो भी इस पर तकिया करते हैं
कि हमें शरीअत की पैरवी करने से रास्तबाज़
क़रार दिया जाएगा उन पर अल्लाह की लानत
है। क्योंकि कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता है, “हर एक
पर लानत जो शरीअत की किताब की तमाम बातें
क़ायम न रखे, न इन पर अमल करे।”
11यह बात
तो साफ़ है कि अल्लाह किसी को भी शरीअत की
पैरवी करने की बिना पर रास्तबाज़ नहीं ठहराता,
क्योंकि कलामे-मुक़द्दस के मुताबिक़ रास्तबाज़
ईमान ही से जीता रहेगा।
12ईमान की यह राह
शरीअत की राह से बिलकुल फ़रक़ है जो कहती
है, “जो यों करेगा वह जीता रहेगा।”
13लेकिन मसीह ने हमारा फ़िद्या देकर हमें
शरीअत की लानत से आज़ाद कर दिया है। यह
उसने इस तरह किया कि वह हमारी ख़ातिर ख़ुद
लानत बना। क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में लिखा है,
“जिसे भी दरख़्त से लटकाया गया है उस पर
अल्लाह की लानत है।”
14इसका मक़सद यह
था कि जो बरकत इब्राहीम को हासिल हुई वह
मसीह के वसीले से ग़ैरयहूदियों को भी मिले और
यों हम ईमान लाकर वादा किया हुआ रूह पाएँ।

शरीअत और वादा

15भाइयो, इनसानी ज़िंदगी की एक मि-
साल लें। जब दो पार्टियाँ किसी मामले में
मुत्तफ़िक़ होकर मुआहदा करती हैं तो कोई इस
मुआहदे को मनसूख़ या इसमें इज़ाफ़ा नहीं कर
सकता।
16अब ग़ौर करें कि अल्लाह ने अपने वादे
इब्राहीम और उस की औलाद से ही किए। लेकिन
जो लफ़्ज़ इबरानी में औलाद के लिए इस्तेमाल
हुआ है इससे मुराद बहुत-से अफ़राद नहीं बल्कि
एक फ़रद है और वह है मसीह।
17कहने से मुराद
यह है कि अल्लाह ने इब्राहीम से अहद बाँधकर
उसे क़ायम रखने का वादा किया। शरीअत जो
430 साल के बाद दी गई इस अहद को रद्द
करके अल्लाह का वादा मनसूख़ नहीं कर सकती।
18क्योंकि अगर इब्राहीम की मीरास शरीअत की
पैरवी करने से मिलती तो फिर वह अल्लाह के
वादे पर मुनहसिर न होती। लेकिन ऐसा नहीं था।
अल्लाह ने इसे अपने वादे की बिना पर इब्राहीम
को दे दिया।
19तो फिर शरीअत का क्या मक़सद था? उसे
इसलिए वादे के अलावा दिया गया ताकि लोगों
के गुनाहों को ज़ाहिर करे। और उसे उस वक़्त तक
क़ायम रहना था जब तक इब्राहीम की वह औलाद
न आ जाती जिससे वादा किया गया था। अल्लाह
ने अपनी शरीअत फ़रिश्तों के वसीले से मूसा को
दे दी जो अल्लाह और लोगों के बीच में दरमियानी
रहा।
20अब दरमियानी उस वक़्त ज़रूरी होता है
जब एक से ज़्यादा पार्टियों में इत्तफ़ाक़ कराने की
ज़रूरत है। लेकिन अल्लाह जो एक ही है उसने
दरमियानी इस्तेमाल न किया जब उसने इब्राहीम
से वादा किया।

शरीअत का मक़सद

21तो क्या इसका मतलब यह है कि शरीअत
अल्लाह के वादों के ख़िलाफ़ है? हरगिज़ नहीं!
अगर इनसान को ऐसी शरीअत मिली होती जो
ज़िंदगी दिला सकती तो फिर सब उस की पैरवी
करने से रास्तबाज़ ठहरते।
22लेकिन कलामे-
मुक़द्दस फ़रमाता है कि पूरी दुनिया गुनाह के
क़ब्ज़े में है। चुनाँचे हमें अल्लाह का वादा सिर्फ़
ईसा मसीह पर ईमान लाने से हासिल होता है।
23इससे पहले कि ईमान की यह राह दस्तयाब
हुई शरीअत ने हमें क़ैद करके महफ़ूज़ रखा था।
इस क़ैद में हम उस वक़्त तक रहे जब तक ईमान
की राह ज़ाहिर नहीं हुई थी।
24यों शरीअत को
हमारी तरबियत करने की ज़िम्मेदारी दी गई। उसे
हमें मसीह तक पहुँचाना था ताकि हमें ईमान से
रास्तबाज़ क़रार दिया जाए।
25अब चूँकि ईमान
की राह आ गई है इसलिए हम शरीअत की
तरबियत के तहत नहीं रहे।
26क्योंकि मसीह ईसा पर ईमान लाने से आप
सब अल्लाह के फ़रज़ंद बन गए हैं।
27आपमें से

जितनों को मसीह में बपतिस्मा दिया गया उन्होंने मसीह को पहन लिया। 28अब न यहूदी रहा न ग़ैरयहूदी, न ग़ुलाम रहा न आज़ाद, न मर्द रहा न औरत। मसीह ईसा में आप सबके सब एक हैं। 29शर्त यह है कि आप मसीह के हों। तब आप इब्राहीम की औलाद और उन चीज़ों के वारिस हैं जिनका वादा अल्लाह ने किया है।

4 देखें, जो बेटा अपने बाप की मिलकियत का वारिस है वह उस वक़्त तक ग़ुलामों से फ़रक़ नहीं जब तक वह बालिग़ न हो, हालाँकि वह पूरी मिलकियत का मालिक है। 2बाप की तरफ़ से मुक़र्रर की हुई उम्र तक दूसरे उस की देख-भाल करते और उस की मिलकियत सँभालते हैं। 3इसी तरह हम भी जब बच्चे थे दुनिया की कुव्वतों के ग़ुलाम थे। 4लेकिन जब मुक़र्ररा वक़्त आ गया तो अल्लाह ने अपने फ़रज़ंद को भेज दिया। एक औरत से पैदा होकर वह शरीअत के ताबे हुआ 5ताकि फ़िद्या देकर हमें जो शरीअत के ताबे थे आज़ाद कर दे। यों हमें अल्लाह के फ़रज़ंद होने का मरतबा मिला है।

6अब चूँकि आप उसके फ़रज़ंद हैं इसलिए अल्लाह ने अपने फ़रज़ंद के रूह को हमारे दिलों में भेज दिया, वह रूह जो "अब्बा" यानी "ऐ बाप" कहकर पुकारता रहता है। 7ग़रज़ अब आप ग़ुलाम न रहे बल्कि बेटे की हैसियत रखते हैं। और बेटा होने का यह मतलब है कि अल्लाह ने आपको वारिस भी बना दिया है।

पौलुस की गलतियों के लिए फ़िकर

8माज़ी में जब आप अल्लाह को नहीं जानते थे तो आप उनके ग़ुलाम थे जो हक़ीक़त में ख़ुदा नहीं हैं। 9लेकिन अब आप अल्लाह को जानते हैं, बल्कि अब अल्लाह ने आपको जान लिया है। तो फिर आप मुड़कर इन कमज़ोर और घटिया उसूलों की तरफ़ क्यों वापस जाने लगे हैं? क्या आप दुबारा इनकी ग़ुलामी में आना चाहते हैं? 10आप बड़ी फ़िकरमंदी से ख़ास दिन, माह, मौसम और साल मनाते हैं। 11मुझे आपके बारे में डर है, कहीं मेरी आप पर मेहनत-मशक़्क़त ज़ाया न जाए।

12भाइयो, मैं आपसे इल्तिजा करता हूँ कि मेरी मानिंद बन जाएँ, क्योंकि मैं तो आपकी मानिंद बन गया हूँ। आपने मेरे साथ कोई ग़लत सुलूक नहीं किया। 13आपको मालूम है कि जब मैंने पहली दफ़ा आपको अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाई तो इसकी वजह मेरे जिस्म की कमज़ोर हालत थी। 14लेकिन अगरचे मेरी यह हालत आपके लिए आज़माइश का बाइस थी तो भी आपने मुझे हक़ीर न जाना, न मुझे नीच समझा, बल्कि आपने मुझे यों ख़ुशआमदीद कहा जैसा कि मैं अल्लाह का कोई फ़रिश्ता या मसीह ईसा ख़ुद हूँ। 15उस वक़्त आप इतने ख़ुश थे! अब क्या हुआ है? मैं गवाह हूँ, उस वक़्त अगर आपको मौक़ा मिलता तो आप अपनी आँखें निकालकर मुझे दे देते। 16तो क्या अब मैं आपको हक़ीक़त बताने की वजह से आपका दुश्मन बन गया हूँ?

17वह दूसरे लोग आपकी दोस्ती पाने की पूरी जिद्दो-जहद कर रहे हैं, लेकिन उनकी नीयत साफ़ नहीं है। बस वह आपको मुझसे जुदा करना चाहते हैं ताकि आप उन्हीं के हक़ में जिद्दो-जहद करते रहें। 18जब लोग आपकी दोस्ती पाने की जिद्दो-जहद करते हैं तो यह है तो ठीक, लेकिन इसका मक़सद अच्छा होना चाहिए। हाँ, सहीह जिद्दो-जहद हर वक़्त अच्छी होती है, न सिर्फ़ इस वक़्त जब मैं आपके दरमियान हूँ। 19मेरे प्यारे बच्चो! अब मैं दुबारा आपको जन्म देने का-सा दर्द महसूस कर रहा हूँ और उस वक़्त तक करता रहूँगा जब तक मसीह आपमें सूरत न पकड़े। 20काश मैं उस वक़्त आपके पास होता ताकि फ़रक़ अंदाज़ में आपसे बात कर सकता, क्योंकि मैं आपके सबब से बड़ी उलझन में हूँ!

हाजिरा और सारा की मिसाल

21आप जो शरीअत के ताबे रहना चाहते हैं मुझे एक बात बताएँ, क्या आप वह बात नहीं सुनते जो शरीअत कहती है? 22वह कहती है कि

इब्राहीम के दो बेटे थे। एक लौंडी का बेटा था, एक
आज़ाद औरत का। 23लौंडी के बेटे की पैदाइश
हसबे-मामूल थी, लेकिन आज़ाद औरत के बेटे
की पैदाइश ग़ैरमामूली थी, क्योंकि उसमें अल्लाह
का वादा पूरा हुआ। 24जब यह किनायतन समझा
जाए तो यह दो ख़वातीन अल्लाह के दो अहदों की
नुमाइंदगी करती हैं। पहली ख़ातून हाजिरा सीना
पहाड़ पर बँधे हुए अहद की नुमाइंदगी करती है,
और जो बच्चे उससे पैदा होते हैं वह ग़ुलामी के
लिए मुक़र्रर हैं। 25हाजिरा जो अरब में वाक़े पहाड़
सीना की अलामत है मौजूदा शहर यरूशलम
से मुताबिक़त रखती है। वह और उसके तमाम
बच्चे ग़ुलामी में ज़िंदगी गुज़ारते हैं। 26लेकिन
आसमानी यरूशलम आज़ाद है और वही हमारी
माँ है। 27क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में लिखा है,

“ख़ुश हो जा, तू जो बेऔलाद है,
जो बच्चे को जन्म ही नहीं दे सकती।
बुलंद आवाज़ से शादियाना बजा,
तू जिसे पैदाइश का दर्द न हुआ।
क्योंकि अब तर्क की हुई औरत के बच्चे
शादीशुदा औरत के बच्चों से ज़्यादा हैं।”

28भाइयो, आप इसहाक़ की तरह अल्लाह
के वादे के फ़रज़ंद हैं। 29उस वक़्त इसमाईल
ने जो हसबे-मामूल पैदा हुआ था इसहाक़ को
सताया जो रूहुल-क़ुद्स की क़ुदरत से पैदा हुआ
था। आज भी ऐसा ही है। 30लेकिन कलामे-
मुक़द्दस में क्या फ़रमाया गया है? “इस लौंडी
और इसके बेटे को घर से निकाल दें, क्योंकि
वह आज़ाद औरत के बेटे के साथ विरसा नहीं
पाएगा।” 31ग़रज़ भाइयो, हम लौंडी के फ़रज़ंद
नहीं हैं बल्कि आज़ाद औरत के।

अपनी आज़ादी महफ़ूज़ रखें

5 मसीह ने हमें आज़ाद रहने के लिए ही
आज़ाद किया है। तो अब क़ायम रहें और
दुबारा अपने गले में ग़ुलामी का जुआ डालने न दें।
2सुनें! मैं पौलुस आपको बताता हूँ कि
अगर आप अपना ख़तना करवाएँ तो आप-
को मसीह का कोई फ़ायदा नहीं होगा। 3मैं एक
बार फिर इस बात की तसदीक़ करता हूँ कि
जिसने भी अपना ख़तना करवाया उसका फ़र्ज़
है कि वह पूरी शरीअत की पैरवी करे। 4आप जो
शरीअत की पैरवी करने से रास्तबाज़ बनना चाहते
हैं आपका मसीह के साथ कोई वास्ता न रहा।
हाँ, आप अल्लाह के फ़ज़ल से दूर हो गए हैं।
5लेकिन हमें एक फ़रक़ उम्मीद दिलाई गई है।
उम्मीद यह है कि ख़ुदा ही हमें रास्तबाज़ क़रार
देता है। चुनाँचे हम रूहुल-क़ुद्स के बाइस ईमान
रखकर इसी रास्तबाज़ी के लिए तड़पते रहते हैं।
6क्योंकि जब हम मसीह ईसा में होते हैं तो ख़तना
करवाने या न करवाने से कोई फ़रक़ नहीं पड़ता।
फ़रक़ सिर्फ़ उस ईमान से पड़ता है जो मुहब्बत
करने से ज़ाहिर होता है।

7आप ईमान की दौड़ में अच्छी तरक़्क़ी कर रहे
थे! तो फिर किसने आपको सच्चाई की पैरवी
करने से रोक लिया? 8किसने आपको उभारा?
अल्लाह तो नहीं था जो आपको बुलाता है। 9देखें,
थोड़ा-सा ख़मीर तमाम गुँधे हुए आटे को ख़मीर
कर देता है। 10मुझे ख़ुदावंद में आप पर इतना
एतमाद है कि आप यही सोच रखते हैं। जो भी
आपमें अफ़रा-तफ़री पैदा कर रहा है उसे सज़ा
मिलेगी।

11भाइयो, जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है, अगर मैं
यह पैग़ाम देता कि अब तक ख़तना करवाने की
ज़रूरत है तो मेरी ईज़ारसानी क्यों हो रही होती?
अगर ऐसा होता तो लोग मसीह के मसलूब होने
के बारे में सुनकर ठोकर न खाते। 12बेहतर है कि
आपको परेशान करनेवाले न सिर्फ़ अपना ख़तना
करवाएँ बल्कि ख़ोजे बन जाएँ।

13भाइयो, आपको आज़ाद होने के लिए
बुलाया गया है। लेकिन ख़बरदार रहें कि इस
आज़ादी से आपकी गुनाहआलूदा फ़ितरत को
अमल में आने का मौक़ा न मिले। इसके बजाए
मुहब्बत की रूह में एक दूसरे की ख़िदमत करें।
14क्योंकि पूरी शरीअत एक ही हुक्म में समाई हुई
है, “अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू

अपने आपसे रखता है।” 15अगर आप एक दूसरे
को काटते और फाड़ते हैं तो ख़बरदार! ऐसा न
हो कि आप एक दूसरे को ख़त्म करके सबके सब
तबाह हो जाएँ।

रूहुल-क़ुद्स और इनसानी फ़ितरत

16मैं तो यह कहता हूँ कि रूहुल-क़ुद्स में
ज़िंदगी गुज़ारें। फिर आप अपनी पुरानी फ़ितरत
की ख़ाहिशात पूरी नहीं करेंगे। 17क्योंकि जो
कुछ हमारी पुरानी फ़ितरत चाहती है वह उसके
ख़िलाफ़ है जो रूह चाहता है, और जो कुछ रूह
चाहता है वह उसके ख़िलाफ़ है जो हमारी पुरानी
फ़ितरत चाहती है। यह दोनों एक दूसरे के दुश्मन
हैं, इसलिए आप वह कुछ नहीं कर पाते जो
आप करना चाहते हैं। 18लेकिन जब रूहुल-क़ुद्स
आपकी राहनुमाई करता है तो आप शरीअत के
ताबे नहीं होते।

19जो काम पुरानी फ़ितरत करती है वह साफ़
ज़ाहिर होता है। मसलन ज़िनाकारी, नापाकी,
ऐयाशी, 20बुतपरस्ती, जादूगरी, दुश्मनी, झगड़ा,
हसद, ग़ुस्सा, ख़ुदग़रज़ी, अनबन, पार्टीबाज़ी,
21जलन, नशाबाज़ी, रंगरलियाँ वग़ैरा। मैं पहले
भी आपको आगाह कर चुका हूँ, लेकिन अब एक
बार फिर कहता हूँ कि जो इस तरह की ज़िंदगी
गुज़ारते हैं वह अल्लाह की बादशाही मीरास में
नहीं पाएँगे।

22रूहुल-क़ुद्स का फल फ़रक़ है। वह
मुहब्बत, ख़ुशी, सुलह-सलामती, सब्र, मेहर-
बानी, नेकी, वफ़ादारी, 23नरमी और ज़ब्ते-नफ़्स
पैदा करता है। शरीअत ऐसी चीज़ों के ख़िलाफ़
नहीं होती। 24और जो मसीह ईसा के हैं उन्होंने
अपनी पुरानी फ़ितरत को उस की रग़बतों और
बुरी ख़ाहिशों समेत मसलूब कर दिया है। 25चूँकि
हम रूह में ज़िंदगी गुज़ारते हैं इसलिए आएँ, हम
क़दम बक़दम उसके मुताबिक़ चलते भी रहें। 26न
हम मग़रूर हों, न एक दूसरे को मुश्तइल करें या
एक दूसरे से हसद करें।

एक दूसरे के बोझ उठाना

6 भाइयो, अगर कोई किसी गुनाह में फँस
जाए तो आप जो रूहानी हैं उसे नरमदिली
से बहाल करें। लेकिन अपना भी ख़याल रखें,
ऐसा न हो कि आप भी आज़माइश में फँस जाएँ।
2बोझ उठाने में एक दूसरे की मदद करें, क्योंकि
इस तरह आप मसीह की शरीअत पूरी करेंगे। 3जो
समझता है कि मैं कुछ हूँ अगरचे वह हक़ीक़त
में कुछ भी नहीं है तो वह अपने आपको फ़रेब
दे रहा है। 4हर एक अपना ज़ाती अमल परखे।
फिर ही उसे अपने आप पर फ़ख़र का मौक़ा होगा
और उसे किसी दूसरे से अपना मुवाज़ना करने
की ज़रूरत न होगी। 5क्योंकि हर एक को अपना
ज़ाती बोझ उठाना होता है।

6जिसे कलामे-मुक़द्दस की तालीम दी जाती है
उसका फ़र्ज़ है कि वह अपने उस्ताद को अपनी
तमाम अच्छी चीज़ों में शरीक करे।

7फ़रेब मत खाना, अल्लाह इनसान को अपना
मज़ाक़ उड़ाने नहीं देता। जो कुछ भी इनसान
बोता है उसी की फ़सल वह काटेगा। 8जो अपनी
पुरानी फ़ितरत के खेत में बीज बोए वह हलाकत
की फ़सल काटेगा। और जो रूहुल-क़ुद्स के खेत
में बीज बोए वह अबदी ज़िंदगी की फ़सल काटेगा।
9चुनाँचे हम नेक काम करने में बेदिल न हो जाएँ,
क्योंकि हम मुक़र्ररा वक़्त पर ज़रूर फ़सल की
कटाई करेंगे। शर्त सिर्फ़ यह है कि हम हथियार न
डालें। 10इसलिए आएँ, जितना वक़्त रह गया है
सबके साथ नेकी करें, ख़ासकर उनके साथ जो
ईमान में हमारे भाई और बहनें हैं।

आख़िरी आगाही और सलाम

11देखें, मैं बड़े बड़े हुरूफ़ के साथ अपने
हाथ से आपको लिख रहा हूँ। 12यह लोग जो
दुनिया के सामने इज़्ज़त हासिल करना चाहते हैं
आपको ख़तना करवाने पर मजबूर करना चाहते
हैं। मक़सद उनका सिर्फ़ एक ही है, कि वह उस
ईज़ारसानी से बचे रहें जो तब पैदा होती है जब
हम मसीह की सलीबी मौत की तालीम देते हैं।

13बात यह है कि जो अपना ख़तना कराते हैं वह
ख़ुद शरीअत की पैरवी नहीं करते। तो भी यह
चाहते हैं कि आप अपना ख़तना करवाएँ ताकि
आपके जिस्म की हालत पर वह फ़ख़र कर सकें।
14लेकिन ख़ुदा करे कि मैं सिर्फ़ हमारे ख़ुदावंद
ईसा मसीह की सलीब ही पर फ़ख़र करूँ। क्योंकि
उस की सलीब से दुनिया मेरे लिए मसलूब हुई
है और मैं दुनिया के लिए। 15ख़तना करवाने
या न करवाने से कोई फ़रक़ नहीं पड़ता बल्कि
फ़रक़ उस वक़्त पड़ता है जब अल्लाह किसी
को नए सिरे से ख़लक़ करता है। 16जो भी इस
उसूल पर अमल करते हैं उन्हें सलामती और रहम
हासिल होता रहे, उन्हें भी और अल्लाह की क़ौम
इसराईल को भी।

17आइंदा कोई मुझे तकलीफ़ न दे, क्योंकि मेरे
जिस्म पर ज़ख़मों के निशान ज़ाहिर करते हैं कि
मैं ईसा का ग़ुलाम हूँ।

18भाइयो, हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह का
फ़ज़ल आपकी रूह के साथ होता रहे। आमीन।

इफ़िसियों के नाम
पौलुस रसूल का ख़त

1 यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है, जो
अल्लाह की मरज़ी से मसीह ईसा का
रसूल है।
मैं इफ़िसुस शहर के मुक़द्दसीन को लिख रहा
हूँ, उन्हें जो मसीह ईसा में ईमानदार हैं।
2ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावंद ईसा मसीह
आपको फ़ज़ल और सलामती बख़्शें।

मसीह में रूहानी बरकतें

3ख़ुदा हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के बाप की
हम्दो-सना हो! क्योंकि मसीह में उसने हमें
आसमान पर हर रूहानी बरकत से नवाज़ा है।
4दुनिया की तख़लीक़ से पेशतर ही उसने मसीह
में हमें चुन लिया ताकि हम मुक़द्दस और बेऐब
हालत में उसके सामने ज़िंदगी गुज़ारें।
यह कितनी अज़ीम मुहब्बत थी! 5पहले ही
से उसने फ़ैसला कर लिया कि वह हमें मसीह में
अपने बेटे-बेटियाँ बना लेगा। यही उस की मरज़ी
और ख़ुशी थी 6ताकि हम उसके जलाली फ़ज़ल
की तमजीद करें, उस मुफ़्त नेमत के लिए जो
उसने हमें अपने प्यारे फ़रज़ंद में दे दी। 7क्योंकि
उसने मसीह के ख़ून से हमारा फ़िद्या देकर हमें
आज़ाद और हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर दिया
है। अल्लाह का यह फ़ज़ल कितना वसी है 8जो
उसने कसरत से हमें अता किया है।
अपनी पूरी हिकमत और दानाई का इज़हार
करके 9अल्लाह ने हम पर अपनी पोशीदा मरज़ी
ज़ाहिर कर दी, यानी वह मनसूबा जो उसे पसंद
था और जो उसने मसीह में पहले से बना रखा था।
10मनसूबा यह है कि जब मुक़र्ररा वक़्त आएगा
तो अल्लाह मसीह में तमाम कायनात को जमा
कर देगा। उस वक़्त सब कुछ मिलकर मसीह के
तहत हो जाएगा, ख़ाह वह आसमान पर हो या
ज़मीन पर।
11मसीह में हम आसमानी बादशाही के वारिस
भी बन गए हैं। अल्लाह ने पहले से हमें इसके लिए
मुक़र्रर किया, क्योंकि वह सब कुछ यों सरंजाम
देता है कि उस की मरज़ी का इरादा पूरा हो जाए।
12और वह चाहता है कि हम उसके जलाल की
सताइश का बाइस बनें, हम जिन्होंने पहले से
मसीह पर उम्मीद रखी।
13आप भी मसीह में हैं, क्योंकि आप सच्चाई
का कलाम और अपनी नजात की ख़ुशख़बरी
सुनकर ईमान लाए। और अल्लाह ने आप पर
भी रूहुल-क़ुद्स की मुहर लगा दी जिसका वादा
उसने किया था। 14रूहुल-क़ुद्स हमारी मीरास
का बयाना है। वह हमें यह ज़मानत देता है कि
अल्लाह हमारा जो उस की मिलकियत हैं फ़िद्या
देकर हमें पूरी मख़लसी तक पहुँचाएगा। क्योंकि

हमारी ज़िंदगी का मक़सद यह है कि उसके
जलाल की सताइश की जाए।

पौलुस की दुआ

15भाइयो, मैं ख़ुदावंद ईसा पर आपके ईमान
और आपकी तमाम मुक़द्दसीन से मुहब्बत के बारे
में सुनकर 16आपके लिए ख़ुदा का शुक्र करने से
बाज़ नहीं आता बल्कि आपको अपनी दुआओं में
याद करता रहता हूँ। 17मेरी ख़ास दुआ यह है कि
हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह का ख़ुदा और जलाली
बाप आपको दानाई और मुकाशफ़ा की रूह दे
ताकि आप उसे बेहतर तौर पर जान सकें। 18वह
करे कि आपके दिलों की आँखें रौशन हो जाएँ।
क्योंकि फिर ही आप जान लेंगे कि यह कैसी
उम्मीद है जिसके लिए उसने आपको बुलाया
है, कि यह जलाली मीरास कैसी दौलत है जो
मुक़द्दसीन को हासिल है, 19और कि हम ईमान
रखनेवालों पर उस की क़ुदरत का इज़हार कितना
ज़बरदस्त है। यह वही बेहद क़ुदरत है 20जिससे
उसने मसीह को मुरदों में से ज़िंदा करके आसमान
पर अपने दहने हाथ बिठाया। 21वहाँ मसीह हर
हुक्मरान, इख़्तियार, क़ुव्वत, हुकूमत, हाँ हर नाम
से कहीं सरफ़राज़ है, ख़ाह इस दुनिया में हो
या आनेवाली दुनिया में। 22अल्लाह ने सब कुछ
उसके पाँवों के नीचे करके उसे सबका सर बना
दिया। यह उसने अपनी जमात की ख़ातिर किया
23जो मसीह का बदन है और जिसे मसीह से पूरी
मामूरी हासिल होती है यानी उससे जो हर तरह
से सब कुछ मामूर कर देता है।

मौत से ज़िंदगी तक

2 आप भी अपनी ख़ताओं और गुनाहों की
वजह से रूहानी तौर पर मुरदा थे। 2क्योंकि
पहले आप इनमें फँसे हुए इस दुनिया के तौर-
तरीक़ों के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते थे। आप हवा
की क़ुव्वतों के सरदार के ताबे थे, उस रूह के जो
इस वक़्त उनमें सरगरमे-अमल है जो अल्लाह के
नाफ़रमान हैं। 3पहले तो हम भी सब उनमें ज़िंदगी
गुज़ारते थे। हम भी अपनी पुरानी फ़ितरत की
शहवतें, मरज़ी और सोच पूरी करने की कोशिश
करते रहे। दूसरों की तरह हम पर भी फ़ितरी तौर
पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल होना था।
4लेकिन अल्लाह का रहम इतना वसी है और
वह इतनी शिद्दत से हमसे मुहब्बत रखता है 5कि
अगरचे हम अपने गुनाहों में मुरदा थे तो भी उसने
हमें मसीह के साथ ज़िंदा कर दिया। हाँ, आपको
अल्लाह के फ़ज़ल ही से नजात मिली है। 6जब
हम मसीह ईसा पर ईमान लाए तो उसने हमें
मसीह के साथ ज़िंदा करके आसमान पर बिठा
दिया। 7ईसा मसीह में हम पर मेहरबानी करने
से अल्लाह आनेवाले ज़मानों में अपने फ़ज़ल की
ला-महदूद दौलत दिखाना चाहता था। 8क्योंकि
यह उसका फ़ज़ल ही है कि आपको ईमान लाने
पर नजात मिली है। यह आपकी तरफ़ से नहीं है
बल्कि अल्लाह की बख़्शिश है। 9और यह नजात
हमें अपने किसी काम के नतीजे में नहीं मिली,
इसलिए कोई अपने आप पर फ़ख़र नहीं कर
सकता। 10हाँ, हम उसी की मख़लूक़ हैं जिन्हें
उसने मसीह में नेक काम करने के लिए ख़लक़
किया है। और यह काम उसने पहले से हमारे लिए
तैयार कर रखे हैं, क्योंकि वह चाहता है कि हम
उन्हें सरंजाम देते हुए ज़िंदगी गुज़ारें।

मसीह में एक

11यह बात ज़हन में रखें कि माज़ी में आप
क्या थे। यहूदी सिर्फ़ अपने लिए लफ़्ज़ मख़तून
इस्तेमाल करते थे अगरचे वह अपना ख़तना सिर्फ़
इनसानी हाथों से करवाते हैं। आपको जो ग़ैरयहूदी
हैं वह नामख़तून क़रार देते थे। 12उस वक़्त आप
मसीह के बग़ैर ही चलते थे। आप इसराईल क़ौम
के शहरी न बन सके और जो वादे अल्लाह ने
अहदों के ज़रीए अपनी क़ौम से किए थे वह
आपके लिए नहीं थे। इस दुनिया में आपकी कोई
उम्मीद नहीं थी, आप अल्लाह के बग़ैर ही ज़िंदगी
गुज़ारते थे। 13लेकिन अब आप मसीह में हैं।
पहले आप दूर थे, लेकिन अब आपको मसीह के

ख़ून के वसीले से क़रीब लाया गया है। 14क्योंकि मसीह हमारी सुलह है और उसी ने यहूदियों और ग़ैरयहूदियों को मिलाकर एक क़ौम बना दिया है। अपने जिस्म को क़ुरबान करके उसने वह दीवार गिरा दी जिसने उन्हें अलग करके एक दूसरे के दुश्मन बना रखा था। 15उसने शरीअत को उसके अहकाम और ज़वाबित समेत मनसूख़ कर दिया ताकि दोनों गुरोहों को मिलाकर एक नया इनसान ख़लक़ करे, ऐसा इनसान जो उसमें एक हो और सुलह-सलामती के साथ ज़िंदगी गुज़ारे। 16अपनी सलीबी मौत से उसने दोनों गुरोहों को एक बदन में मिलाकर उनकी अल्लाह के साथ सुलह कराई। हाँ, उसने अपने आपमें यह दुश्मनी ख़त्म कर दी। 17उसने आकर दोनों गुरोहों को सुलह-सलामती की ख़ुशख़बरी सुनाई, आप ग़ैरयहूदियों को जो अल्लाह से दूर थे और आप यहूदियों को भी जो उसके क़रीब थे। 18अब हम दोनों मसीह के ज़रीए एक ही रूह में बाप के हुज़ूर आ सकते हैं।

19नतीजे में अब आप परदेसी और अजनबी नहीं रहे बल्कि मुक़द्दसीन के हमवतन और अल्लाह के घराने के हैं। 20आपको रसूलों और नबियों की बुनियाद पर तामीर किया गया है जिसके कोने का बुनियादी पत्थर मसीह ईसा ख़ुद है। 21उसमें पूरी इमारत जुड़ जाती और बढ़ती बढ़ती ख़ुदावंद में अल्लाह का मुक़द्दस घर बन जाती है। 22दूसरों के साथ साथ उसमें आपकी भी तामीर हो रही है ताकि आप रूह में अल्लाह की सुकूनतगाह बन जाएँ।

पौलुस की ग़ैरयहूदियों में ख़िदमत

3 इस वजह से मैं पौलुस जो आप ग़ैरयहूदियों की ख़ातिर मसीह ईसा का क़ैदी हूँ अल्लाह से दुआ करता हूँ। 2आपने तो सुन लिया है कि मुझे आपमें अल्लाह के फ़ज़ल का इंतज़ाम चलाने[a] की ख़ास ज़िम्मेदारी दी गई है। 3जिस तरह मैंने पहले ही मुख़तसर तौर पर लिखा है, अल्लाह ने ख़ुद मुझ पर यह राज़ ज़ाहिर कर दिया। 4जब आप वह पढ़ेंगे जो मैंने लिखा तो आप जान लेंगे कि मुझे मसीह के राज़ के बारे में क्या क्या समझ आई है। 5गुज़रे ज़मानों में अल्लाह ने यह बात ज़ाहिर नहीं की, लेकिन अब उसने इसे रूहुल-क़ुद्स के ज़रीए अपने मुक़द्दस रसूलों और नबियों पर ज़ाहिर कर दिया। 6और अल्लाह का राज़ यह है कि उस की ख़ुशख़बरी के ज़रीए ग़ैरयहूदी इसराईल के साथ आसमानी बादशाही के वारिस, एक ही बदन के आज़ा और उसी वादे में शरीक हैं जो अल्लाह ने मसीह ईसा में किया है।

7मैं अल्लाह के मुफ़्त फ़ज़ल और उस की क़ुदरत के इज़हार से ख़ुशख़बरी का ख़ादिम बन गया। 8अगरचे मैं अल्लाह के तमाम मुक़द्दसीन से कमतर हूँ तो भी उसने मुझे यह फ़ज़ल बख़्शा कि मैं ग़ैरयहूदियों को उस ला-महदूद दौलत की ख़ुशख़बरी सुनाऊँ जो मसीह में दस्तयाब है। 9यही मेरी ज़िम्मेदारी बन गई कि मैं सब पर उस राज़ का इंतज़ाम ज़ाहिर करूँ जो गुज़रे ज़मानों में सब चीज़ों के ख़ालिक़ ख़ुदा में पोशीदा रहा। 10क्योंकि अल्लाह चाहता था कि अब मसीह की जमात ही आसमानी हुक्मरानों और क़ुव्वतों को अल्लाह की वसी हिकमत के बारे में इल्म पहुँचाए। 11यही उसका अज़ली मनसूबा था जो उसने हमारे ख़ुदावंद मसीह ईसा के वसीले से तकमील तक पहुँचाया। 12उसमें और उस पर ईमान रखकर हम पूरी आज़ादी और एतमाद के साथ अल्लाह के हुज़ूर आ सकते हैं। 13इसलिए मेरी आपसे गुज़ारिश है कि आप मेरी मुसीबतें देखकर बेदिल न हो जाएँ। यह मैं आपकी ख़ातिर बरदाश्त कर रहा हूँ, और यह आपकी इज़्ज़त का बाइस हैं।

मसीह की मुहब्बत

14इस वजह से मैं बाप के हुज़ूर अपने घुटने टेकता हूँ, 15उस बाप के सामने जिससे आसमानो-ज़मीन का हर ख़ानदान नामज़द है।

[a]यानी ख़ुशख़बरी सुनाने।

16मेरी दुआ है कि वह अपने जलाल की दौलत
के मुवाफ़िक़ यह बख़्शे कि आप उसके रूह के
वसीले से बातिनी तौर पर ज़बरदस्त तक़वियत
पाएँ, 17कि मसीह ईमान के ज़रीए आपके दिलों
में सुकूनत करे। हाँ, मेरी दुआ है कि आप मुहब्बत
में जड़ पकड़ें और इस बुनियाद पर ज़िंदगी यों
गुज़ारें 18कि आप बाक़ी तमाम मुक़द्दसीन के
साथ यह समझने के क़ाबिल बन जाएँ कि मसीह
की मुहब्बत कितनी चौड़ी, कितनी लंबी, कितनी
ऊँची और कितनी गहरी है। 19ख़ुदा करे कि आप
मसीह की यह मुहब्बत जान लें जो हर इल्म से
कहीं अफ़ज़ल है और यों अल्लाह की पूरी मामूरी
से भर जाएँ।

20अल्लाह की तमजीद हो जो अपनी उस
क़ुदरत के मुवाफ़िक़ जो हममें काम कर रही है
ऐसा ज़बरदस्त काम कर सकता है जो हमारी हर
सोच और दुआ से कहीं बाहर है। 21हाँ, मसीह
ईसा और उस की जमात में अल्लाह की तमजीद
पुश्त-दर-पुश्त और अज़ल से अबद तक होती रहे।
आमीन।

बदन की यगांगत

4 चुनाँचे मैं जो ख़ुदावंद में क़ैदी हूँ आपको
ताकीद करता हूँ कि उस ज़िंदगी के
मुताबिक़ चलें जिसके लिए ख़ुदा ने आपको
बुलाया है। 2हर वक़्त हलीम और नरमदिल रहें,
सब्र से काम लें और एक दूसरे से मुहब्बत रखकर
उसे बरदाश्त करें। 3सुलह-सलामती के बंधन में
रहकर रूह की यगांगत क़ायम रखने की पूरी
कोशिश करें। 4एक ही बदन और एक ही रूह है।
यों आपको भी एक ही उम्मीद के लिए बुलाया
गया। 5एक ख़ुदावंद, एक ईमान, एक बपतिस्मा
है। 6एक ख़ुदा है, जो सबका वाहिद बाप है। वह
सबका मालिक है, सबके ज़रीए काम करता है
और सबमें मौजूद है।

7अब हम सबको अल्लाह का फ़ज़ल बख़्शा
गया। लेकिन मसीह हर एक को मुख़्तलिफ़ पैमाने
से यह फ़ज़ल अता करता है। 8इसलिए कलामे-
मुक़द्दस फ़रमाता है, "उसने बुलंदी पर चढ़कर
क़ैदियों का हुजूम गिरिफ़्तार कर लिया और
आदमियों को तोहफ़े दिए।" 9अब ग़ौर करें कि
चढ़ने का ज़िक्र किया गया है। इसका मतलब
है कि पहले वह ज़मीन की गहराइयों में उतरा।
10जो उतरा वह वही है जो तमाम आसमानों से
ऊँचा चढ़ गया ताकि तमाम कायनात को अपने
आपसे मामूर करे। 11उसी ने अपनी जमात को
तरह तरह के ख़ादिमों से नवाज़ा। बाज़ रसूल,
बाज़ नबी, बाज़ मुबश्शिर, बाज़ चरवाहे और बाज़
उस्ताद हैं। 12इनका मक़सद यह है कि मुक़द्दसीन
को ख़िदमत करने के लिए तैयार किया जाए और
यों मसीह के बदन की तामीरो-तरक़्क़ी हो जाए।
13इस तरीक़े से हम सब ईमान और अल्लाह
के फ़रज़ंद की पहचान में एक होकर बालिग़
हो जाएंगे, और हम मिलकर मसीह की मामूरी
और बलूग़त को मुनअकिस करेंगे। 14फिर हम
बच्चे नहीं रहेंगे, और तालीम के हर एक झोंके
से उछलते फिरते नहीं रहेंगे जब लोग अपनी
चालाकी और धोकेबाज़ी से हमें अपने जालों में
फँसाने की कोशिश करेंगे। 15इसके बजाए हम
मुहब्बत की रूह में सच्ची बात करके हर लिहाज़
से मसीह की तरफ़ बढ़ते जाएंगे जो हमारा सर
है। 16वही नसों के ज़रीए पूरे बदन के मुख़्तलिफ़
हिस्सों को एक दूसरे के साथ जोड़कर मुत्तहिद
कर देता है। हर हिस्सा अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़
काम करता है, और यों पूरा बदन मुहब्बत की रूह
में बढ़ता और अपनी तामीर करता रहता है।

मसीह में नई ज़िंदगी

17पस मैं ख़ुदावंद के नाम में आपको आगाह
करता हूँ कि अब से ग़ैरईमानदारों की तरह ज़िंदगी
न गुज़ारें जिनकी सोच बेकार है 18और जिनकी
समझ अंधेरे की गिरिफ़्त में है। उनका उस ज़िंदगी
में कोई हिस्सा नहीं जो अल्लाह देता है, क्योंकि
वह जाहिल हैं और उनके दिल सख़्त हो गए हैं।
19बेहिस होकर उन्होंने अपने आपको ऐयाशी के

हवाले कर दिया। यों वह न बुझनेवाली प्यास के
साथ हर क़िस्म की नापाक हरकतें करते हैं।
20लेकिन आपने मसीह को यों नहीं जाना।
21आपने तो उसके बारे में सुन लिया है, और
उसमें होकर आपको वह सच्चाई सिखाई गई
जो ईसा में है। 22चुनाँचे अपने पुराने इनसान
को उसके पुराने चाल-चलन समेत उतार देना,
क्योंकि वह अपनी धोकेबाज़ शहवतों से बिगड़ता
जा रहा है। 23अल्लाह को आपकी सोच की
तजदीद करने दें 24और नए इनसान को पहन लें
जो यों बनाया गया है कि वह हक़ीक़ी रास्तबाज़ी
और क़ुद्दूसियत में अल्लाह के मुशाबेह है।
25इसलिए हर शख़्स झूट से बाज़ रहकर दूसरों
से सच बात करे, क्योंकि हम सब एक ही बदन के
आज़ा हैं। 26ग़ुस्से में आते वक़्त गुनाह मत करना।
आपका ग़ुस्सा सूरज के ग़ुरूब होने तक ठंडा हो
जाए, 27वरना आप इबलीस को अपनी ज़िंदगी
में काम करने का मौक़ा देंगे। 28चोर अब से चोरी
न करे बल्कि ख़ूब मेहनत-मशक़्क़त करके अपने
हाथों से अच्छा काम करे। हाँ, वह इतना कमाए
कि ज़रूरतमंदों को भी कुछ दे सके। 29कोई भी
बुरी बात आपके मुँह से न निकले बल्कि सिर्फ़
ऐसी बातें जो दूसरों की ज़रूरियात के मुताबिक़
उनकी तामीर करें। यों सुननेवालों को बरकत
मिलेगी। 30अल्लाह के मुक़द्दस रूह को दुख न
पहुँचाना, क्योंकि उसी से अल्लाह ने आप पर
मुहर लगाकर यह ज़मानत दे दी है कि आप उसी
के हैं और नजात के दिन बच जाएंगे। 31तमाम
तरह की तलख़ी, तैश, ग़ुस्से, शोर-शराबा, गाली-
गलोच बल्कि हर क़िस्म के बुरे रवय्ये से बाज़
आएँ। 32एक दूसरे पर मेहरबान और रहमदिल
हों और एक दूसरे को यों मुआफ़ करें जिस तरह
अल्लाह ने आपको भी मसीह में मुआफ़ कर दिया
है।

रौशनी में ज़िंदगी गुज़ारना

5 चूँकि आप अल्लाह के प्यारे बच्चे हैं
इसलिए उसके नमूने पर चलें। 2मुहब्बत
की रूह में ज़िंदगी यों गुज़ारें जैसे मसीह ने
गुज़ारी। क्योंकि उसने हमसे मुहब्बत रखकर
अपने आपको हमारे लिए अल्लाह के हुज़ूर
क़ुरबान कर दिया और यों ऐसी क़ुरबानी बन गया
जिसकी ख़ुशबू अल्लाह को पसंद आई।
3आपके दरमियान ज़िनाकारी, हर तरह की
नापाकी या लालच का ज़िक्र तक न हो, क्योंकि
यह अल्लाह के मुक़द्दसीन के लिए मुनासिब नहीं
है। 4इसी तरह शर्मनाक, अहमक़ाना या गंदी बातें
भी ठीक नहीं। इनकी जगह शुक्रगुज़ारी होनी
चाहिए। 5क्योंकि यक़ीन जानें कि ज़िनाकार,
नापाक या लालची मसीह और अल्लाह की
बादशाही में मीरास नहीं पाएँगे (लालच तो एक
क़िस्म की बुतपरस्ती है)।
6कोई आपको बेमानी अलफ़ाज़ से धोका न
दे। ऐसी ही बातों की वजह से अल्लाह का ग़ज़ब
उन पर जो नाफ़रमान हैं नाज़िल होता है। 7चुनाँचे
उनमें शरीक न हो जाएँ जो यह करते हैं। 8क्योंकि
पहले आप तारीकी थे, लेकिन अब आप ख़ुदावंद
में रौशनी हैं। रौशनी के फ़रज़ंद की तरह ज़िंदगी
गुज़ारें, 9क्योंकि रौशनी का फल हर तरह की
भलाई, रास्तबाज़ी और सच्चाई है। 10और मालूम
करते रहें कि ख़ुदावंद को क्या कुछ पसंद है।
11तारीकी के बेफल कामों में हिस्सा न लें बल्कि
उन्हें रौशनी में लाएँ। 12क्योंकि जो कुछ यह लोग
पोशीदगी में करते हैं उसका ज़िक्र करना भी शर्म
की बात है। 13लेकिन सब कुछ बेनिक़ाब हो जाता
है जब उसे रौशनी में लाया जाता है। 14क्योंकि
जो रौशनी में लाया जाता है वह रौशन हो जाता
है। इसलिए कहा जाता है,

“ऐ सोनेवाले, जाग उठ!
मुरदों में से जी उठ,
तो मसीह तुझ पर चमकेगा।”

15चुनाँचे बड़ी एहतियात से इस पर ध्यान दें
कि आप ज़िंदगी किस तरह गुज़ारते हैं—बेसमझ
या समझदार लोगों की तरह। 16हर मौक़े से पूरा
फ़ायदा उठाएँ, क्योंकि दिन बुरे हैं। 17इसलिए

अहमक़ न बनें बल्कि ख़ुदावंद की मरज़ी को समझें।
18शराब में मत्वाले न हो जाएँ, क्योंकि इसका अंजाम ऐयाशी है। इसके बजाए रूहुल-क़ुद्स से मामूर होते जाएँ। 19ज़बूरों, हम्दो-सना और रूहानी गीतों से एक दूसरे की हौसलाअफ़्ज़ाई करें। अपने दिलों में ख़ुदावंद के लिए गीत गाएँ और नग़मासराई करें। 20हाँ, हर वक़्त हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के नाम में हर चीज़ के लिए ख़ुदा बाप का शुक्र करें।

मियाँ-बीवी का ताल्लुक़

21मसीह के ख़ौफ़ में एक दूसरे के ताबे रहें।
22बीवियो, जिस तरह आप ख़ुदावंद के ताबे हैं
उसी तरह अपने शौहर के ताबे भी रहें। 23क्योंकि
शौहर वैसे ही अपनी बीवी का सर है जैसे मसीह
अपनी जमात का। हाँ, जमात मसीह का बदन
है जिसे उसने नजात दी है। 24अब जिस तरह
जमात मसीह के ताबे है उसी तरह बीवियाँ भी
अपने शौहरों के ताबे रहें।
25शौहरो, अपनी बीवियों से मुहब्बत रखें,
बिलकुल उसी तरह जिस तरह मसीह ने अपनी
जमात से मुहब्बत रखकर अपने आपको उसके
लिए क़ुरबान किया 26ताकि उसे अल्लाह के लिए
मख़सूसो-मुक़द्दस करे। उसने उसे कलामे-पाक
से धोकर पाक-साफ़ कर दिया 27ताकि अपने
आपको एक ऐसी जमात पेश करे जो जलाली,
मुक़द्दस और बेइलज़ाम हो, जिसमें न कोई दाग़
हो, न कोई झुर्री, न किसी और क़िस्म का नुक़्स।
28शौहरों का फ़र्ज़ है कि वह अपनी बीवियों से
ऐसी ही मुहब्बत रखें। हाँ, वह उनसे वैसी मुहब्बत
रखें जैसी अपने जिस्म से रखते हैं। क्योंकि जो
अपनी बीवी से मुहब्बत रखता है वह अपने आपसे
ही मुहब्बत रखता है। 29आख़िर कोई भी अपने
जिस्म से नफ़रत नहीं करता बल्कि उसे ख़ुराक
मुहैया करता और पालता है। मसीह भी अपनी
जमात के लिए यही कुछ करता है। 30क्योंकि
हम उसके बदन के आज़ा हैं। 31कलामे-मुक़द्दस
में भी लिखा है, "इसलिए मर्द अपने माँ-बाप को
छोड़कर अपनी बीवी के साथ पैवस्त हो जाता है।
वह दोनों एक हो जाते हैं।" 32यह राज़ बहुत गहरा
है। मैं तो उसका इतलाक़ मसीह और उस की
जमात पर करता हूँ। 33लेकिन इसका इतलाक़
आप पर भी है। हर शौहर अपनी बीवी से इस तरह
मुहब्बत रखे जिस तरह वह अपने आपसे रखता
है। और हर बीवी अपने शौहर की इज़्ज़त करे।

बच्चों और वालिदैन का ताल्लुक़

6 बच्चो, ख़ुदावंद में अपने माँ-बाप के ताबे
रहें, क्योंकि यही रास्तबाज़ी का तक़ाज़ा
है। 2कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, "अपने बाप
और अपनी माँ की इज़्ज़त करना।" यह पहला
हुक्म है जिसके साथ एक वादा भी किया गया है,
3"फिर तू ख़ुशहाल और ज़मीन पर देर तक जीता
रहेगा।"
4ऐ वालिदो, अपने बच्चों से ऐसा सुलूक मत करें कि वह ग़ुस्से हो जाएँ बल्कि उन्हें ख़ुदावंद की तरफ़ से तरबियत और हिदायत देकर पालें।

ग़ुलाम और मालिक

5ग़ुलामो, डरते और काँपते हुए अपने इनसानी
मालिकों के ताबे रहें। ख़ुलूसदिली से उनकी
ख़िदमत यों करें जैसे मसीह की। 6न सिर्फ़ उनके
सामने ही और उन्हें ख़ुश रखने के लिए ख़िदमत
करें बल्कि मसीह के ग़ुलामों की हैसियत से जो
पूरी लग्न से अल्लाह की मरज़ी पूरी करना चाहते
हैं। 7ख़ुशी से ख़िदमत करें, इस तरह जैसा कि
आप न सिर्फ़ इनसानों की बल्कि ख़ुदावंद की
ख़िदमत कर रहे हों। 8आप तो जानते हैं कि जो
भी अच्छा काम हमने किया उसका अज्र ख़ुदावंद
देगा, ख़ाह हम ग़ुलाम हों या आज़ाद।
9और मालिको, आप भी अपने ग़ुलामों से ऐसा ही सुलूक करें। उन्हें धमकियाँ न दें। आपको तो मालूम है कि आसमान पर आपका भी मालिक है और कि वह जानिबदार नहीं होता।

रूहानी ज़िराबकतर

10एक आख़िरी बात, ख़ुदावंद और उस
की ज़बरदस्त क़ुव्वत में ताक़तवर बन जाएँ।
11अल्लाह का पूरा ज़िराबकतर पहन लें ताकि
इबलीस की चालों का सामना कर सकें।
12क्योंकि हमारी जंग इनसान के साथ नहीं है
बल्कि हुक्मरानों और इख़्तियारवालों के साथ,
इस तारीक दुनिया के हाकिमों के साथ और
आसमानी दुनिया की शैतानी कुव्वतों के साथ है।
13चुनाँचे अल्लाह का पूरा ज़िराबकतर पहन लें
ताकि आप मुसीबत के दिन इबलीस के हमलों
का सामना कर सकें बल्कि सब कुछ सरंजाम देने
के बाद क़ायम रह सकें।

14अब यों खड़े हो जाएँ कि आपकी कमर में
सच्चाई का पटका बँधा हुआ हो, आपके सीने पर
रास्तबाज़ी का सीनाबंद लगा हो **15**और आपके
पाँवों में ऐसे जूते हों जो सुलह-सलामती की
ख़ुशख़बरी सुनाने के लिए तैयार रहें। **16**इसके
अलावा ईमान की ढाल भी उठाए रखें, क्योंकि
इससे आप इबलीस के जलते हुए तीर बुझा सकते
हैं। **17**अपने सर पर नजात का ख़ोद पहनकर हाथ
में रूह की तलवार जो अल्लाह का कलाम है थामे
रखें। **18**और हर मौक़े पर रूह में हर तरह की दुआ
और मिन्नत करते रहें। जागते और साबितक़दमी
से तमाम मुक़द्दसीन के लिए दुआ करते रहें।
19मेरे लिए भी दुआ करें कि जब भी मैं अपना
मुँह खोलूँ अल्लाह मुझे ऐसे अलफ़ाज़ अता करे
कि पूरी दिलेरी से उस की ख़ुशख़बरी का राज़
सुना सकूँ। **20**क्योंकि मैं इसी पैग़ाम की ख़ातिर
क़ैदी, हाँ ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ मसीह का एलची
हूँ। दुआ करें कि मैं मसीह में उतनी दिलेरी से यह
पैग़ाम सुनाऊँ जितना मुझे करना चाहिए।

आख़िरी सलाम

21आप मेरे हाल और काम के बारे में भी
जानना चाहेंगे। ख़ुदावंद में हमारा अज़ीज़ भाई
और वफ़ादार ख़ादिम तुख़िकुस आपको यह सब
कुछ बता देगा। **22**मैंने उसे इसी लिए आपके पास
भेज दिया कि आपको हमारे हाल का पता चले
और आपको तसल्ली मिले।

23ख़ुदा बाप और ख़ुदावंद ईसा मसीह आप
भाइयों को सलामती और ईमान के साथ मुहब्बत
अता करें। **24**अल्लाह का फ़ज़ल उन सबके साथ
हो जो अनमिट मुहब्बत के साथ हमारे ख़ुदावंद
ईसा मसीह को प्यार करते हैं।

फ़िलिप्पियों के नाम
पौलुस रसूल का ख़त

सलाम

1 यह ख़त मसीह ईसा के ग़ुलामों पौलुस
और तीमुथियुस की तरफ़ से है।
मैं फ़िलिप्पी में मौजूद उन तमाम लोगों को
लिख रहा हूँ जिन्हें अल्लाह ने मसीह ईसा के
ज़रीए मख़सूसो-मुक़द्दस किया है। मैं उनके बुज़ुर्गों
और ख़ादिमों को भी लिख रहा हूँ।
2ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावंद ईसा मसीह
आपको फ़ज़ल और सलामती अता करें।

जमात के लिए शुक्रो-दुआ

3जब भी मैं आपको याद करता हूँ तो अपने
ख़ुदा का शुक्र करता हूँ। 4आपके लिए तमाम
दुआओं में मैं हमेशा ख़ुशी से दुआ करता हूँ,
5इसलिए कि आप पहले दिन से लेकर आज
तक अल्लाह की ख़ुशख़बरी फैलाने में मेरे शरीक
रहे हैं। 6और मुझे यक़ीन है कि अल्लाह जिसने
आपमें यह अच्छा काम शुरू किया है इसे उस
दिन तकमील तक पहुँचाएगा जब मसीह ईसा
वापस आएगा। 7और मुनासिब है कि आप सबके
बारे में मेरा यही ख़याल हो, क्योंकि आप मुझे
अज़ीज़ रखते हैं। हाँ, जब मुझे जेल में डाला
गया या मैं अल्लाह की ख़ुशख़बरी का दिफ़ा
या उस की तसदीक़ कर रहा था तो आप भी
मेरे इस ख़ास फ़ज़ल में शरीक हुए। 8अल्लाह
मेरा गवाह है कि मैं कितनी शिद्दत से आप सबका
आरज़ूमंद हूँ। हाँ, मैं मसीह की-सी दिली शफ़क़त
के साथ आपका ख़ाहिशमंद हूँ।
9और मेरी दुआ है कि आपकी मुहब्बत में
इल्मो-इरफ़ान और हर तरह की रूहानी बसीरत
का यहाँ तक इज़ाफ़ा हो जाए कि वह बढ़ती बढ़ती
दिल से छलक उठे। 10क्योंकि यह ज़रूरी है ताकि
आप वह बातें क़बूल करें जो बुनियादी अहमियत
की हामिल हैं और आप मसीह की आमद तक
बेलौस और बेइलज़ाम ज़िंदगी गुज़ारें। 11और यों
आप उस रास्तबाज़ी के फल से भरे रहेंगे जो
आपको ईसा मसीह के वसीले से हासिल होती है।
फिर आप अपनी ज़िंदगी से अल्लाह को जलाल
देंगे और उस की तमजीद करेंगे।

हर एक को मालूम हो जाए कि मसीह कौन है

12भाइयो, मैं चाहता हूँ कि यह बात आपके
इल्म में हो कि जो कुछ भी मुझ पर गुज़रा है
वह हक़ीक़त में अल्लाह की ख़ुशख़बरी के फैलाव

का बाइस बन गया है। 13क्योंकि प्रैटोरियुम[a] के तमाम अफ़राद और बाक़ी सबको मालूम हो गया है कि मैं मसीह की ख़ातिर क़ैदी हूँ। 14और मेरे क़ैद में होने की वजह से ख़ुदावंद में ज़्यादातर भाइयों का एतमाद इतना बढ़ गया है कि वह मज़ीद दिलेरी के साथ बिलाख़ौफ़ अल्लाह का कलाम सुनाते हैं।

15बेशक बाज़ तो हसद और मुख़ालफ़त के बाइस मसीह की मुनादी कर रहे हैं, लेकिन बाक़ियों की नीयत अच्छी है, 16क्योंकि वह जानते हैं कि मैं अल्लाह की ख़ुशख़बरी के दिफ़ा की वजह से यहाँ पड़ा हूँ। इसलिए वह मुहब्बत की रूह में तबलीग़ करते हैं। 17इसके मुक़ाबले में दूसरे ख़ुलूसदिली से मसीह के बारे में पैग़ाम नहीं सुनाते बल्कि ख़ुदग़रज़ी से। यह समझते हैं कि हम इस तरह पौलुस की गिरिफ़्तारी को मज़ीद तकलीफ़देह बना सकते हैं।

18लेकिन इससे क्या फ़रक़ पड़ता है! अहम बात तो यह है कि मसीह की मुनादी हर तरह से की जा रही है, ख़ाह मुनाद की नीयत पुरख़ुलूस हो या न। और इस वजह से मैं ख़ुश हूँ। और ख़ुश रहूँगा भी, 19क्योंकि मैं जानता हूँ कि यह मेरे लिए रिहाई का बाइस बनेगा, इसलिए कि आप मेरे लिए दुआ कर रहे हैं और ईसा मसीह का रूह मेरी हिमायत कर रहा है। 20हाँ, यह मेरी पूरी तवक़्क़ो और उम्मीद है। मैं यह भी जानता हूँ कि मुझे किसी भी बात में शरमिंदा नहीं किया जाएगा बल्कि जैसा माज़ी में हमेशा हुआ अब भी मुझे बड़ी दिलेरी से मसीह को जलाल देने का फ़ज़ल मिलेगा, ख़ाह मैं ज़िंदा रहूँ या मर जाऊँ। 21क्योंकि मेरे लिए मसीह ज़िंदगी है और मौत नफ़ा का बाइस। 22अगर मैं ज़िंदा रहूँ तो इसका फ़ायदा यह होगा कि मैं मेहनत करके मज़ीद फल ला सकूँगा। चुनाँचे मैं नहीं कह सकता कि क्या बेहतर है। 23मैं बड़ी कशमकश में रहता हूँ। एक तरफ़ मैं कूच करके मसीह के पास होने की आरज़ू रखता हूँ, क्योंकि यह मेरे लिए सबसे बेहतर होता। 24लेकिन दूसरी तरफ़ ज़्यादा ज़रूरी यह है कि मैं आपकी ख़ातिर ज़िंदा रहूँ। 25और चूँकि मुझे इस ज़रूरत का यक़ीन है, इसलिए मैं जानता हूँ कि मैं ज़िंदा रहकर दुबारा आप सबके साथ रहूँगा ताकि आप तरक़्क़ी करें और ईमान में ख़ुश रहें। 26हाँ, मेरे आपके पास वापस आने से आप मेरे सबब से मसीह ईसा पर हद से ज़्यादा फ़ख़र करेंगे।

27लेकिन आप हर सूरत में मसीह की ख़ुशख़बरी और आसमान के शहरियों के लायक़ ज़िंदगी गुज़ारें। फिर ख़ाह मैं आकर आपको देखूँ, ख़ाह ग़ैरमौजूदगी में आपके बारे में सुनूँ, मुझे मालूम होगा कि आप एक रूह में क़ायम हैं, आप मिलकर यकदिली से उस ईमान के लिए जाँफ़िशानी कर रहे हैं जो अल्लाह की ख़ुशख़बरी से पैदा हुआ है, 28और आप किसी सूरत में अपने मुख़ालिफ़ों से दहशत नहीं खाते। यह उनके लिए एक निशान होगा कि वह हलाक हो जाएंगे जबकि आपको नजात हासिल होगी, और वह भी अल्लाह से। 29क्योंकि आपको न सिर्फ़ मसीह पर ईमान लाने का फ़ज़ल हासिल हुआ है बल्कि उस की ख़ातिर दुख उठाने का भी। 30आप भी उस मुक़ाबले में जाँफ़िशानी कर रहे हैं जिसमें आपने मुझे देखा है और जिसके बारे में आपने अब सुन लिया है कि मैं अब तक उसमें मसरूफ़ हूँ।

यगांगत की ज़रूरत

2 क्या आपके दरमियान मसीह में हौसलाअफ़्ज़ाई, मुहब्बत की तसल्ली, रूहुल-क़ुद्स की रिफ़ाक़त, नरमदिली और रहमत पाई जाती है? 2अगर ऐसा है तो मेरी ख़ुशी इसमें पूरी करें कि आप एक जैसी सोच रखें और एक

[a]गवर्नर का सरकारी महल प्रैटोरियुम कहलाता था। यहाँ इसका मतलब शाहनशाह के पहरेदारों के क्वार्टर भी हो सकता है।

जैसी मुहब्बत रखें, एक जान और एक ज़हन हो
जाएँ। 3ख़ुदग़रज़ न हों, न बातिल इज़्ज़त के पीछे
पड़ें बल्कि फ़रोतनी से दूसरों को अपने से बेहतर
समझें। 4हर एक न सिर्फ़ अपना फ़ायदा सोचे
बल्कि दूसरों का भी।

मसीह की राहे-सलीब

5वही सोच रखें जो मसीह ईसा की भी थी।
6वह जो अल्लाह की सूरत पर था
नहीं समझता था
कि मेरा अल्लाह के बराबर होना
कोई ऐसी चीज़ है
जिसके साथ ज़बरदस्ती चिमटे रहने
की ज़रूरत है।
7नहीं, उसने अपने आपको
इससे महरूम करके
ग़ुलाम की सूरत अपनाई
और इनसानों की मानिंद बन गया।
शक्लो-सूरत में वह इनसान पाया गया।
8उसने अपने आपको पस्त कर दिया
और मौत तक ताबे रहा,
बल्कि सलीबी मौत तक।
9इसलिए अल्लाह ने
उसे सबसे आला मक़ाम पर
सरफ़राज़ कर दिया
और उसे वह नाम बख़्शा
जो हर नाम से आला है,
10ताकि ईसा के इस नाम के सामने
हर घुटना झुके,
ख़ाह वह घुटना आसमान पर,
ज़मीन पर या इसके नीचे हो,
11और हर ज़बान तसलीम करे
कि ईसा मसीह ख़ुदावंद है।
यों ख़ुदा बाप को जलाल दिया जाएगा।

रूहानी तरक़्क़ी का राज़

12मेरे अज़ीज़ो, जब मैं आपके पास था तो आप
हमेशा फ़रमाँबरदार रहे। अब जब मैं ग़ैरहाज़िर
हूँ तो इसकी कहीं ज़्यादा ज़रूरत है। चुनाँचे
डरते और काँपते हुए जाँफ़िशानी करते रहें ताकि
आपकी नजात तकमील तक पहुँचे। 13क्योंकि
ख़ुदा ही आपमें वह कुछ करने की ख़ाहिश पैदा
करता है जो उसे पसंद है, और वही आपको यह
पूरा करने की ताक़त देता है।
14सब कुछ बुड़बुड़ाए और बहस-मुबाहसा
किए बग़ैर करें 15ताकि आप बेइलज़ाम और
पाक होकर अल्लाह के बेदाग़ फ़रज़ंद साबित हो
जाएँ, ऐसे लोग जो एक टेढ़ी और उलटी नसल
के दरमियान ही आसमान के सितारों की तरह
चमकते-दमकते 16और ज़िंदगी का कलाम थामे
रखते हैं। फिर मैं मसीह की आमद के दिन फ़ख़र
कर सकूँगा कि न मैं रायगाँ दौड़ा, न बेफ़ायदा
जिद्दो-जहद की।
17देखें, जो ख़िदमत आप ईमान से सरंजाम दे
रहे हैं वह एक ऐसी क़ुरबानी है जो अल्लाह को
पसंद है। ख़ुदा करे कि जो दुख मैं उठा रहा हूँ वह
मै की उस नज़र की मानिंद हो जो बैतुल-मुक़द्दस
में क़ुरबानी पर उंडेली जाती है। अगर मेरी नज़र
वाक़ई आपकी क़ुरबानी यों मुकम्मल करे तो मैं
ख़ुश हूँ और आपके साथ ख़ुशी मनाता हूँ। 18आप
भी इसी वजह से ख़ुश हों और मेरे साथ ख़ुशी
मनाएँ।

तीमुथियुस और इपफ़्रुदितुस को फ़िलिप्पियों के पास भेजा जाएगा

19मुझे उम्मीद है कि अगर ख़ुदावंद ईसा ने
चाहा तो मैं जल्द ही तीमुथियुस को आपके पास
भेज दूँगा ताकि आपके बारे में ख़बर पाकर मेरा
हौसला भी बढ़ जाए। 20क्योंकि मेरे पास कोई
और नहीं जिसकी सोच बिलकुल मेरी जैसी है
और जो इतनी ख़ुलूसदिली से आपकी फ़िकर
करे। 21दूसरे सब अपने मफ़ाद की तलाश में
रहते हैं और वह कुछ नज़रंदाज़ करते हैं जो ईसा
मसीह का काम बढ़ाता है। 22लेकिन आपको तो
मालूम है कि तीमुथियुस क़ाबिले-एतमाद साबित
हुआ, कि उसने मेरा बेटा बनकर मेरे साथ अल्लाह

की ख़ुशख़बरी फैलाने की ख़िदमत सरंजाम दी।
23चुनाँचे उम्मीद है कि ज्योंही मुझे पता चले कि
मेरा क्या बनेगा मैं उसे आपके पास भेज दूँगा।
24और मेरा ख़ुदावंद में ईमान है कि मैं भी जल्द
ही आपके पास आऊँगा।

25लेकिन मैंने ज़रूरी समझा कि इतने में
इपफ़्रुदितुस को आपके पास वापस भेज दूँ जिसे
आपने क़ासिद के तौर पर मेरी ज़रूरियात पूरी
करने के लिए मेरे पास भेज दिया था। वह
मेरा सच्चा भाई, हमख़िदमत और साथी सिपाही
साबित हुआ। 26मैं उसे इसलिए भेज रहा हूँ
क्योंकि वह आप सबका निहायत आरज़ूमंद है
और इसलिए बेचैन है कि आपको उसके बीमार
होने की ख़बर मिल गई थी। 27और वह था भी
बीमार बल्कि मरने को था। लेकिन अल्लाह ने
उस पर रहम किया, और न सिर्फ़ उस पर बल्कि
मुझ पर भी ताकि मेरे दुख में इज़ाफ़ा न हो जाए।
28इसलिए मैं उसे और जल्दी से आपके पास
भेजूँगा ताकि आप उसे देखकर ख़ुश हो जाएँ और
मेरी परेशानी भी दूर हो जाए। 29चुनाँचे ख़ुदावंद
में बड़ी ख़ुशी से उसका इस्तक़बाल करें। उस जैसे
लोगों की इज़्ज़त करें, 30क्योंकि वह मसीह के
काम के बाइस मरने की नौबत तक पहुँच गया
था। उसने अपनी जान ख़तरे में डाल दी ताकि
आपकी जगह मेरी वह ख़िदमत करे जो आप न
कर सके।

अल्लाह में ख़ुशी

3 मेरे भाइयो, जो कुछ भी हो, ख़ुदावंद में
ख़ुश रहें। मैं आपको यह बात बताते रहने
से कभी थकता नहीं, क्योंकि ऐसा करने से आप
महफ़ूज़ रहते हैं।

यहूदियों से ख़बरदार

2कुत्तों से ख़बरदार! उन शरीर मज़दूरों से
होशियार रहना जो जिस्म की काँट-छाँट यानी
ख़तना करवाते हैं। 3क्योंकि हम ही हक़ीक़ी
ख़तना के पैरोकार हैं, हम ही हैं जो अल्लाह के रूह
में परस्तिश करते, मसीह ईसा पर फ़ख़र करते
और इनसानी ख़ूबियों पर भरोसा नहीं करते।

पौलुस की शख़्सी गवाही

4बात यह नहीं कि मेरा अपनी इनसानी ख़ूबियों
पर भरोसा करने का कोई जवाज़ न होता। जब
दूसरे अपनी इनसानी ख़ूबियों पर फ़ख़र करते हैं
तो मैं उनकी निसबत ज़्यादा कर सकता हूँ। 5मेरा
ख़तना हुआ जब मैं अभी आठ दिन का बच्चा था।
मैं इसराईल क़ौम के क़बीले बिनयमीन का हूँ,
ऐसा इबरानी जिसके वालिदैन भी इबरानी थे।
मैं फ़रीसियों का मेंबर था जो यहूदी शरीअत के
कटर पैरोकार हैं। 6मैं इतना सरगरम था कि मसीह
की जमातों को ईज़ा पहुँचाई। हाँ, मैं शरीअत पर
अमल करने में रास्तबाज़ और बेइलज़ाम था।

हक़ीक़ी फ़ायदा

7उस वक़्त यह सब कुछ मेरे नज़दीक नफ़ा
का बाइस था, लेकिन अब मैं इसे मसीह में होने
के बाइस नुक़सान ही समझता हूँ। 8हाँ, बल्कि
मैं सब कुछ इस अज़ीमतरीन बात के सबब से
नुक़सान समझता हूँ कि मैं अपने ख़ुदावंद मसीह
ईसा को जानता हूँ। उसी की ख़ातिर मुझे तमाम
चीज़ों का नुक़सान पहुँचा है। मैं उन्हें कूड़ा ही
समझता हूँ ताकि मसीह को हासिल करूँ 9और
उसमें पाया जाऊँ। लेकिन मैं इस नौबत तक
अपनी उस रास्तबाज़ी के ज़रीए नहीं पहुँच सकता
जो शरीअत के ताबे रहने से हासिल होती है।
इसके लिए वह रास्तबाज़ी ज़रूरी है जो मसीह पर
ईमान लाने से मिलती है, जो अल्लाह की तरफ़ से
है और जो ईमान पर मबनी होती है। 10हाँ, मैं सब
कुछ कूड़ा ही समझता हूँ ताकि मसीह को, उसके
जी उठने की क़ुदरत और उसके दुखों में शरीक
होने का फ़ज़्ल जान लूँ। यों मैं उस की मौत का
हमशक्ल बनता जा रहा हूँ, 11इस उम्मीद में कि
मैं किसी न किसी तरह मुरदों में से जी उठने की
नौबत तक पहुँचूँगा।

इनाम हासिल करने के लिए दौड़ें

12मतलब यह नहीं कि मैं यह सब कुछ हासिल
कर चुका या कामिल हो चुका हूँ। लेकिन मैं
मनज़िले-मक़सूद की तरफ़ दौड़ा हुआ जाता हूँ
ताकि वह कुछ पकड़ लूँ जिसके लिए मसीह ईसा
ने मुझे पकड़ लिया है। 13भाइयो, में अपने बारे
में यह ख़याल नहीं करता कि मैं इसे हासिल कर
चुका हूँ। लेकिन मैं इस एक ही बात पर ध्यान देता
हूँ, जो कुछ मेरे पीछे है वह मैं भूलकर सख़्त तगो-
दौ के साथ उस तरफ़ बढ़ता हूँ जो आगे पड़ा है।
14मैं सीधा मनज़िले-मक़सूद की तरफ़ दौड़ा हुआ
जाता हूँ ताकि वह इनाम हासिल करूँ जिसके
लिए अल्लाह ने मुझे मसीह ईसा में आसमान पर
बुलाया है।

मसीह में पुख़्ता होना

15चुनाँचे हममें से जितने कामिल हैं आएँ, हम
ऐसी सोच रखें। और अगर आप किसी बात में
फ़रक़ सोचते हैं तो अल्लाह आप पर यह भी
ज़ाहिर करेगा। 16जो भी हो, जिस मरहले तक
हम पहुँच गए हैं आएँ, हम उसके मुताबिक़ ज़िंदगी
गुज़ारें।

17भाइयो, मिलकर मेरे नक़्शे-क़दम पर चलें।
और उन पर ख़ूब ध्यान दें जो हमारे नमूने पर चलते
हैं। 18क्योंकि जिस तरह मैंने आपको कई बार
बताया है और अब रो रोकर बता रहा हूँ, बहुत-
से लोग अपने चाल-चलन से ज़ाहिर करते हैं कि
वह मसीह की सलीब के दुश्मन हैं। 19ऐसे लोगों
का अंजाम हलाकत है। खाने-पीने की पाबंदियाँ
और ख़तने पर फ़ख़र उनका ख़ुदा बन गया है।[a]
हाँ, वह सिर्फ़ दुनियावी सोच रखते हैं। 20लेकिन
हम आसमान के शहरी हैं, और हम शिद्दत से इस
इंतज़ार में हैं कि हमारा नजातदहिंदा और ख़ुदावंद
ईसा मसीह वहीं से आए। 21उस वक़्त वह हमारे
पस्तहाल बदनों को बदलकर अपने जलाली बदन
के हमशक्ल बना देगा। और यह वह उस क़ुव्वत
के ज़रीए करेगा जिससे वह तमाम चीज़ें अपने
ताबे कर सकता है।

हिदायात

4 चुनाँचे मेरे प्यारे भाइयो, जिनका आरज़ूमंद
मैं हूँ और जो मेरी मुसर्रत का बाइस
और मेरा ताज हैं, ख़ुदावंद में साबितक़दम रहें।
अज़ीज़ो, 2मैं युवदिया और सुंतुख़े से अपील
करता हूँ कि वह ख़ुदावंद में एक जैसी सोच रखें।
3हाँ मेरे हमख़िदमत भाई, मेरी आपसे गुज़ारिश है
कि आप उनकी मदद करें। क्योंकि वह अल्लाह
की ख़ुशख़बरी फैलाने की जिद्दो-जहद में मेरे साथ
ख़िदमत करती रही हैं, उस मुक़ाबले में जिसमें
क्लेमेंस और मेरे वह बाक़ी मददगार भी शरीक थे
जिनके नाम किताबे-हयात में दर्ज हैं।

4हर वक़्त ख़ुदावंद में ख़ुशी मनाएँ। एक बार
फिर कहता हूँ, ख़ुशी मनाएँ।

5आपकी नरमदिली तमाम लोगों पर ज़ाहिर
हो। याद रखें कि ख़ुदावंद आने को है। 6अपनी
किसी भी फ़िकर में उलझकर परेशान न हो जाएँ
बल्कि हर हालत में दुआ और इल्तिजा करके
अपनी दरख़ास्तें अल्लाह के सामने पेश करें।
ध्यान रखें कि आप यह शुक्रगुज़ारी की रूह में
करें। 7फिर अल्लाह की सलामती जो समझ से
बाहर है आपके दिलों और ख़यालात को मसीह
ईसा में महफ़ूज़ रखेगी।

8भाइयो, एक आख़िरी बात, जो कुछ सच्चा
है, जो कुछ शरीफ़ है, जो कुछ रास्त है, जो कुछ
मुक़द्दस है, जो कुछ पसंदीदा है, जो कुछ उम्दा है,
ग़रज़, अगर कोई अख़लाक़ी या क़ाबिले-तारीफ़
बात हो तो उसका ख़याल रखें। 9जो कुछ आपने
मेरे वसीले से सीख लिया, हासिल कर लिया, सुन
लिया या देख लिया है उस पर अमल करें। फिर
सलामती का ख़ुदा आपके साथ होगा।

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : उनका पेट और उनका अपनी शर्म पर
फ़ख़र उनका ख़ुदा बन गया है।

जमात की माली इमदाद के लिए शुक्रिया

10मैं ख़ुदावंद में निहायत ही ख़ुश हुआ कि अब
आख़िरकार आपकी मेरे लिए फ़िकरमंदी दुबारा
जाग उठी है। हाँ, मुझे पता है कि आप पहले
भी फ़िकरमंद थे, लेकिन आपको इसका इज़हार
करने का मौक़ा नहीं मिला था। 11मैं यह अपनी
किसी ज़रूरत की वजह से नहीं कह रहा, क्योंकि
मैंने हर हालत में ख़ुश रहने का राज़ सीख लिया
है। 12मुझे दबाए जाने का तजरबा हुआ है और
हर चीज़ कसरत से मुयस्सर होने का भी। मुझे
हर हालत से ख़ूब वाक़िफ़ किया गया है, सेर
होने से और भूका रहने से भी, हर चीज़ कसरत
से मुयस्सर होने से और ज़रूरतमंद होने से भी।
13मसीह में मैं सब कुछ करने के क़ाबिल हूँ,
क्योंकि वही मुझे तक़वियत देता रहता है।

14तो भी अच्छा था कि आप मेरी मुसीबत में
शरीक हुए। 15आप जो फ़िलिप्पी के रहनेवाले हैं
ख़ुद जानते हैं कि उस वक़्त जब मसीह की मुनादी
का काम आपके इलाक़े में शुरू हुआ था और मैं
सूबा मकिदुनिया से निकल आया था तो सिर्फ़
आपकी जमात पूरे हिसाब-किताब के साथ पैसे
देकर मेरी ख़िदमत में शरीक हुई। 16उस वक़्त भी
जब मैं थिस्सलुनीके शहर में था आपने कई बार
मेरी ज़रूरियात पूरी करने के लिए कुछ भेज दिया।
17कहने का मतलब यह नहीं कि मैं आपसे कुछ
पाना चाहता हूँ, बल्कि मेरी शदीद ख़ाहिश यह है
कि आपके देने से आप ही को अल्लाह से कसरत
का सूद मिल जाए। 18यही मेरी रसीद है। मैंने पूरी
रक़म वसूल पाई है बल्कि अब मेरे पास ज़रूरत
से ज़्यादा है। जब से मुझे इपफ़्रुदितुस के हाथ
आपका हदिया मिल गया है मेरे पास बहुत कुछ
है। यह ख़ुशबूदार और क़ाबिले-क़बूल क़ुरबानी
अल्लाह को पसंदीदा है। 19जवाब में मेरा ख़ुदा
अपनी उस जलाली दौलत के मुवाफ़िक़ जो मसीह
ईसा में है आपकी तमाम ज़रूरियात पूरी करे।
20अल्लाह हमारे बाप का जलाल अज़ल से अबद
तक हो। आमीन।

सलाम और बरकत

21तमाम मक़ामी मुक़द्दसीन को मसीह ईसा में
मेरा सलाम देना। जो भाई मेरे साथ हैं वह आपको
सलाम कहते हैं। 22यहाँ के तमाम मुक़द्दसीन
आपको सलाम कहते हैं, ख़ासकर शहनशाह के
घराने के भाई और बहनें। 23ख़ुदावंद ईसा मसीह
का फ़ज़ल आपकी रूह के साथ रहे। आमीन।

कुलुस्सियों के नाम
पौलुस रसूल का ख़त

1 यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है जो अल्लाह की मरज़ी से मसीह ईसा का रसूल है। साथ ही यह भाई तीमुथियुस की तरफ़ से भी है।
2मैं कुलुस्से शहर के मुक़द्दस भाइयों को लिख रहा हूँ जो मसीह पर ईमान लाए हैं :

ख़ुदा हमारा बाप आपको फ़ज़ल और सलामती बख़्शे।

शुक्रगुज़ारी की दुआ

3जब हम आपके लिए दुआ करते हैं तो हर वक़्त ख़ुदा अपने ख़ुदावंद ईसा मसीह के बाप का शुक्र करते हैं,
4क्योंकि हमने आपके मसीह ईसा पर ईमान और आपकी तमाम मुक़द्दसीन से मुहब्बत के बारे में सुन लिया है।
5आपका यह ईमान और मुहब्बत वह कुछ ज़ाहिर करते हैं जिसकी आप उम्मीद रखते हैं और जो आसमान पर आपके लिए महफ़ूज़ रखा गया है। और आपने यह उम्मीद उस वक़्त से रखी है जब से आपने पहली मरतबा सच्चाई का कलाम यानी अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनी।
6यह पैग़ाम जो आपके पास पहुँच गया पूरी दुनिया में फल ला रहा और बढ़ रहा है, बिलकुल उसी तरह जिस तरह यह आपमें भी उस दिन से काम कर रहा है जब आपने पहली बार इसे सुनकर अल्लाह के फ़ज़ल की पूरी हक़ीक़त समझ ली।
7आपने हमारे अज़ीज़ हमख़िदमत इपफ़्रास से इस ख़ुशख़बरी की तालीम पा ली थी। मसीह का यह वफ़ादार ख़ादिम हमारी जगह आपकी ख़िदमत कर रहा है।
8उसी ने हमें आपकी उस मुहब्बत के बारे में बताया जो रूहुल-क़ुद्स ने आपके दिलों में डाल दी है।

9इस वजह से हम आपके लिए दुआ करने से बाज़ नहीं आए बल्कि यह माँगते रहते हैं कि अल्लाह आपको हर रूहानी हिकमत और समझ से नवाज़कर अपनी मरज़ी के इल्म से भर दे।
10क्योंकि फिर ही आप अपनी ज़िंदगी ख़ुदावंद के लायक़ गुज़ार सकेंगे और हर तरह से उसे पसंद आएँगे। हाँ, आप हर क़िस्म का अच्छा काम करके फल लाएँगे और अल्लाह के इल्मो-इरफ़ान में तरक़्क़ी करेंगे।
11और आप उस की जलाली क़ुदरत से मिलनेवाली हर क़िस्म की क़ुव्वत से तक़वियत पाकर हर वक़्त साबितक़दमी और सब्र से चल सकेंगे। आप ख़ुशी से
12बाप का शुक्र करेंगे जिसने आपको उस मीरास में हिस्सा लेने के लायक़ बना दिया जो उसके रौशनी में रहनेवाले मुक़द्दसीन को हासिल है।
13क्योंकि वही हमें तारीकी के इख़्तियार से रिहाई देकर अपने प्यारे फ़रज़ंद की बादशाही में लाया,
14उस वाहिद शख़्स के इख़्तियार में जिसने हमारा फ़िद्या देकर हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर दिया।

मसीह की शख़्सियत और काम

15अल्लाह को देखा नहीं जा सकता, लेकिन
हम मसीह को देख सकते हैं जो अल्लाह की
सूरत और कायनात का पहलौठा है। 16क्योंकि
अल्लाह ने उसी में सब कुछ ख़लक़ किया, ख़ाह
आसमान पर हो या ज़मीन पर, आँखों को नज़र
आए या न, ख़ाह शाही तख़्त, क़ुव्वतें, हुक्मरान या
इख़्तियारवाले हूँ। सब कुछ मसीह के ज़रीए और
उसी के लिए ख़लक़ हुआ। 17वही सब चीज़ों से
पहले है और उसी में सब कुछ क़ायम रहता है।
18और वह बदन यानी अपनी जमात का सर भी
है। वही इब्तिदा है, और चूँकि पहले वही मुरदों
में से जी उठा इसलिए वही उनमें से पहलौठा भी
है ताकि वह सब बातों में अव्वल हो। 19क्योंकि
अल्लाह को पसंद आया कि मसीह में उस की पूरी
मामूरी सुकूनत करे 20और वह मसीह के ज़रीए
सब बातों की अपने साथ सुलह करा ले, ख़ाह वह
ज़मीन की हूँ ख़ाह आसमान की। क्योंकि उसने
मसीह के सलीब पर बहाए गए ख़ून के वसीले से
सुलह-सलामती क़ायम की।

21आप भी पहले अल्लाह के सामने अजनबी
थे और दुश्मन की-सी सोच रखकर बुरे काम
करते थे। 22लेकिन अब उसने मसीह के इनसानी
बदन की मौत से आपके साथ सुलह कर ली है
ताकि वह आपको मुक़द्दस, बेदाग़ और बेइलज़ाम
हालत में अपने हुज़ूर खड़ा करे। 23बेशक अब
ज़रूरी है कि आप ईमान में क़ायम रहें, कि आप
ठोस बुनियाद पर मज़बूती से खड़े रहें और उस
ख़ुशख़बरी की उम्मीद से हट न जाएँ जो आपने
सुन ली है। यह वही पैग़ाम है जिसकी मुनादी
दुनिया में हर मख़लूक़ के सामने कर दी गई है
और जिसका ख़ादिम मैं पौलुस बन गया हूँ।

जमात के ख़ादिम की हैसियत से पौलुस की ख़िदमत

24अब मैं उन दुखों के बाइस ख़ुशी मनाता हूँ जो
मैं आपकी ख़ातिर उठा रहा हूँ। क्योंकि मैं अपने
जिस्म में मसीह के बदन यानी उस की जमात
की ख़ातिर मसीह की मुसीबतों की वह कमियाँ
पूरी कर रहा हूँ जो अब तक रह गई हैं। 25हाँ,
अल्लाह ने मुझे अपनी जमात का ख़ादिम बनाकर
यह ज़िम्मेदारी दी कि मैं आपको अल्लाह का पूरा
कलाम सुना दूँ, 26वह राज़ जो अज़ल से तमाम
गुज़री नसलों से पोशीदा रहा था लेकिन अब
मुक़द्दसीन पर ज़ाहिर किया गया है। 27क्योंकि
अल्लाह चाहता था कि वह जान लें कि ग़ैरयहूदियों
में यह राज़ कितना बेशक़ीमत और जलाली है।
और यह राज़ है क्या? यह कि मसीह आपमें
है। वही आपमें है जिसके बाइस हम अल्लाह
के जलाल में शरीक होने की उम्मीद रखते हैं।
28यों हम सबको मसीह का पैग़ाम सुनाते हैं।
हर मुमकिना हिकमत से हम उन्हें समझाते और
तालीम देते हैं ताकि हर एक को मसीह में कामिल
हालत में अल्लाह के हुज़ूर पेश करें। 29यही
मक़सद पूरा करने के लिए मैं सख़्त मेहनत करता
हूँ। हाँ, मैं पूरी जिद्दो-जहद करके मसीह की उस
क़ुव्वत का सहारा लेता हूँ जो बड़े ज़ोर से मेरे अंदर
काम कर रही है।

2 मैं चाहता हूँ कि आप जान लें कि मैं
आपके लिए किस क़दर जाँफ़िशानी कर
रहा हूँ—आपके लिए, लौदीकियावालों के लिए
और उन तमाम ईमानदारों के लिए भी जिनकी
मेरे साथ मुलाक़ात नहीं हुई। 2मेरी कोशिश यह
है कि उनकी दिली हौसलाअफ़्ज़ाई की जाए और
वह मुहब्बत में एक हो जाएँ, कि उन्हें वह ठोस
एतमाद हासिल हो जाए जो पूरी समझ से पैदा
होता है। क्योंकि मैं चाहता हूँ कि वह अल्लाह का
राज़ जान लें। राज़ क्या है? मसीह ख़ुद। 3उसी
में हिकमत और इल्मो-इरफ़ान के तमाम ख़ज़ाने
पोशीदा हैं।

4ग़रज़ ख़बरदार रहें कि कोई आपको बज़ाहिर
सहीह और मीठे मीठे अलफ़ाज़ से धोका न दे।
5क्योंकि गो मैं जिस्म के लिहाज़ से हाज़िर नहीं
हूँ, लेकिन रूह में मैं आपके साथ हूँ। और मैं यह
देखकर ख़ुश हूँ कि आप कितनी मुनज़्ज़म ज़िंदगी

गुज़ारते हैं, कि आपका मसीह पर ईमान कितना
पुख़्ता है।

मसीह में ज़िंदगी

6आपने ईसा मसीह को ख़ुदावंद के तौर पर
क़बूल कर लिया है। अब उसमें ज़िंदगी गुज़ारें।
7उसमें जड़ पकड़ें, उस पर अपनी ज़िंदगी तामीर
करें, उस ईमान में मज़बूत रहें जिसकी आपको
तालीम दी गई है और शुक्रगुज़ारी से लबरेज़ हो
जाएँ।

8मुहतात रहें कि कोई आपको फ़ल-
सफ़ियाना और महज़ फ़रेब देनेवाली बातों से
अपने जाल में न फँसा ले। ऐसी बातों का
सरचश्मा मसीह नहीं बल्कि इनसानी रिवायतें
और इस दुनिया की क़ुव्वतें हैं। 9क्योंकि मसीह
में उलूहियत की सारी मामूरी मुजस्सम होकर
सुकूनत करती है। 10और आपको जो मसीह में
हैं उस की मामूरी में शरीक कर दिया गया है। वही
हर हुक्मरान और इख़्तियारवाले का सर है।

11उसमें आते वक़्त आपका ख़तना भी
करवाया गया। लेकिन यह ख़तना इनसानी हाथों
से नहीं किया गया बल्कि मसीह के वसीले
से। उस वक़्त आपकी पुरानी फ़ितरत उतार दी
गई, 12आपको बपतिस्मा देकर मसीह के साथ
दफ़नाया गया और आपको ईमान से ज़िंदा कर
दिया गया। क्योंकि आप अल्लाह की क़ुदरत पर
ईमान लाए थे, उसी क़ुदरत पर जिसने मसीह को
मुरदों में से ज़िंदा कर दिया था। 13पहले आप
अपने गुनाहों और नामख़तून जिस्मानी हालत
के सबब से मुरदा थे, लेकिन अब अल्लाह ने
आपको मसीह के साथ ज़िंदा कर दिया है। उसने
हमारे तमाम गुनाहों को मुआफ़ कर दिया है।
14हमारे क़र्ज़ की जो रसीद अपनी शरायत की
बिना पर हमारे ख़िलाफ़ थी उसे उसने मनसूख़
कर दिया। हाँ, उसने हमसे दूर करके उसे कीलों
से सलीब पर जड़ दिया। 15उसने हुक्मरानों और
इख़्तियारवालों से उनका असला छीनकर सबके
सामने उनकी रुसवाई की। हाँ, मसीह की सलीबी
मौत से वह अल्लाह के क़ैदी बन गए और उन्हें
फ़तह के जुलूस में उसके पीछे पीछे चलना पड़ा।

16चुनाँचे कोई आपको इस वजह से मुजरिम
न ठहराए कि आप क्या क्या खाते-पीते या कौन
कौन-सी ईदें मनाते हैं। इसी तरह कोई आपकी
अदालत न करे अगर आप हिलाल की ईद या
सबत का दिन नहीं मनाते। 17यह चीज़ें तो सिर्फ़
आनेवाली हक़ीक़त का साया ही हैं जबकि यह
हक़ीक़त ख़ुद मसीह में पाई जाती है। 18ऐसे लोग
आपको मुजरिम न ठहराएँ जो ज़ाहिरी फ़रोतनी
और फ़रिश्तों की पूजा पर इसरार करते हैं। बड़ी
तफ़सील से अपनी रोयाओं में देखी हुई बातें बयान
करते करते उनके ग़ैररूहानी ज़हन ख़ाहमख़ाह
फूल जाते हैं। 19यों उन्होंने मसीह के साथ लगे
रहना छोड़ दिया अगरचे वह बदन का सर है। वही
जोड़ों और पट्ठों के ज़रीए पूरे बदन को सहारा देकर
उसके मुख़्तलिफ़ हिस्सों को जोड़ देता है। यों पूरा
बदन अल्लाह की मदद से तरक़्क़ी करता जाता
है।

मसीह के साथ मरना और ज़िंदगी गुज़ारना

20आप तो मसीह के साथ मरकर दुनिया की
कुव्वतों से आज़ाद हो गए हैं। अगर ऐसा है तो
आप ज़िंदगी ऐसे क्यों गुज़ारते हैं जैसे कि आप
अभी तक इस दुनिया की मिलकियत हैं? आप
क्यों इसके अहकाम के ताबे रहते हैं? 21मसलन
“इसे हाथ न लगाना, वह न चखना, यह न
छूना।” 22इन तमाम चीज़ों का मक़सद तो यह
है कि इस्तेमाल होकर ख़त्म हो जाएँ। यह सिर्फ़
इनसानी अहकाम और तालीमात हैं। 23बेशक
यह अहकाम जो घड़े हुए मज़हबी फ़रायज़, नाम-
निहाद फ़रोतनी और जिस्म के सख़्त दबाव का
तक़ाज़ा करते हैं हिकमत पर मबनी तो लगते हैं,
लेकिन यह बेकार हैं और सिर्फ़ जिस्म ही की
ख़ाहिशात पूरी करते हैं।

3 आपको मसीह के साथ ज़िंदा कर दिया
गया है, इसलिए वह कुछ तलाश करें जो
आसमान पर है जहाँ मसीह अल्लाह के दहने हाथ

बैठा है। 2दुनियावी चीज़ों को अपने ख़यालों का
मरकज़ न बनाएँ बल्कि आसमानी चीज़ों को।
3क्योंकि आप मर गए हैं और अब आपकी ज़िंदगी
मसीह के साथ अल्लाह में पोशीदा है। 4मसीह ही
आपकी ज़िंदगी है। जब वह ज़ाहिर हो जाएगा तो
आप भी उसके साथ ज़ाहिर होकर उसके जलाल
में शरीक हो जाएंगे।

पुरानी और नई ज़िंदगी

5चुनाँचे उन दुनियावी चीज़ों को मार डालें जो
आपके अंदर काम कर रही हैं : ज़िनाकारी,
नापाकी, शहवतपरस्ती, बुरी ख़ाहिशात और
लालच (लालच तो एक क़िस्म की बुतपरस्ती है)।
6अल्लाह का ग़ज़ब ऐसी ही बातों की वजह से
नाज़िल होगा। 7एक वक़्त था जब आप भी इनके
मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते थे, जब आपकी ज़िंदगी
इनके क़ाबू में थी।

8लेकिन अब वक़्त आ गया है कि आप यह सब
कुछ यानी ग़ुस्सा, तैश, बदसुलूकी, बुहतान और
गंदी ज़बान ख़स्ताहाल कपड़े की तरह उतारकर
फेंक दें। 9एक दूसरे से बात करते वक़्त झूट
मत बोलना, क्योंकि आपने अपनी पुरानी फ़ितरत
उस की हरकतों समेत उतार दी है। 10साथ साथ
आपने नई फ़ितरत पहन ली है, वह फ़ितरत
जिसकी तजदीद हमारा ख़ालिक़ अपनी सूरत पर
करता जा रहा है ताकि आप उसे और बेहतर तौर
पर जान लें। 11जहाँ यह काम हो रहा है वहाँ लोगों
में कोई फ़रक़ नहीं है, ख़ाह कोई ग़ैरयहूदी हो या
यहूदी, मख़तून हो या नामख़तून, ग़ैरयूनानी हो या
स्कूती,[a] ग़ुलाम हो या आज़ाद। कोई फ़रक़ नहीं
पड़ता, सिर्फ़ मसीह ही सब कुछ और सबमें है।

12अल्लाह ने आपको चुनकर अपने लिए
मख़सूसो-मुक़द्दस कर लिया है। वह आपसे
मुहब्बत रखता है। इसलिए अब तरस, नेकी,
फ़रोतनी, नरमदिली और सब्र को पहन लें।
13एक दूसरे को बरदाश्त करें, और अगर आपकी
किसी से शिकायत हो तो उसे मुआफ़ कर दें।
हाँ, यों मुआफ़ करें जिस तरह ख़ुदावंद ने आपको
मुआफ़ कर दिया है। 14इनके अलावा मुहब्बत
भी पहन लें जो सब कुछ बाँधकर कामिलियत
की तरफ़ ले जाती है। 15मसीह की सलामती
आपके दिलों में हुकूमत करे। क्योंकि अल्लाह
ने आपको इसी सलामती की ज़िंदगी गुज़ारने के
लिए बुलाकर एक बदन में शामिल कर दिया है।
शुक्रगुज़ार भी रहें। 16आपकी ज़िंदगी में मसीह
के कलाम की पूरी दौलत घर कर जाए। एक
दूसरे को हर तरह की हिकमत से तालीम देते और
समझाते रहें। साथ साथ अपने दिलों में अल्लाह
के लिए शुक्रगुज़ारी के साथ ज़बूर, हम्दो-सना
और रूहानी गीत गाते रहें। 17और जो कुछ भी
आप करें ख़ाह ज़बानी हो या अमली वह ख़ुदावंद
ईसा का नाम लेकर करें। हर काम में उसी के
वसीले से ख़ुदा बाप का शुक्र करें।

नई ज़िंदगी में ताल्लुक़ात कैसे हूँ

18बीवियो, अपने शौहर के ताबे रहें, क्योंकि
जो ख़ुदावंद में है उसके लिए यही मुनासिब है।

19शौहरो, अपनी बीवियों से मुहब्बत रखें।
उनसे तलख़मिज़ाजी से पेश न आएँ।

20बच्चो, हर बात में अपने माँ-बाप के ताबे रहें,
क्योंकि यही ख़ुदावंद को पसंद है।

21वालिदो, अपने बच्चों को मुश्तइल न करें,
वरना वह बेदिल हो जाएंगे।

22ग़ुलामो, हर बात में अपने दुनियावी मालिकों
के ताबे रहें। न सिर्फ़ उनके सामने ही और
उन्हें ख़ुश रखने के लिए ख़िदमत करें बल्कि
ख़ुलूसदिली और ख़ुदावंद का ख़ौफ़ मानकर काम
करें। 23जो कुछ भी आप करते हैं उसे पूरी लग्न
के साथ करें, इस तरह जैसा कि आप न सिर्फ़
इनसानों की बल्कि ख़ुदावंद की ख़िदमत कर रहे
हूँ। 24आप तो जानते हैं कि ख़ुदावंद आपको
इसके मुआवज़े में वह मीरास देगा जिसका वादा
उसने किया है। हक़ीक़त में आप ख़ुदावंद मसीह
की ही ख़िदमत कर रहे हैं। 25लेकिन जो ग़लत

[a]एक क़बीला जो ज़लील समझा जाता था।

काम करे उसे अपनी ग़लतियों का मुआवज़ा भी
मिलेगा। अल्लाह तो किसी की भी जानिबदारी
नहीं करता।

4 मालिको, अपने ग़ुलामों के साथ
मुंसिफ़ाना और जायज़ सुलूक करें। आप
तो जानते हैं कि आसमान पर आपका भी मालिक
है।

हिदायात

2दुआ में लगे रहें। और दुआ करते वक़्त
शुक्रगुज़ारी के साथ जागते रहें। 3साथ साथ हमारे
लिए भी दुआ करें ताकि अल्लाह हमारे लिए
कलाम सुनाने का दरवाज़ा खोले और हम मसीह
का राज़ पेश कर सकें। आख़िर मैं इसी राज़ की
वजह से क़ैद में हूँ। 4दुआ करें कि मैं इसे यों
पेश करूँ जिस तरह करना चाहिए, कि इसे साफ़
समझा जा सके।

5जो अब तक ईमान न लाए हों उनके साथ
दानिशमंदाना सुलूक करें। इस सिलसिले में हर
मौक़े से फ़ायदा उठाएँ। 6आपकी गुफ़्तगू हर
वक़्त मेहरबान हो, ऐसी कि मज़ा आए और आप
हर एक को मुनासिब जवाब दे सकें।

आख़िरी सलामो-दुआ

7जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है हमारा अज़ीज़ भाई
तुख़िकुस आपको सब कुछ बता देगा। वह एक
वफ़ादार ख़ादिम और ख़ुदावंद में हमख़िदमत रहा
है। 8मैंने उसे ख़ासकर इसलिए आपके पास भेज
दिया ताकि आपको हमारा हाल मालूम हो जाए
और वह आपकी हौसलाअफ़्ज़ाई करे। 9वह हमारे
वफ़ादार और अज़ीज़ भाई उनेसिमुस के साथ
आपके पास आ रहा है, वही जो आपकी जमात
से है। दोनों आपको वह सब कुछ सुना देंगे जो
यहाँ हो रहा है।

10अरिस्तरख़ुस जो मेरे साथ क़ैद में है आपको
सलाम कहता है और इसी तरह बरनबास का
कज़न[a] मरक़ुस भी। (आपको उसके बारे में
हिदायात दी गई हैं। जब वह आपके पास आए तो
उसे ख़ुशआमदीद कहना।) 11ईसा जो यूसतुस
कहलाता है भी आपको सलाम कहता है। उनमें
से जो मेरे साथ अल्लाह की बादशाही में ख़िदमत
कर रहे हैं सिर्फ़ यह तीन मर्द यहूदी हैं। और यह
मेरे लिए तसल्ली का बाइस रहे हैं।

12मसीह ईसा का ख़ादिम इपफ़्रास भी जो
आपकी जमात से है सलाम कहता है। वह हर
वक़्त बड़ी जिद्दो-जहद के साथ आपके लिए दुआ
करता है। उस की ख़ास दुआ यह है कि आप
मज़बूती के साथ खड़े रहें, कि आप बालिग़
मसीही बनकर हर बात में अल्लाह की मरज़ी के
मुताबिक़ चलें। 13मैं ख़ुद इसकी तसदीक़ कर
सकता हूँ कि उसने आपके लिए सख़्त मेहनत
की है बल्कि लौदीकिया और हियरापुलिस की
जमातों के लिए भी। 14हमारे अज़ीज़ डाक्टर
लूक़ा और देमास आपको सलाम कहते हैं।

15मेरा सलाम लौदीकिया की जमात को देना
और इसी तरह नुंफ़ास को उस जमात समेत जो
उसके घर में जमा होती है। 16यह पढ़ने के बाद
ध्यान दें कि लौदीकिया की जमात में भी यह ख़त
पढ़ा जाए और आप लौदीकिया का ख़त भी पढ़ें।
17अरख़िप्पुस को बता देना, ख़बरदार कि आप
वह ख़िदमत तकमील तक पहुँचाएँ जो आपको
ख़ुदावंद में सौंपी गई है।

18मैं अपने हाथ से यह अलफ़ाज़ लिख रहा
हूँ। मेरी यानी पौलुस की तरफ़ से सलाम। मेरी
ज़ंजीरें मत भूलना! अल्लाह का फ़ज़ल आपके
साथ होता रहे।

---

[a]यूनानी लफ़्ज़ से ज़ाहिर नहीं होता कि मरक़ुस चचा, मामूँ, फूफी या ख़ाला का लड़का है।

थिस्सलुनीकियों के नाम
पौलुस रसूल का पहला ख़त

1 यह ख़त पौलुस, सिलवानुस और
तीमुथियुस की तरफ़ से है।
हम थिस्सलुनीकियों की जमात को लिख रहे
हैं, उन्हें जो ख़ुदा बाप और ख़ुदावंद ईसा मसीह
पर ईमान लाए हैं।
अल्लाह आपको फ़ज़ल और सलामती बख़्शे।

थिस्सलुनीकियों की ज़िंदगी और ईमान

2हम हर वक़्त आप सबके लिए ख़ुदा का
शुक्र करते और अपनी दुआओं में आपको याद
करते रहते हैं। 3हमें अपने ख़ुदा बाप के हुज़ूर
ख़ासकर आपका अमल, मेहनत-मशक़्क़त और
साबितक़दमी याद आती रहती है। आप अपना
ईमान कितनी अच्छी तरह अमल में लाए, आपने
मुहब्बत की रूह में कितनी मेहनत-मशक़्क़त की
और आपने कितनी साबितक़दमी दिखाई, ऐसी
साबितक़दमी जो सिर्फ़ हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह
पर उम्मीद ही दिला सकती है। 4भाइयो, अल्लाह
आपसे मुहब्बत रखता है, और हमें पूरा इल्म है कि
उसने आपको वाक़ई चुन लिया है। 5क्योंकि जब
हमने अल्लाह की ख़ुशख़बरी आप तक पहुँचाई तो
न सिर्फ़ बातें करके बल्कि क़ुव्वत के साथ, रूहुल-
क़ुदस में और पूरे एतमाद के साथ। आप जानते
हैं कि जब हम आपके पास थे तो हमने किस
तरह की ज़िंदगी गुज़ारी। जो कुछ हमने किया वह
आपकी ख़ातिर किया। 6उस वक़्त आप हमारे
और ख़ुदावंद के नमूने पर चलने लगे। अगरचे
आप बड़ी मुसीबत में पड़ गए तो भी आपने हमारे
पैग़ाम को उस ख़ुशी के साथ क़बूल किया जो
सिर्फ़ रूहुल-क़ुद्स दे सकता है। 7यों आप सूबा
मकिदुनिया और सूबा अख़या के तमाम ईमानदारों
के लिए नमूना बन गए। 8ख़ुदावंद के पैग़ाम की
आवाज़ आपमें से निकलकर न सिर्फ़ मकिदुनिया
और अख़या में सुनाई दी, बल्कि यह ख़बर कि
आप अल्लाह पर ईमान रखते हैं हर जगह तक
पहुँच गई है। नतीजे में हमें कुछ कहने की ज़रूरत
नहीं रही, 9क्योंकि लोग हर जगह बात कर रहे हैं
कि आपने हमें किस तरह ख़ुशआमदीद कहा है,
कि आपने किस तरह बुतों से मुँह फेरकर अल्लाह
की तरफ़ रुजू किया ताकि ज़िंदा और हक़ीक़ी
ख़ुदा की ख़िदमत करें। 10लोग यह भी कह रहे हैं
कि अब आप इस इंतज़ार में हैं कि अल्लाह का
फ़रज़ंद आसमान पर से आए यानी ईसा जिसे
अल्लाह ने मुरदों में से ज़िंदा कर दिया और जो
हमें आनेवाले ग़ज़ब से बचाएगा।

थिस्सलुनीके में पौलुस का काम

2 भाइयो, आप जानते हैं कि हमारा आपके
पास आना बेफ़ायदा न हुआ। 2आप उस
दुख से भी वाक़िफ़ हैं जो हमें आपके पास आने

से पहले सहना पड़ा, कि फ़िलिप्पी शहर में हमारे साथ कितनी बदसुलूकी हुई थी। तो भी हमने अपने ख़ुदा की मदद से आपको उस की ख़ुशख़बरी सुनाने की जुर्रत की हालाँकि बहुत मुख़ालफ़त का सामना करना पड़ा। 3क्योंकि जब हम आपको उभारते हैं तो इसके पीछे न तो कोई ग़लत नीयत होती है, न कोई नापाक मक़सद या चालाकी। 4नहीं, अल्लाह ने ख़ुद हमें जाँचकर इस लायक़ समझा कि हम उस की ख़ुशख़बरी सुनाने की ज़िम्मेदारी सँभालें। इसी बिना पर हम बोलते हैं, इनसानों को ख़ुश रखने के लिए नहीं बल्कि अल्लाह को जो हमारे दिलों को परखता है। 5आपको भी मालूम है कि हमने न ख़ुशामद से काम लिया, न हम पसे-परदा लालची थे—अल्लाह हमारा गवाह है! 6हम इस मक़सद से काम नहीं कर रहे थे कि लोग हमारी इज़्ज़त करें, ख़ाह आप हों या दीगर लोग। 7मसीह के रसूलों की हैसियत से हम आपके लिए माली बोझ बन सकते थे, लेकिन हम आपके दरमियान होते हुए नरमदिल रहे, ऐसी माँ की तरह जो अपने छोटे बच्चों की परवरिश करती है। 8हमारी आपके लिए चाहत इतनी शदीद थी कि हम आपको न सिर्फ़ अल्लाह की ख़ुशख़बरी की बरकत में शरीक करने को तैयार थे बल्कि अपनी ज़िंदगियों में भी। हाँ, आप हमें इतने अज़ीज़ थे! 9भाइयो, बेशक आपको याद है कि हमने कितनी सख़्त मेहनत-मशक़्क़त की। दिन-रात हम काम करते रहे ताकि अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाते वक़्त किसी पर बोझ न बनें।

10आप और अल्लाह हमारे गवाह हैं कि आप ईमान लानेवालों के साथ हमारा सुलूक कितना मुक़द्दस, रास्त और बेइलज़ाम था। 11क्योंकि आप जानते हैं कि हमने आपमें से हर एक से ऐसा सुलूक किया जैसा बाप अपने बच्चों के साथ करता है। 12हम आपकी हौसलाअफ़्ज़ाई करते, आपको तसल्ली देते और आपको समझाते रहे कि आप अल्लाह के लायक़ ज़िंदगी गुज़ारें, क्योंकि वह आपको अपनी बादशाही और जलाल में हिस्सा लेने के लिए बुलाता है।

13एक और वजह है कि हम हर वक़्त ख़ुदा का शुक्र करते हैं। जब हमने आप तक अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाया तो आपने उसे सुनकर यों क़बूल किया जैसा यह हक़ीक़त में है यानी अल्लाह का कलाम जो इनसानों की तरफ़ से नहीं है और जो आप ईमानदारों में काम कर रहा है। 14भाइयो, न सिर्फ़ यह बल्कि आप यहूदिया में अल्लाह की उन जमातों के नमूने पर चल पड़े जो मसीह ईसा में हैं। क्योंकि आपको अपने हमवतनों के हाथों वह कुछ सहना पड़ा जो उन्हें पहले ही अपने हमवतन यहूदियों से सहना पड़ा था। 15हाँ, यहूदियों ने न सिर्फ़ ख़ुदावंद ईसा और नबियों को क़त्ल किया बल्कि हमें भी अपने बीच में से निकाल दिया। यह लोग अल्लाह को पसंद नहीं आते और तमाम लोगों के ख़िलाफ़ होकर 16हमें इससे रोकने की कोशिश करते हैं कि ग़ैरयहूदियों को अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाएँ, ऐसा न हो कि वह नजात पाएँ। यों वह हर वक़्त अपने गुनाहों का प्याला किनारे तक भरते जा रहे हैं। लेकिन अल्लाह का पूरा ग़ज़ब उन पर नाज़िल हो चुका है।

पौलुस की उनसे दुबारा मिलने की ख़ाहिश

17भाइयो, जब हमें कुछ देर के लिए आपसे अलग कर दिया गया (गो हम दिल से आपके साथ रहे) तो हमने बड़ी आरज़ू से आपसे मिलने की पूरी कोशिश की। 18क्योंकि हम आपके पास आना चाहते थे। हाँ, मैं पौलुस ने बार बार आने की कोशिश की, लेकिन इबलीस ने हमें रोक लिया। 19आख़िर आप ही हमारी उम्मीद और ख़ुशी का बाइस हैं। आप ही हमारा इनाम और हमारा ताज हैं जिस पर हम अपने ख़ुदावंद ईसा के हुज़ूर फ़ख़र करेंगे जब वह आएगा। 20हाँ, आप हमारा जलाल और ख़ुशी हैं।

3 आख़िरकार हम यह हालत मज़ीद बरदाश्त न कर सके। हमने फ़ैसला किया कि अकेले ही अथेने में रहकर 2तीमुथियुस को भेज

देंगे जो हमारा भाई और मसीह की ख़ुशख़बरी
फैलाने में हमारे साथ अल्लाह की ख़िदमत करता
है। हमने उसे भेज दिया ताकि वह आपको मज़बूत
करे और ईमान में आपकी हौसलाअफ़्ज़ाई करे
3ताकि कोई इन मुसीबतों से बेचैन न हो जाए।
क्योंकि आप ख़ुद जानते हैं कि इनका सामना
करना हमारे लिए अल्लाह की मरज़ी है। 4बल्कि
जब हम आपके पास थे तो हमने इसकी पेशगोई
की कि हमें मुसीबत बरदाश्त करनी पड़ेगी। और
ऐसा ही हुआ जैसा कि आप ख़ूब जानते हैं। 5यही
वजह थी कि मैंने तीमुथियुस को भेज दिया। मैं
यह हालात बरदाश्त न कर सका, इसलिए मैंने
उसे आपके ईमान को मालूम करने के लिए भेज
दिया। ऐसा न हो कि आज़मानेवाले ने आपको यों
आज़माइश में डाल दिया हो कि हमारी आप पर
मेहनत ज़ाया जाए।

6लेकिन अब तीमुथियुस लौट आया है, और
वह आपके ईमान और मुहब्बत के बारे में अच्छी
ख़बर लेकर आया है। उसने हमें बताया कि आप
हमें बहुत याद करते हैं और हमसे उतना ही मिलने
के आरज़ूमंद हैं जितना कि हम आप से। 7भाइयो,
आप और आपके ईमान के बारे में यह सुनकर
हमारी हौसलाअफ़्ज़ाई हुई, हालाँकि हम ख़ुद
तरह तरह के दबाव और मुसीबतों में फँसे हुए हैं।
8अब हमारी जान में जान आ गई है, क्योंकि आप
मज़बूती से ख़ुदावंद में क़ायम हैं। 9हम आपकी
वजह से अल्लाह के कितने शुक्रगुज़ार हैं! यह
ख़ुशी नाक़ाबिले-बयान है जो हम आपकी वजह
से अल्लाह के हुज़ूर महसूस करते हैं। 10दिन-रात
हम बड़ी संजीदगी से दुआ करते रहते हैं कि आपसे
दुबारा मिलकर वह कमियाँ पूरी करें जो आपके
ईमान में अब तक रह गई हैं।

11अब हमारा ख़ुदा और बाप ख़ुद और हमारा
ख़ुदावंद ईसा रास्ता खोले ताकि हम आप तक
पहुँच सकें। 12ख़ुदावंद करे कि आपकी एक दूसरे
और दीगर तमाम लोगों से मुहब्बत इतनी बढ़ जाए
कि वह यों दिल से छलक उठे जिस तरह आपके
लिए हमारी मुहब्बत भी छलक रही है। 13क्योंकि
इस तरह अल्लाह आपके दिलों को मज़बूत करेगा
और आप उस वक़्त हमारे ख़ुदा और बाप के हुज़ूर
बेइलज़ाम और मुक़द्दस साबित होंगे जब हमारा
ख़ुदावंद ईसा अपने तमाम मुक़द्दसीन के साथ
आएगा। आमीन।

अल्लाह को पसंदीदा ज़िंदगी

4 भाइयो, एक आख़िरी बात, आपने हमसे
सीख लिया था कि हमारी ज़िंदगी किस
तरह होनी चाहिए ताकि वह अल्लाह को पसंद
आए। और आप इसके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते
भी हैं। अब हम ख़ुदावंद ईसा में आपसे दरख़ास्त
और आपकी हौसलाअफ़्ज़ाई करते हैं कि आप
इसमें मज़ीद तरक़्क़ी करते जाएँ। 2आप तो उन
हिदायात से वाक़िफ़ हैं जो हमने आपको ख़ुदावंद
ईसा के वसीले से दी थीं। 3क्योंकि अल्लाह की
मरज़ी है कि आप उसके लिए मख़सूसो-मुक़द्दस
हों, कि आप ज़िनाकारी से बाज़ रहें। 4हर एक
अपने बदन पर यों क़ाबू पाना सीख ले कि वह
मुक़द्दस और शरीफ़ ज़िंदगी गुज़ार सके। 5वह
ग़ैरईमानदारों की तरह जो अल्लाह से नावाक़िफ़
हैं शहवतपरस्ती का शिकार न हो। 6इस मामले
में कोई अपने भाई का गुनाह न करे, न उससे
ग़लत फ़ायदा उठाए। ख़ुदावंद ऐसे गुनाहों की
सज़ा देता है। हम यह सब कुछ बता चुके और
आपको आगाह कर चुके हैं। 7क्योंकि अल्लाह
ने हमें नापाक ज़िंदगी गुज़ारने के लिए नहीं
बुलाया बल्कि मख़सूसो-मुक़द्दस ज़िंदगी गुज़ारने
के लिए। 8इसलिए जो यह हिदायात रद्द करता है
वह इनसान को नहीं बल्कि अल्लाह को रद्द करता
है जो आपको अपना मुक़द्दस रूह दे देता है।

9यह लिखने की ज़रूरत नहीं कि आप दूसरे
ईमानदारों से मुहब्बत रखें। अल्लाह ने ख़ुद
आपको एक दूसरे से मुहब्बत रखना सिखाया
है। 10और हक़ीक़तन आप मकिदुनिया के तमाम
भाइयों से ऐसी ही मुहब्बत रखते हैं। तो भी
भाइयो, हम आपकी हौसलाअफ़्ज़ाई करना
चाहते हैं कि आप इसमें मज़ीद तरक़्क़ी करते

जाएँ। 11अपनी इज़्ज़त इसमें बरक़रार रखें कि
आप सुकून से ज़िंदगी गुज़ारें, अपने फ़रायज़ अदा
करें और अपने हाथों से काम करें, जिस तरह
हमने आपको कह दिया था। 12जब आप ऐसा
करेंगे तो ग़ैरईमानदार आपकी क़दर करेंगे और
आप किसी भी चीज़ के मुहताज नहीं रहेंगे।

ख़ुदावंद की आमद

13भाइयो, हम चाहते हैं कि आप उनके बारे में
हक़ीक़त जान लें जो सो गए हैं ताकि आप दूसरों
की तरह जिनकी कोई उम्मीद नहीं मातम न करें।
14हमारा ईमान है कि ईसा मर गया और दुबारा
जी उठा, इसलिए हमारा यह भी ईमान है कि जब
ईसा वापस आएगा तो अल्लाह उसके साथ उन
ईमानदारों को भी वापस लाएगा जो मौत की नींद
सो गए हैं।

15जो कुछ हम अब आपको बता रहे हैं वह
ख़ुदावंद की तालीम है। ख़ुदावंद की आमद पर हम
जो ज़िंदा होंगे सोए हुए लोगों से पहले ख़ुदावंद से
नहीं मिलेंगे। 16उस वक़्त ऊँची आवाज़ से हुक्म
दिया जाएगा, फ़रिश्ताए-आज़म की आवाज़
सुनाई देगी, अल्लाह का तुरम बजेगा और ख़ुदावंद
ख़ुद आसमान पर से उतर आएगा। तब पहले वह
जी उठेंगे जो मसीह में मर गए थे। 17इनके बाद ही
हमें जो ज़िंदा होंगे बादलों पर उठा लिया जाएगा
ताकि हवा में ख़ुदावंद से मिलें। फिर हम हमेशा
ख़ुदावंद के साथ रहेंगे। 18चुनाँचे इन अलफ़ाज़ से
एक दूसरे को तसल्ली दिया करें।

ख़ुदावंद की आमद के लिए तैयार रहना

5 भाइयो, इसकी ज़रूरत नहीं कि हम
आपको लिखें कि यह सब कुछ कब और
किस मौक़े पर होगा। 2क्योंकि आप ख़ुद ख़ूब
जानते हैं कि ख़ुदावंद का दिन यों आएगा जिस
तरह चोर रात के वक़्त घर में घुस आता है।
3जब लोग कहेंगे, "अब अमनो-अमान है," तो
हलाकत अचानक ही उन पर आन पड़ेगी। वह इस
तरह मुसीबत में पड़ जाएंगे जिस तरह वह औरत
जिसका बच्चा पैदा हो रहा है। वह हरगिज़ नहीं
बच सकेंगे। 4लेकिन आप भाइयो तारीकी की
गिरिफ़्त में नहीं हैं, इसलिए यह दिन चोर की तरह
आप पर ग़ालिब नहीं आना चाहिए। 5क्योंकि
आप सब रौशनी और दिन के फ़रज़ंद हैं। हमारा
रात या तारीकी से कोई वास्ता नहीं। 6ग़रज़ आएँ,
हम दूसरों की मानिंद न हों जो सोए हुए हैं बल्कि
जागते रहें, होशमंद रहें। 7क्योंकि रात के वक़्त ही
लोग सो जाते हैं, रात के वक़्त ही लोग नशे में धुत
हो जाते हैं। 8लेकिन चूँकि हम दिन के हैं इसलिए
आएँ हम होश में रहें। लाज़िम है कि हम ईमान
और मुहब्बत को ज़िरा-बकतर के तौर पर और
नजात की उम्मीद को ख़ोद के तौर पर पहन लें।
9क्योंकि अल्लाह ने हमें इसलिए नहीं चुना कि
हम पर अपना ग़ज़ब नाज़िल करे बल्कि इसलिए
कि हम अपने ख़ुदावंद ईसा मसीह के वसीले से
नजात पाएँ। 10उसने हमारी ख़ातिर अपनी जान
दे दी ताकि हम उसके साथ जिएँ, ख़ाह हम उस
की आमद के दिन मुरदा हों या ज़िंदा। 11इसलिए
एक दूसरे की हौसलाअफ़्ज़ाई और तामीर करते
रहें, जैसा कि आप कर भी रहे हैं।

आख़िरी हिदायात और सलाम

12भाइयो, हमारी दरख़ास्त है कि आप उनकी
क़दर करें जो आपके दरमियान सख़्त मेहनत
करके ख़ुदावंद में आपकी राहनुमाई और हिदायत
करते हैं। 13उनकी ख़िदमत को सामने रखकर
प्यार से उनकी बड़ी इज़्ज़त करें। और एक दूसरे
के साथ मेल-मिलाप से ज़िंदगी गुज़ारें।

14भाइयो, हम इस पर ज़ोर देना चाहते हैं कि
उन्हें समझाएँ जो बेक़ायदा ज़िंदगी गुज़ारते हैं,
उन्हें तसल्ली दें जो जल्दी से मायूस हो जाते
हैं, कमज़ोरों का ख़याल रखें और सबको सब्र से
बरदाश्त करें। 15इस पर ध्यान दें कि कोई किसी
से बुराई के बदले बुराई न करे बल्कि आप हर
वक़्त एक दूसरे और तमाम लोगों के साथ नेक
काम करने में लगे रहें।

16हर वक़्त ख़ुश रहें, 17बिलानाग़ा दुआ करें,
18और हर हालत में ख़ुदा का शुक्र करें। क्योंकि
जब आप मसीह में हैं तो अल्लाह यही कुछ आपसे
चाहता है।

19रूहुल-क़ुद्स को मत बुझाएँ। 20नबु-
व्वतों की तहक़ीर न करें। 21सब कुछ परख-
कर वह थामे रखें जो अच्छा है, 22और हर क़िस्म
की बुराई से बाज़ रहें।

23अल्लाह ख़ुद जो सलामती का ख़ुदा है
आपको पूरे तौर पर मख़सूसो-मुक़द्दस करे। वह
करे कि आप पूरे तौर पर रूह, जान और बदन
समेत उस वक़्त तक महफ़ूज़ और बेइलज़ाम रहें
जब तक हमारा ख़ुदावंद ईसा मसीह वापस नहीं
आ जाता। 24जो आपको बुलाता है वह वफ़ादार
है और वह ऐसा करेगा भी।

25भाइयो, हमारे लिए दुआ करें।

26तमाम भाइयों को हमारी तरफ़ से बोसा
देना।

27ख़ुदावंद के हुज़ूर मैं आपको ताकीद करता हूँ
कि यह ख़त तमाम भाइयों के सामने पढ़ा जाए।

28हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह का फ़ज़ल आपके
साथ होता रहे।

थिस्सलुनीकियों के नाम
पौलुस रसूल का दूसरा ख़त

1 यह ख़त पौलुस, सिलवानुस और
तीमुथियुस की तरफ़ से है।
हम थिस्सलुनीकियों की जमात को लिख रहे
हैं, उन्हें जो अल्लाह हमारे बाप और ख़ुदावंद ईसा
मसीह पर ईमान लाए हैं।
2ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावंद ईसा मसीह
आपको फ़ज़ल और सलामती बख़्शें।

मसीह की आमद पर अदालत

3भाइयो, वाजिब है कि हम हर वक़्त आपके
लिए ख़ुदा का शुक्र करें। हाँ, यह मौज़ूँ है, क्योंकि
आपका ईमान हैरतअंगेज़ तरक़्क़ी कर रहा है
और आप सबकी एक दूसरे से मुहब्बत बढ़ रही
है। 4यही वजह है कि हम अल्लाह की दीगर
जमातों में आप पर फ़ख़र करते हैं। हाँ, हम
फ़ख़र करते हैं कि आप इन दिनों में कितनी
साबितक़दमी और ईमान दिखा रहे हैं हालाँकि
आप बहुत ईज़ारसानियाँ और मुसीबतें बरदाश्त
कर रहे हैं।
5यह सब कुछ साबित करता है कि अल्लाह
की अदालत रास्त है, और नतीजे में आप उस की
बादशाही के लायक़ ठहरेंगे, जिसके लिए आप
अब दुख उठा रहे हैं। 6अल्लाह वही कुछ करेगा
जो रास्त है। वह उन्हें मुसीबतों में डाल देगा जो
आपको मुसीबत में डाल रहे हैं, 7और आपको जो
मुसीबत में हैं हमारे समेत आराम देगा। वह यह
उस वक़्त करेगा जब ख़ुदावंद ईसा अपने क़वी
फ़रिश्तों के साथ आसमान पर से आकर ज़ाहिर
होगा 8और भड़कती हुई आग में उन्हें सज़ा देगा
जो न अल्लाह को जानते हैं, न हमारे ख़ुदावंद
ईसा की ख़ुशख़बरी के ताबे हैं। 9ऐसे लोग अबदी
हलाकत की सज़ा पाएँगे, वह हमेशा तक ख़ुदावंद
की हुज़ूरी और उस की जलाली क़ुदरत से दूर हो
जाएंगे। 10लेकिन उस दिन ख़ुदावंद इसलिए भी
आएगा कि अपने मुक़द्दसीन में जलाल पाए और
तमाम ईमानदारों में हैरत का बाइस हो। आप भी
उनमें शामिल होंगे, क्योंकि आप उस पर ईमान
लाए जिसकी गवाही हमने आपको दी।
11यह पेशे-नज़र रखकर हम लगातार आपके
लिए दुआ करते हैं। हमारा ख़ुदा आपको उस
बुलावे के लायक़ ठहराए जिसके लिए आपको
बुलाया गया है। और वह अपनी क़ुदरत से आपकी
नेकी करने की हर ख़ाहिश और आपके ईमान
का हर काम तकमील तक पहुँचाए। 12क्योंकि
इस तरह ही हमारे ख़ुदावंद ईसा का नाम आपमें
जलाल पाएगा और आप भी उसमें जलाल पाएँगे,
उस फ़ज़ल के मुताबिक़ जो हमारे ख़ुदा और
ख़ुदावंद ईसा मसीह ने आपको दिया है।

बेदीनी का आदमी

2 भाइयो, यह सवाल उठा है कि हमारे
ख़ुदावंद ईसा मसीह की आमद कैसी
होगी? हम किस तरह उसके साथ जमा हो
जाएंगे? इस नाते से हमारी आपसे दरख़ास्त
है 2कि जब लोग कहते हैं कि ख़ुदावंद का दिन
आ चुका है तो आप जल्दी से बेचैन या परेशान
न हो जाएँ। उनकी बात न मानें, चाहे वह यह
दावा भी करें कि उनके पास हमारी तरफ़ से कोई
नबुव्वत, पैग़ाम या ख़त है। 3कोई भी आपको
किसी भी चाल से फ़रेब न दे, क्योंकि यह दिन उस
वक़्त तक नहीं आएगा जब तक आख़िरी बग़ावत
पेश न आए और "बेदीनी का आदमी" ज़ाहिर
न हो जाए, वह जिसका अंजाम हलाकत होगा।
4वह हर एक की मुख़ालफ़त करेगा जो ख़ुदा और
माबूद कहलाता है और अपने आपको उन सबसे
बड़ा ठहराएगा। हाँ, वह अल्लाह के घर में बैठकर
एलान करेगा, "मैं अल्लाह हूँ।"

5क्या आपको याद नहीं कि मैं आपको यह
बताता रहा जब अभी आपके पास था? 6और
अब आप जानते हैं कि क्या कुछ उसे रोक रहा
है ताकि वह अपने मुक़र्ररा वक़्त पर ज़ाहिर हो
जाए। 7क्योंकि यह पुरअसरार बेदीनी अब भी
असर कर रही है। लेकिन यह उस वक़्त तक
ज़ाहिर नहीं होगी जब तक वह शख़्स हट न जाए
जो अब तक उसे रोक रहा है। 8फिर ही "बेदीनी
का आदमी" ज़ाहिर होगा। लेकिन जब ख़ुदावंद
ईसा आएगा तो वह उसे अपने मुँह की फूँक से
मार डालेगा, ज़ाहिर होने पर ही वह उसे हलाक
कर देगा। 9"बेदीनी के आदमी" में इबलीस काम
करेगा। जब वह आएगा तो हर क़िस्म की ताक़त
का इज़हार करेगा। वह झूटे निशान और मोजिज़े
पेश करेगा। 10यों वह उन्हें हर तरह के शरीर
फ़रेब में फँसाएगा जो हलाक होनेवाले हैं। लोग
इसलिए हलाक हो जाएंगे कि उन्होंने सच्चाई से
मुहब्बत करने से इनकार किया, वरना वह बच
जाते। 11इस वजह से अल्लाह उन्हें बुरी तरह से
फ़रेब में फँसने देता है ताकि वह इस झूट पर ईमान
लाएँ। 12नतीजे में सब जो सच्चाई पर ईमान न
लाए बल्कि नारास्ती से लुत्फ़अंदोज़ हुए मुजरिम
ठहरेंगे।

आपको नजात के लिए चुन लिया गया है

13मेरे भाइयो, वाजिब है कि हम हर वक़्त
आपके लिए ख़ुदा का शुक्र करें जिन्हें ख़ुदावंद
प्यार करता है। क्योंकि अल्लाह ने आपको शुरू
ही से नजात पाने के लिए चुन लिया, ऐसी
नजात के लिए जो रूहुल-क़ुद्स से पाकीज़गी
पाकर सच्चाई पर ईमान लाने से हासिल होती है।
14अल्लाह ने आपको उस वक़्त यह नजात पाने
के लिए बुला लिया जब हमने आपको उस की
ख़ुशख़बरी सुनाई। और अब आप हमारे ख़ुदावंद
ईसा मसीह के जलाल में शरीक हो सकते हैं।
15भाइयो, इसलिए साबितक़दम रहें और उन
रिवायात को थामे रखें जो हमने आपको सिखाई
हैं, ख़ाह ज़बानी या ख़त के ज़रीए।

16हमारा ख़ुदावंद ईसा मसीह ख़ुद और ख़ुदा
हमारा बाप जिसने हमसे मुहब्बत रखी और अपने
फ़ज़ल से हमें अबदी तसल्ली और ठोस उम्मीद
बख़्शी 17आपकी हौसलाअफ़्ज़ाई करे और यों
मज़बूत करे कि आप हमेशा वह कुछ बोलें और
करें जो अच्छा है।

हमारे लिए दुआ करना

3 भाइयो, एक आख़िरी बात, हमारे लिए
दुआ करें कि ख़ुदावंद का पैग़ाम जल्दी से
फैल जाए और इज़्ज़त पाए, बिलकुल उसी तरह
जिस तरह आपके दरमियान हुआ। 2इसके लिए
भी दुआ करें कि अल्लाह हमें ग़लत और शरीर
लोगों से बचाए रखे, क्योंकि सब तो ईमान नहीं
रखते।

3लेकिन ख़ुदावंद वफ़ादार है, और वही आपको
मज़बूत करके इबलीस से महफ़ूज़ रखेगा। 4हम
ख़ुदावंद में आप पर एतमाद रखते हैं कि आप वह

कुछ कर रहे हैं बल्कि करते रहेंगे जो हमने आपको
करने को कहा था।
5ख़ुदावंद आपके दिलों को अल्लाह की
मुहब्बत और मसीह की साबितक़दमी की तरफ़
मायल करता रहे।

काम करने का फ़र्ज़

6भाइयो, अपने ख़ुदावंद ईसा मसीह के नाम
में हम आपको हुक्म देते हैं कि हर उस भाई
से किनारा करें जो बेक़ायदा चलता और जो
हमसे पाई हुई रिवायत के मुताबिक़ ज़िंदगी नहीं
गुज़ारता। 7आप ख़ुद जानते हैं कि आपको किस
तरह हमारे नमूने पर चलना चाहिए। जब हम
आपके पास थे तो हमारी ज़िंदगी में बेतरतीबी नहीं
पाई जाती थी। 8हमने किसी का खाना भी पैसे
दिए बग़ैर न खाया, बल्कि दिन-रात सख़्त मेहनत-
मशक़्क़त करते रहे ताकि आपमें से किसी के
लिए बोझ न बनें। 9बात यह नहीं कि हमें आपसे
मुआवज़ा मिलने का हक़ नहीं था। नहीं, हमने
ऐसा किया ताकि हम आपके लिए अच्छा नमूना
बनें और आप इस नमूने पर चलें। 10जब हम अभी
आपके पास थे तो हमने आपको हुक्म दिया, “जो
काम नहीं करना चाहता वह खाना भी न खाए।”
11अब हमें यह ख़बर मिली है कि आपमें से
बाज़ बेक़ायदा ज़िंदगी गुज़ारते हैं। वह काम नहीं
करते बल्कि दूसरों के कामों में ख़ाहमख़ाह दख़ल
देते हैं। 12ख़ुदावंद ईसा मसीह के नाम में हम ऐसे
लोगों को हुक्म देते और समझाते हैं कि आराम
से काम करके अपनी रोज़ी कमाएँ।
13भाइयो, आप भलाई करने से कभी हिम्मत
न हारें। 14अगर कोई इस ख़त में दर्ज हमारी
हिदायत पर अमल न करे तो उससे ताल्लुक़ न
रखना ताकि उसे शर्म आए। 15लेकिन उसे दुश्मन
मत समझना बल्कि उसे भाई जानकर समझाना।

आख़िरी अलफ़ाज़

16ख़ुदावंद ख़ुद जो सलामती का सरचश्मा है
आपको हर वक़्त और हर तरह से सलामती
बख़्शे। ख़ुदावंद आप सबके साथ हो।
17मैं, पौलुस अपने हाथ से यह लिख रहा हूँ।
मेरी तरफ़ से सलाम। मैं इसी तरीक़े से अपने हर
ख़त पर दस्तख़त करता और इसी तरह लिखता
हूँ।
18हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह का फ़ज़ल आप
सबके साथ रहे।

तीमुथियुस के नाम
पौलुस रसूल का पहला ख़त

1 यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है जो हमारे
नजातदहिंदा अल्लाह और हमारी उम्मीद
मसीह ईसा के हुक्म पर मसीह ईसा का रसूल है।
2मैं तीमुथियुस को लिख रहा हूँ जो ईमान में
मेरा सच्चा बेटा है।
ख़ुदा बाप और हमारा ख़ुदावंद मसीह ईसा
आपको फ़ज़ल, रहम और सलामती अता करें।

ग़लत तालीम से ख़बरदार

3मैंने आपको मकिदुनिया जाते वक़्त नसीहत
की थी कि इफ़िसुस में रहें ताकि आप वहाँ के कुछ
लोगों को ग़लत तालीम देने से रोकें। 4उन्हें फ़रज़ी
कहानियों और ख़त्म न होनेवाले नसबनामे के
पीछे न लगने दें। इनसे महज़ बहस-मुबाहसा पैदा
होता है और अल्लाह का नजातबख़्श मनसूबा
पूरा नहीं होता। क्योंकि यह मनसूबा सिर्फ़ ईमान
से तकमील तक पहुँचता है। 5मेरी इस हिदायत
का मक़सद यह है कि मुहब्बत उभर आए, ऐसी
मुहब्बत जो ख़ालिस दिल, साफ़ ज़मीर और
बेरिया ईमान से पैदा होती है। 6कुछ लोग इन
चीज़ों से भटककर बेमानी बातों में गुम हो गए हैं।
7यह शरीअत के उस्ताद बनना चाहते हैं, लेकिन
उन्हें उन बातों की समझ नहीं आती जो वह कर
रहे हैं और जिन पर वह इतने एतमाद से इसरार
कर रहे हैं।
8लेकिन हम तो जानते हैं कि शरीअत अच्छी
है बशर्तेकि इसे सहीह तौर पर इस्तेमाल किया
जाए। 9और याद रहे कि यह रास्तबाज़ों के लिए
नहीं दी गई। क्योंकि यह उनके लिए है जो बग़ैर
शरीअत के और सरकश ज़िंदगी गुज़ारते हैं, जो
बेदीन और गुनाहगार हैं, जो मुक़द्दस और रूहानी
बातों से ख़ाली हैं, जो अपने माँ-बाप के क़ातिल
हैं, जो ख़ूनी, 10ज़िनाकार, हमजिंसपरस्त और
ग़ुलामों के ताजिर हैं, जो झूट बोलते, झूटी
क़सम खाते और मज़ीद बहुत कुछ करते हैं
जो सेहतबख़्श तालीम के ख़िलाफ़ है। 11और
सेहतबख़्श तालीम क्या है? वह जो मुबारक ख़ुदा
की उस जलाली ख़ुशख़बरी में पाई जाती है जो
मेरे सुपुर्द की गई है।

अल्लाह के रहम के लिए शुक्रगुज़ारी

12मैं अपने ख़ुदावंद मसीह ईसा का शुक्र
करता हूँ जिसने मेरी तक़वियत की है। मैं उसका
शुक्र करता हूँ कि उसने मुझे वफ़ादार समझकर
ख़िदमत के लिए मुक़र्रर किया। 13गो मैं पहले
कुफ़र बकनेवाला और गुस्ताख़ आदमी था, जो
लोगों को ईज़ा देता था, लेकिन अल्लाह ने मुझ पर
रहम किया। क्योंकि उस वक़्त मैं ईमान नहीं लाया
था और इसलिए नहीं जानता था कि क्या कर रहा
हूँ। 14हाँ, हमारे ख़ुदावंद ने मुझ पर अपना फ़ज़ल

कसरत से उंडेल दिया और मुझे वह ईमान और
मुहब्बत अता की जो हमें मसीह ईसा में होते हुए
मिलती है। 15हम इस क़ाबिले-क़बूल बात पर पूरा
भरोसा रख सकते हैं कि मसीह ईसा गुनाहगारों
को नजात देने के लिए इस दुनिया में आया।
उनमें से मैं सबसे बड़ा गुनाहगार हूँ, 16लेकिन
यही वजह है कि अल्लाह ने मुझ पर रहम किया।
क्योंकि वह चाहता था कि मसीह ईसा मुझमें
जो अव्वल गुनाहगार हूँ अपना वसी सब्र ज़ाहिर
करे और मैं यों उनके लिए नमूना बन जाऊँ जो
उस पर ईमान लाकर अबदी ज़िंदगी पानेवाले
हैं। 17हाँ, हमारे अज़ली-ओ-अबदी शहनशाह की
हमेशा तक इज़्ज़तो-जलाल हो! वही लाफ़ानी,
अनदेखा और वाहिद ख़ुदा है। आमीन।

18तीमुथियुस मेरे बेटे, मैं आपको यह हिदायत
उन पेशगोइयों के मुताबिक़ देता हूँ जो पहले
आपके बारे में की गई थीं। क्योंकि मैं चाहता हूँ
कि आप इनकी पैरवी करके अच्छी तरह लड़ सकें
19और ईमान और साफ़ ज़मीर के साथ ज़िंदगी
गुज़ार सकें। क्योंकि बाज़ ने यह बातें रद्द कर दी
हैं और नतीजे में उनके ईमान का बेड़ा ग़रक़ हो
गया। 20हुमिनयुस और सिकंदर भी इनमें शामिल
हैं। अब मैंने इन्हें इबलीस के हवाले कर दिया है
ताकि वह कुफ़र बकने से बाज़ आना सीखें।

जमात की परस्तिश

2 पहले मैं इस पर ज़ोर देना चाहता
हूँ कि आप सबके लिए दरख़ास्तें,
दुआएँ, सिफ़ारिशें और शुक्रगुज़ारियाँ पेश करें,
2बादशाहों और इख़्तियारवालों के लिए भी
ताकि हम आराम और सुकून से ख़ुदातरस और
शरीफ़ ज़िंदगी गुज़ार सकें। 3यह अच्छा और
हमारे नजातदहिंदा अल्लाह को पसंदीदा है। 4हाँ,
वह चाहता है कि तमाम इनसान नजात पाकर
सच्चाई को जान लें। 5क्योंकि एक ही ख़ुदा
है और अल्लाह और इनसान के बीच में एक
ही दरमियानी है यानी मसीह ईसा, वह इनसान
6जिसने अपने आपको फ़िद्या के तौर पर सबके
लिए दे दिया ताकि वह मख़लसी पाएँ। यों उसने
मुक़र्ररा वक़्त पर गवाही दी 7और यह गवाही
सुनाने के लिए मुझे मुनाद, रसूल और ग़ैरयहूदियों
का उस्ताद मुक़र्रर किया ताकि उन्हें ईमान और
सच्चाई का पैग़ाम सुनाऊँ। मैं झूट नहीं बोल रहा
बल्कि सच कह रहा हूँ।

8अब मैं चाहता हूँ कि हर मक़ामी जमात
के मर्द मुक़द्दस हाथ उठाकर दुआ करें। वह
ग़ुस्से या बहस-मुबाहसा की हालत में ऐसा न
करें। 9इसी तरह मैं चाहता हूँ कि ख़वातीन
मुनासिब कपड़े पहनकर शराफ़त और शायस्तगी
से अपने आपको आरास्ता करें। वह गुँधे हुए बाल,
सोना, मोती या हद से ज़्यादा महँगे कपड़ों से
अपने आपको आरास्ता न करें 10बल्कि नेक
कामों से। क्योंकि यही ऐसी ख़वातीन के लिए
मुनासिब है जो ख़ुदातरस होने का दावा करती
हैं। 11ख़ातून ख़ामोशी से और पूरी फ़रमाँबरदारी
के साथ सीखे। 12मैं ख़वातीन को तालीम देने
या आदमियों पर हुकूमत करने की इजाज़त नहीं
देता। वह ख़ामोश रहें। 13क्योंकि पहले आदम को
तश्कील दिया गया, फिर हव्वा को। 14और आदम
ने इबलीस से धोका न खाया बल्कि हव्वा ने,
जिसका नतीजा गुनाह था। 15लेकिन ख़वातीन
बच्चे जन्म देने से नजात पाएँगी। शर्त यह है कि
वह समझ के साथ ईमान, मुहब्बत और मुक़द्दस
हालत में ज़िंदगी गुज़ारती रहें।

ख़ुदा की जमात के निगरान

3 यह बात यक़ीनी है कि जो जमात का
निगरान बनना चाहता है वह एक अच्छी
ज़िम्मेदारी की आरज़ू रखता है। 2लाज़िम है कि
निगरान बेइलज़ाम हो। उस की एक ही बीवी हो।
वह होशमंद, समझदार,[a] शरीफ़, मेहमान-नवाज़
और तालीम देने के क़ाबिल हो। 3वह शराबी न

[a]यूनानी लफ़्ज़ में ज़ब्ते-नफ़स का उनसुर भी पाया जाता
है।

हो, न लड़ाका बल्कि नरमदिल और अमनपसंद।
वह पैसों का लालच करनेवाला न हो। 4लाज़िम
है कि वह अपने ख़ानदान को अच्छी तरह सँभाल
सके और कि उसके बच्चे शराफ़त के साथ उस
की बात मानें। 5क्योंकि अगर वह अपना ख़ानदान
न सँभाल सके तो वह किस तरह अल्लाह की
जमात की देख-भाल कर सकेगा? 6वह नौमुरीद
न हो वरना ख़तरा है कि वह फूलकर इबलीस के
जाल में उलझ जाए और यों उस की अदालत की
जाए। 7लाज़िम है कि जमात से बाहर के लोग
उस की अच्छी गवाही दे सकें, ऐसा न हो कि वह
बदनाम होकर इबलीस के फंदे में फँस जाए।

जमात के मददगार

8इसी तरह जमात के मददगार भी शरीफ़ हों।
वह रियाकार न हों, न हद से ज़्यादा मै पिएँ। वह
लालची भी न हों। 9लाज़िम है कि वह साफ़ ज़मीर
रखकर ईमान की पुरअसरार सच्चाइयाँ महफ़ूज़
रखें। 10यह भी ज़रूरी है कि उन्हें पहले परखा
जाए। अगर वह इसके बाद बेइलज़ाम निकलें
तो फिर वह ख़िदमत करें। 11उनकी बीवियाँ भी
शरीफ़ हों। वह बुहतान लगानेवाली न हों बल्कि
होशमंद और हर बात में वफ़ादार। 12मददगार की
एक ही बीवी हो। लाज़िम है कि वह अपने बच्चों
और ख़ानदान को अच्छी तरह सँभाल सके। 13जो
मददगार अच्छी तरह अपनी ख़िदमत सँभालते हैं
उनकी हैसियत बढ़ जाएगी और मसीह ईसा पर
उनका ईमान इतना पुख़्ता हो जाएगा कि वह बड़े
एतमाद के साथ ज़िंदगी गुज़ार सकेंगे।

एक अज़ीम भेद

14अगरचे मैं जल्द आपके पास आने की
उम्मीद रखता हूँ तो भी आपको यह ख़त लिख
रहा हूँ। 15लेकिन अगर देर भी लगे तो यह पढ़कर
आपको मालूम होगा कि अल्लाह के घराने में
हमारा बरताव कैसा होना चाहिए। अल्लाह का
घराना क्या है? ज़िंदा ख़ुदा की जमात, जो
सच्चाई का सतून और बुनियाद है। 16यक़ीनन
हमारे ईमान का भेद अज़ीम है।

वह जिस्म में ज़ाहिर हुआ,
रूह में रास्तबाज़ ठहरा
और फ़रिश्तों को दिखाई दिया।
उस की ग़ैरयहूदियों में मुनादी की गई,
उस पर दुनिया में ईमान लाया गया
और उसे आसमान के जलाल में
उठा लिया गया।

झूटे उस्ताद

4 रूहुल-क़ुद्स साफ़ फ़रमाता है कि आख़िरी
दिनों में कुछ ईमान से हटकर फ़रेबदेह रूहों
और शैतानी तालीमात की पैरवी करेंगे। 2ऐसी
तालीमात झूट बोलनेवालों की रियाकार बातों से
आती हैं, जिनके ज़मीर पर इबलीस ने अपना
निशान लगाकर ज़ाहिर कर दिया है कि यह उसके
अपने हैं। 3यह शादी करने की इजाज़त नहीं देते
और लोगों को कहते हैं कि वह मुख़्तलिफ़ खाने
की चीज़ों से परहेज़ करें। लेकिन अल्लाह ने यह
चीज़ें इसलिए बनाई हैं कि जो ईमान रखते हैं और
सच्चाई से वाक़िफ़ हैं इन्हें शुक्रगुज़ारी के साथ
खाएँ। 4जो कुछ भी अल्लाह ने ख़लक़ किया है
वह अच्छा है, और हमें उसे रद्द नहीं करना चाहिए
बल्कि ख़ुदा का शुक्र करके उसे खा लेना चाहिए।
5क्योंकि उसे अल्लाह के कलाम और दुआ से
मख़सूसो-मुक़द्दस किया गया है।

मसीह ईसा का अच्छा ख़ादिम

6अगर आप भाइयों को यह तालीम दें तो
आप मसीह ईसा के अच्छे ख़ादिम होंगे। फिर
यह साबित हो जाएगा कि आपको ईमान और
उस अच्छी तालीम की सच्चाइयों में तरबियत दी
गई है जिसकी पैरवी आप करते रहे हैं। 7लेकिन
दादी-अम्माँ की इन बेमानी फ़रज़ी कहानियों से
बाज़ रहें। इनकी बजाए ऐसी तरबियत हासिल
करें जिससे आपकी रूहानी ज़िंदगी मज़बूत हो
जाए। 8क्योंकि जिस्म की तरबियत का थोड़ा ही

फ़ायदा है, लेकिन रूहानी तरबियत हर लिहाज़
से मुफ़ीद है, इसलिए कि अगर हम इस क़िस्म
की तरबियत हासिल करें तो हमसे हाल और
मुस्तक़बिल में ज़िंदगी पाने का वादा किया गया
है। 9यह बात क़ाबिले-एतमाद है और इसे पूरे तौर
पर क़बूल करना चाहिए। 10यही वजह है कि हम
मेहनत-मशक़्क़त और जाँफ़िशानी करते रहते हैं,
क्योंकि हमने अपनी उम्मीद ज़िंदा ख़ुदा पर रखी है
जो तमाम इनसानों का नजातदहिंदा है, ख़ासकर
ईमान रखनेवालों का।

11लोगों को यह हिदायात दें और सिखाएँ।
12कोई भी आपको इसलिए हक़ीर न जाने कि
आप जवान हैं। लेकिन ज़रूरी है कि आप कलाम
में, चाल-चलन में, मुहब्बत में, ईमान में और
पाकीज़गी में ईमानदारों के लिए नमूना बन जाएँ।
13जब तक मैं नहीं आता इस पर ख़ास ध्यान दें
कि जमात में बाक़ायदगी से कलाम की तिलावत
की जाए, लोगों को नसीहत की जाए और
उन्हें तालीम दी जाए। 14अपनी उस नेमत को
नज़रंदाज़ न करें जो आपको उस वक़्त पेशगोई
के ज़रीए मिली जब बुज़ुर्गों ने आप पर अपने
हाथ रखे। 15इन बातों को फ़रोग़ दें और इनके
पीछे लगे रहें ताकि आपकी तरक़्क़ी सबको नज़र
आए। 16अपना और तालीम का ख़ास ख़याल
रखें। इनमें साबितक़दम रहें, क्योंकि ऐसा करने
से आप अपने आपको और अपने सुननेवालों को
बचा लेंगे।

ईमानदारों से सुलूक

5 बुज़ुर्ग भाइयों को सख़्ती से न डाँटना
बल्कि उन्हें यों समझाना जिस तरह कि
वह आपके बाप हों। इसी तरह जवान आदमियों
को यों समझाना जैसे वह आपके भाई हों, 2बुज़ुर्ग
बहनों को यों जैसे वह आपकी माएँ हों और जवान
ख़वातीन को तमाम पाकीज़गी के साथ यों जैसे
वह आपकी बहनें हों।

3उन बेवाओं की मदद करके उनकी इज़्ज़त करें
जो वाक़ई ज़रूरतमंद हैं। 4अगर किसी बेवा के
बच्चे या पोते-नवासे हों तो उस की मदद करना
उन्हीं का फ़र्ज़ है। हाँ, वह सीखें कि ख़ुदातरस
होने का पहला फ़र्ज़ यह है कि हम अपने घरवालों
की फ़िकर करें और यों अपने माँ-बाप, दादा-दादी
और नाना-नानी को वह कुछ वापस करें जो हमें
उनसे मिला है, क्योंकि ऐसा अमल अल्लाह को
पसंद है। 5जो औरत वाक़ई ज़रूरतमंद बेवा और
तनहा रह गई है वह अपनी उम्मीद अल्लाह पर
रखकर दिन-रात अपनी इल्तिजाओं और दुआओं
में लगी रहती है। 6लेकिन जो बेवा ऐशो-इशरत में
ज़िंदगी गुज़ारती है वह ज़िंदा हालत में ही मुरदा है।
7यह हिदायात लोगों तक पहुँचाएँ ताकि उन पर
इलज़ाम न लगाया जा सके। 8क्योंकि अगर कोई
अपनों और ख़ासकर अपने घरवालों की फ़िकर न
करे तो उसने अपने ईमान का इनकार कर दिया।
ऐसा शख़्स ग़ैरईमानदारों से बदतर है।

9जिस बेवा की उम्र 60 साल से कम है उसे
बेवाओं की फ़हरिस्त में दर्ज न किया जाए। शर्त
यह भी है कि जब उसका शौहर ज़िंदा था तो वह
उस की वफ़ादार रही हो 10और कि लोग उसके
नेक कामों की अच्छी गवाही दे सकें, मसलन क्या
उसने अपने बच्चों को अच्छी तरह पाला है? क्या
उसने मेहमान-नवाज़ी की और मुक़द्दसीन के पाँव
धोकर उनकी ख़िदमत की है? क्या वह मुसीबत
में फँसे हुओं की मदद करती रही है? क्या वह हर
नेक काम के लिए कोशाँ रही है?

11लेकिन जवान बेवाएँ इस फ़हरिस्त में
शामिल मत करना, क्योंकि जब उनकी जिस्मानी
ख़ाहिशात उन पर ग़ालिब आती हैं तो वह मसीह
से दूर होकर शादी करना चाहती हैं। 12यों वह
अपना पहला ईमान छोड़कर मुजरिम ठहरती हैं।
13इसके अलावा वह सुस्त होने और इधर-उधर
घरों में फिरने की आदी बन जाती हैं। न सिर्फ़ यह
बल्कि वह बातूनी भी बन जाती हैं और दूसरों के
मामलात में दख़ल देकर नामुनासिब बातें करती
हैं। 14इसलिए मैं चाहता हूँ कि जवान बेवाएँ
दुबारा शादी करके बच्चों को जन्म दें और अपने
घरों को सँभालें। फिर वह दुश्मन को बदगोई करने

का मौक़ा नहीं देंगी। 15क्योंकि बाज़ तो सहीह राह से हटकर इबलीस के पीछे लग चुकी हैं। 16लेकिन जिस ईमानदार औरत के ख़ानदान में बेवाएँ हैं उसका फ़र्ज़ है कि वह उनकी मदद करे ताकि वह ख़ुदा की जमात के लिए बोझ न बनें। वरना जमात उन बेवाओं की सहीह मदद नहीं कर सकेगी जो वाक़ई ज़रूरतमंद हैं।

17जो बुज़ुर्ग जमात को अच्छी तरह सँभालते हैं उन्हें दुगनी इज़्ज़त के लायक़ समझा जाए[a] मैं ख़ासकर उनकी बात कर रहा हूँ जो पाक कलाम सुनाने और तालीम देने में मेहनत-मशक़्क़त करते हैं।। 18क्योंकि कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता है, "जब तू फ़सल गाहने के लिए उस पर बैल चलने देता है तो उसका मुँह बाँधकर न रखना।" यह भी लिखा है, "मज़दूर अपनी मज़दूरी का हक़दार है।" 19जब किसी बुज़ुर्ग पर इलज़ाम लगाया जाए तो यह बात सिर्फ़ इस सूरत में मानें कि दो या इससे ज़्यादा गवाह इसकी तसदीक़ करें। 20लेकिन जिन्होंने वाक़ई गुनाह किया हो उन्हें पूरी जमात के सामने समझाएँ ताकि दूसरे ऐसी हरकतें करने से डर जाएँ।

21अल्लाह और मसीह ईसा और उसके चुनीदा फ़रिश्तों के सामने मैं संजीदगी से ताकीद करता हूँ कि इन हिदायात की यों पैरवी करें कि आप किसी मामले से सहीह तौर पर वाक़िफ़ होने से पेशतर फ़ैसला न करें, न जानिबदारी का शिकार हो जाएँ। 22जल्दी से किसी पर हाथ रखकर उसे किसी ख़िदमत के लिए मख़सूस मत करना, न दूसरों के गुनाहों में शरीक होना। अपने आपको पाक रखें।

23चूँकि आप अकसर बीमार रहते हैं इसलिए अपने मेदे का लिहाज़ करके न सिर्फ़ पानी ही पिया करें बल्कि साथ साथ कुछ मै भी इस्तेमाल करें।

24कुछ लोगों के गुनाह साफ़ साफ़ नज़र आते हैं, और वह उनसे पहले ही अदालत के तख़्त के सामने आ पहुँचते हैं। लेकिन कुछ ऐसे भी हैं जिनके गुनाह गोया उनके पीछे चलकर बाद में ज़ाहिर होते हैं। 25इसी तरह कुछ लोगों के अच्छे काम साफ़ नज़र आते हैं जबकि बाज़ के अच्छे काम अभी नज़र नहीं आते। लेकिन यह भी पोशीदा नहीं रहेंगे बल्कि किसी वक़्त ज़ाहिर हो जाएंगे।

6 जो भी ग़ुलामी के जुए में हैं वह अपने मालिकों को पूरी इज़्ज़त के लायक़ समझें ताकि लोग अल्लाह के नाम और हमारी तालीम पर कुफ़र न बकें। 2जब मालिक ईमान लाते हैं तो ग़ुलामों को उनकी इसलिए कम इज़्ज़त नहीं करना चाहिए कि वह अब मसीह में भाई हैं। बल्कि वह उनकी और ज़्यादा ख़िदमत करें, क्योंकि अब जो उनकी अच्छी ख़िदमत से फ़ायदा उठा रहे हैं वह ईमानदार और अज़ीज़ हैं।

ग़लत तालीम और हक़ीक़ी दौलत

लाज़िम है कि आप लोगों को इन बातों की तालीम दें और इसमें उनकी हौसलाअफ़्ज़ाई करें। 3जो भी इससे फ़रक़ तालीम देकर हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के सेहतबख़्श अलफ़ाज़ और इस ख़ुदातरस ज़िंदगी की तालीम से वाबस्ता नहीं रहता 4वह ख़ुदपसंदी से फूला हुआ है और कुछ नहीं समझता। ऐसा शख़्स बहस-मुबाहसा करने और ख़ाली बातों पर झगड़ने में ग़ैरसेहतमंद दिलचस्पी लेता है। नतीजे में हसद, झगड़े, कुफ़र और बदगुमानी पैदा होती है। 5यह लोग आपस में झगड़ने की वजह से हमेशा कुढ़ते रहते हैं। उनके ज़हन बिगड़ गए हैं और सच्चाई उनसे छीन ली गई है। हाँ, यह समझते हैं कि ख़ुदातरस ज़िंदगी गुज़ारने से माली नफ़ा हासिल किया जा सकता है।

6ख़ुदातरस ज़िंदगी वाक़ई बहुत नफ़ा का बाइस है, लेकिन शर्त यह है कि इनसान को जो कुछ भी मिल जाए वह उस पर इकतिफ़ा करे। 7हम

[a]यहाँ मतलब है कि उनकी इज़्ज़त ख़ासकर माली लिहाज़ से की जाए।

दुनिया में अपने साथ क्या लाए? कुछ नहीं! तो हम दुनिया से निकलते वक़्त क्या कुछ साथ ले जा सकेंगे? कुछ भी नहीं! 8चुनाँचे अगर हमारे पास ख़ुराक और लिबास हो तो यह हमारे लिए काफ़ी होना चाहिए। 9जो अमीर बनने के ख़ाहाँ रहते हैं वह कई तरह की आज़माइशों और फंदों में फँस जाते हैं। बहुत-सी नासमझ और नुक़सानदेह ख़ाहिशात उन्हें हलाकत और तबाही में ग़रक़ हो जाने देती हैं। 10क्योंकि पैसों का लालच हर ग़लत काम का सरचश्मा है। कई लोगों ने इसी लालच के बाइस ईमान से भटककर अपने आपको बहुत अज़ियत पहुँचाई है।

शख़्सी हिदायात

11लेकिन आप जो अल्लाह के बंदे हैं इन चीज़ों से भागते रहें। इनकी बजाए रास्तबाज़ी, ख़ुदातरसी, ईमान, मुहब्बत, साबितक़दमी और नरमदिली के पीछे लगे रहें। 12ईमान की अच्छी कुश्ती लड़ें। अबदी ज़िंदगी से ख़ूब लिपट जाएँ, क्योंकि अल्लाह ने आपको यही ज़िंदगी पाने के लिए बुलाया, और आपने अपनी तरफ़ से बहुत-से गवाहों के सामने इस बात का इक़रार भी किया। 13मेरे दो गवाह हैं, अल्लाह जो सब कुछ ज़िंदा रखता है और मसीह ईसा जिसने पुंतियुस पीलातुस के सामने अपने ईमान की अच्छी गवाही दी। इन्हीं के सामने मैं आपको कहता हूँ कि 14यह हुक्म यों पूरा करें कि आप पर न दाग़ लगे, न इलज़ाम। और इस हुक्म पर उस दिन तक अमल करते रहें जब तक हमारा ख़ुदावंद ईसा मसीह ज़ाहिर नहीं हो जाता। 15क्योंकि अल्लाह मसीह को मुक़र्ररा वक़्त पर ज़ाहिर करेगा। हाँ, जो मुबारक और वाहिद हुक्मरान, बादशाहों का बादशाह और मालिकों का मालिक है वह उसे मुक़र्ररा वक़्त पर ज़ाहिर करेगा। 16सिर्फ़ वही लाफ़ानी है, वही ऐसी रौशनी में रहता है जिसके क़रीब कोई नहीं आ सकता। न किसी इनसान ने उसे कभी देखा, न वह उसे देख सकता है। उस की इज़्ज़त और क़ुदरत अबद तक रहे। आमीन।

17जो मौजूदा दुनिया में अमीर हैं उन्हें समझाएँ कि वह मग़रूर न हों, न दौलत जैसी ग़ैरयक़ीनी चीज़ पर उम्मीद रखें। इसकी बजाए वह अल्लाह पर उम्मीद रखें जो हमें फ़ैयाज़ी से सब कुछ मुहैया करता है ताकि हम उससे लुत्फ़अंदोज़ हो जाएँ। 18यह पेशे-नज़र रखकर अमीर नेक काम करें और भलाई करने में ही अमीर हों। वह ख़ुशी से दूसरों को देने और अपनी दौलत में शरीक करने के लिए तैयार हों। 19यों वह अपने लिए एक अच्छा ख़ज़ाना जमा करेंगे यानी आनेवाले जहान के लिए एक ठोस बुनियाद जिस पर खड़े होकर वह हक़ीक़ी ज़िंदगी पा सकेंगे।

20तीमुथियुस बेटे, जो कुछ आपके हवाले किया गया है उसे महफ़ूज़ रखें। दुनियावी बकवास और उन मुतज़ाद ख़यालात से कतराते रहें जिन्हें ग़लती से इल्म का नाम दिया गया है। 21कुछ तो इस इल्म के माहिर होने का दावा करके ईमान की सहीह राह से हट गए हैं।

अल्लाह का फ़ज़ल आप सबके साथ रहे।

तीमुथियुस के नाम
पौलुस रसूल का दूसरा ख़त

1 यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है जो अल्लाह
की मरज़ी से मसीह ईसा का रसूल है ताकि
उस वादा की हुई ज़िंदगी का पैग़ाम सुनाए जो हमें
मसीह ईसा में हासिल होती है।
2मैं अपने प्यारे बेटे तीमुथियुस को लिख रहा
हूँ।
ख़ुदा बाप और हमारा ख़ुदावंद मसीह ईसा
आपको फ़ज़ल, रहम और सलामती अता करें।

शुक्रगुज़ारी और हौसलाअफ़्ज़ाई

3मैं आपके लिए ख़ुदा का शुक्र करता हूँ
जिसकी ख़िदमत मैं अपने बापदादा की तरह साफ़
ज़मीर से करता हूँ। दिन-रात मैं लगातार आपको
अपनी दुआओं में याद रखता हूँ। 4मुझे आपके
आँसू याद आते हैं, और मैं आपसे मिलने का
आरज़ूमंद हूँ ताकि ख़ुशी से भर जाऊँ। 5मुझे
ख़ासकर आपका मुख़लिस ईमान याद है जो
पहले आपकी नानी लूइस और माँ यूनीके रखती
थीं। और मुझे यक़ीन है कि आप भी यही ईमान
रखते हैं। 6यही वजह है कि मैं आपको एक बात
याद दिलाता हूँ। अल्लाह ने आपको उस वक़्त
एक नेमत से नवाज़ा जब मैंने आप पर हाथ
रखे। आपको उस नेमत की आग को नए सिरे
से भड़काने की ज़रूरत है। 7क्योंकि जिस रूह से
अल्लाह ने हमें नवाज़ा है वह हमें बुज़दिल नहीं
बनाता बल्कि हमें क़ुव्वत, मुहब्बत और नज़्मो-
ज़ब्त दिलाता है।
8इसलिए हमारे ख़ुदावंद के बारे में गवाही देने
से न शर्माएँ, न मुझसे जो मसीह की ख़ातिर क़ैदी
हूँ। इसके बजाए मेरे साथ अल्लाह की क़ुव्वत से
मदद लेकर उस की ख़ुशख़बरी की ख़ातिर दुख
उठाएँ। 9क्योंकि उसने हमें नजात देकर मुक़द्दस
ज़िंदगी गुज़ारने के लिए बुलाया। और यह चीज़ें
हमें अपनी मेहनत से नहीं मिलीं बल्कि अल्लाह
के इरादे और फ़ज़ल से। यह फ़ज़ल ज़मानों
की इब्तिदा से पहले हमें मसीह में दिया गया
10लेकिन अब हमारे नजातदहिंदा मसीह ईसा की
आमद से ज़ाहिर हुआ। मसीह ही ने मौत को नेस्त
कर दिया। उसी ने अपनी ख़ुशख़बरी के ज़रीए
लाफ़ानी ज़िंदगी रौशनी में लाकर हम पर ज़ाहिर
कर दी है।
11अल्लाह ने मुझे यही ख़ुशख़बरी सुनाने के
लिए मुनाद, रसूल और उस्ताद मुक़र्रर किया है।
12इसी वजह से मैं दुख उठा रहा हूँ। तो भी मैं
शर्माता नहीं, क्योंकि मैं उसे जानता हूँ जिस पर
में ईमान लाया हूँ, और मुझे पूरा यक़ीन है कि जो
कुछ मैंने उसके हवाले कर दिया है उसे वह अपनी
आमद के दिन तक महफ़ूज़ रखने के क़ाबिल है।
13उन सेहतबख़्श बातों के मुताबिक़ चलते रहें
जो आपने मुझसे सुन ली हैं, और यों ईमान और

मुहब्बत के साथ मसीह ईसा में ज़िंदगी गुज़ारें।
14जो बेशक़ीमत चीज़ आपके हवाले कर दी गई
है उसे रूहुल-क़ुद्स की मदद से जो हममें सुकूनत
करता है महफ़ूज़ रखें।

15आपको मालूम है कि सूबा आसिया में तमाम
लोगों ने मुझे तर्क कर दिया है। इनमें फ़ूगिलुस
और हिरमुगिनेस भी शामिल हैं। 16ख़ुदावंद
उनेसिफ़ुरुस के घराने पर रहम करे, क्योंकि उसने
कई दफ़ा मुझे तरो-ताज़ा किया। हाँ, वह इससे
कभी न शर्माया कि मैं क़ैदी हूँ। 17बल्कि जब
वह रोम शहर पहुँचा तो बड़ी कोशिशों से मेरा
खोज लगाकर मुझे मिला। 18ख़ुदावंद करे कि
वह क़ियामत के दिन ख़ुदावंद से रहम पाए। आप
ख़ुद बेहतर जानते हैं कि उसने इफ़िसुस में कितनी
ख़िदमत की।

मसीह ईसा का वफ़ादार सिपाही

2 लेकिन आप, मेरे बेटे, उस फ़ज़ल से
तक़वियत पाएँ जो आपको मसीह ईसा में
मिल गया है। 2जो कुछ आपने बहुत गवाहों की
मौजूदगी में मुझसे सुना है उसे मोतबर लोगों के
सुपुर्द करें। यह ऐसे लोग हों जो औरों को सिखाने
के क़ाबिल हों।

3मसीह ईसा के अच्छे सिपाही की तरह हमारे
साथ दुख उठाते रहें। 4जिस सिपाही की ड्यूटी है
वह आम रिआया के मामलात में फँसने से बाज़
रहता है, क्योंकि वह अपने अफ़सर को पसंद
आना चाहता है। 5इसी तरह खेल के मुक़ाबले
में हिस्सा लेनेवाले को सिर्फ़ इस सूरत में इनाम
मिल सकता है कि वह क़वायद के मुताबिक़ ही
मुक़ाबला करे। 6और लाज़िम है कि फ़सल की
कटाई के वक़्त पहले उसको फ़सल का हिस्सा
मिले जिसने खेत में मेहनत की है। 7उस पर ध्यान
देना जो मैं आपको बता रहा हूँ, क्योंकि ख़ुदावंद
आपको इन तमाम बातों की समझ अता करेगा।

8मसीह ईसा को याद रखें, जो दाऊद की
औलाद में से है और जिसे मुरदों में से ज़िंदा
कर दिया गया। यही मेरी ख़ुशख़बरी है 9जिसकी
ख़ातिर मैं दुख उठा रहा हूँ, यहाँ तक कि मुझे
आम मुजरिम की तरह ज़ंजीरों से बाँधा गया है।
लेकिन अल्लाह का कलाम ज़ंजीरों से बाँधा नहीं
जा सकता। 10इसलिए मैं सब कुछ अल्लाह के
चुने हुए लोगों की ख़ातिर बरदाश्त करता हूँ ताकि
वह भी नजात पाएँ—वह नजात जो मसीह ईसा
से मिलती है और जो अबदी जलाल का बाइस
बनती है। 11यह क़ौल क़ाबिले-एतमाद है,

अगर हम उसके साथ मर गए
तो हम उसके साथ जिएँगे भी।
12अगर हम बरदाश्त करते रहें
तो हम उसके साथ हुकूमत भी करेंगे।
अगर हम उसे जानने से इनकार करें
तो वह भी हमें जानने से इनकार करेगा।
13अगर हम बेवफ़ा निकलें
तो भी वह वफ़ादार रहेगा।
क्योंकि वह अपना इनकार
नहीं कर सकता।

क़ाबिले-क़बूल ख़िदमतगुज़ार

14लोगों को इन बातों की याद दिलाते रहें
और उन्हें संजीदगी से अल्लाह के हुज़ूर समझाएँ
कि वह बाल की खाल उतारकर एक दूसरे से
न झगड़ें। यह बेफ़ायदा है बल्कि सुननेवालों को
बिगाड़ देता है। 15अपने आपको अल्लाह के
सामने यों पेश करने की पूरी कोशिश करें कि
आप मक़बूल साबित हों, कि आप ऐसा मज़दूर
निकलें जिसे अपने काम से शर्माने की ज़रूरत न
हो बल्कि जो सहीह तौर पर अल्लाह का सच्चा
कलाम पेश करे। 16दुनियावी बकवास से बाज़
रहें। क्योंकि जितना यह लोग इसमें फँस जाएंगे
उतना ही बेदीनी का असर बढ़ेगा 17और उनकी
तालीम कैंसर की तरह फैल जाएगी। इन लोगों
में हुमिनयुस और फ़िलेतुस भी शामिल हैं 18जो
सच्चाई से हट गए हैं। यह दावा करते हैं कि
मुरदों के जी उठने का अमल हो चुका है और यों
बाज़ एक का ईमान तबाह हो गया है। 19लेकिन
अल्लाह की ठोस बुनियाद क़ायम रहती है और

उस पर इन दो बातों की मुहर लगी है, “ख़ुदावंद
ने अपने लोगों को जान लिया है” और “जो भी
समझे कि मैं ख़ुदावंद का पैरोकार हूँ वह नारास्ती
से बाज़ रहे।”

20बड़े घरों में न सिर्फ़ सोने और चाँदी के
बरतन होते हैं बल्कि लकड़ी और मिट्टी के भी।
यानी कुछ शरीफ़ कामों के लिए इस्तेमाल होते हैं
और कुछ कमक़दर कामों के लिए। 21अगर कोई
अपने आपको इन बुरी चीज़ों से पाक-साफ़ करे
तो वह शरीफ़ कामों के लिए इस्तेमाल होनेवाला
बरतन होगा। वह मख़सूसो-मुक़द्दस, मालिक के
लिए मुफ़ीद और हर नेक काम के लिए तैयार
होगा। 22जवानी की बुरी ख़ाहिशात से भागकर
रास्तबाज़ी, ईमान, मुहब्बत और सुलह-सलामती
के पीछे लगे रहें। और यह उनके साथ मिलकर करें
जो ख़ुलूसदिली से ख़ुदावंद की परस्तिश करते हैं।
23हमाक़त और जहालत की बहसों से किनारा
करें। आप तो जानते हैं कि इनसे सिर्फ़ झगड़े
पैदा होते हैं। 24लाज़िम है कि ख़ुदावंद का ख़ादिम
न झगड़े बल्कि हर एक से मेहरबानी का सुलूक
करे। वह तालीम देने के क़ाबिल हो और सब्र
से ग़लत सुलूक बरदाश्त करे। 25जो मुख़ालफ़त
करते हैं उन्हें वह नरमदिली से तरबियत दे, क्योंकि
हो सकता है कि अल्लाह उन्हें तौबा करने की
तौफ़ीक़ दे और वह सच्चाई को जान लें, 26होश में
आएँ और इबलीस के फंदे से बच निकलें। क्योंकि
इबलीस ने उन्हें क़ैद कर लिया है ताकि वह उस
की मरज़ी पूरी करें।

आख़िरी दिन

3 लेकिन यह बात जान लें कि आख़िरी दिनों
में हौलनाक लमहे आएँगे। 2लोग ख़ुदपसंद
और पैसों के लालची होंगे। वह शेख़ीबाज़,
मग़रूर, कुफ़र बकनेवाले, माँ-बाप के नाफ़रमान,
नाशुकरे, बेदीन 3और मुहब्बत से ख़ाली होंगे।
वह सुलह करने के लिए तैयार नहीं होंगे, दूसरों
पर तोहमत लगाएँगे, ऐयाश और वहशी होंगे
और भलाई से नफ़रत रखेंगे। 4वह नमकहराम,
ग़ैरमुहतात और ग़ुरूर से फूले हुए होंगे। अल्लाह से
मुहब्बत रखने के बजाए उन्हें ऐशो-इशरत प्यारी
होगी। 5वह बज़ाहिर ख़ुदातरस ज़िंदगी गुज़ारेंगे,
लेकिन हक़ीक़ी ख़ुदातरस ज़िंदगी की क़ुव्वत का
इनकार करेंगे। ऐसों से किनारा करें। 6उनमें से
कुछ लोग घरों में घुसकर कमज़ोर ख़वातीन को
अपने जाल में फँसा लेते हैं, ऐसी ख़वातीन को जो
अपने गुनाहों तले दबी हुई हैं और जिन्हें कई तरह
की शहवतें चलाती हैं। 7गो यह हर वक़्त तालीम
हासिल करती रहती हैं तो भी सच्चाई को जानने
तक कभी नहीं पहुँच सकतीं। 8जिस तरह यन्नेस
और यंबरेस मूसा की मुख़ालफ़त करते थे उसी
तरह यह लोग भी सच्चाई की मुख़ालफ़त करते
हैं। इनका ज़हन बिगड़ा हुआ है और इनका ईमान
नामक़बूल निकला। 9लेकिन यह ज़्यादा तरक़्क़ी
नहीं करेंगे क्योंकि इनकी हमाक़त सब पर ज़ाहिर
हो जाएगी, बिलकुल उसी तरह जिस तरह यन्नेस
और यंबरेस के साथ भी हुआ।

आख़िरी हिदायात

10लेकिन आप हर लिहाज़ से मेरे शागिर्द
रहे हैं, चाल-चलन में, इरादे में, ईमान में,
सब्र में, मुहब्बत में, साबितक़दमी में, 11ईज़ा-
रसानियों में और दुखों में। अंताकिया, इकु-
नियुम और लुस्तरा में मेरे साथ क्या कुछ न हुआ!
वहाँ मुझे कितनी सख़्त ईज़ारसानियों का सामना
करना पड़ा। लेकिन ख़ुदावंद ने मुझे इन सबसे
रिहाई दी। 12बात यह है कि सब जो मसीह ईसा में
ख़ुदातरस ज़िंदगी गुज़ारना चाहते हैं उन्हें सताया
जाएगा। 13साथ साथ शरीर और धोकेबाज़ लोग
अपने ग़लत कामों में तरक़्क़ी करते जाएंगे। वह
दूसरों को ग़लत राह पर ले जाएंगे और उन्हें ख़ुद
भी ग़लत राह पर लाया जाएगा। 14लेकिन आप
ख़ुद उस पर क़ायम रहें जो आपने सीख लिया
और जिस पर आपको यक़ीन आया है। क्योंकि
आप अपने उस्तादों को जानते हैं 15और आप
बचपन से मुक़द्दस सहीफ़ों से वाक़िफ़ हैं। अल्लाह
का यह कलाम आपको वह हिकमत अता कर

सकता है जो मसीह ईसा पर ईमान लाने से नजात
तक पहुँचाती है। 16क्योंकि हर पाक नविश्ता
अल्लाह के रूह से वुजूद में आया है और तालीम
देने, मलामत करने, इसलाह करने और रास्तबाज़
ज़िंदगी गुज़ारने की तरबियत देने के लिए मुफ़ीद
है। 17कलामे-मुक़द्दस का मक़सद यही है कि
अल्लाह का बंदा हर लिहाज़ से क़ाबिल और हर
नेक काम के लिए तैयार हो।

4 मैं अल्लाह और मसीह ईसा के सामने जो
ज़िंदों और मुरदों की अदालत करेगा और
उस की आमद और बादशाही की याद दिलाकर
संजीदगी से इसकी ताकीद करता हूँ, 2कि वक़्त
बेवक़्त कलामे-मुक़द्दस की मुनादी करने के लिए
तैयार रहें। बड़े सब्र से ईमानदारों को तालीम
देकर उन्हें समझाएँ, मलामत करें और उनकी
हौसलाअफ़्ज़ाई भी करें। 3क्योंकि एक वक़्त
आएगा जब लोग सेहतबख़्श तालीम बरदाश्त नहीं
करेंगे बल्कि अपने पास अपनी बुरी ख़ाहिशात
से मुताबिक़त रखनेवाले उस्तादों का ढेर लगा
लेंगे। यह उस्ताद उन्हें सिर्फ़ दिल बहलानेवाली
बातें सुनाएँगे, सिर्फ़ वह कुछ जो वह सुनना चाहते
हैं। 4वह सच्चाई को सुनने से बाज़ आकर फ़रज़ी
कहानियों के पीछे पड़ जाएंगे। 5लेकिन आप ख़ुद
हर हालत में होश में रहें। दुख को बरदाश्त करें,
अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाते रहें और अपनी
ख़िदमत के तमाम फ़रायज़ अदा करें।

6जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है, वह वक़्त आ चुका
है कि मुझे मै की नज़र की तरह क़ुरबानगाह पर
उंडेला जाए। मेरे कूच का वक़्त आ गया है। 7मैंने
अच्छी कुश्ती लड़ी है, मैं दौड़ के इख़्तिताम तक
पहुँच गया हूँ, मैंने ईमान को महफ़ूज़ रखा है।
8और अब एक इनाम तैयार पड़ा है, रास्तबाज़ी
का वह ताज जो ख़ुदावंद हमारा रास्त मुंसिफ़ मुझे
अपनी आमद के दिन देगा। और न सिर्फ़ मुझे
बल्कि उन सबको जो उस की आमद के आरज़ूमंद
रहे हैं।

कुछ शख़्सी बातें

9मेरे पास आने में जल्दी करें। 10क्योंकि देमास
ने इस दुनिया को प्यार करके मुझे छोड़ दिया है।
वह थिस्सलुनीके चला गया। क्रेसकेंस गलतिया
और तितुस दल्मतिया चले गए हैं। 11सिर्फ़ लूक़ा
मेरे पास है। मरक़ुस को अपने साथ ले आना,
क्योंकि वह ख़िदमत के लिए मुफ़ीद साबित होगा।
12तुख़िकुस को मैंने इफ़िसुस भेज दिया है।
13आते वक़्त मेरा वह कोट अपने साथ ले आएँ
जो मैं त्रोआस में करपुस के पास छोड़ आया
था। मेरी किताबें भी ले आएँ, ख़ासकर चरमी
काग़ज़वाली।

14सिकंदर लोहार ने मुझे बहुत नुक़सान
पहुँचाया है। ख़ुदावंद उसे उसके काम का बदला
देगा। 15उससे मुहतात रहें क्योंकि उसने बड़ी
शिद्दत से हमारी बातों की मुख़ालफ़त की।

16जब मुझे पहली दफ़ा अपने दिफ़ा के लिए
अदालत में पेश किया गया तो सबने मुझे तर्क कर
दिया। अल्लाह उनसे इस बात का हिसाब न ले
बल्कि इसे नज़रंदाज़ कर दे। 17लेकिन ख़ुदावंद
मेरे साथ था। उसी ने मुझे तक़वियत दी, क्योंकि
उस की मरज़ी थी कि मेरे वसीले से उसका पूरा
पैग़ाम सुनाया जाए और तमाम ग़ैरयहूदी उसे सुनें।
यों अल्लाह ने मुझे शेरबबर के मुँह से निकालकर
बचा लिया। 18और आगे भी ख़ुदावंद मुझे हर
शरीर हमले से बचाएगा और अपनी आसमानी
बादशाही में लाकर नजात देगा। उसका जलाल
अज़ल से अबद तक होता रहे। आमीन।

आख़िरी सलाम

19प्रिसकिल्ला, अकविला और उनेसि-
फ़ुरुस के घराने को हमारा सलाम कहना।
20इरास्तुस कुरिंथुस में रहा, और मुझे त्रुफ़िमुस
को मीलेतुस में छोड़ना पड़ा, क्योंकि वह बीमार
था। 21जल्दी करें ताकि सर्दियों के मौसम से
पहले यहाँ पहुँचें।

यूबूलुस, पूदेंस, लीनुस, क्लौदिया और तमाम
भाई आपको सलाम कहते हैं।

22ख़ुदावंद आपकी रूह के साथ हो। अल्लाह
का फ़ज़ल आपके साथ होता रहे।

तितुस के नाम
पौलुस रसूल का ख़त

1 यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है जो अल्लाह
का ख़ादिम और ईसा मसीह का रसूल है।
मुझे चुनकर भेजा गया ताकि मैं ईमान लाने
और ख़ुदातरस ज़िंदगी की सच्चाई जान लेने में
अल्लाह के चुने हुए लोगों की मदद करूँ। 2क्योंकि
उससे उन्हें अबदी ज़िंदगी की उम्मीद दिलाई जाती
है, ऐसी ज़िंदगी की जिसका वादा अल्लाह ने
दुनिया के ज़मानों से पेशतर ही किया था। और
वह झूट नहीं बोलता। 3अपने मुक़र्ररा वक़्त पर
अल्लाह ने अपने कलाम का एलान करके उसे
ज़ाहिर कर दिया। यही एलान मेरे सुपुर्द किया
गया है और मैं इसे हमारे नजातदहिंदा अल्लाह के
हुक्म के मुताबिक़ सुनाता हूँ।

4मैं तितुस को लिख रहा हूँ जो हमारे मुश्तरका
ईमान के मुताबिक़ मेरा हक़ीक़ी बेटा है।

ख़ुदा बाप और हमारा नजातदहिंदा मसीह ईसा
आपको फ़ज़ल और सलामती अता करें।

क्रेते में तितुस की ख़िदमत

5मैंने आपको क्रेते में इसलिए छोड़ा था कि
आप वह कमियाँ दुरुस्त करें जो अब तक रह
गई थीं। यह भी एक मक़सद था कि आप हर
शहर की जमात में बुज़ुर्ग मुक़र्रर करें, जिस तरह
मैंने आपको कहा था। 6बुज़ुर्ग बेइलज़ाम हो। उस
की सिर्फ़ एक बीवी हो। उसके बच्चे ईमानदार
हों और लोग उन पर ऐयाश या सरकश होने
का इलज़ाम न लगा सकें। 7निगरान को तो
अल्लाह का घराना सँभालने की ज़िम्मेदारी दी
गई है, इसलिए लाज़िम है कि वह बेइलज़ाम
हो। वह ख़ुदसर, ग़ुसीला, शराबी, लड़ाका या
लालची न हो। 8इसके बजाए वह मेहमान-नवाज़
हो और सब अच्छी चीज़ों से प्यार करनेवाला
हो। वह समझदार, रास्तबाज़ और मुक़द्दस हो।
वह अपने आप पर क़ाबू रख सके। 9वह उस
कलाम के साथ लिपटा रहे जो क़ाबिले-एतमाद
और हमारी तालीम के मुताबिक़ है। क्योंकि
इस तरह ही वह सेहतबख़्श तालीम देकर दूसरों
की हौसलाअफ़्ज़ाई कर सकेगा और मुख़ालफ़त
करनेवालों को समझा भी सकेगा।

10बात यह है कि बहुत-से ऐसे लोग हैं जो
सरकश हैं, जो फ़ज़ूल बातें करके दूसरों को धोका
देते हैं। यह बात ख़ासकर उन पर सादिक़ आती
है जो यहूदियों में से हैं। 11लाज़िम है कि उन्हें चुप
करा दिया जाए, क्योंकि यह लालच में आकर कई
लोगों के पूरे घर अपनी ग़लत तालीम से ख़राब
कर रहे हैं। 12उनके अपने एक नबी ने कहा है,
“क्रेते के बाशिंदे हमेशा झूट बोलनेवाले, वहशी
जानवर और सुस्त पेटू होते हैं।” 13उस की यह
गवाही दुरुस्त है। इस वजह से लाज़िम है कि
आप उन्हें सख़्ती से समझाएँ ताकि उनका ईमान

सेहतमंद रहे 14और वह यहूदी फ़रज़ी कहानियों
या उन इनसानों के अहकाम पर ध्यान न दें जो
सच्चाई से हट गए हैं। 15जो लोग पाक-साफ़ हैं
उनके लिए सब कुछ पाक है। लेकिन जो नापाक
और ईमान से ख़ाली हैं उनके लिए कुछ भी पाक
नहीं होता बल्कि उनका ज़हन और उनका ज़मीर
दोनों नापाक हो गए हैं। 16यह अल्लाह को जानने
का दावा तो करते हैं, लेकिन उनकी हरकतें इस
बात का इनकार करती हैं। यह घिनौने, नाफ़रमान
और कोई भी अच्छा काम करने के क़ाबिल नहीं
हैं।

सेहतबख़्श तालीम

2 लेकिन आप वह कुछ सुनाएँ जो
सेहतबख़्श तालीम से मुताबिक़त रखता
है। 2बुज़ुर्ग मर्दों को बता देना कि वह होशमंद,
शरीफ़ और समझदार हों। उनका ईमान, मुहब्बत
और साबितक़दमी सेहतमंद हों।

3इसी तरह बुज़ुर्ग ख़वातीन को हिदायत देना
कि वह मुक़द्दसीन की-सी ज़िंदगी गुज़ारें। न वह
तोहमत लगाएँ न शराब की ग़ुलाम हों। इसके
बजाए वह अच्छी तालीम देने के लायक़ हों
4ताकि वह जवान औरतों को समझदार ज़िंदगी
गुज़ारने की तरबियत दे सकें, कि वह अपने शौहरों
और बच्चों से मुहब्बत रखें, 5कि वह समझदार[a]
और मुक़द्दस हों, कि वह घर के फ़रायज़ अदा
करने में लगी रहें, कि वह नेक हों, कि वह अपने
शौहरों के ताबे रहें। अगर वह ऐसी ज़िंदगी गुज़ारें
तो वह दूसरों को अल्लाह के कलाम पर कुफ़्र
बकने का मौक़ा फ़राहम नहीं करेंगी।

6इसी तरह जवान आदमियों की हौसला-
अफ़्ज़ाई करें कि वह हर लिहाज़ से समझदार
ज़िंदगी गुज़ारें। 7आप ख़ुद नेक काम करने
में उनके लिए नमूना बनें। तालीम देते वक़्त
आपकी ख़ुलूसदिली, शराफ़त 8और अलफ़ाज़
की बेइलज़ाम सेहत साफ़ नज़र आए। फिर
आपके मुख़ालिफ़ शरमिंदा हो जाएंगे, क्योंकि वह
हमारे बारे में कोई बुरी बात नहीं कह सकेंगे।

9ग़ुलामों को कह देना कि वह हर लिहाज़
से अपने मालिकों के ताबे रहें। वह उन्हें पसंद
आएँ, बहस-मुबाहसा किए बग़ैर उनकी बात मानें
10और उनकी चीज़ें चोरी न करें बल्कि साबित
करें कि उन पर हर तरह का एतमाद किया
जा सकता है। क्योंकि इस तरीक़े से वह हमारे
नजातदहिंदा अल्लाह के बारे में तालीम को हर
तरह से दिलकश बना देंगे।

11क्योंकि अल्लाह का नजातबख़्श फ़ज़ल
तमाम इनसानों पर ज़ाहिर हुआ है। 12और यह
फ़ज़ल हमें तरबियत देकर इस क़ाबिल बना देता
है कि हम बेदीनी और दुनियावी ख़ाहिशात का
इनकार करके इस दुनिया में समझदार, रास्तबाज़
और ख़ुदातरस ज़िंदगी गुज़ार सकें। 13साथ साथ
यह तरबियत उस मुबारक दिन का इंतज़ार करने
में हमारी मदद करती है जिसकी उम्मीद हम रखते
हैं और जब हमारे अज़ीम ख़ुदा और नजातदहिंदा
ईसा मसीह का जलाल ज़ाहिर हो जाएगा।
14क्योंकि मसीह ने हमारे लिए अपनी जान दे
दी ताकि फ़िद्या देकर हमें हर तरह की बेदीनी से
छुड़ाकर अपने लिए एक पाक और मख़सूस क़ौम
बनाए जो नेक काम करने में सरगरम हो।

15इन्हीं बातों की तालीम देकर पूरे इख़्ति-
यार के साथ लोगों को समझाएँ और उनकी
इसलाह करें। कोई भी आपको हक़ीर न जाने।

3 उन्हें याद दिलाना कि वह हुक्मरानों और
इख़्तियारवालों के ताबे और फ़रमाँबरदार
रहें। वह हर नेक काम करने के लिए तैयार
रहें, 2किसी पर तोहमत न लगाएँ, अमनपसंद
और नरमदिल हों और तमाम लोगों के साथ
नरममिज़ाजी से पेश आएँ। 3क्योंकि एक वक़्त
था जब हम भी नासमझ, नाफ़रमान और सहीह
राह से भटके हुए थे। उस वक़्त हम कई तरह की
शहवतों और ग़लत ख़ाहिशों की ग़ुलामी में थे।

[a]यूनानी लफ़्ज़ में ज़ब्ते-नफ़स का उनसुर भी पाया जाता
है।

हम बुरे कामों और हसद करने में ज़िंदगी गुज़ारते
थे। दूसरे हमसे नफ़रत करते थे और हम भी उनसे
नफ़रत करते थे। 4लेकिन जब हमारे नजातदहिंदा
अल्लाह की मेहरबानी और मुहब्बत ज़ाहिर हुई
5तो उसने हमें बचाया। यह नहीं कि हमने रास्त
काम करने के बाइस नजात हासिल की बल्कि
उसके रहम ही ने हमें रूहुल-क़ुद्स के वसीले से
बचाया जिसने हमें धोकर नए सिरे से जन्म दिया
और नई ज़िंदगी अता की। 6अल्लाह ने अपने इस
रूह को बड़ी फ़ैयाज़ी से हमारे नजातदहिंदा ईसा
मसीह के वसीले से हम पर उंडेल दिया 7ताकि
हमें उसके फ़ज़ल से रास्तबाज़ क़रार दिया जाए
और हम उस अबदी ज़िंदगी के वारिस बन जाएँ
जिसकी उम्मीद हम रखते हैं। 8इस बात पर पूरा
एतमाद किया जा सकता है।

मैं चाहता हूँ कि आप इन बातों पर ख़ास ज़ोर
दें ताकि जो अल्लाह पर ईमान लाए हैं वह ध्यान
से नेक काम करने में लगे रहें। यह बातें सबके
लिए अच्छी और मुफ़ीद हैं। 9लेकिन बेहूदा बहसों,
नसबनामों, झगड़ों और शरीअत के बारे में तनाज़ों
से बाज़ रहें, क्योंकि ऐसा करना बेफ़ायदा और
फ़ज़ूल है। 10जो शख़्स पार्टीबाज़ है उसे दो बार
समझाएँ। अगर वह इसके बाद भी न माने तो उसे
रिफ़ाक़त से ख़ारिज करें। 11क्योंकि आपको पता
होगा कि ऐसा शख़्स ग़लत राह पर है और गुनाह
में फँसा हुआ होता है। उसने अपनी हरकतों से
अपने आपको मुजरिम ठहराया है।

आख़िरी हिदायात

12जब मैं अरतिमास या तुख़िकुस को आपके
पास भेज दूँगा तो मेरे पास आने में जल्दी करें।
मैं नीकुपुलिस शहर में हूँ, क्योंकि मैंने फ़ैसला
कर लिया है कि सर्दियों का मौसम यहाँ गुज़ारूँ।
13जब ज़ेनास वकील और अपुल्लोस सफ़र
की तैयारियाँ कर रहे हैं तो उनकी मदद करें।
ख़याल रखें कि उनकी हर ज़रूरत पूरी की जाए।
14लाज़िम है कि हमारे लोग नेक काम करने में
लगे रहना सीखें, ख़ासकर जहाँ बहुत ज़रूरत है,
ऐसा न हो कि आख़िरकार वह बेफल निकलें।
15सब जो मेरे साथ हैं आपको सलाम कहते हैं।
उन्हें मेरा सलाम देना जो ईमान में हमसे मुहब्बत
रखते हैं।

अल्लाह का फ़ज़ल आप सबके साथ होता रहे।

फ़िलेमोन के नाम
पौलुस रसूल का ख़त

1 यह ख़त मसीह ईसा के क़ैदी पौलुस और
तीमुथियुस की तरफ़ से है।
मैं अपने अज़ीज़ दोस्त और हमख़िदमत
फ़िलेमोन को लिख रहा हूँ 2 और साथ
साथ अपनी बहन अफ़िया, अपने हमसिपाह
अरख़िप्पुस और उस जमात को जो आपके घर
में जमा होती है।
3 ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावंद ईसा मसीह
आपको फ़ज़ल और सलामती अता करें।

फ़िलेमोन की मुहब्बत और ईमान

4 जब भी मैं दुआ करता हूँ तो आपको याद
करके अपने ख़ुदा का शुक्र करता हूँ। 5 क्योंकि
मुझे ख़ुदावंद ईसा के बारे में आपके ईमान और
आपकी तमाम मुक़द्दसीन से मुहब्बत की ख़बर
मिलती रहती है। 6 मेरी दुआ है कि आपकी जो
रिफ़ाक़त ईमान से पैदा हुई है वह आपमें यों ज़ोर
पकड़े कि आपको बेहतर तौर पर हर उस अच्छी
चीज़ की समझ आए जो हमें मसीह में हासिल है।
7 भाई, आपकी मुहब्बत देखकर मुझे बड़ी ख़ुशी
और तसल्ली हुई है, क्योंकि आपने मुक़द्दसीन के
दिलों को तरो-ताज़ा कर दिया है।

उनेसिमुस की सिफ़ारिश

8 इस वजह से मैं मसीह में इतनी दिलेरी
महसूस करता हूँ कि आपको वह कुछ करने का
हुक्म दूँ जो अब मुनासिब है। 9 तो भी मैं ऐसा नहीं
करना चाहता बल्कि मुहब्बत की बिना पर आपसे
अपील ही करता हूँ। गो मैं पौलुस मसीह ईसा का
एलची बल्कि अब उसका क़ैदी भी हूँ 10 तो भी
मिन्नत करके अपने बेटे उनेसिमुस की सिफ़ारिश
करता हूँ। क्योंकि मेरे क़ैद में होते हुए वह मेरा
बेटा बन गया। 11 पहले तो वह आपके काम नहीं
आ सकता था, लेकिन अब वह आपके लिए और
मेरे लिए काफ़ी मुफ़ीद साबित हुआ है।[a]
12 अब मैं इसको गोया अपनी जान को आपके
पास वापस भेज रहा हूँ। 13 असल में मैं उसे
अपने पास रखना चाहता था ताकि जब तक मैं
ख़ुशख़बरी की ख़ातिर क़ैद में हूँ वह आपकी जगह
मेरी ख़िदमत करे। 14 लेकिन मैं आपकी इजाज़त
के बग़ैर कुछ नहीं करना चाहता था। क्योंकि मैं
चाहता हूँ कि जो भी मेहरबानी आप करेंगे वह
आप मजबूर होकर न करें बल्कि ख़ुशी से।
15 हो सकता है कि उनेसिमुस इसलिए कुछ
देर के लिए आपसे जुदा हो गया कि वह आपको
हमेशा के लिए दुबारा मिल जाए। 16 क्योंकि अब
वह न सिर्फ़ ग़ुलाम है बल्कि ग़ुलाम से कहीं

[a] उनेसिमुस का मतलब कारामद, फ़ायदामंद है।

ज़्यादा। अब वह एक अज़ीज़ भाई है जो मुझे
ख़ास अज़ीज़ है। लेकिन वह आपको कहीं ज़्यादा
अज़ीज़ होगा, ग़ुलाम की हैसियत से भी और
ख़ुदावंद में भाई की हैसियत से भी।

17 ग़रज़, अगर आप मुझे अपना साथी समझें
तो उसे यों ख़ुशआमदीद कहें जैसे मैं ख़ुद
आकर हाज़िर होता। 18 अगर उसने आपको कोई
नुक़सान पहुँचाया या आपका क़र्ज़दार हुआ तो मैं
इसका मुआवज़ा देने के लिए तैयार हूँ। 19 यहाँ
मैं पौलुस अपने ही हाथ से इस बात की तसदीक़
करता हूँ : मैं इसका मुआवज़ा दूँगा अगरचे मुझे
आपको याद दिलाने की ज़रूरत नहीं कि आप
ख़ुद मेरे क़र्ज़दार हैं। क्योंकि मेरा क़र्ज़ जो आप
पर है वह आप ख़ुद हैं। 20 चुनाँचे मेरे भाई, मुझ
पर यह मेहरबानी करें कि मुझे ख़ुदावंद में आपसे
कुछ फ़ायदा मिले। मसीह में मेरी जान को ताज़ा
करें।

21 मैं आपकी फ़रमाँबरदारी पर एतबार करके
आपको यह लिख रहा हूँ। क्योंकि मैं जानता हूँ
कि आप न सिर्फ़ मेरी सुनेंगे बल्कि इससे कहीं
ज़्यादा मेरे लिए करेंगे। 22 एक और गुज़ारिश भी
है, मेरे लिए एक कमरा तैयार करें, क्योंकि मुझे
उम्मीद है कि आपकी दुआओं के जवाब में मुझे
आपको वापस दिया जाएगा।

आख़िरी सलाम

23 इपफ्रास जो मसीह ईसा में मेरे साथ क़ैदी है
आपको सलाम कहता है। 24 इसी तरह मरक़ुस,
अरिस्तरख़ुस, देमास और लूक़ा भी आपको
सलाम कहते हैं।

25 ख़ुदावंद ईसा का फ़ज़ल आप सबके साथ
होता रहे।

इबरानियों के नाम ख़त

अल्लाह का अपने फ़रज़ंद के ज़रीए कलाम

1 माज़ी में अल्लाह मुख़्तलिफ़ मौक़ों पर और कई तरीक़ों से हमारे बाप-दादा से हमकलाम हुआ। उस वक़्त उसने यह
नबियों के वसीले से किया
2 लेकिन इन आख़िरी दिनों में वह अपने फ़रज़ंद के वसीले से हमसे हमकलाम हुआ, उसी के वसीले से जिसे उसने सब चीज़ों का वारिस बना दिया और जिसके वसीले से उसने कायनात को भी ख़लक़ किया।
3 फ़रज़ंद अल्लाह का शानदार जलाल मुनअकिस करता और उस की ज़ात की ऐन शबीह[a] है। वह अपने क़वी कलाम से सब कुछ सँभाले रखता है। जब वह दुनिया में था तो उसने हमारे लिए गुनाहों से पाक-साफ़ हो जाने का इंतज़ाम क़ायम किया। इसके बाद वह आसमान पर क़ादिरे-मुतलक़ के दहने हाथ जा बैठा।

अल्लाह के फ़रज़ंद की अज़मत

4 फ़रज़ंद फ़रिश्तों से कहीं अज़ीम है, इतना जितना उसका मीरास में पाया हुआ नाम उनके
नामों से अज़ीम है।
5 क्योंकि अल्लाह ने किस फ़रिश्ते से कभी कहा,

“तू मेरा फ़रज़ंद है,
आज मैं तेरा बाप बन गया हूँ।”

यह भी उसने किसी फ़रिश्ते के बारे में कभी नहीं कहा,

“मैं उसका बाप हूँगा
और वह मेरा फ़रज़ंद होगा।”

6 और जब अल्लाह अपने पहलौठे फ़रज़ंद को आसमानी दुनिया में लाता है तो वह फ़रमाता है,

“अल्लाह के तमाम फ़रिश्ते
उस की परस्तिश करें।”

7 फ़रिश्तों के बारे में वह फ़रमाता है,

“वह अपने फ़रिश्तों को हवाएँ
और अपने ख़ादिमों को आग के शोले
बना देता है।”

8 लेकिन फ़रज़ंद के बारे में वह कहता है,

“ऐ ख़ुदा, तेरा तख़्त अज़ल से अबद तक
क़ायमो-दायम रहेगा,
और इनसाफ़ का शाही असा
तेरी बादशाही पर हुकूमत करेगा।
9 तूने रास्तबाज़ी से मुहब्बत
और बेदीनी से नफ़रत की,
इसलिए अल्लाह तेरे ख़ुदा ने तुझे
ख़ुशी के तेल से मसह करके
तुझे तेरे साथियों से कहीं ज़्यादा
सरफ़राज़ कर दिया।”

10 वह यह भी फ़रमाता है,

“ऐ रब, तूने इब्तिदा में
दुनिया की बुनियाद रखी,
और तेरे ही हाथों ने आसमानों को बनाया।

[a] या नक़्श।

11 यह तो तबाह हो जाएंगे,
लेकिन तू क़ायम रहेगा।
यह सब लिबास की तरह घिस-फट जाएंगे
12 और तू इन्हें चादर की तरह लपेटेगा,
पुराने कपड़े की तरह यह बदले जाएंगे।
लेकिन तू वही का वही रहता है,
और तेरी ज़िंदगी कभी ख़त्म नहीं होती।”

13 अल्लाह ने कभी भी अपने किसी फ़-
रिश्ते से यह बात न कही,

“मेरे दहने हाथ बैठ,
जब तक मैं तेरे दुश्मनों को
तेरे पाँवों की चौकी न बना दूँ।”

14 फिर फ़रिश्ते क्या हैं? वह तो सब
ख़िदमतगुज़ार रूहें हैं जिन्हें अल्लाह उनकी
ख़िदमत करने के लिए भेज देता है जिन्हें मीरास
में नजात पानी है।

नजात की अज़मत

2 इसलिए लाज़िम है कि हम और ज़्यादा
ध्यान से कलामे-मुक़द्दस की उन बातों पर
ग़ौर करें जो हमने सुन ली हैं। ऐसा न हो कि
हम समुंदर पर बेकाबू कश्ती की तरह बेमक़सद
इधर-उधर फिरें। 2 जो कलाम फ़रिश्तों ने इनसान
तक पहुँचाया वह तो अनमिट रहा, और जिससे
भी कोई ख़ता या नाफ़रमानी हुई उसे उस की
मुनासिब सज़ा मिली। 3 तो फिर हम किस तरह
अल्लाह के ग़ज़ब से बच सकेंगे अगर हम मसीह
की इतनी अज़ीम नजात को नज़रंदाज़ करें?
पहले ख़ुदावंद ने ख़ुद इस नजात का एलान किया,
और फिर ऐसे लोगों ने हमारे पास आकर इसकी
तसदीक़ की जिन्होंने उसे सुन लिया था। 4 साथ
साथ अल्लाह ने इस बात की इस तरह तसदीक़
भी की कि उसने अपनी मरज़ी के मुताबिक़
इलाही निशान, मोजिज़े और मुख़्तलिफ़ क़िस्म के
ज़ोरदार काम दिखाए और रूहुल-क़ुद्स की नेमतें
लोगों में तक़सीम कीं।

मसीह का नजातबख़्श काम

5 अब ऐसा है कि अल्लाह ने मज़कूरा
आनेवाली दुनिया को फ़रिश्तों के ताबे नहीं किया।
6 क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में किसी ने कहीं यह
गवाही दी है,

“इनसान कौन है कि तू उसे याद करे
या आदमज़ाद कि तू उसका ख़याल रखे?
7 तूने उसे थोड़ी देर के लिए
फ़रिश्तों से कम कर दिया,
तूने उसे जलाल और इज़्ज़त का ताज
पहनाकर
8 सब कुछ उसके पाँवों के नीचे
कर दिया।”

जब लिखा है कि सब कुछ उसके पाँवों तले
कर दिया गया तो इसका मतलब है कि कोई
चीज़ न रही जो उसके ताबे नहीं है। बेशक हमें
हाल में यह बात नज़र नहीं आती कि सब कुछ
उसके ताबे है, 9 लेकिन हम उसे ज़रूर देखते हैं
जो “थोड़ी देर के लिए फ़रिश्तों से कम” था यानी
ईसा को जिसे उस की मौत तक के दुख की वजह
से “जलाल और इज़्ज़त का ताज” पहनाया गया
है। हाँ, अल्लाह के फ़ज़ल से उसने सबकी ख़ातिर
मौत बरदाश्त की। 10 क्योंकि यही मुनासिब था
कि अल्लाह जिसके लिए और जिसके वसीले से
सब कुछ है यों बहुत-से बेटों को अपने जलाल में
शरीक करे कि वह उनकी नजात के बानी ईसा
को दुख उठाने से कामिलियत तक पहुँचाए।

11 ईसा और वह जिन्हें वह मख़सूसो-मुक़द्दस
कर देता है दोनों का एक ही बाप है। यही वजह है
कि ईसा यह कहने से नहीं शर्माता कि मुक़द्दसीन
मेरे भाई हैं। 12 मसलन वह अल्लाह से कहता है,

“मैं अपने भाइयों के सामने
तेरे नाम का एलान करूँगा,
जमात के दरमियान ही
तेरी मद्हसराई करूँगा।”

13 वह यह भी कहता है, "मैं उस पर भरोसा
रखूँगा।" और फिर "मैं हाज़िर हूँ, मैं और वह बच्चे
जो अल्लाह ने मुझे दिए हैं।"

14 अब चूँकि यह बच्चे गोश्त-पोस्त और ख़ून
के इनसान हैं इसलिए ईसा ख़ुद उनकी मानिंद
बन गया और उनकी इनसानी फ़ितरत में शरीक
हुआ। क्योंकि इस तरह ही वह अपनी मौत से मौत
के मालिक इबलीस को तबाह कर सका, 15 और
इस तरह ही वह उन्हें छुड़ा सका जो मौत से डरने
की वजह से ज़िंदगी-भर ग़ुलामी में थे। 16 ज़ाहिर
है कि जिनकी मदद वह करता है वह फ़रिश्ते
नहीं हैं बल्कि इब्राहीम की औलाद। 17 इसलिए
लाज़िम था कि वह हर लिहाज़ से अपने भाइयों
की मानिंद बन जाए। सिर्फ़ इससे उसका यह
मक़सद पूरा हो सका कि वह अल्लाह के हुज़ूर
एक रहीम और वफ़ादार इमामे-आज़म बनकर
लोगों के गुनाहों का कफ़्फ़ारा दे सके। 18 और
अब वह उनकी मदद कर सकता है जो आज़माइश
में उलझे हुए हैं, क्योंकि उस की भी आज़माइश
हुई और उसने ख़ुद दुख उठाया है।

ईसा मूसा से बड़ा है

3 मुक़द्दस भाइयो, जो मेरे साथ अल्लाह के
बुलाए हुए हैं! ईसा पर ग़ौरो-ख़ौज़ करते
रहें जो अल्लाह का पैग़ंबर और इमामे-आज़म है
और जिसका हम इक़रार करते हैं। 2 ईसा अल्लाह
का वफ़ादार रहा जब उसने उसे यह काम करने
के लिए मुक़र्रर किया, बिलकुल उसी तरह जिस
तरह मूसा भी वफ़ादार रहा जब अल्लाह का पूरा
घर उसके सुपुर्द किया गया। 3 अब जो किसी घर
को तामीर करता है उसे घर की निसबत ज़्यादा
इज़्ज़त हासिल होती है। इसी तरह ईसा मूसा की
निसबत ज़्यादा इज़्ज़त के लायक़ है। 4 क्योंकि हर
घर को किसी न किसी ने बनाया होता है, जबकि
अल्लाह ने सब कुछ बनाया है। 5 मूसा तो अल्लाह
के पूरे घर में ख़िदमत करते वक़्त वफ़ादार रहा,
लेकिन मुलाज़िम की हैसियत से ताकि कलामे-
मुक़द्दस की आनेवाली बातों की गवाही देता रहे।
6 मसीह फ़रक़ है। उसे फ़रज़ंद की हैसियत से
अल्लाह के घर पर इख़्तियार है और इसी में वह
वफ़ादार है। हम उसका घर हैं बशर्तेकि हम अपनी
दिलेरी और वह उम्मीद क़ायम रखें जिस पर हम
फ़ख़र करते हैं।

अल्लाह की क़ौम के लिए सुकून

7 चुनाँचे जिस तरह रूहुल-क़ुद्स फ़रमाता है,
"अगर तुम आज
अल्लाह की आवाज़ सुनो
8 तो अपने दिलों को सख़्त न करो
जिस तरह बग़ावत के दिन हुआ,
जब तुम्हारे बापदादा ने
रेगिस्तान में मुझे आज़माया।
9 वहाँ उन्होंने मुझे आज़माया और जाँचा,
हालाँकि उन्होंने चालीस साल के दौरान
मेरे काम देख लिए थे।
10 इसलिए मुझे उस नसल पर ग़ुस्सा आया
और मैं बोला,
'उनके दिल हमेशा सहीह राह से
हट जाते हैं
और वह मेरी राहें नहीं जानते।'
11 अपने ग़ज़ब में मैंने क़सम खाई,
'यह कभी उस मुल्क में दाख़िल नहीं होंगे
जहाँ मैं उन्हें सुकून देता'।"

12 भाइयो, ख़बरदार रहें ताकि आपमें से किसी
का दिल बुराई और कुफ़र से भरकर ज़िंदा ख़ुदा
से बरगश्ता न हो जाए। 13 इसके बजाए जब तक
अल्लाह का यह फ़रमान क़ायम है रोज़ाना एक
दूसरे की हौसलाअफ़्ज़ाई करें ताकि आपमें से
कोई भी गुनाह के फ़रेब में आकर सख़्तदिल न
हो। 14 बात यह है कि हम मसीह के शरीके-कार
बन गए हैं। लेकिन इस शर्त पर कि हम आख़िर
तक वह एतमाद मज़बूती से क़ायम रखें जो हम
आग़ाज़ में रखते थे।

15 मज़कूरा कलाम में लिखा है,
"अगर तुम आज
अल्लाह की आवाज़ सुनो,

तो अपने दिलों को सख़्त न करो
जिस तरह बग़ावत के दिन हुआ।”

16 यह कौन थे जो अल्लाह की आवाज़ सुनकर
बाग़ी हो गए? वह सब जिन्हें मूसा मिसर से
निकालकर बाहर लाया। 17 और यह कौन थे
जिनसे अल्लाह चालीस साल के दौरान नाराज़
रहा? यह वही थे जिन्होंने गुनाह किया और
जो रेगिस्तान में मरकर वहीं पड़े रहे। 18 अल्लाह
ने किनकी बाबत क़सम खाई कि “यह कभी
भी उस मुल्क में दाख़िल नहीं होंगे जहाँ मैं उन्हें
सुकून देता”? ज़ाहिर है उनकी बाबत जिन्होंने
नाफ़रमानी की थी। 19 चुनाँचे हम देखते हैं कि
वह ईमान न रखने की वजह से मुल्क में दाख़िल
न हो सके।

4 देखें, अब तक अल्लाह का यह वादा
क़ायम है, और अब तक हम सुकून के
मुल्क में दाख़िल हो सकते हैं। इसलिए आएँ,
हम ख़बरदार रहें। ऐसा न हो कि आपमें से कोई
पीछे रहकर उसमें दाख़िल न होने पाए। 2 क्योंकि
हमें भी उनकी तरह एक ख़ुशख़बरी सुनाई गई।
लेकिन यह पैग़ाम उनके लिए बेफ़ायदा था,
क्योंकि वह उसे सुनकर ईमान न लाए। 3 उनकी
निसबत हम जो ईमान लाए हैं सुकून के इस मुल्क
में दाख़िल हो सकते हैं।

ग़रज़, यह ऐसा ही है जिस तरह अल्लाह ने
फ़रमाया,

“अपने ग़ज़ब में मैंने क़सम खाई,
‘यह कभी उस मुल्क में दाख़िल नहीं होंगे
जहाँ मैं उन्हें सुकून देता’।”

अब ग़ौर करें कि उसने यह कहा अगरचे
उसका काम दुनिया की तख़लीक़ पर इख़्तिताम
तक पहुँच गया था। 4 क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में
सातवें दिन के बारे में लिखा है, “सातवें दिन
अल्लाह का सारा काम तकमील तक पहुँच गया।
इससे फ़ारिग़ होकर उसने आराम किया।” 5 अब
इसका मुक़ाबला मज़कूरा आयत से करें,

“यह कभी उस मुल्क में दाख़िल नहीं होंगे
जहाँ मैं उन्हें सुकून देता।”

6 जिन्होंने पहले अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनी
उन्हें नाफ़रमान होने की वजह से यह सुकून न
मिला। तो भी यह बात क़ायम रही कि कुछ तो
सुकून के इस मुल्क में दाख़िल हो जाएंगे। 7 यह
मद्दे-नज़र रखकर अल्लाह ने एक और दिन मुक़र्रर
किया, मज़कूरा “आज” का दिन। कई सालों के
बाद ही उसने दाऊद की मारिफ़त वह बात की
जिस पर हम ग़ौर कर रहे हैं,

“अगर तुम आज
अल्लाह की आवाज़ सुनो
तो अपने दिलों को सख़्त न करो।”

8 जब यशुअ उन्हें मुल्के-कनान में लाया तब
उसने इसराईलियों को यह सुकून न दिया, वरना
अल्लाह इसके बाद के किसी और दिन का
ज़िक्र न करता। 9 चुनाँचे अल्लाह की क़ौम के
लिए एक ख़ास सुकून बाक़ी रह गया है, ऐसा
सुकून जो अल्लाह के सातवें दिन आराम करने
से मुताबिक़त रखता है। 10 क्योंकि जो भी वह
सुकून पाता है जिसका वादा अल्लाह ने किया
वह अल्लाह की तरह अपने कामों से फ़ारिग़
होकर आराम करेगा। 11 इसलिए आएँ, हम इस
सुकून में दाख़िल होने की पूरी कोशिश करें ताकि
हममें से कोई भी बापदादा के नाफ़रमान नमूने पर
चलकर गुनाह में न गिर जाए।

12 क्योंकि अल्लाह का कलाम ज़िंदा,
मुअस्सिर और हर दोधारी तलवार से ज़्यादा तेज़
है। वह इनसान में से गुज़रकर उस की जान रूह से
और उसके जोड़ों को गूदे से अलग कर लेता है।
वही दिल के ख़यालात और सोच को जाँचकर उन
पर फ़ैसला करने के क़ाबिल है। 13 कोई मख़लूक़
भी अल्लाह की नज़र से नहीं छुप सकती। उस
की आँखों के सामने जिसके जवाबदेह हम होते
हैं सब कुछ अयाँ और बेनिक़ाब है।

ईसा हमारा इमामे-आज़म है

14 ग़रज़ आएँ, हम उस ईमान से लिपटे रहें
जिसका इक़रार हम करते हैं। क्योंकि हमारा ऐसा
अज़ीम इमामे-आज़म है जो आसमानों में से गुज़र

गया यानी ईसा अल्लाह का फ़रज़ंद। 15 और वह
ऐसा इमामे-आज़म नहीं है जो हमारी कमज़ोरियों
को देखकर हमदर्दी न दिखाए बल्कि अगरचे वह
बेगुनाह रहा तो भी हमारी तरह उसे हर क़िस्म
की आज़माइश का सामना करना पड़ा। 16 अब
आएँ, हम पूरे एतमाद के साथ अल्लाह के तख़्त
के सामने हाज़िर हो जाएँ जहाँ फ़ज़ल पाया जाता
है। क्योंकि वहीं हम वह रहम और फ़ज़ल पाएँगे
जो ज़रूरत के वक़्त हमारी मदद कर सकता है।

5 अब इनसानों में से चुने गए इमामे-आज़म
को इसलिए मुक़र्रर किया जाता है कि वह
उनकी ख़ातिर अल्लाह की ख़िदमत करे, ताकि
वह गुनाहों के लिए नज़राने और क़ुरबानियाँ पेश
करे। 2 वह जाहिल और आवारा लोगों के साथ
नरम सुलूक रख सकता है, क्योंकि वह ख़ुद कई
तरह की कमज़ोरियों की गिरिफ़्त में होता है।
3 यही वजह है कि उसे न सिर्फ़ क़ौम के गुनाहों के
लिए बल्कि अपने गुनाहों के लिए भी क़ुरबानियाँ
चढ़ानी पड़ती हैं। 4 और कोई अपनी मरज़ी से
इमामे-आज़म का पुरवक़ार ओहदा नहीं अपना
सकता बल्कि लाज़िम है कि अल्लाह उसे हारून
की तरह बुलाकर मुक़र्रर करे।

5 इसी तरह मसीह ने भी अपनी मरज़ी
से इमामे-आज़म का पुरवक़ार ओहदा नहीं
अपनाया। इसके बजाए अल्लाह ने उससे कहा,

“तू मेरा फ़रज़ंद है,
आज मैं तेरा बाप बन गया हूँ।”
6 कहीं और वह फ़रमाता है,
“तू अबद तक इमाम है,
ऐसा इमाम जैसा मलिके-सिद्क़ था।”

7 जब ईसा इस दुनिया में था तो उसने ज़ोर ज़ोर
से पुकारकर और आँसू बहा बहाकर उसे दुआएँ
और इल्तिजाएँ पेश कीं[a] जो उसे मौत से बचा
सकता था। और अल्लाह ने उस की सुनी, क्योंकि
वह ख़ुदा का ख़ौफ़ रखता था। 8 वह अल्लाह
का फ़रज़ंद तो था, तो भी उसने दुख उठाने से
फ़रमाँबरदारी सीखी। 9 जब वह कामिलियत तक
पहुँच गया तो वह उन सबकी अबदी नजात का
सरचश्मा बन गया जो उस की सुनते हैं। 10 उस
वक़्त अल्लाह ने उसे इमामे-आज़म भी मुतैयिन
किया, ऐसा इमाम जैसा मलिके-सिद्क़ था।

ईमान तर्क करने की बाबत आगाही

11 इसके बारे में हम मज़ीद बहुत कुछ कह
सकते हैं, लेकिन हम मुश्किल से इसकी तशरीह
कर सकते हैं, क्योंकि आप सुनने में सुस्त हैं।
12 असल में इतना वक़्त गुज़र गया है कि अब
आपको ख़ुद उस्ताद होना चाहिए। अफ़सोस कि
ऐसा नहीं है बल्कि आपको इसकी ज़रूरत है कि
कोई आपके पास आकर आपको अल्लाह के
कलाम की बुनियादी सच्चाइयाँ दुबारा सिखाए।
आप अब तक ठोस खाना नहीं खा सकते बल्कि
आपको दूध की ज़रूरत है। 13 जो दूध ही पी
सकता है वह अभी छोटा बच्चा ही है और वह
रास्तबाज़ी की तालीम से नावाक़िफ़ है। 14 इसके
मुक़ाबले में ठोस खाना बालिग़ों के लिए है
जिन्होंने अपनी बलूग़त के बाइस अपनी रूहानी
बसारत को इतनी तरबियत दी है कि वह भलाई
और बुराई में इम्तियाज़ कर सकते हैं।

6 इसलिए आएँ, हम मसीह के बारे में
बुनियादी तालीम को छोड़कर बलूग़त की
तरफ़ आगे बढ़ें। क्योंकि ऐसी बातें दोहराने
की ज़रूरत नहीं होनी चाहिए जिनसे ईमान
की बुनियाद रखी जाती है, मसलन मौत तक
पहुँचानेवाले काम से तौबा, 2 बपतिस्मा क्या है,
किसी पर हाथ रखने की तालीम, मुरदों के जी
उठने और अबदी सज़ा पाने की तालीम। 3 चुनाँचे
अल्लाह की मरज़ी हुई तो हम यह छोड़कर आगे
बढ़ेंगे।

4 नामुमकिन है कि उन्हें बहाल करके दुबारा
तौबा तक पहुँचाया जाए जिन्होंने अपना ईमान
तर्क कर दिया हो। उन्हें तो एक बार अल्लाह

[a]यानी इमाम की हैसियत से उसने यह दुआएँ और
इल्तिजाएँ क़ुरबानी के तौर पर पेश कीं।

के नूर में लाया गया था, उन्होंने आसमान की
नेमत चख ली थी, वह रूहुल-क़ुद्स में शरीक
हुए, 5 उन्होंने अल्लाह के कलाम की भलाई और
आनेवाले ज़माने की कुव्वतों का तजरबा किया
था। 6 और फिर उन्होंने अपना ईमान तर्क कर
दिया! ऐसे लोगों को बहाल करके दुबारा तौबा
तक पहुँचाना नामुमकिन है। क्योंकि ऐसा करने से
वह अल्लाह के फ़रज़ंद को दुबारा मसलूब करके
उसे लान-तान का निशाना बना देते हैं।

7 अल्लाह उस ज़मीन को बरकत देता है जो
अपने पर बार बार पड़नेवाली बारिश को जज़्ब
करके ऐसी फ़सल पैदा करती है जो खेतीबाड़ी
करनेवाले के लिए मुफ़ीद हो। 8 लेकिन अगर वह
सिर्फ़ ख़ारदार पौदे और ऊँटकटारे पैदा करे तो वह
बेकार है और इस ख़तरे में है कि उस पर लानत
भेजी जाए। अजामे-कार उस पर का सब कुछ
जलाया जाएगा।

9 अज़ीज़ो, गो हम इस तरह की बातें कर रहे
हैं तो भी हमारा एतमाद यह है कि आपको वह
बेहतरीन बरकतें हासिल हैं जो नजात से मिलती
हैं। 10 क्योंकि अल्लाह बेइनसाफ़ नहीं है। वह
आपका काम और वह मुहब्बत नहीं भूलेगा जो
आपने उसका नाम लेकर ज़ाहिर की जब आपने
मुक़द्दसीन की ख़िदमत की बल्कि आज तक कर
रहे हैं। 11 लेकिन हमारी बड़ी ख़ाहिश यह है कि
आपमें से हर एक इसी सरगरमी का इज़हार
आख़िर तक करता रहे ताकि जिन बातों की
उम्मीद आप रखते हैं वह वाक़ई पूरी हो जाएँ।
12 हम नहीं चाहते कि आप सुस्त हो जाएँ बल्कि
यह कि आप उनके नमूने पर चलें जो ईमान और
सब्र से वह कुछ मीरास में पा रहे हैं जिसका वादा
अल्लाह ने किया है।

अल्लाह का यक़ीनी वादा

13 जब अल्लाह ने क़सम खाकर इब्राहीम से
वादा किया तो उसने अपनी ही क़सम खाकर यह
वादा किया। क्योंकि कोई और नहीं था जो उससे
बड़ा था जिसकी क़सम वह खा सकता। 14 उस
वक़्त उसने कहा, "मैं ज़रूर तुझे बहुत बरकत
दूँगा, और मैं यक़ीनन तुझे कसरत की औलाद
दूँगा।" 15 इस पर इब्राहीम ने सब्र से इंतज़ार
करके वह कुछ पाया जिसका वादा किया गया
था। 16 क़सम खाते वक़्त लोग उस की क़सम
खाते हैं जो उनसे बड़ा होता है। इस तरह से
क़सम में बयानकरदा बात की तसदीक़ बहस-
मुबाहसा की हर गुंजाइश को ख़त्म कर देती है।
17 अल्लाह ने भी क़सम खाकर अपने वादे की
तसदीक़ की। क्योंकि वह अपने वादे के वारिसों
पर साफ़ ज़ाहिर करना चाहता था कि उसका
इरादा कभी नहीं बदलेगा। 18 ग़रज़, यह दो बातें
क़ायम रही हैं, अल्लाह का वादा और उस की
क़सम। वह इन्हें न तो बदल सकता न इनके बारे
में झूट बोल सकता है। यों हम जिन्होंने उसके
पास पनाह ली है बड़ी तसल्ली पाकर उस उम्मीद
को मज़बूती से थामे रख सकते हैं जो हमें पेश
की गई है। 19 क्योंकि यह उम्मीद हमारी जान
के लिए मज़बूत लंगर है। और यह आसमानी
बैतुल-मुक़द्दस के मुक़द्दसतरीन कमरे के परदे में
से गुज़रकर उसमें दाख़िल होती है। 20 वहीं ईसा
हमारे आगे आगे जाकर हमारी ख़ातिर दाख़िल
हुआ है। यों वह मलिके-सिद्क़ की मानिंद हमेशा
के लिए इमामे-आज़म बन गया है।

मलिके-सिद्क़

7 यह मलिके-सिद्क़, सालिम का बाद-
शाह और अल्लाह तआला का इमाम था।
जब इब्राहीम चार बादशाहों को शिकस्त देने के
बाद वापस आ रहा था तो मलिके-सिद्क़ उससे
मिला और उसे बरकत दी। 2 इस पर इब्राहीम ने
उसे तमाम लूट के माल का दसवाँ हिस्सा दे दिया।
अब मलिके-सिद्क़ का मतलब "रास्तबाज़ी का
बादशाह" है। दूसरे, "सालिम का बादशाह" का
मतलब "सलामती का बादशाह" है। 3 न उसका
बाप या माँ है, न कोई नसबनामा। उस की ज़िंदगी
का न तो आग़ाज़ है, न इख़्तिताम। अल्लाह के
फ़रज़ंद की तरह वह अबद तक इमाम रहता है।

4 ग़ौर करें कि वह कितना अज़ीम था। हमारे
बापदादा इब्राहीम ने उसे लूटे हुए माल का दसवाँ
हिस्सा दे दिया। 5 अब शरीअत तलब करती है कि
लावी की वह औलाद जो इमाम बन जाती है क़ौम
यानी अपने भाइयों से पैदावार का दसवाँ हिस्सा
ले, हालाँकि उनके भाई इब्राहीम की औलाद हैं।
6 लेकिन मलिके-सिद्क़ लावी की औलाद में से
नहीं था। तो भी उसने इब्राहीम से दसवाँ हिस्सा
लेकर उसे बरकत दी जिससे अल्लाह ने वादा
किया था। 7 इसमें कोई शक नहीं कि कमहैसियत
शख़्स को उससे बरकत मिलती है जो ज़्यादा
हैसियत का हो। 8 जहाँ लावी इमामों का ताल्लुक़
है फ़ानी इनसान दसवाँ हिस्सा लेते हैं। लेकिन
मलिके-सिद्क़ के मामले में यह हिस्सा उसको
मिला जिसके बारे में गवाही दी गई है कि वह
ज़िंदा रहता है। 9 यह भी कहा जा सकता है
कि जब इब्राहीम ने माल का दसवाँ हिस्सा दे
दिया तो लावी ने उसके ज़रीए भी यह हिस्सा
दिया, हालाँकि वह ख़ुद दसवाँ हिस्सा लेता है।
10 क्योंकि गो लावी उस वक़्त पैदा नहीं हुआ था
तो भी वह एक तरह से इब्राहीम के जिस्म में मौजूद
था जब मलिके-सिद्क़ उससे मिला।

11 अगर लावी की कहानत (जिस पर शरीअत
मबनी थी) कामिलियत पैदा कर सकती तो फिर
एक और क़िस्म के इमाम की क्या ज़रूरत होती,
उस की जो हारून जैसा न हो बल्कि मलिके-
सिद्क़ जैसा? 12 क्योंकि जब भी कहानत बदल
जाती है तो लाज़िम है कि शरीअत में भी तबदीली
आए। 13 और हमारा ख़ुदावंद जिसके बारे में यह
बयान किया गया है वह एक फ़रक़ क़बीले का
फ़रद था। उसके क़बीले के किसी भी फ़रद ने
इमाम की ख़िदमत अदा नहीं की। 14 क्योंकि
साफ़ मालूम है कि ख़ुदावंद मसीह यहूदाह क़बीले
का फ़रद था, और मूसा ने इस क़बीले को इमामों
की ख़िदमत में शामिल न किया।

मलिके-सिद्क़ जैसा एक और इमाम

15 मामला मज़ीद साफ़ हो जाता है। एक फ़रक़
इमाम ज़ाहिर हुआ है जो मलिके-सिद्क़ जैसा
है। 16 वह लावी के क़बीले का फ़रद होने से
इमाम न बना जिस तरह शरीअत तक़ाज़ा करती
थी, बल्कि वह लाफ़ानी ज़िंदगी की क़ुव्वत ही
से इमाम बन गया। 17 क्योंकि कलामे-मुक़द्दस
फ़रमाता है,

“तू अबद तक इमाम है,
ऐसा इमाम जैसा मलिके-सिद्क़ था।”

18 यों पुराने हुक्म को मनसूख़ कर दिया जाता
है, क्योंकि वह कमज़ोर और बेकार था 19 (मूसा
की शरीअत तो किसी चीज़ को कामिल नहीं बना
सकती थी) और अब एक बेहतर उम्मीद मुहैया
की गई है जिससे हम अल्लाह के क़रीब आ जाते
हैं।

20 और यह नया निज़ाम अल्लाह की क़सम से
क़ायम हुआ। ऐसी कोई क़सम न खाई गई जब
दूसरे इमाम बने। 21 लेकिन ईसा एक क़सम के
ज़रीए इमाम बन गया जब अल्लाह ने फ़रमाया,

“रब ने क़सम खाई है
और इससे पछताएगा नहीं,
‘तू अबद तक इमाम है’।”

22 इस क़सम की वजह से ईसा एक बेहतर
अहद की ज़मानत देता है।

23 एक और फ़रक़, पुराने निज़ाम में बहुत-से
इमाम थे, क्योंकि मौत ने हर एक की ख़िदमत
महदूद किए रखी। 24 लेकिन चूँकि ईसा अबद
तक ज़िंदा है इसलिए उस की कहानत कभी भी
ख़त्म नहीं होगी। 25 यों वह उन्हें अबदी नजात दे
सकता है जो उसके वसीले से अल्लाह के पास
आते हैं, क्योंकि वह अबद तक ज़िंदा है और
उनकी शफ़ाअत करता रहता है।

26 हमें ऐसे ही इमामे-आज़म की ज़रूरत थी।
हाँ, ऐसा इमाम जो मुक़द्दस, बेक़ुसूर, बेदाग़,
गुनाहगारों से अलग और आसमानों से बुलंद हुआ
है। 27 उसे दूसरे इमामों की तरह इसकी ज़रूरत

नहीं कि हर रोज़ क़ुरबानियाँ पेश करे, पहले अपने
लिए फिर क़ौम के लिए। बल्कि उसने अपने
आपको पेश करके अपनी इस क़ुरबानी से उनके
गुनाहों को एक बार सदा के लिए मिटा दिया।
28 मूसवी शरीअत ऐसे लोगों को इमामे-आज़म
मुक़र्रर करती है जो कमज़ोर हैं। लेकिन शरीअत
के बाद अल्लाह की क़सम फ़रज़ंद को इमामे-
आज़म मुक़र्रर करती है, और यह फ़रज़ंद अबद
तक कामिल है।

ईसा हमारा इमामे-आज़म

8 जो कुछ हम कह रहे हैं उस की मरकज़ी
बात यह है, हमारा एक ऐसा इमामे-आज़म
है जो आसमान पर जलाली ख़ुदा के तख़्त के
दहने हाथ बैठा है। 2 वहाँ वह मक़दिस में ख़िदमत
करता है, उस हक़ीक़ी मुलाक़ात के ख़ैमे में जिसे
इनसानी हाथों ने खड़ा नहीं किया बल्कि रब ने।
3 हर इमामे-आज़म को नज़राने और
क़ुरबानियाँ पेश करने के लिए मुक़र्रर किया जाता
है। इसलिए लाज़िम है कि हमारे इमामे-आज़म के
पास भी कुछ हो जो वह पेश कर सके। 4 अगर यह
दुनिया में होता तो इमामे-आज़म न होता, क्योंकि
यहाँ इमाम तो हैं जो शरीअत के मतलूबा नज़राने
पेश करते हैं। 5 जिस मक़दिस में वह ख़िदमत
करते हैं वह उस मक़दिस की सिर्फ़ नक़ली सूरत
और साया है जो आसमान पर है। यही वजह है
कि अल्लाह ने मूसा को मुलाक़ात का ख़ैमा बनाने
से पहले आगाह करके यह कहा, "ग़ौर कर कि
सब कुछ ऐन उस नमूने के मुताबिक़ बनाया जाए
जो मैं तुझे यहाँ पहाड़ पर दिखाता हूँ।" 6 लेकिन
जो ख़िदमत ईसा को मिल गई है वह दुनिया के
इमामों की ख़िदमत से कहीं बेहतर है, उतनी
बेहतर जितना वह अहद जिसका दरमियानी ईसा
है पुराने अहद से बेहतर है। क्योंकि यह अहद
बेहतर वादों की बुनियाद पर बाँधा गया।
7 अगर पहला अहद बेइलज़ाम होता तो फिर
नए अहद की ज़रूरत न होती। 8 लेकिन अल्लाह
को अपनी क़ौम पर इलज़ाम लगाना पड़ा। उसने
कहा,

"रब का फ़रमान है, ऐसे दिन आ रहे हैं
जब मैं इसराईल के घराने
और यहूदाह के घराने से
एक नया अहद बाँधूँगा।
9 यह उस अहद की मानिंद नहीं होगा
जो मैंने उनके बापदादा के साथ
उस दिन बाँधा था
जब मैं उनका हाथ पकड़कर
उन्हें मिसर से निकाल लाया।
क्योंकि वह उस अहद के वफ़ादार न रहे
जो मैंने उनसे बाँधा था।
नतीजे में मेरी उनके लिए फ़िकर न रही।
10 ख़ुदावंद फ़रमाता है कि
जो नया अहद मैं उन दिनों के बाद
उनसे बाँधूँगा
उसके तहत मैं अपनी शरीअत
उनके ज़हनों में डालकर
उनके दिलों पर कंदा करूँगा।
तब मैं ही उनका ख़ुदा हूँगा,
और वह मेरी क़ौम होंगे।
11 उस वक़्त से इसकी ज़रूरत नहीं रहेगी
कि कोई अपने पड़ोसी या भाई को
तालीम देकर कहे,
'रब को जान लो।'
क्योंकि छोटे से लेकर बड़े तक
सब मुझे जानेंगे,
12 क्योंकि मैं उनका क़ुसूर मुआफ़ करूँगा
और आइंदा उनके गुनाहों को
याद नहीं करूँगा।"

13 इन अलफ़ाज़ में अल्लाह एक नए अहद का
ज़िक्र करता है और यों पुराने अहद को मतरूक
क़रार देता है। और जो मतरूक और पुराना है
उसका अंजाम क़रीब ही है।

दुनियावी और आसमानी इबादत

9 जब पहला अहद बाँधा गया तो इबादत
करने के लिए हिदायात दी गईं। ज़मीन
पर एक मक़दिस भी बनाया गया, 2 एक ख़ैमा
जिसके पहले कमरे में शमादान, मेज़ और उस
पर पड़ी मख़सूस की गई रोटियाँ थीं। उसका नाम
“मुक़द्दस कमरा” था। 3 उसके पीछे एक और
कमरा था जिसका नाम “मुक़द्दसतरीन कमरा”
था। पहले और दूसरे कमरे के दरमियान वाक़े
दरवाज़े पर परदा लगा था। 4 इस पिछले कमरे में
बख़ूर जलाने के लिए सोने की क़ुरबानगाह और
अहद का संदूक़ था। अहद के संदूक़ पर सोना
मँढा हुआ था और उसमें तीन चीज़ें थीं : सोने
का मरतबान जिसमें मन भरा था, हारून का वह
असा जिससे कोंपलें फूट निकली थीं और पत्थर
की वह दो तख़्तियाँ जिन पर अहद के अहकाम
लिखे थे। 5 संदूक़ पर इलाही जलाल के दो करूबी
फ़रिश्ते लगे थे जो संदूक़ के ढकने को साया देते थे
जिसका नाम “कफ़्फ़ारा का ढकना” था। लेकिन
इस जगह पर हम सब कुछ मज़ीद तफ़सील से
बयान नहीं करना चाहते।

6 यह चीज़ें इसी तरतीब से रखी जाती हैं। जब
इमाम अपनी ख़िदमत के फ़रायज़ अदा करते
हैं तो बाक़ायदगी से पहले कमरे में जाते हैं।
7 लेकिन सिर्फ़ इमामे-आज़म ही दूसरे कमरे में
दाख़िल होता है, और वह भी साल में सिर्फ़ एक
दफ़ा। जब भी वह जाता है वह अपने साथ ख़ून
लेकर जाता है जिसे वह अपने और क़ौम के
लिए पेश करता है ताकि वह गुनाह मिट जाएँ
जो लोगों ने ग़ैरइरादी तौर पर किए होते हैं।
8 इससे रूहुल-क़ुद्स दिखाता है कि मुक़द्दसतरीन
कमरे तक रसाई उस वक़्त तक ज़ाहिर नहीं की
गई थी जब तक पहला कमरा इस्तेमाल में था।
9 यह मजाज़न मौजूदा ज़माने की तरफ़ इशारा
है। इसका मतलब यह है कि जो नज़राने और
क़ुरबानियाँ पेश की जा रही हैं वह परस्तार के
ज़मीर को पाक-साफ़ करके कामिल नहीं बना
सकतीं। 10 क्योंकि इनका ताल्लुक़ सिर्फ़ खाने-
पीनेवाली चीज़ों और ग़ुस्ल की मुख़्तलिफ़ रस्मों
से होता है, ऐसी ज़ाहिरी हिदायात जो सिर्फ़ नए
निज़ाम के आने तक लागू हैं।

11 लेकिन अब मसीह आ चुका है, उन अच्छी
चीज़ों का इमामे-आज़म जो अब हासिल हुई हैं।
जिस ख़ैमे में वह ख़िदमत करता है वह कहीं ज़्यादा
अज़ीम और कामिल है। यह ख़ैमा इनसानी हाथों
से नहीं बनाया गया यानी यह इस कायनात का
हिस्सा नहीं है। 12 जब मसीह एक बार सदा के
लिए ख़ैमे के मुक़द्दसतरीन कमरे में दाख़िल हुआ
तो उसने क़ुरबानियाँ पेश करने के लिए बकरों
और बछड़ों का ख़ून इस्तेमाल न किया। इसके
बजाए उसने अपना ही ख़ून पेश किया और यों
हमारे लिए अबदी नजात हासिल की। 13 पुराने
निज़ाम में बैल-बकरों का ख़ून और जवान गाय
की राख नापाक लोगों पर छिड़के जाते थे ताकि
उनके जिस्म पाक-साफ़ हो जाएँ। 14 अगर इन
चीज़ों का यह असर था तो फिर मसीह के ख़ून
का क्या ज़बरदस्त असर होगा! अज़ली रूह के
ज़रीए उसने अपने आपको बेदाग़ क़ुरबानी के तौर
पर पेश किया। यों उसका ख़ून हमारे ज़मीर को
मौत तक पहुँचानेवाले कामों से पाक-साफ़ करता
है ताकि हम ज़िंदा ख़ुदा की ख़िदमत कर सकें।

15 यही वजह है कि मसीह एक नए अहद का
दरमियानी है। मक़सद यह था कि जितने लोगों
को अल्लाह ने बुलाया है उन्हें अल्लाह की मौऊदा
और अबदी मीरास मिले। और यह सिर्फ़ इसलिए
मुमकिन हुआ है कि मसीह ने मरकर फ़िद्या दिया
ताकि लोग उन गुनाहों से छुटकारा पाएँ जो उनसे
उस वक़्त सरज़द हुए जब वह पहले अहद के तहत
थे।

16 जहाँ वसियत है वहाँ ज़रूरी है कि वसियत
करनेवाले की मौत की तसदीक़ की जाए।
17 क्योंकि जब तक वसियत करनेवाला ज़िंदा हो
वसियत बेअसर होती है। इसका असर वसियत
करनेवाले की मौत ही से शुरू होता है। 18 यही
वजह है कि पहला अहद बाँधते वक़्त भी ख़ून

इस्तेमाल हुआ। 19 क्योंकि पूरी क़ौम को शरीअत
का हर हुक्म सुनाने के बाद मूसा ने बछड़ों का
ख़ून पानी से मिलाकर उसे ज़ूफ़े के गुच्छे और
क़िरमिज़ी रंग के धागे के ज़रीए शरीअत की
किताब और पूरी क़ौम पर छिड़का। 20 उसने
कहा, "यह ख़ून उस अहद की तसदीक़ करता
है जिसकी पैरवी करने का हुक्म अल्लाह ने
तुम्हें दिया है।" 21 इसी तरह मूसा ने यह ख़ून
मुलाक़ात के ख़ैमे और इबादत के तमाम सामान
पर छिड़का। 22 न सिर्फ़ यह बल्कि शरीअत
तक़ाज़ा करती है कि तक़रीबन हर चीज़ को ख़ून
ही से पाक-साफ़ किया जाए बल्कि अल्लाह के
हुज़ूर ख़ून पेश किए बग़ैर मुआफ़ी मिल ही नहीं
सकती।

मसीह की क़ुरबानी गुनाहों को मिटा देती है

23 ग़रज़, लाज़िम था कि यह चीज़ें जो
आसमान की असली चीज़ों की नक़ली सूरतें हैं
पाक-साफ़ की जाएँ। लेकिन आसमानी चीज़ें ख़ुद
ऐसी क़ुरबानियों का मुतालबा करती हैं जो इनसे
कहीं बेहतर हों। 24 क्योंकि मसीह सिर्फ़ इनसानी
हाथों से बने मक़दिस में दाख़िल नहीं हुआ जो
असली मक़दिस की सिर्फ़ नक़ली सूरत थी बल्कि
वह आसमान में ही दाख़िल हुआ ताकि अब
से हमारी ख़ातिर अल्लाह के सामने हाज़िर हो।
25 दुनिया का इमामे-आज़म तो सालाना किसी
और (यानी जानवर) का ख़ून लेकर मुक़द्दसतरीन
कमरे में दाख़िल होता है। लेकिन मसीह इसलिए
आसमान में दाख़िल न हुआ कि वह अपने आपको
बार बार क़ुरबानी के तौर पर पेश करे। 26 अगर
ऐसा होता तो उसे दुनिया की तख़लीक़ से लेकर
आज तक बहुत दफ़ा दुख सहना पड़ता। लेकिन
ऐसा नहीं है बल्कि अब वह ज़मानों के इख़्तिताम
पर एक ही बार सदा के लिए ज़ाहिर हुआ ताकि
अपने आपको क़ुरबान करने से गुनाह को दूर
करे। 27 एक बार मरना और अल्लाह की अदालत
में हाज़िर होना हर इनसान के लिए मुक़र्रर है।
28 इसी तरह मसीह को भी एक ही बार बहुतों के
गुनाहों को उठाकर ले जाने के लिए क़ुरबान किया
गया। दूसरी बार जब वह ज़ाहिर होगा तो गुनाहों
को दूर करने के लिए ज़ाहिर नहीं होगा बल्कि उन्हें
नजात देने के लिए जो शिद्दत से उसका इंतज़ार
कर रहे हैं।

10 मूसवी शरीअत आनेवाली अच्छी और
असली चीज़ों की सिर्फ़ नक़ली सूरत
और साया है। यह उन चीज़ों की असली शक्ल
नहीं है। इसलिए यह उन्हें कभी भी कामिल नहीं
कर सकती जो साल बसाल और बार बार अल्लाह
के हुज़ूर आकर वही क़ुरबानियाँ पेश करते रहते
हैं। 2 अगर वह कामिल कर सकती तो क़ुरबानियाँ
पेश करने की ज़रूरत न रहती। क्योंकि इस सूरत
में परस्तार एक बार सदा के लिए पाक-साफ़
हो जाते और उन्हें गुनाहगार होने का शऊर न
रहता। 3 लेकिन इसके बजाए यह क़ुरबानियाँ
साल बसाल लोगों को उनके गुनाहों की याद
दिलाती हैं। 4 क्योंकि मुमकिन ही नहीं कि बैल-
बकरों का ख़ून गुनाहों को दूर करे।

5 इसलिए मसीह दुनिया में आते वक़्त अल्लाह
से कहता है,

"तू क़ुरबानियाँ और नज़रें नहीं चाहता था
लेकिन तूने मेरे लिए
एक जिस्म तैयार किया।
6 भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ
और गुनाह की क़ुरबानियाँ
तुझे पसंद नहीं थीं।
7 फिर मैं बोल उठा,
'ऐ ख़ुदा, मैं हाज़िर हूँ
ताकि तेरी मरज़ी पूरी करूँ,
जिस तरह मेरे बारे में
कलामे-मुक़द्दस में[a] लिखा है'।"

8 पहले मसीह कहता है, "न तू क़ुरबा-
नियाँ, नज़रें, भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ या गुनाह
की क़ुरबानियाँ चाहता था, न उन्हें पसंद करता

[a] लफ़्ज़ी तरजुमा : किताब के तूमार में।

था" गो शरीअत इन्हें पेश करने का मुतालबा
करती है। 9 फिर वह फ़रमाता है, "मैं हाज़िर
हूँ ताकि तेरी मरज़ी पूरी करूँ।" यों वह पहला
निज़ाम ख़त्म करके उस की जगह दूसरा निज़ाम
क़ायम करता है। 10 और उस की मरज़ी पूरी हो
जाने से हमें ईसा मसीह के बदन के वसीले से
मख़सूसो-मुक़द्दस किया गया है। क्योंकि उसे एक
ही बार सदा के लिए हमारे लिए क़ुरबान किया
गया।

11 हर इमाम रोज़ बरोज़ मक़दिस में खड़ा
अपनी ख़िदमत के फ़रायज़ अदा करता है।
रोज़ाना और बार बार वह वही क़ुरबानियाँ पेश
करता रहता है जो कभी भी गुनाहों को दूर नहीं
कर सकतीं। 12 लेकिन मसीह ने गुनाहों को दूर
करने के लिए एक ही क़ुरबानी पेश की, एक ऐसी
क़ुरबानी जिसका असर सदा के लिए रहेगा। फिर
वह अल्लाह के दहने हाथ बैठ गया। 13 वहीं वह
अब इंतज़ार करता है जब तक अल्लाह उसके
दुश्मनों को उसके पाँवों की चौकी न बना दे।
14 यों उसने एक ही क़ुरबानी से उन्हें सदा के लिए
कामिल बना दिया है जिन्हें मुक़द्दस किया जा रहा
है।

15 रूहुल-क़ुद्स भी हमें इसके बारे में गवाही
देता है। पहले वह कहता है,

16 "रब फ़रमाता है कि
जो नया अहद मैं उन दिनों के बाद
उनसे बाँधूँगा
उसके तहत मैं अपनी शरीअत
उनके दिलों में डालकर
उनके ज़हनों पर कंदा करूँगा।"

17 फिर वह कहता है, "उस वक़्त से मैं उनके
गुनाहों और बुराइयों को याद नहीं करूँगा।"
18 और जहाँ इन गुनाहों की मुआफ़ी हुई है वहाँ
गुनाहों को दूर करने की क़ुरबानियों की ज़रूरत ही
नहीं रही।

आएँ, हम अल्लाह के हुज़ूर आएँ

19 चुनाँचे भाइयो, अब हम ईसा के ख़ून के
वसीले से पूरे एतमाद के साथ मुक़द्दसतरीन
कमरे में दाख़िल हो सकते हैं। 20 अपने बदन
की क़ुरबानी से ईसा ने उस कमरे के परदे में
से गुज़रने का एक नया और ज़िंदगीबख़्श रास्ता
खोल दिया। 21 हमारा एक अज़ीम इमामे-आज़म
है जो अल्लाह के घर पर मुक़र्रर है। 22 इसलिए
आएँ, हम ख़ुलूसदिली और ईमान के पूरे एतमाद
के साथ अल्लाह के हुज़ूर आएँ। क्योंकि हमारे
दिलों पर मसीह का ख़ून छिड़का गया है ताकि
हमारे मुजरिम ज़मीर साफ़ हो जाएँ। नीज़, हमारे
बदनों को पाक-साफ़ पानी से धोया गया है।
23 आएँ, हम मज़बूती से उस उम्मीद को थामे
रखें जिसका इक़रार हम करते हैं। हम डाँवाँडोल
न हो जाएँ, क्योंकि जिसने इस उम्मीद का वादा
किया है वह वफ़ादार है। 24 और आएँ, हम इस
पर ध्यान दें कि हम एक दूसरे को किस तरह
मुहब्बत दिखाने और नेक काम करने पर उभार
सकें। 25 हम बाहम जमा होने से बाज़ न आएँ,
जिस तरह बाज़ की आदत बन गई है। इसके
बजाए हम एक दूसरे की हौसलाअफ़्ज़ाई करें,
ख़ासकर यह बात मद्दे-नज़र रखकर कि ख़ुदावंद
का दिन क़रीब आ रहा है।

26 ख़बरदार! अगर हम सच्चाई जान लेने के
बाद भी जान-बूझकर गुनाह करते रहें तो मसीह
की क़ुरबानी इन गुनाहों को दूर नहीं कर सकेगी।
27 फिर सिर्फ़ अल्लाह की अदालत की हौलनाक
तवक़्क़ो बाक़ी रहेगी, उस भड़कती हुई आग
की जो अल्लाह के मुख़ालिफ़ों को भस्म कर
डालेगी। 28 जो मूसा की शरीअत रद्द करता है
उस पर रहम नहीं किया जा सकता बल्कि अगर
दो या इससे ज़ायद लोग इस जुर्म की गवाही दें
तो उसे सज़ाए-मौत दी जाए। 29 तो फिर क्या
ख़याल है, वह कितनी सख़्त सज़ा के लायक़ होगा
जिसने अल्लाह के फ़रज़ंद को पाँवों तले रौंदा?
जिसने अहद का वह ख़ून हक़ीर जाना जिससे उसे

मख़सूसो-मुक़द्दस किया गया था? और जिसने
फ़ज़ल के रूह की बेइज़्ज़ती की? 30 क्योंकि हम
उसे जानते हैं जिसने फ़रमाया, “इंतक़ाम लेना
मेरा ही काम है, मैं ही बदला लूँगा।” उसने यह
भी कहा, “रब अपनी क़ौम का इनसाफ़ करेगा।”
31 यह एक हौलनाक बात है अगर ज़िंदा ख़ुदा हमें
सज़ा देने के लिए पकड़े।

32 ईमान के पहले दिन याद करें जब
अल्लाह ने आपको रौशन कर दिया था।
उस वक़्त के सख़्त मुक़ाबले में आपको
कई तरह का दुख सहना पड़ा, लेकिन
आप साबितक़दम रहे। 33 कभी कभी आप-
की बेइज़्ज़ती और अवाम के सामने ही ईज़ारसानी
होती थी, कभी कभी आप उनके साथी थे जिनसे
ऐसा सुलूक हो रहा था। 34 जिन्हें जेल में डाला
गया आप उनके दुख में शरीक हुए और जब
आपका मालो-मता लूटा गया तो आपने यह बात
ख़ुशी से बरदाश्त की। क्योंकि आप जानते थे कि
वह माल हमसे नहीं छीन लिया गया जो पहले की
निसबत कहीं बेहतर है और हर सूरत में क़ायम
रहेगा। 35 चुनाँचे अपने इस एतमाद को हाथ से
जाने न दें क्योंकि इसका बड़ा अज्र मिलेगा।
36 लेकिन इसके लिए आपको साबितक़दमी की
ज़रूरत है ताकि आप अल्लाह की मरज़ी पूरी कर
सकें और यों आपको वह कुछ मिल जाए जिसका
वादा उसने किया है। 37 क्योंकि कलामे-मुक़द्दस
यह फ़रमाता है,

“थोड़ी ही देर बाक़ी है
तो आनेवाला पहुँचेगा, वह देर नहीं करेगा।
38 लेकिन मेरा रास्तबाज़
ईमान ही से जीता रहेगा,
और अगर वह पीछे हट जाए
तो मैं उससे ख़ुश नहीं हूँगा।”

39 लेकिन हम उनमें से नहीं हैं जो पीछे हटकर
तबाह हो जाएंगे बल्कि हम उनमें से हैं जो ईमान
रखकर नजात पाते हैं।

ईमान

11 ईमान क्या है? यह कि हम उसमें
क़ायम रहें जिस पर हम उम्मीद रखते
हैं और कि हम उसका यक़ीन रखें जो हम नहीं
देख सकते। 2 ईमान ही से पुराने ज़मानों के लोगों
को अल्लाह की क़बूलियत हासिल हुई।

3 ईमान के ज़रीए हम जान लेते हैं कि कायनात
को अल्लाह के कलाम से ख़लक़ किया गया, कि
जो कुछ हम देख सकते हैं नज़र आनेवाली चीज़ों
से नहीं बना।

4 यह ईमान का काम था कि हाबील ने अल्लाह
को एक ऐसी क़ुरबानी पेश की जो क़ाबील की
क़ुरबानी से बेहतर थी। इस ईमान की बिना पर
अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ ठहराकर उस की अच्छी
गवाही दी, जब उसने उस की क़ुरबानियों को
क़बूल किया। और ईमान के ज़रीए वह अब तक
बोलता रहता है हालाँकि वह मुरदा है। 5 यह ईमान
का काम था कि हनूक न मरा बल्कि ज़िंदा हालत
में आसमान पर उठाया गया। कोई भी उसे ढूँडकर
पा न सका क्योंकि अल्लाह उसे आसमान पर
उठा ले गया था। वजह यह थी कि उठाए जाने से
पहले उसे यह गवाही मिली कि वह अल्लाह को
पसंद आया। 6 और ईमान रखे बग़ैर हम अल्लाह
को पसंद नहीं आ सकते। क्योंकि लाज़िम है कि
अल्लाह के हुज़ूर आनेवाला ईमान रखे कि वह है
और कि वह उन्हें अज्र देता है जो उसके तालिब
हैं।

7 यह ईमान का काम था कि नूह ने अल्लाह
की सुनी जब उसने उसे आनेवाली बातों के बारे
में आगाह किया, ऐसी बातों के बारे में जो अभी
देखने में नहीं आई थीं। नूह ने ख़ुदा का ख़ौफ़
मानकर एक कश्ती बनाई ताकि उसका ख़ानदान
बच जाए। यों उसने अपने ईमान के ज़रीए दुनिया
को मुजरिम क़रार दिया और उस रास्तबाज़ी का
वारिस बन गया जो ईमान से हासिल होती है।

8 यह ईमान का काम था कि इब्राहीम ने
अल्लाह की सुनी जब उसने उसे बुलाकर कहा

कि वह एक ऐसे मुल्क में जाए जो उसे बाद में मीरास में मिलेगा। हाँ, वह अपने मुल्क को छोड़कर रवाना हुआ, हालाँकि उसे मालूम न था कि वह कहाँ जा रहा है। 9 ईमान के ज़रीए वह वादा किए हुए मुल्क में अजनबी की हैसियत से रहने लगा। वह ख़ैमों में रहता था और इसी तरह इसहाक़ और याक़ूब भी जो उसके साथ उसी वादे के वारिस थे। 10 क्योंकि इब्राहीम उस शहर के इंतज़ार में था जिसकी मज़बूत बुनियाद है और जिसका नक़्शा बनाने और तामीर करनेवाला ख़ुद अल्लाह है।

11 यह ईमान का काम था कि इब्राहीम बाप बनने के क़ाबिल हो गया, हालाँकि वह बुढ़ापे की वजह से बाप नहीं बन सकता था। इसी तरह सारा भी बच्चे जन्म नहीं दे सकती थी। लेकिन इब्राहीम समझता था कि अल्लाह जिसने वादा किया है वफ़ादार है। 12 गो इब्राहीम तक़रीबन मर चुका था तो भी उसी एक शख़्स से बेशुमार औलाद निकली, तादाद में आसमान पर के सितारों और साहिल पर की रेत के ज़र्रों के बराबर।

13 यह तमाम लोग ईमान रखते रखते मर गए। उन्हें वह कुछ न मिला जिसका वादा किया गया था। उन्होंने उसे सिर्फ़ दूर ही से देखकर ख़ुशआमदीद[a] कहा। और उन्होंने तसलीम किया कि हम ज़मीन पर[b] सिर्फ़ मेहमान और आरिज़ी तौर पर रहनेवाले अजनबी हैं। 14 जो इस क़िस्म की बातें करते हैं वह ज़ाहिर करते हैं कि हम अब तक अपने वतन की तलाश में हैं। 15 अगर उनके ज़हन में वह मुल्क होता जिससे वह निकल आए थे तो वह अब भी वापस जा सकते थे। 16 इसके बजाए वह एक बेहतर मुल्क यानी एक आसमानी मुल्क की आरज़ू कर रहे थे। इसलिए अल्लाह उनका ख़ुदा कहलाने से नहीं शर्माता, क्योंकि उसने उनके लिए एक शहर तैयार किया है।

17 यह ईमान का काम था कि इब्राहीम ने उस वक़्त इसहाक़ को क़ुरबानी के तौर पर पेश किया जब अल्लाह ने उसे आज़माया। हाँ, वह अपने इकलौते बेटे को क़ुरबान करने के लिए तैयार था अगरचे उसे अल्लाह के वादे मिल गए थे
18 कि "तेरी नसल इसहाक़ ही से क़ायम रहेगी।"
19 इब्राहीम ने सोचा, "अल्लाह मुरदों को भी ज़िंदा कर सकता है," और मजाज़न उसे वाक़ई इसहाक़ मुरदों में से वापस मिल गया।

20 यह ईमान का काम था कि इसहाक़ ने आनेवाली चीज़ों के लिहाज़ से याक़ूब और एसौ को बरकत दी।

21 यह ईमान का काम था कि याक़ूब ने मरते वक़्त यूसुफ़ के दोनों बेटों को बरकत दी और अपनी लाठी के सिरे पर टेक लगाकर अल्लाह को सिजदा किया।

22 यह ईमान का काम था कि यूसुफ़ ने मरते वक़्त यह पेशगोई की कि इसराईली मिसर से निकलेंगे बल्कि यह भी कहा कि निकलते वक़्त मेरी हड्डियाँ भी अपने साथ ले जाओ।

23 यह ईमान का काम था कि मूसा के माँ-बाप ने उसे पैदाइश के बाद तीन माह तक छुपाए रखा, क्योंकि उन्होंने देखा कि वह ख़ूबसूरत है। वह बादशाह के हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी करने से न डरे।

24 यह ईमान का काम था कि मूसा ने परवान चढ़कर इनकार किया कि उसे फ़िरौन की बेटी का बेटा ठहराया जाए। 25 आरिज़ी तौर पर गुनाह से लुत्फ़अंदोज़ होने के बजाए उसने अल्लाह की क़ौम के साथ बदसुलूकी का निशाना बनने को तरजीह दी। 26 वह समझा कि जब मेरी मसीह की ख़ातिर रुसवाई की जाती है तो यह मिसर के तमाम ख़ज़ानों से ज़्यादा क़ीमती है, क्योंकि उस की आँखें आनेवाले अज्र पर लगी रहीं।

27 यह ईमान का काम था कि मूसा ने बादशाह के ग़ुस्से से डरे बग़ैर मिसर को छोड़ दिया, क्योंकि वह गोया अनदेखे ख़ुदा को मुसलसल अपनी आँखों के सामने रखता रहा। 28 यह ईमान का

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : सलामी दी। सलाम देकर इज़्ज़त का इज़हार किया। सल्यूट किया।

[b]ज़मीन पर या मुल्क (यानी कनान) में।

काम था कि उसने फ़सह की ईद मनाकर हुक्म
दिया कि ख़ून को चौखटों पर लगाया जाए ताकि
हलाक करनेवाला फ़रिश्ता उनके पहलौठे बेटों को
न छुए।

29 यह ईमान का काम था कि इसराईली बहरे-
क़ुलज़ुम में से यों गुज़र सके जैसे कि यह ख़ुश्क
ज़मीन थी। जब मिसरियों ने यह करने की कोशिश
की तो वह डूब गए।

30 यह ईमान का काम था कि सात दिन तक
यरीहू शहर की फ़सील के गिर्द चक्कर लगाने के
बाद पूरी दीवार गिर गई। 31 यह भी ईमान का
काम था कि राहब फ़ाहिशा अपने शहर के बाक़ी
नाफ़रमान बाशिंदों के साथ हलाक न हुई, क्योंकि
उसने इसराईली जासूसों को सलामती के साथ
ख़ुशआमदीद कहा था।

32 मैं मज़ीद क्या कुछ कहूँ? मेरे पास इतना
वक़्त नहीं कि मैं जिदाऊन, बरक़, समसून,
इफ़ताह, दाऊद, समुएल और नबियों के बारे में
सुनाता रहूँ। 33 यह सब ईमान के सबब से ही
कामयाब रहे। वह बादशाहियों पर ग़ालिब आए
और इनसाफ़ करते रहे। उन्हें अल्लाह के वादे
हासिल हुए। उन्होंने शेरबबरों के मुँह बंद कर दिए
34 और आग के भड़कते शोलों को बुझा दिया।
वह तलवार की ज़द से बच निकले। वह कमज़ोर
थे लेकिन उन्हें क़ुव्वत हासिल हुई। जब जंग छिड़
गई तो वह इतने ताक़तवर साबित हुए कि उन्होंने
ग़ैरमुल्की लशकरों को शिकस्त दी। 35 ईमान
रखने के बाइस ख़वातीन को उनके मुरदा अज़ीज़
ज़िंदा हालत में वापस मिले।

लेकिन ऐसे भी थे जिन्हें तशद्दुद बरदाश्त करना
पड़ा और जिन्होंने आज़ाद हो जाने से इनकार
किया ताकि उन्हें एक बेहतर चीज़ यानी जी उठने
का तजरबा हासिल हो जाए। 36 बाज़ को लान-
तान और कोड़ों बल्कि ज़ंजीरों और क़ैद का भी
सामना करना पड़ा। 37 उन्हें संगसार किया गया,
उन्हें आरे से चीरा गया, उन्हें तलवार से मार डाला
गया। बाज़ को भेड़-बकरियों की खालों में घूमना
फिरना पड़ा। ज़रूरतमंद हालत में उन्हें दबाया और
उन पर ज़ुल्म किया जाता रहा। 38 दुनिया उनके
लायक़ नहीं थी! वह वीरान जगहों में, पहाड़ों पर,
ग़ारों और गढ़ों में आवारा फिरते रहे।

39 इन सबको ईमान की वजह से अच्छी गवाही
मिली। तो भी इन्हें वह कुछ हासिल न हुआ
जिसका वादा अल्लाह ने किया था। 40 क्योंकि
उसने हमारे लिए एक ऐसा मनसूबा बनाया था
जो कहीं बेहतर है। वह चाहता था कि यह लोग
हमारे बग़ैर कामिलियत तक न पहुँचें।

अल्लाह हमारा बाप

12 ग़रज़, हम गवाहों के इतने बड़े लशकर
से घेरे रहते हैं! इसलिए आएँ, हम
सब कुछ उतारें जो हमारे लिए रुकावट का बाइस
बन गया है, हर गुनाह को जो हमें आसानी से
उलझा लेता है। आएँ, हम साबितक़दमी से उस
दौड़ में दौड़ते रहें जो हमारे लिए मुक़र्रर की गई
है। 2 और दौड़ते हुए हम ईसा को तकते रहें,
उसे जो ईमान का बानी भी है और उसे तकमील
तक पहुँचानेवाला भी। याद रहे कि गो वह ख़ुशी
हासिल कर सकता था तो भी उसने सलीबी मौत
की शर्मनाक बेइज़्ज़ती की परवा न की बल्कि उसे
बरदाश्त किया। और अब वह अल्लाह के तख़्त के
दहने हाथ जा बैठा है!

3 उस पर ध्यान दें जिसने गुनाहगारों की इतनी
मुख़ालफ़त बरदाश्त की। फिर आप थकते थकते
बेदिल नहीं हो जाएंगे। 4 देखें, आप गुनाह से लड़े
तो हैं, लेकिन अभी तक आपको जान देने तक
इसकी मुख़ालफ़त नहीं करनी पड़ी। 5 क्या आप
कलामे-मुक़द्दस की यह हौसलाअफ़्ज़ा बात भूल
गए हैं जो आपको अल्लाह के फ़रज़ंद ठहराकर
बयान करती है,

“मेरे बेटे, रब की तरबियत को
हक़ीर मत जान,
जब वह तुझे डाँटे तो न बेदिल हो।
6 क्योंकि जो रब को प्यारा है
उस की वह तादीब करता है,
वह हर एक को सज़ा देता है

जिसे उसने बेटे के तौर पर
क़बूल किया है।”
7 अपनी मुसीबतों को इलाही तरबियत
समझकर बरदाश्त करें। इसमें अल्लाह आपसे
बेटों का-सा सुलूक कर रहा है। क्या कभी कोई
बेटा था जिसकी उसके बाप ने तरबियत न की?
8 अगर आपकी तरबियत सबकी तरह न की जाती
तो इसका मतलब यह होता कि आप अल्लाह के
हक़ीक़ी फ़रज़ंद न होते बल्कि नाजायज़ औलाद।
9 देखें, जब हमारे इनसानी बाप ने हमारी तरबियत
की तो हमने उस की इज़्ज़त की। अगर ऐसा है तो
कितना ज़्यादा ज़रूरी है कि हम अपने रूहानी बाप
के ताबे होकर ज़िंदगी पाएँ। 10 हमारे इनसानी
बापों ने हमें अपनी समझ के मुताबिक़ थोड़ी देर
के लिए तरबियत दी। लेकिन अल्लाह हमारी
ऐसी तरबियत करता है जो फ़ायदे का बाइस है
और जिससे हम उस की क़ुद्दूसियत में शरीक होने
के क़ाबिल हो जाते हैं। 11 जब हमारी तरबियत
की जाती है तो उस वक़्त हम ख़ुशी महसूस नहीं
करते बल्कि ग़म। लेकिन जिनकी तरबियत इस
तरह होती है वह बाद में रास्तबाज़ी और सलामती
की फ़सल काटते हैं।

हिदायात

12 चुनाँचे अपने थकेहारे बाज़ुओं और कमज़ोर
घुटनों को मज़बूत करें। 13 अपने रास्ते चलने के
क़ाबिल बना दें ताकि जो अज़ु लँगड़ा है उसका
जोड़ उतर न जाए[a] बल्कि शफ़ा पाए।

14 सबके साथ मिलकर सुलह-सलामती और
क़ुद्दूसियत के लिए जिद्दो-जहद करते रहें, क्योंकि
जो मुक़द्दस नहीं है वह ख़ुदावंद को कभी नहीं
देखेगा। 15 इस पर ध्यान देना कि कोई अल्लाह
के फ़ज़ल से महरूम न रहे। ऐसा न हो कि कोई
कड़वी जड़ फूट निकले और बढ़कर तकलीफ़ का
बाइस बन जाए और बहुतों को नापाक कर दे।
16 ध्यान दें कि कोई भी ज़िनाकार या एसौ जैसा
दुनियावी शख़्स न हो जिसने एक ही खाने के
एवज़ अपने वह मौरूसी हुक़ूक़ बेच डाले जो उसे
बड़े बेटे की हैसियत से हासिल थे। 17 आपको भी
मालूम है कि बाद में जब वह यह बरकत विरासत
में पाना चाहता था तो उसे रद्द किया गया। उस
वक़्त उसे तौबा का मौक़ा न मिला हालाँकि उसने
आँसू बहा बहाकर यह बरकत हासिल करने की
कोशिश की।

18 आप उस तरह अल्लाह के हुज़ूर नहीं आए
जिस तरह इसराईली जब वह सीना पहाड़ पर
पहुँचे, उस पहाड़ के पास जिसे छुआ जा सकता
था। वहाँ आग भड़क रही थी, अंधेरा ही अंधेरा
था और आँधी चल रही थी। 19 जब नरसिंगे की
आवाज़ सुनाई दी और अल्लाह उनसे हमकलाम
हुआ तो सुननेवालों ने उससे इल्तिजा की कि
हमें मज़ीद कोई बात न बता। 20 क्योंकि वह यह
हुक्म बरदाश्त नहीं कर सकते थे कि “अगर कोई
जानवर भी पहाड़ को छू ले तो उसे संगसार करना
है।” 21 यह मंज़र इतना हैबतनाक था कि मूसा ने
कहा, “मैं ख़ौफ़ के मारे काँप रहा हूँ।”

22 नहीं, आप सिय्यून पहाड़ के पास आ
गए हैं, यानी ज़िंदा ख़ुदा के शहर आसमानी
यरूशलम के पास। आप बेशुमार फ़रिश्तों और
जशन मनानेवाली जमात के पास आ गए हैं,
23 उन पहलौठों की जमात के पास जिनके नाम
आसमान पर दर्ज किए गए हैं। आप तमाम
इनसानों के मुंसिफ़ अल्लाह के पास आ गए हैं
और कामिल किए गए रास्तबाज़ों की रूहों के
पास। 24 नीज़ आप नए अहद के दरमियानी ईसा
के पास आ गए हैं और उस छिड़काए गए ख़ून के
पास जो हाबील के ख़ून की तरह बदला लेने की
बात नहीं करता बल्कि एक ऐसी मुआफ़ी देता है
जो कहीं ज़्यादा मुअस्सिर है।

25 चुनाँचे ख़बरदार रहें कि आप उस की सुनने
से इनकार न करें जो इस वक़्त आपसे हमकलाम
हो रहा है। क्योंकि अगर इसराईली न बचे जब

[a] एक और मुमकिना तरजुमा : जो लँगड़ा है वह भटक न जाए।

उन्होंने दुनियावी पैग़ंबर मूसा की सुनने से इनकार
किया तो फिर हम किस तरह बचेंगे अगर हम
उस की सुनने से इनकार करें जो आसमान से
हमसे हमकलाम होता है। 26 जब अल्लाह सीना
पहाड़ पर से बोल उठा तो ज़मीन काँप गई, लेकिन
अब उसने वादा किया है, “एक बार फिर मैं न
सिर्फ़ ज़मीन को हिला दूँगा बल्कि आसमान को
भी।” 27 “एक बार फिर” के अलफ़ाज़ इस तरफ़
इशारा करते हैं कि ख़लक़ की गई चीज़ों को
हिलाकर दूर किया जाएगा और नतीजे में सिर्फ़
वह चीज़ें क़ायम रहेंगी जिन्हें हिलाया नहीं जा
सकता।

28 चुनाँचे आएँ, हम शुक्रगुज़ार हों। क्योंकि
हमें एक ऐसी बादशाही हासिल हो रही है जिसे
हिलाया नहीं जा सकता। हाँ, हम शुक्रगुज़ारी
की इस रूह में एहतराम और ख़ौफ़ के साथ
अल्लाह की पसंदीदा परस्तिश करें, 29 क्योंकि
हमारा ख़ुदा हक़ीक़तन भस्म कर देनेवाली आग
है।

हम अल्लाह को किस तरह पसंद आएँ

13 एक दूसरे से भाइयों की-सी मुहब्बत
रखते रहें। 2 मेहमान-नवाज़ी मत
भूलना, क्योंकि ऐसा करने से बाज़ ने नादानिस्ता
तौर पर फ़रिश्तों की मेहमान-नवाज़ी की है। 3 जो
क़ैद में हैं, उन्हें यों याद रखना जैसे आप ख़ुद उनके
साथ क़ैद में हों। और जिनके साथ बदसुलूकी
हो रही है उन्हें यों याद रखना जैसे आपसे यह
बदसुलूकी हो रही हो।

4 लाज़िम है कि सबके सब इज़दिवाजी ज़िंदगी
का एहतराम करें। शौहर और बीवी एक दूसरे
के वफ़ादार रहें, क्योंकि अल्लाह ज़िनाकारों और
शादी का बंधन तोड़नेवालों की अदालत करेगा।

5 आपकी ज़िंदगी पैसों के लालच से आज़ाद
हो। उसी पर इकतिफ़ा करें जो आपके पास है,
क्योंकि अल्लाह ने फ़रमाया है, “मैं तुझे कभी
नहीं छोड़ूँगा, मैं तुझे कभी तर्क नहीं करूँगा।”
6 इसलिए हम एतमाद से कह सकते हैं,

“रब मेरी मदद करनेवाला है,
इसलिए मैं नहीं डरूँगा।
इनसान मेरा क्या बिगाड़ सकता है?”

7 अपने राहनुमाओं को याद रखें जिन्होंने
आपको अल्लाह का कलाम सुनाया। इस पर
ग़ौर करें कि उनके चाल-चलन से कितनी भलाई
पैदा हुई है, और उनके ईमान के नमूने पर चलें।
8 ईसा मसीह माज़ी में, आज और अबद तक
यकसाँ है। 9 तरह तरह की और बेगाना तालीमात
आपको इधर-उधर न भटकाएँ। आप तो अल्लाह
के फ़ज़ल से तक़वियत पाते हैं और इससे नहीं कि
आप मुख़्तलिफ़ खानों से परहेज़ करते हैं। इसमें
कोई ख़ास फ़ायदा नहीं है।

10 हमारे पास एक ऐसी क़ुरबानगाह है जिसकी
क़ुरबानी खाना मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत
करनेवालों के लिए मना है। 11 क्योंकि गो इमामे-
आज़म जानवरों का ख़ून गुनाह की क़ुरबानी के
तौर पर मुक़द्दसतरीन कमरे में ले जाता है, लेकिन
उनकी लाशों को ख़ैमागाह के बाहर जलाया जाता
है। 12 इस वजह से ईसा को भी शहर के बाहर
सलीबी मौत सहनी पड़ी ताकि क़ौम को अपने
ख़ून से मख़सूसो-मुक़द्दस करे। 13 इसलिए आएँ,
हम ख़ैमागाह से निकलकर उसके पास जाएँ और
उस की बेइज़्ज़ती में शरीक हो जाएँ। 14 क्योंकि
यहाँ हमारा कोई क़ायम रहनेवाला शहर नहीं है
बल्कि हम आनेवाले शहर की शदीद आरज़ू रखते
हैं। 15 चुनाँचे आएँ, हम ईसा के वसीले से अल्लाह
को हम्दो-सना की क़ुरबानी पेश करें, यानी हमारे
होंटों से उसके नाम की तारीफ़ करनेवाला फल
निकले। 16 नीज़, भलाई करना और दूसरों को
अपनी बरकात में शरीक करना मत भूलना,
क्योंकि ऐसी क़ुरबानियाँ अल्लाह को पसंद हैं।

17 अपने राहनुमाओं की सुनें और उनकी बात
मानें। क्योंकि वह आपकी देख-भाल करते करते
जागते रहते हैं, और इसमें वह अल्लाह के सामने
जवाबदेह हैं। उनकी बात मानें ताकि वह ख़ुशी
से अपनी ख़िदमत सरंजाम दें। वरना वह कराहते

कराहते अपनी ज़िम्मेदारी निभाएँगे, और यह आपके लिए मुफ़ीद नहीं होगा।

18 हमारे लिए दुआ करें, गो हमें यक़ीन है कि हमारा ज़मीर साफ़ है और हम हर लिहाज़ से अच्छी ज़िंदगी गुज़ारने के ख़ाहिशमंद हैं।

19 मैं ख़ासकर इस पर ज़ोर देना चाहता हूँ कि आप दुआ करें कि अल्लाह मुझे आपके पास जल्द वापस आने की तौफ़ीक़ बख़्शे।

आख़िरी दुआ

20 अब सलामती का ख़ुदा जो अबदी अहद
के ख़ून से हमारे ख़ुदावंद और भेड़ों के अज़ीम
चरवाहे ईसा को मुरदों में से वापस लाया 21 वह
आपको हर अच्छी चीज़ से नवाज़े ताकि आप उस
की मरज़ी पूरी कर सकें। और वह ईसा मसीह
के ज़रीए हममें वह कुछ पैदा करे जो उसे पसंद
आए। उसका जलाल अज़ल से अबद तक होता
रहे! आमीन।

आख़िरी अलफ़ाज़

22 भाइयो, मेहरबानी करके नसीहत की इन
बातों पर संजीदगी से ग़ौर करें, क्योंकि मैंने
आपको सिर्फ़ चंद अलफ़ाज़ लिखे हैं। 23 यह
बात आपके इल्म में होनी चाहिए कि हमारे भाई
तीमुथियुस को रिहा कर दिया गया है। अगर वह
जल्दी पहुँचे तो उसे साथ लेकर आपसे मिलने
आऊँगा।

24 अपने तमाम राहनुमाओं और तमाम मुक़द्दसीन को मेरा सलाम कहना। इटली के ईमानदार आपको सलाम कहते हैं।

25 अल्लाह का फ़ज़ल आप सबके साथ रहे।

याक़ूब का आम ख़त

1 यह ख़त अल्लाह और ख़ुदावंद ईसा मसीह
के ख़ादिम याक़ूब की तरफ़ से है।
ग़ैरयहूदी क़ौमों में बिखरे हुए बारह इसराईली
क़बीलों को सलाम।

ईमान और हिकमत

2 मेरे भाइयो, जब आपको तरह तरह की
आज़माइशों का सामना करना पड़े तो अपने
आपको ख़ुशक़िसमत समझें, 3 क्योंकि आप
जानते हैं कि आपके ईमान के आज़माए
जाने से साबितक़दमी पैदा होती है। 4 चुनाँचे
साबितक़दमी को बढ़ने दें, क्योंकि जब वह
तकमील तक पहुँचेगी तो आप बालिग़ और
कामिल बन जाएंगे, और आपमें कोई भी कमी
नहीं पाई जाएगी। 5 लेकिन अगर आपमें से किसी
में हिकमत की कमी हो तो अल्लाह से माँगे जो
सबको फ़ैयाज़ी से और बग़ैर झिड़की दिए देता है।
वह ज़रूर आपको हिकमत देगा। 6 लेकिन अपनी
गुज़ारिश ईमान के साथ पेश करें और शक न
करें, क्योंकि शक करनेवाला समुंदर की मौज
की मानिंद होता है जो हवा से इधर-उधर उछलती
बहती जाती है। 7 ऐसा शख़्स न समझे कि मुझे
ख़ुदावंद से कुछ मिलेगा, 8 क्योंकि वह दोदिला
और अपने हर काम में ग़ैरमुस्तक़िलमिज़ाज है।

ग़ुरबत और दौलत

9 पस्तहाल भाई मसीह में अपने ऊँचे मरतबे
पर फ़ख़र करे 10 जबकि दौलतमंद शख़्स अपने
अदना मरतबे पर फ़ख़र करे, क्योंकि वह जंगली
फूल की तरह जल्द ही जाता रहेगा। 11 जब सूरज
तुलू होता है तो उस की झुलसा देनेवाली धूप में
पौदा मुरझा जाता, उसका फूल गिर जाता और
उस की तमाम ख़ूबसूरती ख़त्म हो जाती है। उस
तरह दौलतमंद शख़्स भी काम करते करते मुरझा
जाएगा।

आज़माइश

12 मुबारक है वह जो आज़माइश के वक़्त
साबितक़दम रहता है, क्योंकि क़ायम रहने पर
उसे ज़िंदगी का वह ताज मिलेगा जिसका वादा
अल्लाह ने उनसे किया है जो उससे मुहब्बत
रखते हैं। 13 आज़माइश के वक़्त कोई न कहे
कि अल्लाह मुझे आज़माइश में फँसा रहा है। न
तो अल्लाह को बुराई से आज़माइश में फँसाया
जा सकता है, न वह किसी को फँसाता है।
14 बल्कि हर एक की अपनी बुरी ख़ाहिशात उसे
खींचकर और उकसाकर आज़माइश में फँसा देती
हैं। 15 फिर यह ख़ाहिशात हामिला होकर गुनाह
को जन्म देती हैं और गुनाह बालिग़ होकर मौत
को जन्म देता है।

16 मेरे अज़ीज़ भाइयो, फ़रेब मत खाना!
17 हर अच्छी नेमत और हर अच्छा तोहफ़ा

आसमान से नाज़िल होता है, नूरों के बाप से,
जिसमें न कभी तबदीली आती है, न बदलते हुए
सायों की-सी हालत पाई जाती है। 18 उसी ने
अपनी मरज़ी से हमें सच्चाई के कलाम के वसीले
से पैदा किया। यों हम एक तरह से उस की तमाम
मख़लूक़ात का पहला फल हैं।

सुनना काफ़ी नहीं है

19 मेरे अज़ीज़ भाइयो, इसका ख़याल रखना,
हर शख़्स सुनने में तेज़ हो, लेकिन बोलने और
ग़ुस्सा करने में धीमा। 20 क्योंकि इनसान का
ग़ुस्सा वह रास्तबाज़ी पैदा नहीं करता जो अल्लाह
चाहता है। 21 चुनाँचे अपनी ज़िंदगी की गंदी
आदतें और शरीर चाल-चलन दूर करके हलीमी
से कलामे-मुक़द्दस का वह बीज क़बूल करें जो
आपके अंदर बोया गया है, क्योंकि यही आपको
नजात दे सकता है।

22 कलामे-मुक़द्दस को न सिर्फ़ सुनें बल्कि उस
पर अमल भी करें, वरना आप अपने आपको
फ़रेब देंगे। 23 जो कलाम को सुनकर उस पर
अमल नहीं करता वह उस आदमी की मानिंद
है जो आईने में अपने चेहरे पर नज़र डालता है।
24 अपने आपको देखकर वह चला जाता है और
फ़ौरन भूल जाता है कि मैंने क्या कुछ देखा।
25 इसकी निसबत वह मुबारक है जो आज़ाद
करनेवाली कामिल शरीअत में ग़ौर से नज़र
डालकर उसमें क़ायम रहता है और उसे सुनने के
बाद नहीं भूलता बल्कि उस पर अमल करता है।

26 क्या आप अपने आपको दीनदार स-
मझते हैं? अगर आप अपनी ज़बान पर क़ाबू
नहीं रख सकते तो आप अपने आपको फ़रेब
देते हैं। फिर आपकी दीनदारी का इज़हार बेकार
है। 27 ख़ुदा बाप की नज़र में दीनदारी का पाक
और बेदाग़ इज़हार यह है, यतीमों और बेवाओं
की देख-भाल करना जब वह मुसीबत में हों और
अपने आपको दुनिया की आलूदगी से बचाए
रखना।

तास्सुब से ख़बरदार

2 मेरे भाइयो, लाज़िम है कि आप जो हमारे
जलाली ख़ुदावंद ईसा मसीह पर ईमान
रखते हैं जानिबदारी न दिखाएँ। 2 फ़र्ज़ करें कि
एक आदमी सोने की अंगूठी और शानदार कपड़े
पहने हुए आपकी जमात में आ जाए और साथ
साथ एक ग़रीब आदमी भी मैले-कुचैले कपड़े
पहने हुए अंदर आए। 3 और आप शानदार कपड़े
पहने हुए आदमी पर ख़ास ध्यान देकर उससे
कहें, “यहाँ इस अच्छी कुरसी पर तशरीफ़ रखें,”
लेकिन ग़रीब आदमी को कहें, “वहाँ खड़ा हो
जा” या “आ, मेरे पाँवों के पास फ़र्श पर बैठ
जा।” 4 क्या आप ऐसा करने से मुजरिमाना
ख़यालातवाले मुंसिफ़ नहीं साबित हुए? क्योंकि
आपने लोगों में नारवा फ़रक़ किया है।

5 मेरे अज़ीज़ भाइयो, सुनें! क्या अल्लाह ने
उन्हें नहीं चुना जो दुनिया की नज़र में ग़रीब हैं
ताकि वह ईमान में दौलतमंद हो जाएँ? यही
लोग वह बादशाही मीरास में पाएँगे जिसका वादा
अल्लाह ने उनसे किया है जो उसे प्यार करते
हैं। 6 लेकिन आपने ज़रूरतमंदों की बेइज़्ज़ती की
है। ज़रा सोच लें, वह कौन हैं जो आपको दबाते
और अदालत में घसीटकर ले जाते हैं? क्या यह
दौलतमंद ही नहीं हैं? 7 वही तो ईसा पर कुफ़र
बकते हैं, उस अज़ीम नाम पर जिसके पैरोकार
आप बन गए हैं।

8 अल्लाह चाहता है कि आप कलामे-मुक़द्दस
में मज़कूर शाही शरीअत पूरी करें, “अपने पड़ोसी
से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे
रखता है।” 9 चुनाँचे जब आप जानिबदारी दिखाते
हैं तो गुनाह करते हैं और शरीअत आपको मुजरिम
ठहराती है। 10 मत भूलना कि जिसने शरीअत
का सिर्फ़ एक हुक्म तोड़ा है वह पूरी शरीअत का
क़ुसूरवार ठहरता है। 11 क्योंकि जिसने फ़रमाया,
“ज़िना न करना” उसने यह भी कहा, “क़त्ल
न करना।” हो सकता है कि आपने ज़िना तो
न किया हो, लेकिन किसी को क़त्ल किया हो।

तो भी आप उस एक जुर्म की वजह से पूरी
शरीअत तोड़ने के मुजरिम बन गए हैं। 12 चुनाँचे
जो कुछ भी आप कहते और करते हैं याद रखें
कि आज़ाद करनेवाली शरीअत आपकी अदालत
करेगी। 13 क्योंकि अल्लाह अदालत करते वक़्त
उस पर रहम नहीं करेगा जिसने ख़ुद रहम नहीं
दिखाया। लेकिन रहम अदालत पर ग़ालिब आ
जाता है। जब आप रहम करेंगे तो अल्लाह आप
पर रहम करेगा।

ईमान नेक कामों के बग़ैर मुरदा है

14 मेरे भाइयो, अगर कोई ईमान रखने का दावा
करे, लेकिन उसके मुताबिक़ ज़िंदगी न गुज़ारे
तो उसका क्या फ़ायदा है? क्या ऐसा ईमान
उसे नजात दिला सकता है? 15 फ़र्ज़ करें कि
कोई भाई या बहन कपड़ों और रोज़मर्रा रोटी की
ज़रूरतमंद हो। 16 यह देखकर आपमें से कोई
उससे कहे, “अच्छा जी, ख़ुदा हाफ़िज़। गरम
कपड़े पहनो और जी भरकर खाना खाओ।”
लेकिन वह ख़ुद यह ज़रूरियात पूरी करने में मदद
न करे। क्या इसका कोई फ़ायदा है? 17 ग़रज़,
महज़ ईमान काफ़ी नहीं। अगर वह नेक कामों से
अमल में न लाया जाए तो वह मुरदा है।

18 हो सकता है कोई एतराज़ करे, “एक शख़्स
के पास तो ईमान होता है, दूसरे के पास नेक
काम।” आएँ, मुझे दिखाएँ कि आप नेक कामों
के बग़ैर किस तरह ईमान रख सकते हैं। यह तो
नामुमकिन है। लेकिन मैं ज़रूर आपको अपने नेक
कामों से दिखा सकता हूँ कि मैं ईमान रखता हूँ।
19 अच्छा, आप कहते हैं, “हम ईमान रखते हैं कि
एक ही ख़ुदा है।” शाबाश, यह बिलकुल सहीह
है। शयातीन भी यह ईमान रखते हैं, गो वह यह
जानकर ख़ौफ़ के मारे थरथराते हैं। 20 होश में
आएँ! क्या आप नहीं समझते कि नेक आमाल के
बग़ैर ईमान बेकार है? 21 हमारे बाप इब्राहीम पर
ग़ौर करें। वह तो इसी वजह से रास्तबाज़ ठहराया
गया कि उसने अपने बेटे इसहाक़ को क़ुरबानगाह
पर पेश किया। 22 आप ख़ुद देख सकते हैं कि
उसका ईमान और नेक काम मिलकर अमल
कर रहे थे। उसका ईमान तो उससे मुकम्मल
हुआ जो कुछ उसने किया 23 और इस तरह ही
कलामे-मुक़द्दस की यह बात पूरी हुई, “इब्राहीम
ने अल्लाह पर भरोसा रखा। इस बिना पर अल्लाह
ने उसे रास्तबाज़ क़रार दिया।” इसी वजह से वह
“अल्लाह का दोस्त” कहलाया। 24 यों आप ख़ुद
देख सकते हैं कि इनसान अपने नेक आमाल की
बिना पर रास्तबाज़ क़रार दिया जाता है, न कि
सिर्फ़ ईमान रखने की वजह से।

25 राहब फ़ाहिशा की मिसाल भी लें। उसे भी
अपने कामों की बिना पर रास्तबाज़ क़रार दिया
गया जब उसने इसराईली जासूसों की मेहमान-
नवाज़ी की और उन्हें शहर से निकलने का दूसरा
रास्ता दिखाकर बचाया।

26 ग़रज़, जिस तरह बदन रूह के बग़ैर मुरदा है
उसी तरह ईमान भी नेक आमाल के बग़ैर मुरदा
है।

ज़बान

3 मेरे भाइयो, आपमें से ज़्यादा उस्ताद न
बनें। आपको मालूम है कि हम उस्तादों
की ज़्यादा सख़्ती से अदालत की जाएगी। 2 हम
सबसे तो कई तरह की ग़लतियाँ सरज़द होती
हैं। लेकिन जिस शख़्स से बोलने में कभी ग़लती
नहीं होती वह कामिल है और अपने पूरे बदन
को क़ाबू में रखने के क़ाबिल है। 3 हम घोड़े के
मुँह में लगाम का दहाना रख देते हैं ताकि वह
हमारे हुक्म पर चले, और इस तरह हम अपनी
मरज़ी से उसका पूरा जिस्म चला लेते हैं। 4 या
बादबानी जहाज़ की मिसाल लें। जितना भी बड़ा
वह हो और जितनी भी तेज़ हवा चलती हो नाख़ुदा
एक छोटी-सी पतवार के ज़रीए उसका रुख़ ठीक
रखता है। यों ही वह उसे अपनी मरज़ी से चला
लेता है। 5 इसी तरह ज़बान एक छोटा-सा अज़ु
है, लेकिन वह बड़ी बड़ी बातें करती है।

देखें, एक बड़े जंगल को भस्म करने के लिए
एक ही चिंगारी काफ़ी होती है। 6 ज़बान भी आग

की मानिंद है। बदन के दीगर आज़ा के दरमियान
रहकर उसमें नारास्ती की पूरी दुनिया पाई जाती
है। वह पूरे बदन को आलूदा कर देती है, हाँ
इनसान की पूरी ज़िंदगी को आग लगा देती है,
क्योंकि वह ख़ुद जहन्नुम की आग से सुलगाई
गई है। 7 देखें, इनसान हर क़िस्म के जानवरों पर
क़ाबू पा लेता है और उसने ऐसा किया भी है,
ख़ाह जंगली जानवर हों या परिंदे, रेंगनेवाले हों या
समुंदरी जानवर। 8 लेकिन ज़बान पर कोई क़ाबू
नहीं पा सकता, इस बेताब और शरीर चीज़ पर जो
मोहलक ज़हर से लबालब भरी है। 9 ज़बान से हम
अपने ख़ुदावंद और बाप की सताइश भी करते हैं
और दूसरों पर लानत भी भेजते हैं, जिन्हें अल्लाह
की सूरत पर बनाया गया है। 10 एक ही मुँह से
सताइश और लानत निकलती है। मेरे भाइयो,
ऐसा नहीं होना चाहिए। 11 यह कैसे हो सकता है
कि एक ही चश्मे से मीठा और कड़वा पानी फूट
निकले। 12 मेरे भाइयो, क्या अंजीर के दरख़्त पर
ज़ैतून लग सकते हैं या अंगूर की बेल पर अंजीर?
हरगिज़ नहीं! इसी तरह नमकीन चश्मे से मीठा
पानी नहीं निकल सकता।

आसमान से हिकमत

13 क्या आपमें से कोई दाना और समझ-
दार है? वह यह बात अपने अच्छे चाल-चलन से
ज़ाहिर करे, हिकमत से पैदा होनेवाली हलीमी के
नेक कामों से। 14 लेकिन ख़बरदार! अगर आप
दिल में हसद की कड़वाहट और ख़ुदग़रज़ी पाल
रहे हैं तो इस पर शेख़ी मत मारना, न सच्चाई
के ख़िलाफ़ झूट बोलें। 15 ऐसा फ़ख़र आसमान
की तरफ़ से नहीं है, बल्कि दुनियावी, ग़ैररूहानी
और इबलीस से है। 16 क्योंकि जहाँ हसद और
ख़ुदग़रज़ी है वहाँ फ़साद और हर शरीर काम
पाया जाता है। 17 आसमान की हिकमत फ़रक़
है। अव्वल तो वह पाक और मुक़द्दस है। नीज़
वह अमनपसंद, नरमदिल, फ़रमाँबरदार, रहम
और अच्छे फल से भरी हुई, ग़ैरजानिबदार और
ख़ुलूसदिल है। 18 और जो सुलह कराते हैं उनके
लिए रास्तबाज़ी का फल सलामती से बोया जाता
है।

दुनिया से दोस्ती

4 यह लड़ाइयाँ और झगड़े जो आपके
दरमियान हैं कहाँ से आते हैं? क्या इनका
सरचश्मा वह बुरी ख़ाहिशात नहीं जो आपके
आज़ा में लड़ती रहती हैं? 2 आप किसी चीज़ की
ख़ाहिश रखते हैं, लेकिन उसे हासिल नहीं कर
सकते। आप क़त्ल और हसद करते हैं, लेकिन
जो कुछ आप चाहते हैं वह पा नहीं सकते। आप
झगड़ते और लड़ते हैं। तो भी आपके पास कुछ
नहीं है, क्योंकि आप अल्लाह से माँगते नहीं।
3 और जब आप माँगते हैं तो आपको कुछ नहीं
मिलता। वजह यह है कि आप ग़लत नीयत से
माँगते हैं। आप इससे अपनी ख़ुदग़रज़ ख़ाहिशात
पूरी करना चाहते हैं। 4 बेवफ़ा लोगो! क्या
आपको नहीं मालूम कि दुनिया का दोस्त अल्लाह
का दुश्मन होता है? जो दुनिया का दोस्त बनना
चाहता है वह अल्लाह का दुश्मन बन जाता है।
5 या क्या आप समझते हैं कि कलामे-मुक़द्दस की
यह बात बेतुकी-सी है कि अल्लाह ग़ैरत से उस
रूह का आरज़ूमंद है जिसको उसने हमारे अंदर
सुकूनत करने दिया? 6 लेकिन वह हमें इससे
कहीं ज़्यादा फ़ज़ल बख़्शता है। कलामे-मुक़द्दस
यों फ़रमाता है, “अल्लाह मग़रूरों का मुक़ाबला
करता लेकिन फ़रोतनों पर मेहरबानी करता है।”
7 ग़रज़, अल्लाह के ताबे हो जाएँ। इबलीस का
मुक़ाबला करें तो वह भाग जाएगा। 8 अल्लाह के
क़रीब आ जाएँ तो वह आपके क़रीब आएगा।
गुनाहगारो, अपने हाथों को पाक-साफ़ करें।
दोदिलो, अपने दिलों को मख़सूसो-मुक़द्दस करें।
9 अफ़सोस करें, मातम करें, ख़ूब रोएँ। आपकी
हँसी मातम में बदल जाए और आपकी ख़ुशी
मायूसी में। 10 अपने आपको ख़ुदावंद के सामने
नीचा करें तो वह आपको सरफ़राज़ करेगा।

एक दूसरे का मुंसिफ़ मत बनना

11 भाइयो, एक दूसरे पर तोहमत मत लगाना।
जो अपने भाई पर तोहमत लगाता या उसे मुजरिम
ठहराता है वह शरीअत पर तोहमत लगाता है
और शरीअत को मुजरिम ठहराता है। और जब
आप शरीअत पर तोहमत लगाते हैं तो आप उसके
पैरोकार नहीं रहते बल्कि उसके मुंसिफ़ बन गए
हैं। 12 शरीअत देनेवाला और मुंसिफ़ सिर्फ़ एक ही
है और वह है अल्लाह जो नजात देने और हलाक
करने के क़ाबिल है। तो फिर आप कौन हैं जो
अपने आपको मुंसिफ़ समझकर अपने पड़ोसी को
मुजरिम ठहरा रहे हैं!

शेख़ी मत मारना

13 और अब मेरी बात सुनें, आप जो कहते हैं,
"आज या कल हम फ़ुलाँ फ़ुलाँ शहर में जाएंगे।
वहाँ हम एक साल ठहरकर कारोबार करके पैसे
कमाएँगे।" 14 देखें, आप यह भी नहीं जानते कि
कल क्या होगा। आपकी ज़िंदगी चीज़ ही किया
है! आप भाप ही हैं जो थोड़ी देर के लिए नज़र
आती, फिर ग़ायब हो जाती है। 15 बल्कि आपको
यह कहना चाहिए, "अगर ख़ुदावंद की मरज़ी हुई
तो हम जिएँगे और यह या वह करेंगे।" 16 लेकिन
फ़िलहाल आप शेख़ी मारकर अपने ग़ुरूर का
इज़हार करते हैं। इस क़िस्म की तमाम शेख़ीबाज़ी
बुरी है।

17 चुनाँचे जो जानता है कि उसे क्या क्या नेक
काम करना है, लेकिन फिर भी कुछ नहीं करता
वह गुनाह करता है।

दौलतमंदो, ख़बरदार!

5 दौलतमंदो, अब मेरी बात सुनें! ख़ूब रोएँ
और गिर्याओ-ज़ारी करें, क्योंकि आप पर
मुसीबत आनेवाली है। 2 आपकी दौलत सड़ गई
है और कीड़े आपके शानदार कपड़े खा गए हैं।
3 आपके सोने और चाँदी को ज़ंग लग गया है।
और उनकी ज़ंगआलूदा हालत आपके ख़िलाफ़
गवाही देगी और आपके जिस्मों को आग की तरह
खा जाएगी। क्योंकि आपने इन आख़िरी दिनों में
अपने लिए ख़ज़ाने जमा कर लिए हैं। 4 देखें, जो
मज़दूरी आपने फ़सल की कटाई करनेवालों से
बाज़ रखी है वह आपके ख़िलाफ़ चिल्ला रही है।
और आपकी फ़सल जमा करनेवालों की चीख़ें
आसमानी लशकरों के रब के कानों तक पहुँच
गई हैं। 5 आपने दुनिया में ऐयाशी और ऐशो-
इशरत की ज़िंदगी गुज़ारी है। ज़बह के दिन आपने
अपने आपको मोटा-ताज़ा कर दिया है। 6 आपने
रास्तबाज़ को मुजरिम ठहराकर क़त्ल किया है,
और उसने आपका मुक़ाबला नहीं किया।

सब्र और दुआ

7 भाइयो, अब सब्र से ख़ुदावंद की आमद के
इंतज़ार में रहें। किसान पर ग़ौर करें जो इस
इंतज़ार में रहता है कि ज़मीन अपनी क़ीमती
फ़सल पैदा करे। वह कितने सब्र से ख़रीफ़ और
बहार की बारिशों का इंतज़ार करता है! 8 आप
भी सब्र करें और अपने दिलों को मज़बूत रखें,
क्योंकि ख़ुदावंद की आमद क़रीब आ गई है।

9 भाइयो, एक दूसरे पर मत बुड़बुड़ाना, वरना
आपकी अदालत की जाएगी। मुंसिफ़ तो दरवाज़े
पर खड़ा है। 10 भाइयो, उन नबियों के नमूने पर
चलें जिन्होंने रब के नाम में कलाम पेश करके सब्र
से दुख उठाया। 11 देखें, हम उन्हें मुबारक कहते हैं
जो सब्र से दुख बरदाश्त करते थे। आपने अय्यूब
की साबितक़दमी के बारे में सुना है और यह भी
देख लिया कि रब ने आख़िर में क्या कुछ किया,
क्योंकि रब बहुत मेहरबान और रहीम है।

12 मेरे भाइयो, सबसे बढ़कर यह कि आप
क़सम न खाएँ, न आसमान की क़सम, न ज़मीन
की, न किसी और चीज़ की। जब आप "हाँ"
कहना चाहते हैं तो बस "हाँ" ही काफ़ी है। और
अगर इनकार करना चाहें तो बस "नहीं" कहना
काफ़ी है, वरना आप मुजरिम ठहरेंगे।

13 क्या आपमें से कोई मुसीबत में फँसा हुआ
है? वह दुआ करे। क्या कोई ख़ुश है? वह
सताइश के गीत गाए। 14 क्या आपमें से कोई

बीमार है? वह जमात के बुज़ुर्गों को बुलाए ताकि
वह आकर उसके लिए दुआ करें और ख़ुदावंद के
नाम में उस पर तेल मलें। 15 फिर ईमान से की गई
दुआ मरीज़ को बचाएगी और ख़ुदावंद उसे उठा
खड़ा करेगा। और अगर उसने गुनाह किया हो तो
उसे मुआफ़ किया जाएगा। 16 चुनाँचे एक दूसरे
के सामने अपने गुनाहों का इक़रार करें और एक
दूसरे के लिए दुआ करें ताकि आप शफ़ा पाएँ।
रास्त शख़्स की मुअस्सिर दुआ से बहुत कुछ हो
सकता है। 17 इलियास हम जैसा इनसान था।
लेकिन जब उसने ज़ोर से दुआ की कि बारिश न
हो तो साढ़े तीन साल तक बारिश न हुई। 18 फिर
उसने दुबारा दुआ की तो आसमान ने बारिश अता
की और ज़मीन ने अपनी फ़सलें पैदा कीं।

19 मेरे भाइयो, अगर आपमें से कोई सच्चाई से
भटक जाए और कोई उसे सहीह राह पर वापस
लाए 20 तो यक़ीन जानें, जो किसी गुनाहगार को
उस की ग़लत राह से वापस लाता है वह उस की
जान को मौत से बचाएगा और गुनाहों की बड़ी
तादाद को छुपा देगा।

पतरस का पहला ख़त

1 यह ख़त ईसा मसीह के रसूल पतरस की
तरफ़ से है।
मैं अल्लाह के चुने हुओं को लिख रहा हूँ,
दुनिया के उन मेहमानों को जो पुंतुस, गलतिया,
कप्पदुकिया, आसिया और बिथुनिया के सूबों
में बिखरे हुए हैं। 2 ख़ुदा बाप ने आपको बहुत
देर पहले जानकर चुन लिया और उसके रूह ने
आपको मख़सूसो-मुक़द्दस कर दिया। नतीजे में
आप ईसा मसीह के ताबे और उसके छिड़काए
गए ख़ून से पाक-साफ़ हो गए हैं।
अल्लाह आपको भरपूर फ़ज़ल और सलामती
बख़्शे।

ज़िंदा उम्मीद

3 ख़ुदा हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के बाप की
तारीफ़ हो! अपने अज़ीम रहम से उसने ईसा
मसीह को ज़िंदा करने के वसीले से हमें नए
सिरे से पैदा किया है। इससे हमें एक ज़िंदा
उम्मीद मिली है, 4 एक ऐसी मीरास जो कभी
नहीं सड़ेगी, कभी नहीं नापाक हो जाएगी और
कभी नहीं मुरझाएगी। क्योंकि यह आसमान पर
आपके लिए महफ़ूज़ रखी गई है। 5 और अल्लाह
आपके ईमान के ज़रीए अपनी क़ुदरत से आपकी
उस वक़्त तक हिफ़ाज़त करता रहेगा जब तक
आपको नजात न मिल जाए, वह नजात जो
आख़िरत के दिन सब पर ज़ाहिर होने के लिए
तैयार है।

6 उस वक़्त आप ख़ुशी मनाएँगे, गो फ़िलहाल
आपको थोड़ी देर के लिए तरह तरह की
आज़माइशों का सामना करके ग़म खाना पड़ता है
7 ताकि आपका ईमान असली साबित हो जाए।
क्योंकि जिस तरह आग सोने को आज़माकर
ख़ालिस बना देती है उसी तरह आपका ईमान भी
आज़माया जा रहा है, हालाँकि यह फ़ानी सोने से
कहीं ज़्यादा क़ीमती है। क्योंकि अल्लाह चाहता
है कि आपको उस दिन तारीफ़, जलाल और
इज़्ज़त मिल जाए जब ईसा मसीह ज़ाहिर होगा।
8 उसी को आप प्यार करते हैं अगरचे आपने उसे
देखा नहीं, और उसी पर आप ईमान रखते हैं
गो वह आपको इस वक़्त नज़र नहीं आता। हाँ,
आप दिल में नाक़ाबिले-बयान और जलाली ख़ुशी
मनाएँगे, 9 जब आप वह कुछ पाएँगे जो ईमान
की मनज़िले-मक़सूद है यानी अपनी जानों की
नजात।
10 नबी इसी नजात की तलाश और तफ़तीश
में लगे रहे, और उन्होंने उस फ़ज़ल की पेशगोई
की जो अल्लाह आपको देनेवाला था। 11 उन्होंने
मालूम करने की कोशिश की कि मसीह का रूह
जो उनमें था किस वक़्त या किन हालात के बारे
में बात कर रहा था जब उसने मसीह के दुख
और बाद के जलाल की पेशगोई की। 12 उन पर
इतना ज़ाहिर किया गया कि उनकी यह पेशगोइयाँ
उनके अपने लिए नहीं थीं, बल्कि आपके लिए।
और अब यह सब कुछ आपको उन्हीं के वसीले

से पेश किया गया है जिन्होंने आसमान से भेजे
गए रूहुल-क़ुद्स के ज़रीए आपको अल्लाह की
ख़ुशख़बरी सुनाई है। यह ऐसी बातें हैं जिन पर
फ़रिश्ते भी नज़र डालने के आरज़ूमंद हैं।

मुक़द्दस ज़िंदगी गुज़ारना

13 चुनाँचे ज़हनी तौर पर कमरबस्ता हो जाएँ।
होशमंदी से अपनी पूरी उम्मीद उस फ़ज़ल पर
रखें जो आपको ईसा मसीह के ज़ुहूर पर बख़्शा
जाएगा। 14 आप अल्लाह के ताबेफ़रमान फ़रज़ंद
हैं, इसलिए उन बुरी ख़ाहिशात को अपनी ज़िंदगी
में जगह न दें जो आप जाहिल होते वक़्त रखते थे।
वरना वह आपकी ज़िंदगी को अपने साँचे में ढाल
लेंगी। 15 इसके बजाए अल्लाह की मानिंद बनें
जिसने आपको बुलाया है। जिस तरह वह क़ुद्दूस
है उसी तरह आप भी हर वक़्त मुक़द्दस ज़िंदगी
गुज़ारें। 16 क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में लिखा है,
"अपने आपको मख़सूसो-मुक़द्दस रखो क्योंकि
मैं मुक़द्दस हूँ।"

17 और याद रखें कि आसमानी बाप जिससे
आप दुआ करते हैं जानिबदारी नहीं करता बल्कि
आपके अमल के मुताबिक़ आपका फ़ैसला
करेगा। चुनाँचे जब तक आप इस दुनिया के
मेहमान रहेंगे ख़ुदा के ख़ौफ़ में ज़िंदगी गुज़ारें।
18 क्योंकि आप ख़ुद जानते हैं कि आपको
बापदादा की बेमानी ज़िंदगी से छुड़ाने के लिए
क्या फ़िद्या दिया गया। यह सोने या चाँदी जैसी
फ़ानी चीज़ नहीं थी 19 बल्कि मसीह का क़ीमती
ख़ून था। उसी को बेनुक़्स और बेदाग़ लेले की
हैसियत से हमारे लिए क़ुरबान किया गया।
20 उसे दुनिया की तख़लीक़ से पेशतर चुना गया,
लेकिन इन आख़िरी दिनों में आपकी ख़ातिर
ज़ाहिर किया गया। 21 और उसके वसीले से आप
अल्लाह पर ईमान रखते हैं जिसने उसे मुरदों में से
ज़िंदा करके इज़्ज़तो-जलाल दिया ताकि आपका
ईमान और उम्मीद अल्लाह पर हो।

22 सच्चाई के ताबे हो जाने से आपको
मख़सूसो-मुक़द्दस कर दिया गया और आप-
के दिलों में भाइयों के लिए बेरिया मुहब्बत डाली
गई है। चुनाँचे अब एक दूसरे को ख़ुलूसदिली और
लग्न से प्यार करते रहें। 23 क्योंकि आपकी नए
सिरे से पैदाइश हुई है। और यह किसी फ़ानी बीज
का फल नहीं है बल्कि अल्लाह के लाफ़ानी, ज़िंदा
और क़ायम रहनेवाले कलाम का फल है। 24 यों
कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता है,

"तमाम इनसान घास ही हैं,
उनकी तमाम शानो-शौकत
जंगली फूल की मानिंद है।
घास तो मुरझा जाती और फूल
गिर जाता है,
25 लेकिन रब का कलाम
अबद तक क़ायम रहता है।"

मज़कूरा कलाम अल्लाह की ख़ुशख़बरी है जो
आपको सुनाई गई है।

ज़िंदा पत्थर और मुक़द्दस क़ौम

2 चुनाँचे अपनी ज़िंदगी से तमाम तरह की
बुराई, धोकेबाज़ी, रियाकारी, हसद और
बुहतान निकालें। 2 चूँकि आप नौमौलूद बच्चे हैं
इसलिए ख़ालिस रूहानी दूध पीने के आरज़ूमंद
रहें, क्योंकि इसे पीने से ही आप बढ़ते बढ़ते
नजात की नौबत तक पहुँचेंगे। 3 जिन्होंने ख़ुदावंद
की भलाई का तजरबा किया है उनके लिए ऐसा
करना ज़रूरी है।

4 ख़ुदावंद के पास आएँ, उस ज़िंदा पत्थर के
पास जिसे इनसानों ने रद्द किया है, लेकिन जो
अल्लाह के नज़दीक चुनीदा और क़ीमती है।
5 और आप भी ज़िंदा पत्थर हैं जिनको अल्लाह
अपने रूहानी मक़दिस को तामीर करने के लिए
इस्तेमाल कर रहा है। न सिर्फ़ यह बल्कि आप
उसके मख़सूसो-मुक़द्दस इमाम हैं। ईसा मसीह के
वसीले से आप ऐसी रूहानी क़ुरबानियाँ पेश कर
रहे हैं जो अल्लाह को पसंद हैं। 6 क्योंकि कलामे-
मुक़द्दस फ़रमाता है,

"देखो, मैं सिय्यून में एक पत्थर
रख देता हूँ,

कोने का एक चुनीदा और क़ीमती पत्थर।
जो उस पर ईमान लाएगा
उसे शरमिंदा नहीं किया जाएगा।”
7 यह पत्थर आपके नज़दीक जो ईमान रखते हैं
बेशक़ीमत है। लेकिन जो ईमान नहीं लाए उन्होंने
उसे रद्द किया।
“जिस पत्थर को मकान बनानेवालों ने
रद्द किया
वह कोने का बुनियादी पत्थर बन गया।”
8 नीज़ वह एक ऐसा पत्थर है
“जो ठोकर का बाइस बनेगा,
एक चट्टान जो ठेस लगने
का सबब होगी।”
वह इसलिए ठोकर खाते हैं क्योंकि वह कलामे-
मुक़द्दस के ताबे नहीं होते। यही कुछ अल्लाह की
उनके लिए मरज़ी थी।
9 लेकिन आप अल्लाह की चुनी हुई नसल
हैं, आप आसमानी बादशाह के इमाम और
उस की मख़सूसो-मुक़द्दस क़ौम हैं। आप उस
की मिलकियत बन गए हैं ताकि अल्लाह के
क़वी कामों का एलान करें, क्योंकि वह आपको
तारीकी से अपनी हैरतअंगेज़ रौशनी में लाया है।
10 एक वक़्त था जब आप उस की क़ौम नहीं थे,
लेकिन अब आप अल्लाह की क़ौम हैं। पहले आप
पर रहम नहीं हुआ था, लेकिन अब अल्लाह ने
आप पर अपने रहम का इज़हार किया है।

अल्लाह के ख़ादिम

11 अज़ीज़ो, आप इस दुनिया में अजनबी और
मेहमान हैं। इसलिए मैं आपको ताकीद करता
हूँ कि आप जिस्मानी ख़ाहिशात का इनकार
करें। क्योंकि यह आपकी जान से लड़ती हैं।
12 ग़ैरईमानदारों के दरमियान रहते हुए इतनी
अच्छी ज़िंदगी गुज़ारें कि गो वह आप पर ग़लत
काम करने की तोहमत भी लगाएँ तो भी उन्हें
आपके नेक काम नज़र आएँ और उन्हें अल्लाह
की आमद के दिन उस की तमजीद करनी पड़े।
13 ख़ुदावंद की ख़ातिर हर इनसानी इख़्ति-
यार के ताबे रहें, ख़ाह बादशाह हो जो सबसे
आला इख़्तियार रखनेवाला है, 14 ख़ाह उसके
वज़ीर जिन्हें उसने इसलिए मुक़र्रर किया है कि वह
ग़लत काम करनेवालों को सज़ा और अच्छा काम
करनेवालों को शाबाश दें। 15 क्योंकि अल्लाह की
मरज़ी है कि आप अच्छा काम करने से नासमझ
लोगों की जाहिल बातों को बंद करें। 16 आप
आज़ाद हैं, इसलिए आज़ादाना ज़िंदगी गुज़ारें।
लेकिन अपनी आज़ादी को ग़लत काम छुपाने
के लिए इस्तेमाल न करें, क्योंकि आप अल्लाह
के ख़ादिम हैं। 17 हर एक का मुनासिब एहतराम
करें, अपने बहन-भाइयों से मुहब्बत रखें, ख़ुदा का
ख़ौफ़ मानें, बादशाह का एहतराम करें।

मसीह के दुख का नमूना

18 ऐ ग़ुलामो, हर लिहाज़ से अपने मा-
लिकों का एहतराम करके उनके ताबे रहें। और
यह सुलूक न सिर्फ़ उनके साथ हो जो नेक और
नरमदिल हैं बल्कि उनके साथ भी जो ज़ालिम
हैं। 19 क्योंकि अगर कोई अल्लाह की मरज़ी का
ख़याल करके बेइनसाफ़ तकलीफ़ का ग़म सब्र
से बरदाश्त करे तो यह अल्लाह का फ़ज़ल है।
20 बेशक इसमें फ़ख़र की कोई बात नहीं अगर
आप सब्र से पिटाई की वह सज़ा बरदाश्त करें
जो आपको ग़लत काम करने की वजह से मिली
हो। लेकिन अगर आपको अच्छा काम करने की
वजह से दुख सहना पड़े और आप यह सज़ा सब्र
से बरदाश्त करें तो यह अल्लाह का फ़ज़ल है।
21 आपको इसी के लिए बुलाया गया है। क्योंकि
मसीह ने आपकी ख़ातिर दुख सहने में आपके
लिए एक नमूना छोड़ा है। और वह चाहता है
कि आप उसके नक़्शे-क़दम पर चलें। 22 उसने
तो कोई गुनाह न किया, और न कोई फ़रेब की
बात उसके मुँह से निकली। 23 जब लोगों ने उसे
गालियाँ दीं तो उसने जवाब में गालियाँ न दीं।
जब उसे दुख सहना पड़ा तो उसने किसी को
धमकी न दी बल्कि उसने अपने आपको अल्लाह

के हवाले कर दिया जो इनसाफ़ से अदालत
करता है। 24 मसीह ख़ुद अपने बदन पर हमारे
गुनाहों को सलीब पर ले गया ताकि हम गुनाहों
के एतबार से मर जाएँ और यों हमारा गुनाह से
ताल्लुक़ ख़त्म हो जाए। अब वह चाहता है कि हम
रास्तबाज़ी की ज़िंदगी गुज़ारें। क्योंकि आपको
उसी के ज़ख़मों के वसीले से शफ़ा मिली है।
25 पहले आप आवारा भेड़ों की तरह आवारा फिर
रहे थे, लेकिन अब आप अपनी जानों के चरवाहे
और निगरान के पास लौट आए हैं।

बीवी और शौहर

3 इसी तरह आप बीवियों को भी अपने अपने
शौहर के ताबे रहना है। क्योंकि इस तरह
वह जो ईमान नहीं रखते अपनी बीवी के चाल-
चलन से जीते जा सकते हैं। कुछ कहने की ज़रूरत
नहीं रहेगी 2 क्योंकि वह देखेंगे कि आप कितनी
पाकीज़गी से ख़ुदा के ख़ौफ़ में ज़िंदगी गुज़ारती
हैं। 3 इसकी फ़िकर मत करना कि आप ज़ाहिरी
तौर पर आरास्ता हों, मसलन खास तौर-तरीक़ों
से गुँधे हुए बालों से या सोने के ज़ेवर और शानदार
लिबास पहनने से। 4 इसके बजाए इसकी फ़िकर
करें कि आपकी बातिनी शख़्सियत आरास्ता हो।
क्योंकि जो रूह नरमदिली और सुकून के लाफ़ानी
ज़ेवरों से सजी हुई है वही अल्लाह के नज़दीक
बेशक़ीमत है। 5 माज़ी में अल्लाह पर उम्मीद
रखनेवाली मुक़द्दस ख़वातीन भी इसी तरह अपना
सिंगार किया करती थीं। यों वह अपने शौहरों
के ताबे रहीं, 6 सारा की तरह जो अपने शौहर
इब्राहीम को आक़ा कहकर उस की मानती थी।
आप तो सारा की बेटियाँ बन गई हैं। चुनाँचे नेक
काम करें और किसी भी चीज़ से न डरें, ख़ाह वह
कितनी ही डरावनी क्यों न हो।

7 इस तरह लाज़िम है कि आप जो शौहर हैं
समझ के साथ अपनी बीवियों के साथ ज़िंदगी
गुज़ारें, यह जानकर कि यह आपकी निसबत
कमज़ोर हैं। उनकी इज़्ज़त करें, क्योंकि यह भी
आपके साथ ज़िंदगी के फ़ज़ल की वारिस हैं। ऐसा
न हो कि इसमें बेपरवाई करने से आपकी दुआइया
ज़िंदगी में रुकावट पैदा हो जाए।

नेक ज़िंदगी गुज़ारने की वजह से दुख

8 आख़िर में एक और बात, आप सब एक ही
सोच रखें और एक दूसरे से ताल्लुक़ात में हमदर्दी,
प्यार, रहम और हलीमी का इज़हार करें। 9 किसी
के ग़लत काम के जवाब में ग़लत काम मत करना,
न किसी की गालियों के जवाब में गाली देना।
इसके बजाए जवाब में ऐसे शख़्स को बरकत दें,
क्योंकि अल्लाह ने आपको भी इसलिए बुलाया
है कि आप उस की बरकत विरासत में पाएँ।
10 कलामे-मुक़द्दस यों फ़रमाता है,

“कौन मज़े से ज़िंदगी गुज़ारना
और अच्छे दिन देखना चाहता है?
वह अपनी ज़बान को
  शरीर बातें करने से रोके
और अपने होंटों को झूट बोलने से।
11 वह बुराई से मुँह फेरकर नेक काम करे,
सुलह-सलामती का तालिब होकर
उसके पीछे लगा रहे।
12 क्योंकि रब की आँखें
  रास्तबाज़ों पर लगी रहती हैं,
और उसके कान
  उनकी दुआओं की तरफ़ मायल हैं।
लेकिन रब का चेहरा उनके ख़िलाफ़ है
जो ग़लत काम करते हैं।”

13 अगर आप नेक काम करने में सरगरम हों
तो कौन आपको नुक़सान पहुँचाएगा? 14 लेकिन
अगर आपको रास्त काम करने की वजह से
दुख भी उठाना पड़े तो आप मुबारक हैं।
उनकी धमकियों से मत डरना और मत घबराना
15 बल्कि अपने दिलों में ख़ुदावंद मसीह को
मख़सूसो-मुक़द्दस जानें। और जो भी आपसे
आपकी मसीह पर उम्मीद के बारे में पूछे हर
वक़्त उसे जवाब देने के लिए तैयार रहें। लेकिन
नरमदिली से और ख़ुदा के ख़ौफ़ के साथ जवाब
दें। 16 साथ साथ आपका ज़मीर साफ़ हो। फिर

जो लोग आपके मसीह में अच्छे चाल-चलन के
बारे में ग़लत बातें कर रहे हैं उन्हें अपनी तोहमत
पर शर्म आएगी। 17 याद रहे कि ग़लत काम
करने की वजह से दुख सहने की निसबत बेहतर
यह है कि हम नेक काम करने की वजह से
तकलीफ़ उठाएँ, बशर्तेकि यह अल्लाह की मरज़ी
हो। 18 क्योंकि मसीह ने हमारे गुनाहों को मिटाने
की ख़ातिर एक बार सदा के लिए मौत सही। हाँ,
जो रास्तबाज़ है उसने यह नारास्तों के लिए किया
ताकि आपको अल्लाह के पास पहुँचाए। उसे
बदन के एतबार से सज़ाए-मौत दी गई, लेकिन
रूह के एतबार से उसे ज़िंदा कर दिया गया।
19 इस रूह के ज़रीए उसने जाकर क़ैदी रूहों को
पैग़ाम दिया। 20 यह उनकी रूहें थीं जो उन दिनों
में नाफ़रमान थे जब नूह अपनी कश्ती बना रहा
था। उस वक़्त अल्लाह सब्र से इंतज़ार करता
रहा, लेकिन आख़िरकार सिर्फ़ चंद एक लोग यानी
आठ अफ़राद पानी में से गुज़रकर बच निकले।
21 यह पानी उस बपतिस्मे की तरफ़ इशारा है जो
इस वक़्त आपको नजात दिलाता है। इससे जिस्म
की गंदगी दूर नहीं की जाती बल्कि बपतिस्मा
लेते वक़्त हम अल्लाह से अर्ज़ करते हैं कि वह
हमारा ज़मीर पाक-साफ़ कर दे। फिर यह आपको
ईसा मसीह के जी उठने से नजात दिलाता है।
22 अब मसीह आसमान पर जाकर अल्लाह के
दहने हाथ बैठ गया है जहाँ फ़रिश्ते, इख़्तियारवाले
और क़ुव्वतें उसके ताबे हैं।

तबदीलशुदा ज़िंदगियाँ

4 अब चूँकि मसीह ने जिस्मानी तौर पर
दुख उठाया इसलिए आप भी अपने
आपको उस की-सी सोच से लैस करें। क्योंकि
जिसने मसीह की ख़ातिर जिस्मानी तौर पर दुख
सह लिया है उसने गुनाह से निपट लिया है।
2 नतीजे में वह ज़मीन पर अपनी बाक़ी ज़िंदगी
इनसान की बुरी ख़ाहिशात पूरी करने में नहीं
गुज़ारेगा बल्कि अल्लाह की मरज़ी पूरी करने में।
3 माज़ी में आपने काफ़ी वक़्त वह कुछ करने
में गुज़ारा जो ग़ैरईमानदार पसंद करते हैं यानी
ऐयाशी, शहवतपरस्ती, नशाबाज़ी, शराबनोशी,
रंगरलियों, नाच-रंग और घिनौनी बुतपरस्ती में।
4 अब आपके ग़ैरईमानदार दोस्त ताज्जुब करते हैं
कि आप उनके साथ मिलकर ऐयाशी के इस तेज़
धारे में छलाँग नहीं लगाते। इसलिए वह आप पर
कुफ़र बकते हैं। 5 लेकिन उन्हें अल्लाह को जवाब
देना पड़ेगा जो ज़िंदों और मुरदों की अदालत करने
के लिए तैयार खड़ा है। 6 यही वजह है कि अल्लाह
की ख़ुशख़बरी उन्हें भी सुनाई गई जो अब मुरदा
हैं। मक़सद यह था कि वह अल्लाह के सामने रूह
में ज़िंदगी गुज़ार सकें अगरचे इनसानी लिहाज़ से
उनके जिस्म की अदालत की गई है।

अपनी नेमतों से एक दूसरे की ख़िदमत करें

7 तमाम चीज़ों का ख़ातमा क़रीब आ गया है।
चुनाँचे दुआ करने के लिए चुस्त और होशमंद
रहें। 8 सबसे ज़रूरी बात यह है कि आप एक
दूसरे से लगातार मुहब्बत रखें, क्योंकि मुहब्बत
गुनाहों की बड़ी तादाद पर परदा डाल देती है।
9 बुड़बुड़ाए बग़ैर एक दूसरे की मेहमान-नवाज़ी
करें। 10 अल्लाह अपना फ़ज़ल मुख़्तलिफ़ नेमतों
से ज़ाहिर करता है। फ़ज़ल का यह इंतज़ाम
वफ़ादारी से चलाते हुए एक दूसरे की ख़िदमत
करें, हर एक उस नेमत से जो उसे मिली है।
11 अगर कोई बोले तो अल्लाह के-से अलफ़ाज़
के साथ बोले। अगर कोई ख़िदमत करे तो उस
ताक़त के ज़रीए जो अल्लाह उसे मुहैया करता है,
क्योंकि इस तरह ही अल्लाह को ईसा मसीह के
वसीले से जलाल दिया जाएगा। अज़ल से अबद
तक जलाल और क़ुदरत उसी की हो! आमीन।

आपकी मुसीबत ग़ैरमामूली नहीं है

12 अज़ीज़ो, ईज़ारसानी की उस आग पर
ताज्जुब न करें जो आपको आज़माने के लिए
आप पर आन पड़ी है। यह मत सोचना कि मेरे
साथ कैसी ग़ैरमामूली बात हो रही है। 13 बल्कि
ख़ुशी मनाएँ कि आप मसीह के दुखों में शरीक

हो रहे हैं। क्योंकि फिर आप उस वक़्त भी ख़ुशी मनाएँगे जब मसीह का जलाल ज़ाहिर होगा। 14 अगर लोग इसलिए आपकी बेइज़्ज़ती करते हैं कि आप मसीह के पैरोकार हैं तो आप मुबारक हैं। क्योंकि इसका मतलब है कि अल्लाह का जलाली रूह आप पर ठहरा हुआ है। 15 अगर आपमें से किसी को दुख उठाना पड़े तो यह इसलिए नहीं होना चाहिए कि आप क़ातिल, चोर, मुजरिम या फ़सादी हैं। 16 लेकिन अगर आपको मसीह के पैरोकार होने की वजह से दुख उठाना पड़े तो न शर्माएँ बल्कि मसीह के नाम में अल्लाह की हम्दो-सना करें।

17 क्योंकि अब वक़्त आ गया है कि अल्लाह की अदालत शुरू हो जाए, और पहले उसके घरवालों की अदालत की जाएगी। अगर ऐसा है तो फिर इसका अंजाम उनके लिए क्या होगा जो अल्लाह की ख़ुशख़बरी के ताबे नहीं हैं? 18 और अगर रास्तबाज़ मुश्किल से बचेंगे तो फिर बेदीन और गुनाहगार का क्या होगा? 19 चुनाँचे जो अल्लाह की मरज़ी से दुख उठा रहे हैं वह नेक काम करने से बाज़ न आएँ बल्कि अपनी जानों को उसी के हवाले करें जो उनका वफ़ादार ख़ालिक़ है।

अल्लाह का गल्ला

5 अब मैं आपको जो जमातों के बुज़ुर्ग हैं नसीहत करना चाहता हूँ। मैं ख़ुद भी बुज़ुर्ग हूँ बल्कि मसीह के दुखों का गवाह भी हूँ, और मैं आपके साथ उस आनेवाले जलाल में शरीक हो जाऊँगा जो ज़ाहिर हो जाएगा। इस हैसियत से मैं आपसे अपील करता हूँ, 2 गल्लाबान होते हुए अल्लाह के उस गल्ले की देख-भाल करें जो आपके सुपुर्द किया गया है। यह ख़िदमत मजबूरन न करें बल्कि ख़ुशी से, क्योंकि यह अल्लाह की मरज़ी है। लालच के बग़ैर पूरी लग्न से यह ख़िदमत सरंजाम दें। 3 जिन्हें आपके सुपुर्द किया गया है उन पर हुकूमत मत करना बल्कि गल्ले के लिए अच्छा नमूना बनें। 4 फिर जब हमारा सरदार गल्लाबान ज़ाहिर होगा तो आपको जलाल का ग़ैरफ़ानी ताज मिलेगा।

5 इसी तरह लाज़िम है कि आप जो जवान हैं बुज़ुर्गों के ताबे रहें। सब इंकिसारी का लिबास पहनकर एक दूसरे की ख़िदमत करें, क्योंकि अल्लाह मग़रूरों का मुक़ाबला करता लेकिन फ़रोतनों पर मेहरबानी करता है। 6 चुनाँचे अल्लाह के क़ादिर हाथ के नीचे झुक जाएँ ताकि वह मौज़ूँ वक़्त पर आपको सरफ़राज़ करे। 7 अपनी तमाम परेशानियाँ उस पर डाल दें, क्योंकि वह आपकी फ़िकर करता है।

8 होशमंद रहें, जागते रहें। आपका दुश्मन इबलीस गरजते हुए शेरबबर की तरह घुमता-फिरता और किसी को हड़प कर लेने की तलाश में रहता है। 9 ईमान में मज़बूत रहकर उसका मुक़ाबला करें। आपको तो मालूम है कि पूरी दुनिया में आपके भाई इसी क़िस्म का दुख उठा रहे हैं। 10 लेकिन आपको ज़्यादा देर के लिए दुख उठाना नहीं पड़ेगा। क्योंकि हर तरह के फ़ज़ल का ख़ुदा जिसने आपको मसीह में अपने अबदी जलाल में शरीक होने के लिए बुलाया है वह ख़ुद आपको कामिलियत तक पहुँचाएगा, मज़बूत बनाएगा, तक़वियत देगा और एक ठोस बुनियाद पर खड़ा करेगा। 11 अबद तक क़ुदरत उसी को हासिल रहे। आमीन।

आख़िरी सलाम

12 मैं आपको यह मुख़तसर ख़त सिल-वानुस की मदद से लिख रहा हूँ जिसे मैं वफ़ादार भाई समझता हूँ। मैं इससे आपकी हौसलाअफ़्ज़ाई और इसकी तसदीक़ करना चाहता हूँ कि यही अल्लाह का हक़ीक़ी फ़ज़ल है। इस पर क़ायम रहें।

13 बाबल में जो जमात अल्लाह ने आपकी तरह चुनी है वह आपको सलाम कहती है, और इसी तरह मेरा बेटा मरक़ुस भी। 14 एक दूसरे को मुहब्बत का बोसा देना।

आप सबकी जो मसीह में हैं सलामती हो।

पतरस का दूसरा ख़त

1 यह ख़त ईसा मसीह के ख़ादिम और रसूल
शमाऊन पतरस की तरफ़ से है।
मैं उन सबको लिख रहा हूँ जिन्हें हमारे ख़ुदा
और नजातदहिंदा ईसा मसीह की रास्तबाज़ी के
वसीले से वही बेशक़ीमत ईमान बख़्शा गया है जो
हमें भी मिला।
2 ख़ुदा करे कि आप उसे और हमारे ख़ुदावंद
ईसा को जानने में तरक़्क़ी करते करते कसरत से
फ़ज़ल और सलामती पाते जाएँ।

अल्लाह का बुलावा

3 अल्लाह ने अपनी इलाही क़ुदरत से हमें वह
सब कुछ अता किया है जो ख़ुदातरस ज़िंदगी
गुज़ारने के लिए ज़रूरी है। और हमें यह उसे जान
लेने से हासिल हुआ है। क्योंकि उसने हमें अपने
ज़ाती जलाल और क़ुदरत के ज़रीए बुलाया है।
4 इस जलाल और क़ुदरत से उसने हमें वह अज़ीम
और बेशक़ीमत चीज़ें दी हैं जिनका वादा उसने
किया था। क्योंकि वह चाहता था कि आप इनसे
दुनिया की बुरी ख़ाहिशात से पैदा होनेवाले फ़साद
से बचकर उस की इलाही ज़ात में शरीक हो
जाएँ। 5 यह सब कुछ पेशे-नज़र रखकर पूरी लग्न
से कोशिश करें कि आपके ईमान से अख़लाक़
पैदा हो जाए, अख़लाक़ से इल्म, 6 इल्म
से ज़ब्ते-नफ़स, ज़ब्ते-नफ़स से साबितक़दमी,
साबितक़दमी से ख़ुदातरस ज़िंदगी, 7 ख़ुदातरस
ज़िंदगी से बरादराना शफ़क़त और बरादराना
शफ़क़त से सबके लिए मुहब्बत। 8 क्योंकि
जितना ही आप इन ख़ूबियों में बढ़ते जाएंगे उतना
ही यह आपको इससे महफ़ूज़ रखेंगी कि आप
हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह को जानने में सुस्त और
बेफल रहें। 9 लेकिन जिसमें यह ख़ूबियाँ नहीं हैं
उस की नज़र इतनी कमज़ोर है कि वह अंधा है।
वह भूल गया है कि उसे उसके गुज़रे गुनाहों से
पाक-साफ़ किया गया है।
10 चुनाँचे भाइयो, मज़ीद लग्न से अपने
बुलावे और चुनाव की तसदीक़ करने में कोशाँ
रहें। क्योंकि यह करने से आप गिर जाने से
बचेंगे 11 और अल्लाह बड़ी ख़ुशी से आपको
हमारे ख़ुदावंद और नजातदहिंदा ईसा मसीह की
बादशाही में दाख़िल होने की इजाज़त देगा।
12 इसलिए मैं हमेशा आपको इन बातों की
याद दिलाता रहूँगा, हालाँकि आप इनसे वाक़िफ़
हैं और मज़बूती से उस सच्चाई पर क़ायम हैं
जो आपको मिली है। 13 बल्कि मैं अपना फ़र्ज़
समझता हूँ कि जितनी और देर मैं जिस्म की
इस झोंपड़ी में रहता हूँ आपको इन बातों की
याद दिलाने से उभारता रहूँ। 14 क्योंकि मुझे
मालूम है कि अब मेरी यह झोंपड़ी जल्द ही ढा दी
जाएगी। हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह ने भी मुझ पर
यह ज़ाहिर किया था। 15 लेकिन मैं पूरी कोशिश
करूँगा कि मेरे कूच कर जाने के बाद भी आप हर
वक़्त इन बातों को याद रख सकें।

मसीह के जलाल के गवाह

16 क्योंकि जब हमने आपको अपने और
आपके ख़ुदावंद मसीह की क़ुदरत और आमद के
बारे में बताया तो हम चालाकी से घड़े क़िस्से-
कहानियों पर इनहिसार नहीं कर रहे थे बल्कि
हमने यह गवाहों की हैसियत से बताया। क्योंकि
हमने अपनी ही आँखों से उस की अज़मत
देखी थी। 17 हम मौजूद थे जब उसे ख़ुदा बाप
से इज़्ज़तो-जलाल मिला, जब एक आवाज़ ने
अल्लाह की पुरजलाल शान से आकर कहा, “यह
मेरा प्यारा फ़रज़ंद है जिससे मैं ख़ुश हूँ।” 18 जब
हम उसके साथ मुक़द्दस पहाड़ पर थे तो हमने ख़ुद
यह आवाज़ आसमान से आती सुनी।

19 इस तजरबे की बिना पर हमारा नबियों
के पैग़ाम पर एतमाद ज़्यादा मज़बूत है। आप
अच्छा करेंगे अगर इस पर ख़ूब ध्यान दें। क्योंकि
यह किसी तारीक जगह में रौशनी की मानिंद है
जो उस वक़्त तक चमकती रहेगी जब तक पौ
फटकर सुबह का सितारा आपके दिलों में तुलू न
हो जाए। 20 सबसे बढ़कर आपको यह समझने
की ज़रूरत है कि कलामे-मुक़द्दस की कोई भी
पेशगोई नबी की अपनी ही तफ़सीर से पैदा नहीं
होती। 21 क्योंकि कोई भी पेशगोई कभी भी
इनसान की तहरीक से वुजूद में नहीं आई बल्कि
पेशगोई करते वक़्त इनसानों ने रूहुल-क़ुद्स से
तहरीक पाकर अल्लाह की तरफ़ से बात की।

झूटे उस्ताद

2 लेकिन जिस तरह माज़ी में इसराईल क़ौम
में झूटे नबी भी थे, उसी तरह आपमें से
भी झूटे उस्ताद खड़े हो जाएंगे। यह ख़ुदा की
जमातों में मोहलक तालीमात फैलाएँगे बल्कि
अपने मालिक को जानने से इनकार भी करेंगे
जिसने उन्हें ख़रीद लिया था। ऐसी हरकतों से यह
जल्द ही अपने आप पर हलाकत लाएँगे। 2 बहुत-
से लोग उनकी ऐयाश हरकतों की पैरवी करेंगे,
और इस वजह से दूसरे सच्चाई की राह पर कुफ़्र
बकेंगे। 3 लालच के सबब से यह उस्ताद आपको
फ़रज़ी कहानियाँ सुनाकर आपकी लूट-खसोट
करेंगे। लेकिन अल्लाह ने बड़ी देर से उन्हें मुजरिम
ठहराया, और उसका फ़ैसला सुस्तरफ़्तार नहीं
है। हाँ, उनका मुंसिफ़ ऊँघ नहीं रहा बल्कि उन्हें
हलाक करने के लिए तैयार खड़ा है।

4 देखें, अल्लाह ने उन फ़रिश्तों को बचने न
दिया जिन्होंने गुनाह किया बल्कि उन्हें तारीकी
की ज़ंजीरों में बाँधकर जहन्नुम में डाल दिया जहाँ
वह अदालत के दिन तक महफ़ूज़ रहेंगे। 5 इसी
तरह उसने क़दीम दुनिया को बचने न दिया बल्कि
उसके बेदीन बाशिंदों पर सैलाब को आने दिया।
उसने सिर्फ़ रास्तबाज़ी के पैग़ंबर नूह को सात
और जानों समेत बचाया। 6 और उसने सदूम और
अमूरा के शहरों को मुजरिम क़रार देकर राख कर
दिया। यों अल्लाह ने उन्हें इबरत बनाकर दिखाया
कि बेदीनों के साथ क्या कुछ किया जाएगा।
7 साथ साथ उसने लूत को बचाया जो रास्तबाज़
था और बेउसूल लोगों के गंदे चाल-चलन देख
देखकर पिसता रहा। 8 क्योंकि यह रास्तबाज़
आदमी उनके दरमियान बसता था, और उस की
रास्तबाज़ जान रोज़ बरोज़ उनकी शरीर हरकतें
देख और सुनकर सख़्त अज़ाब में फँसी रही। 9 यों
ज़ाहिर है कि रब दीनदार लोगों को आज़माइश
से बचाना और बेदीनों को अदालत के दिन तक
सज़ा के तहत रखना जानता है, 10 ख़ासकर उन्हें
जो अपने जिस्म की गंदी ख़ाहिशात के पीछे लगे
रहते और ख़ुदावंद के इख़्तियार को हक़ीर जानते
हैं।

यह लोग गुस्ताख़ और मग़रूर हैं और जलाली
हस्तियों पर कुफ़्र बकने से नहीं डरते। 11 इसके
मुक़ाबले में फ़रिश्ते भी जो कहीं ज़्यादा ताक़तवर
और क़वी हैं रब के हुज़ूर ऐसी हस्तियों पर बुहतान
और इलज़ामात लगाने की जुर्रत नहीं करते।
12 लेकिन यह झूटे उस्ताद बेअक़्ल जानवरों की
मानिंद हैं, जो फ़ितरी तौर पर इसलिए पैदा हुए
हैं कि उन्हें पकड़ा और ख़त्म किया जाए। जो
कुछ वह नहीं समझते उस पर वह कुफ़्र बकते
हैं। और जंगली जानवरों की तरह वह भी हलाक

हो जाएंगे। 13 यों जो नुक़सान उन्होंने दूसरों को
पहुँचाया वही उन्हें ख़ुद भुगतना पड़ेगा। उनके
नज़दीक लुत्फ़ उठाने से मुराद यह है कि दिन
के वक़्त खुलकर ऐश करें। वह दाग़ और धब्बे
हैं जो आपकी ज़ियाफ़तों में शरीक होकर अपनी
दग़ाबाज़ियों की रंगरलियाँ मनाते हैं। 14 उनकी
आँखें हर वक़्त किसी बदकार औरत से ज़िना
करने की तलाश में रहती हैं और गुनाह करने से
कभी नहीं रुकतीं। वह कमज़ोर लोगों को ग़लत
काम करने के लिए उकसाते और लालच करने
में माहिर हैं। उन पर अल्लाह की लानत! 15 वह
सहीह राह से हटकर आवारा फिर रहे और बिलाम
बिन बओर के नक़्शे-क़दम पर चल रहे हैं, क्योंकि
बिलाम ने पैसों के लालच में ग़लत काम किया।
16 लेकिन गधी ने उसे इस गुनाह के सबब से
डाँटा। इस जानवर ने जो बोलने के क़ाबिल नहीं
था इनसान की-सी आवाज़ में बात की और नबी
को उस की दीवानगी से रोक दिया।

17 यह लोग सूखे हुए चश्मे और आँधी से
धकेले हुए बादल हैं। इनकी तक़दीर अंधेरे का
तारीकतरीन हिस्सा है। 18 यह मग़रूर बातें करते
हैं जिनके पीछे कुछ नहीं है और ग़ैरअख़लाक़ी
जिस्मानी शहवतों से ऐसे लोगों को उकसाते हैं
जो हाल ही में धोके की ज़िंदगी गुज़ारनेवालों में
से बच निकले हैं। 19 यह उन्हें आज़ाद करने का
वादा करते हैं जबकि ख़ुद बदकारी के ग़ुलाम हैं।
क्योंकि इनसान उसी का ग़ुलाम है जो उस पर
ग़ालिब आ गया है। 20 और जो हमारे ख़ुदावंद
और नजातदहिंदा ईसा मसीह को जान लेने से इस
दुनिया की आलूदगी से बच निकलते हैं, लेकिन
बाद में एक बार फिर इसमें फँसकर मग़लूब हो
जाते हैं उनका अंजाम पहले की निसबत ज़्यादा
बुरा हो जाता है। 21 हाँ, जिन लोगों ने रास्तबाज़ी
की राह को जान लिया, लेकिन बाद में उस
मुक़द्दस हुक्म से मुँह फेर लिया जो उनके हवाले
किया गया था, उनके लिए बेहतर होता कि वह
इस राह से कभी वाक़िफ़ न होते। 22 उन पर यह
मुहावरा सादिक़ आता है कि “कुत्ता अपनी क़ै
के पास वापस आ जाता है।” और यह भी कि
“सुअरनी नहाने के बाद दुबारा कीचड़ में लोटने
लगती है।”

ख़ुदावंद की आमद का वादा

3 अज़ीज़ो, यह अब दूसरा ख़त है जो मैंने
आपको लिख दिया है। दोनों ख़तों में
मैंने कई बातों की याद दिलाकर आपके ज़हनों
में पाक सोच उभारने की कोशिश की। 2 मैं
चाहता हूँ कि आप वह कुछ याद रखें जिसकी
पेशगोई मुक़द्दस नबियों ने की थी और साथ साथ
हमारे ख़ुदावंद और नजातदहिंदा का वह हुक्म भी
जो आपको अपने रसूलों की मारिफ़त मिला।
3 अव्वल आपको यह बात समझने की ज़रूरत
है कि इन आख़िरी दिनों में ऐसे लोग आएँगे जो
मज़ाक़ उड़ाकर अपनी शहवतों के क़ब्ज़े में रहेंगे।
4 वह पूछेंगे, “ईसा ने आने का वादा तो किया,
लेकिन वह कहाँ है? हमारे बापदादा तो मर चुके
हैं, और दुनिया की तख़लीक़ से लेकर आज तक
सब कुछ वैसे का वैसा ही है।” 5 लेकिन यह लोग
नज़रंदाज़ करते हैं कि क़दीम ज़माने में अल्लाह के
हुक्म पर आसमानों की तख़लीक़ हुई और ज़मीन
पानी में से और पानी के ज़रीए वुजूद में आई।
6 इसी पानी के ज़रीए क़दीम ज़माने की दुनिया पर
सैलाब आया और सब कुछ तबाह हुआ। 7 और
अल्लाह के इसी हुक्म ने मौजूदा आसमान और
ज़मीन को आग के लिए महफ़ूज़ कर रखा है,
उस दिन के लिए जब बेदीन लोगों की अदालत
की जाएगी और वह हलाक हो जाएंगे।

8 लेकिन मेरे अज़ीज़ो, एक बात आपसे
पोशीदा न रहे। ख़ुदावंद के नज़दीक एक दिन
हज़ार साल के बराबर है और हज़ार साल एक
दिन के बराबर। 9 ख़ुदावंद अपना वादा पूरा करने
में देर नहीं करता जिस तरह कुछ लोग समझते
हैं बल्कि वह तो आपकी ख़ातिर सब्र कर रहा है।
क्योंकि वह नहीं चाहता कि कोई हलाक हो जाए
बल्कि यह कि सब तौबा की नौबत तक पहुँचें।

10 लेकिन ख़ुदावंद का दिन चोर की तरह
आएगा। आसमान बड़े शोर के साथ ख़त्म हो
जाएंगे, अजराम-फ़लकी आग में पिघल जाएंगे
और ज़मीन उसके कामों समेत ज़ाहिर होकर
अदालत में पेश की जाएगी। **11** अब सोचें,
अगर सब कुछ इस तरह ख़त्म हो जाएगा तो
फिर आप किस क़िस्म के लोग होने चाहिएँ?
आपको मुक़द्दस और ख़ुदातरस ज़िंदगी गुज़ारते
हुए **12** अल्लाह के दिन की राह देखनी चाहिए।
हाँ, आपको यह कोशिश करनी चाहिए कि वह
दिन जल्दी आए जब आसमान जल जाएंगे
और अजराम-फ़लकी आग में पिघल जाएंगे।
13 लेकिन हम उन नए आसमानों और नई ज़मीन
के इंतज़ार में हैं जिनका वादा अल्लाह ने किया
है। और वहाँ रास्ती सुकूनत करेगी।

14 चुनाँचे अज़ीज़ो, चूँकि आप इस इंतज़ार में
हैं इसलिए पूरी लग्न के साथ कोशाँ रहें कि आप
अल्लाह के नज़दीक बेदाग़ और बेइलज़ाम ठहरें
और आपकी उसके साथ सुलह हो। **15** याद रखें
कि हमारे ख़ुदावंद का सब्र लोगों को नजात पाने
का मौक़ा देता है। हमारे अज़ीज़ भाई पौलुस ने
भी उस हिकमत के मुताबिक़ जो अल्लाह ने उसे
अता की है आपको यही कुछ लिखा है। **16** वह
यही कुछ अपने तमाम ख़तों में लिखता है जब
वह इस मज़मून का ज़िक्र करता है। उसके ख़तों
में कुछ ऐसी बातें हैं जो समझने में मुश्किल हैं और
जिन्हें जाहिल और कमज़ोर लोग तोड़-मरोड़कर
बयान करते हैं, बिलकुल उसी तरह जिस तरह वह
बाक़ी सहीफ़ों के साथ भी करते हैं। लेकिन इससे
वह अपने आपको ही हलाक कर रहे हैं।

17 मेरे अज़ीज़ो, मैं आपको वक़्त से पहले इन
बातों से आगाह कर रहा हूँ। इसलिए ख़बरदार
रहें ताकि बेउसूल लोगों की ग़लत सोच आपको
बहकाकर आपको महफ़ूज़ मक़ाम से हटा न दे।
18 इसके बजाए हमारे ख़ुदावंद और नजातदहिंदा
ईसा मसीह के फ़ज़ल और इल्म में तरक़्क़ी करते
रहें। उसे अब और अबद तक जलाल हासिल होता
रहे! आमीन।

यूहन्ना का पहला ख़त

ज़िंदगी का कलाम

1 हम आपको उस की मुनादी करते हैं जो
इब्तिदा से था, जिसे हमने अपने कानों से
सुना, अपनी आँखों से देखा, जिसका मुशाहदा
हमने किया और जिसे हमने अपने हाथों से
छुआ। वही ज़िंदगी का कलाम है। 2 वह जो ख़ुद
ज़िंदगी था ज़ाहिर हुआ, हमने उसे देखा। और अब
हम गवाही देकर आपको उस अबदी ज़िंदगी की
मुनादी करते हैं जो ख़ुदा बाप के पास थी और हम
पर ज़ाहिर हुई है। 3 हम आपको वह कुछ सुनाते
हैं जो हमने ख़ुद देख और सुन लिया है ताकि
आप भी हमारी रिफ़ाक़त में शरीक हो जाएँ। और
हमारी रिफ़ाक़त ख़ुदा बाप और उसके फ़रज़ंद
ईसा मसीह के साथ है। 4 हम यह इसलिए लिख
रहे हैं ताकि हमारी ख़ुशी पूरी हो जाए।

अल्लाह नूर है

5 जो पैग़ाम हमने उससे सुना और आपको
सुना रहे हैं वह यह है, अल्लाह नूर है और उसमें
तारीकी है ही नहीं। 6 जब हम तारीकी में चलते हुए
अल्लाह के साथ रिफ़ाक़त रखने का दावा करते
हैं तो हम झूट बोल रहे और सच्चाई के मुताबिक़
ज़िंदगी नहीं गुज़ार रहे। 7 लेकिन जब हम नूर में
चलते हैं, बिलकुल उसी तरह जिस तरह अल्लाह
नूर में है, तो फिर हम एक दूसरे के साथ रिफ़ाक़त
रखते हैं और उसके फ़रज़ंद ईसा का ख़ून हमें
तमाम गुनाहों से पाक-साफ़ कर देता है।

8 अगर हम गुनाह से पाक होने का दावा करें
तो हम अपने आपको फ़रेब देते हैं और हममें
सच्चाई नहीं है। 9 लेकिन अगर हम अपने गुनाहों
का इक़रार करें तो वह वफ़ादार और रास्त साबित
होगा। वह हमारे गुनाहों को मुआफ़ करके हमें
तमाम नारास्ती से पाक-साफ़ करेगा। 10 अगर
हम दावा करें कि हमने गुनाह नहीं किया तो हम
उसे झूटा क़रार देते हैं और उसका कलाम हमारे
अंदर नहीं है।

मसीह हमारी शफ़ाअत करता है

2 मेरे बच्चो, मैं आपको यह इसलिए लिख
रहा हूँ कि आप गुनाह न करें। लेकिन अगर
कोई गुनाह करे तो एक है जो ख़ुदा बाप के सामने
हमारी शफ़ाअत करता है, ईसा मसीह जो रास्त
है। 2 वही हमारे गुनाहों का कफ़्फ़ारा देनेवाली
क़ुरबानी है, और न सिर्फ़ हमारे गुनाहों का बल्कि
पूरी दुनिया के गुनाहों का भी।

3 इससे हमें पता चलता है कि हमने उसे जान
लिया है, जब हम उसके अहकाम पर अमल करते
हैं। 4 जो कहता है, “मैं उसे जानता हूँ” लेकिन
उसके अहकाम पर अमल नहीं करता वह झूटा है
और सच्चाई उसमें नहीं है। 5 लेकिन जो उसके
कलाम की पैरवी करता है उसमें अल्लाह की
मुहब्बत हक़ीक़तन तकमील तक पहुँच गई है।
इससे हमें पता चलता है कि हम उसमें हैं। 6 जो
कहता है कि वह उसमें क़ायम है उसके लिए

लाज़िम है कि वह यों चले जिस तरह ईसा चलता था।

एक नया हुक्म

7 अज़ीज़ो, मैं आपको कोई नया हुक्म नहीं लिख रहा, बल्कि वही पुराना हुक्म जो आपको शुरू से मिला है। यह पुराना हुक्म वही पैग़ाम है जो आपने सुन लिया है। 8 लेकिन दूसरी तरफ़ से यह हुक्म नया भी है, और इसकी सच्चाई मसीह और आपमें ज़ाहिर हुई है। क्योंकि तारीकी ख़त्म होनेवाली है और हक़ीक़ी रौशनी चमकने लग गई है।

9 जो नूर में होने का दावा करके अपने भाई से नफ़रत करता है वह अब तक तारीकी में है। 10 जो अपने भाई से मुहब्बत रखता है वह नूर में रहता है और उसमें कोई भी चीज़ नहीं पाई जाती जो ठोकर का बाइस बन सके। 11 लेकिन जो अपने भाई से नफ़रत करता है वह तारीकी ही में है और अंधेरे में चलता-फिरता है। उसको यह नहीं मालूम कि वह कहाँ जा रहा है, क्योंकि तारीकी ने उसे अंधा कर रखा है।

12 प्यारे बच्चो, मैं आपको इसलिए लिख रहा हूँ कि आपके गुनाहों को उसके नाम की ख़ातिर मुआफ़ कर दिया गया है। 13 वालिदो, मैं आपको इसलिए लिख रहा हूँ कि आपने उसे जान लिया है जो इब्तिदा ही से है। जवान मर्दो, मैं आपको इसलिए लिख रहा हूँ कि आप इबलीस पर ग़ालिब आ गए हैं। बच्चो, मैं आपको इसलिए लिख रहा हूँ कि आपने बाप को जान लिया है। 14 वालिदो, मैं आपको इसलिए लिख रहा हूँ कि आपने उसे जान लिया है जो इब्तिदा ही से है। जवान मर्दो, मैं आपको इसलिए लिख रहा हूँ कि आप मज़बूत हैं। अल्लाह का कलाम आपमें बसता है और आप इबलीस पर ग़ालिब आ गए हैं।

15 दुनिया को प्यार मत करना, न किसी चीज़ को जो दुनिया में है। अगर कोई दुनिया को प्यार करे तो ख़ुदा बाप की मुहब्बत उसमें नहीं है।
16 क्योंकि जो भी चीज़ दुनिया में है वह बाप की तरफ़ से नहीं बल्कि दुनिया की तरफ़ से है, ख़ाह वह जिस्म की बुरी ख़ाहिशात, आँखों का लालच या अपनी मिलकियत पर फ़ख़र हो। 17 दुनिया और उस की वह चीज़ें जो इनसान चाहता है ख़त्म हो रही हैं, लेकिन जो अल्लाह की मरज़ी पूरी करता है वह अबद तक जीता रहेगा।

मसीह का दुश्मन

18 बच्चो, अब आख़िरी घड़ी आ पहुँची है। आपने ख़ुद सुन लिया है कि मुख़ालिफ़े-मसीह आ रहा है, और हक़ीक़तन बहुत-से ऐसे मुख़ालिफ़े-मसीह आ चुके हैं। इससे हमें पता चलता है कि आख़िरी घड़ी आ गई है। 19 यह लोग हममें से निकले तो हैं, लेकिन हक़ीक़त में हममें से नहीं थे। क्योंकि अगर वह हममें से होते तो वह हमारे साथ ही रहते। लेकिन हमें छोड़ने से ज़ाहिर हुआ कि सब हममें से नहीं हैं।

20 लेकिन आप फ़रक़ हैं। आपको उससे जो क़ुद्दूस है रूह का मसह मिल गया है, और आप पूरी सच्चाई को जानते हैं। 21 मैं आपको इसलिए नहीं लिख रहा कि आप सच्चाई को नहीं जानते बल्कि इसलिए कि आप सच्चाई जानते हैं और कि कोई भी झूट सच्चाई की तरफ़ से नहीं आ सकता।

22 कौन झूटा है? वह जो ईसा के मसीह होने का इनकार करता है। मुख़ालिफ़े-मसीह ऐसा शख़्स है। वह बाप और फ़रज़ंद का इनकार करता है। 23 जो फ़रज़ंद का इनकार करता है उसके पास बाप भी नहीं है, और जो फ़रज़ंद का इक़रार करता है उसके पास बाप भी है।

24 चुनाँचे लाज़िम है कि जो कुछ आपने इब्तिदा से सुना वह आपमें रहे। अगर वह आपमें रहे तो आप भी फ़रज़ंद और बाप में रहेंगे। 25 और जो वादा उसने हमसे किया है वह है अबदी ज़िंदगी।

26 मैं आपको यह उनके बारे में लिख रहा हूँ जो आपको सहीह राह से हटाने की कोशिश कर रहे हैं। 27 लेकिन आपको उससे रूह का मसह मिल गया है। वह आपके अंदर बसता है, इसलिए

आपको इसकी ज़रूरत ही नहीं कि कोई आपको तालीम दे। क्योंकि मसीह का रूह आपको सब बातों के बारे में तालीम देता है और जो कुछ भी वह सिखाता है वह सच है, झूट नहीं। चुनाँचे जिस तरह उसने आपको तालीम दी है, उसी तरह मसीह में रहें।

28 और अब प्यारे बच्चो, उसमें क़ायम रहें ताकि उसके ज़ाहिर होने पर हम पूरे एतमाद के साथ उसके सामने खड़े हो सकें और उस की आमद पर शरमिंदा न होना पड़े। 29 अगर आप
जानते हैं कि मसीह रास्तबाज़ है तो आप यह भी जानते हैं कि जो भी रास्त काम करता है वह अल्लाह से पैदा होकर उसका फ़रज़ंद बन गया है।

अल्लाह के फ़रज़ंद

3 ध्यान दें कि बाप ने हमसे कितनी मुहब्बत की है, यहाँ तक कि हम अल्लाह के फ़रज़ंद कहलाते हैं। और हम वाक़ई हैं भी। इसलिए दुनिया हमें नहीं जानती। वह तो उसे
भी नहीं जानती। 2 अज़ीज़ो, अब हम अल्लाह के
फ़रज़ंद हैं, और जो कुछ हम होंगे वह अभी तक ज़ाहिर नहीं हुआ है। लेकिन इतना हम जानते हैं कि जब वह ज़ाहिर हो जाएगा तो हम उस की मानिंद होंगे। क्योंकि हम उसका मुशाहदा वैसे ही
करेंगे जैसा वह है। 3 जो भी मसीह में यह उम्मीद
रखता है वह अपने आपको पाक-साफ़ रखता है, वैसे ही जैसा मसीह ख़ुद है।

4 जो गुनाह करता है वह शरीअत की ख़िलाफ़वरज़ी करता है। हाँ, गुनाह शरीअत की
ख़िलाफ़वरज़ी ही है। 5 लेकिन आप जानते हैं कि
ईसा हमारे गुनाहों को उठा ले जाने के लिए ज़ाहिर
हुआ। और उसमें गुनाह नहीं है। 6 जो उसमें क़ायम
रहता है वह गुनाह नहीं करता। और जो गुनाह करता रहता है न तो उसने उसे देखा है, न उसे जाना है।

7 प्यारे बच्चो, किसी को इजाज़त न दें कि वह आपको सहीह राह से हटा दे। जो रास्त काम करता है वह रास्तबाज़, हाँ मसीह जैसा रास्तबाज़
है। 8 जो गुनाह करता है वह इबलीस से है, क्योंकि
इबलीस शुरू ही से गुनाह करता आया है। अल्लाह का फ़रज़ंद इसी लिए ज़ाहिर हुआ कि इबलीस का काम तबाह करे।

9 जो भी अल्लाह से पैदा होकर उसका फ़रज़ंद बन गया है वह गुनाह नहीं करेगा, क्योंकि अल्लाह की फ़ितरत उसमें रहती है। वह गुनाह कर ही नहीं सकता क्योंकि वह अल्लाह से पैदा होकर
उसका फ़रज़ंद बन गया है। 10 इससे पता चलता
है कि अल्लाह के फ़रज़ंद कौन हैं और इबलीस के फ़रज़ंद कौन : जो रास्त काम नहीं करता, न अपने भाई से मुहब्बत रखता है, वह अल्लाह का फ़रज़ंद नहीं है।

एक दूसरे से मुहब्बत रखना

11 क्योंकि यही वह पैग़ाम है जो आपने शुरू से सुन रखा है, कि हमें एक दूसरे से मुहब्बत रखना
है। 12 क़ाबील की तरह न हों, जो इबलीस का
था और जिसने अपने भाई को क़त्ल किया। और उसने उसको क़त्ल क्यों किया? इसलिए कि उसका काम बुरा था जबकि भाई का काम रास्त था।

13 चुनाँचे भाइयो, जब दुनिया आपसे नफ़रत
करती है तो हैरान न हो जाएँ। 14 हम तो जानते
हैं कि हम मौत से निकलकर ज़िंदगी में दाख़िल हो गए हैं। हम यह इसलिए जानते हैं कि हम अपने भाइयों से मुहब्बत रखते हैं। जो मुहब्बत नहीं रखता वह अब तक मौत की हालत में है।
15 जो भी अपने भाई से नफ़रत रखता है वह
क़ातिल है। और आप जानते हैं कि जो क़ातिल
है उसमें अबदी ज़िंदगी नहीं रहती। 16 इससे ही
हमने मुहब्बत को जाना है कि मसीह ने हमारी ख़ातिर अपनी जान दे दी। और हमारा भी फ़र्ज़ यही है कि अपने भाइयों की ख़ातिर अपनी जान
दें। 17 अगर किसी के माली हालात ठीक हों और
वह अपने भाई की ज़रूरतमंद हालत को देखकर रहम न करे तो उसमें अल्लाह की मुहब्बत किस

तरह क़ायम रह सकती है? 18 प्यारे बच्चो, आएँ
हम अलफ़ाज़ और बातों से मुहब्बत का इज़हार
न करें बल्कि हमारी मुहब्बत अमली और हक़ीक़ी
हो।

अल्लाह के हुज़ूर पूरा एतमाद

19 ग़रज़ इससे हम जान लेते हैं कि हम सच्चाई
की तरफ़ से हैं, और यों ही हम अपने दिल को
तसल्ली दे सकते हैं 20 जब वह हमें मुजरिम
ठहराता है। क्योंकि अल्लाह हमारे दिल से बड़ा
है और सब कुछ जानता है। 21 और अज़ीज़ो,
जब हमारा दिल हमें मुजरिम नहीं ठहराता तो हम
पूरे एतमाद के साथ अल्लाह के हुज़ूर आ सकते
हैं 22 और वह कुछ पाते हैं जो उससे माँगते हैं।
क्योंकि हम उसके अहकाम पर चलते हैं और वही
कुछ करते हैं जो उसे पसंद है। 23 और उसका यह
हुक्म है कि हम उसके फ़रज़ंद ईसा मसीह के नाम
पर ईमान लाकर एक दूसरे से मुहब्बत रखें, जिस
तरह मसीह ने हमें हुक्म दिया था। 24 जो अल्लाह
के अहकाम के ताबे रहता है वह अल्लाह में बसता
है और अल्लाह उसमें। हम किस तरह जान लेते
हैं कि वह हममें बसता है? उस रूह के वसीले से
जो उसने हमें दिया है।

हक़ीक़ी और झूटी रूह

4 अज़ीज़ो, हर एक रूह का यक़ीन मत
करना बल्कि रूहों को परखकर मालूम करें
कि वह अल्लाह से हैं या नहीं, क्योंकि मुतअद्दिद
झूटे नबी दुनिया में निकले हैं। 2 इससे आप
अल्लाह के रूह को पहचान लेते हैं : जो भी रूह
इसका एतराफ़ करती है कि ईसा मसीह मुजस्सम
होकर आया है वह अल्लाह से है। 3 लेकिन जो
भी रूह ईसा के बारे में यह तसलीम न करे वह
अल्लाह से नहीं है। यह मुख़ालिफ़े-मसीह की रूह
है जिसके बारे में आपको ख़बर मिली कि वह
आनेवाला है बल्कि इस वक़्त दुनिया में आ चुका
है।

4 लेकिन आप प्यारे बच्चो, अल्लाह से हैं और
उन पर ग़ालिब आ गए हैं। क्योंकि जो आपमें है
वह उससे बड़ा है जो दुनिया में है। 5 यह लोग
दुनिया से हैं और इसलिए दुनिया की बातें करते
हैं और दुनिया उनकी सुनती है। 6 हम तो अल्लाह
से हैं और जो अल्लाह को जानता है वह हमारी
सुनता है। लेकिन जो अल्लाह से नहीं है वह हमारी
नहीं सुनता। यों हम सच्चाई की रूह और फ़रेब
देनेवाली रूह में इम्तियाज़ कर सकते हैं।

अल्लाह मुहब्बत है

7 अज़ीज़ो, आएँ हम एक दूसरे से मुहब्बत
रखें। क्योंकि मुहब्बत अल्लाह की तरफ़ से है,
और जो मुहब्बत रखता है वह अल्लाह से पैदा
होकर उसका फ़रज़ंद बन गया है और अल्लाह को
जानता है। 8 जो मुहब्बत नहीं रखता वह अल्लाह
को नहीं जानता, क्योंकि अल्लाह मुहब्बत है।
9 इसमें अल्लाह की मुहब्बत हमारे दरमियान
ज़ाहिर हुई कि उसने अपने इकलौते फ़रज़ंद को
दुनिया में भेज दिया ताकि हम उसके ज़रीए जिएँ।
10 यही मुहब्बत है, यह नहीं कि हमने अल्लाह से
मुहब्बत की बल्कि यह कि उसने हमसे मुहब्बत
करके अपने फ़रज़ंद को भेज दिया ताकि वह
हमारे गुनाहों को मिटाने के लिए कफ़्फ़ारा दे।
11 अज़ीज़ो, चूँकि अल्लाह ने हमें इतना प्यार
किया इसलिए लाज़िम है कि हम भी एक दूसरे
को प्यार करें। 12 किसी ने भी अल्लाह को नहीं
देखा। लेकिन जब हम एक दूसरे को प्यार करते
हैं तो अल्लाह हमारे अंदर बसता है और उस की
मुहब्बत हमारे अंदर तकमील पाती है।

13 हम किस तरह जान लेते हैं कि हम उसमें
रहते हैं और वह हममें? इस तरह कि उसने हमें
अपना रूह बख़्श दिया है। 14 और हमने यह बात
देख ली और इसकी गवाही देते हैं कि ख़ुदा बाप
ने अपने फ़रज़ंद को दुनिया का नजातदहिंदा बनने
के लिए भेज दिया है। 15 अगर कोई इक़रार करे
कि ईसा अल्लाह का फ़रज़ंद है तो अल्लाह उसमें
रहता है और वह अल्लाह में। 16 और ख़ुद हमने

वह मुहब्बत जान ली है और उस पर ईमान लाए
हैं जो अल्लाह हमसे रखता है।

अल्लाह मुहब्बत ही है। जो भी मुहब्बत में
क़ायम रहता है वह अल्लाह में रहता है और
अल्लाह उसमें। 17 इसी तरह मुहब्बत हमारे
दरमियान तकमील तक पहुँचती है, और यों हम
अदालत के दिन पूरे एतमाद के साथ खड़े हो
सकेंगे, क्योंकि जैसे वह है वैसे ही हम भी इस
दुनिया में हैं। 18 मुहब्बत में ख़ौफ़ नहीं होता बल्कि
कामिल मुहब्बत ख़ौफ़ को भगा देती है, क्योंकि
ख़ौफ़ के पीछे सज़ा का डर है। जो डरता है उस
की मुहब्बत तकमील तक नहीं पहुँची।

19 हम इसलिए मुहब्बत रखते हैं कि अल्लाह ने
पहले हमसे मुहब्बत रखी। 20 अगर कोई कहे, "मैं
अल्लाह से मुहब्बत रखता हूँ" लेकिन अपने भाई
से नफ़रत करे तो वह झूटा है। क्योंकि जो अपने
भाई से जिसे उसने देखा है मुहब्बत नहीं रखता
वह किस तरह अल्लाह से मुहब्बत रख सकता है
जिसे उसने नहीं देखा? 21 जो हुक्म मसीह ने हमें
दिया है वह यह है, जो अल्लाह से मुहब्बत रखता
है वह अपने भाई से भी मुहब्बत रखे।

दुनिया पर हमारी फ़तह

5 जो भी ईमान रखता है कि ईसा ही मसीह है
वह अल्लाह से पैदा होकर उसका फ़रज़ंद
बन गया है। और जो बाप से मुहब्बत रखता है
वह उसके फ़रज़ंद से भी मुहब्बत रखता है। 2 हम
किस तरह जान लेते हैं कि हम अल्लाह के फ़रज़ंद
से मुहब्बत रखते हैं? इससे कि हम अल्लाह
से मुहब्बत रखते और उसके अहकाम पर अमल
करते हैं। 3 क्योंकि अल्लाह से मुहब्बत से मुराद
यह है कि हम उसके अहकाम पर अमल करें।
और उसके अहकाम हमारे लिए बोझ का बाइस
नहीं हैं, 4 क्योंकि जो भी अल्लाह से पैदा होकर
उसका फ़रज़ंद बन गया है वह दुनिया पर ग़ालिब
आ जाता है। और हम यह फ़तह अपने ईमान
के ज़रीए पाते हैं। 5 कौन दुनिया पर ग़ालिब आ
सकता है? सिर्फ़ वह जो ईमान रखता है कि ईसा
अल्लाह का फ़रज़ंद है।

ईसा मसीह के बारे में गवाही

6 ईसा मसीह वह है जो अपने बपतिस्मे के पानी
और अपनी मौत के ख़ून के ज़रीए ज़ाहिर हुआ,
न सिर्फ़ पानी के ज़रीए बल्कि पानी और ख़ून
दोनों ही के ज़रीए। और रूहुल-क़ुद्स जो सच्चाई
है इसकी गवाही देता है। 7 क्योंकि इसके तीन
गवाह हैं, 8 रूहुल-क़ुद्स, पानी और ख़ून। और
तीनों एक ही बात की तसदीक़ करते हैं। 9 हम
तो इनसान की गवाही क़बूल करते हैं, लेकिन
अल्लाह की गवाही इससे कहीं अफ़ज़ल है। और
अल्लाह की गवाही यह है कि उसने अपने फ़रज़ंद
की तसदीक़ की है। 10 जो अल्लाह के फ़रज़ंद पर
ईमान रखता है उसके दिल में यह गवाही है। और
जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखता उसने उसे झूटा
क़रार दिया है। क्योंकि उसने वह गवाही न मानी
जो अल्लाह ने अपने फ़रज़ंद के बारे में दी। 11 और
गवाही यह है, अल्लाह ने हमें अबदी ज़िंदगी अता
की है, और यह ज़िंदगी उसके फ़रज़ंद में है।
12 जिसके पास फ़रज़ंद है उसके पास ज़िंदगी
है, और जिसके पास अल्लाह का फ़रज़ंद नहीं
है उसके पास ज़िंदगी भी नहीं है।

अबदी ज़िंदगी

13 मैं आपको जो अल्लाह के फ़रज़ंद के नाम
पर ईमान रखते हैं इसलिए लिख रहा हूँ कि आप
जान लें कि आपको अबदी ज़िंदगी हासिल है।
14 हमारा अल्लाह पर यह एतमाद है कि जब भी
हम उस की मरज़ी के मुताबिक़ कुछ माँगते हैं तो
वह हमारी सुनता है। 15 और चूँकि हम जानते हैं
कि जब माँगते हैं तो वह हमारी सुनता है इसलिए
हम यह इल्म भी रखते हैं कि हमें वह कुछ हासिल
भी है जो हमने उससे माँगा था।

16 अगर कोई अपने भाई को ऐसा गुनाह करते
देखे जिसका अंजाम मौत न हो तो वह दुआ
करे, और अल्लाह उसे ज़िंदगी अता करेगा। मैं

उन गुनाहों की बात कर रहा हूँ जिनका अंजाम
मौत नहीं। लेकिन एक ऐसा गुनाह भी है जिसका
अंजाम मौत है। मैं नहीं कह रहा कि ऐसे शख़्स
के लिए दुआ की जाए जिससे ऐसा गुनाह सरज़द
हुआ हो। 17 हर नारास्त हरकत गुनाह है, लेकिन
हर गुनाह का अंजाम मौत नहीं होता।

18 हम जानते हैं कि जो अल्लाह से पैदा होकर
उसका फ़रज़ंद बन गया है वह गुनाह करता नहीं
रहता, क्योंकि अल्लाह का फ़रज़ंद ऐसे शख़्स को
महफ़ूज़ रखता है और इबलीस उसे नुक़सान नहीं
पहुँचा सकता।

19 हम जानते हैं कि हम अल्लाह के फ़रज़ंद हैं
और कि तमाम दुनिया इबलीस के क़ब्ज़े में है।

20 हम जानते हैं कि अल्लाह का फ़रज़ंद आ
गया है और हमें समझ अता की है ताकि हम
उसे जान लें जो हक़ीक़ी है। और हम उसमें हैं
जो हक़ीक़ी है यानी उसके फ़रज़ंद ईसा मसीह
में। वही हक़ीक़ी ख़ुदा और अबदी ज़िंदगी है।

21 प्यारे बच्चो, अपने आपको बुतों से महफ़ूज़
रखें!

यूहन्ना का दूसरा ख़त

1 यह ख़त बुज़ुर्ग यूहन्ना की तरफ़ से है।
मैं चुनीदा ख़ातून और उसके बच्चों को लिख रहा
हूँ जिन्हें मैं सच्चाई से प्यार करता हूँ, और न सिर्फ़
मैं बल्कि सब जो सच्चाई को जानते हैं। 2 क्योंकि
सच्चाई हममें रहती है और अबद तक हमारे साथ
रहेगी।

3 ख़ुदा बाप और बाप का फ़रज़ंद ईसा मसीह
हमें फ़ज़्ल, रहम और सलामती अता करे। और
यह चीज़ें सच्चाई और मुहब्बत की रूह में हमें
हासिल हों।

सच्चाई और मुहब्बत

4 मैं निहायत ही ख़ुश हुआ कि मैंने आपके बच्चों
में से बाज़ ऐसे पाए जो उसी तरह सच्चाई में चलते
हैं जिस तरह ख़ुदा बाप ने हमें हुक्म दिया था।
5 और अब अज़ीज़ ख़ातून, मैं आपसे दरख़ास्त
करता हूँ कि आएँ, हम सब एक दूसरे से मुहब्बत
रखें। यह कोई नया हुक्म नहीं है जो मैं आपको
लिख रहा हूँ बल्कि वही जो हमें शुरू ही से मिला
है। 6 मुहब्बत का मतलब यह है कि हम उसके
अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारें। जिस तरह
आपने शुरू ही से सुना है, उसका हुक्म यह है कि
आप मुहब्बत की रूह में चलें।

7 क्योंकि बहुत-से ऐसे लोग दुनिया में निकल
खड़े हुए हैं जो आपको सहीह राह से हटाने की
कोशिश में लगे रहते हैं। यह लोग नहीं मानते कि
ईसा मसीह मुजस्सम होकर आया है। हर ऐसा
शख़्स फ़रेब देनेवाला और मुख़ालिफ़े-मसीह है।
8 चुनाँचे ख़बरदार रहें। ऐसा न हो कि आपने जो
कुछ मेहनत करके हासिल किया है वह जाता रहे
बल्कि ख़ुदा करे कि आपको इसका पूरा अज्र मिल
जाए।

9 जो भी मसीह की तालीम पर क़ायम नहीं
रहता बल्कि इससे आगे निकल जाता है उसके
पास अल्लाह नहीं। जो मसीह की तालीम पर
क़ायम रहता है उसके पास बाप भी है और फ़रज़ंद
भी। 10 चुनाँचे अगर कोई आपके पास आकर यह
तालीम पेश नहीं करता तो न उसे अपने घरों में
आने दें, न उसको सलाम करें। 11 क्योंकि जो
उसके लिए सलामती की दुआ करता है वह उसके
शरीर कामों में शरीक हो जाता है।

आख़िरी बातें

12 मैं आपको बहुत कुछ बताना चाहता हूँ,
लेकिन काग़ज़ और स्याही के ज़रीए नहीं। इसके
बजाए मैं आपसे मिलने और आपके रूबरू बात
करने की उम्मीद रखता हूँ। फिर हमारी ख़ुशी
मुकम्मल हो जाएगी।

13 आपकी चुनीदा बहन के बच्चे आपको
सलाम कहते हैं।

यूहन्ना का तीसरा ख़त

1 यह ख़त बुज़ुर्ग यूहन्ना की तरफ़ से है।
मैं अपने अज़ीज़ गयुस को लिख रहा हूँ जिसे मैं
सच्चाई से प्यार करता हूँ।
2 मेरे अज़ीज़, मेरी दुआ है कि आपका हाल
हर तरह से ठीक हो और आप जिस्मानी तौर पर
उतने ही तनदुरुस्त हों जितने आप रूहानी लिहाज़
से हैं। 3 क्योंकि मैं निहायत ख़ुश हुआ जब भाइयों
ने आकर गवाही दी कि आप किस तरह सच्चाई
के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते हैं। और यक़ीनन
आप हमेशा सच्चाई के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते
हैं। 4 जब मैं सुनता हूँ कि मेरे बच्चे सच्चाई के
मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं तो यह मेरे लिए
सबसे ज़्यादा ख़ुशी का बाइस होता है।

गयुस की तारीफ़

5 मेरे अज़ीज़, जो कुछ आप भाइयों के लिए
कर रहे हैं उसमें आप वफ़ादारी दिखा रहे हैं,
हालाँकि वह आपके जाननेवाले नहीं हैं। 6 उन्होंने
ख़ुदा की जमात के सामने ही आपकी मुहब्बत
की गवाही दी है। मेहरबानी करके उनकी सफ़र के
लिए यों मदद करें कि अल्लाह ख़ुश हो। 7 क्योंकि
वह मसीह के नाम की ख़ातिर सफ़र के लिए
निकले हैं और ग़ैरईमानदारों से मदद नहीं लेते।
8 चुनाँचे यह हमारा फ़र्ज़ है कि हम ऐसे लोगों की
मेहमान-नवाज़ी करें, क्योंकि यों हम भी सच्चाई
के हमख़िदमत बन जाते हैं।

दियुतरिफ़ेस और देमेतरियुस

9 मैंने तो जमात को कुछ लिख दिया था,
लेकिन दियुतरिफ़ेस जो उनमें अव्वल होने की
ख़ाहिश रखता है हमें क़बूल नहीं करता। 10 चुनाँचे
मैं जब आऊँगा तो उसे उन बुरी हरकतों की याद
दिलाऊँगा जो वह कर रहा है, क्योंकि वह हमारे
ख़िलाफ़ बुरी बातें बक रहा है। और न सिर्फ़ यह
बल्कि वह भाइयों को ख़ुशआमदीद कहने से भी
इनकार करता है। जब दूसरे यह करना चाहते हैं
तो वह उन्हें रोककर जमात से निकाल देता है।
11 मेरे अज़ीज़, जो बुरा है उस की नक़ल मत
करना बल्कि उस की करना जो अच्छा है। जो
अच्छा काम करता है वह अल्लाह से है। लेकिन
जो बुरा काम करता है उसने अल्लाह को नहीं
देखा।
12 सब लोग देमेतरियुस की अच्छी गवाही देते
हैं बल्कि सच्चाई ख़ुद भी उस की अच्छी गवाही
देती है। हम भी इसके गवाह हैं, और आप जानते
हैं कि हमारी गवाही सच्ची है।

आख़िरी सलाम

13 मुझे आपको बहुत कुछ लिखना था, लेकिन
यह ऐसी बातें हैं जो मैं क़लम और स्याही के ज़रीए
आपको नहीं बता सकता। 14 मैं जल्द ही आपसे
मिलने की उम्मीद रखता हूँ। फिर हम रूबरू बात
करेंगे।

15 सलामती आपके साथ होती रहे।
यहाँ के दोस्त आपको सलाम कहते हैं। वहाँ के
हर दोस्त को शख़्सी तौर पर हमारा सलाम दें।

यहूदाह का आम ख़त

1 यह ख़त ईसा मसीह के ख़ादिम और याक़ूब
के भाई यहूदाह की तरफ़ से है।
मैं उन्हें लिख रहा हूँ जिन्हें बुलाया गया है, जो
ख़ुदा बाप में प्यारे हैं और ईसा मसीह के लिए
महफ़ूज़ रखे गए हैं।
2 अल्लाह आपको रहम, सलामती और
मुहब्बत कसरत से अता करे।

झूटे उस्ताद

3 अज़ीज़ो, गो मैं आपको उस नजात के बारे में
लिखने का बड़ा शौक़ रखता हूँ जिसमें हम सब
शरीक हैं, लेकिन अब मैं आपको एक और बात
के बारे में लिखना चाहता हूँ। मैं इसमें आपको
नसीहत करने की ज़रूरत महसूस करता हूँ कि
आप उस ईमान की ख़ातिर जिद्दो-जहद करें जो
एक ही बार सदा के लिए मुक़द्दसीन के सुपुर्द
कर दिया गया है। 4 क्योंकि कुछ लोग आपके
दरमियान घुस आए हैं जिन्हें बहुत अरसा पहले
मुजरिम ठहराया जा चुका है। उनके बारे में यह
लिखा गया है कि वह बेदीन हैं जो हमारे ख़ुदा के
फ़ज़्ल को तोड़-मरोड़कर ऐयाशी का बाइस बना
देते हैं और हमारे वाहिद आक़ा और ख़ुदावंद ईसा
मसीह का इनकार करते हैं।
5 गो आप यह सब कुछ जानते हैं, फिर भी मैं
आपको इसकी याद दिलाना चाहता हूँ कि अगरचे
ख़ुदावंद ने अपनी क़ौम को मिसर से निकालकर
बचा लिया था तो भी उसने बाद में उन्हें हलाक
कर दिया जो ईमान नहीं रखते थे। 6 उन फ़रिश्तों
को याद करें जो उस दायराए-इख़्तियार के अंदर
न रहे जो अल्लाह ने उनके लिए मुक़र्रर किया था
बल्कि जिन्होंने अपनी रिहाइशगाह को तर्क कर
दिया। उन्हें उसने तारीकी में महफ़ूज़ रखा है जहाँ
वह अबदी ज़ंजीरों में जकड़े हुए रोज़े-अज़ीम की
अदालत का इंतज़ार कर रहे हैं। 7 सदूम, अमूरा
और उनके इर्दगिर्द के शहरों को भी मत भूलना,
जिनके बाशिंदे इन फ़रिश्तों की तरह ज़िनाकारी
और ग़ैरफ़ितरी सोहबत के पीछे पड़े रहे। यह लोग
अबदी आग की सज़ा भुगतते हुए सबके लिए एक
इबरतनाक मिसाल हैं।
8 तो भी इन लोगों ने उनका-सा रवैया अपना
लिया है। अपने ख़ाबों की बिना पर वह अपने
बदनों को आलूदा कर लेते, ख़ुदावंद का इख़्तियार
रद्द करते और जलाली हस्तियों पर कुफ़्र बकते
हैं। 9 इनके मुक़ाबले में सरदार फ़रिश्ते मीकाएल
के रवय्ये पर ग़ौर करें। जब वह इबलीस से झगड़ते
वक़्त मूसा की लाश के बारे में बहस-मुबाहसा
कर रहा था तो उसने इबलीस पर कुफ़्र बकने
का फ़ैसला करने की जुर्रत न की बल्कि सिर्फ़
इतना ही कहा, “रब आपको डाँटे!” 10 लेकिन
यह लोग हर ऐसी बात के बारे में कुफ़्र बकते हैं
जो उनकी समझ में नहीं आती। और जो कुछ
वह फ़ितरी तौर पर बेसमझ जानवरों की तरह
समझते हैं वही उन्हें तबाह कर देता है। 11 उन
पर अफ़सोस! उन्होंने क़ाबील की राह इख़्तियार

की है। पैसों के लालच में उन्होंने अपने आपको पूरे तौर पर उस ग़लती के हवाले कर दिया है जो बिलाम ने की। वह क़ोरह की तरह बाग़ी होकर हलाक हुए हैं।
12 जब यह लोग ख़ुदावंद की मुहब्बत को याद करनेवाले रिफ़ाक़ती खानों में शरीक होते हैं तो रिफ़ाक़त के लिए धब्बे बन जाते हैं। यह डरे बग़ैर खाना खा खाकर उससे महज़ूज़ होते हैं। यह ऐसे चरवाहे हैं जो सिर्फ़ अपनी गल्लाबानी करते हैं। यह ऐसे बादल हैं जो हवाओं के ज़ोर से चलते तो हैं लेकिन बरसते नहीं। यह सर्दियों के मौसम में ऐसे दरख़्तों की मानिंद हैं जो दो लिहाज़ से मुरदा हैं। वह फल नहीं लाते और जड़ से उखड़े हुए हैं।
13 यह समुंदर की बेकाबू लहरों की मानिंद हैं जो अपनी शर्मनाक हरकतों की झाग उछालती हैं। यह आवारा सितारे हैं जिनके लिए अल्लाह ने सबसे गहरी तारीकी में एक दायमी जगह मख़सूस की है।

14 आदम के बाद सातवें आदमी हनूक ने इन लोगों के बारे में यह पेशगोई की, "देखो, ख़ुदावंद अपने बेशुमार मुक़द्दस फ़रिश्तों के साथ
15 सबकी अदालत करने आएगा। वह उन्हें उन तमाम बेदीन हरकतों के सबब से मुजरिम ठहराएगा जो उनसे सरज़द हुई हैं और उन तमाम सख़्त बातों की वजह से जो बेदीन गुनाहगारों ने उसके ख़िलाफ़ की हैं।"

16 यह लोग बुड़बुड़ाते और शिकायत करते रहते हैं। यह सिर्फ़ अपनी ज़ाती ख़ाहिशात पूरी करने के लिए ज़िंदगी गुज़ारते हैं। यह अपने बारे में शेख़ी मारते और अपने फ़ायदे के लिए दूसरों की ख़ुशामद करते हैं।

आगाही और हिदायात

17 लेकिन आप मेरे अज़ीज़ो, वह कुछ याद रखें जिसकी पेशगोई हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के रसूलों ने की थी।
18 उन्होंने आपसे कहा था, "आख़िरी दिनों में मज़ाक़ उड़ानेवाले होंगे जो अपनी बेदीन ख़ाहिशात पूरी करने के लिए ही ज़िंदगी गुज़ारेंगे।"
19 यह वह हैं जो पार्टीबाज़ी करते, जो दुनियावी सोच रखते हैं और जिनके पास रूहुल-क़ुद्स नहीं है।
20 लेकिन आप मेरे अज़ीज़ो, अपने आपको अपने मुक़द्दसतरीन ईमान की बुनियाद पर तामीर करें और रूहुल-क़ुद्स में दुआ करें।
21 अपने आपको अल्लाह की मुहब्बत में क़ायम रखें और इस इंतज़ार में रहें कि हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह का रहम आपको अबदी ज़िंदगी तक पहुँचाए।

22 उन पर रहम करें जो शक में पड़े हैं।
23 बाज़ को आग में से छीनकर बचाएँ और बाज़ पर रहम करें, लेकिन ख़ौफ़ के साथ। बल्कि उस शख़्स के लिबास से भी नफ़रत करें जो अपनी हरकतों से गुनाह से आलूदा हो गया है।

सताइश की दुआ

24 उस की तमजीद हो जो आपको ठोकर खाने से महफ़ूज़ रख सकता है और आपको अपने जलाल के सामने बेदाग़ और बड़ी ख़ुशी से मामूर करके खड़ा कर सकता है।
25 उस वाहिद ख़ुदा यानी हमारे नजातदहिंदा का जलाल हो। हाँ, हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के वसीले से उसे जलाल, अज़मत, क़ुदरत और इख़्तियार अज़ल से अब भी हो और अबद तक रहे। आमीन।

यूहन्ना आरिफ़ का मुकाशफ़ा

1 यह ईसा मसीह की तरफ़ से मुका-
शफ़ा है जो अल्लाह ने उसे अता किया
ताकि वह अपने ख़ादिमों को वह कुछ दिखाए
जिसे जल्द ही पेश आना है। उसने अपने फ़रिश्ते
को भेजकर यह मुकाशफ़ा अपने ख़ादिम यूहन्ना
तक पहुँचा दिया। 2 और जो कुछ भी यूहन्ना
ने देखा है उस की गवाही उसने दी है, ख़ाह
अल्लाह का कलाम हो या ईसा मसीह की गवाही।
3 मुबारक है वह जो इस नबुव्वत की तिलावत
करता है। हाँ, मुबारक हैं वह जो सुनकर अपने
दिलों में इस किताब में दर्ज बातें महफ़ूज़ रखते
हैं, क्योंकि यह जल्द ही पूरी हो जाएँगी।

सात जमातों को सलाम

4 यह ख़त यूहन्ना की तरफ़ से सूबा आसिया
की सात जमातों के लिए है।

आपको अल्लाह की तरफ़ से फ़ज़ल और
सलामती हासिल रहे, उस की तरफ़ से जो है, जो
था और जो आनेवाला है, उन सात रूहों की तरफ़
से जो उसके तख़्त के सामने होती हैं, 5 और ईसा
मसीह की तरफ़ से यानी उससे जो इन बातों का
वफ़ादार गवाह, मुरदों में से पहला जी उठनेवाला
और दुनिया के बादशाहों का सरदार है।

उस की तमजीद हो जो हमें प्यार करता है,
जिसने अपने ख़ून से हमें हमारे गुनाहों से ख़लासी
बख़्शी है 6 और जिसने हमें शाही इख़्तियार देकर
अपने ख़ुदा और बाप के इमाम बना दिया है। उसे
अज़ल से अबद तक जलाल और क़ुदरत हासिल
रहे! आमीन।

7 देखें, वह बादलों के साथ आ रहा है। हर एक
उसे देखेगा, वह भी जिन्होंने उसे छेदा था। और
दुनिया की तमाम क़ौमें उसे देखकर आहो-ज़ारी
करेंगी। हाँ, ऐसा ही हो! आमीन।

8 रब ख़ुदा फ़रमाता है, “मैं अव्वल और आख़िर
हूँ, वह जो है, जो था और जो आनेवाला है, यानी
क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा।”

मसीह की रोया

9 मैं यूहन्ना आपका भाई और शरीके-हाल हूँ।
मुझ पर भी आपकी तरह ज़ुल्म किया जा रहा
है। मैं आपके साथ अल्लाह की बादशाही में
शरीक हूँ और ईसा में आपके साथ साबितक़दम
रहता हूँ। मुझे अल्लाह का कलाम सुनाने और
ईसा के बारे में गवाही देने की वजह से इस
जज़ीरे में जो पतमुस कहलाता है छोड़ दिया गया।
10 रब के दिन यानी इतवार को मैं रूहुल-क़ुद्स
की गिरिफ़्त में आ गया और मैंने अपने पीछे
तुरम की-सी एक ऊँची आवाज़ सुनी। 11 उसने
कहा, “जो कुछ तू देख रहा है उसे एक किताब
में लिखकर उन सात जमातों को भेज देना जो
इफ़िसुस, स्मुरना, पिर्गमुन, थुआतीरा, सरदीस,
फ़िलदिलफ़िया और लौदीकिया में हैं।”

12 मैंने बोलनेवाले को देखने के लिए अपने
पीछे नज़र डाली तो सोने के सात शमादान देखे।
13 इन शमादानों के दरमियान कोई खड़ा था जो
इब्ने-आदम की मानिंद था। उसने पाँवों तक का
लंबा चोग़ा पहन रखा था और सीने पर सोने का
सीनाबंद बाँधा हुआ था। 14 उसका सर और बाल
ऊन या बर्फ़ जैसे सफ़ेद थे और उस की आँखें
आग के शोले की मानिंद थीं। 15 उसके पाँव भट्टे में
दमकते पीतल की मानिंद थे और उस की आवाज़
आबशार के शोर जैसी थी। 16 अपने दहने हाथ में
उसने सात सितारे थाम रखे थे और उसके मुँह
से एक तेज़ और दोधारी तलवार निकल रही थी।
उसका चेहरा पूरे ज़ोर से चमकनेवाले सूरज की
तरह चमक रहा था। 17 उसे देखते ही मैं उसके
पाँवों में गिर गया। मैं मुरदा-सा था। फिर उसने
अपना दहना हाथ मुझ पर रखकर कहा, “मत
डर। मैं अव्वल और आख़िर हूँ। 18 मैं वह हूँ जो
ज़िंदा है। मैं तो मर गया था लेकिन अब देख, मैं
अबद तक ज़िंदा हूँ। और मौत और पाताल की
कुंजियाँ मेरे हाथ में हैं। 19 चुनाँचे जो कुछ तूने
देखा है, जो अभी है और जो आइंदा होगा उसे
लिख दे। 20 मेरे दहने हाथ में सात सितारों और
सात शमादानों का पोशीदा मतलब यह है : यह
सात सितारे आसिया की सात जमातों के फ़रिश्ते
हैं, और यह सात शमादान यह सात जमातें हैं।

इफ़िसुस के लिए पैग़ाम

2 इफ़िसुस में मौजूद जमात के फ़रिश्ते को
यह लिख देना :
यह उसका फ़रमान है जो अपने दहने हाथ
में सात सितारे थामे रखता और सोने के सात
शमादानों के दरमियान चलता-फिरता है। 2 मैं तेरे
कामों को जानता हूँ, तेरी सख़्त मेहनत और तेरी
साबितक़दमी को। मैं जानता हूँ कि तू बुरे लोगों
को बरदाश्त नहीं कर सकता, कि तूने उनकी
पड़ताल की है जो रसूल होने का दावा करते
हैं, हालाँकि वह रसूल नहीं हैं। तुझे तो पता चल
गया है कि वह झूटे थे। 3 तू मेरे नाम की ख़ातिर
साबितक़दम रहा और बरदाश्त करते करते थका
नहीं। 4 लेकिन मुझे तुझसे यह शिकायत है, तू
मुझे उस तरह प्यार नहीं करता जिस तरह पहले
करता था। 5 अब ख़याल कर कि तू कहाँ से गिर
गया है। तौबा करके वह कुछ कर जो तू पहले
करता था, वरना मैं आकर तेरे शमादान को उस
की जगह से हटा दूँगा। 6 लेकिन यह बात तेरे हक़
में है, तू मेरी तरह नीकुलियों के कामों से नफ़रत
करता है।
7 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूहुल-क़ुद्स
जमातों को क्या कुछ बता रहा है।
जो ग़ालिब आएगा उसे मैं ज़िंदगी के दरख़्त
का फल खाने को दूँगा, उस दरख़्त का फल जो
अल्लाह के फ़िर्दौस में है।

स्मुरना के लिए पैग़ाम

8 स्मुरना में मौजूद जमात के फ़रिश्ते को यह
लिख देना : यह उसका फ़रमान है जो अव्वल
और आख़िर है, जो मर गया था और दुबारा ज़िंदा
हुआ। 9 मैं तेरी मुसीबत और ग़ुरबत को जानता हूँ।
लेकिन हक़ीक़त में तू दौलतमंद है। मैं उन लोगों
के बुहतान से वाक़िफ़ हूँ जो कहते हैं कि वह यहूदी
हैं हालाँकि हैं नहीं। असल में वह इबलीस की
जमात हैं। 10 जो कुछ तुझे झेलना पड़ेगा उससे
मत डरना। देख, इबलीस तुझे आज़माने के लिए
तुममें से बाज़ को जेल में डाल देगा, और दस दिन
तक तुझे ईज़ा पहुँचाई जाएगी। मौत तक वफ़ादार
रह तो मैं तुझे ज़िंदगी का ताज दूँगा।
11 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूहुल-
क़ुद्स जमातों को क्या कुछ बता रहा है।
जो ग़ालिब आएगा उसे दूसरी मौत से नुक़सान
नहीं पहुँचेगा।

पिर्गमुन के लिए पैग़ाम

12 पिर्गमुन में मौजूद जमात के फ़रिश्ते को यह
लिख देना :
यह उसका फ़रमान है जिसके पास दोधारी तेज़
तलवार है। 13 मैं जानता हूँ कि तू कहाँ रहता

है, वहाँ जहाँ इबलीस का तख़्त है। ताहम तू मेरे
नाम का वफ़ादार रहा है। तूने उन दिनों में भी
मुझ पर ईमान रखने का इनकार न किया जब
मेरा वफ़ादार गवाह अंतिपास तुम्हारे पास शहीद
हुआ, वहाँ जहाँ इबलीस बसता है। 14 लेकिन
मुझे तुझसे कई बातों की शिकायत है। तेरे पास
ऐसे लोग हैं जो बिलाम की तालीम की पैरवी
करते हैं। क्योंकि बिलाम ने बलक़ को सिखाया
कि वह किस तरह इसराईलियों को गुनाह करने
पर उकसा सकता है यानी बुतों को पेश की गई
क़ुरबानियाँ खाने और ज़िना करने से। 15 इसी
तरह तेरे पास भी ऐसे लोग हैं, जो नीकुलियों
की तालीम की पैरवी करते हैं। 16 अब तौबा कर!
वरना मैं जल्द ही तेरे पास आकर अपने मुँह की
तलवार से उनके साथ लड़ूँगा।

17 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूहुल-
क़ुद्स जमातों को क्या कुछ बता रहा है।

जो ग़ालिब आएगा उसे मैं पोशीदा मन में से दूँगा। मैं उसे एक सफ़ेद पत्थर भी दूँगा जिस पर एक नया नाम लिखा होगा, ऐसा नाम जो सिर्फ़ मिलनेवाले को मालूम होगा।

थुआतीरा के लिए पैग़ाम

18 थुआतीरा में मौजूद जमात के फ़रिश्ते को यह लिख देना :

यह अल्लाह के फ़रज़ंद का फ़रमान है जिसकी
आँखें आग के शोलों और पाँव दमकते पीतल
की मानिंद हैं। 19 मैं तेरे कामों को जानता हूँ
यानी तेरी मुहब्बत और ईमान, तेरी ख़िदमत और
साबितक़दमी, और यह कि इस वक़्त तू पहले की
निसबत कहीं ज़्यादा कर रहा है। 20 लेकिन मुझे
तुझसे यह शिकायत है, तू उस औरत ईज़बिल
को जो अपने आपको नबिया कहती है काम
करने देता है, हालाँकि यह अपनी तालीम से
मेरे ख़ादिमों को सहीह राह से दूर करके उन्हें
ज़िना करने और बुतों को पेश की गई क़ुरबानियाँ
खाने पर उकसाती है। 21 मैंने उसे काफ़ी देर से
तौबा करने का मौक़ा दिया है, लेकिन वह इसके
लिए तैयार नहीं है। 22 चुनाँचे मैं उसे यों मारूँगा
कि वह बिस्तर पर पड़ी रहेगी। और अगर वह
जो उसके साथ ज़िना कर रहे हैं अपनी ग़लत
हरकतों से तौबा न करें तो मैं उन्हें शदीद मुसीबत
में फँसाऊँगा। 23 हाँ, मैं उसके फ़रज़ंदों को मार
डालूँगा। फिर तमाम जमातें जान लेंगी कि मैं ही
ज़हनों और दिलों को परखता हूँ, और मैं ही तुममें
से हर एक को उसके कामों का बदला दूँगा।

24 लेकिन थुआतीरा की जमात के ऐसे लोग
भी हैं जो इस तालीम की पैरवी नहीं करते, और
जिन्होंने वह कुछ नहीं जाना जिसे इन लोगों ने
'इबलीस के गहरे भेद' का नाम दिया है। तुम्हें
मैं बताता हूँ कि मैं तुम पर कोई और बोझ नहीं
डालूँगा। 25 लेकिन इतना ज़रूर करो कि जो कुछ
तुम्हारे पास है उसे मेरे आने तक मज़बूती से
थामे रखना। 26 जो ग़ालिब आएगा और आख़िर
तक मेरे कामों पर क़ायम रहेगा उसे मैं क़ौमों पर
इख़्तियार दूँगा। 27 हाँ, वह लोहे के शाही असा से
उन पर हुकूमत करेगा, उन्हें मिट्टी के बरतनों की
तरह फोड़ डालेगा। 28 यानी उसे वही इख़्तियार
मिलेगा जो मुझे भी अपने बाप से मिला है। ऐसे
शख़्स को मैं सुबह का सितारा भी दूँगा।

29 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूहुल-
क़ुद्स जमातों को क्या कुछ बता रहा है।

सरदीस के लिए पैग़ाम

3 सरदीस में मौजूद जमात के फ़रिश्ते को यह लिख देना :

यह उसका फ़रमान है जो अल्लाह की सात
रूहों और सात सितारों को अपने हाथ में थामे
रखता है। मैं तेरे कामों को जानता हूँ। तू ज़िंदा
तो कहलाता है लेकिन है मुरदा। 2 जाग उठ! जो
बाक़ी रह गया है और मरनेवाला है उसे मज़बूत
कर। क्योंकि मैंने तेरे काम अपने ख़ुदा की नज़र
में मुकम्मल नहीं पाए। 3 चुनाँचे जो कुछ तुझे
मिला है और जो तूने सुना है उसे याद रखना।
उसे महफ़ूज़ रख और तौबा कर। अगर तू बेदार
न हो तो मैं चोर की तरह आऊँगा और तुझे

मालूम नहीं होगा कि मैं कब तुझ पर आन पड़ूँगा।
4 लेकिन सरदीस में तेरे कुछ ऐसे लोग हैं जिन्होंने
अपने लिबास आलूदा नहीं किए। वह सफ़ेद कपड़े
पहने हुए मेरे साथ चलें-फिरेंगे, क्योंकि वह इसके
लायक़ हैं। 5 जो ग़ालिब आएगा वह भी उनकी
तरह सफ़ेद कपड़े पहने हुए फिरेगा। मैं उसका
नाम किताबे-हयात से नहीं मिटाऊँगा बल्कि अपने
बाप और उसके फ़रिश्तों के सामने इक़रार करूँगा
कि यह मेरा है।

6 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूहुल-क़ुद्स
जमातों को क्या कुछ बता रहा है।

फ़िलदिलफ़िया के लिए पैग़ाम

7 फ़िलदिलफ़िया में मौजूद जमात के फ़रिश्ते
को यह लिख देना :

यह उसका फ़रमान है जो क़ुद्दूस और सच्चा है,
जिसके हाथ में दाऊद की चाबी है। जो कुछ वह
खोलता है उसे कोई बंद नहीं कर सकता, और
जो कुछ वह बंद कर देता है उसे कोई खोल नहीं
सकता। 8 मैं तेरे कामों को जानता हूँ। देख, मैंने
तेरे सामने एक ऐसा दरवाज़ा खोल रखा है जिसे
कोई बंद नहीं कर सकता। मुझे मालूम है कि तेरी
ताक़त कम है। लेकिन तूने मेरे कलाम को महफ़ूज़
रखा है और मेरे नाम का इनकार नहीं किया।
9 देख, जहाँ तक उनका ताल्लुक़ है जो इबलीस
की जमात से हैं, वह जो यहूदी होने का दावा करते
हैं हालाँकि वह झूट बोलते हैं, मैं उन्हें तेरे पास
आने दूँगा, उन्हें तेरे पाँवों में झुककर यह तसलीम
करने पर मजबूर करूँगा कि मैंने तुझे प्यार किया
है। 10 तूने मेरा साबितक़दम रहने का हुक्म पूरा
किया, इसलिए मैं तुझे आज़माइश की उस घड़ी
से बचाए रखूँगा जो पूरी दुनिया पर आकर उसमें
बसनेवालों को आज़माएगी।

11 मैं जल्द आ रहा हूँ। जो कुछ तेरे पास है उसे
मज़बूती से थामे रखना ताकि कोई तुझसे तेरा
ताज छीन न ले। 12 जो ग़ालिब आएगा उसे मैं
अपने ख़ुदा के घर में सतून बनाऊँगा, ऐसा सतून
जो उसे कभी नहीं छोड़ेगा। मैं उस पर अपने ख़ुदा
का नाम और अपने ख़ुदा के शहर का नाम लिख
दूँगा, उस नए यरूशलम का नाम जो मेरे ख़ुदा के
हाँ से उतरनेवाला है। हाँ, मैं उस पर अपना नया
नाम भी लिख दूँगा।

13 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूहुल-
क़ुद्स जमातों को क्या कुछ बता रहा है।

लौदीकिया के लिए पैग़ाम

14 लौदीकिया में मौजूद जमात के फ़रिश्ते को
यह लिख देना :

यह उसका फ़रमान है जो आमीन है, वह
जो वफ़ादार और सच्चा गवाह और अल्लाह की
कायनात का मंबा है। 15 मैं तेरे कामों को जानता
हूँ। तू न तो सर्द है, न गरम। काश तू इनमें से
एक होता! 16 लेकिन चूँकि तू नीमगरम है, न
गरम, न सर्द, इसलिए मैं तुझे क़ै करके अपने मुँह
से निकाल फेंकूँगा। 17 तू कहता है, 'मैं अमीर हूँ,
मैंने बहुत दौलत हासिल कर ली है और मुझे किसी
भी चीज़ की ज़रूरत नहीं।' और तू नहीं जानता
कि तू असल में बदबख़्त, क़ाबिले-रहम, ग़रीब,
अंधा और नंगा है। 18 मैं तुझे मशवरा देता हूँ कि
मुझसे आग में ख़ालिस किया गया सोना ख़रीद
ले। तब ही तू दौलतमंद बनेगा। और मुझसे सफ़ेद
लिबास ख़रीद ले जिसको पहनने से तेरे नंगेपन
की शर्म ज़ाहिर नहीं होगी। इसके अलावा मुझसे
आँखों में लगाने के लिए मरहम ख़रीद ले ताकि
तू देख सके। 19 जिनको मैं प्यार करता हूँ उनकी
मैं सज़ा देकर तरबियत करता हूँ। अब संजीदा हो
जा और तौबा कर। 20 देख, मैं दरवाज़े पर खड़ा
खटखटा रहा हूँ। अगर कोई मेरी आवाज़ सुनकर
दरवाज़ा खोले तो मैं अंदर आकर उसके साथ
खाना खाऊँगा और वह मेरे साथ। 21 जो ग़ालिब
आए उसे मैं अपने साथ अपने तख़्त पर बैठने का
हक़ दूँगा, बिलकुल उसी तरह जिस तरह मैं ख़ुद
भी ग़ालिब आकर अपने बाप के साथ उसके तख़्त
पर बैठ गया।

22 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूहुल-
क़ुद्स जमातों को क्या कुछ बता रहा है।"

आसमान पर अल्लाह की परस्तिश

4 इसके बाद मैंने देखा कि आसमान में एक
दरवाज़ा खुला हुआ है और तुरम की-सी
आवाज़ ने जो मैंने पहले सुनी थी कहा, “इधर
ऊपर आ। फिर मैं तुझे वह कुछ दिखाऊँगा जिसे
इसके बाद पेश आना है।” 2 तब रूहुल-क़ुद्स
ने मुझे फ़ौरन अपनी गिरिफ़्त में ले लिया। वहाँ
आसमान पर एक तख़्त था जिस पर कोई बैठा
था। 3 और बैठनेवाला देखने में यशब और अक़ीक़
से मुताबिक़त रखता था। तख़्त के इर्दगिर्द क़ौसे-
क़ुज़ह थी जो देखने में ज़ुमुर्रद की मानिंद थी।
4 यह तख़्त 24 तख़्तों से घिरा हुआ था जिन पर
24 बुज़ुर्ग बैठे थे। बुज़ुर्गों के लिबास सफ़ेद थे और
हर एक के सर पर सोने का ताज था। 5 दरमियानी
तख़्त से बिजली की चमकें, आवाज़ें और बादल
की गरजें निकल रही थीं। और तख़्त के सामने
सात मशालें जल रही थीं। यह अल्लाह की सात
रूहें हैं। 6 तख़्त के सामने शीशे का-सा समुंदर भी
था जो बिल्लौर से मुताबिक़त रखता था।

बीच में तख़्त के इर्दगिर्द चार जानदार थे
जिनके जिस्मों पर हर जगह आँखें ही आँखें थीं,
सामनेवाले हिस्से पर भी और पीछेवाले हिस्से पर
भी। 7 पहला जानदार शेरबबर जैसा था, दूसरा
बैल जैसा, तीसरे का इनसान जैसा चेहरा था और
चौथा उड़ते हुए उक़ाब की मानिंद था। 8 इन चार
जानदारों में से हर एक के छः पर थे और जिस्म
पर हर जगह आँखें ही आँखें थीं, बाहर भी और
अंदर भी। दिन-रात वह बिलानाग़ा कहते रहते हैं,

“क़ुद्दूस, क़ुद्दूस, क़ुद्दूस
है रब क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा,
जो था, जो है और जो आनेवाला है।”

9 यों यह जानदार उस की तमजीद, इज़्ज़त
और शुक्र करते हैं जो तख़्त पर बैठा है और अबद
तक ज़िंदा है। जब भी वह यह करते हैं 10 तो 24
बुज़ुर्ग तख़्त पर बैठनेवाले के सामने मुँह के बल
होकर उसे सिजदा करते हैं जो अज़ल से अबद
तक ज़िंदा है। साथ साथ वह अपने सोने के ताज
तख़्त के सामने रखकर कहते हैं,

11 “ऐ रब हमारे ख़ुदा,
तू जलाल, इज़्ज़त और क़ुदरत
के लायक़ है।
क्योंकि तूने सब कुछ ख़लक़ किया।
तमाम चीज़ें तेरी ही मरज़ी से थीं
और पैदा हुईं।”

सात मुहरोंवाला तूमार

5 फिर मैंने तख़्त पर बैठनेवाले के दहने हाथ
में एक तूमार देखा जिस पर दोनों तरफ़
लिखा हुआ था और जिस पर सात मुहरें लगी
थीं। 2 और मैंने एक ताक़तवर फ़रिश्ता देखा
जिसने ऊँची आवाज़ से एलान किया, “कौन
मुहरों को तोड़कर तूमार को खोलने के लायक़
है?” 3 लेकिन न आसमान पर, न ज़मीन पर
और न ज़मीन के नीचे कोई था जो तूमार को
खोलकर उसमें नज़र डाल सकता। 4 मैं ख़ूब रो
पड़ा, क्योंकि कोई इस लायक़ न पाया गया कि
वह तूमार को खोलकर उसमें नज़र डाल सकता।
5 लेकिन बुज़ुर्गों में से एक ने मुझसे कहा, “मत
रो। देख, यहूदाह क़बीले के शेरबबर और दाऊद
की जड़ ने फ़तह पाई है, और वही तूमार की सात
मुहरों को खोल सकता है।”

6 फिर मैंने एक लेला देखा जो तख़्त के
दरमियान खड़ा था। वह चार जानदारों और बुज़ुर्गों
से घिरा हुआ था और यों लगता था कि उसे ज़बह
किया गया हो। उसके सात सींग और सात आँखें
थीं। इनसे मुराद अल्लाह की वह सात रूहें हैं जिन्हें
दुनिया की हर जगह भेजा गया है। 7 लेले ने आकर
तख़्त पर बैठनेवाले के दहने हाथ से तूमार को ले
लिया। 8 और लेते वक़्त चार जानदार और 24
बुज़ुर्ग लेले के सामने मुँह के बल गिर गए। हर
एक के पास एक सरोद और बख़ूर से भरे सोने
के प्याले थे। इनसे मुराद मुक़द्दसीन की दुआएँ हैं।
9 साथ साथ वह एक नया गीत गाने लगे,

“तू तूमार को लेकर

उस की मुहरों को खोलने के लायक़ है।
क्योंकि तुझे ज़बह किया गया,
और अपने ख़ून से
तूने लोगों को हर क़बीले,
हर अहले-ज़बान,
हर मिल्लत और हर क़ौम से
अल्लाह के लिए ख़रीद लिया है।
10 तूने उन्हें शाही इख़्तियार देकर
हमारे ख़ुदा के इमाम बना दिया है।
और वह दुनिया में हुकूमत करेंगे।"
11 मैंने दुबारा देखा तो बेशुमार फ़रिश्तों की
आवाज़ सुनी। वह तख़्त, चार जानदारों और
बुज़ुर्गों के इर्दगिर्द खड़े 12 ऊँची आवाज़ से कह
रहे थे,
"लायक़ है वह लेला
जो ज़बह किया गया है।
वह क़ुदरत, दौलत, हिकमत और ताक़त,
इज़्ज़त, जलाल और सताइश पाने
के लायक़ है।"
13 फिर मैंने आसमान पर, ज़मीन पर, ज़मीन
के नीचे और समुंदर की हर मख़लूक़ की आवाज़ें
सुनीं। हाँ, कायनात की सब मख़लूक़ात यह गा
रहे थे,
"तख़्त पर बैठनेवाले और लेले
की सताइश और इज़्ज़त,
जलाल और क़ुदरत
अज़ल से अबद तक रहे।"
14 चार जानदारों ने जवाब में "आमीन" कहा,
और बुज़ुर्गों ने गिरकर सिजदा किया।

मुहरें तोड़ी जाती हैं

6 फिर मैंने देखा, लेले ने सात मुहरों में से
पहली मुहर को खोला। इस पर मैंने चार
जानदारों में से एक को जिसकी आवाज़ कड़कते
बादलों की मानिंद थी यह कहते हुए सुना, "आ!"
2 मेरे देखते देखते एक सफ़ेद घोड़ा नज़र आया।
उसके सवार के हाथ में कमान थी, और उसे एक
ताज दिया गया। यों वह फ़ातेह की हैसियत से
और फ़तह पाने के लिए वहाँ से निकला।
3 लेले ने दूसरी मुहर खोली तो मैंने दूसरे
जानदार को कहते हुए सुना कि "आ!"
4 इस पर
एक और घोड़ा निकला जो आग जैसा सुर्ख़ था।
उसके सवार को दुनिया से सुलह-सलामती छीनने
का इख़्तियार दिया गया ताकि लोग एक दूसरे को
क़त्ल करें। उसे एक बड़ी तलवार पकड़ाई गई।
5 लेले ने तीसरी मुहर खोली तो मैंने तीसरे
जानदार को कहते हुए सुना कि "आ!" मेरे देखते
देखते एक काला घोड़ा नज़र आया। उसके सवार
के हाथ में तराज़ू था।
6 और मैंने चारों जानदारों
में से गोया एक आवाज़ सुनी जिसने कहा,
"एक दिन की मज़दूरी के लिए एक किलोग्राम
गंदुम, और एक दिन की मज़दूरी के लिए तीन
किलोग्राम जौ। लेकिन तेल और मै को नुक़सान
मत पहुँचाना।"
7 लेले ने चौथी मुहर खोली तो मैंने चौथे
जानदार को कहते सुना कि "आ!"
8 मेरे देखते
देखते एक घोड़ा नज़र आया जिसका रंग हलका
पीला-सा था। उसके सवार का नाम मौत था,
और पाताल उसके पीछे पीछे चल रही थी। उन्हें
ज़मीन का चौथा हिस्सा क़त्ल करने का इख़्तियार
दिया गया, ख़ाह तलवार, काल, मोहलक वबा या
वहशी जानवरों के ज़रीए से हो।
9 लेले ने पाँचवीं मुहर खोली तो मैंने क़ुरबानगाह
के नीचे उनकी रूहें देखीं जो अल्लाह के कलाम
और अपनी गवाही क़ायम रखने की वजह से
शहीद हो गए थे।
10 उन्होंने ऊँची आवाज़ से
चिल्लाकर कहा, "ऐ क़ादिरे-मुतलक़, क़ुद्दूस और
सच्चे रब, कितनी देर और लगेगी? तू कब तक
ज़मीन के बाशिंदों की अदालत करके हमारे शहीद
होने का इंतक़ाम न लेगा?"
11 तब उनमें से हर
एक को एक सफ़ेद लिबास दिया गया, और उन्हें
समझाया गया कि "मज़ीद थोड़ी देर आराम करो,
क्योंकि पहले तुम्हारे हमख़िदमत भाइयों में से
उतनों को शहीद हो जाना है जितनों के लिए यह
मुक़र्रर है।"

12 लेले ने छटी मुहर खोली तो मैंने एक
शदीद ज़लज़ला देखा। सूरज बकरी के बालों से
बने टाट की मानिंद काला हो गया, पूरा चाँद
ख़ून जैसा नज़र आने लगा 13 और आसमान
के सितारे ज़मीन पर यों गिर गए जिस तरह
अंजीर के दरख़्त पर लगे आख़िरी अंजीर तेज़
हवा के झोंकों से गिर जाते हैं। 14 आसमान तूमार
की तरह जब उसे लपेटकर बंद किया जाता
है पीछे हट गया। और हर पहाड़ और जज़ीरा
अपनी अपनी जगह से खिसक गया। 15 फिर
ज़मीन के बादशाह, शहज़ादे, जरनैल, अमीर,
असरो-रसूख़वाले, ग़ुलाम और आज़ाद सबके सब
ग़ारों में और पहाड़ी चट्टानों के दरमियान छुप
गए। 16 उन्होंने चिल्लाकर पहाड़ों और चट्टानों से
मिन्नत की, "हम पर गिरकर हमें तख़्त पर बैठे
हुए के चेहरे और लेले के ग़ज़ब से छुपा लो।
17 क्योंकि उनके ग़ज़ब का अज़ीम दिन आ गया
है, और कौन क़ायम रह सकता है?"

इसराईल के 1,44,000 चुने हुए अफ़राद

7 इसके बाद मैंने चार फ़रिश्तों को ज़मीन
के चार कोनों पर खड़े देखा। वह ज़मीन
की चार हवाओं को चलने से रोक रहे थे ताकि
न ज़मीन पर, न समुंदर या किसी दरख़्त पर
कोई हवा चले। 2 फिर मैंने एक और फ़रिश्ता
मशरिक़ से चढ़ते हुए देखा जिसके पास ज़िंदा
ख़ुदा की मुहर थी। उसने ऊँची आवाज़ से उन
चार फ़रिश्तों से बात की जिन्हें ज़मीन और समुंदर
को नुक़सान पहुँचाने का इख़्तियार दिया गया था।
उसने कहा, 3 "ज़मीन, समुंदर या दरख़्तों को उस
वक़्त तक नुक़सान मत पहुँचाना जब तक हम
अपने ख़ुदा के ख़ादिमों के माथों पर मुहर न लगा
लें।" 4 और मैंने सुना कि जिन पर मुहर लगाई
गई थी वह 1,44,000 अफ़राद थे और वह
इसराईल के हर एक क़बीले से थे : 5 12,000
यहूदाह से, 12,000 रूबिन से, 12,000 जद
से, 6 12,000 आशर से, 12,000 नफ़ताली
से, 12,000 मनस्सी से, 7 12,000 शमाऊन
से, 12,000 लावी से, 12,000 इशकार से,
8 12,000 ज़बूलून से, 12,000 यूसुफ़ से और
12,000 बिनयमीन से।

अल्लाह के हुज़ूर एक बड़ा हुजूम

9 इसके बाद मैंने एक हुजूम देखा जो इतना
बड़ा था कि उसे गिना नहीं जा सकता था।
उसमें हर मिल्लत, हर क़बीले, हर क़ौम और
हर ज़बान के अफ़राद सफ़ेद लिबास पहने हुए
तख़्त और लेले के सामने खड़े थे। उनके हाथों
में खजूर की डालियाँ थीं। 10 और वह ऊँची
आवाज़ से चिल्ला चिल्लाकर कह रहे थे, "नजात
तख़्त पर बैठे हुए हमारे ख़ुदा और लेले की
तरफ़ से है।" 11 तमाम फ़रिश्ते तख़्त, बुज़ुर्गों
और चार जानदारों के इर्दगिर्द खड़े थे। उन्होंने
तख़्त के सामने गिरकर अल्लाह को सिजदा
किया 12 और कहा, "आमीन! हमारे ख़ुदा की
अज़ल से अबद तक सताइश, जलाल, हिकमत,
शुक्रगुज़ारी, इज़्ज़त, क़ुदरत और ताक़त हासिल
रहे। आमीन!"

13 बुज़ुर्गों में से एक ने मुझसे पूछा, "सफ़ेद
लिबास पहने हुए यह लोग कौन हैं और कहाँ से
आए हैं?"

14 मैंने जवाब दिया, "मेरे आक़ा, आप ही
जानते हैं।"

उसने कहा, "यह वही हैं जो बड़ी ईज़ारसानी
से निकलकर आए हैं। उन्होंने अपने लिबास लेले
के ख़ून में धोकर सफ़ेद कर लिए हैं। 15 इसलिए
वह अल्लाह के तख़्त के सामने खड़े हैं और
दिन-रात उसके घर में उस की ख़िदमत करते
हैं। और तख़्त पर बैठा हुआ उनको पनाह देगा।
16 इसके बाद न कभी भूक उन्हें सताएगी न
प्यास। न धूप, न किसी और क़िस्म की तपती
गरमी उन्हें झुलसाएगी। 17 क्योंकि जो लेला तख़्त
के दरमियान बैठा है वह उनकी गल्लाबानी करेगा
और उन्हें ज़िंदगी के चश्मों के पास ले जाएगा।
और अल्लाह उनकी आँखों से तमाम आँसू पोंछ
डालेगा।"

सातवीं मुहर

8 जब लेले ने सातवीं मुहर खोली तो
आसमान पर ख़ामोशी छा गई। यह
ख़ामोशी तक़रीबन आधे घंटे तक रही। 2 फिर मैंने
अल्लाह के सामने खड़े सात फ़रिश्तों को देखा।
उन्हें सात तुरम दिए गए।
3 एक और फ़रिश्ता जिसके पास सोने का
बख़ूरदान था आकर क़ुरबानगाह के पास खड़ा
हो गया। उसे बहुत-सा बख़ूर दिया गया ताकि
वह उसे मुक़द्दसीन की दुआओं के साथ तख़्त
के सामने की सोने की क़ुरबानगाह पर पेश करे।
4 बख़ूर का धुआँ मुक़द्दसीन की दुआओं के साथ
फ़रिश्ते के हाथ से उठते उठते अल्लाह के सामने
पहुँचा। 5 फिर फ़रिश्ते ने बख़ूरदान को लिया और
उसे क़ुरबानगाह की आग से भरकर ज़मीन पर
फेंक दिया। तब कड़कती और गरजती आवाज़ें
सुनाई दीं, बिजली चमकने लगी और ज़लज़ला
आ गया।

तुरमों का असर

6 फिर जिन सात फ़रिश्तों के पास सात तुरम
थे वह उन्हें बजाने के लिए तैयार हुए।
7 पहले फ़रिश्ते ने अपने तुरम को बजा दिया।
इस पर ओले और ख़ून के साथ मिलाई गई आग
पैदा होकर ज़मीन पर बरसाई गई। इससे ज़मीन
का तीसरा हिस्सा, दरख़्तों का तीसरा हिस्सा और
तमाम हरी घास भस्म हो गई।
8 फिर दूसरे फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक
मारी। इस पर जलती हुई एक बड़ी पहाड़नुमा
चीज़ को समुंदर में फेंका गया। समुंदर का तीसरा
हिस्सा ख़ून में बदल गया, 9 समुंदर में मौजूद ज़िंदा
मख़लूक़ात का तीसरा हिस्सा हलाक और बहरी
जहाज़ों का तीसरा हिस्सा तबाह हो गया।
10 फिर तीसरे फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक
मारी। इस पर मशाल की तरह भड़कता हुआ
एक बड़ा सितारा आसमान से दरियाओं के तीसरे
हिस्से और पानी के चश्मों पर गिर गया। 11 इस
सितारे का नाम अफ़संतीन था और इससे पानी
का तीसरा हिस्सा अफ़संतीन जैसा कड़वा हो
गया। बहुत-से लोग यह कड़वा पानी पीने से मर
गए।
12 फिर चौथे फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक
मारी। इस पर सूरज का तीसरा हिस्सा, चाँद का
तीसरा हिस्सा और सितारों का तीसरा हिस्सा
रौशनी से महरूम हो गया। दिन का तीसरा हिस्सा
रौशनी से महरूम हुआ और इसी तरह रात का
तीसरा हिस्सा भी।
13 फिर देखते देखते मैंने एक उक़ाब को सुना
जिसने मेरे सर के ऊपर ही बुलंदियों पर उड़ते हुए
ऊँची आवाज़ से पुकारा, "अफ़सोस! अफ़सोस!
ज़मीन के बाशिंदों पर अफ़सोस! क्योंकि तीन
फ़रिश्तों के तुरमों की आवाज़ें अभी बाक़ी हैं।"

9 फिर पाँचवें फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक
मारी। इस पर मैंने एक सितारा देखा जो
आसमान से ज़मीन पर गिर गया था। इस सितारे
को अथाह गढ़े के रास्ते की चाबी दी गई। 2 उसने
अथाह गढ़े का रास्ता खोल दिया तो उससे धुआँ
निकलकर ऊपर आया, यों जैसे धुआँ किसी बड़े
भट्टे से निकलता है। सूरज और चाँद अथाह गढ़े
के इस धुएँ से तारीक हो गए। 3 और धुएँ में से
टिड्डियाँ निकलकर ज़मीन पर उतर आईं। उन्हें
ज़मीन के बिछुओं जैसा इख़्तियार दिया गया।
4 उन्हें बताया गया, "न ज़मीन की घास, न किसी
पौदे या दरख़्त को नुक़सान पहुँचाओ बल्कि सिर्फ़
उन लोगों को जिनके माथों पर अल्लाह की मुहर
नहीं लगी है।" 5 टिड्डियों को इन लोगों को मार
डालने का इख़्तियार न दिया गया बल्कि उन्हें
बताया गया कि वह पाँच महीनों तक इनको
अज़ियत दें। और यह अज़ियत उस तकलीफ़ की
मानिंद है जो तब पैदा होती है जब बिच्छू किसी
को डंक मारता है। 6 उन पाँच महीनों के दौरान
लोग मौत की तलाश में रहेंगे, लेकिन उसे पाएँगे
नहीं। वह मर जाने की शदीद आरज़ू करेंगे, लेकिन
मौत उनसे भागकर दूर रहेगी।
7 टिड्डियों की शक्लो-सूरत जंग के लिए तैयार
घोड़ों की मानिंद थी। उनके सरों पर सोने के ताजों

जैसी चीज़ें थीं और उनके चेहरे इनसानों के चेहरों
की मानिंद थे। 8 उनके बाल ख़वातीन के बालों की
मानिंद और उनके दाँत शेरबबर के दाँतों जैसे थे।
9 यों लगा जैसे उनके सीनों पर लोहे के-से ज़िरा-
बकतर लगे हुए थे, और उनके परों की आवाज़
बेशुमार रथों और घोड़ों के शोर जैसी थी जब वह
मुख़ालिफ़ पर झपट रहे होते हों। 10 उनकी दुम पर
बिच्छू का-सा डंक लगा था और उन्हें इन्हीं दुमों
से लोगों को पाँच महीनों तक नुक़सान पहुँचाने
का इख़्तियार था। 11 उनका बादशाह अथाह गढ़े
का फ़रिश्ता है जिसका इबरानी नाम अबद्दोन और
यूनानी नाम अपुल्लियोन (हलाकू) है।

12 यों पहला अफ़सोस गुज़र गया, लेकिन
इसके बाद दो मज़ीद अफ़सोस होनेवाले हैं।

13 छटे फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक मारी। इस
पर मैंने एक आवाज़ सुनी जो अल्लाह के सामने
वाक़े सोने की क़ुरबानगाह के चार कोनों पर लगे
सींगों से आई। 14 इस आवाज़ ने छटा तुरम पकड़े
हुए फ़रिश्ते से कहा, "उन चार फ़रिश्तों को खुला
छोड़ देना जो बड़े दरिया बनाम फ़ुरात के पास
बँधे हुए हैं।" 15 इन चार फ़रिश्तों को इसी महीने
के इसी दिन के इसी घंटे के लिए तैयार किया
गया था। अब इन्हें खुला छोड़ दिया गया ताकि
वह इनसानों का तीसरा हिस्सा मार डालें। 16 मुझे
बताया गया कि घोड़ों पर सवार फ़ौजी बीस करोड़
थे। 17 रोया में घोड़े और सवार यों नज़र आए :
सीनों पर लगे ज़िरा-बकतर आग जैसे सुर्ख़, नीले
और गंधक जैसे पीले थे। घोड़ों के सर शेरबबर
के सरों से मुताबिक़त रखते थे और उनके मुँह से
आग, धुआँ और गंधक निकलती थी। 18 आग,
धुएँ और गंधक की इन तीन बलाओं से इनसानों
का तीसरा हिस्सा हलाक हुआ। 19 हर घोड़े की
ताक़त उसके मुँह और दुम में थी, क्योंकि उनकी
दुमें साँप की मानिंद थीं जिनके सर नुक़सान
पहुँचाते थे।

20 जो इन बलाओं से हलाक नहीं हुए थे बल्कि
अभी बाक़ी थे उन्होंने फिर भी अपने हाथों के
कामों से तौबा न की। वह बदरूहों और सोने,
चाँदी, पीतल, पत्थर और लकड़ी के बुतों की पूजा
से बाज़ न आए हालाँकि ऐसी चीज़ें न तो देख
सकती हैं, न सुनने या चलने के क़ाबिल होती हैं।
21 वह क़त्लो-ग़ारत, जादूगरी, ज़िनाकारी और
चोरियों से भी तौबा करके बाज़ न आए।

फ़रिश्ता और छोटा तूमार

10 फिर मैंने एक और ताक़तवर फ़रिश्ता
देखा। वह बादल ओढ़े हुए आसमान
से उतर रहा था और उसके सर के ऊपर क़ौसे-
क़ुज़ह थी। उसका चेहरा सूरज जैसा था और
उसके पाँव आग के सतून जैसे। 2 उसके हाथ
में एक छोटा तूमार था जो खुला था। अपने एक
पाँव को उसने समुंदर पर रख दिया और दूसरे
को ज़मीन पर। 3 फिर वह ऊँची आवाज़ से पुकार
उठा। ऐसे लगा जैसे शेरबबर गरज रहा है। इस
पर कड़क की सात आवाज़ें बोलने लगीं। 4 उनके
बोलने पर मैं उनकी बातें लिखने को था कि एक
आवाज़ ने कहा, "कड़क की सात आवाज़ों की
बातों पर मुहर लगा और उन्हें मत लिखना।"

5 फिर उस फ़रिश्ते ने जिसे मैंने समुंदर और
ज़मीन पर खड़ा देखा अपने दहने हाथ को
आसमान की तरफ़ उठाकर 6 अल्लाह के नाम
की क़सम खाई, उसके नाम की जो अज़ल से
अबद तक ज़िंदा है और जिसने आसमानों, ज़मीन
और समुंदर को उन तमाम चीज़ों समेत ख़लक़
किया जो उनमें हैं। फ़रिश्ते ने कहा, "अब देर नहीं
होगी। 7 जब सातवाँ फ़रिश्ता अपने तुरम में फूँक
मारने को होगा तब अल्लाह का भेद जो उसने
अपने नबुव्वत करनेवाले ख़ादिमों को बताया था
तकमील तक पहुँचेगा।"

8 फिर जो आवाज़ आसमान से सुनाई दी थी
उसने एक बार फिर मुझसे बात की, "जा, वह
तूमार ले लेना जो समुंदर और ज़मीन पर खड़े
फ़रिश्ते के हाथ में खुला पड़ा है।"

9 चुनाँचे मैंने फ़रिश्ते के पास जाकर उससे
गुज़ारिश की कि वह मुझे छोटा तूमार दे। उसने
मुझसे कहा, "इसे ले और खा ले। यह तेरे मुँह

में शहद की तरह मीठा लगेगा, लेकिन तेरे मेदे में कड़वाहट पैदा करेगा।”

10 मैंने छोटे तूमार को फ़रिश्ते के हाथ से लेकर उसे खा लिया। मेरे मुँह में तो वह शहद की तरह मीठा लग रहा था, लेकिन मेदे में जाकर उसने कड़वाहट पैदा कर दी। 11 फिर मुझे बताया गया, “लाज़िम है कि तू बहुत उम्मतों, क़ौमों, ज़बानों और बादशाहों के बारे में मज़ीद नबुव्वत करे।”

दो गवाह

11 मुझे गज़ की तरह का सरकंडा दिया गया और बताया गया, “जा, अल्लाह के घर और क़ुरबानगाह की पैमाइश कर। उसमें परस्तारों की तादाद भी गिन। 2 लेकिन बैरूनी सहन को छोड़ दे। उसे मत नाप, क्योंकि उसे ग़ैरईमानदारों को दिया गया है जो मुक़द्दस शहर को 42 महीनों तक कुचलते रहेंगे। 3 और मैं अपने दो गवाहों को इख़्तियार दूँगा, और वह टाट ओढ़कर 1,260 दिनों के दौरान नबुव्वत करेंगे।”

4 यह दो गवाह ज़ैतून के वह दो दरख़्त और वह दो शमादान हैं जो दुनिया के आक़ा के सामने खड़े हैं। 5 अगर कोई उन्हें नुक़सान पहुँचाना चाहे तो उनके मुँह में से आग निकलकर उनके दुश्मनों को भस्म कर देती है। जो भी उन्हें नुक़सान पहुँचाना चाहे उसे इस तरह मरना पड़ता है। 6 इन गवाहों को आसमान को बंद रखने का इख़्तियार है ताकि जितना वक़्त वह नबुव्वत करें बारिश न हो। उन्हें पानी को ख़ून में बदलने और ज़मीन को हर क़िस्म की अज़ियत पहुँचाने का इख़्तियार भी है। और वह जितनी दफ़ा जी चाहे यह कर सकते हैं।

7 उनकी गवाही का मुक़र्ररा वक़्त पूरा होने पर अथाह गढ़े में से निकलनेवाला हैवान उनसे जंग करना शुरू करेगा और उन पर ग़ालिब आकर उन्हें मार डालेगा। 8 उनकी लाशें उस बड़े शहर की सड़क पर पड़ी रहेंगी जिसका अलामती नाम सदूम और मिसर है। वहाँ उनका आक़ा भी मसलूब हुआ था। 9 और साढ़े तीन दिनों के दौरान हर उम्मत, क़बीले, ज़बान और क़ौम के लोग इन लाशों को घूरकर देखेंगे और इन्हें दफ़न करने नहीं देंगे। 10 ज़मीन के बाशिंदे उनकी वजह से मसरूर होंगे और ख़ुशी मनाकर एक दूसरे को तोह्फ़े भेजेंगे, क्योंकि इन दो नबियों ने ज़मीन पर रहनेवालों को काफ़ी ईज़ा पहुँचाई थी। 11 लेकिन इन साढ़े तीन दिनों के बाद अल्लाह ने उनमें ज़िंदगी का दम फूँक दिया, और वह अपने पाँवों पर खड़े हुए। जो उन्हें देख रहे थे वह सख़्त दहशतज़दा हुए। 12 फिर उन्होंने आसमान से एक ऊँची आवाज़ सुनी जिसने उनसे कहा, “यहाँ ऊपर आओ!” और उनके दुश्मनों के देखते देखते दोनों एक बादल में आसमान पर चले गए। 13 उसी वक़्त एक शदीद ज़लज़ला आया और शहर का दसवाँ हिस्सा गिरकर तबाह हो गया। 7,000 अफ़राद उस की ज़द में आकर मर गए। बचे हुए लोगों में दहशत फैल गई और वह आसमान के ख़ुदा को जलाल देने लगे।

14 दूसरा अफ़सोस गुज़र गया, लेकिन अब तीसरा अफ़सोस जल्द होनेवाला है।

सातवाँ तुरम

15 सातवें फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक मारी। इस पर आसमान पर से ऊँची आवाज़ें सुनाई दें जो कह रही थीं, “ज़मीन की बादशाही हमारे आक़ा और उसके मसीह की हो गई है। वही अज़ल से अबद तक हुकूमत करेगा।” 16 और अल्लाह के तख़्त के सामने बैठे 24 बुज़ुर्गों ने गिरकर अल्लाह को सिजदा किया 17 और कहा, “ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा, हम तेरा शुक्र करते हैं, तू जो है और जो था। क्योंकि तू अपनी अज़ीम क़ुदरत को काम में लाकर हुकूमत करने लगा है। 18 क़ौमें ग़ुस्से में आईं तो तेरा ग़ज़ब नाज़िल हुआ। अब मुरदों की अदालत करने और अपने ख़ादिमों को अज्र देने का वक़्त आ गया है। हाँ, तेरे नबियों, मुक़द्दसीन और तेरा ख़ौफ़ माननेवालों को अज्र मिलेगा, ख़ाह वह छोटे हों या बड़े। अब वह वक़्त भी आ गया है कि ज़मीन को तबाह करनेवालों को तबाह किया जाए।”

19 आसमान पर अल्लाह के घर को खोला गया और उसमें उसके अहद का संदूक़ नज़र आया। बिजली चमकने लगी, शोर मच गया, बादल गरजने और बड़े बड़े ओले पड़ने लगे।

ख़ातून और अज़दहा

12 फिर आसमान पर एक अज़ीम निशान ज़ाहिर हुआ, एक ख़ातून जिसका लिबास सूरज था। उसके पाँवों तले चाँद और सर पर बारह सितारों का ताज था।
2 उसका पाँव भारी था, और जन्म देने के शदीद दर्द में मुब्तला होने की वजह से वह चिल्ला रही थी।

3 फिर आसमान पर एक और निशान नज़र आया, एक बड़ा और आग जैसा सुर्ख़ अज़दहा। उसके सात सर और दस सींग थे, और हर सर पर एक ताज था।
4 उस की दुम ने सितारों के तीसरे हिस्से को आसमान पर से उतारकर ज़मीन पर फेंक दिया। फिर अज़दहा जन्म देनेवाली ख़ातून के सामने खड़ा हुआ ताकि उस बच्चे को जन्म लेते ही हड़प कर ले।
5 ख़ातून के बेटा पैदा हुआ, वह बच्चा जो लोहे के शाही असा से क़ौमों पर हुकूमत करेगा। और ख़ातून के इस बच्चे को छीनकर अल्लाह और उसके तख़्त के सामने लाया गया।
6 ख़ातून ख़ुद रेगिस्तान में हिजरत करके एक ऐसी जगह पहुँच गई जो अल्लाह ने उसके लिए तैयार कर रखी थी, ताकि वहाँ 1,260 दिन तक उस की परवरिश की जाए।

7 फिर आसमान पर जंग छिड़ गई। मीकाएल और उसके फ़रिश्ते अज़दहे से लड़े। अज़दहा और उसके फ़रिश्ते उनसे लड़ते रहे,
8 लेकिन वह ग़ालिब न आ सके बल्कि आसमान पर अपने मक़ाम से महरूम हो गए।
9 बड़े अज़दहे को निकाल दिया गया, उस क़दीम अज़दहे को जो इबलीस या शैतान कहलाता है और जो पूरी दुनिया को गुमराह कर देता है। उसे उसके फ़रिश्तों समेत ज़मीन पर फेंका गया।

10 फिर आसमान पर एक ऊँची आवाज़ सुनाई दी, “अब हमारे ख़ुदा की नजात, क़ुदरत और बादशाही आ गई है, अब उसके मसीह का इख़्तियार आ गया है। क्योंकि हमारे भाइयों और बहनों पर इलज़ाम लगानेवाला जो दिन-रात अल्लाह के हुज़ूर उन पर इलज़ाम लगाता रहता था उसे ज़मीन पर फेंका गया है।
11 ईमानदार लेले के ख़ून और अपनी गवाही सुनाने के ज़रीए ही उस पर ग़ालिब आए हैं। उन्होंने अपनी जान अज़ीज़ न रखी बल्कि उसे देने तक तैयार थे।
12 चुनाँचे ख़ुशी मनाओ, ऐ आसमानो! ख़ुशी मनाओ, उनमें बसनेवालो! लेकिन ज़मीन और समुंदर पर अफ़सोस! क्योंकि इबलीस तुम पर उतर आया है। वह बड़े ग़ुस्से में है, क्योंकि वह जानता है कि अब उसके पास वक़्त कम है।”

13 जब अज़दहे ने देखा कि उसे ज़मीन पर गिरा दिया गया है तो वह उस ख़ातून के पीछे पड़ गया जिसने बच्चे को जन्म दिया था।
14 लेकिन ख़ातून को बड़े उक़ाब के-से दो पर दिए गए ताकि वह उड़कर रेगिस्तान में उस जगह पहुँचे जो उसके लिए तैयार की गई थी और जहाँ वह साढ़े तीन साल तक अज़दहे की पहुँच से महफ़ूज़ रहकर परवरिश पाएगी।
15 इस पर अज़दहे ने अपने मुँह से पानी निकालकर दरिया की सूरत में ख़ातून के पीछे पीछे बहा दिया ताकि उसे बहा ले जाए।
16 लेकिन ज़मीन ने ख़ातून की मदद करके अपना मुँह खोल दिया और उस दरिया को निगल लिया जो अज़दहे ने अपने मुँह से निकाल दिया था।
17 फिर अज़दहे को ख़ातून पर ग़ुस्सा आया, और वह उस की बाक़ी औलाद से जंग करने के लिए चला गया। (ख़ातून की औलाद वह हैं जो अल्लाह के अहकाम पूरे करके ईसा की गवाही को क़ायम रखते हैं)।
18 और अज़दहा समुंदर के साहिल पर खड़ा हो गया।

दो हैवान

13 फिर मैंने देखा कि समुंदर में से एक हैवान निकल रहा है। उसके दस सींग और सात सर थे। हर सींग पर एक ताज और हर सर पर कुफ़र का एक नाम था।
2 यह हैवान चीते

की मानिंद था। लेकिन उसके रीछ के-से पाँव और
शेरबबर का-सा मुँह था। अज़दहे ने इस हैवान को
अपनी क़ुव्वत, अपना तख़्त और बड़ा इख़्तियार
दे दिया। 3 लगता था कि हैवान के सरों में से
एक पर लाइलाज ज़ख़म लगा है। लेकिन इस
ज़ख़म को शफ़ा दी गई। पूरी दुनिया यह देखकर
हैरतज़दा हुई और हैवान के पीछे लग गई। 4 लोगों
ने अज़दहे को सिजदा किया, क्योंकि उसी ने
हैवान को इख़्तियार दिया था। और उन्होंने यह
कहकर हैवान को भी सिजदा किया, "कौन इस
हैवान की मानिंद है? कौन इससे लड़ सकता
है?"

5 इस हैवान को बड़ी बड़ी बातें और कुफ़र बकने
का इख़्तियार दिया गया। और उसे यह करने का
इख़्तियार 42 महीने के लिए मिल गया। 6 यों वह
अपना मुँह खोलकर अल्लाह, उसके नाम, उस
की सुकूनतगाह और आसमान के बाशिंदों पर
कुफ़र बकने लगा। 7 उसे मुक़द्दसीन से जंग करके
उन पर फ़तह पाने का इख़्तियार भी दिया गया।
और उसे हर क़बीले, हर उम्मत, हर ज़बान और
हर क़ौम पर इख़्तियार दिया गया। 8 ज़मीन के
तमाम बाशिंदे इस हैवान को सिजदा करेंगे यानी
वह सब जिनके नाम दुनिया की इब्तिदा से लेले
की किताबे-हयात में दर्ज नहीं हैं, उस लेले की
किताब में जो ज़बह किया गया है।

9 जो सुन सकता है वह सुन ले! 10 अगर
किसी को क़ैदी बनना है तो वह क़ैदी ही बनेगा।
अगर किसी को तलवार की ज़द में आकर
मरना है तो वह ऐसे ही मरेगा। अब मुक़द्दसीन
को साबितक़दमी और वफ़ादार ईमान की ख़ास
ज़रूरत है।

11 फिर मैंने एक और हैवान को देखा। वह
ज़मीन में से निकल रहा था। उसके लेले के-
से दो सींग थे, लेकिन उसके बोलने का अंदाज़
अज़दहे का-सा था। 12 उसने पहले हैवान का पूरा
इख़्तियार उस की ख़ातिर इस्तेमाल करके ज़मीन
और उसके बाशिंदों को पहले हैवान को सिजदा
करने पर उकसाया, यानी उस हैवान को जिसका
लाइलाज ज़ख़म भर गया था। 13 और उसने बड़े
मोजिज़ाना निशान दिखाए, यहाँ तक कि उसने
लोगों के देखते देखते आसमान से ज़मीन पर
आग नाज़िल होने दी। 14 यों उसे पहले हैवान की
ख़ातिर मोजिज़ाना निशान दिखाने का इख़्तियार
दिया गया, और इनके ज़रीए उसने ज़मीन के
बाशिंदों को सहीह राह से बहकाया। उसने उन्हें
कहा कि वह उस हैवान की ताज़ीम में एक
मुजस्समा बना दें जो तलवार से ज़ख़मी होने के
बावुजूद दुबारा ज़िंदा हुआ था। 15 फिर उसे पहले
हैवान के मुजस्समे में जान डालने का इख़्तियार
दिया गया ताकि मुजस्समा बोल सके और उन्हें
क़त्ल करवा सके जो उसे सिजदा करने से इनकार
करते थे। 16 उसने यह भी करवाया कि हर एक के
दहने हाथ या माथे पर एक ख़ास निशान लगाया
जाए, ख़ाह वह छोटा हो या बड़ा, अमीर हो या
ग़रीब, आज़ाद हो या ग़ुलाम। 17 सिर्फ़ वह शख़्स
कुछ ख़रीद या बेच सकता था जिस पर यह निशान
लगा था। यह निशान हैवान का नाम या उसके
नाम का नंबर था।

18 यहाँ हिकमत की ज़रूरत है। जो समझदार
है वह हैवान के नंबर का हिसाब करे, क्योंकि यह
एक मर्द का नंबर है। उसका नंबर 666 है।

लेला और उस की क़ौम

14 फिर मैंने देखा कि लेला मेरे सामने ही
सिय्यून के पहाड़ पर खड़ा है। उसके
साथ 1,44,000 अफ़राद खड़े थे जिनके माथों
पर उसका और उसके बाप का नाम लिखा था।
2 और मैंने आसमान से एक ऐसी आवाज़ सुनी
जो किसी बड़े आबशार और गरजते बादलों की
ऊँची कड़क की मानिंद थी। यह उस आवाज़ की
मानिंद थी जो सरोद बजानेवाले अपने साज़ों से
निकालते हैं। 3 यह 1,44,000 अफ़राद तख़्त,
चार जानदारों और बुज़ुर्गों के सामने खड़े एक नया
गीत गा रहे थे, एक ऐसा गीत जो सिर्फ़ वही सीख
सके जिन्हें लेले ने ज़मीन से ख़रीद लिया था।
4 यह वह मर्द हैं जिन्होंने अपने आपको ख़वातीन

के साथ आलूदा नहीं किया, क्योंकि वह कुँवारे
हैं। जहाँ भी लेला जाता है वहाँ वह भी जाते हैं।
उन्हें बाक़ी इनसानों में से फ़सल के पहले फल
की हैसियत से अल्लाह और लेले के लिए ख़रीदा
गया है। 5 उनके मुँह से कभी झूट नहीं निकला
बल्कि वह बेइलज़ाम हैं।

तीन फ़रिश्ते

6 फिर मैंने एक और फ़रिश्ता देखा। वह मेरे
सर के ऊपर ही हवा में उड़ रहा था। उसके पास
अल्लाह की अबदी ख़ुशख़बरी थी ताकि वह उसे
ज़मीन के बाशिंदों यानी हर क़ौम, क़बीले, अहले-
ज़बान और उम्मत को सुनाए। 7 उसने ऊँची
आवाज़ से कहा, "ख़ुदा का ख़ौफ़ मानकर उसे
जलाल दो, क्योंकि उस की अदालत का वक़्त
आ गया है। उसे सिजदा करो जिसने आसमानों,
ज़मीन, समुंदर और पानी के चश्मों को ख़लक़
किया है।"

8 एक दूसरे फ़रिश्ते ने पहले के पीछे पीछे
चलते हुए कहा, "वह गिर गया है! हाँ, अज़ीम
बाबल गिर गया है, जिसने तमाम क़ौमों को अपनी
हरामकारी और मस्ती की मै पिलाई है।"

9 इन दो फ़रिश्तों के पीछे एक तीसरा फ़रिश्ता
चल रहा था। उसने ऊँची आवाज़ से कहा, "जो
भी हैवान और उसके मुजस्समे को सिजदा करे
और जिसे भी उसका निशान अपने माथे या हाथ
पर मिल जाए 10 वह अल्लाह के ग़ज़ब की मै से
पिएगा, ऐसी मै जो मिलावट के बग़ैर ही अल्लाह
के ग़ज़ब के प्याले में डाली गई है। मुक़द्दस
फ़रिश्तों और लेले के हुज़ूर उसे आग और गंधक
का अज़ाब सहना पड़ेगा। 11 और इन लोगों को
सतानेवाली यह आग जलती रहेगी, इसका धुआँ
अबद तक चढ़ता रहेगा। जो हैवान और उसके
मुजस्समे को सिजदा करते हैं या जिन्होंने उसके
नाम का निशान लिया है वह न दिन, न रात को
आराम पाएँगे।"

12 यहाँ मुक़द्दसीन को साबितक़दम रहने की
ज़रूरत है, उन्हें जो अल्लाह के अहकाम पूरे करते
और ईसा के वफ़ादार रहते हैं।

13 फिर मैंने आसमान से एक आवाज़ यह
कहती हुई सुनी, "लिख, मुबारक हैं वह मुरदे जो
अब से ख़ुदावंद में वफ़ात पाते हैं।"

"जी हाँ," रूह फ़रमाता है, "वह अपनी
मेहनत-मशक़्क़त से आराम पाएँगे, क्योंकि उनके
नेक काम उनके पीछे होकर उनके साथ चलेंगे।"

ज़मीन पर फ़सल की कटाई

14 फिर मैंने एक सफ़ेद बादल देखा, और उस
पर कोई बैठा था जो इब्ने-आदम की मानिंद था।
उसके सर पर सोने का ताज और हाथ में तेज़
दराँती थी। 15 एक और फ़रिश्ता अल्लाह के घर
से निकलकर ऊँची आवाज़ से पुकारकर उससे
मुख़ातिब हुआ जो बादल पर बैठा था, "अपनी
दराँती लेकर फ़सल की कटाई कर! क्योंकि
फ़सल काटने का वक़्त आ गया है और ज़मीन
पर की फ़सल पक गई है।" 16 चुनाँचे बादल पर
बैठनेवाले ने अपनी दराँती ज़मीन पर चलाई और
ज़मीन की फ़सल की कटाई हुई।

17 इसके बाद एक और फ़रिश्ता अल्लाह के
उस घर से निकल आया जो आसमान पर है, और
उसके पास भी तेज़ दराँती थी।

18 फिर एक तीसरा फ़रिश्ता आया। उसे आग
पर इख़्तियार था। वह क़ुरबानगाह से आया और
ऊँची आवाज़ से पुकारकर तेज़ दराँती पकड़े हुए
फ़रिश्ते से मुख़ातिब हुआ, "अपनी तेज़ दराँती
लेकर ज़मीन की अंगूर की बेल से अंगूर के गुच्छे
जमा कर, क्योंकि उसके अंगूर पक गए हैं।"
19 फ़रिश्ते ने ज़मीन पर अपनी दराँती चलाई,
उसके अंगूर जमा किए और उन्हें अल्लाह के ग़ज़ब
के उस बड़े हौज़ में फेंक दिया जिसमें अंगूर का
रस निकाला जाता है। 20 यह हौज़ शहर से बाहर
वाक़े था। उसमें पड़े अंगूरों को इतना रौंदा गया
कि हौज़ में से ख़ून बह निकला। ख़ून का यह
सैलाब 300 किलोमीटर दूर तक पहुँच गया और

वह इतना ज़्यादा था कि घोड़ों की लगामों तक
पहुँच गया।

आख़िरी बलाओं के फ़रिश्ते

15 फिर मैंने आसमान पर एक और
इलाही निशान देखा, जो अज़ीम और
हैरतअंगेज़ था। सात फ़रिश्ते सात आख़िरी बलाएँ
अपने पास रखकर खड़े थे। इनसे अल्लाह का
ग़ज़ब तकमील तक पहुँच गया।
2 मैंने शीशे का-सा एक समुंदर भी देखा जिसमें
आग मिलाई गई थी। इस समुंदर के पास वह खड़े
थे जो हैवान, उसके मुजस्समे और उसके नाम के
नंबर पर ग़ालिब आ गए थे। वह अल्लाह के दिए
हुए सरोद पकड़े 3 अल्लाह के ख़ादिम मूसा और
लेले का गीत गा रहे थे,

“ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा,
तेरे काम कितने अज़ीम और
हैरतअंगेज़ हैं।
ऐ ज़मानों के बादशाह,
तेरी राहें कितनी रास्त और सच्ची हैं।
4 ऐ रब, कौन तेरा ख़ौफ़ नहीं मानेगा?
कौन तेरे नाम को जलाल नहीं देगा?
क्योंकि तू ही क़ुद्दूस है।
तमाम क़ौमें आकर तेरे हुज़ूर
सिजदा करेंगी,
क्योंकि तेरे रास्त काम ज़ाहिर हो गए हैं।”

5 इसके बाद मैंने देखा कि अल्लाह के घर यानी
आसमान पर के शरीअत के ख़ैमे को[a] खोल
दिया गया। 6 अल्लाह के घर से वह सात फ़रिश्ते
निकल आए जिनके पास सात बलाएँ थीं। उनके
कतान के कपड़े साफ़-सुथरे और चमक रहे थे।
यह कपड़े सीनों पर सोने के कमरबंद से बँधे हुए
थे। 7 फिर चार जानदारों में से एक ने इन सात
फ़रिश्तों को सोने के सात प्याले दिए। यह प्याले
उस ख़ुदा के ग़ज़ब से भरे हुए थे जो अज़ल से
अबद तक ज़िंदा है। 8 उस वक़्त अल्लाह का घर
उसके जलाल और क़ुदरत से पैदा होनेवाले धुएँ
से भर गया। और जब तक सात फ़रिश्तों की सात
बलाएँ तकमील तक न पहुँचीं उस वक़्त तक कोई
भी अल्लाह के घर में दाख़िल न हो सका।

अल्लाह के ग़ज़ब के प्याले

16 फिर मैंने एक ऊँची आवाज़ सुनी
जिसने अल्लाह के घर में से सात
फ़रिश्तों से कहा, “जाओ, अल्लाह के ग़ज़ब से
भरे सात प्यालों को ज़मीन पर उंडेल दो।”
2 पहले फ़रिश्ते ने जाकर अपना प्याला ज़मीन
पर उंडेल दिया। इस पर उन लोगों के जिस्मों पर
भद्दे और तकलीफ़देह फोड़े निकल आए जिन पर
हैवान का निशान था और जो उसके मुजस्समे को
सिजदा करते थे।
3 दूसरे फ़रिश्ते ने अपना प्याला समुंदर पर
उंडेल दिया। इस पर समुंदर का पानी लाश के-से
ख़ून में बदल गया, और उसमें हर ज़िंदा मख़लूक़
मर गई।
4 तीसरे फ़रिश्ते ने अपना प्याला दरियाओं और
पानी के चश्मों पर उंडेल दिया तो उनका पानी ख़ून
बन गया। 5 फिर मैंने पानियों पर मुक़र्रर फ़रिश्ते
को यह कहते सुना, “तू यह फ़ैसला करने में रास्त
है, तू जो है और जो था, तू जो क़ुद्दूस है। 6 चूँकि
उन्होंने तेरे मुक़द्दसीन और नबियों की ख़ूनरेज़ी की
है, इसलिए तूने उन्हें वह कुछ दे दिया जिसके
लायक़ वह हैं। तूने उन्हें ख़ून पिला दिया।” 7 फिर
मैंने क़ुरबानगाह को यह जवाब देते सुना, “हाँ, ऐ
रब क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा, हक़ीक़तन तेरे फ़ैसले
सच्चे और रास्त हैं।”
8 चौथे फ़रिश्ते ने अपना प्याला सूरज पर उंडेल
दिया। इस पर सूरज को लोगों को आग से
झुलसाने का इख़्तियार दिया गया। 9 लोग शदीद
तपिश से झुलस गए, और उन्होंने अल्लाह के नाम
पर कुफ़र बका जिसे इन बलाओं पर इख़्तियार
था। उन्होंने तौबा करने और उसे जलाल देने से
इनकार किया।

[a] यानी मुलाक़ात के ख़ैमे को।

10 पाँचवें फ़रिश्ते ने अपना प्याला हैवान के
तख़्त पर उंडेल दिया। इस पर उस की बादशाही
में अंधेरा छा गया। लोग अज़ियत के मारे अपनी
ज़बानें काटते रहे। 11 उन्होंने अपनी तकलीफ़ों
और फोड़ों की वजह से आसमान पर कुफ़्र बका
और अपने कामों से इनकार न किया।

12 छटे फ़रिश्ते ने अपना प्याला बड़े दरिया
फ़ुरात पर उंडेल दिया। इस पर उसका पानी
सूख गया ताकि मशरिक़ के बादशाहों के लिए
रास्ता तैयार हो जाए। 13 फिर मैंने तीन बदरूहें
देखीं जो मेंढकों की मानिंद थीं। वह अज़दहे के
मुँह, हैवान के मुँह और झूटे नबी के मुँह में से
निकल आईं। 14 यह मेंढक शयातीन की रूहें हैं
जो मोजिज़े दिखाती हैं और निकलकर पूरी दुनिया
के बादशाहों के पास जाती हैं ताकि उन्हें अल्लाह
क़ादिरे-मुतलक़ के अज़ीम दिन पर जंग के लिए
इकट्ठा करें।

15 "देखो, मैं चोर की तरह आऊँगा। मुबारक है
वह जो जागता रहता और अपने कपड़े पहने हुए
रहता है ताकि उसे नंगी हालत में चलना न पड़े
और लोग उस की शर्मगाह न देखें।"

16 फिर उन्होंने बादशाहों को उस जगह पर
इकट्ठा किया जिसका नाम इबरानी ज़बान में
हर्मजिद्दोन है।

17 सातवें फ़रिश्ते ने अपना प्याला हवा में
उंडेल दिया। इस पर अल्लाह के घर में तख़्त
की तरफ़ से एक ऊँची आवाज़ सुनाई दी जिसने
कहा, "अब काम तकमील तक पहुँच गया है!"
18 बिजलियाँ चमकने लगीं, शोर मच गया, बादल
गरजने लगे और एक शदीद ज़लज़ला आया।
इस क़िस्म का ज़लज़ला ज़मीन पर इनसान की
तख़लीक़ से लेकर आज तक नहीं आया, इतना
सख़्त ज़लज़ला कि 19 अज़ीम शहर तीन हिस्सों
में बट गया और क़ौमों के शहर तबाह हो गए।
अल्लाह ने अज़ीम बाबल को याद करके उसे
अपने सख़्त ग़ज़ब की मै से भरा प्याला पिला
दिया। 20 तमाम जज़ीरे ग़ायब हो गए और पहाड़
कहीं नज़र न आए। 21 लोगों पर आसमान से मन
मन-भर के बड़े बड़े ओले गिर गए। और लोगों ने
ओलों की बला की वजह से अल्लाह पर कुफ़्र
बका, क्योंकि यह बला निहायत सख़्त थी।

मशहूर कसबी

17 फिर सात प्याले अपने पास
रखनेवाले इन सात फ़रिश्तों में से
एक मेरे पास आया। उसने कहा, "आ, मैं तुझे
उस बड़ी कसबी की सज़ा दिखा दूँ जो गहरे पानी
के पास बैठी है। 2 ज़मीन के बादशाहों ने उसके
साथ ज़िना किया। हाँ, उस की ज़िनाकारी की मै
से ज़मीन के बाशिंदे मस्त हो गए।"

3 फिर फ़रिश्ता मुझे रूह में एक रेगिस्तान में
ले गया। वहाँ मैंने एक औरत को देखा। वह एक
क़िरमिज़ी रंग के हैवान पर सवार थी जिसके पूरे
जिस्म पर कुफ़्र के नाम लिखे थे और जिसके
सात सर और दस सींग थे। 4 यह औरत अरग़वानी
और क़िरमिज़ी रंग के कपड़े पहने और सोने,
बेशक़ीमत जवाहिर और मोतियों से सजी हुई थी।
उसके हाथ में सोने का एक प्याला था जो घिनौनी
चीज़ों और उस की ज़िनाकारी की गंदगी से भरा
हुआ था। 5 उसके माथे पर यह नाम लिखा था,
जो एक भेद है, "अज़ीम बाबल, कसबियों और
ज़मीन की घिनौनी चीज़ों की माँ।" 6 और मैंने
देखा कि यह औरत उन मुक़द्दसीन के ख़ून से मस्त
हो गई थी जिन्होंने ईसा की गवाही दी थी।

उसे देखकर मैं निहायत हैरान हुआ। 7 फ़रिश्ते
ने मुझसे पूछा, "तू क्यों हैरान है? मैं तुझ पर
औरत और उस हैवान का भेद खोल दूँगा जिस
पर औरत सवार है और जिसके सात सर और
दस सींग हैं। 8 जिस हैवान को तूने देखा वह पहले
था, इस वक़्त नहीं है और दुबारा अथाह गढ़े में से
निकलकर हलाकत की तरफ़ बढ़ेगा। ज़मीन के
जिन बाशिंदों के नाम दुनिया की तख़लीक़ से ही
किताबे-हयात में दर्ज नहीं हैं वह हैवान को देखकर
हैरतज़दा हो जाएंगे। क्योंकि वह पहले था, इस
वक़्त नहीं है लेकिन दुबारा आएगा।

9 यहाँ समझदार ज़हन की ज़रूरत है। सात सरों
से मुराद सात पहाड़ हैं जिन पर यह औरत बैठी
है। यह सात बादशाहों की नुमाइंदगी भी करते
हैं। 10 इनमें से पाँच गिर गए हैं, छटा मौजूद है
और सातवाँ अभी आनेवाला है। लेकिन जब वह
आएगा तो उसे थोड़ी देर के लिए रहना है। 11 जो
हैवान पहले था और इस वक़्त नहीं है वह आठवाँ
बादशाह है, गो वह सात बादशाहों में से भी एक
है। वह हलाकत की तरफ़ बढ़ रहा है।

12 जो दस सींग तूने देखे वह दस बादशाह हैं
जिन्हें अभी कोई बादशाही नहीं मिली। लेकिन
उन्हें घंटे-भर के लिए हैवान के साथ बादशाह का
इख़्तियार मिलेगा। 13 यह एक ही सोच रखकर
अपनी ताक़त और इख़्तियार हैवान को दे देंगे और
लेले से जंग करेंगे, 14 लेकिन लेला अपने बुलाए
गए, चुने हुए और वफ़ादार पैरोकारों के साथ उन
पर ग़ालिब आएगा, क्योंकि वह रब्बों का रब और
बादशाहों का बादशाह है।”

15 फिर फ़रिश्ते ने मुझसे कहा, “जिस पानी के
पास तूने कसबी को बैठी देखा वह उम्मतें, हुजूम,
क़ौमें और ज़बानें है। 16 जो हैवान और दस सींग
तूने देखे वह कसबी से नफ़रत करेंगे। वह उसे
वीरान करके नंगा छोड़ देंगे और उसका गोश्त
खाकर उसे भस्म करेंगे। 17 क्योंकि अल्लाह ने
उनके दिलों में यह डाल दिया है कि वह उसका
मक़सद पूरा करें और उस वक़्त तक हुकूमत करने
का अपना इख़्तियार हैवान के सुपुर्द कर दें जब
तक अल्लाह के फ़रमान तकमील तक न पहुँच
जाएँ।

18 जिस औरत को तूने देखा वह वही बड़ा शहर
है जो ज़मीन के बादशाहों पर हुकूमत करता है।”

बाबल शहर की शिकस्त

18 इसके बाद मैंने एक और फ़रिश्ता
देखा जो आसमान पर से उतर रहा
था। उसे बहुत इख़्तियार हासिल था और ज़मीन
उसके जलाल से रौशन हो गई। 2 उसने ऊँची
आवाज़ से पुकारकर कहा, “वह गिर गई है!
हाँ, अज़ीम कसबी बाबल गिर गई है! अब वह
शयातीन का घर और हर बदरूह का बसेरा बन
गई है, हर नापाक और घिनौने परिंदे का बसेरा।
3 क्योंकि तमाम क़ौमों ने उस की हरामकारी
और मस्ती की मै पी ली है। ज़मीन के बादशाहों
ने उसके साथ ज़िना किया और ज़मीन के
सौदागर उस की बेलगाम ऐयाशी से अमीर हो
गए हैं।” 4 फिर मैंने एक और आवाज़ सुनी। उसने
आसमान की तरफ़ से कहा,

“ऐ मेरी क़ौम, उसमें से निकल आ,
ताकि तुम उसके गुनाहों में
शरीक न हो जाओ
और उस की बलाएँ तुम पर न आएँ।
5 क्योंकि उसके गुनाह आसमान तक
पहुँच गए हैं,
और अल्लाह उनकी बदियों को
याद करता है।
6 उसके साथ वही सुलूक करो
जो उसने तुम्हारे साथ किया है।
जो कुछ उसने किया है
उसका दुगना बदला उसे देना।
जो शराब उसने दूसरों को
पिलाने के लिए तैयार की है
उसका दुगना बदला उसे दे देना।
7 उसे उतनी ही अज़ियत और ग़म
पहुँचा दो
जितना उसने अपने आपको
शानदार बनाया और ऐयाशी की।
क्योंकि अपने दिल में वह कहती है,
‘मैं यहाँ अपने तख़्त पर रानी हूँ।
न मैं बेवा हूँ, न मैं कभी मातम करूँगी।’
8 इस वजह से एक दिन यह बलाएँ
यानी मौत, मातम और काल
उस पर आन पड़ेंगी।
वह भस्म हो जाएगी,
क्योंकि उस की अदालत करनेवाला
रब ख़ुदा क़वी है।”

9 और ज़मीन के जिन बादशाहों ने उसके साथ
ज़िना और ऐयाशी की वह उसके जलने का धुआँ
देखकर रो पड़ेंगे और आहो-ज़ारी करेंगे। 10 वह
उस की अज़ियत को देखकर ख़ौफ़ खाएँगे और
दूर दूर खड़े होकर कहेंगे, "अफ़सोस! तुझ पर
अफ़सोस, ऐ अज़ीम और ताक़तवर शहर बाबल!
एक ही घंटे के अंदर अंदर अल्लाह की अदालत
तुझ पर आ गई है।"

11 ज़मीन के सौदागर भी उसे देखकर रो पड़ेंगे
और आहो-ज़ारी करेंगे, क्योंकि कोई नहीं रहा
होगा जो उनका माल ख़रीदे : 12 उनका सोना,
चाँदी, बेशक़ीमत जवाहिर, मोती, बारीक कतान,
अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग का कपड़ा, रेशम,
हर क़िस्म की ख़ुशबूदार लकड़ी, हाथीदाँत की
हर चीज़ और क़ीमती लकड़ी, पीतल, लोहे और
संगे-मरमर की हर चीज़, 13 दारचीनी, मसाला,
अगरबत्ती, मुर, बख़ूर, मै, ज़ैतून का तेल,
बेहतरीन मैदा, गंदुम, गाय-बैल, भेड़ें, घोड़े, रथ
और ग़ुलाम यानी इनसान। 14 सौदागर उससे
कहेंगे, "जो फल तू चाहती थी वह तुझसे दूर
हो गया है। तेरी तमाम दौलत और शानो-शौकत
ग़ायब हो गई है और आइंदा कभी भी तेरे पास
पाई नहीं जाएगी।" 15 जो सौदागर उसे यह चीज़ें
फ़रोख़्त करने से दौलतमंद हुए वह उस की
अज़ियत देखकर ख़ौफ़ के मारे दूर दूर खड़े हो
जाएंगे। वह रो रोकर मातम करेंगे 16 और कहेंगे,
"हाय! तुझ पर अफ़सोस, ऐ अज़ीम शहर, ऐ
ख़ातून जो पहले बारीक कतान, अरग़वानी और
क़िरमिज़ी रंग के कपड़े पहने फिरती थी और जो
सोने, क़ीमती जवाहिर और मोतियों से सजी हुई
थी। 17 एक ही घंटे के अंदर अंदर सारी दौलत
तबाह हो गई है!"

हर बहरी जहाज़ का कप्तान, हर समुंदरी
मुसाफ़िर, हर मल्लाह और वह तमाम लोग जो
समुंदर पर सफ़र करने से अपनी रोज़ी कमाते हैं
वह सब दूर दूर खड़े हो जाएंगे। 18 उसके जलने
का धुआँ देखकर वह कहेंगे, "क्या कभी कोई
इतना अज़ीम शहर था?" 19 वह अपने सरों पर
ख़ाक डाल लेंगे और चिल्ला चिल्लाकर रोएँगे और
आहो-ज़ारी करेंगे। वह कहेंगे, "हाय! तुझ पर
अफ़सोस, ऐ अज़ीम शहर, जिसकी दौलत से
तमाम बहरी जहाज़ों के मालिक अमीर हुए। एक
ही घंटे के अंदर अंदर वह वीरान हो गया है।"

20 ऐ आसमान, उसे देखकर ख़ुशी मना!
ऐ मुक़द्दसो, रसूलो और नबियो,
ख़ुशी मनाओ!
क्योंकि अल्लाह ने तुम्हारी ख़ातिर
उस की अदालत की है।

21 फिर एक ताक़तवर फ़रिश्ते ने बड़ी चक्की
के पाट की मानिंद एक बड़े पत्थर को उठाकर
समुंदर में फेंक दिया। उसने कहा, "अज़ीम शहर
बाबल को इतनी ही ज़बरदस्ती से पटक दिया
जाएगा। बाद में उसे कहीं नहीं पाया जाएगा।
22 अब से न मौसीक़ारों की आवाज़ें तुझमें कभी
सुनाई देंगी, न सरोद, बाँसरी या तुरम बजानेवालों
की। अब से किसी भी काम का कारीगर तुझमें
पाया नहीं जाएगा। हाँ, चक्की की आवाज़ हमेशा
के लिए बंद हो जाएगी। 23 अब से चराग़ तुझे
रौशन नहीं करेगा, दुलहन-दूल्हे की आवाज़ तुझमें
सुनाई नहीं देगी। हाय, तेरे सौदागर दुनिया के बड़े
बड़े अफ़सर थे, और तेरी जादूगरी से तमाम क़ौमों
को बहकाया गया।"

24 हाँ, बाबल में नबियों, मुक़द्दसीन और उन
तमाम लोगों का ख़ून पाया गया है जो ज़मीन पर
शहीद हो गए हैं।

19 इसके बाद मैंने आसमान पर एक बड़े
हुजूम की-सी आवाज़ सुनी जिसने
कहा, "अल्लाह की तमजीद हो! नजात, जलाल
और क़ुदरत हमारे ख़ुदा को हासिल है। 2 क्योंकि
उस की अदालतें सच्ची और रास्त हैं। उसने
उस बड़ी कसबी को मुजरिम ठहराया है जिसने
ज़मीन को अपनी ज़िनाकारी से बिगाड़ दिया।
उसने उससे अपने ख़ादिमों की क़त्लो-ग़ारत का
बदला ले लिया है।" 3 और वह दुबारा बोल उठे,
"अल्लाह की तमजीद हो! इस शहर का धुआँ
अबद तक चढ़ता रहता है।" 4 चौबीस बुज़ुर्गों और

चार जानदारों ने गिरकर तख़्त पर बैठे अल्लाह को
सिजदा किया। उन्होंने कहा, “आमीन, अल्लाह
की तमजीद हो।”

लेले की ज़ियाफ़त

5 फिर तख़्त की तरफ़ से एक आवाज़ सुनाई
दी। उसने कहा, “ऐ उसके तमाम ख़ादिमो,
हमारे ख़ुदा की तमजीद करो। ऐ उसका ख़ौफ़
माननेवालो, ख़ाह बड़े हो या छोटे उस की सताइश
करो।” 6 फिर मैंने एक बड़े हुजूम की-सी आवाज़
सुनी, जो बड़ी आबशार के शोर और गरजते
बादलों की कड़क की मानिंद थी। इन लोगों ने
कहा, “अल्लाह की तमजीद हो! क्योंकि हमारा
रब क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा तख़्तनशीन हो गया है।
7 आओ, हम मसरूर हों, ख़ुशी मनाएँ और उसे
जलाल दें, क्योंकि लेले की शादी का वक़्त आ
गया है। उस की दुलहन ने अपने आपको तैयार
कर लिया है, 8 और उसे पहनने के लिए बारीक
कतान का चमकता और पाक-साफ़ लिबास दे
दिया गया।” (बारीक कतान से मुराद मुक़द्दसीन
के रास्त काम हैं।)

9 फिर फ़रिश्ते ने मुझसे कहा, “लिख, मुबारक
हैं वह जिन्हें लेले की शादी की ज़ियाफ़त के लिए
दावत मिल गई है।” उसने मज़ीद कहा, “यह
अल्लाह के सच्चे अलफ़ाज़ हैं।”

10 इस पर मैं उसे सिजदा करने के लिए
उसके पाँवों में गिर गया। लेकिन उसने मुझसे
कहा, “ऐसा मत कर! मैं भी तेरा और तेरे उन
भाइयों का हमख़िदमत हूँ जो ईसा की गवाही देने
पर क़ायम हैं। सिर्फ़ अल्लाह को सिजदा कर।
क्योंकि जो ईसा के बारे में गवाही देता है वह यह
नबुव्वत की रूह में करता है।”

सफ़ेद घोड़े का सवार

11 फिर मैंने आसमान को खुला देखा। एक
सफ़ेद घोड़ा नज़र आया जिसके सवार का नाम
“वफ़ादार और सच्चा” है, क्योंकि वह इनसाफ़
से अदालत और जंग करता है। 12 उस की आँखें
भड़कते शोले की मानिंद हैं और उसके सर पर
बहुत-से ताज हैं। उस पर एक नाम लिखा है जिसे
सिर्फ़ वही जानता है, कोई और उसे नहीं जानता।
13 वह एक लिबास से मुलब्बस था जिसे ख़ून
में डुबोया गया था। उसका नाम “अल्लाह का
कलाम” है। 14 आसमान की फ़ौजें उसके पीछे
पीछे चल रही थीं। सब सफ़ेद घोड़ों पर सवार
थे और बारीक कतान के चमकते और पाक-
साफ़ कपड़े पहने हुए थे। 15 उसके मुँह से एक
तेज़ तलवार निकलती है जिससे वह क़ौमों को
मार देगा। वह लोहे के शाही असा से उन पर
हुकूमत करेगा। हाँ, वह अंगूर का रस निकालने
के हौज़ में उन्हें कुचल डालेगा। यह हौज़ क्या
है? अल्लाह क़ादिरे-मुतलक़ का सख़्त ग़ज़ब।
16 उसके लिबास और रान पर यह नाम लिखा है,
“बादशाहों का बादशाह और रब्बों का रब।”

17 फिर मैंने एक फ़रिश्ता सूरज पर खड़ा देखा।
उसने ऊँची आवाज़ से पुकारकर उन तमाम परिंदों
से जो मेरे सर पर मँडला रहे थे कहा, “आओ,
अल्लाह की बड़ी ज़ियाफ़त के लिए जमा हो
जाओ। 18 फिर तुम बादशाहों, जरनैलों, बड़े बड़े
अफ़सरों, घोड़ों और उनके सवारों का गोश्त
खाओगे, हाँ तमाम लोगों का गोश्त, ख़ाह आज़ाद
हों या ग़ुलाम, छोटे हों या बड़े।”

19 फिर मैंने हैवान और बादशाहों को उनकी
फ़ौजों समेत देखा। वह घोड़े पर “अल्लाह का
कलाम” नामी सवार और उस की फ़ौज से जंग
करने के लिए जमा हुए थे। 20 लेकिन हैवान
को गिरिफ़्तार किया गया। उसके साथ उस झूटे
नबी को भी गिरिफ़्तार किया गया जिसने हैवान
की ख़ातिर मोजिज़ाना निशान दिखाए थे। इन
मोजिज़ों के वसीले से उसने उनको फ़रेब दिया
था जिन्हें हैवान का निशान मिल गया था और जो
उसके मुजस्समे को सिजदा करते थे। दोनों को
जलती हुई गंधक की शोलाख़ेज़ झील में फेंका
गया। 21 बाक़ी लोगों को उस तलवार से मार
डाला गया जो घोड़े पर सवार के मुँह से निकलती

थी। और तमाम परिंदे लाशों का गोश्त खाकर सेर
हो गए।

हज़ार साल का दौर

20 फिर मैंने एक फ़रिश्ता देखा जो
आसमान से उतर रहा था। उसके हाथ
में अथाह गढ़े की चाबी और एक भारी ज़ंजीर थी।
2 उसने अज़दहे यानी क़दीम साँप को जो शैतान
या इबलीस कहलाता है पकड़कर हज़ार साल
के लिए बाँध लिया। 3 उसने उसे अथाह गढ़े में
फेंककर ताला लगा दिया और उस पर मुहर लगा
दी ताकि वह हज़ार साल तक क़ौमों को गुमराह
न कर सके। उसके बाद ज़रूरी है कि उसे थोड़ी
देर के लिए आज़ाद कर दिया जाए।
4 फिर मैंने तख़्त देखे जिन पर वह बैठे थे जिन्हें
अदालत करने का इख़्तियार दिया गया था। और
मैंने उनकी रूहें देखीं जिन्हें ईसा के बारे में गवाही
देने और जिनका अल्लाह का कलाम पेश करने
की वजह से सर क़लम किया गया था। उन्होंने
हैवान या उसके मुजस्समे को सिजदा नहीं किया
था, न उसका निशान अपने माथों या हाथों पर
लगवाया था। अब यह लोग ज़िंदा हुए और हज़ार
साल तक मसीह के साथ हुकूमत करते रहे।
5 (बाक़ी मुरदे हज़ार साल के इख़्तिताम पर ही
ज़िंदा हुए)। यह पहली क़ियामत है। 6 मुबारक
और मुक़द्दस हैं वह जो इस पहली क़ियामत में
शरीक हैं। इन पर दूसरी मौत का कोई इख़्तियार
नहीं है बल्कि यह अल्लाह और मसीह के इमाम
होकर हज़ार साल तक उसके साथ हुकूमत करेंगे।

इबलीस की शिकस्त

7 हज़ार साल गुज़र जाने के बाद इबलीस को
उस की क़ैद से आज़ाद कर दिया जाएगा। 8 तब
वह निकलकर ज़मीन के चारों कोनों में मौजूद
क़ौमों बनाम जूज और माजूज को बहकाएगा
और उन्हें जंग करने के लिए जमा करेगा।
लड़नेवालों की तादाद साहिल पर की रेत के
ज़र्रों जैसी बेशुमार होगी। 9 उन्होंने ज़मीन पर
फैलकर मुक़द्दसीन की लशकरगाह को घेर लिया,
यानी उस शहर को जिसे अल्लाह प्यार करता
है। लेकिन आग ने आसमान से नाज़िल होकर
उन्हें हड़प कर लिया। 10 और इबलीस को जिसने
उनको फ़रेब दिया था जलती हुई गंधक की झील
में फेंका गया, वहाँ जहाँ हैवान और झूटे नबी को
पहले फेंका गया था। उस जगह पर उन्हें दिन-रात
बल्कि अबद तक अज़ाब सहना पड़ेगा।

आख़िरी अदालत

11 फिर मैंने एक बड़ा सफ़ेद तख़्त देखा और
उसे जो उस पर बैठा है। आसमानो-ज़मीन उसके
हुज़ूर से भागकर ग़ायब हो गए। 12 और मैंने
तमाम मुरदों को तख़्त के सामने खड़े देखा, ख़ाह
वह छोटे थे या बड़े। किताबें खोली गईं। फिर एक
और किताब को खोल दिया गया जो किताबे-
हयात थी। मुरदों का उसके मुताबिक़ फ़ैसला
किया गया जो कुछ उन्होंने किया था और जो
किताबों में दर्ज था। 13 समुंदर ने उन तमाम मुरदों
को पेश कर दिया जो उसमें थे, और मौत और
पाताल ने भी उन मुरदों को पेश कर दिया जो
उनमें थे। चुनाँचे हर शख़्स का उसके मुताबिक़
फ़ैसला किया गया जो उसने किया था। 14 फिर
मौत और पाताल को जलती हुई झील में फेंका
गया। यह झील दूसरी मौत है। 15 जिस किसी का
नाम किताबे-हयात में दर्ज नहीं था उसे जलती हुई
झील में फेंका गया।

नया आसमान और नई ज़मीन

21 फिर मैंने एक नया आसमान और
एक नई ज़मीन देखी। क्योंकि पहला
आसमान और पहली ज़मीन ख़त्म हो गए थे और
समुंदर भी नेस्त था। 2 मैंने नए यरूशलम को
भी देखा। यह मुक़द्दस शहर दुलहन की सूरत में
अल्लाह के पास से आसमान पर से उतर रहा
था। और यह दुलहन अपने दूल्हे के लिए तैयार
और सजी हुई थी। 3 मैंने एक आवाज़ सुनी जिसने
तख़्त पर से कहा, “अब अल्लाह की सुकूनतगाह

इनसानों के दरमियान है। वह उनके साथ सुकूनत
करेगा और वह उस की क़ौम होंगे। अल्लाह ख़ुद
उनका ख़ुदा होगा। 4 वह उनकी आँखों से तमाम
आँसू पोंछ डालेगा। अब से न मौत होगी न मातम,
न रोना होगा न दर्द, क्योंकि जो भी पहले था वह
जाता रहा है।”

5 जो तख़्त पर बैठा था उसने कहा, “मैं सब
कुछ नए सिरे से बना रहा हूँ।” उसने यह भी
कहा, “यह लिख दे, क्योंकि यह अलफ़ाज़
क़ाबिले-एतमाद और सच्चे हैं।” 6 फिर उसने
कहा, “काम मुकम्मल हो गया है! मैं अलिफ़
और ये, अव्वल और आख़िर हूँ। जो प्यासा है
उसे मैं ज़िंदगी के चश्मे से मुफ़्त पानी पिलाऊँगा।
7 जो ग़ालिब आएगा वह यह सब कुछ विरासत में
पाएगा। मैं उसका ख़ुदा हूँगा और वह मेरा फ़रज़ंद
होगा। 8 लेकिन बुज़दिलों, ग़ैरईमानदारों, घिनौनों,
क़ातिलों, ज़िनाकारों, जादूगरों, बुतपरस्तों और
तमाम झूटे लोगों का अंजाम जलती हुई गंधक
की शोलाख़ेज़ झील है। यह दूसरी मौत है।”

नया यरूशलम

9 जिन सात फ़रिश्तों के पास सात आख़िरी
बलाओं से भरे प्याले थे उनमें से एक ने मेरे पास
आकर कहा, “आ, मैं तुझे दुलहन यानी लेले की
बीवी दिखाऊँ।” 10 वह मुझे रूह में उठाकर एक
बड़े और ऊँचे पहाड़ पर ले गया। वहाँ से उसने
मुझे मुक़द्दस शहर यरूशलम दिखाया जो अल्लाह
की तरफ़ से आसमान पर से उतर रहा था। 11 उसे
अल्लाह का जलाल हासिल था और वह अनमोल
जौहर बल्कि बिल्लौर जैसे साफ़-शफ़्फ़ाफ़ यशब
की तरह चमक रहा था। 12 उस की बड़ी और ऊँची
फ़सील में बारह दरवाज़े थे, और हर दरवाज़े पर
एक फ़रिश्ता खड़ा था। दरवाज़ों पर इसराईल के
बारह क़बीलों के नाम लिखे थे। 13 तीन दरवाज़े
मशरिक़ की तरफ़ थे, तीन शिमाल की तरफ़,
तीन जुनूब की तरफ़ और तीन मग़रिब की तरफ़।
14 शहर की फ़सील की बारह बुनियादें थीं जिन
पर लेले के बारह रसूलों के नाम लिखे थे। 15 जिस
फ़रिश्ते ने मुझसे बात की थी उसके पास सोने
का गज़ था ताकि शहर, उसके दरवाज़ों और उस
की फ़सील की पैमाइश करे। 16 शहर चौकोर
था। उस की लंबाई उतनी ही थी जितनी उस
की चौड़ाई। फ़रिश्ते ने गज़ से शहर की पैमाइश
की तो पता चला कि उस की लंबाई, चौड़ाई
और ऊँचाई 2,400 किलोमीटर है। 17 जब उसने
फ़सील की पैमाइश की तो चौड़ाई 60 मीटर थी
यानी उस पैमाने के हिसाब से जो वह इस्तेमाल
कर रहा था। 18 फ़सील यशब की थी जबकि शहर
ख़ालिस सोने का था, यानी साफ़-शफ़्फ़ाफ़ शीशे
जैसे सोने का। 19 शहर की बुनियादें हर क़िस्म के
क़ीमती जवाहिर से सजी हुई थीं : पहली यशब[a]
से, दूसरी संगे-लाजवर्द[b] से, तीसरी संगे-यमानी[c]
से, चौथी ज़ुमुर्रद से, 20 पाँचवीं संगे-सुलेमानी[d]
से, छटी अक़ीक़े-अहमर[e] से, सातवीं ज़बरजद[f]
से, आठवीं आबे-बहर[g] से, नव्वीं पुखराज[h] से,
दसवीं अक़ीक़े-सब्ज़[i] से, ग्यारहवीं नीले रंग के
ज़रक़ोन[j] से और बारहवीं याक़ूते-अरग़वानी[k] से।
21 बारह दरवाज़े बारह मोती थे और हर दरवाज़ा
एक मोती का था। शहर की बड़ी सड़क ख़ालिस
सोने की थी, यानी साफ़-शफ़्फ़ाफ़ शीशे जैसे
सोने की।

22 मैंने शहर में अल्लाह का घर न देखा, क्योंकि
रब क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा और लेला ही उसका
मक़दिस हैं। 23 शहर को सूरज या चाँद की ज़रूरत

---

[a] jasper
[b] lapis lazuli
[c] chalcedony
[d] sardonyx। यानी संगे-सुलेमानी की एक क़िस्म जिसमें नारंजी और सफ़ेद अक़ीक़ के परत यके बाद दीगरे होते हैं।
[e] carnelian
[f] peridot
[g] beryl
[h] topaz
[i] chrysoprase
[j] यूनानी लफ़्ज़ कुछ मुबहम-सा है।
[k] amethyst

नहीं जो उसे रौशन करे, क्योंकि अल्लाह का
जलाल उसे रौशन कर देता है और लेला उसका
चराग़ है। 24 क़ौमें उस की रौशनी में चलेंगी, और
ज़मीन के बादशाह अपनी शानो-शौकत उसमें
लाएँगे। 25 उसके दरवाज़े किसी भी दिन बंद नहीं
होंगे क्योंकि वहाँ कभी भी रात का वक़्त नहीं
आएगा। 26 क़ौमों की शानो-शौकत उसमें लाई
जाएगी। 27 कोई नापाक चीज़ उसमें दाख़िल नहीं
होगी, न वह जो घिनौनी हरकतें करता और झूट
बोलता है। सिर्फ़ वह दाख़िल होंगे जिनके नाम
लेले की किताबे-हयात में दर्ज हैं।

मुकाशफ़ा

22 फिर फ़रिश्ते ने मुझे ज़िंदगी के पानी
का दरिया दिखाया। वह बिल्लौर
जैसा साफ़-शफ़्फ़ाफ़ था और अल्लाह और लेले
के तख़्त से निकल कर 2 शहर की बड़ी सड़क के
बीच में से बह रहा था। दरिया के दोनों किनारों पर
ज़िंदगी का दरख़्त था। यह दरख़्त साल में बारह
दफ़ा फल लाता था, हर महीने में एक बार। और
दरख़्त के पत्ते क़ौमों की शफ़ा के लिए इस्तेमाल
होते थे। 3 वहाँ कोई भी मलऊन चीज़ नहीं होगी।

अल्लाह और लेले का तख़्त शहर में होंगे और
उसके ख़ादिम उस की ख़िदमत करेंगे। 4 वह
उसका चेहरा देखेंगे, और उसका नाम उनके माथों
पर होगा। 5 वहाँ रात नहीं होगी और उन्हें किसी
चराग़ या सूरज की रौशनी की ज़रूरत नहीं होगी,
क्योंकि रब ख़ुदा उन्हें रौशनी देगा। वहाँ वह अबद
तक हुकूमत करेंगे।

ईसा की आमद

6 फ़रिश्ते ने मुझसे कहा, “यह बातें क़ाबिले-
एतमाद और सच्ची हैं। रब ने जो नबियों की रूहों
का ख़ुदा है अपने फ़रिश्ते को भेज दिया ताकि
अपने ख़ादिमों को वह कुछ दिखाए जो जल्द
होनेवाला है।”

7 ईसा फ़रमाता है, “देखो, मैं जल्द आऊँगा।
मुबारक है वह जो इस किताब की पेशगोइयों के
मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारता है।”

8 मैं यूहन्ना ने ख़ुद यह कुछ सुना और देखा
है। और उसे सुनने और देखने के बाद मैं उस
फ़रिश्ते के पाँवों में गिर गया जिसने मुझे यह
दिखाया था और उसे सिजदा करना चाहता था।
9 लेकिन उसने मुझसे कहा, “ऐसा मत कर! मैं
भी उसी का ख़ादिम हूँ जिसका तू, तेरे भाई नबी
और किताब की पैरवी करनेवाले हैं। ख़ुदा ही
को सिजदा कर!” 10 फिर उसने मझे बताया,
“इस किताब की पेशगोइयों पर मुहर मत लगाना,
क्योंकि वक़्त क़रीब आ गया है। 11 जो ग़लत
काम कर रहा है वह ग़लत काम करता रहे। जो
घिनौना है वह घिनौना होता जाए। जो रास्तबाज़
है वह रास्तबाज़ी करता रहे। जो मुक़द्दस है वह
मुक़द्दस होता जाए।”

12 ईसा फ़रमाता है, “देखो, मैं जल्द आने
को हूँ। मैं अज्र लेकर आऊँगा और मैं हर एक
को उसके कामों के मुवाफ़िक़ अज्र दूँगा। 13 मैं
अलिफ़ और ये, अव्वल और आख़िर, इब्तिदा
और इंतहा हूँ।”

14 मुबारक हैं वह जो अपने लिबास को धोते
हैं। क्योंकि वह ज़िंदगी के दरख़्त के फल से खाने
और दरवाज़ों के ज़रीए शहर में दाख़िल होने का
हक़ रखते हैं। 15 लेकिन बाक़ी सब शहर के बाहर
रहेंगे। कुत्ते, ज़िनाकार, क़ातिल, बुतपरस्त और
तमाम वह लोग जो झूट को प्यार करते और उस
पर अमल करते हैं सबके सब बाहर रहेंगे।

16 “मैं ईसा ने अपने फ़रिश्ते को तुम्हारे पास
भेजा है ताकि वह जमातों के लिए तुम्हें इन बातों
की गवाही दे। मैं दाऊद की जड़ और औलाद हूँ,
मैं ही चमकता हुआ सुबह का सितारा हूँ।”

17 रूह और दुलहन कहती हैं, “आ!”

हर सुननेवाला भी यही कहे, “आ!”

जो प्यासा हो वह आए और जो चाहे वह ज़िंदगी
का पानी मुफ़्त ले ले।

ख़ुलासा

18 मैं, यूहन्ना हर एक को जो इस किताब की पेशगोइयाँ सुनता है आगाह करता हूँ, अगर कोई इस किताब में किसी भी बात का इज़ाफ़ा करे तो अल्लाह उस की ज़िंदगी में उन बलाओं का इज़ाफ़ा करेगा जो इस किताब में बयान की गई
हैं। 19 और अगर कोई नबुव्वत की इस किताब से बातें निकाले तो अल्लाह उससे किताब में मज़कूर ज़िंदगी के दरख़्त के फल से खाने और मुक़द्दस शहर में रहने का हक़ छीन लेगा।

20 जो इन बातों की गवाही देता है वह फ़रमाता है, "जी हाँ! मैं जल्द ही आने को हूँ।" "आमीन! ऐ ख़ुदावंद ईसा आ!"

21 ख़ुदावंद ईसा का फ़ज़ल सबके साथ रहे।